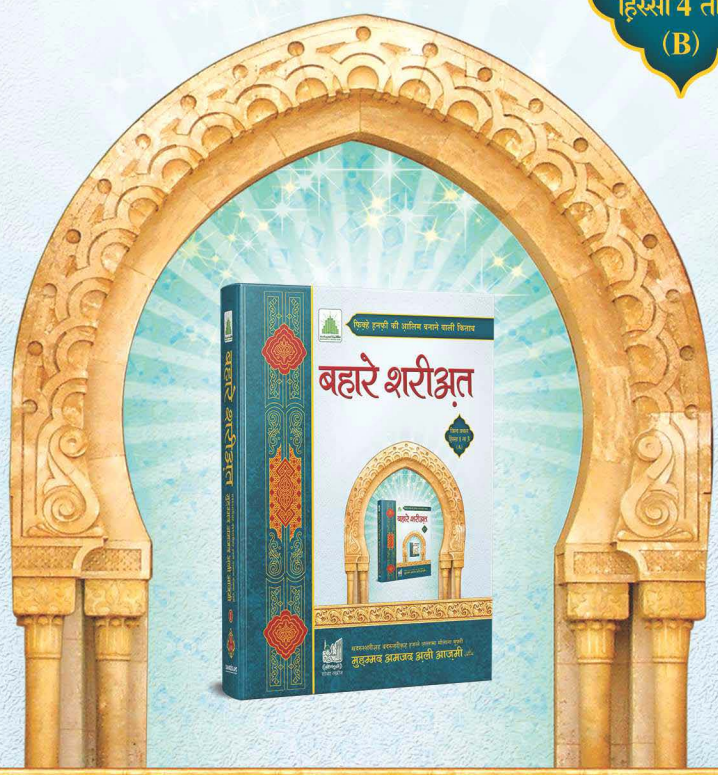
फ़िक़्हे ह़नफ़ी की आ़लिम बनाने वाली किताब

बहारे शरीअ़त

जिल्द अव्वल
ह़िस्सा 4 ता 6
(B)



सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती
मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رحمۃ اللہ علیہ

शोबए तख़रीज
www.dawateislami.net

बहारे शरीअ़त

जिल्द अव्वल (1) बा

(तस्हील व तख़्रीज शुदा)

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्तरीक़ह
ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शोबए तख़्रीज)

नाशिर
मक्तबतुल मदीना (दावते इस्लामी)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (यानी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

इज्माली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा	मज़ामीन	सफ़्हा
चौथा हिस्सा (बक़िय्या मसाइले नमाज़ का बयान)		किताबुल जनाइज़	799
वित्र का बयान	652	मौत आने का बयान	806
सुननो नवाफ़िल का बयान	658	कफ़न का बयान	817
नमाज़े इस्तिख़ारा	681	जनाज़ा ले चलने का बयान	822
सलातुत्तस्बीह़	683	क़ब्र व दफ़्न का बयान	842
नमाज़े ह़ाजत	685	ताज़ियत का बयान	852
नमाज़े तौबा व सलातुर्रग़ाइब	687	शहीद का बयान	857
तरावीह़ का बयान	688	काबए मुअ़ज़्ज़मा में नमाज़ पढ़ने का बयान	864
क़ज़ा नमाज़ का बयान	699	**पांचवां हिस्सा (ज़कात और रोज़े का बयान)**	
सज्दए सह्व का बयान	708	**ज़कात का बयान**	
नमाज़े मरीज़ का बयान	720	ज़कात का बयान	866
सज्दए तिलावत का बयान	726	साइमा की ज़कात का बयान	892
नमाज़े मुसाफ़िर का बयान	739	ऊंट की ज़कात का बयान	893
जुमुआ़ का बयान	752	गाय की ज़कात का बयान	895
ईदैन का बयान	777	बकरियों की ज़कात का बयान	896
गहन की नमाज़ का बयान	786	सोने चांदी और माले तिजारत की ज़कात का बयान	901
नमाज़े इस्तिस्क़ा का बयान	790	आ़शिर का बयान	909
नमाज़े ख़ौफ़ का बयान	795	कान और दफ़ीने का बयान	912

www.dawateislami.net

ज़राअ़त और फलों की ज़कात यानी उ़श्र व ख़िराज का बयान	914	मीक़ात का बयान	1067
सदक़ए फ़ित्र का बयान	934	एह़राम का बयान	1069
सुवाल किसे ह़लाल है और किसे नहीं	940	त़वाफ़ व सइ़ये सफ़ा व मर्वह व उ़मरह	1089
सदक़ाते नफ़्ल का बयान	946	क़िरान का बयान	1154
रोज़े का बयान	957	तमत्तोअ़ का बयान	1157
चांद देखने का बयान	973	जुर्म और उन के कफ़्फ़ारे	1161
रोज़े के मक्रूहात का बयान	995	मुह़्सर का बयान	1194
सह़री व इफ़्त़ार का बयान	999	ह़ज फ़ौत होने का बयान	1198
मन्नत के रोज़े का बयान	1015	ह़ज्जे बदल का बयान	1199
एतिकाफ़ का बयान	1019	हदी का बयान	1211
छठा ह़िस्सा (ह़ज का बयान)		ह़ज की मन्नत का बयान	1215
ह़ज का बयान और फ़ज़ाइल	1030	फ़ज़ाइले मदीनए त़य्यिबा	1217

ग़ुस्सा ईमान को ख़राब करता है

ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **ग़ुस्सा** ईमान को इस त़रह़ ख़राब करता है जिस त़रह़ ऐलवा (यानी एक कड़वे दरख़्त का जमा हुवा रस) शह़द को ख़राब कर देता है। (شعب الایمان للبیهقی ج٦،ص٣١١حدیث ٨٢٩٤)

शमातत की तारीफ़

दूसरों की तक्लीफ़ों और मुसीबतों पर ख़ुशी का इज़्हार करने को **शमातत** कहते हैं।

(حدیقه ندیه شرح طریقه محمدیه ج١ص٦٣١)

चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम, शाफ़ेए उ़मम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : **चुग़ल ख़ोर** जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।

(صحیح البخاری ج ٤ ص١١٥حدیث٦٠٥٦ دارالکتب العلمیة بیروت)

www.dawateislami.net

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा
चौथा हिस्सा (बक़िय्या मसाइले नमाज़ का बयान)	
वित्र के फ़ज़ाइल	652
वित्र के मसाइल और दुआए क़ुनूत	653
सुननो नवाफ़िल का बयान	658
नफ़्ल की फ़ज़ीलत	658
सुनने मुअक्कदा का ज़िक्र	659
सुन्नते फ़ज्र के फ़ज़ाइल	659
सुन्नते ज़ोह्र के फ़ज़ाइल	660
सुन्नते अ़स्र के फ़ज़ाइल	661
सुन्नते मग़रिब व सलातुल अव्वाबीन के फ़ज़ाइल	661
सुन्नते इ़शा का तअक्कुद	662
सुनने मुअक्कदा व नवाफ़िल के मसाइल	662
नफ़्ल नमाज़ शुरूअ़ कर के तोड़ने के मसाइल	668
खड़े हो कर, बैठ कर, लैट कर, गाड़ी पर नफ़्ल नमाज़ पढ़ने के मसाइल	670
फ़र्ज़ व वाजिब नमाज़ सुवारी या गाड़ी पर पढ़ने के मसाइल व आज़ार	672
मन्नत मान कर नमाज़ पढ़ने के मसाइल	673
तहिय्यतुल मस्जिद के मसाइल व फ़ज़ाइल	674
तहिय्यतुल वुज़ू व नमाज़े इ़शराक़ व नमाज़े चाश्त के फ़ज़ाइल व मसाइल	675

मज़ामीन	सफ़्हा
नमाज़े सफ़र व नमाज़े वापसिये सफ़र के मसाइल व फ़ज़ाइल सलातुल्लैल व नमाज़े तहज्जुद के मसाइल व फ़ज़ाइल	676
रात में पढ़ने की बाज़ दुआ़एं	680
नमाज़े इस्तिख़ारा	681
सलातुत्तस्बीह़	683
नमाज़े ह़ाजत	685
नमाज़े ग़ौसिया की तरकीब	686
नमाज़े तौबा व सलातुर्रग़ाइब	687
तरावीह़ का बयान	688
तन्हा नमाज़ शुरूअ़ की और जमाअ़त क़ाइम हुई, इस के मसाइल	695
अज़ान के बाद मस्जिद से चले जाने की मुमानअ़त	697
इमाम की मुख़ालफ़त करने और जमाअ़त में शामिल होने के मसाइल	698
क़ज़ा नमाज़ का बयान	699
नमाज़ क़ज़ा करने के उ़ज़्र	700
क़ज़ा और इ़आदे की तारीफ़ें और क़ज़ा होने और उन के पढ़ने की सूरतें	701
चन्द नमाज़ें क़ज़ा हुईं तो उन में तरतीब वाजिब है और उस के शराइ़त	703
क़ज़ाए उ़म्री के मसाइल	706
क़ज़ा के मुतफ़र्रिक़ मसाइल	706
फ़िदयए नमाज़ के मसाइल	707
सज्दए सह्व का बयान	708

www.dawateislami.net

नमाज़े मरीज़ का बयान	720	जुमुआ़ पढ़ने के शराइत़	762
सज्दए तिलावत का बयान	726	पहली शर्त़ मिस्र और उस की तारीफ़ व अह़काम	762
आयाते सज्दा	726	दूसरी शर्त़ बादशाहे इस्लाम और इस के अह़काम	764
सज्दए तिलावत की दुआ़एं	732	तीसरी शर्त़ वक़्ते ज़ोह्र और इस से मुराद	766
नमाज़ में आयते सज्दा पढ़ने के मसाइल	733	चौथी शर्त़ ख़ुत्बा और इस के शराइत़ और इस की सुन्नतें और मुस्तह़ब्बात	766
एक मजलिस में आयते सज्दा पढ़ने या सुनने के मसाइल और मजलिस बदलने और न बदलने की सूरतें	735	पांचवीं शर्त़ जमाअ़त और उस के मसाइल	769
सज्दए शुक्र के बाज़ मवाक़ेअ़	738	छटी शर्त़ इज़्ने आ़म	770
नमाजे़ मुसाफ़िर का बयान	739	जुमुआ़ वाजिब होने के शराइत़	770
मुसाफ़िर किस को कहते हैं	740	शह्र में जुमुआ़ के दिन ज़ोह्र पढ़ने के मसाइल	773
मुसाफ़िर के अह़काम	743	ख़ुत्बा के बाज़ दीगर मसाइल	774
निय्यते इक़ामत के शराइत़	744	रोज़े जुमुआ़ व शबे जुमुआ़ के बाज़ आमाल	776
मुसाफ़िर ने मुक़ीम की इक़्तिदा की या मुक़ीम ने मुसाफ़िर की, इस के अह़काम	748	**ईदैन का बयान**	777
वत़ने असली व वत़ने इक़ामत के मसाइल	750	ईद के दिन के मुस्तह़ब्बात	779
जुमुआ़ का बयान	752	नमाजे़ ईद की तरकीब और मस्बूक़ व लाहि़क़ के अह़काम	781
फ़ज़ाइले रोज़े जुमुआ़	752	तक्बीरे तश्रीक़ के मसाइल	784
जुमुआ़ के दिन एक ऐसा वक़्त है कि उस में दुआ़ क़बूल होती है	754	**ग्रहन की नमाज़ का बयान**	786
जुमुआ़ के दिन या रात में मरने के फ़ज़ाइल	755	बाज़ ऐसे मवाक़ेअ़ जिन में नमाज़ पढ़ना मुस्तह़ब है	788
फ़ज़ाइले नमाज़े जुमुआ़	756	आंधी और बादल की गरज और बिजली की कड़क के वक़्त दुआ़एं	789
जुमुआ़ छोड़ने पर वईदें	757	**नमाजे़ इस्तिस्क़ा का बयान**	790
जुमुआ़ के दिन नहाने और ख़ुश्बू लगाने के फ़ज़ाइल	759	**नमाजे़ ख़ौफ़ का बयान**	795
जुमुआ़ के लिये अव्वल जाने का सवाब और गर्दनें फलांगने की मुमानअ़त	761	**किताबुल जनाइज़**	799
		बीमारी का बयान और इस के बाज़ मनाफ़ेअ़	799

www.dawateislami.net

इयादत के फ़ज़ाइल	803	ज़कात का बयान	866
मौत आने का बयान	806	ज़कात न देने की बुराई और देने के फ़ज़ाइल में अहादीस	868
मय्यित के नहलाने का बयान	810	ज़कात की तारीफ़ और वाजिब होने की शर्तें	874
कफ़्न का बयान	817	ज़कात किस तरह अदा होती है और किस तरह नहीं	887
कफ़न पहनाने का तरीक़ा	820	साइमा की ज़कात का बयान	892
मस्अलए ज़रूरिय्या	821	ऊंट की ज़कात का बयान	893
जनाज़ा ले चलने का बयान	822	गाय की ज़कात का बयान	895
नमाज़े जनाज़ा का बयान	825	बकरियों की ज़कात का बयान	896
नमाज़े जनाज़ा के शराइत	825	जानवरों की ज़कात के मुतफ़र्रिक़ मसाइल	897
जनाज़े की चौदह दुआएं	829	सोने चांदी और माले तिजारत की ज़कात का बयान	901
नमाज़े जनाज़ा कौन पढ़ाए	836	आशिर का बयान	909
क़ब्र व दफ़्न का बयान	842	कान और दफ़ीने का बयान	912
ज़ियारते कुबूर	848	ज़राअ़त और फलों की ज़कात यानी उ़श्र व ख़िराज का बयान	914
दफ़्न के बाद तल्क़ीन	850		
ताज़ियत का बयान	852	माले ज़कात किन लोगों पर सर्फ़ किया जाए	922
सोग और नौहा का बयान	854	सदक़ए फ़ित्र का बयान	934
शहीद का बयान	857	सुवाल किसे हलाल है और किसे नहीं	940
जंग में मक़्तूल होने के इलावा जिन को सवाबे शहादत मिलता है	857	सदक़ाते नफ़्ल का बयान	946
शहीदे फ़िक़्ही की तारीफ़ और अहकाम	860	रोज़े का बयान	957
क़ाबए मुअ़ज़्ज़मा में नमाज़ पढ़ने का बयान	864	माहे रमज़ान और रोज़े के फ़ज़ाइल	958
तक़रीज़े आला ह़ज़रत, इमाम अहमद रज़ा ख़ां عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن	865	रोज़े की तारीफ़ और इस की क़िस्में	966
पांचवां हिस्सा (ज़कात और रोज़े का बयान)		रोज़े की निय्यत	972

www.dawateislami.net

तीसवीं शाबान का रोज़ा	972	ह़ज के मसाइल	1035
चांद देखने का बयान	973	ह़ज वाजिब होने के शराइत़	1036
किन चीज़ों से रोज़ा नहीं जाता	980	वुजूबे अदा के शराइत़	1043
रोज़ा किन चीज़ों से टूटता है	985	सिह्हते अदा के शराइत़	1046
जिन सूरतों में सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम है	989	ह़ज्जे फ़र्ज़ अदा होने के शराइत़	1047
उन सूरतों का बयान जिन में कफ़्फ़ारा भी लाज़िम है	991	ह़ज के फ़राइज़ो वाजिबात	1047
रोज़ा तोड़ने का क्या कफ़्फ़ारा है	994	ह़ज की सुन्नतें	1050
रोज़े के मक्रूहात का बयान	995	आदाबे सफ़र व मुक़द्दमाते ह़ज	1051
सह़री व इफ़्त़ार का बयान	999	**मीक़ात का बयान**	1067
उन वुजूह़ का बयान जिन से रोज़ा न रखने की इजाज़त़ है	1002	**एह़राम का बयान**	1069
रोज़ए नफ़्ल के फ़ज़ाइल	1008	एह़राम के अह़काम	1071
आ़शूरे के फ़ज़ाइल	1008	वोह उमूर जो एह़राम में ह़राम हैं	1078
अ़रफ़े के दिन रोज़े का सवाब	1009	एह़राम के मक्रूहात	1079
शश ईद के रोज़ों के फ़ज़ाइल	1010	वोह बातें जो एह़राम में जाइज़ हैं	1080
पन्दरहवीं शाबान का रोज़ा और इस के फ़ज़ाइल	1011	एह़राम में मर्द व औ़रत के फ़र्क़	1083
अय्यामे बीज़ के फ़ज़ाइल	1012	दाख़िलीये ह़रमे मोह़तरम व मक्कए मुकर्रमा व मस्जिदुल ह़राम	1083
पीर और जुमेरात के रोज़े	1013	**त़वाफ़ व सइ्ये सफ़ा व मर्वह व उ़मरह**	1089
बाज़ और दिनों के रोज़े	1013	त़वाफ़ के फ़ज़ाइल	1091
मन्नत के रोज़े का बयान	1015	ह़जरे अस्वद की बुज़ुर्गी	1092
एतिकाफ़ का बयान	1019	मस्जिदुल ह़राम का नक़्शा व ह़ुदूद	1093
छठा ह़िस्सा (ह़ज का बयान)		त़वाफ़ का त़रीक़ा और दुआ़एं	1095
ह़ज का बयान और फ़ज़ाइल	1030	त़वाफ़ के मसाइल	1099

www.dawateislami.net

नमाज़े त़वाफ़	1102	मुज़्दलिफ़ा की रवानगी और इस का वुक़ूफ़	1130
मुल्तज़म से लिपटना	1103	मुज़्दलिफ़ा में नमाज़े मग़रिब व इ़शा	1132
ज़मज़म की ह़ाज़िरी	1105	मुज़्दलिफ़ा का वुक़ूफ़ और दुआ़एं	1133
सफ़ा व मर्वह की सई	1105	मिना के आमाल	1135
सई की दुआ़एं	1106	जम्रतुल अ़क़बा की रमी	1139
सई के मसाइल	1109	रमी के मसाइल	1139
सर मुंडाना या बाल कतरवाने	1111	ह़ज की क़ुरबानी	1140
अय्यामे इक़ामत के आमाल	1112	ह़ल्क़ व तक़्सीर	1142
त़वाफ़ में सात बातें ह़राम हैं	1112	त़वाफ़े फ़र्ज़	1144
त़वाफ़ में पन्दरह बातें मक्रूह हैं	1113	बाक़ी दिनों की रमी	1146
सात बातें त़वाफ़ व सई में जाइज़ हैं	1114	रमी में बारह चीज़ें मक्रूह हैं	1148
दस बातें सई में मक्रूह हैं	1114	मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को रवानगी	1149
त़वाफ़ व सई में मर्द व औ़रत के फ़र्क़	1115	मक़ामाते मुतबर्रका की ज़ियारत	1150
मिना की रवानगी और अ़रफ़ात का वुक़ूफ़	1115	काबए मुअ़ज़्ज़मा की दाख़िली	1150
अ़रफ़ात में ज़ोह्र व अ़स्र की नमाज़	1123	ह़रमैने शरीफ़ैन के तबर्रुकात	1151
अ़रफ़ात का वुक़ूफ़	1123	त़वाफ़े रुख़्सत	1151
वुक़ूफ़ की सुन्नतें	1124	**क़िरान का बयान**	1154
वुक़ूफ़ के आदाब	1125	**तमत्तोअ़ का बयान**	1157
वुक़ूफ़ की दुआ़एं	1125	**जुर्म और उन के कफ़्फ़ारे**	1161
वुक़ूफ़ के मक्रूहात	1127	ख़ुश्बू और तेल लगाना	1163
ज़रूरी नसीह़त	1128	सिले कपड़े पहनना	1167
वुक़ूफ़ के मसाइल	1128	बाल दूर करना	1170

www.dawateislami.net

नाख़ुन कतरना	1172	**ह़ज्जे बदल का बयान**	1199
बोसो कनार व जिमाअ़	1172	ह़ज्जे बदल के शराइत़	1201
त़वाफ़ में ग़लतियां	1175	**हदी का बयान**	1211
सई व वुक़ूफ़े अ़रफ़ा व वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा और रमी की ग़लतियां	1177	**ह़ज की मन्नत का बयान**	1215
क़ुरबानी और ह़ल्क़ में ग़लती	1179	**फ़ज़ाइले मदीनए त़य्यिबा**	1217
शिकार करना	1179	मदीनए त़य्यिबा में इक़ामत	1217
ह़रम के जानवर को ईज़ा देना	1186	मदीनए त़य्यिबा के बरकात	1218
ह़रम के पेड़ वग़ैरा काटना	1189	अहले मदीना के साथ बुराई करने के नताइज	1219
जूं मारना	1190	ह़ाज़िरिये सरकारे आज़म	1220
बग़ैर एह़राम मीक़ात से गुज़रना	1191	अहले बक़ीअ़ की ज़ियारत	1228
एह़राम होते हुए एह़राम बांधना	1193	क़ुबा की ज़ियारत	1230
मुह़्सर का बयान	1194	उहुद व शुहदाए उहुद की ज़ियारत	1231
ह़ज फ़ौत होने का बयान	1198	ह़ज्जो उ़मरह के आमाल का नक़्शा एक नज़र में	1233

आला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن तह़रीर फ़रमाते हैं : (अक़्वाले) उ़लमा मुख़्तलिफ़ हैं कि पहले ह़ज करे या ज़ियारत। "**लुबाब**" में है : ह़ज्जे नफ़्ल में मुख़्तार है और फ़र्ज़ हो तो पहले ह़ज मगर मदीनए त़य्यिबा राह में आए तो तक़्दीमे ज़ियारत लाज़िमी इन्तिहा। यानी बे ज़ियारत गुज़र जाना गुस्ताख़ी और फ़क़ीर को अ़ल्लामा सुबुकी (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) का येह इरशाद बहुत भाया कि पहले ह़ज करे ताकि "**पाक**" की ज़ियारत "**पाक**" हो कर मिले।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 10, स. 798)

www.dawateislami.net

नमाज़ के बक़िय्या मसाइल का बयान

बहारे शरीअ़त

चौथा ह़िस्सा (4)

(तस्हील व तख़्रीज शुदा)

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्तरीक़ह
ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शोबए तख़्रीज)

नाशिर
मक्तबतुल मदीना (दावते इस्लामी)

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نَحْمَدُهٗ وَ نُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ط

वित्र का बयान

ह़दीस 1 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में है, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا कहते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के यहां मैं सोया था, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) बेदार हुए, मिस्वाक की और वुज़ू किया और इसी ह़ालत में आयत [1] ﴿اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ﴾ ख़त्मे सूरह तक पढ़ी फिर खड़े हो कर दो रक्अ़तें पढ़ीं जिन में क़ियाम व रुकूओ़ सुजूद को त़वील किया फिर पढ़ कर आराम फ़रमाया यहां तक कि सांस की आवाज़ आई, यूंही तीन बार में छे रक्अ़तें पढ़ीं हर बार मिस्वाक व वुज़ू करते और इन आयतों की तिलावत फ़रमाते फिर वित्र की तीन रक्अ़तें पढ़ीं।[2]

ह़दीस 2 नीज़ इसी में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : रात की नमाज़ों के आख़िर में वित्र पढ़ो और फ़रमाते हैं : ''सुब्ह़ से पेश्तर वित्र पढ़ो।''[3]

ह़दीस 3 मुस्लिम व तिरमिज़ी व इब्ने माजह वग़ैरहुम जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : ''जिसे अन्देशा हो कि पिछली रात में न उठेगा वोह अव्वल में पढ़ ले और जिसे उम्मीद हो कि पिछले को उठेगा वोह पिछली रात में पढ़े कि आख़िर शब की नमाज़ मश्हूद है (यानी इस में मलाइकए रह़मत ह़ाज़िर होते हैं) और येह अफ़्ज़ल है।''[4]

ह़दीस 4 ता 6 अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** वित्र है वित्र को मह़बूब रखता है, लिहाज़ा ऐ क़ुरआन वालो ! वित्र पढ़ो।[5] और इसी के मिस्ल जाबिर व अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी।

ह़दीस 7 ता 11 अबू दावूद व तिरमिज़ी व इब्ने माजह ख़ारिजा बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : ''**अल्लाह** तआ़ला ने एक नमाज़ से तुम्हारी मदद फ़रमाई कि वोह सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है वोह वित्र है, **अल्लाह** तआ़ला ने उसे इ़शा व तुलूए़ फ़ज्र के दरमियान में रखा है।''[6] येह ह़दीस दीगर सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से भी मरवी है, मसलन

1 ..... پ۲، البقرة: ١٦٤.
2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب الدعاء ... إلخ، الحديث: ١٩١-(٧٦٣)، ص٣٨٧.
3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب صلاة الليل... إلخ، الحديث: ٧٥٠، ١٥١-(٧٥١)، ص٣٧٨.
4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب من خاف أن لا يقوم من آخر الليل... إلخ، الحديث: ٧٥٥، ص٣٨٠.
5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء أن الوتر ليس بحتم، الحديث: ٤٥٣، ج٢، ص٤.
6 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الوتر، باب استحباب الوتر، الحديث: ١٤١٨، ج٢، ص٨٨.

www.dawateislami.net

मुआ़ज़ बिन जबल व अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर व इब्ने अ़ब्बास व उ़क़्बा बिन आ़मिर जुहन्नी व वग़ैरहुम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم ।

ह़दीस 12 तिरमिज़ी ज़ैद बिन अस्लम से मुरसलन रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो वित्र से सो जाए तो सुब्ह़ को पढ़ ले ।"(1)

ह़दीस 13 ता 16 इमाम अह़मद उबय बिन कअ़ब से और दारिमी इब्ने अ़ब्बास से और अबू दावूद व तिरमिज़ी उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा से और नसाई अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबज़े رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से रावी, "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم वित्र की पहली रक्अ़त में سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰی और दूसरी में قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और तीसरी में قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ते ।"(2)

ह़दीस 17 अह़मद व अबू दावूद व ह़ाकिम ब इफ़्तदए तस्ह़ीह़ बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "वित्र ह़क़ है जो वित्र न पढ़े वोह हम में से नहीं, वित्र ह़क़ है जो वित्र न पढ़े वोह हम में से नहीं, वित्र ह़क़ है जो वित्र न पढ़े वोह हम में से नहीं ।"(3)

ह़दीस 18 अबू दावूद व तिरमिज़ी व इब्ने माजह अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "जो वित्र से सो जाए या भूल जाए तो जब बेदार हो या याद आए पढ़ ले ।"(4)

ह़दीस 19 व 20 अह़मद व नसाई व दारे क़ुत़नी ब रिवायत अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबज़े अ़न अबीह और अबू दावूद व नसाई उबय बिन कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से रावी कि "हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जब वित्र में सलाम फेरते, तीन बार سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ कहते और तीसरी बार बुलन्द आवाज़ से कहते ।"(5)

मसाइले फ़िक़्हिय्या

वित्र वाजिब है अगर सह्वन या क़स्दन न पढ़ा तो क़ज़ा वाजिब है और साह़िबे तरतीब के लिये अगर येह याद है कि नमाज़े वित्र नहीं पढ़ी है और वक़्त में गुन्जाइश भी है तो फ़ज्र की नमाज़ फ़ासिद है, ख़्वाह शुरूअ़ से पहले याद हो या दरमियान में याद आ जाए ।(6) (درمختار وغیرہ)

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في الرجل ينام عن الوتر أو ينساه، الحديث: ٤٦٥، ج٢، ص١٣١.

2 ..... "سنن النسائي"، كتاب قيام الليل... إلخ، باب نوع آخر من القرأة في الوتر، الحديث: ١٧٣٢، ص٢٢٠٢.
و "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في ما يقرأ به في الوتر، الحديث: ٤٦٢، ج٢، ص١٠.

3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الوتر، باب فيمن لم يوتر، الحديث: ١٤١٩، ج٢، ص٨٩.

4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في الرجل ينام عن الوتر أو ينساه، الحديث: ٤٦٤، ج٢، ص١٢.

5 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الوتر، باب في الدعاء بعد الوتر، الحديث: ١٤٣٠، ج٢، ص٩٣.
و "سنن النسائي"، كتاب قيام الليل... إلخ، باب ذكر الاختلاف على شعبة فيه، الحديث: ١٧٣٣، ص٢٢٠٢.

6 ..... "الدرالمختار" معه "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٢٩ ـ ٥٣٢، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 1 वित्र की नमाज़ बैठ कर या सुवारी पर बग़ैर उ़ज़्र नहीं हो सकती ।[1] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 2 नमाज़े वित्र तीन रक्अ़त है और इस में क़ादए ऊला वाजिब है और क़ादए ऊला में सिर्फ़ अत्तहिय्यात पढ़ कर खड़ा हो जाए, न दुरूद पढ़े न सलाम फेरे जैसे मग़रिब में करते हैं उसी त़रह़ करे और अगर क़ादए ऊला भूल कर खड़ा हो गया तो लौटने की इजाज़त नहीं बल्कि सज्दए सह्व करे ।[2] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 3 वित्र की तीनों रक्अ़तों में मुत़्लक़न क़िराअत फ़र्ज़ है और हर एक में बादे फ़ातिह़ा सूरत मिलाना वाजिब और बेहतर येह है कि पहली में سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى या اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ दूसरी में قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ तीसरी में قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़े । और कभी कभी और सूरतें भी पढ़ ले, तीसरी रक्अ़त में क़िराअत से फ़ारिग़ हो कर रुकूअ़ से पहले कानों तक हाथ उठा कर **अल्लाहु अक्बर** कहे जैसे तक्बीरे तह़रीमा में करते हैं फिर हाथ बांध ले और दुआ़ए क़ुनूत पढ़े, दुआ़ए क़ुनूत का पढ़ना वाजिब है और इस में किसी ख़ास दुआ़ का पढ़ना ज़रूरी नहीं, बेहतर वोह दुआ़एं हैं जो नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से साबित हैं और इन के इ़लावा कोई और दुआ़ पढ़े जब भी ह़रज नहीं, सब में ज़ियादा मश्हूर दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَ نَسْتَغْفِرُكَ وَ نُؤْمِنُ بِكَ وَ نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ كُلَّهٗ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَ نَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ط اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ط .[3]

और बेहतर येह है कि इस दुआ़ के साथ वोह दुआ़ भी पढ़े जो ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को तालीम फ़रमाई वोह येह है :

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ فِيْ مَنْ هَدَيْتَ وَعَافِنِيْ فِيْ مَنْ عَافَيْتَ وَ تَوَلَّنِيْ فِيْ مَنْ تَوَلَّيْتَ وَ بَارِكْ لِيْ فِيْ مَا اَعْطَيْتَ وَقِنِيْ شَرَّ مَا قَضَيْتَ فَاِنَّكَ تَقْضِيْ وَلَا يُقْضٰى عَلَيْكَ اِنَّهٗ لَا يَذِلُّ مَنْ وَّالَيْتَ وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٣٢، وغيره .

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في منكر الوتر... إلخ، ج٢، ص٥٣٢، باب سجود السهو، ص٦٦٢.

3 ...**तर्जमा :** इलाही ! हम तुझ से मदद त़लब करते हैं और मग़्फ़िरत चाहते हैं और तुझ पर ईमान लाते हैं और तुझ पर तवक्कुल करते हैं और हर भलाई के साथ तेरी सना करते हैं और हम तेरा शुक्र करते हैं नाशुक्री नहीं करते और हम जुदा होते हैं और उस शख़्स को छोड़ते हैं जो तेरा गुनाह करे । ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तेरे ही लिये नमाज़ पढ़ते हैं और सज्दा करते हैं और तेरी ही त़रफ़ दौड़ते और सई करते हैं और तेरी रह़मत के उम्मीदवार हैं । और तेरे अ़ज़ाब से डरते हैं बेशक तेरा अ़ज़ाब काफ़िरों को पहुंचने वाला है । 12

www.dawateislami.net

تَبَارَكْتَ وَ تَعَالَيْتَ سُبْحَانَكَ رَبَّ الْبَيْتِ وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَاٰلِهٖ.[1]

और एक दुआ़ वोह है जो मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم आख़िरे वित्र में पढ़ते।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ لَا اُحْصِيْ ثَنَآءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ.[2]

और हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ عَذَابَكَ الْجِدَّ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ के बाद येह पढ़ते थे :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنَاتِ وَ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَاَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِهِمْ وَانْصُرْهُمْ عَلٰى عَدُوِّكَ وَعَدُوِّهِمْ اَللّٰهُمَّ الْعَنْ كَفَرَةَ اَهْلِ الْكِتَابِ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ رُسُلَكَ وَيُقَاتِلُوْنَ اَوْلِيَآئَكَ اَللّٰهُمَّ خَالِفْ بَيْنَ كَلِمَتِهِمْ وَزَلْزِلْ اَقْدَامَهُمْ وَاَنْزِلْ عَلَيْهِمْ بَاْسَكَ الَّذِيْ لَمْ يُرَدَّ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ.[3]

दुआए कुनूत के बाद दुरूद शरीफ़ पढ़ना बेहतर है।[4] (غنیہ وردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 4 दुआए कुनूत आहिस्ता पढ़े इमाम हो या मुन्फ़रिद या मुक़्तदी, अदा हो या क़ज़ा, रमज़ान में हो या और दिनों में।[5] (ردالمحتار)

---

1 ...**तर्जमा :** इलाही ! तू मुझे हिदायत दे उन लोगों में जिन को तू ने हिदायत दी और आ़फ़ियत दे उन के ज़ुमरे में जिन में तू ने आ़फ़ियत दी और मेरा वली हो उन में जिन का तू वली हुवा और जो कुछ तू ने दिया उस में बरकत दे और जो कुछ तू ने फ़ैसला कर दिया उस के शर से मुझे बचा बेशक तू हुक्म करता है और तुझ पर हुक्म नहीं किया जाता, बेशक तेरा दोस्त ज़लील नहीं होता और तेरा दुश्मन इ़ज़्ज़त नहीं पाता, तू बरकत वाला है तू पाक है, ऐ बैत (काबे) के मालिक और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) दुरूद भेजे नबी पर और उन की आल पर। 12

2 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तेरी ख़ुशनूदी की पनाह मांगता हूं तेरी नाख़ुशी से और तेरी आ़फ़ियत की तेरे अ़ज़ाब से और तेरी ही पनाह मांगता हूं तुझ से (तेरे अ़ज़ाब से) मैं तेरी पूरी सना नहीं कर सकता हूं जैसी तू ने अपनी सना की। 12

3 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू मुझे बख़्श दे और मोमिनीनो मोमिनात व मुस्लिमीनो मुस्लिमात को और उन के दिलों में उल्फ़त पैदा कर दे और उन के आपस की हालत दुरुस्त कर दे और उन को तू अपने दुश्मन और ख़ुद उन के दुश्मन पर मदद कर दे। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू कुफ़्फ़ारे अहले किताब पर लानत कर जो तेरे रसूलों की तक्ज़ीब करते हैं और तेरे दोस्तों से लड़ते हैं, इलाही तू उन की बात में मुख़ालफ़त डाल दे और उन के क़दमों को हटा दे और उन पर अपना वोह अ़ज़ाब नाज़िल कर जो क़ौमे मुजरिमीन से वापस नहीं होता। 12

4 ..... "غنية المتملي"، صلاة الوتر، ص٤١٤ ـ ٤١٨.

و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في منكر الوتر... إلخ، ج٢، ص٥٣٤.

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في منكر الوتر... إلخ، ج٢، ص٥٣٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 5 जो दुआ़ए कुनूत न पढ़ सके येह पढ़े : رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ कहे ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 6 अगर दुआ़ए कुनूत पढ़ना भूल गया और रुकूअ़ में चला गया तो न क़ियाम की त़रफ़ लौटे न रुकूअ़ में पढ़े और अगर क़ियाम की त़रफ़ लौट आया और कुनूत पढ़ा और रुकूअ़ न किया तो नमाज़ फ़ासिद न होगी, मगर गुनहगार होगा और अगर सिर्फ़ अल ह़म्द पढ़ कर रुकूअ़ में चला गया था तो लौटे और सूरत व कुनूत पढ़े फिर रुकूअ़ करे और आख़िर में सज्दए सह्व करे । यूंही अगर अल ह़म्द भूल गया और सूरत पढ़ ली थी तो लौटे और फ़ातिह़ा व सूरत व कुनूत पढ़ कर फिर रुकूअ़ करे ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 7 इमाम को रुकूअ़ में याद आया कि दुआ़ए कुनूत नहीं पढ़ी तो क़ियाम की त़रफ़ औ़द न करे,[3] फिर भी अगर खड़ा हो गया और दुआ़ पढ़ी तो रुकूअ़ का इआ़दा न चाहिये[4] और अगर इआ़दा कर लिया और मुक़्तदियों ने पहले रुकूअ़ में इमाम का साथ न दिया और दूसरा इमाम के साथ किया, या पहला रुकूअ़ इमाम के साथ किया दूसरा न किया, दोनों ह़ाल में उन की नमाज़ भी फ़ासिद न होगी ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 8 कुनूते वित्र में मुक़्तदी इमाम की मुताबअ़त[6] करे, अगर मुक़्तदी कुनूत से फ़ारिग़ न हुवा था कि इमाम रुकूअ़ में चला गया तो मुक़्तदी भी इमाम का साथ दे और अगर इमाम ने बे कुनूत पढ़े रुकूअ़ कर दिया और मुक़्तदी ने अभी कुछ न पढ़ा तो मुक़्तदी को अगर रुकूअ़ फ़ौत होने का अन्देशा हो जब तो रुकूअ़ कर दे, वरना कुनूत पढ़ कर रुकूअ़ में जाए और उस ख़ास दुआ़ की ह़ाजत नहीं जो दुआ़ए कुनूत के नाम से मश्हूर है, बल्कि मुत़्लक़न कोई दुआ़ जिसे कुनूत कह सकें पढ़ ले ।[7] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 9 अगर शक हुवा कि येह रक्अ़त पहली है या दूसरी या तीसरी तो इस में भी कुनूत पढ़े और क़ादा करे, फिर और दो रक्अ़तें पढ़े और हर रक्अ़त में कुनूत भी पढ़े और

---

1 ..... "الفتاوی الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن في صلاة الوتر، ج١، ص١١١.

ऐ हमारे परवरदिगार ! तू हम को दुन्या में भलाई दे (और हम को आख़िरत में भलाई दे) और हम को जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा । 12

2 ..... "الفتاوی الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن في صلاة الوتر، ج١، ص١١١.

3 ...यानी वापस न लौटे । 4 ...यानी रुकूअ़ न लौटाए ।

5 ..... "الفتاوی الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن في صلاة الوتر، ج١، ص١١١.

6 ...पैरवी । 7 ..... "الفتاوی الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن في صلاة الوتر، ج١، ص١١١.

و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب: الاقتداء بالشافعي، ج٢، ص٥٤٠.

www.dawateislami.net

क़ादा करे । यूंही दूसरी और तीसरी होने में शक वाक़ेअ़ हो तो दोनों में कुनूत पढ़े ।[1] (درمختار، عالمگیری)

मस्अला 10 भूल कर पहली या दूसरी में दुआए कुनूत पढ़ ली तो तीसरी में फिर पढ़े येही राजेह़ है ।[2] (غنیہ، حلیہ، بحر)

मस्अला 11 मस्बूक़ इमाम के साथ कुनूत पढ़े बाद को न पढ़े और अगर इमाम के साथ तीसरी रक्अ़त के रुकूअ़ में मिला है तो बाद को जो पढ़ेगा उस में कुनूत न पढ़े ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 12 वित्र की नमाज़ शाफ़ेइ़य्युल मज़हब के पीछे पढ़ सकता है, बशर्ते कि दूसरी रक्अ़त के बाद सलाम न फेरे वरना सह़ीह़ नहीं और इस सूरत में कुनूत इमाम के साथ पढ़े यानी तीसरी रक्अ़त के रुकूअ़ से खड़े होने के बाद जब वोह शाफ़ेई़ इमाम पढ़े ।[4] (عامۂ کتب)

मस्अला 13 फ़ज्र में अगर शाफ़ेइ़य्युल मज़हब की इक़्तिदा की और उस ने अपने मज़हब के मुवाफ़िक़ कुनूत पढ़ा तो येह न पढ़े, बल्कि हाथ लटकाए हुए इतनी देर चुप खड़ा रहे ।[5] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 14 वित्र के सिवा और किसी नमाज़ में कुनूत न पढ़े । हां, अगर ह़ादिसए अ़ज़ीमा वाक़ेअ़ हो तो फ़ज्र में भी पढ़ सकता है और ज़ाहिर येह है कि रुकूअ़ के क़ब्ल कुनूत पढ़े ।[6] (درمختار وحموی[7])

मस्अला 15 वित्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई तो क़ज़ा पढ़नी वाजिब है अगर्चे कितना ही

---

1 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصلاۃ، باب الوتر و النوافل، ج۲، ص۵٤۱.
و "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصلاۃ، الباب الثامن في صلاۃالوتر، ج۱، ص۱۱۱.

2 ..... "غنیة المتملي "، صلاۃ الوتر، ص٤۲۲. و "البحرالرائق"، کتاب الصلاۃ، باب الوتر و النوافل، ج۲، ص۷۳.

3 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصلاۃ، الباب الثامن في صلاۃ الوتر، ج۱، ص۱۱۱.

4 ..... البحر الرائق، کتاب الصلاۃ، باب الوتر و النوافل، ج۲، ص۷۰، ۷۸.

5 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصلاۃ، باب الوتر و النوافل، ج۲، ص۵۳۸، وغیرہ.

6 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصلاۃ، باب الوتر و النوافل، ج۲، ص۵٤۱، و "الفتاوی الرضویة"، ج۷، ص٤۹۰.

7 ...**बहारे शरीअ़त** में इस जगह दुर्रे मुख़्तार व शुरुम्बुलाली का ह़वाला लिखा है, लेकिन हम ने सदरुश्शरीअ़ह के फ़रमान के मुत़ाबिक़ "दुर्रे मुख़्तार व ह़मवी" कर दिया । चुनान्चे, सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی "फ़तावा अमजदिया", जि. 1, स. 207 के ह़ाशिये में लिखते हैं कि : फ़क़ीर ने बहारे शरीअ़त में ब सूरते नाज़िला नमाज़े फ़ज्र में कुनूत का क़ब्ले रुकूअ़ होना तह़रीर किया मगर उस में ह़वाला शुरुम्बुलाली का दिया । इस मस्अले की तह़रीर के वक़्त येह मालूम हुवा कि शुरुम्बुलाली बादर्रुकूअ़ के क़ाइल हैं । अस्ल मुसव्वदा बहारे शरीअ़त का निकलवा कर देखा गया उस में पहले येह इ़बारत लिखी हुई थी कि कुनूते नाज़िला बादर्रुकूअ़ है और शुरुम्बुलाली का ह़वाला । आला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّہٗ ने बादर्रुकूअ़ क़लम ज़द करा दिया और बजाए इस के क़ब्ले रुकूअ़ बनवाया मगर ग़लती से शुरुम्बुलाली जो ह़वाला तह़रीर था वोह क़लम ज़द नहीं हुवा, "लिहाज़ा लोगों को चाहिये कि बहारे शरीअ़त में शुरुम्बुलाली को क़लम ज़द कर के उस की जगह पर ह़मवी लिख लें ।" 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

ज़माना हो गया हो, क़स्दन क़ज़ा की हो या भूले से क़ज़ा हो गई और जब क़ज़ा पढ़े तो उस में कुनूत भी पढ़े । अलबत्ता क़ज़ा में तक्बीरे कुनूत के लिये हाथ न उठाए जब कि लोगों के सामने पढ़ता हो कि लोग इस की तक़्सीर पर मुत्तलअ़ होंगे ।[1] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 16 रमज़ान शरीफ़ के इलावा और दिनों में वित्र जमाअ़त से न पढ़े और अगर तदाई के तौर पर हो तो मक्रूह है ।[2] (درمختار)

मस्अला 17 जिसे आख़िरे शब में जागने पर एतिमाद हो तो बेहतर येह है कि पिछली रात में वित्र पढ़े, वरना बादे इ़शा पढ़ ले ।[3] (ह़दीस)

मस्अला 18 अव्वले शब में वित्र पढ़ कर सो रहा, फिर पिछले को जागा तो दोबारा वित्र पढ़ना जाइज़ नहीं और नवाफ़िल जितने चाहे पढ़े ।[4] (غنیہ)

मस्अला 19 वित्र के बाद दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ना बेहतर है, इस की पहली रक्अ़त में اِذَا زُلْزِلَتْ, दूसरी में قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ पढ़ना बेहतर है। ह़दीस में है कि "अगर रात में न उठा तो येह तहज्जुद के क़ाइम मक़ाम हो जाएंगी ।"[5] येह मज़ामीन अह़ादीस से साबित हैं ।

सुननो नवाफ़िल का बयान

ह़दीस 1 सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : "जो मेरे किसी वली से दुश्मनी करे, उसे मैं ने लड़ाई का एलान दे दिया और मेरा बन्दा किसी शै से उस क़दर तक़र्रुब ह़ासिल नहीं करता जितना फ़राइज़ से होता है और नवाफ़िल के ज़रीए से हमेशा क़ुर्ब ह़ासिल करता रहता है, यहां तक कि उसे महबूब बना लेता हूं और अगर वोह मुझ से सुवाल करे तो उसे दूंगा और पनाह मांगे तो पनाह दूंगा ।"[6] (अल ह़दीस)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن في صلاة الوتر، ج١، ص١١١.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في منكر الوتر... إلخ، ج٢، ص٥٣٣.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٦٠٤.

3 ..... انظر: "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب من خاف ان لا يقوم... إلخ، الحديث: ٧٥٥، ص٣٨٠.

4 ..... "غنية المتملي"، صلاة الوتر، ص٤٢٤.

5 ..... المرجع السابق.

6 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الرقاق، باب التواضع، الحديث: ٦٥٠٢، ج٤، ص٢٤٨.

www.dawateislami.net

सुनने मुअक्कदा का ज़िक्र

ह़दीस 2 व 3 मुस्लिम व अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई उम्मुल मुअमिनीन उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो मुसलमान बन्दा **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये हर रोज़ फ़र्ज़ के इ़लावा तत़व्वोअ़ (नफ़्ल) की बारह रक्अ़तें पढ़े **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में एक मकान बनाएगा, चार ज़ोह्र से पहले और दो ज़ोह्र के बाद और दो[2] बादे मग़रिब और दो[2] बादे इ़शा और दो[2] क़ब्ले नमाज़े फ़ज्र।"[1] और रक्अ़ात की तफ़्सील सिर्फ़ तिरमिज़ी में है। तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह की रिवायत उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से येह है कि "जो इन पर मुह़ाफ़ज़त करेगा, जन्नत में दाख़िल होगा।"[2]

ह़दीस 4 तिरमिज़ी में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अदबारे नुजूम फ़ज्र के पहले की दो[2] रक्अ़तें हैं और अदबारे सुजूद मग़रिब के बाद की दो[2]।"[3]

सुन्नते फ़ज्र के फ़ज़ाइल

ह़दीस 5 मुस्लिम व तिरमिज़ी उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से रावी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم : "फ़ज्र की दो[2] रक्अ़तें दुन्या व मा फ़ीहा से बेहतर हैं।"[4]

ह़दीस 6 बुख़ारी व मुस्लिम व अबू दावूद व नसाई इन्हीं से रावी, कहती हैं : "हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) इन की जितनी मुह़ाफ़ज़त फ़रमाते किसी और नफ़्ल नमाज़ की नहीं करते।"[5]

ह़दीस 7 त़बरानी अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रावी कि एक साह़िब ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ! कोई ऐसा अ़मल इरशाद फ़रमाइये कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे उस से नफ़्अ़ दे। फ़रमाया : "फ़ज्र की दोनों रक्अ़तों को लाज़िम कर लो, इन में बड़ी फ़ज़ीलत है।"[6]

---

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب فضل السنن... إلخ، الحديث: ١٠٣-(٧٢٨)، ص٣٦٧.
و"جامع الترمذي"، أبواب الصلاة، باب ماجاء فيمن صلى في يوم و ليلة... إلخ، الحديث: ٤١٥، ج١، ص٤٢٤.

2 ..... "سنن النسائي"، كتاب قيام الليل... إلخ، باب ثواب من صلى في اليوم و الليلة... إلخ، الحديث: ١٧٩١، ص٣٠٧.

3 ..... "جامع الترمذي"، أبواب التفسير، باب و من سورة الطور، الحديث: ٣٢٨٦، ج٥، ص١٨٢.

4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب استحباب ركعتي سنة الفجر... إلخ، الحديث: ٧٢٥، ص٣٦٥.

5 ..... "صحيح البخاري"، كتاب التهجد، باب تعاهد ركعتي الفجر... إلخ، الحديث: ١١٦٩، ج١، ص٣٩٥.

6 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب النوافل، الحديث: ٣، ج ١، ص٢٢٣.

www.dawateislami.net

ह़दीस 8 अबू याला ब अस्नादे ह़सन इन्हीं से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : ''قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ तिहाई कुरआन के बराबर है और قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ चौथाई कुरआन के बराबर और इन दोनों को फ़ज्र की सुन्नतों में पढ़ते और येह फ़रमाते कि इन में ज़माने की रग़बतें हैं।''(1)

ह़दीस 9 अबू दावूद अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत करते हैं कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : ''फ़ज्र की सुन्नतें न छोड़ो, अगर्चे तुम पर दुश्मनों के घोड़े आ पड़ें।''(2)

सुन्नते ज़ोह्र के फ़ज़ाइल

ह़दीस 10 अह़मद व अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह उम्मुल मुअमिनीन उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : ''जो शख़्स ज़ोह्र से पहले चार और बाद में चार रक्अ़तों पर मुह़ाफ़ज़त करे, **अल्लाह** तआ़ला उस को आग पर ह़राम फ़रमा देगा।''(3) तिरमिज़ी ने इस ह़दीस को ह़सन सह़ीह़ ग़रीब कहा।

ह़दीस 11 अबू दावूद व इब्ने माजह अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : ''ज़ोह्र से पहले चार रक्अ़तें जिन के दरमियान में सलाम न फेरा जाए, उन के लिये आस्मान के दरवाज़े खोले जाते हैं।''(4)

ह़दीस 12 अह़मद व तिरमिज़ी अ़ब्दुल्लाह बिन साइब رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم आफ़्ताब ढलने के बाद नमाज़े ज़ोह्र से पहले चार रक्अ़तें पढ़ते और फ़रमाते : ''येह ऐसी साअ़त है कि इस में आस्मान के दरवाज़े खोले जाते हैं, लिहाज़ा मैं महबूब रखता हूं कि इस में मेरा कोई अ़मले सालेह़ बुलन्द किया जाए।''(5)

ह़दीस 13 बज़्ज़ार ने सौबान رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत की, कि दोपहर के बाद चार रक्अ़त पढ़ने को हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) महबूब रखते, उम्मुल मुअमिनीन आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! मैं देखती हूं कि इस वक़्त में हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) नमाज़ महबूब रखते हैं ! फ़रमाया : ''इस वक़्त आस्मान के दरवाज़े खोले

1 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب النوافل، الحديث: ٥، ج ١، ص ٢٢٤.
و "المعجم الأوسط"، الحديث: ١٨٦، ج ١، ص ٦٨.

2 ..... "سنن أبي داود"، كتاب التطوع، باب في تخفيفهما، الحديث: ١٢٥٨، ج ٢، ص ٣١.

3 ..... "سنن النسائي"، كتاب قيام الليل... إلخ، باب الاختلاف على اسماعيل بن أبي خالد، الحديث: ١٨١٣، ص ٣١٠.

4 ..... "سنن أبي داود"، كتاب التطوع، باب الأربع قبل الظهر و بعدها، الحديث: ١٢٧٠، ج ٢، ص ٣٥.

5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في الصلاة عند الزوال، الحديث: ٤٧٧، ج ٢، ص ٢٠.

www.dawateislami.net

जाते हैं और **अल्लाह** तबारक व तआ़ला मख़्लूक़ की त़रफ़ नज़रे रह़मत फ़रमाता है और इस नमाज़ पर आदम व नूह़ व इब्राहीम व मूसा व ईसा عَلَيْهِمُ السَّلَام मुह़ाफ़ज़त करते।''(1)

ह़दीस 14 व 15 त़बरानी बराअ बिन आ़ज़िब (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : ''जिस ने ज़ोह्र के पहले चार रक्अ़तें पढ़ीं, गोया उस ने तहज्जुद की चार रक्अ़तें पढ़ीं और जिस ने इ़शा के बाद चार पढ़ीं तो येह शबे क़द्र में चार के मिस्ल हैं।''(2) उ़मर फ़ारूक़े आज़म व बाज़ दीगर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से भी इसी की मिस्ल मरवी।

सुन्नते अ़स्र के फ़ज़ाइल

ह़दीस 16 अह़मद व अबू दावूद व तिरमिज़ी ब इफ़ादए तह़सीन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : ''**अल्लाह** तआ़ला उस शख़्स पर रह़म करे, जिस ने अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें पढ़ीं।''(3)

ह़दीस 17 तिरमिज़ी मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि ''हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें पढ़ा करते।''(4) और अबू दावूद की रिवायत में है कि दो पढ़ते थे।(5)

ह़दीस 18 व 19 त़बरानी कबीर में उम्मुल मुअमिनीन उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''जो अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें पढ़े, **अल्लाह** तआ़ला उस के बदन को आग पर ह़राम फ़रमा देगा।''(6) दूसरी रिवायत त़बरानी की अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से है कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने मज्मए़ सह़ाबा में जिस में अमीरुल मुअमिनीन उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ भी थे, फ़रमाया : ''जो अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें पढ़े, उसे आग न छूएगी।''(7)

सुन्नते मग़रिब के फ़ज़ाइल

ह़दीस 20 व 21 रज़ीन ने मक्ह़ूल से मुरसलन रिवायत की, कि फ़रमाते हैं : ''जो शख़्स बादे मग़रिब कलाम करने से पहले दो रक्अ़तें पढ़े, उस की नमाज़ इ़ल्लिय्यीन में उठाई जाती

1 ..... "مسند البزار"، مسند ثوبان رضي الله تعالىٰ عنه، الحديث: ٤١٦٦، ج ١٠، ص١٠٢.
2 ..... "المعجم الأوسط" للطبراني، باب الميم، الحديث: ٦٣٣٢، ج ٤، ص٣٨٦.
3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب التطوع، باب الصلاة قبل العصر، الحديث: ١٢٧١، ج٢، ص٣٥.
4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصلاة، باب ماجاء في الأربع قبل العصر، الحديث: ٤٢٩، ج١، ص٤٣٧.
5 ..... "سنن أبي داود"، كتاب التطوع، باب الصلاة قبل العصر، الحديث: ١٢٧٢، ج٢، ص٣٥.
6 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ٦١١، ج ٢٣، ص٢٨١.
7 ..... "المعجم الأوسط"، باب الألف، الحديث: ٢٥٨٠، ج ٢، ص٧٧.

www.dawateislami.net

है।" और एक रिवायत में "चार रक्अ़त" है। नीज़ इन्हीं की रिवायत हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से है, उस में इतनी बात ज़ियादा है कि फ़रमाते थे : "मग़रिब के बाद की दोनों रक्अ़तें जल्द पढ़ो कि वोह फ़र्ज़ के साथ पेश होती हैं।"(1)

ह़दीस 22 तिरमिज़ी व इब्ने माजह अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि फ़रमाते हैं : "जो शख़्स मग़रिब के बाद छे रक्अ़तें पढ़े और इन के दरमियान में कोई बुरी बात न कहे तो बारह बरस की इ़बादत के बराबर की जाएंगी।"(2)

ह़दीस 23 त़बरानी की रिवायत अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से है कि फ़रमाते हैं : "जो मग़रिब के बाद छे रक्अ़तें पढ़े, उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे, अगर्चे समुन्दर के झाग बराबर हों।"(3)

ह़दीस 24 तिरमिज़ी की रिवायत उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से है : "जो मग़रिब के बाद बीस रक्अ़तें पढ़े, **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में एक मकान बनाएगा।"(4)

ह़दीस 25 अबू दावूद की रिवायत इन्हीं से है कि फ़रमाती हैं : इ़शा की नमाज़ पढ़ कर नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मेरे मकान में जब तशरीफ़ लाते तो "चार या छे रक्अ़तें पढ़ते।"(5)

मसाइले फ़िक़्हिय्या

सुन्नतें बाज़ मुअक्कदा हैं कि शरीअ़त में इस पर ताकीद आई। बिला उ़ज़्र एक बार भी तर्क करे तो मुस्तह़िक़्क़े मलामत है और तर्क की आ़दत करे तो फ़ासिक़, मर्दूदुश्शहादह व मुस्तह़िक़्क़े नार है।(6) और बाज़ अइम्मा ने फ़रमाया कि "वोह गुमराह ठहराया जाएगा और गुनहगार है, अगर्चे उस का गुनाह वाजिब के तर्क से कम है।" तल्वीह़ में है कि इस का तर्क क़रीब ह़राम के है। इस का तारिक मुस्तह़िक़ है कि مَعَاذَاللّٰہ ! शफ़ाअ़त से महरूम हो जाए कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मेरी सुन्नत को तर्क करेगा, उसे मेरी शफ़ाअ़त न मिलेगी।" सुन्नते मुअक्कदा को सुननुल हुदा भी कहते हैं। दूसरी क़िस्म ग़ैर मुअक्कदा है जिस को सुननुज़्ज़वाइद भी कहते हैं। इस पर शरीअ़त में ताकीद नहीं आई, कभी

1 ..... "مشكاة المصابيح"، كتاب الصلاة، باب السنن و فضائلها، الحديث: ١١٨٤، ١١٨٥، ج ١، ص ٣٤٥.

2 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصلاة، باب ماجاء في فضل التطوع... إلخ، الحديث: ٤٣٥، ج ١، ص ٤٣٩.

3 ..... "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٧٢٤٥، ج ٥، ص ٢٥٥.

4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصلاة، باب ماجاء في فضل التطوع... إلخ، الحديث ٤٣٥، ج ١، ص ٤٣٩.

5 ..... "سنن أبي داود"، كتاب التطوع، باب الصلاة بعد العشاء، الحديث: ١٣٠٣، ج ٢، ص ٤٧.

6...यानी उस की गवाही क़ाबिले क़बूल नहीं और जहन्नम का ह़क़दार है।

www.dawateislami.net

इस को मुस्तह़ब और मन्दूब भी कहते हैं और नफ़्ल आ़म है कि सुन्नत पर भी इस का इ़त्लाक़ आया है और इस के ग़ैर को भी नफ़्ल कहते हैं। येही वज्ह है कि फ़ुक़हाए किराम बाबुन्नवाफ़िल में सुनन का भी ज़िक्र करते हैं कि नफ़्ल इन को भी शामिल है।[1] (ردالمحتار)

लिहाज़ा नफ़्ल के जितने अह़काम बयान होंगे वोह सुन्नतों को भी शामिल होंगे, अलबत्ता अगर सुन्नतों के लिये कोई ख़ास बात होगी तो इस मुत़्लक़ हुक्म से उस को अलग किया जाएगा। जहां इस्तिस्ना न हो, इसी मुत़्लक़ हुक्मे नफ़्ल में शामिल समझें।

मस्अला 1 **सुन्नते मुअक्कदा येह हैं :**

(1) दो रक्अ़त नमाज़े फ़ज्र से पहले

(2) चार ज़ोह्र के पहले, दो बाद

(3) दो मग़रिब के बाद

(4) दो इ़शा के बाद और

(5) चार जुमुआ़ से पहले, चार बाद यानी जुमुआ़ के दिन जुमुआ़ पढ़ने वाले पर चौदह रक्अ़तें हैं और इ़लावा जुमुआ़ के बाक़ी दिनों में हर रोज़ बारह रक्अ़तें।[2] (عامۂ کتب)

मस्अला 2 अफ़्ज़ल येह है कि जुमुआ़ के बाद चार पढ़े, फिर दो कि दोनों ह़दीसों पर अ़मल हो जाए।[3] (غنیہ)

मस्अला 3 जो सुन्नतें चार रक्अ़ती हैं मसलन जुमुआ़ व ज़ोह्र की तो चारों एक सलाम से पढ़ी जाएंगी यानी चारों पढ़ कर चौथी के बाद सलाम फेरें, येह नहीं कि दो दो रक्अ़त पर सलाम फेरें और अगर किसी ने ऐसा किया तो सुन्नतें अदा न हुईं। यूंही अगर चार रक्अ़त की मन्नत मानी और दो दो रक्अ़त कर के चार पढ़ीं तो मन्नत पूरी न हुई, बल्कि ज़रूर है कि एक सलाम के साथ चारों पढ़े।[4] (درمختاروغیرہ)

मस्अला 4 सब सुन्नतों में क़वी तर सुन्नते फ़ज्र है, यहां तक कि बाज़ इस को वाजिब कहते हैं और इस की मशरूइ़य्यत का अगर कोई इन्कार करे तो अगर शुब्हतन या बराहे जह्ल हो तो ख़ौफ़े कुफ़्र है और अगर दानिस्ता बिला शुबा हो तो उस की तक्फ़ीर की जाएगी व लिहाज़ा येह सुन्नतें बिला उ़ज़्र न बैठ कर हो सकती हैं न सुवारी पर न चलती गाड़ी पर, इन का हुक्म इन बातों में बिल्कुल मिस्ले वित्र है। इन के बाद फिर मग़रिब की सुन्नतें फिर ज़ोह्र

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الطهارة، مطلب في السنة وتعاريفها، ج١، ص٢٣٠، وغيره.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٤٥.

3 ..... "غنية المتملي"، فصل في النوافل، ص٣٨٩.

4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٤٥، وغيره.

www.dawateislami.net

के बाद की फिर इ़शा के बाद की फिर ज़ोह्र से पहले की सुन्नतें और असह् येह है कि सुन्नते फ़ज्र के बाद ज़ोह्र की पहली सुन्नतों का मर्तबा है कि ह़दीस में ख़ास इन के बारे में फ़रमाया कि "जो इन्हें तर्क करेगा, उसे मेरी **शफ़ाअ़त** न पहुंचेगी।"[1] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 5 अगर कोई आ़लिम मर्जए़ फ़तवा हो कि फ़तवा देने में उसे सुन्नत पढ़ने का मौक़अ़ नहीं मिलता तो फ़ज्र के इ़लावा बाक़ी सुन्नतें तर्क कर सकता है कि इस वक़्त अगर मौक़अ़ नहीं है तो मौक़ूफ़ रखे, अगर वक़्त के अन्दर मौक़अ़ मिले पढ़ ले वरना मुआ़फ़ हैं और फ़ज्र की सुन्नतें इस ह़ालत में भी तर्क नहीं कर सकता।[2] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 6 फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई और ज़वाल से पहले पढ़ ली तो सुन्नतें भी पढ़े, वरना नहीं, इ़लावा फ़ज्र के और सुन्नतें क़ज़ा हो गईं तो उन की क़ज़ा नहीं।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 7 दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े और येह गुमान था कि फ़ज्र तुलूअ़ न हुई बाद को मालूम हुवा कि तुलूअ़ हो चुकी थी तो येह रक्अ़तें सुन्नते फ़ज्र के क़ाइम मक़ाम हो जाएंगी और चार रक्अ़त की निय्यत बांधी और इन में दो पिछली तुलूए़ फ़ज्र के बाद वाक़ेअ़ हुईं तो येह सुन्नते फ़ज्र के क़ाइम मक़ाम न होंगी।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 8 तुलूए़ फ़ज्र से पहले सुन्नते फ़ज्र जाइज़ नहीं और तुलूअ़ में शक हो जब भी ना जाइज़ और तुलूअ़ के साथ साथ शुरूअ़ की तो जाइज़ है।[5] (عالمگیری)

मस्अला 9 ज़ोह्र या जुमुआ़ के पहले की सुन्नत फ़ौत हो गई और फ़र्ज़ पढ़ लिये तो अगर वक़्त बाक़ी है बाद फ़र्ज़ के पढ़े और अफ़्ज़ल येह है कि पिछली सुन्नतें पढ़ कर इन को पढ़े।[6] (فتح القدیر)

मस्अला 10 फ़ज्र की सुन्नत क़ज़ा हो गई और फ़र्ज़ पढ़ लिये तो अब सुन्नतों की क़ज़ा नहीं अलबत्ता इमाम मुह़म्मद رحمہ اللہ تعالیٰ फ़रमाते हैं कि तुलूए़ आफ़्ताब के बाद पढ़ ले तो बेहतर है।[7] (غنیہ) और तुलूअ़ से पेश्तर[8] बिल इत्तिफ़ाक़ मम्नूअ़ है।[9] (ردالمحتار)

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في السنن و النوافل، ج٢، ص٥٤٨ ـ ٥٥٠.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في السنن و النوافل، ج٢، ص٥٤٩.

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في السنن و النوافل، ج٢، ص٥٥٠.

4 ..... المرجع السابق.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٢.

6 ..... "فتح القدير"، كتاب الصلاة، باب ادراك الفريضة، ج١، ص٤١٦، و باب النوافل، ص٣٨٦.

7 ..... "غنية المتملي"، فصل في النوافل، ص٣٩٧.

8 ...यानी सूरज निकलने से पहले।

9 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في السنن و النوافل، ج٢، ص٥٥٠.

www.dawateislami.net

आज कल अक्सर अ़वाम बादे फ़र्ज़ फ़ौरन पढ़ लिया करते हैं येह ना जाइज़ है, पढ़ना हो तो आफ़्ताब बुलन्द होने के बाद ज़वाल से पहले पढ़ें।

मस्अला 11 क़ब्ले तुलूए़ आफ़्ताब सुन्नते फ़ज्र क़ज़ा पढ़ने के लिये येह ह़ीला करना कि शुरूअ़ कर के तोड़ दे फिर अदा करे येह ना जाइज़ है। सुन्नते फ़ज्र पढ़ ली और फ़र्ज़ क़ज़ा हो गए तो क़ज़ा पढ़ने में सुन्नत का इआ़दा न करे।[1] (غنیہ)

मस्अला 12 फ़र्ज़ तन्हा पढ़े जब भी सुन्नतों का तर्क जाइज़ नहीं है।[2] (عالمگیری) सुन्नते फ़ज्र की पहली रक्अ़त में अल ह़म्द के बाद قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और दूसरी में قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ना सुन्नत है।[3] (غنیہ وغیرہ)

मस्अला 13 जमाअ़त क़ाइम होने के बाद किसी नफ़्ल का शुरूअ़ करना जाइज़ नहीं सिवा सुन्नते फ़ज्र के कि अगर येह जाने कि सुन्नत पढ़ने के बाद जमाअ़त मिल जाएगी, अगर्चे क़ादे ही में शामिल होगा तो सुन्नत पढ़ ले मगर सफ़ के बराबर पढ़ना जाइज़ नहीं, बल्कि अपने घर पढ़े या बैरूने मस्जिद कोई जगह क़ाबिले नमाज़ हो तो वहां पढ़े और येह मुम्किन न हो तो अगर अन्दर के ह़िस्से में जमाअ़त होती हो तो बाहर के ह़िस्से में पढ़े, बाहर के ह़िस्से में हो तो अन्दर और अगर उस मस्जिद में अन्दर बाहर दो दरजे न हो तो सुतून या पेड़ की आड़ में पढ़े कि इस में और सफ़ में ह़ाइल हो जाए और सफ़ के पीछे पढ़ना भी मम्नूअ़ है अगर्चे सफ़ में पढ़ना ज़ियादा बुरा है।

आज कल अक्सर अ़वाम इस का बिल्कुल ख़याल नहीं करते और उसी सफ़ में घुस कर शुरूअ़ कर देते हैं येह ना जाइज़ है और अगर हुनूज़ जमाअ़त शुरूअ़ न हुई तो जहां चाहे सुन्नतें शुरूअ़ करे ख़्वाह कोई सुन्नत हो।[4] (غنیہ)

मगर जानता हो कि जमाअ़त जल्द क़ाइम होने वाली है और येह उस वक़्त तक सुन्नतों से फ़ारिग़ न होगा तो ऐसी जगह न पढ़े कि इस के सबब सफ़ क़त्अ़ हो।

मस्अला 14 इमाम को रुकूअ़ में पाया और येह नहीं मालूम कि पहली रक्अ़त का रुकूअ़ है या दूसरी का तो सुन्नत तर्क करे और मिल जाए।[5] (عالمگیری)

मस्अला 15 अगर वक़्त में गुन्जाइश हो और उस वक़्त नवाफ़िल मक्रूह न हों तो जितने नवाफ़िल चाहे पढ़े और अगर नमाज़े फ़र्ज़ या जमाअ़त जाती रहेगी तो नवाफ़िल में मश्ग़ूल होना ना जाइज़ है।

---

1 ..... "غنية المتملي"، فصل في النوافل، ٣٩٨. 2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٢.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٢.

و "غنية المتملي"، فصل في النوافل فروع لو ترك، ص٣٩٩. 4 ..... "غنية المتملي"، فصل في النوافل، ٣٩٦.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العاشر في ادراك الفريضة، ج١، ص١٢٠.

www.dawateislami.net

मस्अला 16 सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान कलाम करने से असहूह़ येह है कि सुन्नत बातिल नहीं होती अलबत्ता सवाब कम हो जाता है। येही हुक्म हर उस काम का है जो मुनाफ़िये तह़रीमा है।[1] (تنویر) अगर बैअ़ो शिरा[2] या खाने में मश्ग़ूल हुवा तो इआ़दा करे। हां, सुन्नते बादिया में अगर खाना लाया गया और बद मज़ा हो जाने का अन्देशा है तो खाना खा ले फिर सुन्नत पढ़े मगर वक़्त जाने का अन्देशा हो तो पढ़ने के बाद खाए और बिला उ़ज़्र सुन्नते बादिया की भी ताख़ीर मक्रूह है अगर्चे अदा हो जाएगी।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 17 इ़शा व अ़स्र के पहले नीज़ इ़शा के बाद चार चार रक्अ़तें एक सलाम से पढ़ना मुस्तह़ब है और येह भी इख़्तियार है कि इ़शा के बाद दो ही पढ़े मुस्तह़ब अदा हो जाएगा। यूंही ज़ोह्र के बाद चार रक्अ़त पढ़ना मुस्तह़ब है कि ह़दीस में फ़रमाया :

"जिस ने ज़ोह्र से पहले चार और बाद में चार पर मुह़ाफ़ज़त की, **अल्लाह** तआ़ला उस पर आग ह़राम फ़रमा देगा।"[4]

अ़ल्लामा सय्यिद त़ह़त़ावी फ़रमाते हैं कि सिरे से आग में दाख़िल ही न होगा और उस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे और जो उस पर मुत़ालबात हैं **अल्लाह** तआ़ला उस के फ़रीक़ को राज़ी कर देगा या येह मत़लब है कि उसे ऐसे कामों की तौफ़ीक़ देगा जिन पर सज़ा न हो।[5]

और अ़ल्लामा शामी फ़रमाते हैं कि उस के लिये बिशारत है कि "**सआ़दत** पर उस का ख़ातिमा होगा और दोज़ख़ में न जाएगा।"[6]

मस्अला 18 सुन्नत की मन्नत मानी और पढ़ी सुन्नत अदा हो गई। यूंही अगर शुरूअ़ कर के तोड़ दी फिर पढ़ी जब भी सुन्नत अदा हो गई।[7] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 19 नफ़्ल नमाज़ मन्नत मान कर पढ़ना बग़ैर मन्नत के पढ़ने से बेहतर है जब कि मन्नत किसी शर्त़ के साथ न हो, मसलन फ़ुलां बीमार सह़ीह़ हो जाएगा तो इतनी नमाज़ पढ़ूंगा और सुन्नतों में मन्नत न मानना अफ़्ज़ल है।[8] (ردالمحتار)

मस्अला 20 बादे मग़रिब छे रक्अ़तें मुस्तह़ब हैं इन को सलातुल अव्वाबीन कहते हैं, ख़्वाह एक सलाम से सब पढ़े या दो से या तीन से और तीन सलाम से यानी हर दो रक्अ़त

---

2 ...यानी ख़रीदो फ़रोख़्त।

1 ..... "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٥٨.

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في تحية المسجد، ج٢، ص٥٥٩.

4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصلاة، الحديث: ٤٢٧، ج١، ص٤٣٥.

5 ..... "حاشية الطحطاوي على الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج١، ص٢٨٤.

6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في السنن و النوافل، ج٢، ص٥٤٧.

7 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث مهم: في الكلام على الضجعة بعد سنة الفجر، ج٢، ص٥٦١.

8 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في الكلام على حديث النهي عن النذر، ج٢، ص٥٦٢.

www.dawateislami.net

पर सलाम फेरना अफ़्ज़ल है ।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 21 ज़ोहर व मग़रिब व इ़शा के बाद जो मुस्तह़ब है उस में सुन्नते मुअक्कदा दाख़िल है, मसलन ज़ोहर के बाद चार पढ़ीं तो मुअक्कदा व मुस्तह़ब दोनों अदा हो गईं और यूं भी हो सकता है कि मुअक्कदा व मुस्तह़ब दोनों को एक सलाम के साथ अदा करे यानी चार रक्अ़त पर सलाम फेरे ।[2] (فتح القدیر)

मस्अला 22 इ़शा के क़ब्ल की सुन्नतें जाती रहीं तो इन की क़ज़ा नहीं फिर भी अगर बाद में पढ़ेगा तो नफ़्ले मुस्तह़ब है, वोह सुन्नते मुस्तह़ब्बा जो फ़ौत हुई अदा न हुई ।[3]

(درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 23 दिन के नफ़्ल में एक सलाम के साथ चार रक्अ़त से ज़ियादा और रात में आठ रक्अ़त से ज़ियादा पढ़ना मक्रूह है और अफ़्ज़ल येह है कि दिन हो या रात हो चार चार रक्अ़त पर सलाम फेरे ।[4] (درمختار)

मस्अला 24 जो सुन्नते मुअक्कदा चार रक्अ़ती है उस के क़ादए ऊला में सिर्फ़ अत्तहिय्यात पढ़े अगर भूल कर दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया तो सज्दए सह्व करे और इन सुन्नतों में जब तीसरी रक्अ़त के लिये खड़ा हुवा तो سُبْحٰنَکَ और अऊ़ज़ु भी न पढ़े, और इन के इ़लावा और चार रक्अ़त वाले नवाफ़िल के क़ादए ऊला में भी दुरूद शरीफ़ पढ़े और तीसरी रक्अ़त में سُبْحٰنَکَ और अऊ़ज़ु भी पढ़े, बशर्ते कि दो रक्अ़त के बाद क़ादा किया हो वरना पहला سُبْحٰنَکَ और अऊ़ज़ु काफ़ी है, मन्नत की नमाज़ के भी क़ादए ऊला में दुरूद पढ़े और तीसरी में सना व तअ़व्वुज़ ।[5] (درمختار)

मस्अला 25 चार रक्अ़त नफ़्ल पढ़े और क़ादए ऊला फ़ौत हो गया बल्कि क़स्दन भी तर्क कर दिया तो नमाज़ बातिल न हुई और भूल कर तीसरी रक्अ़त के लिये खड़ा हो गया तो औ़द न करे और सज्दए सह्व कर ले नमाज़ कामिल अदा होगी, अगर तीन रक्अ़तें पढ़ीं और दूसरी पर न बैठा तो नमाज़ फ़ासिद होगी और अगर दो रक्अ़त की निय्यत बांधी थी और बग़ैर क़ादा किये तीसरी के लिये खड़ा हो गया तो औ़द करे वरना फ़ासिद हो जाएगी ।[6] (عالمگیری)

मस्अला 26 नमाज़ में क़ियाम त़वील होना कस्रते रक्अ़ात से अफ़्ज़ल है यानी जब कि किसी वक़्ते मुअ़य्यन तक नमाज़ पढ़ना चाहे, मसलन दो रक्अ़त में इतना वक़्त सर्फ़ कर देना

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في السنن و النوافل، ج٢، ص٥٤٧.
2 ..... "فتح القدير"، كتاب الصلاة، باب النوافل، ج١، ص٣٨٦.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب: هل الإساءة دون الكراهة... إلخ، ج٢، ص٦٢١.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٥٠. 5 ..... المرجع السابق، ص٥٥٢.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٣.

www.dawateislami.net

चार रक्अ़त पढ़ने से अफ़्ज़ल है।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 27 नफ़्ल नमाज़ घर में पढ़ना अफ़्ज़ल है। मगर

(1) तरावीह़ व

(2) तहिय्यतुल मस्जिद और

(3) वापसिये सफ़र के दो नफ़्ल कि इन को मस्जिद में पढ़ना बेहतर है और

(4) एह़राम की दो रक्अ़तें कि मीक़ात के नज़्दीक कोई मस्जिद हो तो उस में पढ़ना बेहतर है और

(5) त़वाफ़ की दो रक्अ़तें कि मक़ामे इब्राहीम के पास पढ़ें और

(6) मोतकिफ़ के नवाफ़िल और

(7) सूरज गहन की नमाज़ कि मस्जिद में पढ़े और

(8) अगर येह ख़याल हो कि घर जा कर कामों की मश्ग़ूली के सबब नवाफ़िल फ़ौत हो जाएंगे या घर में जी न लगेगा और ख़ुशूअ़ कम हो जाएगा तो मस्जिद ही में पढ़े।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 28 नफ़्ल की हर रक्अ़त में इमाम व मुन्फ़रिद पर क़िराअत फ़र्ज़ है और अगर मुक़्तदी हो अगर्चे फ़र्ज़ पढ़ने वाले के पीछे इक़्तिदा की हो तो इमाम की क़िराअत इस के लिये भी काफ़ी है इस पर ख़ुद पढ़ना नहीं।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 29 नफ़्ल नमाज़ क़स्दन शुरूअ़ करने से वाजिब हो जाती है कि अगर तोड़ देगा क़ज़ा पढ़नी होगी और अगर क़स्दन शुरूअ़ न की थी मसलन येह गुमान था कि फ़र्ज़ पढ़ना है और फ़र्ज़ की निय्यत से शुरूअ़ किया फिर याद आया कि पढ़ चुका था तो अब येह नफ़्ल है और तोड़ देने से क़ज़ा वाजिब नहीं बशर्ते येह कि याद आते ही तोड़ दे और याद आने पर उस नमाज़ को पढ़ना इख़्तियार किया तो तोड़ देने से क़ज़ा वाजिब होगी।[4] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 30 अगर बिला क़स्द नमाज़ फ़ासिद हो गई जब भी क़ज़ा वाजिब है मसलन तयम्मुम से पढ़ रहा था और अस्नाए नमाज़[5] में पानी पर क़ादिर हुवा। यूंही नफ़्ल पढ़ते में

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب: قولهم كل شفع من النفل الصلاة ليس مطردا، ج٢، ص٥٥٤.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب: قولهم كل شفع من النفل الصلاة ليس مطردا، ج٢، ص٥٦٢.

3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الحاجة، ج٢، ص٥٧٣.

4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الحاجة، ج٢، ص٥٧٤-٥٧٦.

5 ...यानी नमाज़ के दौरान।

www.dawateislami.net

औ़रत को हैज़ आ गया तो क़ज़ा वाजिब हो गई बादे त़हारत क़ज़ा पढ़े ।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 31 शुरूअ़ करने की दो सूरतें हैं एक येह कि तह़रीमा बांधे दूसरी येह कि तीसरी रक्अ़त के लिये खड़ा हो गया बशर्ते कि शुरूअ़ सह़ीह़ हो और अगर शुरूअ़ सह़ीह़ न हो मसलन उम्मी या औ़रत के पीछे इक़्तिदा की या बे वुज़ू नापाक कपड़ों में शुरूअ़ कर दी तो क़ज़ा वाजिब न होगी ।[2] (ردالمحتار،عالمگیری)

मस्अला 32 फ़र्ज़ पढ़ने वाले के पीछे नफ़्ल की निय्यत से शुरूअ़ की फिर याद आया कि येह फ़र्ज़ मुझे पढ़ना है और तोड़ कर उसी फ़र्ज़ की निय्यत से इक़्तिदा की जो वोह पढ़ रहा था या तोड़ कर दूसरे नफ़्ल की निय्यत कर के शामिल हुवा तो उस नफ़्ल की क़ज़ा वाजिब नहीं ।[3] (درمختار)

मस्अला 33 तुलूअ़ व गुरूब व निस्फ़ुन्नहार के वक़्त नमाज़े नफ़्ल शुरूअ़ की तो वाजिब है कि तोड़ दे और वक़्ते ग़ैर मक्रूह में क़ज़ा पढ़े और दूसरे वक़्ते मक्रूह में क़ज़ा पढ़ी जब भी हो गई मगर गुनाह हुवा और पूरी कर ली तो हो गई मगर वक़्ते मक्रूह में पढ़ने का गुनाह हुवा, बिला वज्हे शरई नफ़्ल शुरूअ़ कर के तोड़ देना ह़राम है ।[4] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 34 नफ़्ल नमाज़ शुरूअ़ की अगर्चे चार की निय्यत बांधी जब भी दो ही रक्अ़त शुरूअ़ करने वाला क़रार दिया जाएगा कि नफ़्ल का हर शुफ़्अ़ (यानी दो रक्अ़त) अ़लाह़दा अ़लाह़दा नमाज़ है ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 35 चार रक्अ़त नफ़्ल की निय्यत बांधी और शुफ़्अ़ अव्वल या सानी में तोड़ दी तो दो रक्अ़त क़ज़ा वाजिब होगी मगर शुफ़्अ़ सानी तोड़ने से दो रक्अ़त क़ज़ा वाजिब होने की येह शर्त है कि दूसरी रक्अ़त पर क़ादा कर चुका हो वरना चार क़ज़ा करनी होंगी ।[6] (درمختار)

मस्अला 36 सुन्नते मुअक्कदा और मन्नत की नमाज़ अगर चार रक्अ़ती हो तो तोड़ने से चार की क़ज़ा दे । यूंही अगर चार रक्अ़ती फ़र्ज़ पढ़ने वाले के पीछे नफ़्ल की निय्यत बांधी और तोड़ दी तो चार की क़ज़ा वाजिब है । पहले शुफ़्अ़ में तोड़ी या दूसरे में ।[7] (ردالمحتار وغیرہ)

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الحاجة، ج٢، ص٥٧٧.

2 ..... المرجع السابق، ص٥٧٤، و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٤.

3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الحاجة، ج٢، ص٥٧٤.

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الحاجة، ج٢، ص٥٧٦، وغيره .

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٣.

6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٧٧.

7 ..... المرجع السابق، ص٥٧٨، وغيره .

www.dawateislami.net

मस्अला 37 चार रक्अ़त की निय्यत बांधी और चारों में क़िराअत न की या पहली दो में या पिछली दो में न की या पहली दो में से एक रक्अ़त में न की या पिछली दो में से एक रक्अ़त में न की या पहली दोनों और पिछली में से एक में क़िराअत छोड़ दी तो इन छे सूरतों में दो रक्अ़त क़ज़ा वाजिब है। और अगर पहली दो में से एक और पिछली दो में से एक या पहली दो में से एक में और पिछली की दोनों में क़िराअत छोड़ दी तो इन सूरतों में चार रक्अ़त क़ज़ा वाजिब है।[1] (عالمگیری)

मस्अला 38 अगर दो रक्अ़त पर ब क़दरे तशह्हुद बैठा फिर तोड़ दी तो इस सूरत में बिल्कुल क़ज़ा नहीं बशर्ते कि तीसरी के लिये खड़ा न हुवा हो और पहली दोनों में क़िराअत कर चुका हो।[2] (درمختار) मगर ब वज्हे तर्के वाजिब इस के इआ़दे का हुक्म दिया जाएगा।

मस्अला 39 नफ़्ल पढ़ने वाले ने नफ़्ल पढ़ने वाले की इक़्तिदा की अगर्चे तशह्हुद में तो जो ह़ाल इमाम का है वोही मुक़्तदी का है यानी जितनी की क़ज़ा इमाम पर वाजिब होगी मुक़्तदी पर भी वाजिब।[3] (درمختار)

मस्अला 40 खड़े हो कर पढ़ने की क़ुदरत हो जब भी बैठ कर नफ़्ल पढ़ सकते हैं[4] मगर खड़े हो कर पढ़ना अफ़्ज़ल है कि ह़दीस में फ़रमाया : "बैठ कर पढ़ने वाले की नमाज़ खड़े हो कर पढ़ने वाले की निस्फ़ है।"[5] और उ़ज़्र की वज्ह से बैठ कर पढ़े तो सवाब में कमी न होगी। येह जो आज कल आ़म रवाज पड़ गया है कि नफ़्ल बैठ कर पढ़ा करते हैं ब ज़ाहिर येह मालूम होता है कि शायद बैठ कर पढ़ने को अफ़्ज़ल समझते हैं ऐसा है तो उन का ख़याल ग़लत़ है। वित्र के बाद जो दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ते हैं उन का भी येही हुक्म है कि खड़े हो कर पढ़ा अफ़्ज़ल है और इस में उस ह़दीस से दलील लाना कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने वित्र के बाद बैठ कर नफ़्ल पढ़े।[6] सह़ीह़ नहीं कि येह हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के मख़्सूसात में से है।

चुनान्चे, सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से है, फ़रमाते हैं : मुझे ख़बर पहुंची कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि बैठ कर पढ़ने वाले की नमाज़ खड़े हो कर पढ़ने वाले की नमाज़ से आधी है। इस के बाद मैं ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुवा तो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) को बैठ कर नमाज़ पढ़ते हुए पाया, सरे अक़्दस पर मैं ने हाथ रखा (कि बीमार तो नहीं)। इरशाद फ़रमाया : क्या है ऐ अ़ब्दुल्लाह ? अ़र्ज़ की : या

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٧٩-٥٨١.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٨٢، ٥٨٣.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٨٣. 4 ..... "تنويرالأبصار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٨٤.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين و قصرها، باب جواز النافلة قائما و قاعدا... إلخ، الحديث: ٧٣٥، ص ٣٧٠.
6 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين و قصرها، باب صلاة الليل... إلخ، الحديث: ١٢٦-(٧٣٨)، ص٣٧٢.

www.dawateislami.net

रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने तो ऐसा फ़रमाया है और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) बैठ कर नमाज़ पढ़ते हैं, फ़रमाया : **''हां व लेकिन मैं तुम जैसा नहीं ।''**[1] इमाम इब्राहीम ह़लबी व साहिबे दुर्रे मुख़्तार व साहिबे रद्दुल मुह़्तार ने फ़रमाया कि येह ह़ुक्म हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के ख़साइस से है और इसी ह़दीस से इस्तिनाद किया ।[2]

मस्अला 41 अगर रुकूअ़ की ह़द तक झुक कर नफ़्ल का तह़रीमा बांधा तो नमाज़ न होगी ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 42 लैट कर नफ़्ल नमाज़ जाइज़ नहीं जब कि उ़ज़्र न हो और उ़ज़्र की वज्ह से हो तो जाइज़ है ।[4] (درمختار)

मस्अला 43 खड़े हो कर शुरूअ़ की थी फिर बैठ गया या बैठ कर शुरूअ़ की थी फिर खड़ा हो गया दोनों सूरतें जाइज़ हैं, ख़्वाह एक रक्अ़त खड़े हो कर पढ़ी एक बैठ कर या एक ही रक्अ़त के एक हिस्से को खड़े हो कर पढ़ा और कुछ हिस्सा बैठ कर ।[5] (درمختار،ردالمحتار) मगर दूसरी सूरत यानी खड़े हो कर शुरूअ़ की फिर बैठ गया इस में इख़्तिलाफ़ है, लिहाज़ा बचना औला ।

मस्अला 44 खड़े हो कर नफ़्ल पढ़ता था और थक गया था तो अ़सा या दीवार पर टेक लगा कर पढ़ने में ह़रज नहीं ।[6] (عالمگیری) और बग़ैर थके भी अगर ऐसा करे तो कराहत है, नमाज़ हो जाएगी ।

मस्अला 45 नफ़्ल बैठ कर पढ़े तो इस त़रह़ बैठे जैसे तशह्हुद में बैठा करते हैं मगर क़िराअत की ह़ालत में नाफ़ के नीचे हाथ बांधे रहे जैसे क़ियाम में बांधते हैं ।[7] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 46 बैरूने शह्र[8] सुवारी पर भी नफ़्ल पढ़ सकता है और इस सूरत में इस्तिक़्बाले क़िब्ला शर्त़ नहीं बल्कि सुवारी जिस रुख़ को जा रही हो उधर ही मुंह हो और अगर उधर मुंह न हो तो नमाज़ जाइज़ नहीं और शुरूअ़ करते वक़्त भी क़िब्ला की त़रफ़ मुंह होना शर्त़ नहीं बल्कि सुवारी जिधर जा रही है उस त़रफ़ हो और रुकूओ़ सुजूद इशारे से करे और सज्दे का इशारा ब निस्बत रुकूअ़ के पस्त हो ।[9] (درمختار،ردالمحتار)

---

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين و قصرها، باب جواز النافلة قائما و قاعدا... إلخ، الحديث: ٧٣٥، ص٣٧٠.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر والنوافل، مبحث المسائل ستة عشرية، ج٢، ص٥٨٥.

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث المسائل الستة عشرية، ج٢، ص٥٨٤.

4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٨٤.

5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث المسائل الستة عشرية، ج٢، ص٥٨٤.

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٤.

7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر والنوافل، مبحث المسائل ستة عشرية، ج٢، ص٥٨٧.

8 ...बैरूने शह्र से मुराद वोह जगह है जहां से मुसाफ़िर पर क़स्र वाजिब होता है । (عالمگیری) 12 मिन्ह حفظہ ربہ

9 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في الصلاة على الدابة، ج٢، ص٥٨٨.

www.dawateislami.net

मस्अला 47 सुवारी पर नफ़्ल पढ़ने में अगर हांकने की ज़रूरत हो और अ़मले क़लील से हांका मसलन एक पाउं से एड़ लगाई या हाथ में चाबुक है उस से डराया तो ह़रज नहीं और बिला ज़रूरत जाइज़ नहीं।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 48 सुवारी पर नमाज़ शुरूअ़ की फिर अ़मले क़लील के साथ उतर आया तो इसी पर बिना कर सकता है ख़्वाह खड़े हो कर पढ़े या बैठ कर मगर क़िब्ला को मुंह करना ज़रूरी है और ज़मीन पर शुरूअ़ की थी फिर सुवार हुवा तो बिना नहीं कर सकता, नमाज़ जाती रही।[2] (درمختار)

मस्अला 49 गाउं या ख़ैमे का रहने वाला जब गाउं या ख़ैमे से बाहर हुवा तो सुवारी पर नफ़्ल पढ़ सकता है।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 50 बैरूने शह्र सुवारी पर शुरूअ़ की थी पढ़ते पढ़ते शह्र में दाख़िल हो गया तो जब तक घर न पहुंचा सुवारी पर पूरी कर सकता है।[4] (درمختار)

मस्अला 51 महूमिल और सुवारी पर नफ़्ल नमाज़ मुत़्लक़न जाइज़ है जब कि तन्हा पढ़े और नफ़्ल नमाज़ जमाअ़त से पढ़ना चाहे तो इस के लिये शर्त़ येह है कि इमाम व मुक़्तदी अलग अलग सुवारियों पर न हों।[5] (درمختار)

मस्अला 52 महूमिल पर फ़र्ज़ नमाज़ उस वक़्त जाइज़ है कि उतरने पर क़ादिर न हो। हां, अगर ठहरा हुवा हो और उस के नीचे लकड़ियां लगा दीं कि ज़मीन पर क़ाइम हो गया तो जाइज़ है।[6] (درمختار)

मस्अला 53 गाड़ी का जूआ[7] जानवर पर रखा हो गाड़ी खड़ी हो या चलती उस का हुक्म वोही है जो जानवर पर नमाज़ पढ़ने का है यानी फ़र्ज़ व वाजिब व सुन्नते फ़ज्र बिला उ़ज़्र जाइज़ नहीं और अगर जूआ जानवर पर न हो और रुकी हुई हो तो नमाज़ जाइज़ है।[8] (درمختار،ردالمحتار) येह हुक्म उस गाड़ी का है जिस में दो पहिय्ये हों, चार पहिय्ये वाली जब रुकी हो तो सिर्फ़ जूआ जानवर पर होगा और गाड़ी ज़मीन पर मुस्तक़र होगी, लिहाज़ा जब ठहरी हुई हो उस पर नमाज़ जाइज़ होगी जैसे तख़्त पर।

मस्अला 54 गाड़ी और सुवारी पर नमाज़ पढ़ने के लिये येह उ़ज़्र हैं : (1) मींह बरस

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في الصلاة على الدابة، ج٢، ص٥٨٩.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٨٩.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في الصلاة على الدابة، ج٢، ص٥٨٨.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٨٩.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٩٥. 6 ..... المرجع السابق، ص٥٩٠.
7 ...यानी वोह लकड़ी जो गाड़ी या हल के बैलों के कन्धे पर रखी जाती है।
8 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٩١.

www.dawateislami.net

रहा है, (2) इस क़दर कीचड़ है कि उतर कर पढ़ेगा तो मुंह धंस जाएगा या कीचड़ में सन जाएगा या जो कपड़ा बिछाया जाएगा वोह बिल्कुल लिथड़ जाएगा और इस सूरत में सुवारी न हो तो खड़े खड़े इशारे से पढ़े, (3) साथी चले जाएंगे, (4) या सुवारी का जानवर शरीर है कि सुवार होने में दुश्वारी होगी मददगार की ज़रूरत होगी और मददगार मौजूद नहीं, (5) या वोह बूढ़ा है कि बग़ैर मददगार के उतर चढ़ न सकेगा और मददगार मौजूद नहीं और येही हुक्म औ़रत का है, (6) या मरज़ में ज़ियादती होगी, (7) जान (8) या माल, (9) या औ़रत को आबरू का अन्देशा हो।[1] (درمختار،ردالمحتار)

चलती रेलगाड़ी पर भी फ़र्ज़ व वाजिब व सुन्नते फ़ज्र नहीं हो सकती और इस को जहाज़ और कश्ती के हुक्म में तसव्वुर करना ग़लती है कि कश्ती अगर ठहराई भी जाए जब भी ज़मीन पर न ठहरेगी और रेलगाड़ी ऐसी नहीं और कश्ती पर भी उसी वक़्त नमाज़ जाइज़ है जब वोह बीच दरिया में हो, कनारे पर हो और ख़ुश्की पर आ सकता हो तो उस पर भी जाइज़ नहीं है लिहाज़ा जब स्टेशन पर गाड़ी ठहरे उस वक़्त येह नमाज़ें पढ़े और अगर देखे कि वक़्त जाता है तो जिस त़रह़ भी मुम्किन हो पढ़ ले फिर जब मौक़अ़ मिले इआ़दा करे कि जहां मिन जिहतिल इबाद[2] कोई शर्त़ या रुक्न मफ़्क़ूद हो[3] उस का येही हुक्म है।

मस्अला 55 महमिल की एक त़रफ़ ख़ुद सुवार है दूसरी त़रफ़ इस की मां या ज़ौजा या और कोई महारिम में है जो ख़ुद सुवार नहीं हो सकती और येह ख़ुद उतर चढ़ सकता है मगर इस के उतरने में महमिल गिर जाने का अन्देशा है, इसे भी उसी पर पढ़ने का हुक्म है।[4] (درمختار)

मस्अला 56 जानवर और चलती गाड़ी पर और उस गाड़ी पर जिस का जूआ जानवर पर हो बिला उ़ज़्रे शर्ई फ़र्ज़ व सुन्नते फ़ज्र व तमाम वाजिबात जैसे वित्र व नज़्र और नफ़्ल जिस को तोड़ दिया हो और सज्दए तिलावत जब कि आयते सज्दा ज़मीन पर तिलावत की हो अदा नहीं कर सकता और अगर उ़ज़्र की वज्ह से हो तो इन सब में शर्त़ येह है कि अगर मुम्किन हो तो क़िब्ला रू खड़ा कर के अदा करे वरना जैसे भी मुम्किन हो।[5] (درمختار)

मस्अला 57 किसी ने मन्नत मानी कि दो रक्अ़तें बग़ैर त़हारत पढ़ेगा या उन में क़िराअत न करेगा या नंगा पढ़ेगा या एक या आधी रक्अ़त की मन्नत मानी तो इन सब सूरतों में उस पर दो रक्अ़त त़हारत व क़िराअत व सत्र के साथ वाजिब हो गईं और तीन की मानी तो चार वाजिब हुईं।[6] (درمختار،ردالمحتار)

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في القادر بقدرة غيره، ج٢، ص٥٩٢.

2 ...यानी बन्दों की त़रफ़ से। 3 ...यानी न पाया गया हो।

4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في القادر بقدرة غيره، ج٢، ص٥٩٣. 5 ..... المرجع السابق، ص٥٩٤.

6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في القادر، بقدرة غيره، ج٢، ص٥٩٥.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ومم يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١١٥.

www.dawateislami.net

मस्अला 58 मन्नत मानी कि फुलां मक़ाम पर नमाज़ पढ़ेगा और उस से कम दरजे के मक़ाम पर अदा की, हो गई : मसलन मस्जिदे ह़राम में पढ़ने की मन्नत मानी और मस्जिदे कुद्स या घर की मस्जिद में अदा की। औरत ने मन्नत मानी कि कल नमाज़ पढ़ेगी या रोज़ा रखेगी दूसरे दिन उसे ह़ैज़ आ गया तो क़ज़ा करे और अगर येह मन्नत मानी कि ह़ालते ह़ैज़ में दो रक्अ़त पढ़ेगी तो कुछ नहीं।[1] (درمختار)

मस्अला 59 मन्नत मानी कि आज दो रक्अ़त पढ़ेगा और आज न पढ़ी तो इस की क़ज़ा नहीं, बल्कि कफ़्फ़ारा देना होगा।[2] (عالمگیری)

मस्अला 60 महीने भर की नमाज़ की मन्नत मानी तो एक महीने के फ़र्ज़ व वित्र की मिस्ल इस पर वाजिब है सुन्नत की मिस्ल नहीं मगर वित्र व मग़रिब की जगह चार रक्अ़त पढ़े यानी हर रोज़ बाईस रक्अ़तें।[3] (عالمگیری)

मस्अला 61 अगर खड़े हो कर पढ़ने की मन्नत मानी तो खड़े हो कर पढ़ना वाजिब है और मुत्लक़ नमाज़ की मन्नत है तो इख़्तियार है।[4] (عالمگیری)

तम्बीह : नवाफ़िल तो बहुत कसीर हैं, अवक़ाते मम्नूआ़ के सिवा आदमी जितने चाहे पढ़े मगर इन में से बाज़ जो हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم व अइम्मए दीन رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से मरवी हैं, बयान किये जाते हैं :

तह़िय्यतुल मस्जिद : जो शख़्स मस्जिद में आए उसे दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ना सुन्नत है बल्कि बेहतर येह है कि चार पढ़े।[5]

बुख़ारी व मुस्लिम अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो शख़्स मस्जिद में दाख़िल हो, बैठने से पहले दो रक्अ़त पढ़ ले।"[6]

मस्अला 1 ऐसे वक़्त मस्जिद में आया जिस में नफ़्ल नमाज़ मक्रूह है : मसलन बादे तुलूए़ फ़ज्र या बादे नमाज़े अ़स्र वोह तह़िय्यतुल मस्जिद न पढ़े बल्कि तस्बीह़ व तहलील व दुरूद शरीफ़ में मश्ग़ूल हो, ह़क़्क़े मस्जिद अदा हो जाएगा।[7] (ردالمحتار)

---

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في القادر، بقدرة غيره، ج٢، ص٥٩٦.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ومما يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١١٥.

इस का कफ़्फ़ारा वोही है जो क़सम तोड़ने का है यानी एक ग़ुलाम आज़ाद करना या दस मिस्कीन को दोनों वक़्त पेट भर कर खाना खिलाना या कपड़ा देना या तीन रोज़े रखना। 12 मिन्ह

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ومما يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١١٥. 4 ..... المرجع السابق.

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في تحية المسجد، ج٢، ص٥٥٥.

6 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الصلاة، باب إذا دخل المسجد فليركع ركعتين، الحديث: ٤٤٤، ج١، ص١٧٠.

7 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في تحية المسجد، ج٢، ص٥٥٥.

www.dawateislami.net

मस्अला 2 फ़र्ज़ या सुन्नत या कोई नमाज़ मस्जिद में पढ़ ली तहिय्यतुल मस्जिद अदा हो गई अगर्चे तहिय्यतुल मस्जिद की निय्यत न की हो। इस नमाज़ का हुक्म उस के लिये है जो ब निय्यते नमाज़ न गया बल्कि दर्स व ज़िक्र वग़ैरा के लिये गया हो। अगर फ़र्ज़ या इक़्तिदा की निय्यत से मस्जिद में गया तो येही क़ाइम मक़ामे तहिय्यतुल मस्जिद है बशर्ते कि दाख़िल होने के बाद ही पढ़े और अगर अ़र्से के बाद पढ़ेगा तो तहिय्यतुल मस्जिद पढ़े।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 3 बेहतर येह है कि बैठने से पहले तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ ले और बग़ैर पढ़े बैठ गया तो साक़ित न हुई अब पढ़े।[2] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 4 हर रोज़ एक बार तहिय्यतुल मस्जिद काफ़ी है हर बार ज़रूरत नहीं और अगर कोई शख़्स बे वुज़ू मस्जिद में गया या और कोई वज्ह है कि तहिय्यतुल मस्जिद नहीं पढ़ सकता तो चार बार سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ कहे।[3] (درمختار)

तहिय्यतुल वुज़ू : वुज़ू के बाद आज़ा ख़ुश्क होने से पहले दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ना मुस्तह़ब है।[4]

सह़ीह़ मुस्लिम में है, नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स वुज़ू करे और अच्छा वुज़ू करे और ज़ाहिरो बातिन के साथ मुतवज्जेह हो कर दो रक्अ़त पढ़े, उस के लिये **जन्नत** वाजिब हो जाती है।"[5]

मस्अला 1 ग़ुस्ल के बाद भी दो रक्अ़त नमाज़ मुस्तह़ब है। वुज़ू के बाद फ़र्ज़ वग़ैरा पढ़े तो क़ाइम मक़ामे तहिय्यतुल वुज़ू के हो जाएंगे।[6] (ردالمحتار)

नमाज़े इ़श्राक़ : तिरमिज़ी अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : जो फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ कर ज़िक्रे ख़ुदा करता रहा, यहां तक कि आफ़्ताब बुलन्द हो गया फिर दो रक्अ़तें पढ़ीं "तो उसे पूरे ह़ज और उ़मरह का सवाब मिलेगा।"[7]

नमाज़े चाश्त : मुस्तह़ब है, कम से कम दो और ज़ियादा से ज़ियादा चाश्त की बारह रक्अ़तें हैं[8] और अफ़्ज़ल बारह हैं कि ह़दीस[1] में है, जिस ने चाश्त की बारह रक्अ़तें पढ़ीं,

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في تحية المسجد، ج٢، ص٥٥٥.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٥٧. 3 ..... المرجع السابق.
4 ..... "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٦٣.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الطهارة، باب الذكر المستحب عقب الوضوء، الحديث: ٢٣٤، ص١٤٤.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلوة، باب الوتر و النوافل، مطلب: سنة الوضوء، ج٢، ص٥٦٣.
7 ..... "جامع الترمذي"، أبواب السفر، باب ما ذكر مما يستحب من الجلوس في المسجد... إلخ، الحديث ٥٨٦، ج٢، ص١٠٠.
8 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٢.

www.dawateislami.net

"**अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में सोने का महल बनाएगा।"[1] इस ह़दीस को तिरमिज़ी व इब्ने माजह ने अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत किया।

सह़ीह़ मुस्लिम[2 a 3] शरीफ़ में अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : आदमी पर उस के हर जोड़ के बदले सदक़ा है (और कुल तीन सौ साठ जोड़ हैं) हर तस्बीह़ सदक़ा है और हर ह़म्द सदक़ा है और لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहना सदक़ा है और اَللّٰہُ اَکْبَر कहना सदक़ा है और अच्छी बात का हुक्म करना सदक़ा है और बुरी बात से मन्अ़ करना सदक़ा है और इन सब की त़रफ़ से दो रक्अ़तें चाश्त की किफ़ायत करती हैं।[2]

तिरमिज़ी[4 a 5] अबू दरदा व अबू ज़र से और अबू दावूद व दारिमी नईम बिन हम्मार से और अह़मद इन सब से रावी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम ! शुरूअ़ दिन में मेरे लिये चार रक्अ़तें पढ़ ले, आख़िर दिन तक मैं तेरी किफ़ायत फ़रमाऊंगा।"[3]

त़बरानी[6] अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "जिस ने दो रक्अ़तें चाश्त की पढ़ीं, ग़ाफ़िलीन में नहीं लिखा जाएगा और जो चार पढ़े आ़बिदीन में लिखा जाएगा और जो छे पढ़े उस दिन उस की किफ़ायत की गई और जो आठ पढ़े **अल्लाह** तआ़ला उसे क़ानितीन में लिखेगा और जो बारह पढ़े **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में एक महल बनाएगा और कोई दिन या रात नहीं जिस में **अल्लाह** तआ़ला बन्दों पर एह़सान व सदक़ा न करे और उस बन्दे से बढ़ कर किसी पर एह़सान न किया जिसे अपना ज़िक्र इल्हाम किया।"[4]

अह़मद[7] व तिरमिज़ी व इब्ने माजह अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "जो चाश्त की दो रक्अ़तों पर मुह़ाफ़ज़त करे, उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों।"[5]

मस्अला 1 इस का वक़्त आफ़्ताब बुलन्द होने से ज़वाल यानी निस्फ़ुन्नहारे शरई तक है और बेहतर येह है कि चौथाई दिन चढ़े पढ़े।[6] (عالمگیری، ردالمحتار)

नमाज़े सफ़र : सफ़र में जाते वक़्त दो रक्अ़तें अपने घर पर पढ़ कर जाए।[7]

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في صلاة الضحى، الحديث: ٤٧٢، ج٢، ص١٧.
2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب استحباب صلاة الضحى... إلخ، الحديث: ٧٢٠، ص٣٦٣.
3 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في صلاة الضحى، الحديث: ٤٧٤، ج٢، ص١٩.
4 ..... "الترغيب والترهيب"، الترغيب في صلاة الضحى، الحديث: ١٤، ج١، ص٢٦٦.
5 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند و أبي هريرة، الحديث: ١٠٤٨٥، ج٣، ص٥٦٤.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج١، ص١١٢.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب: سنة الوضوء، ج٢، ص٥٦٣.
7 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في ركعتي السفر، ج٢، ص٥٦٥.

www.dawateislami.net

त़बरानी की ह़दीस में है कि "किसी ने अपने अह्ल के पास उन दो रक्अ़तों से बेहतर न छोड़ा, जो ब वक़्ते इरादए सफ़र उन के पास पढ़ीं।"[1]

नमाज़े वापसिये सफ़र : सफ़र से वापस हो कर दो रक्अ़तें मस्जिद में अदा करे।[2] सह़ीह़ मुस्लिम में कअ़ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم सफ़र से दिन में चाश्त के वक़्त तशरीफ़ लाते और इब्तिदाअन मस्जिद में जाते और दो रक्अ़तें उस में नमाज़ पढ़ते फिर वहीं मस्जिद में तशरीफ़ रखते।"[3]

मस्अला 1 मुसाफ़िर को चाहिये कि मन्ज़िल में बैठने से पहले दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े जैसे हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم किया करते थे।[4] (ردالمحتار)

सलातुल्लैल : एक रात में बाद नमाज़े इ़शा जो नवाफ़िल पढ़े जाएं उन को सलातुल्लैल कहते हैं और रात के नवाफ़िल दिन के नवाफ़िल से अफ़्ज़ल हैं कि :

ह़दीस 1 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में मरफ़ूअ़न है : फ़र्ज़ों के बाद अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।[5] और

ह़दीस 2 त़बरानी ने मरफ़ूअ़न रिवायत की है कि रात में कुछ नमाज़ ज़रूरी है अगर्चे इतनी ही देर जितनी देर में बकरी दोह लेते हैं और फ़र्ज़ इ़शा के बाद जो नमाज़ पढ़ी वोह सलातुल्लैल है।[6]

नमाज़े तहज्जुद

मस्अला 1 इसी सलातुल्लैल की एक क़िस्म तहज्जुद है कि इ़शा के बाद रात में सो कर उठें और नवाफ़िल पढ़ें, सोने से क़ब्ल जो कुछ पढ़ें वोह तहज्जुद नहीं।[7] (ردالمحتار)

मस्अला 2 तहज्जुद नफ़्ल का नाम है अगर कोई इ़शा के बाद सो रहा फिर उठ कर क़ज़ा पढ़ी तो उस को तहज्जुद न कहेंगे।[8] (ردالمحتار)

मस्अला 3 कम से कम तहज्जुद की दो रक्अ़तें हैं और

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في ركعتي السفر، ج٢، ص٥٦٥.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في ركعتي السفر، ج٢، ص٥٦٥.
3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب استحباب ركعتين في المسجد... إلخ، الحديث: ٧١٦، ص٣٦١.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في ركعتي السفر، ج٢، ص٥٦٥.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب فضل صوم المحرم، الحديث: ١١٦٣، ص٥٩١.
6 ..... "المعجم الكبير"، باب الألف، الحديث: ٧٨٧، ج١، ص٢٧١.
7 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الليل، ج٢، ص٥٦٦.
8 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الليل، ج٢، ص٥٦٧.

www.dawateislami.net

हदीस 3 हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से आठ तक साबित।

हदीस 4 नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स रात में बेदार हो और अपने अह्ल को जगाए फिर दोनों दो दो रक्अ़त पढ़ें तो कसरत से याद करने वालों में लिखे जाएंगे।" इस ह़दीस को नसाई व इब्ने माजह अपनी सुनन में और इब्ने ह़ब्बान अपनी सह़ीह़ में और ह़ाकिम ने मुस्तद्रक में रिवायत किया और मुन्ज़री ने कहा येह ह़दीस बर शर्ते शैख़ैन सह़ीह़ है।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 4 जो शख़्स दो तिहाई रात सोना चाहे और एक तिहाई इ़बादत करना, उसे अफ़्ज़ल येह है कि पहली और पिछली तिहाई में सोए और बीच की तिहाई में इ़बादत करे और अगर निस्फ़ शब में सोना चाहता है और निस्फ़ जागना तो पिछली निस्फ़ में इ़बादत अफ़्ज़ल है कि

हदीस 5 सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने इरशाद फ़रमाया कि रब عَزَّوَجَلَّ हर रात में जब पिछली तिहाई बाक़ी रहती है आस्माने दुन्या पर तजल्लिये ख़ास फ़रमाता है और फ़रमाता है : "है कोई दुआ करने वाला कि उस की दुआ क़बूल करूं, है कोई मांगने वाला कि उसे दूं, है कोई मग़्फ़िरत चाहने वाला कि उस की बख़्शिश कर दूं।"[2]

और सब से बढ़ कर तो नमाज़े दावूद है कि

हदीस 6 बुख़ारी व मुस्लिम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا[3] से रावी कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : सब नमाज़ों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ज़ियादा महबूब नमाज़े दावूद है कि आधी रात सोते और तिहाई रात इ़बादत करते फिर छटे ह़िस्से में सोते।[4]

मस्अला 5 जो शख़्स तहज्जुद का आ़दी हो बिला उ़ज़्र उसे छोड़ना मक्रूह है। कि

हदीस 7 सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तू फ़ुलां की त़रह़ न होना कि रात में उठा करता था फिर छोड़ दिया।"[5] नीज़

हदीस 8 बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरहुमा में है, फ़रमाया कि "आमाल में ज़ियादा पसन्द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को वोह है जो हमेशा हो, अगर्चे थोड़ा हो।"[6]

---

1 ..... "المستدرك" للحاكم، كتاب صلاة التطوع، باب توديع المنزل بركعتين، الحديث: ١٢٣٠، ج١، ص٦٢٤.
و"ردالمحتار"، كتاب الصلاة باب الوتر والنوافل، مطلب في صلاة الليل، ج٢، ص٥٦٧.

2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب الترغيب في الدعاء... إلخ، الحديث: ٧٥٨، ص٣٨١.

3 ...**बहारे शरीअ़त** के बाज़ नुस्ख़ों में इस मक़ाम पर "अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا" लिखा हुवा है, जो किताबत की ग़लती मालूम होती है क्यूं कि "बुख़ारी शरीफ़" और दीगर कुतुबे अह़ादीस में "अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا" मज़्कूर है, इसी वज्ह से हम ने मत्न में तस्ह़ीह़ कर दी है।....इ़ल्मिय्या

4 ..... "صحيح البخاري"، كتاب احاديث الانبياء، باب احب الصلاة إلى الله صلاة داود... إلخ، الحديث: ٣٤٢٠، ج٢، ص٤٤٨.

5 ..... "صحيح البخاري"، كتاب التهجد، باب ما يكره من ترك قيام الليل لمن كان يقومه، الحديث: ١١٥٢، ج١، ص٣٩٠.

6 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب فضيلة العمل الدائم... إلخ، الحديث: ٢١٨-(٧٨٣)، ص٣٩٤.

www.dawateislami.net

मस्अला 6 ईदैन और पन्दरहवीं शाबान की रातों और रमज़ान की अख़ीर दस रातों और ज़ुल हिज्जा की पहली दस रातों में शब बेदारी मुस्तह़ब है अक्सर हिस्से में जागना भी शब बेदारी है।[1] (درمختار) ईदैन की रातों में शब बेदारी येह है कि इ़शा व सुब्ह़ दोनों जमाअ़ते ऊला से हों कि

सह़ीह़ ह़दीस में फ़रमाया : "जिस ने इ़शा की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ी, उस ने आधी रात इ़बादत की और जिस ने नमाज़े फ़ज्र जमाअ़त से पढ़ी, उस ने सारी रात इ़बादत की।"[2] और इन रातों में अगर जागेगा तो नमाज़े ईद व क़ुरबानी वग़ैरा में दिक़्क़त होगी। लिहाज़ा इसी पर इक्तिफ़ा करे और अगर इन कामों में फ़र्क़ न आए तो जागना बहुत बेहतर।

मस्अला 7 इन रातों में तन्हा नफ़्ल नमाज़ पढ़ना और तिलावते क़ुरआने मजीद और ह़दीस पढ़ना और सुनना और **दुरूद शरीफ़** पढ़ना शब बेदारी है न कि ख़ाली जागना।[3] (ردالمحتار) सलातुल्लैल के मुतअ़ल्लिक़ आठ ह़दीसें ज़िम्नन अभी मज़्कूर हुईं इस के फ़ज़ाइल की बाज़ ह़दीसें और सुनिये :

ह़दीस 9 तिरमिज़ी व इब्ने माजह व ह़ाकिम बर शर्ते शैख़ैन अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, कहते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जब मदीने में तशरीफ़ लाए तो कसरत से लोग ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए, मैं भी ह़ाज़िर हुवा, जब मैं ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के चेहरे को ग़ौर से देखा, पहचान लिया कि येह मुंह झूटों का मुंह नहीं।" कहते हैं पहली बात जो मैं ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) से सुनी येह है, फ़रमाया : "ऐ लोगो ! सलाम शाएअ़ करो और खाना खिलाओ और रिश्तेदारों से नेक सुलूक करो और रात में नमाज़ पढ़ो जब लोग सोते हों, सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल होगे।"[4]

ह़दीस 10 ह़ाकिम ने ब इफ़ादए तस्ह़ीह़ रिवायत की, कि अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने सुवाल किया था कोई ऐसी चीज़ इरशाद हो कि उस पर अ़मल करूं तो जन्नत में दाख़िल होउं। इस पर भी वोही जवाब इरशाद हुवा।[5]

ह़दीस 11 व 12 त़बरानी कबीर में ब अस्नादे ह़सन व ह़ाकिम ब इफ़ादए तस्ह़ीह़ बर शर्ते शैख़ैन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं :

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٦٨.
2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب المساجد و مواضع الصلاة، باب فضل الصلاة العشاء... إلخ، الحديث: ٦٥٦، ص٣٢٩.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في إحياء ليالي العيدين... إلخ، ج٢، ص٥٦٩.
4 ..... "المستدرك" للحاكم، كتاب البر والصلة، باب إرحموا أهل الارض... إلخ، الحديث: ٧٣٥٩، ج٥، ص٢٢١.
و "الترغيب و الترهيب"، كتاب النوافل، الترغيب في قيام الليل، الحديث: ٤، ج١، ص٢٣٩.
5 ..... "المستدرك" للحاكم، كتاب البر والصلة، باب إرحموا أهل الارض... إلخ، الحديث: ٧٣٦٠، ج٥، ص٢٢١.

www.dawateislami.net

''जन्नत में एक बालाख़ाना है कि बाहर का अन्दर से दिखाई देता है और अन्दर का बाहर से।'' अबू मालिक अश्अ़री ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! वोह किस के लिये है ? फ़रमाया : ''उस के लिये कि अच्छी बात करे और खाना खिलाए और रात में क़ियाम करे जब लोग सोते हों।''[1] और इसी के मिस्ल अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللهُ عَنْه से भी मरवी है।

हदीस 13 बैहक़ी की एक रिवायत अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से है कि फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन लोग एक मैदान में जम्अ़ किये जाएंगे, उस वक़्त मुनादी पुकारेगा : कहां हैं वोह जिन की करवटें ख़्वाब गाहों से जुदा होती थीं ? वोह लोग खड़े होंगे और थोड़े होंगे वोह जन्नत में बग़ैर हिसाब दाख़िल होंगे फिर और लोगों के लिये हिसाब का हुक्म होगा।[2]

हदीस 14 सहीह़ मुस्लिम में जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) इरशाद फ़रमाते हैं : ''रात में एक ऐसी साअ़त है कि मर्द मुसलमान उस साअ़त में **अल्लाह** तआ़ला से दुन्या व आख़िरत की जो भलाई मांगे, वोह उसे देगा और येह हर रात में है।''[3]

हदीस 15 व 16 तिरमिज़ी अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि फ़रमाते हैं : ''क़ियामुल्लैल को अपने ऊपर लाज़िम कर लो कि येह अगले नेक लोगों का त़रीक़ा है और तुम्हारे रब (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ क़ुर्बत का ज़रीआ़ और सय्यिआत का मिटाने वाला और गुनाह से रोकने वाला।''[4] और सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ عَنْه की रिवायत में येह भी है कि ''बदन से बीमारी दफ़्अ़ करने वाला है।''[5]

हदीस 17 सहीह़ बुख़ारी में उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : ''जो रात में उठे और येह दुआ़ पढ़े :

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ رَبِّ اغْفِرْلِىْ.[6]

---

1 ..... "المستدرك" للحاكم، كتاب صلاة التطوع، باب صلاة الحاجة، الحديث: ١٢٤٠، ج١، ص٦٣١، عن عبد الله بن عمرو.

2 ..... "شعب الإيمان"، باب في الصلوات، الحديث: ٣٢٤٤، ج٣، ص١٦٩.

3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب في الليل ساعة مستجاب فيها الدعاء، الحديث: ٧٥٧، ص٣٨٠.

4 ..... "جامع الترمذي"، كتاب الدعوات، باب فى دعاء النبى صلى الله عليه وسلم، الحديث: ٣٥٦٠، ج٥، ص٣٢٢.

5 ..... "المعجم الكبير"، باب السين، الحديث: ٦١٥٤، ج٦، ص٢٥٨.

6 ...**तर्जमा : अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये मुल्क है और उसी के लिये ह़म्द है और वोह हर शै पर क़ादिर है और पाक है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और ह़म्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) बड़ा है और नहीं है गुनाह से फिरना और नेकी की ताक़त मगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के साथ ऐ मेरे परवरदिगार ! तू मुझे बख़्श दे। 12

www.dawateislami.net

फिर जो दुआ़ करे मक़्बूल होगी और अगर वुज़ू कर के नमाज़ पढ़े तो उस की नमाज़ मक़्बूल होगी ।''[1]

ह़दीस 18 सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم रात को तहज्जुद के लिये उठते तो येह दुआ़ पढ़ते :

اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ قَیِّمُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْھِنَّ وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْھِنَّ وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ مَلِکُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْھِنَّ وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ وَ وَعْدُکَ الْحَقُّ وَ لِقَاءُکَ حَقٌّ وَّقَوْلُکَ حَقٌّ وَّالْجَنَّۃُ حَقٌّ وَّالنَّارُ حَقٌّ وَّ النَّبِیُّوْنَ حَقٌّ وَّمُحَمَّدٌ حَقٌّ وَّالسَّاعَۃُ حَقٌّ اَللّٰھُمَّ لَکَ اَسْلَمْتُ وَبِکَ اٰمَنْتُ وَعَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَاِلَیْکَ اَنَبْتُ وَبِکَ خَاصَمْتُ وَاِلَیْکَ حَاکَمْتُ فَاغْفِرْلِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِہٖ مِنِّیْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ وَلَا اِلٰہَ غَیْرُکَ ۔[2]

येह एक दुआ़ और चन्द ह़दीसें ज़िक्र कर दी गईं और इन के इ़लावा इस नमाज़ के फ़ज़ाइल में ब कसरत अह़ादीस वारिद हैं, जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए उस के लिये येही बस हैं ।

नमाज़े इस्तिख़ारा

ह़दीसे सह़ीह़ जिस को मुस्लिम के सिवा जमाअ़ते मुह़द्दिसीन ने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत किया, फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم हम को तमाम उमूर में इस्तिख़ारे की तालीम फ़रमाते, जैसे कुरआन की सूरत तालीम फ़रमाते थे, फ़रमाते हैं :

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب التهجد، باب فضل من تعار من الليل فصلى، الحديث: ١١٥٤، ج١، ص٣٩١.
و "مرقاة المفاتيح"، كتاب الصلوٰة، باب ما يقول إذا قام من الليل، تحت الحديث: ١٢١٣، ج٣، ص٢٨٨.

2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب التهجد، باب التهجد بالليل، الحديث: ١١٢٠، ج١، ص٣٨١.

तर्जमा : इलाही ! तेरे ही लिये ह़म्द है, आस्मानो ज़मीन और जो कुछ इन में है सब का तू क़ाइम रखने वाला है और तेरे ही लिये ह़म्द है आस्मानो ज़मीन और जो कुछ इन में है सब का तू नूर है और तेरे ही लिये ह़म्द है आस्मानो ज़मीन और जो कुछ इन में है तू सब का बादशाह है और तेरे ही लिये ह़म्द है तू ह़क़ है और तेरा वादा ह़क़ है और तुझ से मिलना (क़ियामत) ह़क़ है और जन्नत ह़क़ है और दोज़ख़ ह़क़ है और अम्बिया ह़क़ हैं और मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ह़क़ हैं और क़ियामत ह़क़ है । ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तेरे लिये मैं इस्लाम लाया और तुझ पर ईमान लाया और तुझी पर तवक्कुल किया और तेरी ही त़रफ़ रुजूअ़ की और तेरी ही मदद से ख़ुसूमत की और तेरी ही त़रफ़ फ़ैसला लाया पस तू बख़्श दे मेरे लिये वोह गुनाह जो मैं ने पहले किया और पीछे किया और छुपा कर किया और अ़लानिया किया और वोह गुनाह जिस को तू मुझ से ज़ियादा जानता है तू ही आगे बढ़ाने वाला है और तू ही पीछे हटाने वाला है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं । 12

www.dawateislami.net

''जब कोई किसी अम्र का क़स्द करे तो दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े फिर कहे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُکَ بِعِلْمِکَ وَاَسْتَقْدِرُکَ بِقُدْرَتِکَ وَ اَسْاَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ الْعَظِیْمِ فَاِنَّکَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَ تَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ اَللّٰهُمَّ اِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ اَوْقَالَ عَاجِلِ اَمْرِیْ وَاٰجِلِهٖ فَاقْدُرْهُ لِیْ وَیَسِّرْهُ لِیْ ثُمَّ بَارِکْ لِیْ فِیْهِ وَاِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ اَوْ قَالَ عَاجِلِ اَمْرِیْ وَاٰجِلِهٖ فَاصْرِفْهُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْهُ وَاقْدُرْ لِیَ الْخَیْرَ حَیْثُ کَانَ ثُمَّ رَضِّنِیْ بِهٖ .(1)

और अपनी ह़ाजत का ज़िक्र करे ख़्वाह बजाए هٰذَا الْاَمْر के ह़ाजत का नाम ले या इस के बाद ।(2) (ردالمحتار)

اَوْ قَالَ عَاجِلِ اَمْرِیْ में اَوْ शके रावी है, फ़ुक़हा फ़रमाते हैं कि जम्अ़ करे यानी यूं कहे :

وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ وَعَاجِلِ اَمْرِیْ وَاٰجِلِهٖ .(3) (غنیہ)

मस्अला 1 ह़ज और जिहाद और दीगर नेक कामों में नफ़्से फ़ेल के लिये इस्तिख़ारा नहीं हो सकता । हां, तायीने वक़्त के लिये कर सकते हैं ।(4) (غنیہ)

मस्अला 2 मुस्तह़ब येह है कि इस दुआ़ के अव्वल आख़िर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ और दुरूद शरीफ़ पढ़े और पहली रक्अ़त में قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और दूसरी में قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़े और बाज़ मशाइख़ फ़रमाते हैं कि पहली में وَرَبُّكَ یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ وَیَخْتَارُ ؕ یُعْلِنُوْنَ तक और दूसरी में وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ आख़िरे आयत तक भी पढ़े ।(5) (ردالمحتار)

---

1 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) मैं तुझ से इस्तिख़ारा करता हूं तेरे इ़ल्म के साथ और तेरी क़ुदरत के साथ त़लबे क़ुदरत करता हूं और तुझ से तेरे फ़ज़्ले अ़ज़ीम का सुवाल करता हूं इस लिये कि तू क़ादिर है और मैं क़ादिर नहीं और तू जानता है और मैं नहीं जानता और तू ग़ैबों का जानने वाला है । ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) अगर तेरे इ़ल्म में येह है कि येह काम मेरे लिये बेहतर है मेरे दीन व मईशत और अन्जामे कार में या फ़रमाया इस वक़्त और आइन्दा में तो इस को मेरे लिये मुक़द्दर कर दे और आसान कर फिर मेरे लिये इस में बरकत दे और अगर तू जानता है कि मेरे लिये येह काम बुरा है मेरे दीन व मईशत और अन्जामे कार में या फ़रमाया इस वक़्त और आइन्दा में तो इस को मुझ से फेर दे और मुझ को इस से फेर और मेरे लिये ख़ैर को मुक़र्रर फ़रमा जहां भी हो फिर मुझे उस से राज़ी कर । 12

2 ..... "صحیح البخاري"، کتاب التهجد، باب ماجاء في التطوع... إلخ، الحدیث: ۱۱۶۲، ج۱، ص۳۹۳.
و "ردالمحتار"، کتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في رکعتی الاستخارة، ج۲، ص۵۶۹.
3 ..... "غنیة المتملي"، رکعتا الاستخارة، ص۴۳۱. 4 ..... المرجع السابق.
5 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في رکعتی الاستخارة، ج۲، ص۵۷۰.

www.dawateislami.net

मस्अला 3 बेहतर येह है कि सात बार इस्तिख़ारा करे कि एक ह़दीस में है : "ऐ अनस ! जब तू किसी काम का क़स्द करे तो अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) से उस में सात बार इस्तिख़ारा कर फिर नज़र कर तेरे दिल में क्या गुज़रा कि बेशक उसी में ख़ैर है।"[1] और बाज़ मशाइख़ से मन्क़ूल है कि दुआए मज़्कूर पढ़ कर बा त़हारत क़िब्ला रू सो रहे, अगर ख़्वाब में सफ़ेदी या सब्ज़ी देखे तो वोह काम बेहतर है और सियाही या सुर्ख़ी देखे तो बुरा है उस से बचे।[2] (ردالمحتار) इस्तिख़ारे का वक़्त उस वक़्त तक है कि एक त़रफ़ राय पूरी जम न चुकी हो।

सलातुत्तस्बीह़

इस नमाज़ में बे इन्तिहा सवाब है बाज़ मुह़क़्क़िक़ीन फ़रमाते हैं : इस की बुज़ुर्गी सुन कर तर्क न करेगा मगर दीन में सुस्ती करने वाला। नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه से फ़रमाया : "ऐ चचा ! क्या मैं तुम को अ़त़ा न करूं, क्या मैं तुम को बख़्शिश न करूं, क्या मैं तुम को न दूं, तुम्हारे साथ एह़सान न करूं, दस ख़स्लतें हैं कि जब तुम करो तो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा। अगला पिछला पुराना नया जो भूल कर किया और जो क़स्दन किया छोटा और बड़ा पोशीदा और ज़ाहिर। इस के बाद सलातुत्तस्बीह़ की तरकीब तालीम फ़रमाई फिर फ़रमाया कि अगर तुम से हो सके कि हर रोज़ एक बार पढ़ो तो करो और अगर रोज़ न करो तो हर जुमुआ़ में एक बार और येह भी न करो तो हर महीने में एक बार और येह भी न करो तो साल में एक बार और येह भी न करो तो उ़म्र में एक बार।" और इस की तरकीब हमारे त़ौर पर वोह है जो सुनने तिरमिज़ी शरीफ़ में ब रिवायते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللهُ عَنْه मज़्कूर है, फ़रमाते हैं : اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ पढ़े फिर येह पढ़े पन्दरह बार फिर अऊ़ज़ु और बिस्मिल्लाह और अल ह़म्द और सूरत पढ़ कर दस बार येही तस्बीह़ पढ़े फिर रुकूअ़ करे और रुकूअ़ में दस बार पढ़े फिर रुकूअ़ से सर उठाए और बादे तस्मीअ़ो तह़मीद दस बार कहे फिर सज्दे को जाए और उस में दस बार कहे फिर सज्दे से सर उठा कर दस बार कहे फिर सज्दे को जाए और उस में दस मरतबा पढ़े। यूंही चार रक्अ़त पढ़े। हर रक्अ़त में 75 बार तस्बीह़ और चारों में तीन सौ हुईं और रुकूअ़ो सुजूद में سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْم، سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى कहने के बाद तस्बीहात पढ़े।[3] (غنیہ وغیرہا)

मस्अला 1 इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से पूछा गया कि आप को मालूम है इस नमाज़

1 ..... "کنز العمال"، کتاب الصلاۃ، رقم: ۲۱۵۳۵، ج۷، ص۳۳۶.
2 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصلاۃ، باب الوتر و النوافل، مطلب في رکعتی الاستخارۃ، ج۲، ص۵۷۰.
3 ..... "غنیۃ المتملي"، صلاۃ التسبیح، ص۴۳۱.

www.dawateislami.net

में कौन सी सूरत पढ़ी जाए ? फ़रमाया : सूरए तकासुर और वल अ़स्र और قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ और बाज़ ने कहा : सूरए ह़दीद और ह़श्र और सफ़ और तग़ाबुन ।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 2 अगर सज्दए सह्व वाजिब हो और सज्दे करे तो उन दोनों में तस्बीह़ात न पढ़ी जाएं और अगर किसी जगह भूल कर दस बार से कम पढ़ी हैं तो दूसरी जगह पढ़ ले कि वोह मिक़्दार पूरी हो जाए और बेहतर येह है कि इस के बाद जो दूसरा मौक़अ़ तस्बीह़ का आए वहीं पढ़ ले मसलन क़ौमे की सज्दे में कहे और रुकूअ़ में भूला तो उसे भी सज्दे ही में कहे न क़ौमे में कि क़ौमे की मिक़्दार थोड़ी होती है और पहले सज्दे में भूला तो दूसरे में कहे जल्से में नहीं ।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 3 तस्बीह़ उंग्लियों पर न गिने बल्कि हो सके तो दिल में शुमार करे वरना उंग्लियां दबा कर ।[3]

मस्अला 4 हर वक़्ते ग़ैर मक्रूह में येह नमाज़ पढ़ सकता है और बेहतर येह, कि ज़ोह्र से पहले पढ़े ।[4] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 5 इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, कि इस नमाज़ में सलाम से पहले येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ تَوْفِیْقَ اَهْلِ الْهُدٰی وَاَعْمَالَ اَهْلِ الْیَقِیْنِ وَمُنَاصَحَةَ اَهْلِ التَّوْبَةِ وَعَزْمَ اَهْلِ الصَّبْرِ وَجِدَّ اَهْلِ الْخَشْیَةِ وَطَلَبَ اَهْلِ الرَّغْبَةِ وَتَعَبُّدَ اَهْلِ الْوَرَعِ وَعِرْفَانَ اَهْلِ الْعِلْمِ حَتّٰی اَخَافَکَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ مَخَافَةً تَحْجُزُنِیْ عَنْ مَعَاصِیْکَ حَتّٰی اَعْمَلَ بِطَاعَتِکَ عَمَلاً اَسْتَحِقُّ بِهٖ رِضَاکَ وَحَتّٰی اُنَاصِحَکَ بِالتَّوْبَةِ خَوْفًا مِّنْکَ وَحَتّٰی اُخْلِصَ لَکَ النَّصِیْحَةَ حُبًّا لَّکَ وَحَتّٰی اَتَوَکَّلَ عَلَیْکَ فِی الْاُمُوْرِ حُسْنَ ظَنِّ بِکَ سُبْحٰنَ خَالِقِ النُّوْرِ ۔[5] (ردالمحتار)

---

1 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة التسبیح، ج۲، ص۵۷۱. 2 ..... المرجع السابق.
3 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة التسبیح، ج۲، ص۵۷۲.
4 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة التسبیح، ج۲، ص۵۷۱.
و "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، ج۱، ص۱۱۳.
5 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة التسبیح، ج۲، ص۵۷۲.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं हिदायत वालों की तौफ़ीक़ और यक़ीन वालों के आमाल और अहले तौबा की ख़ैर ख़्वाही और अहले सब्र का अ़ज़्म और ख़ौफ़ वालों की कोशिश और रग़बत वालों की त़लब और परहेज़गारों की इबादत और अहले इ़ल्म की मारिफ़त ताकि मैं तुझ से डरूं । ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तुझ से ऐसा ख़ौफ़ मांगता हूं जो मुझे तेरी ना फ़रमानियों से रोके, ताकि मैं तेरी ता़अ़त के साथ ऐसा अ़मल करूं जिस की वज्ह से तेरी रिज़ा का मुस्तह़िक़ हो जाऊं, ताकि तेरे ख़ौफ़ से ख़ालिस तौबा करूं और ताकि तेरी मह़ब्बत की वज्ह से ख़ैर ख़्वाही को तेरे लिये ख़ालिस करूं और ताकि तमाम उमूर में तुझ पर तवक्कुल करूं, तुझ पर नेक गुमान करते हुए, पाक है नूर का पैदा करने वाला । 12

www.dawateislami.net

नमाज़े ह़ाजत

अबू दावूद हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, कहते हैं : "जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को कोई अम्रे अहम पेश आता तो नमाज़ पढ़ते।"[1] इस के लिये दो रक्अ़त या चार पढ़े। ह़दीस में है : "पहली रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और तीन बार आयतुल कुर्सी पढ़े और बाक़ी तीन रक्अ़तों में सूरए फ़ातिह़ा और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاس और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَق और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ एक एक बार पढ़े तो येह ऐसी हैं जैसे शबे क़द्र में चार रक्अ़तें पढ़ीं।" मशाइख़ फ़रमाते हैं कि हम ने येह नमाज़ पढ़ी और हमारी ह़ाजतें पूरी हुईं। एक ह़दीस में है जिस को तिरमिज़ी व इब्ने माजह ने अ़ब्दुल्लाह बिन औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत किया, कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस की कोई ह़ाजत **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ हो या किसी बनी आदम की त़रफ़ तो अच्छी त़रह़ वुज़ू करे फिर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सना करे और नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर दुरूद भेजे फिर येह पढ़े :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ اَسْأَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ لَّا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ .[2]

तिरमिज़ी ब इफ़ादए तह़सीन व तस्ह़ीह़ व इब्ने माजह व त़बरानी वग़ैरहुम उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि एक साहिब नाबीना ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुए और अ़र्ज़ की : **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से दुआ़ कीजिये कि मुझे आ़फ़ियत दे, इरशाद फ़रमाया : "अगर तू चाहे तो दुआ़ करूं और चाहे सब्र कर और येह तेरे लिये बेहतर है।" उन्हों ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) दुआ़ करें, उन्हें हुक्म फ़रमाया कि वुज़ू करो और अच्छा वुज़ू करो और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़ो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ وَاَتَوَسَّلُ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَّبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ [3]

1 ..... "سنن أبي داود"، كتاب التطوع، باب وقت قيام النبي صلى الله عليه وسلم من الليل، الحديث: ١٣١٩، ج٢، ص٥٢.

2 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الوتر، باب ماجاء في صلاة الحاجة، الحديث: ٤٧٨، ج٢، ص٢١.

तर्जमा : अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं जो ह़लीमो करीम है, पाक है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ), मालिक है अ़र्शे अ़ज़ीम का, ह़म्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये जो रब है तमाम जहां का, मैं तुझ से तेरी रह़मत के अस्बाब मांगता हूं और त़लब करता हूं तेरी बख़्शिश के ज़राएअ़ और हर नेकी से ग़नीमत और हर गुनाह से सलामती को मेरे लिये कोई गुनाह बग़ैर मग़्फ़िरत न छोड़ और हर ग़म को दूर कर दे और जो ह़ाजत तेरी रिज़ा के मुवाफ़िक़ है उसे पूरा कर दे, ऐ सब मेहरबानों से ज़ियादा मेहरबान। 12

3 ...ह़दीस में इस जगह **या मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) है। मगर मुजद्दिदे आज़म, आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने **या मुह़म्मद** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) कहने के बजाए **या रसूलल्लाह** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) कहने की तालीम दी है।

www.dawateislami.net

اِنِّیْ تَوَجَّهْتُ بِکَ اِلٰی رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ هٰذِهٖ لِتُقْضٰی لِیْ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِیَّ .[1]

उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : "ख़ुदा की क़सम ! हम उठने भी न पाए थे, बातें ही कर रहे थे कि वोह हमारे पास आए, गोया कभी अन्धे थे ही नहीं ।"[2] नीज़ क़ज़ाए ह़ाजत के लिये एक मुजर्रब नमाज़ जो उ़लमा हमेशा पढ़ते आए येह है कि इमामे आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के मज़ारे मुबारक पर जा कर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े और इमाम के वसीले से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करे, इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی फ़रमाते हैं कि मैं ऐसा करता हूं तो बहुत जल्द मेरी ह़ाजत पूरी हो जाती है ।[3] (خیرات الحسان)

सलातुल असरार

नीज़ इस के लिये एक मुजर्रब नमाज़ सलातुल असरार है जो इमाम अबुल ह़सन नूरुद्दीन अ़ली बिन जरीर लख़्मी शत़नौफ़ी बह्जतुल असरार में और मुल्ला अ़ली क़ारी व शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمْ हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत करते हैं, इस की तरकीब येह है कि बादे नमाज़े मग़रिब सुन्नतें पढ़ कर दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़े और बेहतर येह है कि अल ह़म्द के बाद हर रक्अ़त में ग्यारह ग्यारह बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़े । सलाम के बाद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करे फिर नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर ग्यारह बार दुरूदो सलाम अ़र्ज़ करे और ग्यारह बार येह कहे :

یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ یَا نَبِیَّ اللّٰهِ اَغِثْنِیْ وَامْدُدْنِیْ فِیْ قَضَاءِ حَاجَتِیْ یَا قَاضِیَ الْحَاجَاتِ .[4]

फिर इराक़ की जानिब ग्यारह क़दम चले, हर क़दम पर येह कहे :

یَا غَوْثَ الثَّقَلَیْنِ وَ یَا کَرِیْمَ الطَّرَفَیْنِ اَغِثْنِیْ وَامْدُدْنِیْ فِیْ قَضَاءِ حَاجَتِیْ یَا قَاضِیَ الْحَاجَاتِ .[5]

---

1 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तवस्सुल करता हूं और तेरी त़रफ़ मुतवज्जेह होता हूं तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के ज़रीए से जो नबिय्ये रह़मत हैं या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! मैं हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के ज़रीए से अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ इस ह़ाजत के बारे में मुतवज्जेह होता हूं, ताकि मेरी ह़ाजत पूरी हो । "इलाही ! उन की शफ़ाअ़त मेरे ह़क़ में क़बूल फ़रमा ।"12

2 ..... "سنن ابن ماجه"، كتاب إقامة الصلوات والسنة فيها، باب ماجاء في صلاة الحاجة، الحديث: ١٣٨٥، ج٢، ص١٥٦.
و "جامع الترمذي"، كتاب الدعوات، الحديث: ٣٥٨٩، ج٥، ص٣٣٦.
و "المعجم الكبير"، الحديث: ٨٣١١، ج٩، ص٣٠. دون قوله (واتوسل).

3 ..... "الخيرات الحسان"، الفصل الخامس و الثلاثون... إلخ، ص٢٣٠.
و "تاريخ بغداد"، باب ما ذكر في مقابر بغداد المخصوصة بالعلماء و الزهاد، ج١، ص١٣٥.

4 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के रसूल ! ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नबी ! मेरी फ़रियाद को पहुंचिये और मेरी मदद कीजिये मेरी ह़ाजत पूरी होने में, ऐ तमाम ह़ाजतों के पूरा करने वाले । 12

5 ...**तर्जमा :** ऐ जिन्नो इन्स के फ़रियाद रस और ऐ दोनों त़रफ़ (मां बाप) से बुज़ुर्ग ! मेरी फ़रियाद को पहुंचिये और मेरी मदद कीजिये मेरी ह़ाजत पूरी होने में, ऐ ह़ाजतों के पूरा करने वाले । 12

www.dawateislami.net

फिर हुज़ूर के तवस्सुल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करे।[1]

नमाज़े तौबा

अबू दावूद व तिरमिज़ी व इब्ने माजह और इब्ने ह़ब्बान अपनी सह़ीह़ में अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जब कोई बन्दा गुनाह करे फिर वुज़ू कर के नमाज़ पढ़े फिर इस्तिग़फ़ार करे, **अल्लाह** तआ़ला उस के गुनाह बख़्श देगा।" फिर येह आयत पढ़ी :

﴿ وَالَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۫ وَمَنْ یَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۫ وَلَمْ یُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴾[2]

जिन्हों ने बे ह़याई का कोई काम किया या अपनी जानों पर ज़ुल्म किया फिर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को याद किया और अपने गुनाहों की बख़्शिश मांगी और कौन गुनाह बख़्शे **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा और अपने किये पर दानिस्ता हट न की ह़ालां कि वोह जानते हैं।

मस्अला 1 सलातुर्रग़ाइब कि रजब की पहली शबे जुमुआ़ और शाबान की पन्दरहवीं शब और शबे क़द्र में जमाअ़त के साथ नफ़्ल नमाज़ बाज़ जगह लोग अदा करते हैं, फ़ुक़हा इसे ना जाइज़ व मक्रूह व बिद्अ़त कहते हैं और लोग इस बारे में जो ह़दीस बयान करते हैं मुह़द्दिसीन उसे मौज़ूअ़ बताते हैं।[3] लेकिन अजल्लए अकाबिर औलिया से ब असानीदे सह़ीह़ा मरवी है तो इस के मन्अ़ में ग़ुलू न चाहिये[4] और अगर जमाअ़त में तीन से ज़ाइद मुक़्तदी न हों जब तो अस्लन कोई ह़रज नहीं।

---

1 ..... "بهجة الأسرار"، ذكر فضل أصحابه و بشراهم، ص١٩٧. بتصرف.

2 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصلاة، باب ماجاء في الصلاة عند التوبة، الحديث: ٤٠٦، ج١، ص٤١٤. پ٤، اٰلِ عمرٰن: ١٣٥.

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في صلاة الرغائب، ج٢، ص٥٦٩، وغيره.

4 ...मुजद्दिदे आज़म, आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن "**फ़तावा रज़विय्या**", जिल्द 7, सफ़ह़ा 465 पर फ़रमाते हैं : "नफ़्ले ग़ैर तरावीह़ में इमाम के सिवा तीन आदमियों तक तो इजाज़त ही है। चार की निस्बत कुतुबे ह़नफ़िया में कराहत लिखते हैं यानी कराहते तन्ज़ीह जिस का ह़ासिल ख़िलाफ़े औला है न कि गुनाह व ह़राम **كما بيناه في فتاوٰنا** (जैसा कि हम ने अपने फ़तावा में इस की तफ़्सील बयान कर दी है। ت) मगर मस्अला मुख़्तलिफ़ फ़ीह है और बहुत अकाबिरे दीन से जमाअ़ते नवाफ़िल बित्तदाई (तदाई का लुग़वी माना है "एक दूसरे को बुलाना"। और तदाई के साथ जमाअ़त का मत़लब है कि कम से कम चार आदमी एक इमाम की इक़्तिदा करें। ("الفتاوى الرضوية"، ج٧، ص٤٣٠) साबित है और अ़वाम फ़ेले ख़ैर से मन्अ़ न किये जाएंगे कि उ़लमाए उम्मत व हुक्माए मिल्लत ने ऐसी मुमानअ़त से मन्अ़ फ़रमाया है।" ("الفتاوى الرضوية"، ج٧، ص٤٦٥.)

www.dawateislami.net

तरावीह़ का बयान

मस्अला 1 तरावीह़ मर्द व औ़रत सब के लिये बिल इज्माअ़ सुन्नते मुअक्कदा है इस का तर्क जाइज़ नहीं ।[1] (درمختار وغیرہ) इस पर ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم ने मुदावमत फ़रमाई और नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم का इरशाद है कि "मेरी सुन्नत और सुन्नते ख़ुलफ़ाए राशिदीन को अपने ऊपर लाज़िम समझो ।"[2] और ख़ुद हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने भी तरावीह़ पढ़ी और इसे बहुत पसन्द फ़रमाया ।

सह़ीह़ मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, इरशाद फ़रमाते हैं : "जो रमज़ान में क़ियाम करे ईमान की वज्ह से और सवाब त़लब करने के लिये, उस के अगले सब गुनाह बख़्श दिये जाएंगे[3] यानी सग़ाइर ।" फिर इस अन्देशे से कि उम्मत पर फ़र्ज़ न हो जाए तर्क फ़रमाई फिर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रमज़ान में एक रात मस्जिद को तशरीफ़ ले गए और लोगों को मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर नमाज़ पढ़ते पाया कोई तन्हा पढ़ रहा है, किसी के साथ कुछ लोग पढ़ रहे हैं, फ़रमाया : मैं मुनासिब जानता हूं कि इन सब को एक इमाम के साथ जम्अ़ कर दूं तो बेहतर हो, सब को एक इमाम उबय बिन कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के साथ इकठ्ठा कर दिया फिर दूसरे दिन तशरीफ़ ले गए मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि लोग अपने इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ते हैं फ़रमाया نِعْمَتِ الْبِدْعَةُ هٰذِهٖ येह अच्छी बिद्अ़त है ।[4] رواہ اصحاب السنن

मस्अला 2 जुम्हूर का मज़हब येह है कि तरावीह़ की बीस रक्अ़तें हैं[5] और येही अह़ादीस से साबित, बैहक़ी ने ब सनदे सह़ीह़ साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत की, कि लोग फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के ज़माने में बीस रक्अ़तें पढ़ा करते थे ।[6] और उ़स्मान व अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के अ़ह्द में भी यूंही था ।[7] और मुअत्ता में यज़ीद बिन रूमान से रिवायत है कि उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के ज़माने में लोग रमज़ान में तेईस23 रक्अ़तें पढ़ते ।[8] बैहक़ी ने कहा इस में तीन रक्अ़तें वित्र की हैं ।[9] और मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक शख़्स को हुक्म फ़रमाया कि

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٩٦، وغيره .
2 ..... "جامع الترمذي"، أبواب العلم، باب ماجاء في الأخذ بالسنة... إلخ، الحديث: ٢٦٨٥، ج٤، ص٣٠٨.
3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين، باب الترغيب في قيام رمضان وهو التراويح، الحديث: ٧٥٩، ص٣٨٢.
4 ..... "صحيح البخاري"، كتاب صلاة التراويح، باب فضل من قام رمضان، الحديث : ٢٠١٠، ج١، ص٦٥٨.
و "الموطأ" لإمام مالك، كتاب الصلاة في رمضان، باب ماجاء في قيام رمضان، رقم ٢٥٥، ج١، ص١٢٠.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٥٩٩.
6 ..... "معرفة السنن و الآثار" للبيهقي، كتاب الصلاة، باب قيام رمضان، رقم ١٣٦٥، ج٢، ص٣٠٥.
7 ..... "فتح باب العناية شرح النقاية"، كتاب الصلاة، فصل في صلاة التراويح، ج١، ص٣٤٢.
8 ..... "الموطأ" لإمام مالك، كتاب الصلاة في رمضان، باب ماجاء في قيام رمضان، رقم ٢٥٧، ج١، ص١٢٠.
9 ..... "السنن الكبرى"، كتاب الصلاة، باب ما روى في عدد ركعات القيام في شهر رمضان، الحديث: ٤٦١٨، ج٢، ص٦٩٩.

www.dawateislami.net

रमज़ान में लोगों को बीस[20] रक्अ़तें पढ़ाए ।[1] नीज़ इस के बीस रक्अ़त होने में येह हिक्मत है कि फ़राइज़ो वाजिबात की इस से तक्मील होती है और कुल फ़राइज़ो वाजिब की हर रोज़ बीस[20] रक्अ़तें हैं, लिहाज़ा मुनासिब कि येह भी बीस हों कि मुकम्मल व मुकम्मल बराबर हों ।

मस्अला 3 इस का वक़्त फ़र्ज़े इ़शा के बाद से तुलूए़ फ़ज्र तक है वित्र से पहले भी हो सकती है और बाद भी तो अगर कुछ रक्अ़तें इस की बाक़ी रह गईं कि इमाम वित्र को खड़ा हो गया तो इमाम के साथ वित्र पढ़ ले फिर बाक़ी अदा कर ले जब कि फ़र्ज़ जमाअ़त से पढ़े हों और येह अफ़्ज़ल है और अगर तरावीह़ पूरी कर के वित्र तन्हा पढ़े तो भी जाइज़ है और अगर बाद में मालूम हुवा कि नमाज़े इ़शा बग़ैर त़हारत पढ़ी थी और तरावीह़ व वित्र त़हारत के साथ तो इ़शा व तरावीह़ फिर पढ़े, वित्र हो गई ।[2] (درمختار، ردالمحتار، عالمگیری)

मस्अला 4 मुस्तह़ब येह है कि तिहाई रात तक ताख़ीर करें और आधी रात के बाद पढ़ें तो भी कराहत नहीं ।[3] (درمختار)

मस्अला 5 अगर फ़ौत हो जाएं तो इन की क़ज़ा नहीं और अगर क़ज़ा तन्हा पढ़ ली तो तरावीह़ नहीं बल्कि नफ़्ले मुस्तह़ब हैं, जैसे मग़रिब व इ़शा की सुन्नतें ।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 6 तरावीह़ की बीस[20] रक्अ़तें दस सलाम से पढ़े यानी हर दो रक्अ़त पर सलाम फेरे और अगर किसी ने बीसों पढ़ कर आख़िर में सलाम फेरा तो अगर हर दो रक्अ़त पर क़ादा करता रहा तो हो जाएगी मगर कराहत के साथ और अगर क़ादा न किया था तो दो रक्अ़त के क़ाइम मक़ाम हुईं ।[5] (درمختار)

मस्अला 7 एह़तियात येह है कि जब दो दो रक्अ़त पर सलाम फेरे तो हर दो रक्अ़त पर अलग अलग निय्यत करे और अगर एक साथ बीसों रक्अ़त की निय्यत कर ली तो भी जाइज़ है ।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 8 तरावीह़ में एक बार क़ुरआने मजीद ख़त्म करना सुन्नते मुअक्कदा है और

1 ..... "السنن الكبرى"، كتاب الصلاة، باب ما روى في عدد ركعات القيام في شهر رمضان، الحديث: ٤٦٢١، ج٢، ص٦٩٩.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٥٩٧.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٥.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٩٨.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٥٩٨.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٥٩٩.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٥٩٧.

www.dawateislami.net

दो मरतबा फ़ज़ीलत और तीन मरतबा अफ़्ज़ल। लोगों की सुस्ती की वज्ह से ख़त्म को तर्क न करे।[1] (درمختار)

मस्अला 9 इमाम व मुक़्तदी हर दो रक्अ़त पर सना पढ़ें और बादे तशह्हुद दुआ़ भी, हां अगर मुक़्तदियों पर गिरानी हो तो तशह्हुद के बाद اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ पर इक्तिफ़ा करे।[2] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 10 अगर एक ख़त्म करना हो तो बेहतर येह है कि सत्ताईसवीं शब में ख़त्म हो फिर अगर इस रात में या इस के पहले ख़त्म हो तो तरावीह़ आख़िर रमज़ान तक बराबर पढ़ते रहें कि सुन्नते मुअक्कदा हैं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 11 अफ़्ज़ल येह है कि तमाम शुफ़्ओं में क़िराअत बराबर हो और अगर ऐसा न किया जब भी ह़रज नहीं। यूंही हर शुफ़्अ़ की पहली रक्अ़त और दूसरी की क़िराअत मुसावी हो दूसरी की क़िराअत पहली से ज़ियादा न होना चाहिये।[4] (عالمگیری)

मस्अला 12 क़िराअत और अरकान की अदा में जल्दी करना मक्रूह है और जितनी तरतील ज़ियादा हो[5] बेहतर है। यूंही तअ़व्वुज़ व तस्मिया व त़मानीनत व तस्बीह़ का छोड़ देना भी मक्रूह है।[6] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 13 हर चार रक्अ़त पर इतनी देर तक बैठना मुस्तह़ब है जितनी देर में चार रक्अ़तें पढ़ीं, पांचवें तरवीहा और वित्र के दरमियान अगर बैठना लोगों पर गिरां हो तो न बैठे।[7] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 14 इस बैठने में उसे इख़्तियार है कि चुपका बैठा रहे या कलिमा पढ़े या तिलावत करे या दुरूद शरीफ़ पढ़े या चार रक्अ़तें तन्हा नफ़्ल पढ़े जमाअ़त से मक्रूह है या येह तस्बीह़ पढ़े :

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْکِ وَالْمَلَکُوْتِ سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْکِبْرِیَآءِ وَالْجَبَرُوْتِ. سُبْحَانَ الْمَلِکِ الْحَیِّ الَّذِیْ لَا یَنَامُ وَلَا یَمُوْتُ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰئِکَةِ وَالرُّوْحِ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ نَسْتَغْفِرُ

1 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج۲، ص۶۰۱. و "الفتاوی الرضویة"، ج۷، ص۴۵۸.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراویح، ج۲، ص۶۰۲.
3 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراویح، ج۱، ص۱۱۸.
4 ..... المرجع السابق، ص۱۱۷.
5 ...یانी जिस क़दर हुरूफ़ को अच्छी त़रह़ अदा करे।
6 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراویح، ج۱، ص۱۱۷.
و "الدرالمختار"، کتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج۲، ص۶۰۳.
7 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراویح، ج۱، ص۱۱۵، وغیره.

www.dawateislami.net

اَللّٰهَ نَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ ۔[1] (غنیہ وردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 15 हर दो[2] रक्अ़त के बाद दो[2] रक्अ़त (नफ़्ल) पढ़ना मक्रूह है। यूंही दस[10] रक्अ़त के बाद बैठना भी मक्रूह।[2] (درمختار، عالمگیری)

मस्अला 16 तरावीह़ में जमाअ़त सुन्नते किफ़ाया है कि अगर मस्जिद के सब लोग छोड़ देंगे तो सब गुनहगार होंगे और अगर किसी एक ने घर में तन्हा पढ़ ली तो गुनहगार नहीं मगर जो शख़्स मुक़्तदा हो कि उस के होने से जमाअ़त बड़ी होती है और छोड़ देगा तो लोग कम हो जाएंगे उसे बिला उ़ज़्र जमाअ़त छोड़ने की इजाज़त नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 17 तरावीह़ मस्जिद में बा जमाअ़त पढ़ना अफ़्ज़ल है अगर घर में जमाअ़त से पढ़ी तो जमाअ़त के तर्क का गुनाह न हुवा मगर वोह सवाब न मिलेगा जो मस्जिद में पढ़ने का था।[4] (عالمگیری)

मस्अला 18 अगर आ़लिम ह़ाफ़िज़ भी हो तो अफ़्ज़ल येह है कि ख़ुद पढ़े दूसरे की इक़्तिदा न करे और अगर इमाम ग़लत़ पढ़ता हो तो मस्जिदे मह़ल्ला छोड़ कर दूसरी मस्जिद में जाने में ह़रज नहीं। यूंही अगर दूसरी जगह का इमाम ख़ुश आवाज़ हो या हलकी क़िराअत पढ़ता हो या मस्जिदे मह़ल्ला में ख़त्म न होगा तो दूसरी मस्जिद में जाना जाइज़ है।[5] (عالمگیری)

मस्अला 19 ख़ुश ख़्वान को इमाम बनाना न चाहिये बल्कि **दुरुस्त ख़्वान** को बनाएं।[6] (عالمگیری) अफ़्सोस सद अफ़्सोस कि इस ज़माने में हुफ़्फ़ाज़ की ह़ालत निहायत न गुफ़्ता बेह है, अक्सर तो ऐसा पढ़ते हैं कि يَعْلَمُوْنَ تَعْلَمُوْنَ के सिवा कुछ पता नहीं चलता। अल्फ़ाज़ व ह़ुरूफ़ खा जाया करते हैं जो अच्छा पढ़ने वाले कहे जाते हैं उन्हें देखिये तो

---

1 ..... "غنية المتملي"، تراويح، ص٤٠٤.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٦٠٠، وغيرهما.

तर्जमा : पाक है मुल्क व मलकूत वाला, पाक है इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी और बड़ाई और जबरूत वाला, पाक है बादशाह जो ज़िन्दा है, जो न सोता है न मरता है, पाक मुक़द्दस है फ़रिश्तों और रूह़ का मालिक, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से हम मग़्फ़िरत चाहते हैं, तुझ से जन्नत का सुवाल करते हैं और जहन्नम से तेरी पनाह मांगते हैं। 12

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٥.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٦٠١.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٦.

4 ..... المرجع السابق. 5 ..... المرجع السابق. 6 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

हुरूफ़ सह़ीह़ नहीं अदा करते : ع، ا، ء और ظ، ز، ذ और ط، ت और ص، س، ث वग़ैरहा हुरूफ़ में तफ़्क़ीर[1] नहीं करते जिस से क़त्अ़न नमाज़ ही नहीं होती फ़क़ीर को इन्हीं मुसीबतों की वज्ह से तीन साल ख़त्मे क़ुरआने मजीद सुनना न मिला। मौला عَزَّوَجَلَّ मुसलमान भाइयों को तौफ़ीक़ दे कि مَا اَنْزَلَ اللّٰہُ पढ़ने की कोशिश करें।

मस्अला 20 आज कल अक्सर रवाज हो गया है कि ह़ाफ़िज़ को उजरत दे कर तरावीह़ पढ़वाते हैं येह ना जाइज़ है। देने वाला और लेने वाला दोनों गुनहगार हैं, उजरत सिर्फ़ येही नहीं कि पेशतर मुक़र्रर कर लें कि येह लेंगे येह देंगे, बल्कि अगर मालूम है कि यहां कुछ मिलता है, अगर्चे इस से तै न हुवा हो येह भी ना जाइज़ है कि اَلْمَعْرُوْفُ كَالْمَشْرُوْطِ हां अगर कह दे कि कुछ नहीं दूंगा या नहीं लूंगा फिर पढ़े और ह़ाफ़िज़ की ख़िदमत करें तो इस में ह़रज नहीं कि اَلصَّرِيْحُ يُفَوِّقُ الدَّلَالَةَ।[2]

मस्अला 21 एक इमाम दो मस्जिदों में तरावीह़ पढ़ाता है अगर दोनों में पूरी पूरी पढ़ाए तो ना जाइज़ है और मुक़्तदी ने दो मस्जिदों में पूरी पूरी पढ़ी तो ह़रज नहीं मगर दूसरी में वित्र पढ़ना जाइज़ नहीं जब कि पहली में पढ़ चुका और अगर घर में तरावीह़ पढ़ कर मस्जिद में आया और इमामत की तो मक्रूह है।[3] (عالمگیری)

मस्अला 22 लोगों ने तरावीह़ पढ़ ली अब दोबारा पढ़ना चाहते हैं तो तन्हा तन्हा पढ़ सकते हैं जमाअ़त की इजाज़त नहीं।[4] (عالمگیری)

मस्अला 23 अफ़्ज़ल येह है कि एक इमाम के पीछे तरावीह़ पढ़ें और दो के पीछे पढ़ना चाहें तो बेहतर येह है कि पूरे तरवीहा पर इमाम बदलें, मसलन आठ एक के पीछे और बारह दूसरे के।[5] (عالمگیری)

मस्अला 24 ना बालिग़ के पीछे बालिग़ीन की तरावीह़ न होगी येही सह़ीह़ है।[6] (عالمگیری)

मस्अला 25 रमज़ान शरीफ़ में वित्र जमाअ़त के साथ पढ़ना अफ़्ज़ल है ख़्वाह उसी इमाम के पीछे जिस के पीछे इ़शा व तरावीह़ पढ़ी या दूसरे के पीछे।[7] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 26 येह जाइज़ है कि एक शख़्स इ़शा व वित्र पढ़ाए दूसरा तरावीह़। जैसा कि

---

1 ...यानी फ़र्क़। 2 ...यानी सराह़त को दलालत पर फ़ौक़िय्यत है।

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٦.

4 ..... المرجع السابق. 5 ..... المرجع السابق.

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس، الفصل الثالث، ج١، ص٨٥.

7 ..... المرجع السابق، ص١١٦، و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مطلب في كراهة الاقتداء في النفل على سبيل التداعي... إلخ، ج٢، ص٦٠٦.

www.dawateislami.net

ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इ़शा व वित्र की इमामत करते थे और उबय बिन कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ तरावीह़ की।[1] (عالمگیری)

मस्अला 27 अगर सब लोगों ने इ़शा की जमाअ़त तर्क कर दी तो तरावीह़ भी जमाअ़त से न पढ़ें। हां, इ़शा जमाअ़त से हुई और बाज़ को जमाअ़त न मिली। तो येह जमाअ़ते तरावीह़ में शरीक हों।[2] (درمختار)

मस्अला 28 अगर इ़शा जमाअ़त से पढ़ी और तरावीह़ तन्हा तो वित्र की जमाअ़त में शरीक हो सकता है और अगर इ़शा तन्हा पढ़ ली अगर्चे तरावीह़ बा जमाअ़त पढ़ी तो वित्र तन्हा पढ़े।[3] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 29 इ़शा की सुन्नतों का सलाम न फेरा उसी में तरावीह़ मिला कर शुरूअ़ की तो तरावीह़ नहीं हुई।[4] (عالمگیری)

मस्अला 30 तरावीह़ बैठ कर पढ़ना बिला उ़ज़्र मक्रूह है, बल्कि बाज़ों के नज़्दीक तो होगी ही नहीं।[5] (درمختار)

मस्अला 31 मुक़्तदी को येह जाइज़ नहीं कि बैठा रहे जब इमाम रुकूअ़ करने को हो तो खड़ा हो जाए कि येह मुनाफ़िक़ीन से मुशाबहत है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿ اِذَا قَامُوْۤا اِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى ۙ ﴾

मुनाफ़िक़ जब नमाज़ को खड़े होते हैं तो थके जी से।[6] (غنیہ وغیرہا)

मस्अला 32 इमाम से ग़लती हुई, कोई सूरत या आयत छूट गई तो मुस्तह़ब येह है कि उसे पहले पढ़ कर फिर आगे बढ़े।[7] (عالمگیری)

मस्अला 33 दो रक्अ़त पर बैठना भूल गया, खड़ा हो गया तो जब तक तीसरी का सज्दा न किया हो बैठ जाए और सज्दा कर लिया हो तो चार पूरी कर ले मगर येह दो शुमार की

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٦.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٦٠٣.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٦٠٣.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٧.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٦٠٣.
6 ..... "غنية المتملي شرح منية المصلي"، تراويح، فروع، ص٤١٠.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الوتر و النوافل، مبحث صلاة التراويح، ج٢، ص٦٠٣. پ٥، النسآء: ١٤٢.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ١١٨.

www.dawateislami.net

जाएंगी और जो दो पर बैठ चुका है तो चार हुईं ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 34 तीन रक्अ़त पढ़ कर सलाम फेरा, अगर दूसरी पर बैठा न था तो न हुईं इन के बदले की दो रक्अ़त फिर पढ़े ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 35 क़ादे में मुक़्तदी सो गया, इमाम सलाम फेर कर और दो रक्अ़त पढ़ कर क़ादे में आया अब येह बेदार हुवा तो अगर मालूम हो गया तो सलाम फेर कर शामिल हो जाए और इमाम के सलाम फेरने के बाद जल्द पूरी कर के इमाम के साथ हो जाए ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 36 वित्र पढ़ने के बाद लोगों को याद आया कि दो रक्अ़तें रह गईं तो जमाअ़त से पढ़ लें और आज याद आया कि कल दो रक्अ़तें रह गई थीं तो जमाअ़त से पढ़ना मक्रूह है ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 37 सलाम फेरने के बाद कोई कहता है दो हुईं कोई कहता है तीन तो इमाम के इ़ल्म में जो हो उस का एतिबार है और इमाम को किसी बात का यक़ीन न हो तो जिस को सच्चा जानता हो उस का क़ौल एतिबार करे । अगर इस में लोगों को शक हो कि बीस हुईं या अठ्ठारह तो दो रक्अ़त तन्हा तन्हा पढ़ें ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 38 अगर किसी वज्ह से नमाज़े तरावीह़ फ़ासिद हो जाए तो जितना क़ुरआने मजीद उन रक्अ़तों में पढ़ा है इआ़दा करें ताकि ख़त्म में नुक़्सान न रहे ।[6] (عالمگیری)

मस्अला 39 अगर किसी वज्ह से ख़त्म न हो तो सूरतों की तरावीह़ पढ़ें और इस के लिये बाज़ों ने येह त़रीक़ा रखा है कि اَلَمْ تَرَ كَيْفَ से आख़िर तक दो बार पढ़ने में बीस रक्अ़तें हो जाएंगी ।[7] (عالمگیری)

मस्अला 40 एक बार बिस्मिल्लाह शरीफ़ जह्र[8] से पढ़ना सुन्नत है और हर सूरत की इब्तिदा में आहिस्ता पढ़ना मुस्तह़ब और येह जो आज कल बाज़ जुह्हाल ने निकाला है कि एक सौ चौदह बार बिस्मिल्लाह जह्र से पढ़ी जाए वरना ख़त्म न होगा, मज़्हबे ह़नफ़ी में बे अस्ल है ।

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ١١٨.

2 ..... المرجع السابق.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٩.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٧.

5 ..... المرجع السابق.

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع في النوافل، فصل في التراويح، ج١، ص١١٨.

7 ..... المرجع السابق.

8 ...यानी ऊंची आवाज़ ।

www.dawateislami.net

मस्अला 41 मुतअख़्ख़िरीन ने ख़त्मे तरावीह़ में तीन बार قُلْ هُوَاللّٰهُ पढ़ना मुस्तह़ब कहा और बेहतर येह है कि ख़त्म के दिन पिछली रक्अ़त में الٓمّٓ से اَلْمُفْلِحُوْنَ तक पढ़े।

मस्अला 42 शबीना कि एक रात की तरावीह़ में पूरा कुरआन पढ़ा जाता है, जिस त़रह़ आज कल रवाज है कि कोई बैठा बातें कर रहा है, कुछ लोग लैटे हैं, कुछ लोग चाय पीने में मश्ग़ूल हैं, कुछ लोग मस्जिद के बाहर हुक़्क़ा नोशी कर रहे हैं और जब जी में आया एकआध रक्अ़त में शामिल भी हो गए येह ना जाइज़ है।

फ़ाएदा : हमारे इमामे आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ रमज़ान शरीफ़ में इक्सठ ख़त्म किया करते थे। तीस[30] दिन में और तीस रात में और एक तरावीह़ में और पैंतालीस बरस इ़शा के वुज़ू से नमाज़े फ़ज्र पढ़ी है।

मुन्फ़रिद का फ़र्ज़ों की जमाअ़त पाना

ह़दीस 1 व 2 इमाम मालिक व नसाई रिवायत करते हैं कि एक सह़ाबी मिह़जन नामी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ एक मजलिस में ह़ाज़िर थे, अज़ान हुई, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) खड़े हुए और नमाज़ पढ़ी, वोह बैठे रह गए। इरशाद फ़रमाया : "जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ने से क्या चीज़ मानेअ़ हुई ? क्या तुम मुसलमान नहीं हो !" अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! हूं तो मगर मैं ने घर पढ़ ली थी, इरशाद फ़रमाया : "जब नमाज़ पढ़ कर मस्जिद में आओ और नमाज़ क़ाइम की जाए तो लोगों के साथ पढ़ लो अगर्चे पढ़ चुके हो।"[1] इसी के मिस्ल यज़ीद बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का वाक़िआ़ है जो अबू दावूद में मरवी।

ह़दीस 3 इमाम मालिक ने रिवायत की, कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जो मग़रिब या सुब्ह़ की पढ़ चुका है फिर जब इमाम के साथ पाए इआ़दा न करे।"[2]

मस्अला 1 तन्हा फ़र्ज़ नमाज़ शुरूअ़ ही की थी यानी अभी पहली रक्अ़त का सज्दा न किया था कि जमाअ़त क़ाइम हुई तो तोड़ कर जमाअ़त में शामिल हो जाए।[3] (درمختار)

मस्अला 2 फ़ज्र या मग़रिब की नमाज़ एक रक्अ़त पढ़ चुका था कि जमाअ़त क़ाइम हुई तो फ़ौरन नमाज़ तोड़ कर जमाअ़त में शामिल हो जाए अगर्चे दूसरी रक्अ़त पढ़ रहा हो, अलबत्ता दूसरी रक्अ़त का सज्दा कर लिया तो अब इन दो नमाज़ों में तोड़ने की इजाज़त नहीं

1 ..... "الموطأ" لإمام مالك، كتاب صلاة الجماعة، باب إعادة الصلاة مع الإمام، الحديث: ٣٠٢، ج١، ص١٣٥.
و "مشكاة المصابيح"، كتاب الصلاة، باب من صلى صلاة مرتين، الحديث: ١١٥٣، ج١، ص٣٣٨.

2 ..... "الموطأ" لإمام مالك، كتاب صلاة الجماعة، باب إعادة الصلاة مع الإمام، الحديث: ٣٠٦، ج١، ص١٣٦.

3 ..... "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص٦٠٦ ـ ٦١٠.

www.dawateislami.net

और नमाज़ पूरी करने के बाद ब निय्यते नफ़्ल भी इन में शरीक नहीं हो सकता कि फ़ज्र के बाद नफ़्ल जाइज़ नहीं और मग़रिब में इस वज्ह से कि तीन रक्अ़तें नफ़्ल की नहीं और मग़रिब में अगर शामिल हो गया तो बुरा किया, इमाम के सलाम फेरने के बाद एक रक्अ़त और मिला कर चार कर ले और अगर इमाम के साथ सलाम फेर दिया तो नमाज़ फ़ासिद हो गई चार रक्अ़त क़ज़ा करे।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 3 मग़रिब पढ़ने वाले के पीछे नफ़्ल की निय्यत से शामिल हो गया। इमाम ने चौथी रक्अ़त को तीसरी गुमान किया और खड़ा हो गया इस मुक़्तदी ने उस का इत्तिबाअ़ किया, इस की नमाज़ फ़ासिद हो गई, तीसरी पर इमाम ने क़ादा किया हो या नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 4 चार रक्अ़त वाली नमाज़ शुरूअ़ कर के एक रक्अ़त पढ़ ली यानी पहली रक्अ़त का सज्दा कर लिया तो वाजिब है कि एक और पढ़ कर तोड़ दे कि येह दो रक्अ़तें नफ़्ल हो जाएं और दो पढ़ ली हैं तो अभी तोड़ दे यानी तशह्हुद पढ़ कर सलाम फेर दे और तीन पढ़ ली हैं तो वाजिब है कि न तोड़े, तोड़ेगा तो गुनहगार होगा बल्कि हुक्म येह है कि पूरी कर के नफ़्ल की निय्यत से जमाअ़त में शामिल हो, जमाअ़त का सवाब पा लेगा। मगर अ़स्र में शामिल नहीं हो सकता कि अ़स्र के बाद नफ़्ल जाइज़ नहीं।[3] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 5 जमाअ़त क़ाइम होने से मुअज़्ज़िन का तक्बीर कहना मुराद नहीं बल्कि जमाअ़त शुरूअ़ हो जाना मुराद है, मुअज़्ज़िन के तक्बीर कहने से क़त्अ़ न करेगा अगर्चे पहली रक्अ़त का हुनूज़[4] सज्दा न किया हो।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 6 जमाअ़त क़ाइम होने से नमाज़ क़त्अ़ करना उस वक़्त है कि जिस मक़ाम पर येह नमाज़ पढ़ता हो वहीं जमाअ़त क़ाइम हो, अगर येह घर में नमाज़ पढ़ता है और मस्जिद में जमाअ़त क़ाइम हुई या एक मस्जिद में येह पढ़ता है दूसरी मस्जिद में जमाअ़त क़ाइम हुई तो तोड़ने का हुक्म नहीं अगर्चे पहली का सज्दा न किया हो।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 7 नफ़्ल शुरूअ़ किये थे और जमाअ़त क़ाइम हुई तो क़त्अ़ न करे बल्कि दो रक्अ़त पूरी कर ले, अगर्चे पहली का सज्दा भी न किया हो और तीसरी पढ़ता हो तो चार पूरी कर ले।[7] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 8 जुमुआ़ और ज़ोहर की सुन्नतें पढ़ने में ख़ुत्बा या जमाअ़त शुरूअ़ हुई तो चार पूरी कर ले।[8] (درمختار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العاشر في إدراك الفريضة، ج١، ص١١٩، وغيره.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العاشر في إدراك الفريضة، ج١، ص١١٩.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب: صلاة ركعة واحدة باطلة... إلخ، ج٢، ص٦١٠.
4 ...अभी तक।
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص٦٠٨. 6 ..... المرجع السابق.
7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب: صلاة ركعة واحدة... إلخ، ج٢، ص٦١١.
8 ..... "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص٦١١.

www.dawateislami.net

मस्अला 9 सुन्नत या क़ज़ा नमाज़ शुरूअ़ की और जमाअ़त क़ाइम हुई तो पूरी कर के शामिल हो। हां, जो क़ज़ा शुरूअ़ की अगर बिऐनिही उसी क़ज़ा के लिये जमाअ़त क़ाइम हुई तो तोड़ कर शामिल हो जाए।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 10 नमाज़ तोड़ना बग़ैर उ़ज़्र हो तो ह़राम है और माल के तलफ़[2] का अन्देशा हो तो मुबाह़ और कामिल करने के लिये हो तो मुस्तह़ब और जान बचाने के लिये हो तो वाजिब।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 11 नमाज़ तोड़ने के लिये बैठने की ह़ाजत नहीं खड़ा खड़ा एक त़रफ़ सलाम फेर कर तोड़ दे।[4] (عالمگیری)

मस्अला 12 जिस शख़्स ने नमाज़ न पढ़ी हो उसे मस्जिद से अज़ान के बाद निकलना मक्रूहे तह़रीमी है। इब्ने माजह उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अज़ान के बाद जो मस्जिद से चला गया और किसी ह़ाजत के लिये नहीं गया और न वापस होने का इरादा है वोह मुनाफ़िक़ है।"[5] इमाम बुख़ारी के इ़लावा जमाअ़ते मुह़द्दिसीन ने रिवायत की, कि अबुश्शअ़सा कहते हैं : हम अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के साथ मस्जिद में थे जब मुअज़्ज़िन ने अ़स्र की अज़ान कही, उस वक़्त एक शख़्स चला गया इस पर फ़रमाया कि "इस ने अबुल क़ासिम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की।"[6] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 13 अज़ान से मुराद वक़्ते नमाज़ हो जाना है, ख़्वाह अभी अज़ान हुई हो या नहीं।[7] (درمختار)

मस्अला 14 जो शख़्स किसी दूसरी मस्जिद की जमाअ़त का मुन्तज़िम हो, मसलन इमाम या मुअज़्ज़िन हो कि उस के होने से लोग होते हैं वरना मुतफ़र्रिक़ हो जाते हैं ऐसे शख़्स को इजाज़त है कि यहां से अपनी मस्जिद को चला जाए अगर्चे यहां इक़ामत भी शुरूअ़ हो गई हो मगर जिस मस्जिद का मुन्तज़िम है अगर वहां जमाअ़त हो चुकी तो अब यहां से जाने की इजाज़त नहीं।[8] (درمختار،ردالمحتار)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص٦٠٦.

2 ...यानी ज़ाएअ़ होने।

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب: قطع الصلاة يكون حراما و مباحا... إلخ، ج٢، ص٦١٠.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العاشر في إدراك الفريضة، ج١، ص١١٩.

5 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب الأذان... إلخ، باب إذا أذن وأنت في المسجد فلا تخرج، الحديث: ٧٣٤، ج١، ص٤٠٤.

6 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب الأذان... إلخ، باب إذا أذن وأنت في المسجد فلا تخرج، الحديث: ٧٣٣، ج١، ص٤٠٤.
"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب في كراهة الخروج من المسجد بعد الأذان، ج٢، ص٦١٢.

7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص٦١٣.

8 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب في كراهة الخروج من المسجد بعد الأذان، ج٢، ص٦١٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 15 सबक़ का वक़्त है तो यहां से अपने उस्ताद की मस्जिद को जा सकता है या कोई ज़रूरत हो और वापस होने का इरादा हो तो भी जाने की इजाज़त है, जब कि ज़न्ने ग़ालिब हो कि जमाअ़त से पहले वापस आ जाएगा।[1] (درمختار)

मस्अला 16 जिस ने ज़ोहर या इ़शा की नमाज़ तन्हा पढ़ ली हो, उसे मस्जिद से चले जाने की मुमानअ़त उस वक़्त है कि इक़ामत शुरूअ़ हो गई, इक़ामत से पहले जा सकता है। और जब इक़ामत शुरूअ़ हो गई तो हुक्म है कि जमाअ़त में ब निय्यते नफ़्ल शरीक हो जाए और मग़रिब व फ़ज्र व अ़स्र में उसे हुक्म है कि मस्जिद से बाहर चला जाए जब कि पढ़ ली हो।[2] (درمختار)

मस्अला 17 मुक़्तदी ने दो सज्दे किये और इमाम अभी पहले ही में था तो दूसरा सज्दा न हुवा।[3] (درمختار)

मस्अला 18 चार रक्अ़त वाली नमाज़ जिसे एक रक्अ़त इमाम के साथ मिली तो उस ने जमाअ़त न पाई। हां, जमाअ़त का सवाब मिलेगा अगर्चे क़ादए अख़ीरा में शामिल हुवा हो बल्कि जिसे तीन रक्अ़तें मिलीं उस ने भी जमाअ़त न पाई जमाअ़त का सवाब मिलेगा, मगर जिस की कोई रक्अ़त जाती रही उसे उतना सवाब न मिलेगा जितना अव्वल से शरीक होने वाले को है। इस मस्अले का मुह़स्सल[4] येह है कि किसी ने क़सम खाई फ़ुलां नमाज़ जमाअ़त से पढ़ेगा और कोई रक्अ़त जाती रही तो क़सम टूट गई कफ़्फ़ारा देना होगा, तीन और दो रक्अ़त वाली नमाज़ में भी एक रक्अ़त न मिली तो जमाअ़त न मिली और लाह़िक़ का हुक्म पूरी जमाअ़त पाने वाले का है।[5] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 19 इमाम रुकूअ़ में था किसी ने उस की इक़्तिदा की और खड़ा रहा यहां तक कि इमाम ने सर उठा लिया तो वोह रक्अ़त नहीं मिली, लिहाज़ा इमाम के फ़ारिग़ होने के बाद उस रक्अ़त को पढ़ ले और अगर इमाम को क़ियाम में पाया और उस के साथ रुकूअ़ में शरीक न हुवा तो पहले रुकूअ़ कर ले फिर और अफ़्आ़ल इमाम के साथ करे और अगर पहले रुकूअ़ न किया बल्कि इमाम के साथ हो लिया फिर इमाम के फ़ारिग़ होने के बाद रुकूअ़ किया तो भी हो जाएगी मगर ब वज्हे तर्के वाजिब गुनहगार हुवा।[6] (درمختار)

मस्अला 20 इस के रुकूअ़ करने से पेश्तर इमाम ने सर उठा लिया कि इसे रक्अ़त न मिली तो इस सूरत में नमाज़ तोड़ देना जाइज़ नहीं जैसा बाज़ जाहिल करते हैं बल्कि इस पर

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص٦١٤.

2 ..... المرجع السابق. 3 ..... المرجع السابق، ص٦٢٥.

4 ...यानी ख़ुलासा।

5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب: هل الإساءة دون الكراهة أو أفحش، ج٢، ص٦٢١.

6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، ج٢، ص٦٢٣.

www.dawateislami.net

वाजिब है कि सज्दे में इमाम की मुताबअ़त करे अगर्चे येह सज्दे रक्अ़त में शुमार न होंगे। यूंही अगर सज्दे में मिला जब भी साथ दे फिर भी अगर सज्दे न किए तो नमाज़ फ़ासिद न होगी यहां तक कि अगर इमाम के सलाम के बाद इस ने अपनी रक्अ़त पढ़ ली नमाज़ हो गई मगर तर्के वाजिब का गुनाह हुवा।[1] (درمختار)

मस्अला 21 इमाम से पहले रुकूअ़ किया मगर इस के सर उठाने से पहले इमाम ने भी रुकूअ़ किया तो रुकूअ़ हो गया बशर्ते कि इस ने उस वक़्त रुकूअ़ किया हो कि इमाम ब क़दरे फ़र्ज़ क़िराअत कर चुका हो वरना रुकूअ़ न हुवा और इस सूरत में इमाम के साथ या बाद अगर दोबारा रुकूअ़ कर लेगा तो हो जाएगी वरना नमाज़ जाती रही और इमाम से पहले रुकूअ़ ख़्वाह कोई रुक्न अदा करने में गुनहगार बहर हाल होगा।[2] (درمختار)

मस्अला 22 इमाम रुकूअ़ में था और येह तक्बीर कह कर झुका था कि इमाम खड़ा हो गया तो अगर हद्दे रुकूअ़ में मुशारकत[3] हो गई अगर्चे क़लील तो रक्अ़त मिल गई।[4] (عالمگیری)

मस्अला 23 मुक़्तदी ने तमाम रक्अ़तों में रुकूअ़ व सुजूद इमाम से पहले किया तो सलाम के बाद ज़रूरी है कि एक रक्अ़त बग़ैर क़िराअत पढ़े। न पढ़ी तो नमाज़ न हुई और अगर इमाम के बाद रुकूअ़ व सुजूद किया तो नमाज़ हो गई और अगर रुकूअ़ पहले किया और सज्दा साथ तो चारों रक्अ़तें बग़ैर क़िराअत पढ़े और अगर रुकूअ़ साथ किया और सज्दा पहले तो दो रक्अ़त बाद में पढ़े।[5] (عالمگیری)

क़ज़ा नमाज़ का बयान

ह़दीस 1 ग़ज़्वए ख़न्दक़ में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की चार नमाज़ें मुश्रिकीन की वज्ह से जाती रहीं यहां तक कि रात का कुछ हिस्सा चला गया, बिलाल رَضِیَ اللهُ عَنْه को हुक्म फ़रमाया : उन्हों ने अज़ानो इक़ामत कही, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी, फिर इक़ामत कही तो अ़स्र की पढ़ी, फिर इक़ामत कही तो मग़रिब की पढ़ी, फिर इक़ामत कही तो इ़शा की पढ़ी।[6]

ह़दीस 2 इमाम अह़मद ने अबी जुमुआ़ ह़बीब बिन सिबाअ़ से रिवायत की, कि ग़ज़्वए अह़ज़ाब में मग़रिब की नमाज़ पढ़ कर फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया : किसी को मालूम है मैं ने अ़स्र की पढ़ी है ? लोगों ने अ़र्ज़ की : नहीं पढ़ी। मुअज़्ज़िन को हुक्म फ़रमाया : उस ने इक़ामत कही, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने अ़स्र की पढ़ी फिर मग़रिब का इआ़दा किया।[7]

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب إدراك الفريضة، مطلب: هل الإساءة دون الكراهة أو أفحش، ج٢، ص٦٢٤.
2 ..... المرجع السابق، ص٦٢٥.
3 ...यानी बाहम शिर्कत।
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العاشر في إدراك الفريضة، ج١، ص١٢٠.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العاشر في إدراك الفريضة، ج١، ص١٢٠.
6 ..... "السنن الكبرى" للبيهقي، كتاب الصلاة، باب الأذان والإقامة للفائتة، الحديث: ١٨٩٢، ج١ص٥٩٢.
7 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث أبي جمعه حبيب بن سباع، الحديث: ١٦٩٧٢، ج٦، ص٤٢.

www.dawateislami.net

ह़दीस 3 त़बरानी व बैहक़ी इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी, फ़रमाया : "जो शख़्स किसी नमाज़ को भूल जाए और याद उस वक़्त आए कि इमाम के साथ हो तो पूरी कर ले फिर भूली हुई पढ़े फिर उसे पढ़े जिस को इमाम के साथ पढ़ा।"[1]

ह़दीस 4 सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में है कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "जो नमाज़ से सो जाए या भूल जाए तो जब याद आए पढ़ ले कि वोही उस का वक़्त है।"[2]

ह़दीस 5 सह़ीह़ मुस्लिम की रिवायत में येह भी है कि सोते में (अगर नमाज़ जाती रही) तो क़ुसूर नहीं, क़ुसूर तो बेदारी में है।[3]

मस्अला 1 बिला उ़ज़्रे शर्ई नमाज़ क़ज़ा कर देना बहुत सख़्त गुनाह है, उस पर फ़र्ज़ है कि उस की क़ज़ा पढ़े और सच्चे दिल से तौबा करे, तौबा या ह़ज्जे मक़्बूल से गुनाहे ताख़ीर मुआ़फ़ हो जाएगा।[4] (درمختار)

मस्अला 2 तौबा जब ही सह़ीह़ है कि क़ज़ा पढ़ ले। उस को तो अदा न करे, तौबा किये जाए, येह तौबा नहीं कि वोह नमाज़ जो इस के ज़िम्मे थी उस का न पढ़ना तो अब भी बाक़ी है और जब गुनाह से बाज़ न आया, तौबा कहां हुई ?[5] (ردالمحتار)

ह़दीस में फ़रमाया : "गुनाह पर क़ाइम रह कर इस्तिग़्फ़ार करने वाला उस के मिस्ल है जो अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) से ठट्ठा[6] करता है।"[7]

मस्अला 3 दुश्मन का ख़ौफ़ नमाज़ क़ज़ा कर देने के लिये उ़ज़्र है, मसलन मुसाफ़िर को चोर और डाकूओं का सह़ीह़ अन्देशा है तो इस की वज्ह से वक़्ती नमाज़ क़ज़ा कर सकता है बशर्ते कि किसी त़रह़ नमाज़ पढ़ने पर क़ादिर न हो और अगर सुवार है और सुवारी पर पढ़ सकता है अगर्चे चलने ही की ह़ालत में या बैठ कर पढ़ सकता है तो उ़ज़्र न हुवा। यूंही अगर क़िब्ले को मुंह करता है तो दुश्मन का सामना होता है तो जिस रुख़ बन पड़े पढ़ ले हो जाएगी वरना नमाज़ क़ज़ा करने का गुनाह हुवा।[8] (ردالمحتار)

मस्अला 4 जनाई[9] नमाज़ पढ़ेगी तो बच्चे के मर जाने का अन्देशा है, नमाज़ क़ज़ा करने के लिये येह उ़ज़्र है। बच्चे का सर बाहर आ गया और निफ़ास से पेश्तर वक़्त ख़त्म हो जाएगा

1 ..... "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٥١٣٢، ج٤، ص٣٨.
2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب المساجد... إلخ، باب قضاء الصلاة الفائتة... إلخ، الحديث: ٣١٥-(٦٨٤)، ص٣٤٦.
3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب المساجد... إلخ، باب قضاء الصلاة الفائتة... إلخ، الحديث: ٦٨١، ص٣٤٣.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٢٦.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٢٧.
6 ...यानी मज़ाक़।
7 ..... "شعب الإيمان"، باب في معالجة كل ذنب بالتوبة، الحديث: ٧١٧٨، ج٥، ص٤٣٦.
8 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٢٧.
9 ...यानी दाई। बच्चा जनाने वाली।

www.dawateislami.net

तो इस हालत में भी उस की मां पर नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है न पढ़ेगी गुनहगार होगी, किसी बरतन में बच्चे का सर रख कर जिस से उस को सदमा न पहुंचे नमाज़ पढ़े मगर इस तरकीब से पढ़ने में भी बच्चे के मर जाने का अन्देशा हो तो ताख़ीर मुआ़फ़ है बादे निफ़ास इस नमाज़ की क़ज़ा पढ़े।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 5 जिस चीज़ का बन्दों पर हुक्म है उसे वक़्त में बजा लाने को अदा कहते हैं और वक़्त के बाद अ़मल में लाना क़ज़ा है और अगर उस हुक्म के बजा लाने में कोई ख़राबी पैदा हो जाए तो दोबारा वोह ख़राबी दफ़्अ़ करने के लिये करना इआ़दा है।[2] (درمختار)

मस्अला 6 वक़्त में अगर तह़रीमा बांध लिया तो नमाज़ क़ज़ा न हुई बल्कि अदा है।[3] (درمختار) मगर नमाज़े फ़ज्र व जुमुआ़ व ईदैन कि इन में सलाम से पहले भी अगर वक़्त निकल गया नमाज़ जाती रही।

मस्अला 7 सोते में या भूले से नमाज़ क़ज़ा हो गई तो उस की क़ज़ा पढ़नी फ़र्ज़ है, अलबत्ता क़ज़ा का गुनाह इस पर नहीं मगर बेदार होने और याद आने पर अगर वक़्ते मक्रूह न हो तो उसी वक़्त पढ़ ले ताख़ीर मक्रूह है कि ह़दीस में इरशाद फ़रमाया : "जो नमाज़ से भूल जाए या सो जाए तो याद आने पर पढ़ ले कि वोही उस का वक़्त है।"[4] (عالمگیری وغیرہ) मगर दुख़ूले वक़्त के बाद सो गया फिर वक़्त निकल गया तो क़त़्अ़न गुनहगार हुवा जब कि जागने पर सह़ीह़ एतिमाद या जगाने वाला मौजूद न हो बल्कि फ़ज्र में दुख़ूले वक़्त से पहले भी सोने की इजाज़त नहीं हो सकती जब कि अक्सर ह़िस्सा रात का जागने में गुज़रा और ज़न है कि अब सो गया तो वक़्त में आंख न खुलेगी।

मस्अला 8 कोई सो रहा है या नमाज़ पढ़ना भूल गया तो जिसे मालूम हो उस पर वाजिब है कि सोते को जगा दे और भूले हुए को याद दिला दे।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 9 जब येह अन्देशा हो कि सुब्ह़ की नमाज़ जाती रहेगी तो बिला ज़रूरते शरइ़य्या उसे रात में देर तक जागना मम्नूअ़ है।[6] (ردالمحتار)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٢٧.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٢٧-٦٣٢. 3 ..... المرجع السابق، ص٦٢٨.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢١، وغيره.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب: يكره السهر اذا خاف فوت الصبح، ج٣، ص٤٢٠.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، مطلب في طلوع الشمس من مغربها، ج٢، ص٣٣.

अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "**नमाज़ के अह़काम**" सफ़ह़ा 329 पर फ़रमाते हैं : **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! नात ख़्वानियों, ज़िक्रो फ़िक्र की मह़फ़िलों नीज़ सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त वग़ैरा में रात देर तक जागने के बाद सोने के सबब अगर नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा होने का अन्देशा हो तो ब निय्यते एतिकाफ़ मस्जिद में क़ियाम करें या वहां सोएं जहां कोई क़ाबिले एतिमाद इस्लामी भाई जगाने वाला मौजूद हो या अलार्म वाली घड़ी हो =

www.dawateislami.net

मस्अला 10 फ़र्ज़ की क़ज़ा फ़र्ज़ है और वाजिब की क़ज़ा वाजिब और सुन्नत की क़ज़ा सुन्नत यानी वोह सुन्नतें जिन की क़ज़ा है मसलन फ़ज्र की सुन्नतें जब कि फ़र्ज़ भी फ़ौत हो गया हो और ज़ोहर की पहली सुन्नतें जब कि ज़ोहर का वक़्त बाक़ी हो ।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 11 क़ज़ा के लिये कोई वक़्त मुअ़य्यन नहीं उ़म्र में जब पढ़ेगा बरिय्युज़्ज़िम्मा हो जाएगा मगर तुलूअ़ व ग़ुरूब और ज़वाल के वक़्त कि इन वक़्तों में नमाज़ जाइज़ नहीं ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 12 मज्नून की ह़ालते जुनून जो नमाज़ें फ़ौत हुईं अच्छे होने के बाद उन की क़ज़ा वाजिब नहीं जब कि जुनून नमाज़ के छे वक़्ते कामिल तक बराबर रहा हो ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 13 जो शख़्स مَعَاذَاللہ मुरतद हो गया फिर इस्लाम लाया तो ज़मानए इरतिदाद की नमाज़ों की क़ज़ा नहीं और मुरतद होने से पहले ज़मानए इस्लाम में जो नमाज़ें जाती रही थीं उन की क़ज़ा वाजिब है ।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 14 दारुल ह़र्ब में कोई शख़्स मुसलमान हुवा और अह़कामे शरइ़य्या, नमाज़, रोज़ा, ज़कात वग़ैरहा की उस को इत्तिलाअ़ न हुई तो जब तक वहां रहा उन दिनों की क़ज़ा उस पर वाजिब नहीं और जब दारुल इस्लाम में आ गया तो अब जो नमाज़ क़ज़ा होगी उसे पढ़ना फ़र्ज़ है कि दारुल इस्लाम में अह़काम का न जानना उ़ज़्र नहीं और किसी एक शख़्स ने भी उसे नमाज़ फ़र्ज़ होने की इत्तिलाअ़ दे दी अगर्चे फ़ासिक़ या बच्चा या औ़रत या ग़ुलाम ने तो अब जितनी न पढ़ेगा उन की क़ज़ा वाजिब है, दारुल इस्लाम में मुसलमान हुवा तो जो नमाज़ फ़ौत हुई उस की क़ज़ा वाजिब है अगर्चे कहे कि मुझे इस का इ़ल्म न था ।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 15 ऐसा मरीज़ कि इशारे से भी नमाज़ नहीं पढ़ सकता अगर येह ह़ालत पूरे छे वक़्त तक रही तो इस ह़ालत में जो नमाज़ें फ़ौत हुईं उन की क़ज़ा वाजिब नहीं ।[6] (عالمگیری)

= जिस से आंख खुल जाती हो मगर एक अ़दद घड़ी पर भरोसा न किया जाए कि नींद में हाथ लग जाने से या यूं ही ख़राब हो कर बन्द हो जाने का इम्कान रहता है, दो या ह़स्बे ज़रूरत ज़ाइद घड़ियां हों तो बेहतर है ।

फ़ुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं, **''जब येह अन्देशा हो कि सुब्ह़ की नमाज़ जाती रहेगी तो बिला ज़रूरते शरइ़य्या उसे रात देर तक जागना मम्नूअ़ है ।''**

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في تعريف الإعادة، ج٢، ص٦٣٣.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الأول في المواقيت وما يتصل بها، الفصل الثالث، ج١، ص٥٢.

तुलूअ़ व ग़ुरूब व ज़वाल से क्या मुराद है, इस का बयान बाबुल अवक़ात में गुज़रा । 12 मिन्ह

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢١.

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في بطلان بالختمات و التهاليل، ج٢، ص٦٤٧.

5 ..... المرجع السابق. 6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢١.

www.dawateislami.net

मस्अला 16 जो नमाज़ जैसी फ़ौत हुई उस की क़ज़ा वैसी ही पढ़ी जाएगी, मसलन सफ़र में नमाज़ क़ज़ा हुई तो चार रक्अ़त वाली दो ही पढ़ी जाएगी अगर्चे इक़ामत की ह़ालत में पढ़े और ह़ालते इक़ामत में फ़ौत हुई तो चार रक्अ़त वाली की क़ज़ा चार रक्अ़त है अगर्चे सफ़र में पढ़े। अलबत्ता क़ज़ा पढ़ने के वक़्त कोई उ़ज़्र है तो उस का एतिबार किया जाएगा, मसलन जिस वक़्त फ़ौत हुई थी उस वक़्त खड़ा हो कर पढ़ सकता था और अब क़ियाम नहीं कर सकता तो बैठ कर पढ़े या इस वक़्त इशारे ही से पढ़ सकता है तो इशारे से पढ़े और सिह़्ह़त के बाद इस का इआ़दा नहीं।[1] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 17 लड़की नमाज़े इ़शा पढ़ कर या बे पढ़े सोई, आंख खुली तो मालूम हुवा कि पहला ह़ैज़ आया तो उस पर वोह इ़शा फ़र्ज़ नहीं और अगर एह़तिलाम से बालिग़ हुई तो इस का ह़ुक्म वोह है जो लड़के का है, पौ फटने[2] से पहले आंख खुली तो उस वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है अगर्चे पढ़ कर सोई और पौ फटने के बाद आंख खुली तो इ़शा का इआ़दा करे और उ़म्र से बालिग़ हुई यानी इस की उ़म्र पूरे पन्दरह साल की हो गई तो जिस वक़्त पूरे पन्दरह साल की हुई उस वक़्त की नमाज़ इस पर फ़र्ज़ है अगर्चे पहले पढ़ चुकी हो।[3] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 18 पांचों फ़र्ज़ों में बाहम और फ़र्ज़ व वित्र में तरतीब ज़रूरी है कि पहले फ़ज्र फिर ज़ोह्र फिर अ़स्र फिर मग़रिब फिर इ़शा फिर वित्र पढ़े, ख़्वाह येह सब क़ज़ा हों या बाज़ अदा बाज़ क़ज़ा, मसलन ज़ोह्र की क़ज़ा हो गई तो फ़र्ज़ है कि इसे पढ़ कर अ़स्र पढ़े या वित्र क़ज़ा हो गई तो इसे पढ़ कर फ़ज्र पढ़े अगर याद होते हुए अ़स्र या फ़ज्र की पढ़ ली तो ना जाइज़ है।[4] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 19 अगर वक़्त में इतनी गुन्जाइश नहीं कि वक़्ती और क़ज़ाएं सब पढ़ ले तो वक़्ती और क़ज़ा नमाज़ों में जिस की गुन्जाइश हो पढ़े बाक़ी में तरतीब साक़ित है, मसलन नमाज़े इ़शा व वित्र क़ज़ा हो गए और फ़ज्र के वक़्त में पांच रक्अ़त की गुन्जाइश है तो वित्र व फ़ज्र पढ़े और छे रक्अ़त की वुस्अ़त है तो इ़शा व फ़ज्र पढ़े।[5] (شرح وقایہ)

मस्अला 20 तरतीब के लिये मुत्लक़ वक़्त का एतिबार है, मुस्तह़ब वक़्त होने की ज़रूरत नहीं तो जिस की ज़ोह्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई और आफ़्ताब ज़र्द होने से पहले ज़ोह्र से फ़ारिग़ नहीं हो सकता मगर आफ़्ताब डूबने से पहले दोनों पढ़ सकता है तो ज़ोह्र पढ़े फिर अ़स्र।[6] (ردالمحتار)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢١.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٥٠.
2 ... यानी सुब्हे सादिक़ होने।
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢١، وغيره.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢١، وغيره.
5 ..... "شرح الوقاية"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج١، ص٢١٧.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في تعريف الإعادة، ج٢، ص٦٣٤.

www.dawateislami.net

मस्अला 21 अगर वक़्त में इतनी गुन्जाइश है कि मुख़्तसर तौ़र पर पढ़े तो दोनों पढ़ सकता है और उ़म्दा त़रीक़े से पढ़े तो दोनों नमाज़ों की गुन्जाइश नहीं तो इस सूरत में भी तरतीब फ़र्ज़ है और ब क़दरे जवाज़ जहां तक इख़्तिसार कर सकता है करे।[1] (عالمگیری)

मस्अला 22 वक़्त की तंगी से तरतीब साक़ित होना उस वक़्त है कि शुरूअ़ करते वक़्त वक़्त तंग हो, अगर शुरूअ़ करते वक़्त गुन्जाइश थी और येह याद था कि इस वक़्त से पेश्तर की नमाज़ क़ज़ा हो गई है और नमाज़ में त़ूल दिया कि अब वक़्त तंग हो गया तो येह नमाज़ न होगी हां अगर तोड़ कर फिर से पढ़े तो हो जाएगी और अगर क़ज़ा नमाज़ याद न थी और वक़्ती नमाज़ में त़ूल दिया कि वक़्त तंग हो गया अब याद आई तो हो गई, क़त़्अ़ न करे।[2] (عالمگیری)

मस्अला 23 वक़्त तंग होने न होने में इस के गुमान का एतिबार नहीं बल्कि येह देखा जाएगा कि ह़क़ीक़तन वक़्त तंग था या नहीं मसलन जिस की नमाज़े इ़शा क़ज़ा हो गई और फ़ज्र का वक़्त तंग होना गुमान कर के फ़ज्र की पढ़ ली फिर येह मालूम हुवा कि वक़्त तंग न था तो नमाज़े फ़ज्र न हुई अब अगर दोनों की गुन्जाइश हो तो इ़शा पढ़ कर फिर फ़ज्र पढ़े, वरना फ़ज्र पढ़ ले अगर दोबारा फिर ग़लती मालूम हुई तो वोही हुक्म है यानी दोनों पढ़ सकता है तो दोनों पढ़े वरना सिर्फ़ फ़ज्र फिर पढ़े और अगर फ़ज्र का इआ़दा न किया, इ़शा पढ़ने लगा और ब क़दरे तशह्हुद बैठने न पाया था कि आफ़्ताब निकल आया तो फ़ज्र की नमाज़ जो पढ़ी थी हो गई। यूंही अगर फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई और ज़ोह्र के वक़्त में दोनों नमाज़ों की गुन्जाइश इस के गुमान में नहीं है और ज़ोह्र पढ़ ली फिर मालूम हुवा कि गुन्जाइश है तो ज़ोह्र न हुई, फ़ज्र पढ़ कर ज़ोह्र पढ़े यहां तक कि अगर फ़ज्र पढ़ कर ज़ोह्र की एक रक्अ़त पढ़ सकता है तो फ़ज्र पढ़ कर ज़ोह्र शुरूअ़ करे।[3] (عالمگیری)

मस्अला 24 जुमुआ़ के दिन फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई अगर फ़ज्र पढ़ कर जुमुआ़ में शरीक हो सकता है तो फ़र्ज़ है कि पहले फ़ज्र पढ़े अगर्चे ख़ुत्बा होता हो और अगर जुमुआ़ न मिलेगा मगर ज़ोह्र का वक़्त बाक़ी रहेगा जब भी फ़ज्र पढ़ कर ज़ोह्र पढ़े और अगर ऐसा है कि फ़ज्र पढ़ने में जुमुआ़ भी जाता रहेगा और जुमुआ़ के साथ वक़्त भी ख़त्म हो जाएगा तो जुमुआ़ पढ़ ले फिर फ़ज्र पढ़े इस सूरत में तरतीब साक़ित है।[4] (عالمگیری)

मस्अला 25 अगर वक़्त की तंगी के सबब तरतीब साक़ित हो गई और वक़्ती नमाज़ पढ़ रहा था कि अस्नाए नमाज़ में वक़्त ख़त्म हो गया तो तरतीब औ़द न करेगी यानी वक़्ती नमाज़ हो गई।[5] (عالمگیری) मगर फ़ज्र व जुमुआ़ में कि वक़्त निकल जाने से येह ख़ुद ही नहीं हुई।

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢٢.
2 ..... المرجع السابق. 3 ..... المرجع السابق. 4 ..... المرجع السابق. 5 ..... المرجع السابق، ص١٢٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 26 क़ज़ा नमाज़ याद न रही और वक़्तिया पढ़ ली, पढ़ने के बाद याद आई तो वक़्तिया हो गई और पढ़ने में याद आई तो गई।[1] (عامۂ کتب)

मस्अला 27 अपने को बा वुज़ू गुमान कर के ज़ोह्र पढ़ी फिर वुज़ू कर के अ़स्र पढ़ी फिर मालूम हुवा कि ज़ोह्र में वुज़ू न था तो अ़स्र की हो गई सिर्फ़ ज़ोह्र का इआ़दा करे।[2] (عالمگیری)

मस्अला 28 फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई और याद होते हुए ज़ोह्र की पढ़ ली फिर फ़ज्र की पढ़ी तो ज़ोह्र की न हुई, अ़स्र पढ़ते वक़्त ज़ोह्र की याद थी मगर अपने गुमान में ज़ोह्र को जाइज़ समझा था तो अ़स्र की हो गई ग़रज़ येह है कि फ़र्ज़िय्यते तरतीब से जो ना वाक़िफ़ है उस का हुक्म भूलने वाले की मिस्ल है कि उस की नमाज़ हो जाएगी।[3] (درمختار)

मस्अला 29 छे नमाज़ें जिस की क़ज़ा हो गईं कि छटी का वक़्त ख़त्म हो गया उस पर तरतीब फ़र्ज़ नहीं, अब अगर्चे बा वुजूद वक़्त की गुन्जाइश और याद के वक़्ती पढ़ेगा हो जाएगी ख़्वाह वोह सब एक साथ क़ज़ा हुईं मसलन एक दम से छे वक़्तों की न पढ़ीं या मुतफ़र्रिक़ तौर पर क़ज़ा हुईं मसलन छे दिन फ़ज्र की नमाज़ न पढ़ी और बाक़ी नमाज़ें पढ़ता रहा मगर इन के पढ़ते वक़्त वोह क़ज़ाएं भूला हुवा था ख़्वाह वोह सब पुरानी हों या बाज़ नई बाज़ पुरानी मसलन एक महीने की नमाज़ न पढ़ी फिर पढ़नी शुरूअ़ की फिर एक वक़्त की क़ज़ा हो गई तो उस के बाद की नमाज़ हो जाएगी अगर्चे उस का क़ज़ा होना याद हो।[4] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 30 जब छे नमाज़ें क़ज़ा होने के सबब तरतीब साक़ित हो गई तो इन में से अगर बाज़ पढ़ ली कि छे से कम रह गईं तो वोह तरतीब औ़द न करेगी यानी इन में से अगर दो बाक़ी हों तो बा वुजूद याद के वक़्ती नमाज़ हो जाएगी अलबत्ता अगर सब क़ज़ाएं पढ़ लीं तो अब फिर साहिबे तरतीब हो गया कि अब अगर कोई नमाज़ क़ज़ा होगी तो ब शराइते साबिक़ उसे पढ़ कर वक़्ती पढ़े, वरना न होगी।[5] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 31 यूहीं अगर भूलने या तंगिये वक़्त के सबब तरतीब साक़ित हो गई तो वोह भी औ़द न करेगी मसलन भूल कर नमाज़ पढ़ ली अब याद आया तो नमाज़ का इआ़दा नहीं अगर्चे वक़्त में बहुत कुछ गुन्जाइश हो।[6] (درمختار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢٢. 2 ..... المرجع السابق.

3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٣٩.

4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في تعريف الإعادة، ج٢، ص٦٣٧.

5 ..... المرجع السابق، ص٦٤٠. 6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٤٠.

www.dawateislami.net

मस्अला 32 बा वुजूद याद और गुन्जाइशे वक़्त के वक़्ती नमाज़ की निस्बत जो कहा गया कि न होगी इस से मुराद येह है कि वोह नमाज़ मौक़ूफ़ है अगर वक़्ती पढ़ता गया और क़ज़ा रहने दी तो जब दोनों मिल कर छे हो जाएंगी यानी छटी का वक़्त ख़त्म हो जाएगा तो सब सहीह़ हो गईं और अगर इस दरमियान में क़ज़ा पढ़ ली तो सब गईं यानी नफ़्ल हो गईं सब को फिर से पढ़े ।[1] (درمختار)

मस्अला 33 बाज़ नमाज़ पढ़ते वक़्त क़ज़ा याद थी और बाज़ में याद न रही तो जिन में क़ज़ा याद है उन में पांचवीं का वक़्त ख़त्म हो जाए यानी क़ज़ा समेत छटी का वक़्त हो जाए तो अब सब हो गईं और जिन के अदा करते वक़्त क़ज़ा की याद न थी उन का एतिबार नहीं ।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 34 औ़रत की एक नमाज़ क़ज़ा हुई इस के बाद हैज़ आ गया तो हैज़ से पाक हो कर पहले क़ज़ा पढ़ ले फिर वक़्ती पढ़े, अगर क़ज़ा याद होते हुए वक़्ती पढ़ेगी न होगी जब कि वक़्त में गुन्जाइश हो ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 35 जिस के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें हों अगर्चे इन का पढ़ना जल्द से जल्द वाजिब है मगर बाल बच्चों की ख़ुर्दो नोश और अपनी ज़रूरिय्यात की फ़राहमी के सबब ताख़ीर जाइज़ है तो कारोबार भी करे और जो वक़्त फ़ुरसत का मिले उस में क़ज़ा पढ़ता रहे यहां तक कि पूरी हो जाएं ।[4] (درمختار)

मस्अला 36 **क़ज़ा नमाज़ें नवाफ़िल से अहम हैं** यानी जिस वक़्त नफ़्ल पढ़ता है उन्हें छोड़ कर उन के बदले क़ज़ाएं पढ़े कि बरिय्युज़्ज़िम्मा हो जाए अलबत्ता तरावीह़ और बारह रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा की न छोड़े ।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 37 मन्नत की नमाज़ में किसी ख़ास वक़्त या दिन की क़ैद लगाई तो उसी वक़्त या दिन में पढ़नी वाजिब है वरना क़ज़ा हो जाएगी और अगर वक़्त या दिन मुअ़य्यन नहीं तो गुन्जाइश है ।[6] (درمختار)

मस्अला 38 किसी शख़्स की एक नमाज़ क़ज़ा हो गई और येह याद नहीं कि कौन सी नमाज़

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٤١.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في تعريف الإعادة، ج٢، ص٦٤٢.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢٤.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٤٦.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في بطلان الوصية بالختمات و التهاليل، ج٢، ص٦٤٦.

ख़लीले मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान क़ादिरी बरकाती عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن "**सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर**", सफ़ह़ा 240 पर फ़रमाते हैं : और लौ लगाए रखे कि मौला عَزَّوَجَلَّ अपने करमे ख़ास से क़ज़ा नमाज़ों के ज़िम्न में इन नवाफ़िल का सवाब भी अपने ख़ज़ाइने ग़ैब से अ़त़ा फ़रमा दे, जिन के अवक़ात में येह क़ज़ा नमाज़ें पढ़ी गईं । واللہ ذوالفضل العظیم ("सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर", नफ़्ल नमाज़ों का बयान, स. 240)

6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في بطلان الوصية... إلخ، ج٢، ص٦٤٦.

www.dawateislami.net

थी तो एक दिन की नमाज़ें पढ़े। यूंही अगर दो नमाज़ें दो दिन में क़ज़ा हुईं तो दोनों दिनों की सब नमाज़ें पढ़े। यूंही तीन दिन की तीन नमाज़ें और पांच दिन की पांच नमाज़ें।[1] (عالمگیری)

मस्अला 39 एक दिन अ़स्र की और एक दिन ज़ोह्र की क़ज़ा हो गई और येह याद नहीं कि पहले दिन की कौन सी नमाज़ है तो जिधर त़बीअ़त जमे उसे पहली क़रार दे और किसी त़रफ़ दिल नहीं जमता तो जो चाहे पहले पढ़े मगर दूसरी पढ़ने के बाद जो पहले पढ़ी है फेरे और बेहतर येह है कि पहले ज़ोह्र पढ़े फिर अ़स्र फिर ज़ोह्र का इआ़दा और अगर पहले अ़स्र पढ़ी फिर ज़ोह्र फिर अ़स्र का इआ़दा किया तो भी ह़रज नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 40 अ़स्र की नमाज़ पढ़ने में याद आया कि नमाज़ का एक सज्दा रह गया मगर येह याद नहीं कि इसी नमाज़ का रह गया या ज़ोह्र का तो जिधर दिल जमे उस पर अ़मल करे और किसी त़रफ़ न जमे तो अ़स्र पूरी कर के आख़िर में एक सज्दा कर ले फिर ज़ोह्र का इआ़दा करे फिर अ़स्र का और इआ़दा न किया तो भी ह़रज नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 41 जिस की नमाज़ें क़ज़ा हो गईं और इन्तिक़ाल हो गया तो अगर वसिय्यत कर गया और माल भी छोड़ा तो उस की तिहाई से हर फ़र्ज़ व वित्र के बदले निस्फ़ साअ़ गेहूं या एक साअ़ जव तसद्दुक़ करें और माल न छोड़ा और वुरसा फ़िदया देना चाहें तो कुछ माल अपने पास से या क़र्ज़ ले कर मिस्कीन पर तसद्दुक़ कर के उस के क़ब्ज़े में दें और मिस्कीन अपनी त़रफ़ से उसे हिबा कर दे[4] और येह क़ब्ज़ा भी कर ले फिर येह मिस्कीन को दे, यूंही लौट फेर करते रहें यहां तक कि सब का फ़िदया अदा हो जाए। और अगर माल छोड़ा मगर वोह नाकाफ़ी है जब भी येही करें और अगर वसिय्यत न की और वली अपनी त़रफ़ से बत़ौरे एह़सान फ़िदया देना चाहे तो दे और अगर माल की तिहाई ब क़दरे काफ़ी है और वसिय्यत येह की, कि इस में से थोड़ा ले कर लौट फेर कर के फ़िदया पूरा कर लें और बाक़ी को वुरसा या और कोई ले ले तो गुनहगार हुवा।[5] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 42 मय्यित ने वली को अपने बदले नमाज़ पढ़ने की वसिय्यत की और वली ने पढ़ भी ली तो येह नाकाफ़ी है। यूंही अगर मरज़ की ह़ालत में नमाज़ का फ़िदया दिया तो अदा न हुवा।[6] (درمختار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢٤.

2 ..... المرجع السابق. 3 ..... المرجع السابق.

4 ...यानी तोह़फ़े में दे दे।

5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، مطلب في إسقاط الصلاة عن الميت، ج٢، ص٦٤٣ ـ ٦٤٤.

6 ..... "تنوير الأبصار"، كتاب الصلاة، باب قضاء الفوائت، ج٢، ص٦٤٥.

www.dawateislami.net

मस्अला 43 बाज़ ना वाक़िफ़ यूं फ़िदया देते हैं कि नमाज़ों के फ़िदये की क़ीमत लगा कर सब के बदले में क़ुरआने मजीद देते हैं इस त़रह़ कुल फ़िदया अदा नहीं होता येह महज़ बे अस्ल बात है बल्कि सिर्फ़ उतना ही अदा होगा जिस क़ीमत का मुस्ह़फ़ शरीफ़ है।

मस्अला 44 शाफ़ेइय्युल मज़हब की नमाज़ क़ज़ा हुई इस के बाद ह़नफ़ी हो गया तो ह़नफ़ियों के त़ौर पर क़ज़ा पढ़े।[1] (عالمگیری)

मस्अला 45 जिस की नमाज़ों में नुक़्सान व कराहत हो वोह तमाम उ़म्र की नमाज़ें फेरे तो अच्छी बात है और कोई ख़राबी न हो तो न चाहिये और करे तो फ़ज्र व अ़स्र के बाद न पढ़े और तमाम रक्अ़तें भरी पढ़े और वित्र में क़ुनूत पढ़ कर तीसरी के बाद क़ादा करे फिर एक और मिलाए कि चार हो जाएं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 46 **क़ज़ाए उ़म्री** कि शबे क़द्र या अख़ीर जुमुअ़ए रमज़ान में जमाअ़त से पढ़ते हैं और येह समझते हैं कि उ़म्र भर की क़ज़ाएं इसी एक नमाज़ से अदा हो गईं, येह बात़िल महज़ है।

सज्दए सह्व का बयान

ह़दीस 1 ह़दीस में है: "एक बार हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) दो रक्अ़त पढ़ कर खड़े हो गए, बैठे नहीं फिर सलाम के बाद सज्दए सह्व किया।"[3] इस ह़दीस को तिरमिज़ी ने मुग़ीरा बिन शअ़बा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत किया और फ़रमाया कि येह ह़दीस ह़सन सह़ीह़ है।

मस्अला 1 वाजिबाते नमाज़ में जब कोई वाजिब भूले से रह जाए तो उस की तलाफ़ी के लिये सज्दए सह्व वाजिब है, इस का त़रीक़ा येह है कि अत्तह़िय्यात के बाद दह्नी त़रफ़ सलाम फेर कर दो सज्दे करे फिर तशह्हुद वग़ैरा पढ़ कर सलाम फेरे।[4] (عامۂ کتب)

मस्अला 2 अगर बग़ैर सलाम फेरे सज्दे कर लिये काफ़ी हैं मगर ऐसा करना मक्रूहे तन्ज़ीही है।[5] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 3 क़स्दन वाजिब तर्क किया तो सज्दए सह्व से वोह नुक़्सान दफ़्अ़ न होगा बल्कि इआ़दा वाजिब है। यूंही अगर सह्वन वाजिब तर्क हुवा और सज्दए सह्व न किया जब भी इआ़दा वाजिब है।[6] (درمختار وغیرہ)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى عشر في قضاء الفوائت، ج١، ص١٢٤. 2 ..... المرجع السابق.

3 ..... "سنن الترمذى"،ابواب الصلاة،باب ماجاء فى الامام ينهض فى الركعتين ناسيا،الحديث٣٦٥،ج١ص٣٨٠.

4 ..... "شرح الوقاية"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج١، ص٢٢٠.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥١، ٦٥٥.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٥.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٣.

6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٥، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 4 कोई ऐसा वाजिब तर्क हुवा जो वाजिबाते नमाज़ से नहीं बल्कि उस का वुजूब अम्रे ख़ारिज से हो तो सज्दए सह्व वाजिब नहीं मसलन ख़िलाफ़े तरतीब क़ुरआने मजीद पढ़ना तर्के वाजिब है मगर मुवाफ़िक़े तरतीब पढ़ना वाजिबाते तिलावत से है वाजिबाते नमाज़ से नहीं लिहाज़ा सज्दए सह्व नहीं।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 5 फ़र्ज़ तर्क हो जाने से नमाज़ जाती रहती है सज्दए सह्व से इस की तलाफ़ी नहीं हो सकती लिहाज़ा फिर पढ़े और सुननो मुस्तह़ब्बात मसलन तअ़व्वुज़, तस्मिया, सना, आमीन, तक्बीराते इन्तिक़ालात, तस्बीह़ात के तर्क से भी सज्दए सह्व नहीं बल्कि नमाज़ हो गई।[2] (ردالمحتار،غنیہ) मगर इआ़दा मुस्तह़ब है सह्वन तर्क किया हो या क़स्दन।

मस्अला 6 सज्दए सह्व उस वक़्त वाजिब है कि वक़्त में गुन्जाइश हो और अगर न हो मसलन नमाज़े फ़ज्र में सह्व वाक़ेअ़ हुवा और पहला सलाम फेरा और सज्दा अभी न किया कि आफ़्ताब तुलूअ़ कर आया तो सज्दए सह्व साक़ित़ हो गया। यूंही अगर क़ज़ा पढ़ता था और सज्दे से पहले कुर्से आफ़्ताब ज़र्द हो गया सज्दा साक़ित़ हो गया। जुमुआ़ या ईद का वक़्त जाता रहेगा जब भी येही हुक्म है।[3] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 7 जो चीज़ मानेए़ बिना है, मसलन कलाम वग़ैरा मुनाफ़िये नमाज़, अगर सलाम के बाद पाई गई तो अब सज्दए सह्व नहीं हो सकता।[4] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 8 सज्दए सह्व का साक़ित़ होना अगर इस के फ़ेल से है तो इआ़दा वाजिब है, वरना नहीं।[5] (ردالمحتار)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٥.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٥.
و "غنية المتملي"، فصل في سجود السهو، ص٤٥٥.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٥.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٤.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٥.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٤.

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٤.

येह अ़ल्लामा शामी की बह़्स है और आला ह़ज़रत क़िब्ला مدظلہم الاقدس ने ह़ाशियए रद्दुल मुह़्तार में येह साबित किया कि बहर ह़ाल इआ़दा है। "وهـذا نصـه و الـذى يظهـرلى لـزوم الاعـادة مـطلقا لان الصلوة وقعت ناقصة وقد وجب عليه اكمالها وكانت اليه سبيلان متصـل بـالسجود و متراخ بالاعادة فان عجز عن احدهما ولو بلا صنعه فلم يعجز عن الاخرى و سيأتي العلامة المحشى عن النهر ان المقتدى اذا سهاد ون امـامه فانه لايسجد ومقتضى كلا مهم ان يعيد لتمكن الكراهة مع تعذر الجابر اھ فان هذا التعذر ايضاً بغير صنعه وقداقره المحشى وهو وان كان ثمه سهوا من النهر والمحشى كما سياتى هنا لكن لاشک انه مقتضى كلامهم هنا." ۱۲

www.dawateislami.net

मस्अला 9 फ़र्ज़ व नफ़्ल दोनों का एक हुक्म है यानी नवाफ़िल में भी वाजिब तर्क होने से सज्दए सह्व वाजिब है।[1] (عالمگیری)

मस्अला 10 नफ़्ल की दो रक्अ़तें पढ़ीं और उन में सह्व हुवा फिर इसी पर बिना कर के दो रक्अ़तें और पढ़ीं तो सज्दए सह्व करे और फ़र्ज़ में सह्व हुवा था और उस पर क़स्दन नफ़्ल की बिना की तो सज्दए सह्व नहीं बल्कि फ़र्ज़ का इआ़दा करे और अगर फ़र्ज़ के साथ सह्वन नफ़्ल मिलाया हो मसलन चार रक्अ़त पर क़ादा कर के खड़ा हो गया और पांचवीं का सज्दा कर लिया तो एक रक्अ़त और मिलाए कि येह दो नफ़्ल हो जाएं और इन में सज्दए सह्व करे।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 11 सज्दए सह्व के बाद भी अत्तहिय्यात पढ़ना वाजिब है अत्तहिय्यात पढ़ कर सलाम फेरे और बेहतर येह है कि दोनों क़ादों में दुरूद शरीफ़ भी पढ़े।[3] (عالمگیری) और येह भी इख़्तियार है कि पहले क़ादे में अत्तहिय्यात व दुरूद पढ़े और दूसरे में सिर्फ़ अत्तहिय्यात।

मस्अला 12 सज्दए सह्व से वोह पहला क़ादा बातिल न हुवा मगर फिर क़ादा करना वाजिब है और अगर नमाज़ का कोई सज्दा बाक़ी रह गया था क़ादे के बाद उस को किया या सज्दए तिलावत किया तो वोह क़ादा जाता रहा। अब फिर क़ादा फ़र्ज़ है कि बग़ैर क़ादा नमाज़ ख़त्म कर दी तो न हुई और पहली सूरत में हो जाएगी मगर वाजिबुल इआ़दा।[4] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 13 एक नमाज़ में चन्द वाजिब तर्क हुए तो वोही दो सज्दे सब के लिये काफ़ी हैं।[5] (ردالمحتار وغیرہ)

वाजिबाते नमाज़ का मुफ़स्सल बयान पेश्तर हो चुका है, मगर तफ़्सीले अह़काम के लिये इआ़दा बेहतर, वाजिब की ताख़ीर, रुक्न की तक़्दीम या ताख़ीर या इस को मुक़र्रर करना या वाजिब में तग़यीर येह सब भी तर्के वाजिब हैं।

मस्अला 14 फ़र्ज़ की पहली दो रक्अ़तों में और नफ़्ल व वित्र की किसी रक्अ़त में सूरए अल ह़म्द की एक आयत भी रह गई या सूरत से पेश्तर दो बार अल ह़म्द पढ़ी या सूरत मिलाना भूल गया या सूरत को फ़ातिह़ा पर मुक़द्दम किया या अल ह़म्द के बाद एक या दो छोटी आयतें पढ़ कर रुकूअ़ में चला गया फिर याद आया और लौटा और तीन आयतें पढ़ कर रुकूअ़ किया तो इन सब सूरतों में सज्दए सह्व वाजिब है।[6] (درمختار، عالمگیری)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٦.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٤.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٥.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٣، وغيره.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٥، وغيره.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٦.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 15 अल ह़म्द के बाद सूरत पढ़ी इस के बाद फिर अल ह़म्द पढ़ी तो सज्दए सह्व वाजिब नहीं। यूंही फ़र्ज़ की पिछली रक्अ़तों में फ़ातिह़ा की तक्रार से मुत्लक़न सज्दए सह्व वाजिब नहीं और अगर पहली रक्अ़तों में अल ह़म्द का ज़ियादा हिस्सा पढ़ लिया था फिर इआ़दा किया तो सज्दए सह्व वाजिब है।[1] (عالمگیری)

मस्अला 16 अल ह़म्द पढ़ना भूल गया और सूरत शुरूअ़ कर दी और ब क़दर एक आयत के पढ़ ली अब याद आया तो अल ह़म्द पढ़ कर सूरत पढ़े और सज्दा वाजिब है। यूंही अगर सूरत के पढ़ने के बाद या रुकूअ़ में या रुकूअ़ से खड़े होने के बाद याद आया तो फिर अल ह़म्द पढ़ कर सूरत पढ़े और रुकूअ़ का इआ़दा करे और सज्दए सह्व करे।[2] (عالمگیری)

मस्अला 17 फ़र्ज़ की पिछली रक्अ़तों में सूरत मिलाई तो सज्दए सह्व नहीं और क़स्दन मिलाई जब भी ह़रज नहीं मगर इमाम को न चाहिये यूंही अगर पिछली में अल ह़म्द न पढ़ी जब भी सज्दए सह्व नहीं और रुकूअ़ व सुजूद व क़ादे में कुरआन पढ़ा तो सज्दा वाजिब है।[3] (عالمگیری)

मस्अला 18 आयते सज्दा पढ़ी और सज्दा करना भूल गया तो सज्दए तिलावत अदा करे और सज्दए सह्व करे।[4] (عالمگیری)

मस्अला 19 जो फ़ेल नमाज़ में मुकर्रर हैं उन में तरतीब वाजिब है लिहाज़ा ख़िलाफ़े तरतीब फ़ेल वाक़ेअ़ हो तो सज्दए सह्व करे मसलन क़िराअत से पहले रुकूअ़ कर दिया और रुकूअ़ के बाद क़िराअत न की तो नमाज़ फ़ासिद हो गई कि फ़र्ज़ तर्क हो गया और अगर रुकूअ़ के बाद क़िराअत तो की मगर फिर रुकूअ़ न किया तो फ़ासिद हो गई कि क़िराअत की वज्ह से रुकूअ़ जाता रहा और अगर ब क़दरे फ़र्ज़ क़िराअत कर के रुकूअ़ किया मगर वाजिबे क़िराअत अदा न हुवा मसलन **अल ह़म्द न पढ़ी या सूरत न मिलाई** तो हुक्म येही है कि लौटे और अल ह़म्द व सूरत पढ़ कर रुकूअ़ करे और सज्दए सह्व करे और अगर दोबारा रुकूअ़ न किया तो नमाज़ जाती रही कि पहला रुकूअ़ जाता रहा था।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 20 किसी रक्अ़त का कोई सज्दा रह गया आख़िर में याद आया तो सज्दा कर ले फिर अत्तह़िय्यात पढ़ कर सज्दए सह्व करे और सज्दे के पहले जो अफ़्आ़ले नमाज़ अदा किये बात़िल न होंगे। हां, अगर क़ादे के बाद वोह नमाज़ वाला सज्दा किया तो सिर्फ़ वोह क़ादा जाता रहा।[6] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 21 तादीले अरकान[7] भूल गया सज्दए सह्व वाजिब है।[8] (عالمگیری)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٦.

2 ..... المرجع السابق. 3 ..... المرجع السابق. 4 ..... المرجع السابق.

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٥.

6 ..... "الدرالمختار"، و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٧.

7 ...यानी रुकूअ़, सुजूद, क़ौमे और जल्से में कम से कम एक बार "سُبْحٰنَ اللّٰه" कहने की मिक़्दार ठहरना।

8 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 22 फ़र्ज़ में क़ादए ऊला भूल गया तो जब तक सीधा खड़ा न हुवा, लौट आए और सज्दए सह्व नहीं और अगर सीधा खड़ा हो गया तो न लौटे और आख़िर में सज्दए सह्व करे और अगर सीधा खड़ा हो कर लौटा तो सज्दए सह्व करे और सह़ीह़ मज़हब में नमाज़ हो जाएगी मगर गुनहगार हुवा लिहाज़ा हुक्म है कि अगर लौटे तो फ़ौरन खड़ा हो जाए।[1] (ردالمحتار،غنیہ)

मस्अला 23 अगर मुक़्तदी भूल कर खड़ा हो गया तो ज़रूर है कि लौट आवे, ताकि इमाम की मुख़ालफ़त न हो।[2] (درمختار)

मस्अला 24 क़ादए अख़ीरा भूल गया तो जब तक उस रक्अ़त का सज्दा न किया हो लौट आए और सज्दए सह्व करे और अगर क़ादए अख़ीरा में बैठा था, मगर ब क़दरे तशह्हुद न हुवा था कि खड़ा हो गया तो लौट आए और वोह जो पहले कुछ देर तक बैठा था मह़सूब होगा यानी लौटने के बाद जितनी देर तक बैठा येह और पहले का क़ादा दोनों मिल कर अगर ब क़दरे तशह्हुद हो गए फ़र्ज़ अदा हो गया मगर सज्दए सह्व इस सूरत में भी वाजिब है और अगर उस रक्अ़त का सज्दा कर लिया तो सज्दे से सर उठाते ही वोह फ़र्ज़ नफ़्ल हो गया लिहाज़ा अगर चाहे तो इ़लावा मग़रिब के और नमाज़ों में एक रक्अ़त और मिला ले कि शुफ़्अ़ पूरा हो जाए और त़ाक़ रक्अ़त न रहे अगर्चे वोह नमाज़े फ़ज्र या अ़स्र हो, मग़रिब में और न मिलाए कि चार पूरी हो गईं।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 25 नफ़्ल का हर क़ादा क़ादए अख़ीरा है यानी फ़र्ज़ है अगर क़ादा न किया और भूल कर खड़ा हो गया तो जब तक उस रक्अ़त का सज्दा न कर ले लौट आए और सज्दए सह्व करे और वाजिब नमाज़ मसलन वित्र फ़र्ज़ के हुक्म में है, लिहाज़ा वित्र का क़ादए ऊला भूल जाए तो वोही हुक्म है जो फ़र्ज़ के क़ादए ऊला भूल जाने का है।[4] (درمختار)

मस्अला 26 अगर ब क़दरे तशह्हुद क़ादए अख़ीरा कर चुका है और खड़ा हो गया तो जब तक उस रक्अ़त का सज्दा न किया हो लौट आए और सज्दए सह्व कर के सलाम फेर दे और अगर क़ियाम ही की ह़ालत में सलाम फेर दिया तो भी नमाज़ हो जाएगी मगर सुन्नत तर्क हुई और इस सूरत में अगर इमाम खड़ा हो गया तो मुक़्तदी उस का साथ न दें बल्कि बैठे हुए इन्तिज़ार करें अगर लौट आया साथ हो लें और न लौटा और सज्दा कर लिया तो मुक़्तदी सलाम फेर दें और इमाम एक रक्अ़त और मिलाए कि येह दो नफ़्ल हो जाएं और सज्दए सह्व कर के सलाम फेरे और येह दो रक्अ़तें सुन्नते ज़ोह्र या इ़शा के क़ाइम मक़ाम न होंगी और अगर इन दो रक्अ़तों में किसी ने इमाम की इक़्तिदा की यानी अब शामिल हुवा तो येह मुक़्तदी भी छे पढ़े और अगर इस ने तोड़ दी तो दो रक्अ़त की क़ज़ा पढ़े और अगर इमाम चौथी पर न बैठा था तो येह मुक़्तदी छे रक्अ़त की क़ज़ा पढ़े। और अगर इमाम ने इन रक्अ़तों को फ़ासिद कर दिया तो इस पर मुत्लक़न क़ज़ा नहीं।[5] (درمختار،ردالمحتار)

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ج۲، ص٦٦١. 2 ..... "الدرالمختار"، المرجع السابق، ص٦٦٣.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ج۲، ص٦٦٤. 4 ..... "الدرالمختار"، المرجع السابق، ص٦٦١.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ج۲، ص٦٦٧، ٦٦٩.

www.dawateislami.net

मस्अला 27 चौथी पर क़ादा कर के खड़ा हो गया और किसी फ़र्ज़ पढ़ने वाले ने इस की इक़्तिदा की तो इक़्तिदा सहीह़ नहीं अगर्चे लौट आया और क़ादा न किया था तो जब तक पांचवीं का सज्दा न किया इक़्तिदा कर सकता है कि अभी तक फ़र्ज़ ही में है ।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 28 दो रक्अ़त की निय्यत थी और उन में सह्व हुवा और दूसरी के क़ादे में सज्दए सह्व कर लिया तो इस पर नफ़्ल की बिना मक्रूहे तह़रीमी है ।[2] (درمختار)

मस्अला 29 मुसाफ़िर ने सज्दए सह्व के बाद इक़ामत की निय्यत की तो चार पढ़ना फ़र्ज़ है और आख़िर में सज्दए सह्व का इआ़दा करे ।[3] (درمختار)

मस्अला 30 क़ादए ऊला में तशह्हुद के बाद इतना पढ़ा اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ तो सज्दए सह्व वाजिब है इस वज्ह से नहीं कि दुरूद शरीफ़ पढ़ा बल्कि इस वज्ह से कि तीसरी के क़ियाम में ताख़ीर हुई तो अगर इतनी देर तक सुकूत किया जब भी सज्दए सह्व वाजिब है जैसे क़ादे व रुकूअ़ व सुजूद में क़ुरआन पढ़ने से सज्दए सह्व वाजिब है, ह़ालां कि वोह कलामे इलाही है । इमामे आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ख़्वाब में देखा, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने इरशाद फ़रमाया : "दुरूद पढ़ने वाले पर तुम ने क्यूं सज्दा वाजिब बताया ?" अ़र्ज़ की : इस लिये कि उस ने भूल कर पढ़ा, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने तह़सीन फ़रमाई ।[4] (درمختار، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 31 किसी क़ादे में अगर तशह्हुद में से कुछ रह गया, सज्दए सह्व वाजिब है, नमाज़े नफ़्ल हो या फ़र्ज़ ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 32 पहली दो रक्अ़तों के क़ियाम में अल ह़म्द के बाद तशह्हुद पढ़ा सज्दए सह्व वाजिब है और अल ह़म्द से पहले पढ़ा तो नहीं ।[6] (عالمگیری)

मस्अला 33 पिछली रक्अ़तों के क़ियाम में तशह्हुद पढ़ा तो सज्दा वाजिब न हुवा और अगर क़ादए ऊला में चन्द बार तशह्हुद पढ़ा सज्दा वाजिब हो गया ।[7] (عالمگیری)

मस्अला 34 तशह्हुद पढ़ना भूल गया और सलाम फेर दिया फिर याद आया तो लौट आए, तशह्हुद पढ़े और सज्दए सह्व करे । यूंही अगर तशह्हुद की जगह अल ह़म्द पढ़ी

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٦٩.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٠. 3 ..... المرجع السابق.

4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٧، وغيرهما.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٧.

6 ..... المرجع السابق. 7 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

सज्दा वाजिब हो गया ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 35 रुकूअ़ की जगह सज्दा किया या सज्दे की जगह रुकूअ़ या किसी ऐसे रुक्न को दोबारा किया जो नमाज़ में मुकर्रर मश्रूअ़ न था या किसी रुक्न को मुक़द्दम या मुअख़्ख़र किया तो इन सब सूरतों में सज्दए सह्व वाजिब है ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 36 कुनूत या तक्बीरे कुनूत यानी क़िराअत के बाद कुनूत के लिये जो तक्बीर कही जाती है भूल गया सज्दए सह्व करे ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 37 ईदैन की सब तक्बीरें या बाज़ भूल गया या ज़ाइद कहीं या ग़ैरे महल में कहीं इन सब सूरतों में सज्दए सह्व वाजिब है ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 38 इमाम तक्बीराते ईदैन भूल गया और रुकूअ़ में चला गया तो लौट आए और मस्बूक़ रुकूअ़ में शामिल हुवा तो रुकूअ़ ही में तक्बीरें कह ले ।[5] (عالمگیری)

ईदैन में दूसरी रक्अ़त की तक्बीरे रुकूअ़ भूल गया तो सज्दए सह्व वाजिब है और पहली रक्अ़त की तक्बीरे रुकूअ़ भूला तो नहीं ।[6] (عالمگیری)

मस्अला 39 जुमुआ़ व ईदैन में सह्व वाक़ेअ़ हुवा और जमाअ़त कसीर हो, तो बेहतर येह है कि सज्दए सह्व न करे ।[7] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 40 इमाम ने जह्री नमाज़ में ब क़दरे जवाज़े नमाज़ यानी एक आयत आहिस्ता पढ़ी या सिर्री में जह्र से तो सज्दए सह्व वाजिब है और एक कलिमा आहिस्ता या जह्र से पढ़ा तो मुआ़फ़ है ।[8] (عالمگیری، درمختار،ردالمحتار،غنیہ)

मस्अला 41 मुन्फ़रिद ने सिर्री नमाज़ में जह्र से पढ़ा तो सज्दा वाजिब है और जह्री में आहिस्ता तो नहीं ।[9] (ردالمحتار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٧. 2 ..... المرجع السابق.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٨.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٨.
5 ..... المرجع السابق. 6 ..... المرجع السابق.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٨.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٥.
8 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٨.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٧.
9 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 42 सना व दुआ़ व तशह्हुद बुलन्द आवाज़ से पढ़ा तो ख़िलाफ़े सुन्नत हुवा मगर सज्दए सह्व वाजिब नहीं ।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 43 क़िराअत वग़ैरा किसी मौक़अ़ पर सोचने लगा कि ब क़दरे एक रुक्न यानी तीन बार سُبْحٰنَ اللّٰه कहने के वक़्फ़ा हुवा सज्दए सह्व वाजिब है ।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 44 इमाम से सह्व हुवा और सज्दए सह्व किया तो मुक़्तदी पर भी सज्दा वाजिब है अगर्चे मुक़्तदी सह्व वाक़ेअ़ होने के बाद जमाअ़त में शामिल हुवा और अगर इमाम से सज्दा साक़ित हो गया तो मुक़्तदी से भी साक़ित फिर अगर इमाम से साक़ित होना उस के किसी फ़ेल के सबब हो तो मुक़्तदी पर भी नमाज़ का इआ़दा वाजिब, वरना मुआ़फ़ ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 45 अगर मुक़्तदी से ब ह़ालते इक़्तिदा सह्व वाक़ेअ़ हुवा तो सज्दए सह्व वाजिब नहीं ।[4] (عامۂ کتب)

मस्अला 46 मस्बूक़ इमाम के साथ सज्दए सह्व करे अगर्चे उस के शरीक होने से पहले सह्व हुवा हो और अगर इमाम के साथ सज्दा न किया और मा बक़ी पढ़ने खड़ा हो गया तो आख़िर में सज्दए सह्व करे और अगर इस मस्बूक़ से अपनी नमाज़ में भी सह्व हुवा तो आख़िर के येही सज्दे उस सह्वे इमाम के लिये भी काफ़ी हैं ।[5] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 47 मस्बूक़ ने अपनी नमाज़ बचाने के लिये इमाम के साथ सज्दए सह्व न किया यानी जानता है कि अगर सज्दा करेगा तो नमाज़ जाती रहेगी मसलन नमाज़े फ़ज्र में आफ़्ताब तुलूअ़ हो जाएगा या जुमुआ़ में वक़्ते अ़स्र आ जाएगा या माज़ूर है और वक़्त ख़त्म हो जाएगा या मोज़े पर मस्ह़ की मुद्दत गुज़र जाएगी तो इन सूरतों में इमाम के साथ सज्दा न करने में कराहत नहीं । बल्कि ब क़दरे तशह्हुद बैठने के बाद खड़ा हो जाए ।[6] (غنیہ)

मस्अला 48 मस्बूक़ ने इमाम के सह्व में इमाम के साथ सज्दए सह्व किया फिर जब अपनी पढ़ने खड़ा हुवा और उस में भी सह्व हुवा तो उस में भी सज्दए सह्व करे ।[7]

(درمختار وغیرہ)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٨.

2 ..... المرجع السابق، ص٦٧٧. 3 ..... المرجع السابق، ص٦٥٨.

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٨.

और इआ़दा भी उस के ज़िम्मे नहीं **کما حققناہ فی فتاوٰنا** । 12 मिन्ह

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٨.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٩.

6 ..... "غنية المتملي"، فصل في سجود السهو، ص٤٦٦.

7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٩، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 49 मस्बूक़ को इमाम के साथ सलाम फेरना जाइज़ नहीं अगर क़स्दन फेरेगा नमाज़ जाती रहेगी और अगर सह्वन फेरा और सलाम इमाम के साथ मअ़न बिला वक़्फ़ा था तो इस पर सज्दए सह्व नहीं और अगर सलाम इमाम के कुछ भी बाद फेरा तो खड़ा हो जाए अपनी नमाज़ पूरी कर के सज्दए सह्व करे।[1] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 50 इमाम के एक सज्दा करने के बाद शरीक हुवा तो दूसरा सज्दा इमाम के साथ करे और पहले की क़ज़ा नहीं और अगर दोनों सज्दों के बाद शरीक हुवा तो इमाम के सह्व का इस के ज़िम्मे कोई सज्दा नहीं।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 51 इमाम ने सलाम फेर दिया और मस्बूक़ अपनी पूरी करने खड़ा हुवा अब इमाम ने सज्दए सह्व किया तो जब तक मस्बूक़ ने उस रक्अ़त का सज्दा न किया हो लौट आए और इमाम के साथ सज्दा करे, जब इमाम सलाम फेरे तो अब अपनी पढ़े और पहले जो क़ियाम व क़िराअत व रुकूअ़ कर चुका है उस का शुमार न होगा बल्कि अब फिर से वोह अफ़्आ़ल करे और अगर न लौटा और अपनी पढ़ ली तो आख़िर में सज्दए सह्व करे और अगर उस रक्अ़त का सज्दा कर चुका है तो न लौटे, लौटेगा तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी।[3] (عالمگیری)

मस्अला 52 इमाम के सह्व से लाहिक़ पर भी सज्दए सह्व वाजिब है मगर लाहिक़ अपनी आख़िर नमाज़ में सज्दए सह्व करेगा और इमाम के साथ अगर सज्दा किया तो आख़िर में इआ़दा करे।[4] (درمختار)

मस्अला 53 अगर तीन रक्अ़त में मस्बूक़ हुवा और एक रक्अ़त में लाहिक़ तो एक रक्अ़त बिला क़िराअत पढ़ कर बैठे और तशह्हुद पढ़ कर सज्दए सह्व करे फिर एक रक्अ़त भरी पढ़ कर बैठे कि येह उस की दूसरी रक्अ़त है फिर एक भरी और एक ख़ाली पढ़ कर सलाम फेर दे और अगर एक में मस्बूक़ है और तीन में लाहिक़ तो तीन पढ़ कर सज्दए सह्व करे फिर एक भरी पढ़ कर सलाम फेर दे।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 54 मुक़ीम ने मुसाफ़िर की इक़्तिदा की और इमाम से सह्व हुवा तो इमाम के साथ सज्दए सह्व करे फिर अपनी दो पढ़े और उन में भी सह्व हुवा तो आख़िर में फिर सज्दा करे।[6] (ردالمحتار)

---

1 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ج۲، ص۶۵۹، وغیرہ.
و "الفتاوی الرضویۃ"، ج۷، ص۲۳۸.

2 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ج۲، ص۶۵۹.

3 ..... "الفتاوی الھندیۃ"، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی عشر فی سجود السھو، ج۱، ص۱۲۸.

4 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ج۲، ص۶۶۰.

5 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ج۲، ص۶۶۰. 6 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 55 इमाम से सलातुल ख़ौफ़ में (जिस का बयान और त़रीक़ा اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی मज़्कूर होगा) सह्व हुवा तो इमाम के साथ दूसरा गुरौह सज्दए सह्व करे और पहला गुरौह उस वक़्त करे जब अपनी नमाज़ ख़त्म कर चुके।[1] (عالمگیری)

मस्अला 56 इमाम को ह़दस हुवा और पेश्तर सह्व भी वाक़ेअ़ हो चुका है और उस ने ख़लीफ़ा बनाया तो ख़लीफ़ा सज्दए सह्व करे और अगर ख़लीफ़ा को भी ह़ालते ख़िलाफ़त में सह्व हुवा तो वोही सज्दे काफ़ी हैं और अगर इमाम से तो सह्व न हुवा मगर ख़लीफ़ा से इस ह़ालत में सह्व हुवा तो इमाम पर भी सज्दए सह्व वाजिब है और अगर ख़लीफ़ा का सह्व ख़िलाफ़त से पहले हो तो सज्दा वाजिब नहीं न इस पर न इमाम पर।[2] (عالمگیری)

मस्अला 57 जिस पर सज्दए सह्व वाजिब है अगर सह्व होना याद न था और ब निय्यते क़त़्अ़ सलाम फेर दिया तो अभी नमाज़ से बाहर न हुवा बशर्ते कि सज्दए सह्व कर ले, लिहाज़ा जब तक कलाम या ह़दसे अ़म्द, या मस्जिद से ख़ुरूज या और कोई फ़ेल मुनाफ़िये नमाज़ न किया हो उसे ह़ुक्म है कि सज्दा कर ले और अगर सलाम के बाद सज्दए सह्व न किया तो सलाम फेरने के वक़्त से नमाज़ से बाहर हो गया, लिहाज़ा सलाम फेरने के बाद अगर किसी ने इक़्तिदा की और इमाम ने सज्दए सह्व कर लिया तो इक़्तिदा सह़ीह़ है और सज्दा न किया तो सह़ीह़ नहीं और अगर याद था कि सह्व हुवा है और ब निय्यते क़त़्अ़ सलाम फेर दिया तो सलाम फेरते ही नमाज़ से बाहर गया और सज्दए सह्व नहीं कर सकता, इआ़दा करे और अगर इस ने ग़लती से सज्दा किया और उस में कोई शरीक हो तो इक़्तिदा सह़ीह़ नहीं।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 58 सज्दए तिलावत बाक़ी था या क़ादए अख़ीरा में तशह्हुद न पढ़ा था मगर ब क़दरे तशह्हुद बैठ चुका था और येह याद है कि सज्दए तिलावत या तशह्हुद बाक़ी है मगर क़स्दन सलाम फेर दिया तो सज्दा साक़ित़ हो गया और नमाज़ से बाहर हो गया, नमाज़ फ़ासिद न हुई कि तमाम अरकान अदा कर चुका है मगर ब वज्हे तर्के वाजिब मक्रूहे तह़रीमी हुई। यूंही अगर उस के ज़िम्मे सज्दए सह्व व सज्दए तिलावत हैं और दोनों याद हैं या सिर्फ़ सज्दए तिलावत याद है और क़स्दन सलाम फेर दिया तो दोनों साक़ित़ हो गए अगर सज्दए नमाज़ व सज्दए सह्व दोनों बाक़ी थे या सिर्फ़ सज्दए नमाज़ रह गया था और सज्दए नमाज़ याद होते हुए सलाम फेर दिया तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और अगर सज्दए नमाज़ व सज्दए तिलावत बाक़ी थे और सलाम फेरते वक़्त दोनों याद थे या एक जब भी नमाज़ फ़ासिद हो गई।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 59 सज्दए नमाज़ या सज्दए तिलावत बाक़ी था या सज्दए सह्व करना था और भूल कर सलाम फेरा तो जब तक मस्जिद से बाहर न हुवा कर ले और मैदान में हो तो जब तक सफ़ों से मुतजाविज़ न हुवा या आगे को सज्दे की जगह से न गुज़रा कर ले।[5] (درمختار،ردالمحتار)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٨. 2 ..... المرجع السابق، ص١٣٠.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٣.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٣.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٤.

www.dawateislami.net

मस्अला 60 रुकूअ़ में याद आया कि नमाज़ का कोई सज्दा रह गया है और वहीं से सज्दे को चला गया या सज्दे में याद आया और सर उठा कर वोह सज्दा कर लिया तो बेहतर येह है कि उस रुकूअ़ व सुजूद का इआ़दा करे और सज्दए सह्व करे और अगर उस वक़्त न किया बल्कि आख़िरे नमाज़ में किया तो उस रुकूअ़ व सुजूद का इआ़दा नहीं, सज्दए सह्व करना होगा।[1] (درمختار)

मस्अला 61 ज़ोह्र की नमाज़ पढ़ता था और येह ख़याल कर के कि चार पूरी हो गईं दो रक्अ़त पर सलाम फेर दिया तो चार पूरी कर ले और सज्दए सह्व करे और अगर येह गुमान किया कि मुझ पर दो ही रक्अ़तें हैं, मसलन अपने को मुसाफ़िर तसव्वुर किया या येह गुमान हुवा कि नमाज़े जुमुआ़ है या नया मुसलमान है समझा कि ज़ोह्र के फ़र्ज़ दो ही हैं या नमाज़े इ़शा को तरावीह़ तसव्वुर किया तो नमाज़ जाती रही। यूंही अगर कोई रुक्न फ़ौत हो गया और याद होते हुए सलाम फेर दिया तो नमाज़ गई।[2] (درمختار)

मस्अला 62 जिस को शुमारे रक्अ़त में शक हो, मसलन तीन हुईं या चार और बुलूग़ के बाद येह पहला वाक़िआ़ है तो सलाम फेर कर या कोई अ़मल मुनाफ़िये नमाज़ कर के तोड़ दे या ग़ालिब गुमान के ब मूजिब पढ़ ले मगर बहर सूरत इस नमाज़ को सिरे से पढ़े मह्ज़ तोड़ने की निय्यत काफ़ी नहीं और अगर येह शक पहली बार नहीं बल्कि पेश्तर भी हो चुका है तो अगर ग़ालिब गुमान किसी त़रफ़ हो तो उस पर अ़मल करे वरना कम की जानिब को इख़्तियार करे यानी तीन और चार में शक हो तो तीन क़रार दे, दो और तीन में शक हो तो दो, व अ़ला हाज़ल क़ियास और तीसरी चौथी दोनों में क़ादा करे कि तीसरी रक्अ़त का चौथी होना मोह़तमल है और चौथी में क़ादे के बाद सज्दए सह्व कर के सलाम फेरे और गुमाने ग़ालिब की सूरत में सज्दए सह्व नहीं मगर जब कि सोचने में ब क़दर एक रुक्न के वक़्फ़ा किया हो तो सज्दए सह्व वाजिब हो गया।[3] (ہدایہ وغیرہا)

मस्अला 63 नमाज़ पूरी करने के बाद शक हुवा तो इस का कुछ एतिबार नहीं और अगर नमाज़ के बाद यक़ीन है कि कोई फ़र्ज़ रह गया मगर इस में शक है कि वोह क्या है तो फिर से पढ़ना फ़र्ज़ है।[4] (فتح، ردالمحتار)

मस्अला 64 ज़ोह्र पढ़ने के बाद एक आ़दिल शख़्स ने ख़बर दी कि तीन रक्अ़तें पढ़ीं तो इआ़दा करे अगर्चे इस के ख़याल में येह ख़बर ग़लत़ हो और अगर कहने वाला आ़दिल न हो तो उस की ख़बर का एतिबार नहीं और अगर मुसल्ली को शक हो और दो आ़दिल ने ख़बर दी तो उन की ख़बर पर अ़मल करना ज़रूरी है।[5] (عالمگیری وغیرہ)

---

1 ..... "الدرالمختار و رد المحتار"، كتاب الصلاة، المسائل الاثنا عشرية، ج٢، ص٤٤٤.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٤. 3 ..... "الهداية"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج١، ص٧٦، وغيرها.

4 ..... "فتح القدير"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج١، ص٤٥٢. و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٥.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٣١، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 65 अगर तादादे रक्अ़ात में शक न हुवा मगर ख़ुद उस नमाज़ की निस्बत शक है मसलन ज़ोह्र की दूसरी रक्अ़त में शक हुवा कि येह अ़स्र की नमाज़ पढ़ता हूं और तीसरी में नफ़्ल का शुबा हुवा और चौथी में ज़ोह्र का तो ज़ोह्र ही है।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 66 तशह्हुद के बाद येह शक हुवा कि तीन हुईं या चार और एक रुक्न की क़दर ख़ामोश रहा और सोचता रहा, फिर यक़ीन हुवा कि चार हो गईं तो सज्दए सह्व वाजिब है और अगर एक त़रफ़ सलाम फेरने के बाद ऐसा हुवा तो कुछ नहीं और अगर इसे ह़दस हो और वुज़ू करने गया था कि शक वाक़ेअ़ हुवा और सोचने में वुज़ू से कुछ देर तक रुक रहा तो सज्दए सह्व वाजिब है।[2] (عالمگیری)

मस्अला 67 येह शक वाक़ेअ़ हुवा कि इस वक़्त की नमाज़ पढ़ी या नहीं, अगर वक़्त बाक़ी है इआ़दा करे, वरना नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 68 शक की सब सूरतों में सज्दए सह्व वाजिब है और ग़लबए ज़न में नहीं मगर जब कि सोचने में एक रुक्न का वक़्फ़ा हो गया तो वाजिब हो गया।[4] (درمختار)

मस्अला 69 बे वुज़ू होने या मस्ह़ न करने का यक़ीन हुवा और इसी ह़ालत में एक रुक्न अदा कर लिया तो सिरे से नमाज़ पढ़े अगर्चे फिर यक़ीन हुवा कि वुज़ू था और मस्ह़ किया था।[5] (عالمگیری)

मस्अला 70 नमाज़ में शक हुवा कि मुक़ीम है या मुसाफ़िर तो चार पढ़े और दूसरी के बाद क़ादा ज़रूरी है।[6] (عالمگیری)

मस्अला 71 वित्र में शक हुवा कि दूसरी है या तीसरी तो उस में क़ुनूत पढ़ कर क़ादे के बाद एक रक्अ़त और पढ़े और उस में भी क़ुनूत पढ़े और सज्दए सह्व करे।[7] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 72 इमाम नमाज़ पढ़ा रहा है दूसरी में शक हुवा कि पहली है या दूसरी या चौथी और तीसरी में शक हुवा और मुक़्तदियों की त़रफ़ नज़र की, कि वोह खड़े हों तो खड़ा हो जाऊं बैठें तो बैठ जाऊं तो इस में ह़रज नहीं और सज्दए सह्व वाजिब न हुवा।[8] (عالمگیری)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٦.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٢٨.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٣٠.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٧٨.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في سجود السهو، ج١، ص١٣١.
6 ..... المرجع السابق. 7 ..... المرجع السابق، وغيره. 8 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

नमाज़े मरीज़ का बयान

हदीस 1 हदीस में है, इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बीमार थे, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से नमाज़ के बारे में सुवाल किया, फ़रमाया : "खड़े हो कर पढ़ो, अगर इस्तिता़अ़त न हो तो बैठ कर और इस की भी इस्तिता़अ़त न हो तो लैट कर, **अल्लाह** तआ़ला किसी नफ़्स को तक्लीफ़ नहीं देता मगर इतनी कि उस की वुस्अ़त हो।"[1] इस हदीस को मुस्लिम के सिवा जमाअ़ते मुह़द्दिसीन ने रिवायत किया।

हदीस 2 बज़्ज़ार मुस्नद में और बैहक़ी मारिफ़ह में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم एक मरीज़ की इ़यादत को तशरीफ़ ले गए, देखा कि तक्ये पर नमाज़ पढ़ता है यानी सज्दा करता है उसे फेंक दिया, उस ने एक लकड़ी ली कि उस पर नमाज़ पढ़े, उसे भी ले कर फेंक दिया और फ़रमाया : ज़मीन पर नमाज़ पढ़े अगर इस्तिता़अ़त हो, वरना इशारा करे और सज्दे को रुकूअ़ से पस्त करे।[2]

मस्अला 1 जो शख़्स ब वज्ह बीमारी के खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने पर क़ादिर नहीं कि खड़े हो कर पढ़ने से ज़रर लाहिक़ होगा या मरज़ बढ़ जाएगा या देर में अच्छा होगा या चक्कर आता है या खड़े हो कर पढ़ने से क़त़रा आएगा या बहुत शदीद दर्द ना क़ाबिले बरदाश्त पैदा हो जाएगा तो इन सब सूरतों में बैठ कर रुकूअ़ व सुजूद के साथ नमाज़ पढ़े।[3] (درمختار) इस के मुतअ़ल्लिक़ बहुत से मसाइल फ़राइज़े नमाज़ में मज़्कूर हुए।

मस्अला 2 अगर अपने आप बैठ भी नहीं सकता मगर लड़का या ग़ुलाम या ख़ादिम या कोई अजनबी शख़्स वहां है कि बिठा देगा तो बैठ कर पढ़ना ज़रूरी है और अगर बैठा नहीं रह सकता तो तक्ये या दीवार या किसी शख़्स पर टेक लगा कर पढ़े येह भी न हो सके तो लैट कर पढ़े और बैठ कर पढ़ना मुम्किन हो तो लैट कर नमाज़ न होगी।[4] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 3 बैठ कर पढ़ने में किसी ख़ास त़ौर पर बैठना ज़रूरी नहीं बल्कि मरीज़ पर जिस त़रह़ आसानी हो उस त़रह़ बैठे। हां, दो ज़ानू बैठना आसान हो या दूसरी त़रह़ बैठने के बराबर हो तो दो ज़ानू बेहतर है वरना जो आसान हो इख़्तियार करे।[5] (عالمگیری وغیرہ)

---

1 ..... "نصب الراية" للزيلعي، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص١٧٧ـ ١٧٨.

2 ..... "معرفة السنن والآثار" للبيهقي، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، الحديث: ١٠٨٣، ج٢، ص١٤٠.

3 ..... "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨١.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٦.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٢.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٦، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 4 नफ़्ल नमाज़ में थक गया तो दीवार या अ़सा पर टेक लगाने में ह़रज नहीं वरना मक्रूह है और बैठ कर पढ़ने में कुछ ह़रज नहीं।[1] (درمختار)

मस्अला 5 चार रक्अ़त वाली नमाज़ बैठ कर पढ़ी, क़ादए अख़ीरा के मौक़अ़ पर तशह्हुद पढ़ने से पहले क़िराअत शुरूअ़ कर दी और रुकूअ़ भी किया तो इस का वोही हुक्म है कि खड़ा हो कर पढ़ने वाला चौथी के बाद खड़ा हो जाता, लिहाज़ा इस ने जब तक पांचवीं का सज्दा न किया हो तशह्हुद पढ़े और सज्दए सह्व करे और पांचवीं का सज्दा कर लिया तो नमाज़ जाती रही।[2] (عالمگیری)

मस्अला 6 बैठ कर पढ़ने वाला दूसरी के सज्दे से उठा और क़ियाम की निय्यत की मगर क़िराअत से पहले याद आ गया तो तशह्हुद पढ़े और नमाज़ हो गई और सज्दए सह्व भी नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 7 मरीज़ ने बैठ कर नमाज़ पढ़ी, चौथी के सज्दे से उठा तो येह गुमान कर के कि तीसरी है क़िराअत की और इशारे से रुकूअ़ व सुजूद किया नमाज़ जाती रही और दूसरी के सज्दे के बाद येह गुमान कर के कि दूसरी है क़िराअत शुरूअ़ की फिर याद आया तो तशह्हुद की त़रफ़ औ़द न करे बल्कि पूरी करे और आख़िर में सज्दए सह्व करे।[4] (عالمگیری)

मस्अला 8 खड़ा हो सकता है मगर रुकूअ़ व सुजूद नहीं कर सकता या सिर्फ़ सज्दा नहीं कर सकता मसलन ह़ल्क़ वग़ैरा में फोड़ा है कि सज्दा करने से बहेगा तो भी बैठ कर इशारे से पढ़ सकता है बल्कि येही बेहतर है और इस सूरत में येह भी कर सकता है कि खड़े हो कर पढ़े और रुकूअ़ के लिये इशारा करे या रुकूअ़ पर क़ादिर हो तो रुकूअ़ करे फिर बैठ कर सज्दे के लिये इशारा करे।[5] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 9 इशारे की सूरत में सज्दे का इशारा रुकूअ़ से पस्त होना ज़रूरी है मगर येह ज़रूर नहीं कि सर को बिल्कुल ज़मीन से क़रीब कर दे सज्दे के लिये तक्या वग़ैरा कोई चीज़ पेशानी के क़रीब उठा कर उस पर सज्दा करना मक्रूहे तह़रीमी है, ख़्वाह ख़ुद इसी ने वोह चीज़ उठाई हो या दूसरे ने।[6] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 10 अगर कोई चीज़ उठा कर उस पर सज्दा किया और सज्दे में ब निस्बत रुकूअ़ के ज़ियादा सर झुकाया, जब भी सज्दा हो गया मगर गुनहगार हुवा और सज्दे के लिये ज़ियादा सर न झुकाया तो हुवा ही नहीं।[7] (درمختار، عالمگیری)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٩٠.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٧.
3 ..... المرجع السابق. 4 ..... المرجع السابق.
5 ..... المرجع السابق، ص١٣٦، و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٤.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٥. وغيره
7 ..... المرجع السابق، و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 11 अगर कोई ऊंची चीज़ ज़मीन पर रखी हुई है उस पर सज्दा किया और रुकूअ़ के लिये सिर्फ़ इशारा न हुवा बल्कि पीठ भी झुकाई तो सहीह़ है बशर्ते कि सज्दे के शराइत़ पाए जाएं मसलन उस चीज़ का सख़्त होना जिस पर सज्दा किया कि इस क़दर पेशानी दब गई हो कि फिर दबाने से न दबे और उस की ऊंचाई बारह उंगल से ज़ियादा न हो। इन शराइत़ के पाए जाने के बाद ह़क़ीक़तन रुकूअ़ व सुजूद पाए गए, इशारे से पढ़ने वाला इसे न कहेंगे और खड़ा हो कर पढ़ने वाला इस की इक़्तिदा कर सकता है और येह शख़्स जब इस त़रह़ रुकूअ़ व सुजूद कर सकता है और क़ियाम पर क़ादिर है तो इस पर क़ियाम फ़र्ज़ है या अस्नाए नमाज़ में क़ियाम पर क़ादिर हो गया तो जो बाक़ी है उसे खड़े हो कर पढ़ना फ़र्ज़ है लिहाज़ा जो शख़्स ज़मीन पर सज्दा नहीं कर सकता मगर शराइते मज़्कूरा के साथ कोई चीज़ ज़मीन पर रख कर सज्दा कर सकता है, उस पर फ़र्ज़ है कि इसी त़रह़ सज्दा करे, इशारा जाइज़ नहीं और अगर वोह चीज़ जिस पर सज्दा किया ऐसी नहीं तो ह़क़ीक़तन सुजूद न पाया गया बल्कि सज्दे के लिये इशारा हुवा लिहाज़ा खड़ा होने वाला इस की इक़्तिदा नहीं कर सकता और अगर येह शख़्स अस्नाए नमाज़ में क़ियाम पर क़ादिर हुवा तो सिरे से पढ़े।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 12 पेशानी में ज़ख़्म है कि सज्दे के लिये माथा नहीं लगा सकता तो नाक पर सज्दा करे और ऐसा न किया बल्कि इशारा किया तो नमाज़ न हुई।[2] (عالمگیری)

मस्अला 13 अगर मरीज़ बैठने पर भी क़ादिर नहीं तो लैट कर इशारे से पढ़े, ख़्वाह दाहनी या बाईं करवट पर लैट कर क़िब्ले को मुंह करे ख़्वाह चित लैट कर क़िब्ले को पाउं करे मगर पाउं न फैलाए कि क़िब्ले को पाउं फैलाना मक्रूह है बल्कि घुटने खड़े रखे और सर के नीचे तक्या वग़ैरा रख कर ऊंचा कर ले कि मुंह क़िब्ले को हो जाए और येह सूरत यानी चित लैट कर पढ़ना अफ़्ज़ल है।[3] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 14 अगर सर से इशारा भी न कर सके तो नमाज़ साक़ित़ है, इस की ज़रूरत नहीं कि आंख या भवों या दिल के इशारे से पढ़े फिर अगर छे वक़्त इसी ह़ालत में गुज़र गए तो उन की क़ज़ा भी साक़ित़, फ़िदये की भी ह़ाजत नहीं वरना बादे सिह़्ह़त इन नमाज़ों की क़ज़ा लाज़िम है अगर्चे इतनी ही सिह़्ह़त हो कि सर के इशारे से पढ़ सके।[4] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 15 मरीज़ अगर क़िब्ले की त़रफ़ न अपने आप मुंह कर सकता है न दूसरे के ज़रीए से तो वैसे ही पढ़ ले और सिह़्ह़त के बाद उस नमाज़ का इआ़दा नहीं और अगर कोई शख़्स मौजूद है कि इस के कहने से क़िब्ला रू कर देगा मगर इस ने उस से न कहा तो न हुई, इशारे से जो नमाज़ें पढ़ी हैं सिह़्ह़त के बाद उन का भी इआ़दा नहीं। यूंही अगर ज़बान बन्द

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٥، ٦٨٦.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٦.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٦. وغيره
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٧، وغيره.

www.dawateislami.net

हो गई और गूंगे की त़रह़ नमाज़ पढ़ी फिर ज़बान खुल गई तो उन नमाज़ों का इआ़दा नहीं ।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 16 मरीज़ इस ह़ालत को पहुंच गया कि रुकूअ़ व सुजूद की तादाद याद नहीं रख सकता तो उस पर अदा ज़रूरी नहीं ।[2] (درمختار)

मस्अला 17 तन्दुरुस्त शख़्स नमाज़ पढ़ रहा था, अस्नाए नमाज़ में ऐसा मरज़ पैदा हो गया कि अरकान की अदा पर क़ुदरत न रही तो जिस त़रह़ मुम्किन हो बैठ कर लैट कर नमाज़ पूरी कर ले, सिरे से पढ़ने की ह़ाजत नहीं ।[3] (درمختار،عالمگیری)

मस्अला 18 बैठ कर रुकूअ़ व सुजूद से नमाज़ पढ़ रहा था, अस्नाए नमाज़ में क़ियाम पर क़ादिर हो गया तो जो बाक़ी है खड़ा हो कर पढ़े और इशारे से पढ़ता था और नमाज़ ही में रुकूअ़ व सुजूद पर क़ादिर हो गया तो सिरे से पढ़े ।[4] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 19 रुकूअ़ व सुजूद पर क़ादिर न था खड़े या बैठे नमाज़ शुरूअ़ की, रुकूअ़ व सुजूद के इशारे की नौबत न आई थी कि अच्छा हो गया तो उसी नमाज़ को पूरा करे, सिरे से पढ़ने की ह़ाजत नहीं और अगर लैट कर नमाज़ शुरूअ़ की थी और इशारे से पहले खड़े या बैठ कर रुकूअ़ व सुजूद पर क़ादिर हो गया तो सिरे से पढ़े ।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 20 चलती हुई कश्ती या जहाज़ में बिला उ़ज़्र बैठ कर नमाज़ सह़ीह़ नहीं बशर्ते कि उतर कर ख़ुश्की में पढ़ सके और ज़मीन पर बैठ गई हो तो उतरने की ह़ाजत नहीं और कनारे पर बंधी हो और उतर सकता हो तो उतर कर ख़ुश्की में पढ़े वरना कश्ती ही में खड़े हो कर और बीच दरिया में लंगर डाले हुए है तो बैठ कर पढ़ सकते हैं, अगर हवा के तेज़ झोंके लगते हों कि खड़े होने में चक्कर का ग़ालिब गुमान हो और अगर हवा से ज़ियादा ह़रकत न हो तो बैठ कर नहीं पढ़ सकते और कश्ती पर नमाज़ पढ़ने में क़िब्ला रू होना लाज़िम है और जब कश्ती घूम जाए तो नमाज़ी भी घूम कर क़िब्ले को मुंह कर ले और अगर इतनी तेज़ गर्दिश हो कि क़िब्ले को मुंह करने से आ़जिज़ है तो उस वक़्त मुल्तवी रखे हां अगर वक़्त जाता देखे तो पढ़ ले ।[6] (غنیہ،درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 21 जुनून या बेहोशी अगर पूरे छे वक़्त को घेर ले तो उन नमाज़ों की क़ज़ा भी नहीं, अगर्चे बेहोशी आदमी या दरिन्दे के ख़ौफ़ से हो और इस से कम हो तो क़ज़ा वाजिब है ।[7] (درمختار)

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٨.
2 ..... "تنوير الأبصار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٨.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٧.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٩.
4 ..... المرجع السابق. 5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٨٩.
6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، مطلب في الصلاة في السفينة، ج٢، ص٦٩٠.
7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٩٢.

www.dawateislami.net

मस्अला 22 अगर किसी किसी वक़्त होश हो जाता है तो इस का वक़्त मुक़र्रर है या नहीं ? अगर वक़्त मुक़र्रर है और उस से पहले पूरे छे वक़्त न गुज़रे तो क़ज़ा वाजिब और वक़्त मुक़र्रर न हो बल्कि दफ़्अ़तन होश हो जाता है फिर वोही ह़ालत पैदा हो जाती है तो इस इफ़ाक़े का एतिबार नहीं यानी सब बेहोशियां मुत्तसिल समझी जाएंगी ।[1] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 23 शराब या भंग पी अगर्चे दवा की ग़रज़ से और अ़क़्ल जाती रही तो क़ज़ा वाजिब है अगर्चे बे अ़क़्ली कितने ही ज़ियादा ज़माने तक हो । यूंही अगर दूसरे ने मजबूर कर के शराब पिला दी जब भी क़ज़ा मुत्लक़न वाजिब है ।[2] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 24 सोता रहा जिस की वज्ह से नमाज़ जाती रही तो क़ज़ा फ़र्ज़ है अगर्चे नींद पूरे छे वक़्त को घेर ले ।[3] (درمختار)

मस्अला 25 अगर येह ह़ालत हो कि रोज़ा रखता है तो खड़े हो कर नमाज़ नहीं पढ़ सकता और न रखे तो खड़े हो कर पढ़ सकेगा तो रोज़ा रखे और नमाज़ बैठ कर पढ़े ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 26 मरीज़ ने वक़्त से पहले नमाज़ पढ़ ली इस ख़याल से कि वक़्त में न पढ़ सकेगा तो नमाज़ न हुई और बग़ैर क़िराअत भी न होगी मगर जब कि क़िराअत से आ़जिज़ हो तो हो जाएगी ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 27 औ़रत बीमार हो तो शौहर पर फ़र्ज़ नहीं कि उसे वुज़ू करा दे और ग़ुलाम बीमार हो तो वुज़ू करा देना मौला के ज़िम्मे है ।[6] (عالمگیری)

मस्अला 28 छोटे से ख़ैमे में है कि खड़ा नहीं हो सकता और बाहर निकलता है तो मींह[7] और कीचड़ है तो बैठ कर पढ़े । यूंही खड़े होने में दुश्मन का ख़ौफ़ है तो बैठ कर पढ़ सकता है ।[8] (عالمگیری)

मस्अला 29 बीमार की नमाज़ें क़ज़ा हो गईं अब अच्छा हो कर उन्हें पढ़ना चाहता है तो वैसे पढ़े जैसे तन्दुरुस्त पढ़ते हैं, इस त़रह़ नहीं पढ़ सकता जैसे बीमारी में पढ़ता मसलन बैठ कर या इशारे से अगर इसी त़रह़ पढ़ीं तो न हुईं और सिह़्ह़त की ह़ालत में क़ज़ा हुईं, बीमारी

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٩٢.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٧.
2 ..... المرجع السابق. 3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، ج٢، ص٦٩٢.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٨.
5 ..... المرجع السابق. 6 ..... المرجع السابق.
7 ...यानी बारिश ।
8 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٨.

www.dawateislami.net

में उन्हें पढ़ना चाहता है तो जिस त़रह़ पढ़ सकता है पढ़े हो जाएंगी, सिह़्ह़त की सी पढ़ना इस वक़्त वाजिब नहीं ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 30 पानी में डूब रहा है अगर उस वक़्त भी बग़ैर अ़मले कसीर इशारे से पढ़ सकता है मसलन तैराक है या लकड़ी वग़ैरा का सहारा पा जाए तो पढ़ना फ़र्ज़ है, वरना माज़ूर है बच जाए तो क़ज़ा पढ़े ।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 31 आंख बनवाई और त़बीबे ह़ाज़िक़ मुसलमान मस्तूर ने लैटे रहने का हुक्म दिया तो लैट कर इशारे से पढ़े ।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 32 मरीज़ के नीचे नजिस बिछोना बिछा है और ह़ालत येह हो कि बदला भी जाए तो नमाज़ पढ़ते पढ़ते ब क़दरे मानेअ़ नापाक हो जाए तो उसी पर नमाज़ पढ़े । यूंही अगर बदला जाए तो इस क़दर जल्द नजिस न होगा मगर बदलने में उसे शदीद तक्लीफ़ होगी तो उसी नजिस ही पर पढ़ ले ।[4] (عالمگیری، درمختار،ردالمحتار)

तम्बीहे ज़रूरी : मुसलमान इस बाब के मसाइल को देखें तो उन्हें बख़ूबी मालूम हो जाएगा कि शरएु मुत़ह्हरा ने किसी ह़ालत में भी सिवा बाज़ नादिर सूरतों के नमाज़ मुआ़फ़ नहीं की बल्कि येह हुक्म दिया कि जिस त़रह़ मुम्किन हो पढ़े । आज कल जो बड़े नमाज़ी कहलाते हैं उन की येह ह़ालत देखी जा रही है कि बुख़ार आया ज़रा शिद्दत हुई नमाज़ छोड़ दी, शिद्दत का दर्द हुवा नमाज़ छोड़ दी, कोई फुड़िया निकल आई नमाज़ छोड़ दी, यहां तक नौबत पहुंच गई है कि दर्दे सर व ज़ुकाम में नमाज़ छोड़ बैठते हैं ह़ालां कि जब तक इशारे से भी पढ़ सकता हो और न पढ़े तो उन्हीं वईदों का मुस्तह़िक़ है जो शुरूएु किताब में तारिकुस्सलात के लिये अह़ादीस से बयान हुईं, وَالْعِیَاذُبِاللّٰہِ تَعَالٰی

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنَا مِنْ مُقِیْمِی الصَّلٰوۃِ وَمِنْ صَالِحِیْ اَھْلِھَا اَحْیَآءً وَّ اَمْوَاتًا وَّ ارْزُقْنَا اتِّبَاعَ شَرِیْعَۃِ حَبِیْبِکَ الْکَرِیْمِ عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْمِ اٰمِیْن ۔[5]

1 ..... "الفتاوی الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٨.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المريض، مطلب في الصلاة في السفينة، ج٢، ص٦٩٣.
3 ..... المرجع السابق.
4 ..... المرجع السابق، و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الرابع عشر في صلاة المريض، ج١، ص١٣٧.

5 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू हम को नमाज़ क़ाइम करने वालों में और ज़िन्दगी और मरने के बाद अच्छे नमाज़ वालों में कर और अपने ह़बीबे करीम (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) की शरीअ़त की पैरवी नसीब कर, उन पर बेहतर दुरूदो सलाम, आमीन ।

www.dawateislami.net

सज्दए तिलावत का बयान

सहीह़ मुस्लिम शरीफ़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : "जब इब्ने आदम आयते सज्दा पढ़ कर सज्दा करता है, शैत़ान हट जाता है और रो कर कहता है, हाए बरबादी मेरी ! इब्ने आदम को सज्दे का हुक्म हुवा, उस ने सज्दा किया, उस के लिये जन्नत है और मुझे हुक्म हुवा, मैं ने इन्कार किया, मेरे लिये दोज़ख़ है।"[1]

मस्अला 1 सज्दे की चौदह आयतें हैं वोह येह हैं :

(1) सूरए अअ़राफ़ की आख़िर आयत

﴿ اِنَّ الَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ یُسَبِّحُوْنَهٗ وَ لَهٗ یَسْجُدُوْنَ۠ ﴾[2]

(2) सूरए रअ्द में येह आयत

﴿ وَ لِلّٰهِ یَسْجُدُ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّ ظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ۠ ﴾[3]

(3) सूरए नह्ल में येह आयत

﴿ وَ لِلّٰهِ یَسْجُدُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّ الْمَلٰٓىٕكَةُ وَ هُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ ﴾[4]

(4) सूरए बनी इसराईल में येह आयत

﴿ اِنَّ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا یُتْلٰى عَلَیْهِمْ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۙ وَّ یَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ۚ وَ یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ یَبْكُوْنَ وَ یَزِیْدُهُمْ خُشُوْعًا ﴾[5]

(5) सूरए मरयम में येह आयत

﴿ اِذَا تُتْلٰى عَلَیْهِمْ اٰیٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ بُكِیًّا ﴾[6]

---

1 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الإیمان، باب بیان اطلاق اسم الکفر علی من ترک الصلاۃ، الحدیث: ۸۱، ص۵۶.

2 ..... پ۹، الاعراف: ۲۰۶.

3 ..... پ۱۳، الرعد: ۱۵.

4 ..... پ۱۴، النحل: ۴۹.

5 ..... پ۱۵، بنیٓ اسرآءیل: ۱۰۷ ـ ۱۰۹.

6 ..... پ۱۶، مریم: ۵۸.

www.dawateislami.net

(6) सूरए ह़ज्ज में पहली जगह जहां सज्दे का ज़िक्र है यानी येह आयत

﴿ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ یَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَنْ فِی الْاَرْضِ وَ الشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ وَ النُّجُوْمُ وَ الْجِبَالُ وَ الشَّجَرُ وَ الدَّوَآبُّ وَ كَثِیْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَ كَثِیْرٌ حَقَّ عَلَیْهِ الْعَذَابُ ؕ وَ مَنْ یُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَفْعَلُ مَا یَشَآءُ۠ ﴾[1]

(7) सूरए फ़ुरक़ान में येह आयत

﴿ وَ اِذَا قِیْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَ مَا الرَّحْمٰنُ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَ زَادَهُمْ نُفُوْرًا۠ ﴾[2]

(8) सूरए नम्ल में येह आयत

﴿ اَلَّا یَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ یُخْرِجُ الْخَبْءَ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ یَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَ مَا تُعْلِنُوْنَ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ۠ ﴾[3]

(9) सूरए **الم تنزیل** में येह आयत

﴿ اِنَّمَا یُؤْمِنُ بِاٰیٰتِنَا الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّ سَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ هُمْ لَا یَسْتَكْبِرُوْنَ۩ ﴾[4]

(10) सूरए **ص** में येह आयत

﴿ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَ خَرَّ رَاكِعًا وَّ اَنَابَ۩ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ؕ وَ اِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَ حُسْنَ مَاٰبٍ ﴾[5]

(11) सूरए **حم السجدة** में येह आयत

﴿ وَ مِنْ اٰیٰتِهِ الَّیْلُ وَ النَّهَارُ وَ الشَّمْسُ وَ الْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَ لَا لِلْقَمَرِ وَ اسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ یُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّیْلِ وَ النَّهَارِ وَ هُمْ لَا یَسْـَٔمُوْنَ۩ ﴾[6]

(12) सूरए नज्म में

﴿ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَ اعْبُدُوْا۠ ﴾[7]

1 ..... پ۱۷، الحج: ۱۸.
2 ..... پ۱۹، الفرقان: ۶۰.
3 ..... پ۱۹، النمل: ۲۵ ـ ۲۶.
4 ..... پ۲۱، السجدة: ۱۵.
5 ..... پ۲۳، صٓ: ۲۴ ـ ۲۵.
6 ..... پ۲۴، حٰمٓ السجدة: ۳۷ ـ ۳۸.
7 ..... پ۲۷، النجم: ۶۲.

www.dawateislami.net

(13) सूरए इन्शिक़ाक़ में आयत

﴿ فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَ اِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ۝ ﴾[1]

(14) सूरए इक़्रअ में आयत

﴿ وَ اسْجُدْ وَ اقْتَرِبْ ۝ ﴾[2]

मस्अला 2 आयते सज्दा पढ़ने या सुनने से सज्दा वाजिब हो जाता है, पढ़ने में येह शर्त है कि इतनी आवाज़ से हो कि अगर कोई उ़ज़्र न हो तो ख़ुद सुन सके, सुनने वाले के लिये येह ज़रूरी नहीं कि बिल क़स्द सुनी हो, बिला क़स्द सुनने से भी सज्दा वाजिब हो जाता है।[3] (ہدایہ، درمختار وغیرہما)

मस्अला 3 सज्दा वाजिब होने के लिये पूरी आयत पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि वोह लफ़्ज़ जिस में सज्दे का माद्दा पाया जाता है और उस के साथ क़ब्ल या बाद का कोई लफ़्ज़ मिला कर पढ़ना काफ़ी है।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 4 अगर इतनी आवाज़ से आयत पढ़ी कि सुन सकता था मगर शोरो ग़ुल या बहरे होने की वज्ह से न सुनी तो सज्दा वाजिब हो गया और अगर महज़ होंट हिले, आवाज़ पैदा न हुई तो वाजिब न हुवा।[5] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 5 क़ारी ने आयत पढ़ी मगर दूसरे ने न सुनी तो अगर्चे उसी मजलिस में हो उस पर सज्दा वाजिब न हुवा, अलबत्ता नमाज़ में इमाम ने आयत पढ़ी तो मुक़्तदियों पर वाजिब हो गया, अगर्चे न सुनी हो बल्कि अगर्चे आयत पढ़ते वक़्त वोह मौजूद भी न था, बाद पढ़ने के सज्दे से पेश्तर शामिल हुवा। और अगर इमाम से आयत सुनी मगर इमाम के सज्दा करने के बाद उसी रक्अ़त में शामिल हुवा तो इमाम का सज्दा इस के लिये भी है और दूसरी रक्अ़त में शामिल हुवा तो नमाज़ के बाद सज्दा करे। यूंही अगर शामिल ही न हुवा जब भी सज्दा करे।[6] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

---

1 ..... پ ۳۰، الانشقاق: ۲۰ ـ ۲۱. 2 ..... پ ۳۰، العلق: ۱۹.

"الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج۱، ص۱۳۲.

3 ..... "الهداية"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج۱، ص۷۸.

و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج۲، ص٦٩٤، وغيرهما.

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج۲، ص٦٩٤.

आला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : सज्दा वाजिब होने के लिये पूरी आयत पढ़ना ज़रूरी है लेकिन बाज़ उ़लमाए मुतअख़्ख़िरीन के नज़्दीक वोह लफ़्ज़ जिस में सज्दे का माद्दा पाया जाता है उस के साथ क़ब्ल या बाद का कोई लफ़्ज़ मिला कर पढ़ा तो सज्दए तिलावत वाजिब हो जाता है लिहाज़ा एह़तियात येही है कि दोनों सूरतों में सज्दए तिलावत किया जाए। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 8, स. 223-233 मुलख़्ख़सन)

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج۱، ص۱۳۲.

6 ..... المرجع السابق، ص۱۳۳. و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج۲، ص٦٩٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 6 सूरए ह़ज्ज की आख़िरी आयत जिस में सज्दे का ज़िक्र है उस के पढ़ने या सुनने से सज्दा वाजिब नहीं कि उस में सज्दे से मुराद नमाज़ का सज्दा है, अलबत्ता अगर शाफ़ेइय्युल मज़हब इमाम की इक़्तिदा की और उस ने इस मौक़अ़ पर सज्दा किया तो उस की मुताबअ़त में मुक़्तदी पर भी वाजिब है।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 7 इमाम ने आयते सज्दा पढ़ी और सज्दा न किया तो मुक़्तदी भी उस की मुताबअ़त में सज्दा न करेगा, अगर्चे आयत सुनी हो।[2] (غنیہ)

मस्अला 8 मुक़्तदी ने आयते सज्दा पढ़ी तो न ख़ुद इस पर सज्दा वाजिब है न इमाम पर न और मुक़्तदियों पर न नमाज़ में न बाद में, अलबत्ता अगर दूसरे नमाज़ी ने कि उस के साथ नमाज़ में शरीक न था आयत सुनी ख़्वाह वोह मुन्फ़रिद हो या दूसरे इमाम का मुक़्तदी या दूसरा इमाम उन पर बादे नमाज़ सज्दा वाजिब है। यूंही उस पर वाजिब है जो नमाज़ में न हो।[3] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 9 जो शख़्स नमाज़ में नहीं और आयते सज्दा पढ़ी और नमाज़ी ने सुनी तो बादे नमाज़ सज्दा करे नमाज़ में न करे और नमाज़ ही में कर लिया तो काफ़ी न होगा, बादे नमाज़ फिर करना होगा मगर नमाज़ फ़ासिद न होगी हां अगर तिलावत करने वाले के साथ सज्दा किया और इत्तिबाअ़ का क़स्द भी किया तो नमाज़ जाती रही।[4] (غنیہ، عالمگیری)

मस्अला 10 जो शख़्स नमाज़ में न था आयते सज्दा पढ़ कर नमाज़ में शामिल हो गया तो सज्दा साक़ित हो गया।[5] (درمختار)

मस्अला 11 रुकूअ़ या सुजूद में आयते सज्दा पढ़ी तो सज्दा वाजिब हो गया और उसी रुकूअ़ या सुजूद से अदा भी हो गया और तशह्हुद में पढ़ी तो सज्दा वाजिब हो गया लिहाज़ा सज्दा करे।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 12 आयते सज्दा पढ़ने वाले पर उस वक़्त सज्दा वाजिब होता है कि वोह वुजूबे नमाज़ का अह्ल हो यानी अदा या क़ज़ा का उसे हुक्म हो, लिहाज़ा अगर काफ़िर या मज्नून या ना बालिग़ या हैज़ो निफ़ास वाली औ़रत ने आयत पढ़ी तो इन पर सज्दा वाजिब नहीं और

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٦٩٥-٦٩٧.
2 ..... "غنية المتملي"، سجدة التلاوة، ص٥٠٠.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٦٩٧.
4 ..... "غنية المتملي"، سجدة التلاوة، ص٥٠٠.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٦٩٨.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٦٩٨.

www.dawateislami.net

मुसलमान आ़क़िल बालिग़ अहले नमाज़ ने इन से सुनी तो उस पर वाजिब हो गया और जुनून अगर एक दिन रात से ज़ियादा न हो तो मजनून पर पढ़ने या सुनने से वाजिब है, बे वुज़ू या जुनुब ने आयत पढ़ी या सुनी तो सज्दा वाजिब है, नशे वाले ने आयत पढ़ी या सुनी तो सज्दा वाजिब है। यूंही सोते में आयत पढ़ी, बादे बेदारी उसे किसी ने ख़बर दी तो सज्दा करे, नशे वाले या सोने वाले ने आयत पढ़ी तो सुनने वाले पर सज्दा वाजिब हो गया।[1] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 13 औरत ने नमाज़ में आयते सज्दा पढ़ी और सज्दा न किया यहां तक कि हैज़ आ गया तो सज्दा साक़ित हो गया।[2] (عالمگیری)

मस्अला 14 नफ़्ल पढ़ने वाले ने आयत पढ़ी और सज्दा भी कर लिया फिर नमाज़ फ़ासिद हो गई तो उस की क़ज़ा में सज्दे का इआ़दा नहीं और न किया था तो बैरूने नमाज़ करे।[3] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 15 फ़ारसी या किसी और ज़बान में आयत का तर्जमा पढ़ा तो पढ़ने वाले और सुनने वाले पर सज्दा वाजिब हो गया, सुनने वाले ने येह समझा हो या नहीं कि आयते सज्दा का तर्जमा है, अलबत्ता येह ज़रूर है कि उसे न मालूम हो तो बता दिया गया हो कि येह आयते सज्दा का तर्जमा था और आयत पढ़ी गई हो तो इस की ज़रूरत नहीं कि सुनने वाले को आयते सज्दा होना बताया गया हो।[4] (عالمگیری)

मस्अला 16 चन्द शख़्सों ने एक एक ह़र्फ़ पढ़ा कि सब का मज्मूआ़ आयते सज्दा हो गया तो किसी पर सज्दा वाजिब न हुवा। यूंही आयत के हिज्जे करने या हिज्जे सुनने से भी वाजिब न होगा। यूंही परिन्द से आयते सज्दा सुनी या जंगल और पहाड़ वग़ैरा में आवाज़ गूंजी और बि जिन्सिही आयत की आवाज़ कान में आई तो सज्दा वाजिब नहीं।[5] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 17 आयते सज्दा पढ़ने के बाद مَعَاذَاللہ मुरतद हो गया फिर मुसलमान हुवा तो वोह सज्दा वाजिब न रहा।[6] (عالمگیری، درمختار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٢.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٠ ـ ٧٠٢.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٢.

3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٦.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٢.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٢، ١٣٣.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٢.

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 18 आयते सज्दा लिखने या उस की त़रफ़ देखने से सज्दा वाजिब नहीं ।[1] (عالمگیری،غنیہ)

मस्अला 19 सज्दए तिलावत के लिये तह़रीमा के सिवा तमाम वोह शराइत़ हैं जो नमाज़ के लिये हैं मसलन त़हारत, इस्तिक़्बाले क़िब्ला, निय्यत, वक़्त इस माना पर कि आगे आता है सत्रे औ़रत । लिहाज़ा अगर पानी पर क़ादिर है तयम्मुम कर के सज्दा करना जाइज़ नहीं ।[2] (درمختاروغیرہ)

मस्अला 20 इस की निय्यत में येह शर्त़ नहीं कि फ़ुलां आयत का सज्दा है बल्कि मुत्लक़न सज्दए तिलावत की निय्यत काफ़ी है ।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 21 जो चीज़ें नमाज़ को फ़ासिद करती हैं उन से सज्दा भी फ़ासिद हो जाएगा मसलन ह़दसे अ़म्द व कलाम व क़ह़क़ह़ा ।[4] (درمختاروغیرہ)

मस्अला 22 सज्दे का मस्नून त़रीक़ा येह है कि खड़ा हो कर اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुवा सज्दे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहे, फिर اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुवा खड़ा हो जाए, पहले पीछे दोनों बार اَللّٰہُ اَکْبَر कहना सुन्नत है और खड़े हो कर सज्दे में जाना और सज्दे के बाद खड़ा होना येह दोनों क़ियाम मुस्तह़ब ।[5] (عالمگیری،درمختاروغیرہما)

मस्अला 23 मुस्तह़ब येह है कि तिलावत करने वाला आगे और सुनने वाले उस के पीछे सफ़ बांध कर सज्दा करें और येह भी मुस्तह़ब है कि सामेईन उस से पहले सर न उठाएं और अगर इस के ख़िलाफ़ किया मसलन अपनी अपनी जगह पर सज्दा किया अगर्चे तिलावत करने वाले के आगे या उस से पहले सज्दा किया या सर उठा लिया या तिलावत करने वाले ने उस वक़्त सज्दा न किया और सामेईन ने कर लिया तो ह़रज नहीं और तिलावत करने वाले का सज्दा फ़ासिद हो जाए तो इन के सज्दों पर इस का कुछ असर नहीं कि येह ह़क़ीक़तन इक़्तिदा नहीं, लिहाज़ा औ़रत ने अगर तिलावत की तो मर्दों की इमाम यानी सज्दे में आगे हो सकती है और औ़रत मर्द के मह़ाज़ी हो जाए तो फ़ासिद न होगा ।[6] (غنیہ،عالمگیری)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣.
و "غنية المتملي"، سجدة التلاوة، ص٥٠٠.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٦٩٩. وغيره
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٦٩٩.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٦٩٩.
5 ..... المرجع السابق، و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٥.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٤.
و "غنية المتملي"، سجدة التلاوة، ص٥٠١.

www.dawateislami.net

मस्अला 24 अगर सज्दे से पहले या बाद में खड़ा न हुवा या اَللّٰہُ اَکْبَر न कहा या سُبْحٰنَ न पढ़ा तो हो जाएगा मगर तक्बीर छोड़ना न चाहिये कि सलफ़ के ख़िलाफ़ है।[1]

(عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 25 अगर तन्हा सज्दा करे तो सुन्नत येह है कि तक्बीर इतनी आवाज़ से कहे कि ख़ुद सुन ले और दूसरे लोग भी उस के साथ हों तो मुस्तह़ब येह है कि इतनी आवाज़ से कहे कि दूसरे भी सुनें।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 26 येह जो कहा गया कि सज्दए तिलावत में سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی पढ़े येह फ़र्ज़ नमाज़ में है और नफ़्ल नमाज़ में सज्दा किया तो चाहे येह पढ़े या और दुआ़एं जो अह़ादीस में वारिद हैं वोह पढ़े : मसलन

سَجَدَ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ خَلَقَهٗ وَصَوَّرَهٗ وَشَقَّ سَمْعَهٗ وَبَصَرَهٗ بِحَوْلِهٖ وَقُوَّتِهٖ فَتَبَارَکَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِیْنَ.[3] या

اَللّٰهُمَّ اکْتُبْ لِیْ عِنْدَکَ بِهَا اَجْرًا وَّ ضَعْ عَنِّیْ بِهَا وِزْرًا وَّاجْعَلْهَا لِیْ عِنْدَکَ ذُخْرًا وَّ تَقَبَّلْهَا مِنِّیْ کَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِکَ دَاوٗدَ.[4]

या येह कहे :

سُبْحٰنَ رَبِّنَا اِنْ کَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا[5]

और अगर बैरूने नमाज़ हो तो चाहे येह पढ़े या सह़ाबा व ताबेईन से जो आसार मरवी हैं वोह पढ़े, मसलन इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है, वोह कहते थे :

اَللّٰهُمَّ لَکَ سَجَدَ سَوَادِیْ رَبِّکَ اٰمَنَ فُؤَادِیْ اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ عِلْمًا یَّنْفَعُنِیْ وَعَمَلًا یَّرْفَعُنِیْ.[6] (غنیہ، ردالمحتار)

---

1 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج۱، ص۱۳۵.
و "ردالمحتار"، کتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج۲، ص۷۰۰.

2 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج۲، ص۷۰۰.

3 ...**तर्जमा :** मेरे चेहरे ने सज्दा किया उस के लिये जिस ने इसे पैदा किया और इस की सूरत बनाई और अपनी ताक़त व क़ुव्वत से कान और आंख की जगह फाड़ी, बरकत वाला है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) जो अच्छा पैदा करने वाला है। 12

4 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! इस सज्दे की वज्ह से तू मेरे लिये अपने नज़्दीक सवाब लिख और इस की वज्ह से मुझ से गुनाह को दूर कर और इसे तू मेरे लिये अपने पास ज़ख़ीरा बना और इस को तू मुझ से क़बूल कर जैसा तू ने अपने बन्दे दावूद عَلَیْہِ السَّلَام से क़बूल किया। 12

5 ...**तर्जमा :** पाक है हमारा रब, बेशक हमारे परवरदिगार का वादा हो कर रहेगा। 12

6 ..... "غنیة المتملي"، سجدة التلاوة، ص۵۰۲، و "ردالمحتار"، کتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج۲، ص۷۰۰.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मेरे जिस्म ने तुझे सज्दा किया और मेरा दिल तुझ पर ईमान लाया। ऐ **अल्लाह** ! तू मुझ को इल्मे नाफ़िअ़ और अ़मले राफ़िअ़ रोज़ी कर। 12

www.dawateislami.net

मस्अला 27 सज्दए तिलावत के लिये اَللّٰہُ اَکْبَر कहते वक़्त न हाथ उठाना है और न इस में तशह्हुद है न सलाम ।[1] (تنویرالابصار)

मस्अला 28 आयते सज्दा बैरूने नमाज़ पढ़ी तो फ़ौरन सज्दा कर लेना वाजिब नहीं । हां, बेहतर है कि फ़ौरन कर ले और वुज़ू हो तो ताख़ीर मक्रूहे तन्ज़ीही ।[2] (درمختار)

मस्अला 29 उस वक़्त अगर किसी वज्ह से सज्दा न कर सके तो तिलावत करने वाले और सामेअ़ को येह कह लेना मुस्तह़ब है سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؕ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ[3] (ردالمحتار)

मस्अला 30 सज्दए तिलावत नमाज़ में फ़ौरन करना वाजिब है, ताख़ीर करेगा गुनहगार होगा और सज्दा करना भूल गया तो जब तक हुरमते नमाज़[4] में है कर ले, अगर्चे सलाम फेर चुका हो और सज्दए सह्व करे ।[5] (درمختار،ردالمحتار) ताख़ीर से मुराद तीन आयत से ज़ियादा पढ़ लेना है कम में ताख़ीर नहीं मगर आख़िर सूरत में अगर सज्दा वाक़ेअ़ है, मसलन اِنْشَقَّتْ तो सूरत पूरी कर के सज्दा करेगा जब भी ह़रज नहीं ।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 31 नमाज़ में आयते सज्दा पढ़ी तो उस का सज्दा नमाज़ ही में वाजिब है बैरूने नमाज़ नहीं हो सकता । और क़स्दन न किया तो गुनहगार हुवा, तौबा लाज़िम है बशर्ते कि आयते सज्दा के बाद फ़ौरन रुकूअ़ व सुजूद न किया हो, नमाज़ में आयते सज्दा पढ़ी और सज्दा न किया फिर वोह नमाज़ फ़ासिद हो गई या क़स्दन फ़ासिद की तो बैरूने नमाज़ सज्दा कर ले और सज्दा कर लिया था तो ह़ाजत नहीं ।[7] (درمختار)

मस्अला 32 अगर आयत पढ़ने के बाद फ़ौरन नमाज़ का सज्दा कर लिया यानी आयते सज्दा के बाद तीन आयत से ज़ियादा न पढ़ा और रुकूअ़ कर के सज्दा किया तो अगर्चे सज्दए तिलावत की निय्यत न हो, अदा हो जाएगा ।[8] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 33 नमाज़ का सज्दए तिलावत सज्दे से भी अदा हो जाता है और रुकूअ़ से भी, मगर रुकूअ़ से जब अदा होगा कि फ़ौरन करे, फ़ौरन न किया तो सज्दा करना ज़रूरी है और जिस रुकूअ़ से सज्दए तिलावत अदा किया ख़्वाह वोह रुकूअ़ रुकूए़ नमाज़ हो या इस के

1 ..... "تنویر الأبصار"، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٠.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٣.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٣.

तर्जमा : हम ने सुना और हुक्म माना, तेरी मग़्फ़िरत का सुवाल करते हैं, ऐ परवरदिगार ! और तेरी ही त़रफ़ फिरना है । 12 4...यानी कोई ऐसा काम न किया हो जो मुनाफ़िये नमाज़ है । 12

5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٤.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٦-٧٠٧.
7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٥.
8 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٨.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣، ١٣٤.

www.dawateislami.net

इलावा। अगर रुकूए़ नमाज़ है तो इस में अदाए सज्दा की निय्यत कर ले और अगर ख़ास सज्दे ही के लिये येह रुकूअ़ किया तो इस रुकूअ़ से उठने के बाद मुस्तह़ब येह है कि दो तीन आयतें या ज़ियादा पढ़ कर रुकूए़ नमाज़ करे फ़ौरन न करे। और अगर आयते सज्दा पर सूरत ख़त्म है और सज्दे के लिये रुकूअ़ किया तो दूसरी सूरत की आयतें पढ़ कर रुकूअ़ करे।[1]

(غنیہ، عالمگیری، درمختار)

मस्अला 34 आयते सज्दा बीच सूरत में है तो अफ़्ज़ल येह है कि उसे पढ़ कर सज्दा करे फिर कुछ और आयतें पढ़ कर रुकूअ़ करे और अगर सज्दा न किया और रुकूअ़ कर लिया और इस रुकूअ़ में अदाए सज्दा की भी निय्यत कर ली तो काफ़ी है और अगर न सज्दा किया न रुकूअ़ किया बल्कि सूरत ख़त्म कर के रुकूअ़ किया तो अगर्चे निय्यत करे, नाकाफ़ी है और जब तक नमाज़ में है सज्दे की क़ज़ा कर सकता है।[2] (عالمگیری)

मस्अला 35 सज्दे पर सूरत ख़त्म है और आयते सज्दा पढ़ कर सज्दा किया तो सज्दे से उठने के बाद दूसरी सूरत की कुछ आयतें पढ़ कर रुकूअ़ करे और बग़ैर पढ़े रुकूअ़ कर दिया तो भी जाइज़ है।[3] (عالمگیری)

मस्अला 36 अगर आयते सज्दा के बाद ख़त्मे सूरत में दो तीन आयतें बाक़ी हैं तो चाहे फ़ौरन रुकूअ़ कर दे या सूरत ख़त्म करने के बाद या फ़ौरन सज्दा कर ले फिर बाक़ी आयतें पढ़ कर रुकूअ़ में जाए या सूरत ख़त्म कर के सज्दे में जाए सब त़रह़ इख़्तियार है मगर इस सूरते अख़ीरा में सज्दे से उठ कर कुछ आयतें दूसरी सूरत की पढ़ कर रुकूअ़ करे।[4] (غنیہ، عالمگیری)

मस्अला 37 रुकूअ़ में जाते वक़्त सज्दे की निय्यत नहीं की बल्कि रुकूअ़ में या उठने के बाद की तो येह निय्यत काफ़ी नहीं।[5] (عالمگیری)

मस्अला 38 तिलावत के बाद इमाम रुकूअ़ में गया और निय्यते सज्दा कर ली मगर मुक़्तदियों ने न की तो उन का सज्दा अदा न हुवा लिहाज़ा इमाम जब सलाम फेरे तो मुक़्तदी सज्दा कर के क़ादा करें और सलाम फेरें और इस क़ादे में तशह्हुद वाजिब है अगर क़ादा न किया तो नमाज़ फ़ासिद हो गई कि क़ादा जाता रहा येह हुक्म जह्री नमाज़ का है, सिर्री में चूंकि मुक़्तदी को इ़ल्म नहीं लिहाज़ा माज़ूर है और अगर इमाम ने रुकूअ़ से सज्दए तिलावत की निय्यत न की तो उसी सज्दए नमाज़ से मुक़्तदियों का भी सज्दए तिलावत अदा हो गया अगर्चे निय्यत न हो, लिहाज़ा इमाम को चाहिये कि रुकूअ़ में सज्दे की निय्यत न करे कि

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٦.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣.
3 ..... المرجع السابق. 4 ..... المرجع السابق. 5 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मुक़्तदियों ने अगर निय्यत न की तो उन का सज्दा अदा न होगा और रुकूअ़ के बाद जब इमाम सज्दा करेगा तो इस से सज्दए तिलावत बहर ह़ाल अदा हो जाएगा निय्यत करे या न करे फिर निय्यत की क्या ह़ाजत ?[1] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 39 जह्‌री नमाज़ में इमाम ने आयते सज्दा पढ़ी तो सज्दा करना औला है और सिर्री में रुकूअ़ करना कि मुक़्तदियों को धोका न लगे।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 40 इमाम ने सज्दए तिलावत किया, मुक़्तदियों को रुकूअ़ का गुमान हुवा और रुकूअ़ में गए तो रुकूअ़ तोड़ कर सज्दा करें और जिस ने रुकूअ़ और एक सज्दा किया जब भी हो गया और अगर रुकूअ़ कर के दो सज्दे कर लिये तो उस की नमाज़ गई।[3] (درمختار)

मस्अला 41 मुसल्ली सज्दए तिलावत भूल गया, रुकूअ़ या सज्दे या क़ादे में याद आया तो उसी वक़्त सज्दा कर ले फिर जिस रुक्न में था उस की त़रफ़ औ़द करे यानी रुकूअ़ में था तो सज्दा कर के रुकूअ़ में वापस हो وَ عَلٰی هٰذَا الْقِیاس और अगर उस रुक्न का इआ़दा न किया जब भी नमाज़ हो गई।[4] (عالمگیری)

मगर क़ादए अख़ीरा का इआ़दा फ़र्ज़ है कि सज्दे से क़ादा बात़िल हो जाता है।

मस्अला 42 एक मजलिस में सज्दे की एक आयत को बार बार पढ़ा या सुना तो एक ही सज्दा वाजिब होगा, अगर्चे चन्द शख़्सों से सुना हो। यूंही अगर आयत पढ़ी और वोही आयत दूसरे से भी सुनी जब भी एक ही सज्दा वाजिब होगा।[5] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 43 पढ़ने वाले ने कई मजलिसों में एक आयत बार बार पढ़ी और सुनने वाले की मजलिस न बदली तो पढ़ने वाला जितनी मजलिसों में पढ़ेगा उस पर उतने ही सज्दे वाजिब होंगे और सुनने वाले पर एक और अगर इस का अ़क्स है यानी पढ़ने वाला एक मजलिस में बार बार पढ़ता रहा और सुनने वाले की मजलिस बदलती रही तो पढ़ने वाले पर एक सज्दा वाजिब होगा और सुनने वाले पर उतने जितनी मजलिसों में सुना।[6] (عالمگیری)

मस्अला 44 मजलिस में आयत पढ़ी या सुनी और सज्दा कर लिया फिर उसी मजलिस में वोही आयत पढ़ी या सुनी तो वोही पहला सज्दा काफ़ी है।[7] (درمختار)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٣. و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٧.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٨.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧٠٩.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٤.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٢.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٤.
7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٢.

www.dawateislami.net

मस्अला 45 एक मजलिस में चन्द बार आयत पढ़ी या सुनी और आख़िर में उतनी ही बार सज्दा करना चाहे तो येह भी ख़िलाफ़े मुस्तह़ब है बल्कि एक ही बार करे, ब ख़िलाफ़ दुरूद शरीफ़ के कि नामे अक़्दस लिया या सुना तो एक बार दुरूद शरीफ़ वाजिब और हर बार मुस्तह़ब ।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 46 दो एक लुक़्मे खाने, दो एक घूंट पीने, खड़े हो जाने, दो एक क़दम चलने, सलाम का जवाब देने, दो एक बार बात करने, मकान के एक गोशे से दूसरे की त़रफ़ चले जाने से मजलिस न बदलेगी । हां, अगर मकान बड़ा है जैसे शाही महल तो ऐसे मकान में एक गोशे से दूसरे में जाने से मजलिस बदल जाएगी । कश्ती में है और कश्ती चल रही है, मजलिस न बदलेगी । रेल का भी येही हुक्म होना चाहिये, जानवर पर सुवार है और वोह चल रहा है तो मजलिस बदल रही है हां अगर सुवारी पर नमाज़ पढ़ रहा है तो न बदलेगी, तीन लुक़्मे खाने, तीन घूंट पीने, तीन कलिमे बोलने, तीन क़दम मैदान में चलने, निकाह़ या ख़रीदो फ़रोख़्त करने, लैट कर सो जाने से मजलिस बदल जाएगी ।[2] (عالمگیری،غنیہ،درمختاروغیرہا)

मस्अला 47 सुवारी पर नमाज़ पढ़ता है और कोई शख़्स साथ चल रहा है या वोह भी सुवार है मगर नमाज़ में नहीं, ऐसी ह़ालत में अगर आयत बार बार पढ़ी तो इस पर एक सज्दा वाजिब है और साथ चलने वाले पर उतने जितनी बार सुना ।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 48 ताना तनना, नह्र या ह़ौज़ में तैरना, दरख़्त की एक शाख़ से दूसरी पर जाना, हल जोतना, दाएं चलाना, चक्की के बैल के पीछे फिरना, औ़रत का बच्चे को दूध पिलाना, इन सब सूरतों में मजलिस बदल जाती है जितनी बार पढ़ेगा या सुनेगा उतने सज्दे वाजिब होंगे ।[4] (غنیہ وردالمحتاروغیرہا) येही हुक्म कोलू के बैल के पीछे चलने का होना चाहिये ।

मस्अला 49 एक जगह बैठे बैठे ताना तन रहा है तो मजलिस बदल रही है अगर्चे फ़त्हुल क़दीर में इस के ख़िलाफ़ लिखा, इस लिये कि येह अ़मले कसीर है ।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 50 किसी मजलिस में देर तक बैठना, क़िराअत, तस्बीह़, तहलील, दर्स वाज़ में मश्ग़ूल होना मजलिस को नहीं बदलेगा और अगर दोनों बार पढ़ने के दरमियान कोई दुन्या

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٢، ٧١٧.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٤.
و "غنية المتملي"، سجدة التلاوة، ص٥٠٣. و "الدرالمختار" كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٢ ـ ٧١٦.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٦.
4 ..... المرجع السابق، ص٧١٤. 5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٦.

www.dawateislami.net

का काम किया मसलन कपड़ा सीना वग़ैरा तो मजलिस बदल गई।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 51 आयते सज्दा बैरूने नमाज़ तिलावत की और सज्दा कर के फिर नमाज़ शुरूअ़ की और नमाज़ में फिर वोही आयत पढ़ी तो इस के लिये दोबारा सज्दा करे और अगर पहले न किया था तो येही उस के भी क़ाइम मक़ाम हो गया बशर्ते कि आयत पढ़ने और नमाज़ के दरमियान कोई अजनबी फ़ेल फ़ासिल न हो और अगर न पहले सज्दा किया न नमाज़ में तो दोनों साक़ित हो गए और गुनहगार हुवा तौबा करे।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 52 एक रक्अ़त में बार बार वोही आयत पढ़ी तो एक ही सज्दा काफ़ी है, ख़्वाह चन्द बार पढ़ कर सज्दा किया या एक बार पढ़ कर सज्दा किया फिर दोबारा सेहबारा आयत पढ़ी। यूंही अगर एक नमाज़ की सब रक्अ़तों में या दो तीन में वोही आयत पढ़ी तो सब के लिये एक सज्दा काफ़ी है।[3] (عالمگیری)

मस्अला 53 नमाज़ में आयते सज्दा पढ़ी और सज्दा कर लिया फिर सलाम के बाद उसी मजलिस में वोही आयत पढ़ी तो अगर कलाम न किया था तो वोही नमाज़ वाला सज्दा इस के क़ाइम मक़ाम भी है और कलाम कर लिया था तो दोबारा सज्दा करे और अगर नमाज़ में सज्दा न किया था फिर सलाम फेरने के बाद वोही आयत पढ़ी तो एक सज्दा करे, नमाज़ वाला साक़ित हो गया।[4] (خانیہ،غنیہ،عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 54 नमाज़ में आयते सज्दा पढ़ी और सज्दा किया फिर बे वुज़ू हुवा और वुज़ू कर के बिना की फिर वोही आयत पढ़ी तो दूसरा सज्दा वाजिब न हुवा और अगर बिना के बाद दूसरे से वोही आयत सुनी तो दूसरा वाजिब है और येह दूसरा सज्दा नमाज़ के बाद करे।[5] (عالمگیری)

मस्अला 55 एक मजलिस में सज्दे की चन्द आयतें पढ़ीं तो उतने ही सज्दे करे, एक काफ़ी नहीं।[6] (عامۂ کتب)

मस्अला 56 पूरी सूरत पढ़ना और आयते सज्दा छोड़ देना मक्रूहे तह़रीमी है और सिर्फ़ आयते सज्दा के पढ़ने में कराहत नहीं, मगर बेहतर येह है कि दो एक आयत पहले या बाद की मिला ले।[7] (درمختاروغیرہ)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٦.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١١.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٥.
4 ..... المرجع السابق، و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٢.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٥.
6 ..... "شرح الوقاية"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج١، ص٢٣٢.
7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٧، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 57 सामेईन ने सज्दे का तहिय्या किया हो और सज्दा उन पर बार न हो तो आयत बुलन्द आवाज़ से पढ़ना औला है वरना आहिस्ता और सामेईन का ह़ाल मालूम न हो कि आमादा हैं या नहीं जब भी आहिस्ता पढ़ना बेहतर होना चाहिये।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 58 आयते सज्दा पढ़ी गई मगर काम में मश्ग़ूली के सबब न सुनी तो असह़्ह़ येह है कि सज्दा वाजिब नहीं, मगर बहुत से उ़लमा कहते हैं कि अगर्चे न सुनी सज्दा वाजिब हो गया।[2] (درمختار،ردالمحتار)

फ़ाइदए अहम : जिस मक़्सद के लिये एक मजलिस में सज्दे की सब आयतें पढ़ कर सज्दे करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का मक़्सद पूरा फ़रमा देगा। ख़्वाह एक एक आयत पढ़ कर उस का सज्दा करता जाए या सब को पढ़ कर आख़िर में चौदह सज्दे कर ले।[3] (غنیہ،درمختار وغیرہما)

मस्अला 59 ज़मीन पर आयते सज्दा पढ़ी तो येह सज्दा सुवारी पर नहीं कर सकता मगर ख़ौफ़ की ह़ालत हो तो हो सकता है और सुवारी पर आयत पढ़ी तो सफ़र की ह़ालत में सुवारी पर सज्दा कर सकता है।[4] (عالمگیری)

मस्अला 60 मरज़ की ह़ालत में इशारे से भी सज्दा अदा हो जाएगा। यूंही सफ़र में सुवारी पर इशारे से हो जाएगा।[5] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 61 जुमुआ़ व ईदैन और सिर्री नमाज़ों में और जिस नमाज़ में जमाअ़ते अ़ज़ीम हो, आयते सज्दा इमाम को पढ़ना मक्रूह है। हां, अगर आयत के बाद फ़ौरन रुकूअ़ व सुजूद कर दे और रुकूअ़ में निय्यत न करे तो कराहत नहीं।[6] (غنیہ،درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 62 मिम्बर पर आयते सज्दा पढ़ी तो ख़ुद उस पर और सुनने वालों पर सज्दा वाजिब है और जिन्हों ने न सुनी उन पर नहीं।[7] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 63 सज्दए शुक्र मसलन औलाद पैदा हुई या माल पाया या गुमी हुई चीज़ मिल गई या मरीज़ ने शिफ़ा पाई या मुसाफ़िर वापस आया ग़रज़ किसी नेमत पर सज्दा करना मुस्तह़ब

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٨.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٨.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، ج٢، ص٧١٩.و "غنية المتملي"، سجدة التلاوة، ص٥٠٧. وغيرهما
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٥.
5 ..... المرجع السابق. 6 ..... "غنية المتملي"، سجدة التلاوة، ص٥٠٧.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، مطلب في سجدة الشكر، ج٢، ص٧٢٠.
7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، مطلب في سجدة الشكر، ج٢، ص٧٢٠.

www.dawateislami.net

है और इस का त़रीक़ा वोही है जो सज्दए तिलावत का है।[1] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 64 सज्दए बे सबब जैसा अक्सर अ़वाम करते हैं न सवाब है, न मक्रूह।[2] (عالمگیری)

नमाज़े मुसाफ़िर का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ وَ اِذَا ضَرَبْتُمْ فِی الْاَرْضِ فَلَیْسَ عَلَیْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ یَّفْتِنَكُمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ ﴾[3]

जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर इस का गुनाह नहीं कि नमाज़ में क़स्र करो अगर ख़ौफ़ हो कि काफ़िर तुम्हें फ़ितने में डालेंगे।

ह़दीस 1 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में है, याला बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहते हैं : अमीरुल मुअमिनीन फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मैं ने अ़र्ज़ की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तो येह फ़रमाया :

﴿ اَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ اِنْ خِفْتُمْ اَنْ یَّفْتِنَكُمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ ﴾[4]

और अब तो लोग अम्न में हैं (यानी अम्न की ह़ालत में क़स्र न होना चाहिये)। फ़रमाया : इस का मुझे भी तअ़ज्जुब हुवा था, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से सुवाल किया, इरशाद फ़रमाया : येह एक सदक़ा है कि **अल्लाह** तआ़ला ने तुम पर तसद्दुक़ फ़रमाया उस का सदक़ा क़बूल करो।[5]

ह़दीस 2 सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में मरवी कि ह़ारिसा बिन वह्ब ख़ुज़ाई رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने मिना में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ाई ह़ालां कि न हमारी इतनी ज़ियादा तादाद कभी थी न इस क़दर अम्न।"[6]

ह़दीस 3 सह़ीहैन में अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने मदीने में ज़ोह्र की चार रक्अ़तें पढ़ीं और ज़ुल ह़ुलैफ़ा[7] में अ़स्र की दो रक्अ़तें।"[8]

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٦.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب سجود التلاوة، مطلب في سجدة الشكر، ج٢، ص٧٢٠.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثالث عشر في سجود التلاوة، ج١، ص١٣٦.
3 ..... پ٥، النسآء: ١٠١. 4 ..... پ٥، النسآء: ١٠١.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين و قصرها، باب صلاة المسافرين و قصرها، الحديث: ٦٨٦، ص٣٤٧.
6 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الحج، باب الصلاة بمِنى، الحديث: ١٦٥٦، ج١، ص٥٥٤.
7 ...मदीनए मुनव्वरह से तीन मील के फ़ासिले पर एक मक़ाम का नाम है, येही असह़ह़ है। (مرقاۃ) 12 मिन्ह
8 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الحج، باب من بات بذى الحليفة حتى أصبح، الحديث: ١٥٤٧، ج١، ص٥٢٠.

www.dawateislami.net

हदीस 4 तिरमिज़ी शरीफ़ में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, कहते हैं : मैं ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ ह़ज़र व सफ़र दोनों में नमाज़ें पढ़ीं, ह़ज़र में हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के साथ ज़ोह्र की चार रक्अ़तें पढ़ीं और इस के बाद दो रक्अ़त और सफ़र में ज़ोह्र की दो और इस के बाद दो रक्अ़त और अ़स्र की दो। और इस के बाद कुछ नहीं और मग़रिब की ह़ज़र व सफ़र में बराबर तीन रक्अ़तें, सफ़र व ह़ज़र किसी की नमाज़े मग़रिब में क़स्र न फ़रमाते और इस के बाद दो रक्अ़त।[1]

हदीस 5 सह़ीह़ैन में उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से मरवी, फ़रमाती हैं : "नमाज़ दो रक्अ़त फ़र्ज़ की गई फिर जब हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने हिजरत फ़रमाई तो चार फ़र्ज़ कर दी गई और सफ़र की नमाज़ उसी पहले फ़र्ज़ पर छोड़ी गई।"[2]

हदीस 6 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, कहते हैं कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ज़बानी ह़ज़र में चार रक्अ़तें फ़र्ज़ कीं और सफ़र में दो और ख़ौफ़ में एक[3] यानी इमाम के साथ।"[4]

हदीस 7 इब्ने माजह ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने नमाज़े सफ़र की दो रक्अ़तें मुक़र्रर फ़रमाईं और येह पूरी है कम नहीं यानी अगर्चे ब ज़ाहिर दो रक्अ़तें कम हो गईं मगर सवाब में येह दो ही चार के बराबर हैं।[5]

मसाइले फ़िक़्हिय्या

शर्अ़न मुसाफ़िर वोह शख़्स है जो तीन दिन की राह तक जाने के इरादे से बस्ती से बाहर हुवा।[6] (متون)

मस्अला 1 दिन से मुराद साल का सब में छोटा दिन और तीन दिन की राह से येह मुराद नहीं कि सुब्ह़ से शाम तक चले कि खाने पीने, नमाज़ और दीगर ज़रूरिय्यात के लिये ठहरना तो ज़रूर ही है, बल्कि मुराद दिन का अक्सर हिस्सा है मसलन शुरूए़ सुब्हे़ सादिक़ से दोपहर ढलने तक चला फिर ठहर गया फिर दूसरे और तीसरे दिन यूंही किया तो इतनी दूर तक की राह को मसाफ़ते सफ़र कहेंगे। दोपहर के बाद तक चलने में भी बराबर चलना मुराद नहीं

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب السفر، باب ماجاء في التطوع في السفر، الحديث: ٥٥٢، ج٢، ص٧٦.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب مناقب الأنصار، باب التاريخ... إلخ، الحديث: ٣٩٣٥، ج٢، ص٦٠٤.
3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة المسافرين و قصرها، باب صلاة المسافرين و قصرها، الحديث: ٦٨٧، ص٣٤٧.
4 ...यानी इमाम के साथ सिर्फ़ एक रक्अ़त पढ़ेगा और एक रक्अ़त अकेले।
5 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلوات و السنة فيها، باب ماجاء في الوتر في السفر، الحديث: ١١٩٤، ج٢، ص٥٤.
6 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج٨، ص٢٤٣.

www.dawateislami.net

बल्कि आ़दतन जितना आराम लेना चाहे इस क़दर इस दरमियान में ठहरता भी जाए और चलने से मुराद मोतदिल चाल है कि न तेज़ हो न सुस्त, ख़ुश्की में आदमी और ऊंट की दरमियानी चाल का एतिबार है और पहाड़ी रास्ते में इसी हिसाब से जो उस के लिये मुनासिब हो और दरिया में कश्ती की चाल उस वक़्त की, कि हवा न बिल्कुल रुकी हो न तेज़।[1]

(درمختار، عالمگیری وغیرہما)

मस्अला 2 साल का छोटा दिन उस जगह का मोतबर है जहां दिन रात मोतदिल हों यानी छोटे दिन के अक्सर हिस्से में मन्ज़िल तै कर सकते हों लिहाज़ा जिन शह्रों में बहुत छोटा दिन होता है जैसे बुलग़ार कि वहां बहुत छोटा दिन होता है, लिहाज़ा वहां के दिन का एतिबार नहीं।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 3 कोस का एतिबार नहीं कि कोस कहीं छोटे होते हैं कहीं बड़े बल्कि एतिबार तीन मन्ज़िलों का है और ख़ुश्की में मील के हिसाब से इस की मिक़्दार $\frac{3}{8}$ 57 मील है।[3]

(फ़तावा रज़विय्या)

मस्अला 4 किसी जगह जाने के दो रास्ते हैं एक से मसाफ़ते सफ़र है दूसरे से नहीं तो जिस रास्ते से येह जाएगा उस का एतिबार है, नज़्दीक वाले रास्ते से गया तो मुसाफ़िर नहीं और दूर वाले से गया तो है, अगर्चे उस रास्ते के इख़्तियार करने में इस की कोई ग़रज़े

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٨.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٤.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٥.

3 ...बहारे शरीअ़त के मत्बूआ़ नुस्ख़ों में फ़तावा रज़विय्या के ह़वाले से 57$\frac{3}{8}$ मील मरक़ूम है, येह किताबत की ग़लती मालूम होती है इस लिये कि "फ़तावा रज़विय्या" (जदीद), जि. 8, स. 270, और "फ़तावा रज़विय्या" (क़दीम), जि. 3, स. 669, में मुजद्दिदे आज़म आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने साढ़े सत्तावन (57 $\frac{1}{2}$) मील लिखा है।

फ़क़ीहे आज़मे हिन्द अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِي "नुज़्हतुल क़ारी", जिल्द 2, सफ़ह़ा 655 पर फ़रमाते हैं : "मुजद्दिदे आज़म आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने ज़ाहिर मज़ह़ब को इख़्तियार फ़रमा कर तीन मन्ज़िल की येह मसाफ़त (साढ़े सत्तावन मील) बयान फ़रमाई है।"

"जद्दुल मुम्तार" में लिखते हैं :

والمعتاد المعهود فی بلادنا أن کل مرحلة ١٢ کوس، وقد جربت مرارا کثیرة بمواضع شهیرة أن المیل الرائج فی بلادنا خمسة أثمان کوس المعتبر ههنا، فاذا ضربت الاکواس فی ٨، وقسم الحاصل علی ٥ کانت أمیال رحلة واحدة ١٩_٥/١، وأمیال مسیرة ثلاثة أیام ٥٧_٥/٣ أعنی ٥٧_٦. ("جدالممتار"، کتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج١، ص٣٥٩.)

हमारे बिलाद में मोताद व माहूद येह है कि हर मन्ज़िल बारह कोस की होती है मैं ने बार बार ब कसरत मश्हूर जगहों में आज़्माया है कि इस वक़्त हमारे बिलाद में जो मील राइज है वोह $\frac{5}{8}$ कोस जब कोसों को 8 में ज़र्ब दें और ह़ासिले ज़र्ब को 5 पर तक़्सीम करें तो ह़ासिले क़िस्मत मील होगा, अब एक मन्ज़िल 19 $\frac{1}{5}$ मील की हुई और तीन दिन की मसाफ़त 57 $\frac{3}{5}$ मील यानी 57.6 मील।" ("نزهة القاری شرح صحیح البخاری"، ابواب تقصیر الصلوة، ج٢، ص٦٦٥.)

www.dawateislami.net

सह़ीह़ न हो ।[1] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 5 किसी जगह जाने के दो रास्ते हैं, एक दरिया का दूसरा ख़ुश्की का उन में एक दो दिन का है दूसरा तीन दिन का, तीन दिन वाले से जाए तो मुसाफ़िर है, वरना नहीं ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 6 तीन दिन की राह को तेज़ सुवारी पर दो दिन या कम में त़ै करे तो मुसाफ़िर ही है और तीन दिन से कम के रास्ते को ज़ियादा दिनों में त़ै किया तो मुसाफ़िर नहीं ।[3] (درمختار، عالمگیری)

मस्अला 7 तीन दिन की राह को किसी वली ने अपनी करामत से बहुत थोड़े ज़माने में त़ै किया तो ज़ाहिर येही है कि मुसाफ़िर के अह़काम उस के लिये साबित हों मगर इमाम इब्ने हुमाम ने उस का मुसाफ़िर होना मुस्तब्अ़द फ़रमाया ।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 8 मह़ज़ निय्यते सफ़र से मुसाफ़िर न होगा बल्कि मुसाफ़िर का ह़ुक्म उस वक़्त से है कि बस्ती की आबादी से बाहर हो जाए। शह्र में है तो शह्र से, गाउं में है तो गाउं से और शह्र वाले के लिये येह भी ज़रूर है कि शह्र के आस पास जो आबादी शह्र से मुत्तसिल है उस से भी बाहर हो जाए ।[5] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 9 फ़िनाए शह्र से जो गाउं मुत्तसिल है शह्र वाले के लिये उस गाउं से बाहर हो जाना ज़रूर नहीं । यूंही शह्र के मुत्तसिल बाग़ हों अगर्चे उन के निगह्बान और काम करने वाले उन में रहते हों उन बाग़ों से निकल जाना ज़रूरी नहीं ।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 10 फ़िनाए शह्र यानी शह्र से बाहर जो जगह शह्र के कामों के लिये हो मसलन क़ब्रिस्तान, घोड़दौड़ का मैदान, कूड़ा फेंकने की जगह अगर येह शह्र से मुत्तसिल हो तो इस से बाहर हो जाना ज़रूरी है । और अगर शह्र व फ़िना के दरमियान फ़ासिला हो तो नहीं ।[7] (ردالمحتار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٨. و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٦.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٨.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٩. و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٦.

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٦.

5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٢.

6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٢. 7 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 11 आबादी से बाहर होने से मुराद येह है कि जिधर जा रहा है उस त़रफ़ आबादी ख़त्म हो जाए अगर्चे उस की महाज़ात में दूसरी त़रफ़ ख़त्म न हुई हो।[1] (غنیہ)

मस्अला 12 कोई महल्ला पहले शहर से मिला हुवा था मगर अब जुदा हो गया तो उस से बाहर होना भी ज़रूरी है और जो महल्ला वीरान हो गया ख़्वाह शहर से पहले मुत्तसिल था या अब भी मुत्तसिल है उस से बाहर होना शर्त़ नहीं।[2] (غنیہ، ردالمحتار)

मस्अला 13 स्टेशन जहां आबादी से बाहर हों तो स्टेशन पर पहुंचने से मुसाफ़िर हो जाएगा जब कि मसाफ़ते सफ़र तक जाने का इरादा हो।

मस्अला 14 सफ़र के लिये येह भी ज़रूरी है कि जहां से चला वहां से तीन दिन की राह का इरादा हो और अगर दो दिन की राह के इरादे से निकला वहां पहुंच कर दूसरी जगह का इरादा हुवा कि वोह भी तीन दिन से कम का रास्ता है, यूंही सारी दुन्या घूम आए मुसाफ़िर नहीं।[3] (غنیہ، درمختار)

मस्अला 15 येह भी शर्त़ है कि तीन दिन का इरादा मुत्तसिल सफ़र का हो, अगर यूं इरादा किया कि मसलन दो दिन की राह पर पहुंच कर कुछ काम करना है वोह कर के फिर एक दिन की राह जाऊंगा तो येह तीन दिन की राह का मुत्तसिल इरादा न हुवा, मुसाफ़िर न हुवा।[4]

(फ़तावा रज़विय्या)

मस्अला 16 मुसाफ़िर पर वाजिब है कि नमाज़ में क़स्र करे यानी चार रक्अ़त वाले फ़र्ज़ को दो पढ़े, उस के ह़क़ में दो ही रक्अ़तें पूरी नमाज़ है और क़स्दन चार पढ़ीं और दो पर क़ादा किया तो फ़र्ज़ अदा हो गए और पिछली दो रक्अ़तें नफ़्ल हुईं मगर गुनहगार व मुस्तह़िक़्क़े नार हुवा कि वाजिब तर्क किया लिहाज़ा तौबा करे और दो रक्अ़त पर क़ादा न किया तो फ़र्ज़ अदा न हुए और वोह नमाज़ नफ़्ल हो गई। हां, अगर तीसरी रक्अ़त का सज्दा करने से पेश्तर इक़ामत की निय्यत कर ली तो फ़र्ज़ बात़िल न होंगे मगर क़ियाम व रुकूअ़ का इआ़दा करना होगा और अगर तीसरी के सज्दे में निय्यत की तो अब फ़र्ज़ जाते रहे, यूंही अगर पहली दोनों या एक में क़िराअत न की नमाज़ फ़ासिद हो गई।[5] (ہدایہ، عالمگیری، درمختار وغیرہا)

1 ..... "غنية المتملي"، فصل في صلاة المسافر، ص٥٣٦.
2 ..... المرجع السابق، و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٣.
3 ..... "غنية المتملي"، فصل في صلاة المسافر، ص٥٣٧.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٣، ٧٢٤.
4 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج٨، ص٢٧٠.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٩.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٣.
و "الهداية"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج١، ص٨٠.

www.dawateislami.net

मस्अला 17 येह रुख़्सत कि मुसाफ़िर के लिये है, मुत़्लक़ है उस का सफ़र जाइज़ काम के लिये हो या नाजाइज़ के लिये बहर ह़ाल मुसाफ़िर के अह़्काम उस के लिये साबित होंगे ।[1] (عامۂ کتب)

मस्अला 18 काफ़िर तीन दिन की राह के इरादे से निकला, दो दिन के बाद मुसलमान हो गया तो उस के लिये क़स्र है और ना बालिग़ तीन दिन की राह के क़स्द से निकला और रास्ते में बालिग़ हो गया, अब से जहां जाना है तीन दिन की राह न हो तो पूरी पढ़े, ह़ैज़ वाली पाक हुई और अब से तीन दिन की राह न हो तो पूरी पढ़े ।[2] (درمختار)

मस्अला 19 बादशाह ने रिआ़या की तफ़्तीशे ह़ाल के लिये मुल्क में सफ़र किया तो क़स्र न करे जब कि पहला इरादा मुत्तसिल तीन मन्ज़िल का न हुवा और अगर किसी और ग़रज़ के लिये हो और मसाफ़ते सफ़र हो तो क़स्र करे ।[3] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 20 सुन्नतों में क़स्र नहीं बल्कि पूरी पढ़ी जाएंगी अलबत्ता ख़ौफ़ और रवा रवी[4] की ह़ालत में मुआ़फ़ हैं और अम्न की ह़ालत में पढ़ी जाएं ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 21 मुसाफ़िर उस वक़्त तक मुसाफ़िर है जब तक अपनी बस्ती में पहुंच न जाए या आबादी में पूरे पन्दरह दिन ठहरने की निय्यत न कर ले, येह उस वक़्त है जब तीन दिन की राह चल चुका हो और अगर तीन मन्ज़िल पहुंचने से पेश्तर वापसी का इरादा कर लिया तो मुसाफ़िर न रहा अगर्चे जंगल में हो ।[6] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 22 निय्यते इक़ामत सह़ीह़ होने के लिये छे शर्तें हैं :

(1) चलना तर्क करे अगर चलने की ह़ालत में इक़ामत की निय्यत की तो मुक़ीम नहीं ।

(2) वोह जगह इक़ामत की सलाह़िय्यत रखती हो, जंगल या दरिया, ग़ैर आबाद टापू में इक़ामत की निय्यत की, मुक़ीम न हुवा ।

(3) पन्दरह दिन ठहरने की निय्यत हो इस से कम ठहरने की निय्यत से मुक़ीम न होगा ।

(4) येह निय्यत एक ही जगह ठहरने की हो अगर दो मौज़ओं में पन्दरह दिन ठहरने का इरादा हो, मसलन एक में दस दिन दूसरे में पांच दिन का तो मुक़ीम न होगा ।

(5) अपना इरादा मुस्तक़िल रखता यानी किसी का ताबेअ़ न हो ।

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٩.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٤٦.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي... إلخ، ج٢، ص٧٤٥.
4 ...यानी जल्दी ।
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٩.
6 ..... المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٨.

www.dawateislami.net

(6) उस की ह़ालत उस के इरादे के मुनाफ़ी न हो।[1] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 23 मुसाफ़िर जा रहा है और अभी शह्र या गाउं में पहुंचा नहीं और निय्यते इक़ामत कर ली तो मुक़ीम न हुवा और पहुंचने के बाद निय्यत की तो हो गया अगर्चे अभी मकान वग़ैरा की तलाश में फिर रहा हो।[2] (عالمگیری)

मस्अला 24 मुसलमानों का लश्कर किसी जंगल में पड़ाव डाल दे और डेरा ख़ैमा नस्ब कर के पन्दरह दिन ठहरने की निय्यत कर ले तो मुक़ीम न हुवा और जो लोग जंगल में ख़ैमों में रहते हैं वोह अगर जंगल में ख़ैमा डाल कर पन्दरह दिन की निय्यत से ठहरें मुक़ीम हो जाएंगे, बशर्ते कि वहां पानी और घास वग़ैरा दस्तयाब हों कि उन के लिये जंगल वैसा ही है जैसे हमारे लिये शह्र और गाउं।[3] (درمختار)

मस्अला 25 दो जगह पन्दरह दिन ठहरने की निय्यत की और दोनों मुस्तक़िल हों जैसे मक्का व मिना तो मुक़ीम न हुवा और एक दूसरे के ताबेअ़ हो जैसे शह्र और उस की फ़िना तो मुक़ीम हो गया।[4] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 26 येह निय्यत की, कि इन दो बस्तियों में पन्दरह रोज़ ठहरेगा एक जगह दिन में रहेगा और दूसरी जगह रात में तो अगर पहले वहां गया जहां दिन में ठहरने का इरादा है तो मुक़ीम न हुवा और अगर पहले वहां गया जहां रात में रहने का क़स्द है तो मुक़ीम हो गया, फिर यहां से दूसरी बस्ती में गया जब भी मुक़ीम है।[5] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 27 मुसाफ़िर अगर अपने इरादे में मुस्तक़िल न हो तो पन्दरह दिन की निय्यत से मुक़ीम न होगा, मसलन औ़रत जिस का महरे मुअ़ज्जल शौहर के ज़िम्मे बाक़ी न हो कि शौहर की ताबेअ़ है इस की अपनी निय्यत बेकार है और ग़ुलाम ग़ैरे मुकातब कि अपने मालिक का ताबेअ़ है और लश्करी जिस को बैतुल माल या बादशाह की त़रफ़ से ख़ूराक मिलती है कि येह अपने सरदार का ताबेअ़ है और नौकर कि येह अपने आक़ा का ताबेअ़ है और क़ैदी कि येह क़ैद करने वाले का ताबेअ़ है और जिस मालदार पर तावान लाज़िम आया और शागिर्द जिस को उस्ताज़ के यहां से खाना मिलता है कि येह अपने उस्ताज़ का ताबेअ़ है और नेक बेटा अपने बाप का ताबेअ़ है इन सब की अपनी निय्यत बेकार है बल्कि जिन के ताबेअ़ हैं उन की

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٩.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٣.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٨.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٩.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٢.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤٠.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٩.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤٠.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٠.

www.dawateislami.net

निय्यतों का एतिबार है उन की निय्यत इक़ामत की है तो ताबेअ़ भी मुक़ीम हैं उन की निय्यत इक़ामत की नहीं तो येह भी मुसाफ़िर हैं।[1] (درمختار، ردالمحتار، عالمگیری)

मस्अला 28 औरत का महरे मुअ़ज्जल बाक़ी है तो उसे इख़्तियार है कि अपने नफ़्स को रोक ले, लिहाज़ा उस वक़्त ताबेअ़ नहीं। यूंही मुकातब ग़ुलाम को बग़ैर मालिक की इजाज़त के सफ़र का इख़्तियार है लिहाज़ा ताबेअ़ नहीं और जो सिपाही बादशाह या बैतुल माल से ख़ूराक नहीं लेता वोह ताबेअ़ नहीं और अजीर जो माहाना या बरसी पर नौकर नहीं बल्कि रोज़ाना इस का मुक़र्रर है वोह दिन भर काम करने के बाद इजारा फ़स्ख़ कर सकता है लिहाज़ा ताबेअ़ नहीं और जिस मुसलमान को दुश्मन ने क़ैद किया अगर मालूम है कि तीन दिन की राह को ले जाएगा तो क़स्र करे और मालूम न हो तो उस से दरयाफ़्त करे, जो बताए उस के मुवाफ़िक़ अ़मल करे और न बताया तो अगर मालूम है कि वोह दुश्मन मुक़ीम है तो पूरी पढ़े और मुसाफ़िर है तो क़स्र करे और येह भी मालूम न हो सके तो जब तक तीन दिन की राह तै़ न कर ले, पूरी पढ़े और जिस पर तावान लाज़िम आया वोह सफ़र में था और पकड़ा गया अगर नादार है तो क़स्र करे और मालदार है और पन्दरह दिन के अन्दर देने का इरादा है या कुछ इरादा नहीं जब भी क़स्र करे और येह इरादा है कि नहीं देगा तो पूरी पढ़े।[2] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 29 ताबेअ़ को चाहिये कि मत्बूअ़[3] से सुवाल करे वोह जो कहे उस के ब मूजिब अ़मल करे और अगर उस ने कुछ न बताया तो देखे कि मुक़ीम है या मुसाफ़िर अगर मुक़ीम है तो अपने को मुक़ीम समझे और मुसाफ़िर है तो मुसाफ़िर और येह भी न मालूम तो तीन दिन की राह तै़ करने के बाद क़स्र करे, इस से पहले पूरी पढ़े। और अगर सुवाल न करे तो वोही हुक्म है कि सुवाल किया और कुछ जवाब न मिला।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 30 अन्धे के साथ कोई पकड़ कर ले जाने वाला है अगर येह उस का नौकर है तो नाबीना की अपनी निय्यत का एतिबार है और अगर महज़ एह़सान के तौ़र पर उस के साथ है तो उस की निय्यत का एतिबार है।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 31 जो सिपाही सरदार का ताबेअ़ था और लश्कर को शिकस्त हुई और सब मुतफ़र्रिक़ हो गए तो अब ताबेअ़ नहीं बल्कि इक़ामत व सफ़र में ख़ुद इस की अपनी निय्यत

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤١.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي... إلخ، ج٢، ص٧٤١-٧٤٤.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي... إلخ، ج٢، ص٧٤٢، وغيره.

3 ...यानी जिस के ताबेअ़ है।

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي... إلخ، ج٢، ص٧٤٣. 5 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

का लिहाज़ है।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 32 गुलाम अपने मालिक के साथ सफ़र में था। मालिक ने किसी मुक़ीम के हाथ उसे बेच डाला, अगर नमाज़ में उसे इस का इ़ल्म था और दो पढ़ीं तो फिर पढ़े। यूंही अगर गुलाम नमाज़ में था और मालिक ने इक़ामत की निय्यत कर ली, अगर जान कर दो पढ़ीं तो फिर पढ़े।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 33 गुलाम दो शख़्सों में मुश्तरक है और वोह दोनों सफ़र में हैं एक ने इक़ामत की निय्यत की दूसरे ने नहीं तो अगर उस गुलाम से ख़िदमत लेने में बारी मुक़र्रर है तो मुक़ीम की बारी के दिन चार पढ़े और मुसाफ़िर की बारी के दिन दो। और बारी मुक़र्रर न हो तो हर रोज़ चार पढ़े और दो रक्अ़त पर क़ादा फ़र्ज़ है।[3] (عالمگیری)

मस्अला 34 जिस ने इक़ामत की निय्यत की मगर उस की ह़ालत बताती है कि पन्दरह दिन न ठहरेगा तो निय्यत सह़ीह़ नहीं, मसलन ह़ज करने गया और शुरूए़ ज़िल ह़िज्जा में पन्दरह दिन मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ठहरने का इरादा किया तो येह निय्यत बेकार है कि जब ह़ज का इरादा है तो अ़रफ़ात व मिना को ज़रूर जाएगा फिर इतने दिनों मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में क्यूंकर ठहर सकता है और मिना से वापस हो कर निय्यत करे तो सह़ीह़ है।[4] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 35 जो शख़्स कहीं गया और वहां पन्दरह दिन ठहरने का इरादा नहीं मगर क़ाफ़िले के साथ जाने का इरादा है और येह मालूम है कि क़ाफ़िला पन्दरह दिन के बाद जाएगा तो वोह मुक़ीम है अगर्चे इक़ामत की निय्यत नहीं।[5] (درمختار)

मस्अला 36 मुसाफ़िर किसी काम के लिये या साथियों के इन्तिज़ार में दो चार रोज़ या तेरह चौदह दिन की निय्यत से ठहरा या येह इरादा है कि काम हो जाएगा तो चला जाएगा और दोनों सूरतों में अगर आज कल आज कल करते बरसों गुज़र जाएं जब भी मुसाफ़िर ही है, नमाज़ क़स्र पढ़े।[6] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 37 मुसलमानों का लश्कर दारुल ह़र्ब को गया या दारुल ह़र्ब में किसी क़ल्ए़ का मुह़ासरा किया तो मुसाफ़िर ही है अगर्चे पन्दरह दिन की निय्यत कर ली हो अगर्चे ज़ाहिर ग़लबा हो। यूंही अगर दारुल इस्लाम में बाग़ियों का मुह़ासरा किया हो तो मुक़ीम नहीं और जो शख़्स दारुल ह़र्ब में अमान ले कर गया और पन्दरह दिन की इक़ामत की निय्यत

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي... إلخ، ج٢، ص٧٤٤.
2 ..... المرجع السابق. 3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤١.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤٠.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٩.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٩.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٣٩، وغيره.

www.dawateislami.net

की तो चार पढ़े ।[1] (غنیہ، درمختار)

मस्अला 38 दारुल ह़र्ब का रहने वाला वहीं मुसलमान हो गया और कुफ़्फ़ार उस के मार डालने की फ़िक्र में हुए, वोह वहां से तीन दिन की राह का इरादा कर के भागा तो नमाज़ क़स्र करे और अगर कहीं दो एक माह के इरादे से छुप गया जब भी क़स्र पढ़े और अगर उसी शह्र में छुपा तो पूरी पढ़े और अगर मुसलमान दारुल ह़र्ब में क़ैद था वहां से भाग कर किसी ग़ार में छुपा तो क़स्र पढ़े अगर्चे पन्दरह दिन का इरादा हो और अगर दारुल ह़र्ब के किसी शह्र के तमाम रहने वाले मुसलमान हो जाएं और ह़र्बियों ने उन से लड़ना चाहा तो वोह सब मुक़ीम ही हैं । यूंही अगर कुफ़्फ़ार उन के शह्र पर ग़ालिब आए और येह लोग शह्र छोड़ कर एक दिन की राह के इरादे से चले गए जब भी मुक़ीम हैं और तीन दिन की राह का इरादा हो तो मुसाफ़िर, फिर अगर वापस आए और कुफ़्फ़ार ने उन के शह्र पर क़ब्ज़ा न किया हो तो मुक़ीम हो गए और अगर मुश्रिकों का शह्र पर तसल्लुत़ हो गया और वहां रहे भी मगर मुसलमानों के वापस आने पर छोड़ दिया तो अगर येह लोग वहां रहना चाहें तो दारुल इस्लाम हो गया, नमाज़ें पूरी करें और अगर वहां रहने का इरादा नहीं बल्कि सिर्फ़ एकआध महीना रह कर दारुल इस्लाम को चले जाएंगे तो क़स्र करें ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 39 मुसलमानों का लश्कर दारुल ह़र्ब में गया और ग़ालिब आया और उस शह्र को दारुल इस्लाम बनाया तो क़स्र न करें और अगर महूज़ दो एक माह रहने का इरादा है तो क़स्र करें ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 40 मुसाफ़िर ने नमाज़ के अन्दर इक़ामत की निय्यत की तो येह नमाज़ भी पूरी पढ़े और अगर येह सूरत हुई कि एक रक्अ़त पढ़ी थी कि वक़्त ख़त्म हो गया और दूसरी में इक़ामत की निय्यत की तो येह नमाज़ दो ही रक्अ़त पढ़े इस के बाद की चार पढ़े । यूंही अगर मुसाफ़िर लाह़िक़ था और इमाम भी मुसाफ़िर था इमाम के सलाम के बाद निय्यते इक़ामत की तो दो ही पढ़े और इमाम के सलाम से पेश्तर निय्यत की तो चार पढ़े ।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 41 अदा व क़ज़ा दोनों में मुक़ीम मुसाफ़िर की इक़्तिदा कर सकता है और इमाम के सलाम के बाद अपनी बाक़ी दो रक्अ़तें पढ़ ले और इन रक्अ़तों में क़िराअत बिल्कुल न करे बल्कि ब क़दरे फ़ातिह़ा चुप खड़ा रहे ।[5] (درمختار وغیرہ)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣١.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤٠.
3 ..... المرجع السابق. 4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٢٨.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٥، وغيره .

www.dawateislami.net

मस्अला 42 इमाम मुसाफ़िर है और मुक़्तदी मुक़ीम, इमाम के सलाम से पहले मुक़्तदी खड़ा हो गया और सलाम से पहले इमाम ने इक़ामत की निय्यत कर ली तो अगर मुक़्तदी ने तीसरी का सज्दा न किया हो तो इमाम के साथ हो ले, वरना नमाज़ जाती रही और तीसरी के सज्दे के बाद इमाम ने इक़ामत की निय्यत की तो मुताबअ़त न करे, मुताबअ़त करेगा तो नमाज़ जाती रहेगी।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 43 येह पहले मालूम हो चुका है कि हुक्मे सिह्हते इक़्तिदा के लिये शर्त़ है कि इमाम का मुक़ीम या मुसाफ़िर होना मालूम हो ख़्वाह नमाज़ शुरूअ़ करते वक़्त मालूम हुवा हो या बाद में, लिहाज़ा इमाम को चाहिये कि शुरूअ़ करते वक़्त अपना मुसाफ़िर होना ज़ाहिर कर दे और शुरूअ़ में न कहा तो बादे नमाज़ कह दे कि अपनी नमाज़ें पूरी कर लो मैं मुसाफ़िर हूं।[2] (درمختار) और शुरूअ़ में कह दिया है जब भी बाद में कह दे कि जो लोग उस वक़्त मौजूद न थे उन्हें भी मालूम हो जाए।

मस्अला 44 वक़्त ख़त्म होने के बाद मुसाफ़िर मुक़ीम की इक़्तिदा नहीं कर सकता वक़्त में कर सकता है और इस सूरत में मुसाफ़िर के फ़र्ज़ भी चार हो गए येह हुक्म चार रक्अ़ती नमाज़ का है और जिन नमाज़ों में क़स्र नहीं उन में वक़्त व बादे वक़्त दोनों सूरतों में इक़्तिदा कर सकता है वक़्त में इक़्तिदा की थी नमाज़ पूरी करने से पहले वक़्त ख़त्म हो गया जब भी इक़्तिदा सह़ीह़ है।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 45 मुसाफ़िर ने मुक़ीम की इक़्तिदा की और इमाम के मज़्हब के मुवाफ़िक़ वोह नमाज़ क़ज़ा है और मुक़्तदी के मज़्हब पर अदा, मसलन इमाम शाफ़ेइय्युल मज़्हब है मुक़्तदी ह़नफ़ी और एक मिस्ल के बाद ज़ोह्र की नमाज़ इस ने उस के पीछे पढ़ी तो इक़्तिदा सह़ीह़ है।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 46 मुसाफ़िर ने मुक़ीम के पीछे शुरूअ़ कर के फ़ासिद कर दी तो अब दो ही पढ़ेगा यानी जब कि तन्हा पढ़े या किसी मुसाफ़िर की इक़्तिदा करे और अगर फिर मुक़ीम की इक़्तिदा की तो चार पढ़े।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 47 मुसाफ़िर ने मुक़ीम की इक़्तिदा की तो मुक़्तदी पर भी क़ादए ऊला वाजिब हो गया फ़र्ज़ न रहा, तो अगर इमाम ने क़ादा न किया नमाज़ फ़ासिद न हुई और मुक़ीम ने मुसाफ़िर की इक़्तिदा की तो मुक़्तदी पर भी क़ादए ऊला फ़र्ज़ हो गया।[6] (درمختار،ردالمحتار)

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٥.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٥ ـ ٧٣٦.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٦.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٦. 5 ..... المرجع السابق.
6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج٢، ص٧٣٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 48 क़स्र और पूरी पढ़ने में आख़िर वक़्त का एतिबार है जब कि पढ़ न चुका हो, फ़र्ज़ करो किसी ने नमाज़ न पढ़ी थी और वक़्त इतना बाक़ी रह गया है कि اَللّٰہُ اَکْبَر कह ले अब मुसाफ़िर हो गया तो क़स्र करे और मुसाफ़िर था उस वक़्त इक़ामत की निय्यत की तो चार पढ़े।[1] (درمختار)

मस्अला 49 ज़ोह्र की नमाज़ वक़्त में पढ़ने के बाद सफ़र किया और अ़स्र की दो पढ़ीं फिर किसी ज़रूरत से मकान पर वापस आया और अभी अ़स्र का वक़्त बाक़ी है, अब मालूम हुवा कि दोनों नमाज़ें बे वुज़ू हुईं तो ज़ोह्र की दो पढ़े और अ़स्र की चार और अगर ज़ोह्र व अ़स्र की पढ़ कर आफ़्ताब डूबने से पहले सफ़र किया और मालूम हुवा कि दोनों नमाज़ें बे वुज़ू पढ़ी थीं तो ज़ोह्र की चार पढ़े और अ़स्र की दो।[2] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 50 मुसाफ़िर को सह्व हुवा और दो रक्अ़त पर सलाम फेरने के बाद निय्यते इक़ामत की इस नमाज़ के ह़क़ में मुक़ीम न हुवा और सज्दए सह्व साक़ित़ हो गया और सज्दा करने के बाद निय्यत की तो सह़ीह़ है और चार रक्अ़त पढ़ना फ़र्ज़, अगर्चे एक ही सज्दे के बाद निय्यत की।[3] (عالمگیری)

मस्अला 51 मुसाफ़िर ने मुसाफ़िरों की इमामत की, अस्नाए नमाज़[4] में इमाम बे वुज़ू हुवा और किसी मुसाफ़िर को ख़लीफ़ा किया, ख़लीफ़ा ने इक़ामत की निय्यत की तो उस के पीछे जो मुसाफ़िर हैं उन की नमाज़ें दो ही रक्अ़त रहेंगी। यूंही अगर मुक़ीम को ख़लीफ़ा किया जब भी मुक़्तदी मुसाफ़िर दो ही पढ़ें और अगर इमाम ने ह़दस के बाद मस्जिद से निकलने से पहले इक़ामत की निय्यत की तो चार पढ़ें।[5] (عالمگیری)

मस्अला 52 वत़न दो क़िस्म है :

(1) वत़ने अस्ली

(2) वत़ने इक़ामत

वत़ने अस्ली : वोह जगह है जहां इस की पैदाइश है या इस के घर के लोग वहां रहते हैं या वहां सुकूनत कर ली और येह इरादा है कि यहां से न जाएगा।

1 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المسافر، ج۲، ص۷۳۸.

2 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصلاۃ، الباب الخامس عشر في صلاۃ المسافر، ج۱، ص۱۴۱-۱۴۲.
و "ردالمحتار"، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المسافر، ج۲، ص۷۳۸.

3 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصلاۃ، الباب الخامس عشر في صلاۃ المسافر، ج۱، ص۱۴۱-۱۴۲.

4 ...यानी नमाज़ के दौरान।

5 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصلاۃ، الباب الخامس عشر في صلاۃ المسافر، ج۱، ص۱۴۲.

www.dawateislami.net

वत़ने इक़ामत : वोह जगह है कि मुसाफ़िर ने पन्दरह दिन या इस से ज़ियादा ठहरने का वहां इरादा किया हो ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 53 मुसाफ़िर ने कहीं शादी कर ली अगर्चे वहां पन्दरह दिन ठहरने का इरादा न हो, मुक़ीम हो गया और दो शह्रों में उस की दो औ़रतें रहती हों तो दोनों जगह पहुंचते ही मुक़ीम हो जाएगा ।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 54 एक जगह आदमी का वत़ने अस्ली है, अब इस ने दूसरी जगह वत़ने अस्ली बनाया, अगर पहली जगह बाल बच्चे मौजूद हों तो दोनों अस्ली हैं वरना पहला अस्ली न रहा, ख़्वाह इन दोनों जगहों के दरमियान मसाफ़ते सफ़र हो या न हो ।[3] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 55 वत़ने इक़ामत दूसरे वत़ने इक़ामत को बात़िल कर देता है यानी एक जगह पन्दरह दिन के इरादे से ठहरा फिर दूसरी जगह इतने ही दिन के इरादे से ठहरा तो पहली जगह अब वत़न न रही, दोनों के दरमियान मसाफ़ते सफ़र हो या न हो । यूंही वत़ने इक़ामत वत़ने अस्ली व सफ़र से बात़िल हो जाता है ।[4] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 56 अगर अपने घर के लोगों को ले कर दूसरी जगह चला गया और पहली जगह मकान व अस्बाब वग़ैरा बाक़ी हैं तो वोह भी वत़ने अस्ली है ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 57 वत़ने इक़ामत के लिये येह ज़रूरी नहीं कि तीन दिन के सफ़र के बाद वहां इक़ामत की हो बल्कि अगर मुद्दते सफ़र त़ै करने से पेश्तर इक़ामत कर ली, वत़ने इक़ामत हो गया ।[6] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 58 बालिग़ के वालिदैन किसी शह्र में रहते हैं और वोह शह्र इस की जाए विलादत नहीं, न इस के अह्ल वहां हों तो वोह जगह इस के लिये वत़न नहीं ।[7] (ردالمحتار)

मस्अला 59 मुसाफ़िर जब वत़ने अस्ली में पहुंच गया, सफ़र ख़त्म हो गया अगर्चे इक़ामत की निय्यत न की हो ।[8] (عالمگیری)

मस्अला 60 औ़रत बियाह कर सुसराल गई और यहीं रहने सहने लगे तो मायका उस के

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤٢.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي... إلخ، ج٢، ص٧٣٩.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي و وطن الاقامة، ج٢، ص٧٣٩. 4 ..... المرجع السابق.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤٢. 6 ..... المرجع السابق.
7 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، مطلب في الوطن الأصلي... إلخ، ج٢، ص٧٣٩.
8 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤٢.

www.dawateislami.net

लिये वत़ने अस्ली न रहा यानी अगर सुसराल तीन मन्ज़िल पर है वहां से मायके आई और पन्दरह दिन ठहरने की निय्यत न की तो क़स्र पढ़े और अगर मायके रहना नहीं छोड़ा बल्कि सुसराल आ़रिज़ी त़ौर पर गई तो मायके आते ही सफ़र ख़त्म हो गया नमाज़ पूरी पढ़े।

मस्अला 61 औ़रत को बग़ैर महरम के **तीन दिन** या ज़ियादा की राह जाना नाजाइज़ है बल्कि **एक दिन** की राह जाना भी। ना बालिग़ बच्चा या मातूह के साथ भी सफ़र नहीं कर सकती, हमराही में बालिग़ महरम या शौहर का होना ज़रूरी है।[1] (عالمگیری وغیرہ)

महरम के लिये ज़रूरी है कि सख़्त फ़ासिक़ बेबाक ग़ैर मामून न हो।

जुमुआ़ का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِیَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ یَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَ ذَرُوا الْبَیْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ ﴾[2]

ऐ ईमान वालो ! जब नमाज़ के लिये जुमुआ़ के दिन अज़ान दी जाए तो ज़िक्रे ख़ुदा की त़रफ़ दौड़ो और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ दो, येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानते हो।

फ़ज़ाइले रोज़े जुमुआ़

ह़दीस 1 व 2 सह़ीह़ैन में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "हम पिछले हैं यानी दुन्या में आने के लिहाज़ से और क़ियामत के दिन पहले, सिवा इस के कि उन्हें हम से पहले किताब मिली और हमें उन के बाद, येही जुमुआ़ वोह दिन है कि उन पर फ़र्ज़ किया गया यानी येह कि इस की ताज़ीम करें वोह इस से ख़िलाफ़ हो गए और हम को **अल्लाह** तआ़ला ने बता दिया दूसरे लोग हमारे ताबेअ़ हैं, यहूद ने दूसरे दिन को वोह दिन मुक़र्रर किया यानी हफ़्ते को और नसारा ने तीसरे दिन को यानी इतवार को।"[3]

और मुस्लिम की दूसरी रिवायत इन्हीं से और हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से येह है, फ़रमाते हैं : "हम अहले दुन्या से पीछे हैं और क़ियामत के दिन पहले कि तमाम मख़्लूक़ से पहले हमारे लिये

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الخامس عشر في صلاة المسافر، ج١، ص١٤٢. و "الفتاوى الرضوية"، ج١٠، ص٦٥٧.

2 ..... پ٢٨، الجمعة: ٩. 3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الجمعة، باب فرض الجمعة... إلخ، الحديث: ٨٧٦، ج١، ص٣٠٣.

www.dawateislami.net

फ़ैसला हो जाएगा।"[1]

ह़दीस 3 मुस्लिम व अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "बेहतर दिन कि आफ़्ताब ने उस पर तुलूअ़ किया, जुमुआ़ का दिन है, इसी में आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पैदा किये गए और इसी में जन्नत में दाख़िल किये गए और इसी में जन्नत से उतरने का उन्हें हुक्म हुवा और क़ियामत जुमुआ़ ही के दिन क़ाइम होगी।"[2]

ह़दीस 4 व 5 अबू दावूद व नसाई व इब्ने माजह व बैहक़ी औस बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "तुम्हारे अफ़्ज़ल दिनों से जुमुआ़ का दिन है, इसी में आदम عَلَیْہِ السَّلَام पैदा किये गए और इसी में इन्तिक़ाल किया और इसी में नफ़्ख़ा है (दूसरी बार सूर फूंका जाना) और इसी में सअ़क़ा है (पहली बार सूर फूंका जाना), इस दिन में मुझ पर दुरूद की कसरत करो कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर पेश किया जाता है।" लोगों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! उस वक़्त हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) पर हमारा दुरूद क्यूंकर पेश किया जाएगा, जब हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) इन्तिक़ाल फ़रमा चुके होंगे ? फ़रमाया कि : **अल्लाह** तआ़ला ने ज़मीन पर अम्बिया के जिस्म खाना ह़राम कर दिया है।"[3] और इब्ने माजह की रिवायत में है कि फ़रमाते हैं : "जुमुआ़ के दिन मुझ पर दुरूद की कसरत करो कि येह दिन मश्हूद है, इस में फ़रिश्ते ह़ाज़िर होते हैं और मुझ पर जो दुरूद पढ़ेगा पेश किया जाएगा। अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहते हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : और मौत के बाद ? फ़रमाया : बेशक ! **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने ज़मीन पर अम्बिया के जिस्म खाना ह़राम कर दिया है, **अल्लाह** का नबी ज़िन्दा है, रोज़ी दिया जाता है।"[4]

ह़दीस 6 व 7 इब्ने माजह अबू लुबाबा बिन अ़ब्दुल मुन्ज़िर और अह़मद साद बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "जुमुआ़ का दिन तमाम दिनों का सरदार है और **अल्लाह** के नज़्दीक सब से बड़ा है और वोह **अल्लाह** के नज़्दीक ईदे अज़्हा व ईदुल फ़ित्र से बड़ा है, इस में पांच ख़स्लतें हैं :

(1) **अल्लाह** तआ़ला ने इसी में आदम عَلَیْہِ السَّلَام को पैदा किया।

(2) और इसी में ज़मीन पर उन्हें उतारा।

(3) और इसी में उन्हें वफ़ात दी।

---

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب هداية هذه الأمة ليوم الجمعة، الحديث: ٨٥٦، ص٤٢٦.

2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب فضل يوم الجمعة، الحديث: ١٨-(٨٥٤)، ص٤٢٥.

3 ..... "سنن النسائي"، كتاب الجمعة، باب اكثار الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم يوم الجمعة، الحديث: ١٣٧١، ص٢٣٧.

4 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الجنائز، باب ذكر وفاته و دفنه صلى الله عليه وسلم الحديث: ١٦٣٧، ج٢، ص٢٩١.

www.dawateislami.net

(4) और इस में एक साअ़त ऐसी है कि बन्दा उस वक़्त जिस चीज़ का सुवाल करे वोह उसे देगा, जब तक ह़राम का सुवाल न करे।

(5) और इसी दिन में क़ियामत क़ाइम होगी, कोई फ़रिश्तए मुक़र्रब व आस्मान व ज़मीन और हवा और पहाड़ और दरिया ऐसा नहीं कि जुमुआ़ के दिन से डरता न हो।"[1]

जुमुआ़ के दिन एक ऐसा वक़्त है कि उस में दुआ़ क़बूल होती है

ह़दीस 8 ता 10 बुख़ारी व मुस्लिम अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "जुमुआ़ में एक ऐसी साअ़त है कि मुसलमान बन्दा अगर उसे पा ले और उस वक़्त **अल्लाह** तआ़ला से भलाई का सुवाल करे तो वोह उसे देगा।" और मुस्लिम की रिवायत में येह भी है कि "वोह वक़्त बहुत थोड़ा है।"[2] रहा येह कि वोह कौन सा वक़्त है इस में रिवायतें बहुत हैं इन में दो क़वी हैं एक येह कि इमाम के ख़ुत्बे के लिये बैठने से ख़त्मे नमाज़ तक है।[3] इस ह़दीस को मुस्लिम अबू बुर्दा बिन अबी मूसा से वोह अपने वालिद से वोह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं। और दूसरी येह कि "वोह जुमुआ़ की पिछली साअ़त है।" इमाम मालिक व अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व अह़मद अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, वोह कहते हैं : मैं कोहे तूर की त़रफ़ गया और कअ़ब अह़बार से मिला उन के पास बैठा, उन्हों ने मुझे तौरात की रिवायतें सुनाईं और मैं ने उन से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ह़दीसें बयान कीं, उन में एक ह़दीस येह भी थी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बेहतर दिन कि आफ़्ताब ने उस पर तुलूअ़ किया जुमुआ़ का दिन है, इसी में आदम عَلَیْہِ السَّلَام पैदा किये गए और इसी में उन्हें उतरने का हुक्म हुवा और इसी में उन की तौबा क़बूल हुई और इसी में उन का इन्तिक़ाल हुवा और इसी में क़ियामत क़ाइम होगी और कोई जानवर ऐसा नहीं कि जुमुआ़ के दिन सुब्ह़ के वक़्त आफ़्ताब निकलने तक क़ियामत के डर से चीख़ता न हो सिवा आदमी और जिन्न के और इस में एक ऐसा वक़्त है कि मुसलमान बन्दा नमाज़ पढ़ने में उसे पा ले तो **अल्लाह** तआ़ला से जिस शै का सुवाल करे वोह उसे देगा।" कअ़ब ने कहा : साल में ऐसा एक दिन है? मैं ने कहा, बल्कि हर जुमुआ़ में है। कअ़ब ने तौरात पढ़ कर कहा : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने सच फ़रमाया। अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ कहते हैं फिर मैं अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मिला और कअ़ब अह़बार की मजलिस और जुमुआ़ के बारे में जो ह़दीस बयान की थी उस का ज़िक्र किया और येह कि कअ़ब

1 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلوات والسنة فيها، باب في فضل الجمعة، الحديث: ١٠٨٤، ج٢، ص٨.

2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب في الساعة التي في يوم الجمعة، الحديث: ١٥-(٨٥٢)، ص٤٢٤.
و "مرقاة المفاتيح"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، تحت الحديث: ١٣٥٧، ج٣، ص٤٤٥.

3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب في الساعة التي في يوم الجمعة، الحديث: ٨٥٣، ص٤٢٤.

www.dawateislami.net

ने कहा था : येह हर साल में एक दिन है, अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा : कअ़ब ने ग़लत़ कहा, मैं ने कहा : फिर कअ़ब ने तौरात पढ़ कर कहा बल्कि वोह साअ़त हर जुमुआ़ में है। कहा : कअ़ब ने सच कहा, फिर अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा : तुम्हें मालूम है येह कौन सी साअ़त है ? मैं ने कहा : मुझे बताओ और बुख़्ल न करो, कहा जुमुआ़ के दिन की पिछली साअ़त है। मैं ने कहा : पिछली साअ़त कैसे हो सकती है ? हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने तो फ़रमाया है मुसलमान बन्दा नमाज़ पढ़ते में उसे पाए और वोह नमाज़ का वक़्त नहीं। अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा : क्या हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने येह नहीं फ़रमाया है कि जो किसी मजलिस में इन्तिज़ारे नमाज़ में बैठे वोह नमाज़ में है ! मैं ने कहा : हां, फ़रमाया तो है। कहा : तो वोह येही है यानी नमाज़ पढ़ने से नमाज़ का इन्तिज़ार मुराद है।[1]

ह़दीस 11 तिरमिज़ी अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : "जुमुआ़ के दिन जिस साअ़त की ख़्वाहिश की जाती है, उसे अ़स्र के बाद से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक तलाश करो।"[2]

ह़दीस 12 त़बरानी औसत़ में ब सनदे ह़सन अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : "**अल्लाह** तबारक व तआ़ला किसी मुसलमान को जुमुआ़ के दिन बे मग़्फ़िरत किये न छोड़ेगा।"[3]

ह़दीस 13 अबू याला इन्हीं से रावी कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जुमुआ़ के दिन और रात में चौबीस घन्टे हैं, कोई घन्टा ऐसा नहीं जिस में **अल्लाह** तआ़ला जहन्नम से छे लाख आज़ाद न करता हो जिन पर जहन्नम वाजिब हो गया था।"[4]

जुमुआ़ के दिन या रात में मरने के फ़ज़ाइल

ह़दीस 14 अह़मद व तिरमिज़ी अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रावी कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जो मुसलमान जुमुआ़ के दिन या जुमुआ़ की रात में मरेगा, **अल्लाह** तआ़ला उसे फ़ितनए क़ब्र से बचा लेगा।"[5]

ह़दीस 15 अबू नुऐम ने जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जो जुमुआ़ के दिन या जुमुआ़ की रात में मरेगा, अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा लिया जाएगा और क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि उस पर शहीदों की मोहर होगी।"[6]

1 ..... "الموطأ" لإمام مالك، كتاب الجمعة، باب ماجاء في الساعة التي في يوم الجمعة، الحديث: ٢٤٦، ج١، ص١١٥.
2 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الجمعة، باب ماجاء في الساعة... إلخ، الحديث: ٤٨٩، ج٢، ص٣٠.
3 ..... "المعجم الأوسط"، باب العين، الحديث: ٤٨١٧، ج٣، ص٣٥١.
4 ..... "مسند أبي يعلى"، مسند انس بن مالك، الحديث: ٣٤٢١، ٣٤٧١، ج٣، ص٢١٩، ٢٣٥.
5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الجنائز، باب ماجاء فيمن يموت يوم الجمعة، الحديث: ١٠٧٦، ج٢، ص٣٣٩.
6 ..... "حلية الأولياء"، رقم: ٣٦٢٩، ج٣، ص١٨١.

www.dawateislami.net

ह़दीस 16 हुमैद ने तरग़ीब में इयास बिन बुकैर से रिवायत की, कि फ़रमाते हैं : "जो जुमुआ़ के दिन मरेगा, उस के लिये शहीद का अज्र लिखा जाएगा और फ़ितनए क़ब्र से बचा लिया जाएगा।"[1]

ह़दीस 17 अ़त़ा से मरवी कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जो मुसलमान मर्द या मुसलमान औ़रत जुमुआ़ के दिन या जुमुआ़ की रात में मरे, अ़ज़ाबे क़ब्र और फ़ितनए क़ब्र से बचा लिया जाएगा और ख़ुदा से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस पर कुछ ह़िसाब न होगा और उस के साथ गवाह होंगे कि उस के लिये गवाही देंगे या मोह़र होगी।"[2]

ह़दीस 18 बैहक़ी की रिवायत अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से है कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जुमुआ़ की रात रोशन रात है और जुमुआ़ का दिन चमकदार दिन।"[3]

ह़दीस 19 तिरमिज़ी इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रावी कि उन्हों ने येह आयत पढ़ी :

﴿ اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعْمَتِیْ وَ رَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا ﴾[4]

आज मैं ने तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत तमाम कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द फ़रमाया।

उन की ख़िदमत में एक यहूदी ह़ाज़िर था, उस ने कहा येह आयत हम पर नाज़िल होती तो हम इस दिन को ईद बनाते, इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह आयत दो ईदों के दिन उतरी जुमुआ़ और अ़रफ़े के दिन यानी हमें इस दिन को ईद बनाने की ज़रूरत नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिस दिन येह आयत उतारी उस दिन दोहरी ईद थी कि जुमुआ़ व अ़रफ़ा येह दोनों दिन मुसलमानों के ईद के हैं और उस दिन येह दोनों जम्अ़ थे कि जुमुआ़ का दिन था और नवीं ज़ुल ह़िज्जा।[5]

फ़ज़ाइले नमाज़े जुमुआ़

ह़दीस 20 मुस्लिम व अबू दावूद व तिरमिज़ी व इब्ने माजह अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया फिर जुमुआ़ को आया और (ख़ुत़्बा) सुना और चुप रहा उस के लिये मग़्फ़िरत हो जाएगी उन गुनाहों की जो इस जुमुआ़ और दूसरे जुमुआ़ के दरमियान हैं और तीन दिन और। और जिस ने कंकरी छूई उस ने लग़्व किया यानी ख़ुत़्बा सुनने की ह़ालत में इतना काम भी लग़्व में दाख़िल है कि

1 ..... "شرح الصدور"، للسيوطی، باب من لا يسئل فی القبر، ص١٥١.
2 ..... "شرح الصدور"، للسيوطی، باب من لا يسئل فی القبر، ص١٥١.
3 ..... "مشكاة المصابيح"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، الحديث: ١٣٦٩، ج١، ص٣٩٣. 4 ..... پ٦، المآئدة: ٣.
5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب تفسير القرآن، باب ومن سورة المائدة، الحديث: ٣٠٥٥، ج٥، ص٣٣.

www.dawateislami.net

कंकरी पड़ी हो उसे हटा दे।"[1]

ह़दीस 21 तबरानी की रिवायत अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से है कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जुमुआ़ कफ़्फ़ारा है उन गुनाहों के लिये जो इस जुमुआ़ और इस के बाद वाले जुमुआ़ के दरमियान हैं और तीन दिन ज़ियादा और येह इस वज्ह से कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "जो एक नेकी करे, उस के लिये दस मिस्ल है।"[2]

ह़दीस 22 इब्ने ह़ब्बान अपनी सह़ीह़ में अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "पांच चीज़ें जो एक दिन में करेगा, **अल्लाह** तआ़ला उस को **जन्नती** लिख देगा।

(1) जो मरीज़ को पूछने जाए और
(2) जनाज़े में ह़ाज़िर हो और
(3) रोज़ा रखे और
(4) जुमुआ़ को जाए और
(5) गुलाम आज़ाद करे।"[3]

ह़दीस 23 तिरमिज़ी ब इफ़ादए तस्ह़ीह़ व तह़सीन रावी कि यज़ीद बिन अबी मरयम कहते हैं : मैं जुमुआ़ को जाता था, इ़बाया बिन रिफ़ाआ़ बिन राफ़ेअ़ मिले, उन्हों ने कहा : तुम्हें बिशारत हो कि तुम्हारे येह क़दम **अल्लाह** की राह में हैं। मैं ने अबू अ़बस को कहते सुना कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस के क़दम **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में गर्द आलूद हों वोह आग पर ह़राम हैं।"[4] और बुख़ारी की रिवायत में यूं है कि इ़बाया कहते हैं : मैं जुमुआ़ को जा रहा था, अबू अ़बस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मिले और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) का इरशाद सुनाया।[5]

जुमुआ़ छोड़ने पर वईदें

ह़दीस 24 ता 26 मुस्लिम अबू हुरैरा व इब्ने उ़मर से और नसाई व इब्ने माजह इब्ने अ़ब्बास व इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "लोग जुमुआ़ छोड़ने से बाज़ आएंगे या **अल्लाह** तआ़ला उन के दिलों पर मोहर कर देगा फिर ग़ाफ़िलीन

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب فضل من استمع و أنصت في الخطبة، الحديث: ٢٧-(٨٥٧)، ص٤٢٧.
2 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ٣٤٥٩، ج٣، ص٢٩٨.
3 ..... "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجمعة، الحديث: ٢٧٦٠، ج٤، ص١٩١.
4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب فضائل الجهاد، باب ماجاء في فضل من اغبرت قدماه... إلخ، الحديث: ١٦٣٨، ج٣، ص٢٣٥.
5 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الجمعة، باب المشي إلى الجمعة، الحديث: ٩٠٧، ج١، ص٣١٣.

www.dawateislami.net

में हो जाएंगे।"(1)

ह़दीस 27 ता 31 फ़रमाते हैं : "जो तीन जुमुए़ सुस्ती की वज्ह से छोड़े **अल्लाह** तआ़ला उस के दिल पर मोहर कर देगा।"(2) इस को अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह व दारिमी व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान व ह़ाकिम अबुल जअ़्द ज़मरी से और इमाम मालिक ने सफ़्वान बिन सुलैम से और इमाम अह़मद ने अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم से रिवायत किया, तिरमिज़ी ने कहा येह ह़दीस ह़सन है और ह़ाकिम ने कहा सह़ीह़ बर शर्ते मुस्लिम है और इब्ने ख़ुज़ैमा व ह़ब्बान की एक रिवायत में है : "जो तीन जुमुए़ बिला उ़ज़्र छोड़े, वोह मुनाफ़िक़ है।"(3) और रज़ीन की रिवायत में है : "वोह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से बे इ़लाक़ा है।"(4) और त़बरानी की रिवायत उसामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से है : "वोह मुनाफ़िक़ीन में लिख दिया गया।"(5) और इमाम शाफ़ेई رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की रिवायत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से है : वोह मुनाफ़िक़ लिख दिया गया उस किताब में जो न महू हो न बदली जाए,(6) और एक रिवायत में है : "जो तीन जुमुए़ पै दर पै छोड़े उस ने इस्लाम को पीठ के पीछे फेंक दिया।"(7) इस को अबू याला ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से ब सनदे सह़ीह़ रिवायत किया।

ह़दीस 32 अह़मद व अबू दावूद व इब्ने माजह समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जो बग़ैर उ़ज़्र जुमुआ़ छोड़े, एक दीनार सदक़ा दे और अगर न पाए तो आधा दीनार और येह दीनार तसद्दुक़ करना शायद इस लिये हो कि क़बूले तौबा के लिये मुअ़य्यन हो वरना ह़क़ीक़तन तो तौबा करना फ़र्ज़ है।"(8)

ह़दीस 33 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से मरवी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم : "मैं ने क़स्द किया कि एक शख़्स को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दूं और जो लोग जुमुआ़ से पीछे रह गए, उन के घरों को जला दूं।"(9)

ह़दीस 34 इब्ने माजह ने जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने ख़ुत्बा फ़रमाया और फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मरने से पहले **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ तौबा करो और मश्ग़ूल होने से पहले नेक कामों की त़रफ़ सब्क़त करो और यादे ख़ुदा की कसरत और ज़ाहिर व पोशीदा सदक़े की कसरत से जो तअ़ल्लुक़ात तुम्हारे और तुम्हारे रब

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الجمعة، باب التغليظ في ترك الجمعة، الحديث: ٨٦٥، ص٤٣٠.
2 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الجمعة، باب ماجاء في ترك الجمعة... إلخ، الحديث: ٥٠٠، ج٢، ص٣٨.
3 ..... "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الإيمان، باب ماجاء في الشرك والنفاق، الحديث: ٢٥٨، ج١، ص٢٣٧.
4 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الجمعة، الترهيب من ترك الجمعة بغير عذر، الحديث: ٣، ج١، ص٢٩٥.
5 ..... "المعجم الكبير"، باب الألف، الحديث: ٤٢٢، ج١، ص١٧٠.
6 ..... "المسند" لإمام الشافعي، ومن كتاب إيجاب الجمعة، ص٧٠.
7 ..... "مسند أبي يعلى"، مسند ابن عباس، الحديث: ٢٧٠٤، ج٢، ص٥٥٣.
8 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الصلاة، باب كفارة من تركها، الحديث: ١٠٥٣، ج١، ص٣٩٣.
9 ..... "صحيح مسلم"، كتاب المساجد... إلخ، باب فضل صلاة الجمعة... إلخ، الحديث: ٦٥٢، ص٣٢٧.

www.dawateislami.net

(عَزَّوَجَلَّ) के दरमियान हैं मिलाओ। ऐसा करोगे तो तुम्हें रोज़ी दी जाएगी और तुम्हारी मदद की जाएगी और तुम्हारी शिकस्तगी दूर फ़रमाई जाएगी और जान लो कि इस जगह इस दिन इस साल में क़ियामत तक के लिये **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने तुम पर जुमुआ़ फ़र्ज़ किया, जो शख़्स मेरी ह़यात में या मेरे बाद हलका जान कर और बत़ौरे इन्कार जुमुआ़ छोड़े और उस के लिये कोई इमाम यानी ह़ाकिमे इस्लाम हो आ़दिल या ज़ालिम तो **अल्लाह** तआ़ला न उस की परागन्दगी को जम्अ़ फ़रमाएगा, न उस के काम में बरकत देगा, आगाह उस के लिये न नमाज़ है, न ज़कात, न ह़ज, न रोज़ा, न नेकी जब तक तौबा न करे और जो तौबा करे **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उस की तौबा क़बूल फ़रमाएगा।''(1)

ह़दीस 35 दारे क़ुत़नी इन्हीं से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : ''जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और पिछले दिन पर ईमान लाता है उस पर जुमुआ़ के दिन (नमाज़े) जुमुआ़ फ़र्ज़ है मगर मरीज़ या मुसाफ़िर या औ़रत या बच्चा या गुलाम पर और जो शख़्स खेल या तिजारत में मश्ग़ूल रहा तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उस से बे परवाह है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ग़नी ह़मीद है।''(2)

जुमुआ़ के दिन नहाने और ख़ुश्बू लगाने का बयान

ह़दीस 36 ता 38 सह़ीह़ बुख़ारी में सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : ''जो शख़्स जुमुआ़ के दिन नहाए और जिस त़हारत की इस्तित़ाअ़त हो करे और तेल लगाए और घर में जो ख़ुश्बू हो मले फिर नमाज़ को निकले और दो शख़्सों में जुदाई न करे यानी दो शख़्स बैठे हुए हों उन्हें हटा कर बीच में न बैठे और जो नमाज़ उस के लिये लिखी गई है पढ़े और इमाम जब ख़ुत़्बा पढ़े तो चुप रहे, उस के लिये उन गुनाहों की जो इस जुमुआ़ और दूसरे जुमुआ़ के दरमियान हैं मग़्फ़िरत हो जाएगी।''(3) और इसी के क़रीब क़रीब अबू सईद ख़ुदरी व अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से भी मुतअ़द्दद तुरुक़ से रिवायतें आईं।

ह़दीस 39 व 40 अह़मद अबू दावूद व तिरमिज़ी ब इफ़ादए तह़सीन व नसाई व इब्ने माजह व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान व ह़ाकिम ब इफ़ादए तस्ह़ीह़ औस बिन औस और त़बरानी औसत़ में इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से रावी, कि फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : ''जो नहलाए और नहाए और अव्वल वक़्त आए और शुरूए ख़ुत़्बा में शरीक हो और चल कर आए सुवारी पर न आए और इमाम से क़रीब हो और कान लगा कर ख़ुत़्बा सुने और लग़्व काम न करे, उस के लिये हर क़दम के बदले साल भर का अ़मल है, एक साल के दिनों के रोज़े और रातों

1 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلوات و السنة فيها، باب في فرض الجمعة، الحديث: ١٠٨١، ج٢، ص٥.
2 ..... "سنن الدار قطني"، كتاب الجمعة، باب من تجب عليه الجمعة، الحديث: ١٥٦٠، ج٢، ص٣.
3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الجمعة، باب الدهن للجمعة، الحديث: ٨٨٣، ج١، ص٣٠٦.

www.dawateislami.net

के क़ियाम का उस के लिये अज्र है।"[1] और इसी के मिस्ल दीगर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم से भी रिवायतें हैं।

ह़दीस 41 बुख़ारी व मुस्लिम अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم : "हर मुसलमान पर सात दिन में एक दिन ग़ुस्ल है कि इस दिन में सर धोए और बदन।"[2]

ह़दीस 42 अह़मद व अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व दारिमी समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी कि फ़रमाते हैं : "जिस ने जुमुआ़ के दिन वुज़ू किया, फ़बिहा और अच्छा है और जिस ने ग़ुस्ल किया तो ग़ुस्ल अफ़्ज़ल है।"[3]

ह़दीस 43 अबू दावूद इकरिमा से रावी कि इराक़ से कुछ लोग आए, उन्हों ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से सुवाल किया कि जुमुआ़ के दिन आप ग़ुस्ल वाजिब जानते हैं ? फ़रमाया न। हां, येह ज़ियादा त़हारत है और जो नहाए उस के लिये बेहतर है और जो ग़ुस्ल न करे तो उस पर वाजिब नहीं।"[4]

ह़दीस 44 इब्ने माजह ब सनदे ह़सन इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "इस दिन को **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने मुसलमानों के लिये ईद किया तो जो जुमुआ़ को आए वोह नहाए और अगर ख़ुश्बू हो तो लगाए।"[5]

ह़दीस 45 अह़मद व तिरमिज़ी ब सनदे ह़सन बराअ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "मुसलमान पर ह़क़ है कि जुमुआ़ के दिन नहाए और घर में जो ख़ुश्बू हो लगाए और ख़ुश्बू न पाए तो पानी[6] यानी नहाना बजाए ख़ुश्बू है।"

ह़दीस 46 व 47 त़बरानी कबीर व औसत़ में सिद्दीक़े अक्बर व इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا रावी कि फ़रमाते हैं : "जो जुमुआ़ के दिन नहाए उस के गुनाह और ख़त़ाएं मिटा दी जाती हैं और जब चलना शुरूअ़ किया तो हर क़दम पर बीस नेकियां लिखी जाती हैं।"[7] और दूसरी रिवायत में है : "हर क़दम पर बीस साल का अ़मल लिखा जाता है और जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो उसे दो सो बरस के अ़मल का अज्र मिलता है।"[8]

1 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث أوس بن أبي أوس الثقفي، الحديث: ١٦١٧٣، ج٥، ص٤٦٥.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الجمعة، باب هل على من لم يشهد الجمعة غسل... إلخ، الحديث: ٨٩٧، ج١، ص٣١٠.
3 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الجمعة، باب ماجاء في الوضوء يوم الجمعة، الحديث: ٤٩٧، ج٢، ص٣٦.
4 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الطهارة، باب الرخصة في ترك الغسل يوم الجمعة، الحديث: ٣٥٣، ج١، ص١٦٠.
5 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب اقامة الصلوات... إلخ، باب ماجاء في الزينة يوم الجمعة، الحديث: ١٠٩٨، ج٢، ص١٦.
6 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الجمعة، باب ماجاء في السواك... إلخ، الحديث: ٥٢٨، ج٢، ص٥٨.
7 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ٢٩٢، ج١٨، ص١٣٩.
8 ..... "المعجم الأوسط"، باب الجيم، الحديث: ٣٣٩٧، ج٢، ص٣١٤.

www.dawateislami.net

ह़दीस 48 त़बरानी कबीर में ब रिवायते सक़ास अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि फ़रमाते हैं : "जुमुआ़ का ग़ुस्ल बाल की जड़ों से ख़त़ाएं खींच लेता है।"(1)

जुमुआ़ के लिये अव्वल जाने का सवाब और गरदन फलांगने की मुमानअ़त

ह़दीस 49 बुख़ारी व मुस्लिम व अबू दावूद व तिरमिज़ी व मालिक व नसाई व इब्ने माजह अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "जो शख़्स जुमुआ़ के दिन ग़ुस्ल करे, जैसे जनाबत का ग़ुस्ल है फिर पहली साअ़त में जाए तो गोया उस ने ऊंट की क़ुरबानी की और जो दूसरी साअ़त में गया उस ने गाय की क़ुरबानी की और जो तीसरी साअ़त में गया उस ने सींग वाले मेंढे की क़ुरबानी की और जो चौथी साअ़त में गया गोया उस ने मुर्ग़ी नेक काम में ख़र्च की और जो पांचवीं साअ़त में गया गोया अन्डा ख़र्च किया, फिर जब इमाम ख़ुत़्बे को निकला मलाएका ज़िक्र सुनने ह़ाज़िर हो जाते हैं।"(2)

ह़दीस 50 ता 52 बुख़ारी व मुस्लिम व इब्ने माजह की दूसरी रिवायत इन्हीं से है हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जब जुमुआ़ का दिन होता है फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होते हैं और ह़ाज़िर होने वाले को लिखते हैं सब में पहला फिर उस के बाद वाला, (इस के बाद वोही सवाब जो ऊपर की रिवायत में मज़्कूर हुए ज़िक्र किये) फिर इमाम जब ख़ुत़्बे को निकला फ़रिश्ते अपने दफ़्तर लपेट लेते हैं और ज़िक्र सुनते हैं।"(3) इसी के मिस्ल समुरह बिन जुन्दुब व अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से भी रिवायत है।

ह़दीस 53 इमाम अह़मद व त़बरानी की रिवायत अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से है : "जब इमाम ख़ुत़्बे को निकलता है तो फ़रिश्ते दफ़्तर त़ै कर लेते हैं, किसी ने उन से कहा तो जो शख़्स इमाम के निकलने के बाद आए उस का जुमुआ़ न हुवा ? कहा : हां, हुवा तो लेकिन वोह दफ़्तर में नहीं लिखा गया।"(4)

ह़दीस 54 "जिस ने जुमुआ़ के दिन लोगों की गरदनें फलांगीं उस ने जहन्नम की त़रफ़ पुल बनाया।"(5) इस ह़दीस को तिरमिज़ी व इब्ने माजह मुआ़ज़ बिन अनस जुहन्नी से वोह

1 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ٧٩٩٦، ج٨، ص٢٥٦.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الجمعة، باب فضل الجمعة، الحديث: ٨٨١، ج١، ص٣٠٥.
و "الموطأ" لإمام مالك، كتاب الجمعة، باب العمل في غسل يوم الجمعة، الحديث: ٢٣٠، ج١، ص١٠٩.
3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الجمعة، باب الاستماع إلى الخطبة يوم الجمعة، الحديث: ٩٢٩، ج١، ص٣١٩.
4 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث أبي امامة الباهلي، الحديث: ٢٢٣٣١، ج٨، ص٢٩٧.
5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الجمعة، باب ماجاء في كراهية التخطي يوم الجمعة، الحديث: ٥١٣، ج٢، ص٤٨.

ह़दीस में लफ़्ज़ اتَّخَذَ جِسْرًا वाक़ेअ़ हुवा है इस को मारूफ़ व मज्हूल दोनों त़रह़ पढ़ते हैं और येह तर्जमा मारूफ़ का है और मज्हूल पढ़ें तो मत़लब येह होगा कि ख़ुद पुल बना दिया जाएगा यानी जिस त़रह़ लोगों की =

www.dawateislami.net

अपने वालिद से रिवायत करते हैं और तिरमिज़ी ने कहा येह ह़दीस ग़रीब है और तमाम अहले इ़ल्म के नज़्दीक इसी पर अ़मल है।

ह़दीस 55 अह़मद व अबू दावूद व नसाई अ़ब्दुल्लाह बिन बुस्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि एक शख़्स लोगों की गरदनें फलांगते हुए आए और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ख़ुत्बा फ़रमा रहे थे इरशाद फ़रमाया : "बैठ जा ! तू ने ईज़ा पहुंचाई।"[1]

ह़दीस 56 अबू दावूद अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि फ़रमाते हैं : "जुमुआ़ में तीन क़िस्म के लोग ह़ाज़िर होते हैं। एक वोह कि लग़्व के साथ ह़ाज़िर हुवा (यानी कोई ऐसा काम किया जिस से सवाब जाता रहे मसलन ख़ुत्बे के वक़्त कलाम किया या कंकरियां छूईं) तो उस का ह़िस्सा जुमुआ़ से वोही लग़्व है और एक वोह शख़्स कि **अल्लाह** से दुआ़ की तू अगर चाहे दे और चाहे न दे और एक वोह कि सुकूत व इन्सात के साथ ह़ाज़िर हुवा और किसी मुसलमान की न गरदन फलांगी न किसी को ईज़ा दी तो जुमुआ़ उस के लिये कफ़्फ़ारा है, आइन्दा जुमुआ़ और तीन दिन ज़ियादा तक।"[2]

मसाइले फ़िक़्हिय्या

जुमुआ़ फ़र्ज़े ऐ़न है और इस की फ़र्ज़िय्यत ज़ोह्र से ज़ियादा मुअक्कद है और इस का मुन्किर काफ़िर है।[3] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 1 जुमुआ़ पढ़ने के लिये छे शर्तें हैं कि इन में से एक शर्त भी मफ़्क़ूद हो तो होगा ही नहीं।

(1) मिस्र या फ़िनाए मिस्र

मिस्र वोह जगह है जिस में मुतअ़द्दद कूचे और बाज़ार हों और वोह ज़िलअ़ या पर्गना[4] हो कि उस के मुतअ़ल्लिक़ दीहात गिने जाते हों और वहां कोई ह़ाकिम हो कि अपने दबदबे व सत्वत के सबब मज़्लूम का इन्साफ़ ज़ालिम से ले सके यानी इन्साफ़ पर क़ुदरत काफ़ी है, अगर्चे ना इन्साफ़ी करता और बदला न लेता हो और मिस्र के आस पास की जगह जो मिस्र की मस्लह़तों के लिये हो उसे "फ़िनाए मिस्र" कहते हैं। जैसे क़ब्रिस्तान, घोड़दौड़ का मैदान, फ़ौज के रहने की जगह, कचह्रियां, स्टेशन कि येह चीज़ें शह्र से बाहर हों तो

= गरदनें इस ने फलांगी हैं, इस को क़ियामत के दिन जहन्नम में जाने का पुल बनाया जाएगा कि इस के ऊपर चढ़ कर लोग जाएंगे। 12

1 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الصلاة، باب تخطي رقاب الناس يوم الجمعة، الحديث: ١١١٨، ج١، ص٤١٣.

2 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الصلاة، باب الكلام والإمام يخطب، الحديث: ١١١٣، ج١، ص٤١١.

3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٥.

4 ...यानी ज़िलअ़ का ह़िस्सा।

www.dawateislami.net

फ़िनाए मिस्र में इन का शुमार है और वहां जुमुआ़ जाइज़ ।[1] (غنیہ وغیرہا) लिहाज़ा जुमुआ़ या शहर में पढ़ा जाए या क़स्बे में या इन की फ़िना में और गाउं में जाइज़ नहीं ।[2] (غنیہ)

मस्अला 2 जिस शहर पर कुफ़्फ़ार का तसल्लुत़ हो गया वहां भी जुमुआ़ जाइज़ है, जब तक दारुल इस्लाम रहे ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 3 मिस्र के लिये ह़ाकिम का वहां रहना ज़रूरी है, अगर बत़ौरे दौरा वहां आ गया तो वोह जगह मिस्र न होगी, न वहां जुमुआ़ क़ाइम किया जाएगा ।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 4 जो जगह शहर से क़रीब है मगर शहर की ज़रूरतों के लिये न हो और उस के और शहर के दरमियान खेत वग़ैरा फ़ासिल हो तो वहां जुमुआ़ जाइज़ नहीं अगर्चे अज़ाने जुमुआ़ की आवाज़ वहां तक पहुंचती हो ।[5] (عالمگیری) मगर अक्सर अइम्मा कहते हैं कि अगर अज़ान की आवाज़ पहुंचती हो तो उन लोगों पर जुमुआ़ पढ़ना फ़र्ज़ है बल्कि बाज़ ने तो येह फ़रमाया कि अगर शहर से दूर जगह हो मगर बिला तक्लीफ़ वापस बाहर जा सकता हो तो जुमुआ़ पढ़ना फ़र्ज़ है ।[6] (درمختار) लिहाज़ा जो लोग शहर के क़रीब गाउं में रहते हैं उन्हें चाहिये कि शहर में आ कर जुमुआ़ पढ़ जाएं ।

मस्अला 5 गाउं का रहने वाला शहर में आया और जुमुआ़ के दिन यहीं रहने का इरादा है तो जुमुआ़ फ़र्ज़ है और उसी दिन वापसी का इरादा हो, ज़वाल से पहले या बाद तो फ़र्ज़ नहीं, मगर पढ़े तो मुस्तह़िक़्के़ सवाब है । यूंही मुसाफ़िर शहर में आया और निय्यते इक़ामत न की तो जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं, गाउं वाला जुमुआ़ के लिये शहर को आया और कोई दूसरा काम भी मक़्सूद है तो इस सई (यानी जुमुआ़ के लिये आने) का भी सवाब पाएगा और जुमुआ़ पढ़ा तो जुमुआ़ का भी ।[7] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 6 ह़ज के दिनों में मिना में जुमुआ़ पढ़ा जाएगा जब कि ख़लीफ़ा या अमीरे ह़िजाज़ यानी शरीफ़े मक्का वहां मौजूद हो और अमीरे मौसिम यानी वोह कि ह़ाजियों के लिये ह़ाकिम बनाया गया है जुमुआ़ नहीं क़ाइम कर सकता । ह़ज के इलावा और दिनों में मिना में जुमुआ़ नहीं हो सकता और अ़रफ़ात में मुत़्लक़न नहीं हो सकता, न ह़ज के ज़माने में, न और

1 ..... "غنية المتملي"، فصل في صلاة الجمعة، ص٥٤٩ ـ ٥٥١، وغيرها.
2 ..... "غنية المتملي"، فصل في صلاة الجمعة، ص٥٤٩.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في جواز استنابة الخطيب، ج٣، ص١٦.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٧.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٥.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٠.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٥.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في حكم المرقى بين يدى الخطيب، ج٣، ص٤٤.

www.dawateislami.net

दिनों में ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 7 शह्र में मुतअ़द्दद जगह जुमुआ़ हो सकता है, ख़्वाह वोह शह्र छोटा हो या बड़ा और जुमुआ़ दो मस्जिदों में हो या ज़ियादा ।[2] (درمختار وغیرہ) मगर बिला ज़रूरत बहुत सी जगह जुमुआ़ क़ाइम न किया जाए कि जुमुआ़ शआ़इरे इस्लाम से है और जामेए़ जमाआ़त है और बहुत सी मस्जिदों में होने से वोह शौकते इस्लामी बाक़ी नहीं रहती जो इज्तिमाअ़ में होती, नीज़ दफ़्ए़ ह़रज के लिये तअ़द्दुद जाइज़ रखा गया है तो ख़्वाह म ख़्वाह जमाअ़त परागन्दा करना और मह़ल्ला मह़ल्ला जुमुआ़ क़ाइम करना न चाहिये। नीज़ एक बहुत ज़रूरी अम्र जिस की त़रफ़ अ़वाम को बिल्कुल तवज्जोह नहीं, येह है कि जुमुआ़ को और नमाज़ों की त़रह़ समझ रखा है कि जिस ने चाहा नया जुमुआ़ क़ाइम कर लिया और जिस ने चाहा पढ़ा दिया येह ना जाइज़ है, इस लिये कि जुमुआ़ क़ाइम करना बादशाहे इस्लाम या उस के नाइब का काम है, इस का बयान आगे आता है और जहां इस्लामी सल्त़नत न हो वहां जो सब से बड़ा फ़क़ीह सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो, अह़कामे शर्इ़या जारी करने में सुल्त़ाने इस्लाम के क़ाइम मक़ाम है, लिहाज़ा वोही जुमुआ़ क़ाइम करे, बग़ैर उस की इजाज़त के नहीं हो सकता और येह भी न हो तो आ़म लोग जिस को इमाम बनाएं, आ़लिम के होते हुए अ़वाम बत़ौरे ख़ुद किसी को इमाम नहीं बना सकते न येह हो सकता है कि दो चार शख़्स किसी को इमाम मुक़र्रर कर लें ऐसा जुमुआ़ कहीं से साबित नहीं ।

मस्अला 8 ज़ोह्रे एह़तियाती़ (कि जुमुआ़ के बाद चार रक्अ़त नमाज़ इस निय्यत से कि सब में पिछली ज़ोह्र जिस का वक़्त पाया और न पढ़ी) ख़ास लोगों के लिये है जिन को फ़र्ज़े जुमुआ़ अदा होने में शक न हो और अ़वाम कि अगर ज़ोह्रे एह़तियाती़ पढ़ें तो जुमुआ़ के अदा होने में उन्हें शक होगा वोह न पढ़ें और इस की चारों रक्अ़तें भरी पढ़ी जाएं और बेहतर येह है कि जुमुआ़ की पिछली चार सुन्नतें पढ़ कर ज़ोह्रे एह़तियाती़ पढ़ें फिर दो सुन्नतें और इन छे सुन्नतों में सुन्नते वक़्त की निय्यत करें ।[3] (عالمگیری،صغیری،ردالمحتار وغیرہا)

(2) सुल्त़ाने इस्लाम या उस का नाइब जिसे जुमुआ़ क़ाइम करने का हुक्म दिया[4]

मस्अला 9 सुल्त़ान आ़दिल हो या ज़ालिम जुमुआ़ क़ाइम कर सकता है। यूंही अगर ज़बरदस्ती बादशाह बन बैठा यानी शरअ़न उस को ह़क़्क़े इमामत न हो, मसलन क़रशी न हो

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٥.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص١٨، و "الفتاوى الرضوية"، ج٨، ص٣١٢.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٥.
و "صغيرى"، فصل في صلاة الجمعة، ص٢٧٨، و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في نية آخر ظهر بعد صلاة الجمعة، ج٣، ص٢١، و "الفتاوى الرضوية"، ج٨، ص٢٩٣.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٥.

www.dawateislami.net

या और कोई शर्त मफ़्क़ूद हो तो येह भी जुमुआ़ क़ाइम कर सकता है। यूंही अगर औ़रत बादशाह बन बैठी तो इस के हुक्म से जुमुआ़ क़ाइम होगा, येह ख़ुद नहीं क़ाइम कर सकती।[1]

(درمختار، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 10 बादशाह ने जिसे जुमुआ़ का इमाम मुक़र्रर कर दिया वोह दूसरे से भी पढ़वा सकता है अगर्चे उसे इस का इख़्तियार न दिया हो कि दूसरे से पढ़वा दे।[2] (درمختار)

मस्अला 11 इमामे जुमुआ़ की इजाज़त बिना किसी ने जुमुआ़ पढ़ाया अगर इमाम या वोह शख़्स जिस के हुक्म से जुमुआ़ क़ाइम होता है शरीक हो गया तो हो जाएगा वरना नहीं।[3]

(درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 12 हाकिमे शह्र का इन्तिक़ाल हो गया या फ़ितने के सबब कहीं चला गया और उस के ख़लीफ़ा (वली अ़ह्द) या क़ाज़ी माज़ून ने जुमुआ़ क़ाइम किया जाइज़ है।[4]

(درمختار وغیرہ)

मस्अला 13 किसी शह्र में बादशाहे इस्लाम वग़ैरा जिस के हुक्म से जुमुआ़ क़ाइम होता है न हो तो आ़म लोग जिसे चाहें इमाम बनावें। यूंही अगर बादशाह से इजाज़त न ले सकते हों जब भी किसी को मुक़र्रर कर सकते हैं।[5] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 14 हाकिमे शह्र ना बालिग़ या काफ़िर है और अब वोह ना बालिग़ बालिग़ हुवा या काफ़िर मुसलमान हुवा तो अब भी जुमुआ़ क़ाइम करने का उन को ह़क़ नहीं, अलबत्ता अगर जदीद हुक्म उन के लिये आया या बादशाह ने कह दिया था कि बालिग़ होने या इस्लाम लाने के बाद जुमुआ़ क़ाइम करना तो क़ाइम कर सकता है।[6] (عالمگیری)

मस्अला 15 ख़ुत्बे की इजाज़त जुमुआ़ की इजाज़त है और जुमुआ़ की इजाज़त ख़ुत्बे की इजाज़त है अगर्चे कह दिया हो कि ख़ुत्बा पढ़ना और जुमुआ़ न क़ाइम करना।[7] (عالمگیری)

मस्अला 16 बादशाह लोगों को जुमुआ़ क़ाइम करने से मन्अ़ कर दे तो लोग ख़ुद क़ाइम कर लें और अगर उस ने किसी शह्र की शह्रिय्यत बातिल कर दी तो लोगों को अब जुमुआ़ पढ़ने का इख़्तियार नहीं।[8] (ردالمحتار) येह उस वक़्त है कि बादशाहे इस्लाम ने शह्रिय्यत बातिल की हो और काफ़िर ने बातिल की तो पढ़ें।

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في صحة الجمعة... إلخ، ج٣، ص٩، وغيرهما.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص١٠.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في جواز استنابة الخطيب، ج٣، ص١٤.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص١٤.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٦. 6 ..... المرجع السابق.
7 ..... المرجع السابق. 8 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في جواز استنابة الخطيب، ج٣، ص١٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 17 इमामे जुमुआ़ को बादशाह ने माज़ूल कर दिया तो जब तक माज़ूली का परवाना न आए या ख़ुद बादशाह न आए माज़ूल न होगा।[1] (عالمگیری)

मस्अला 18 बादशाह सफ़र कर के अपने मुल्क के किसी शह्र में पहुंचा तो वहां जुमुआ़ ख़ुद क़ाइम कर सकता है।[2] (عالمگیری)

(3) वक़्ते ज़ोह्र

यानी वक़्ते ज़ोह्र में नमाज़ पूरी हो जाए। तो अगर अस्नाए नमाज़ में अगर्चे तशह्हुद के बाद अ़स्र का वक़्त आ गया जुमुआ़ बातिल हो गया, ज़ोह्र की क़ज़ा पढ़ें।[3] (عامۂ کتب)

मस्अला 19 मुक़्तदी नमाज़ में सो गया था आंख उस वक़्त खुली कि इमाम सलाम फेर चुका है तो अगर वक़्त बाक़ी है जुमुआ़ पूरा कर ले वरना ज़ोह्र की क़ज़ा पढ़े यानी नए तह़रीमा से।[4] (عالمگیری وغیرہ) यूंही अगर इतनी भीड़ थी कि रुकूओ़ सुजूद न कर सका यहां तक कि इमाम ने सलाम फेर दिया तो इस में भी वोही सूरतें हैं।[5] (درمختار)

(4) ख़ुत्बा

मस्अला 20 ख़ुत्बए जुमुआ़ में शर्त़ येह है कि :

(1) वक़्त में हो और

(2) नमाज़ से पहले और

(3) ऐसी जमाअ़त के सामने हो जो जुमुआ़ के लिये शर्त़ है यानी कम से कम ख़त़ीब के सिवा तीन मर्द और

(4) इतनी आवाज़ से हो कि पास वाले सुन सकें अगर कोई अम्र मानेअ़ न हो तो अगर ज़वाल से पेश्तर ख़ुत्बा पढ़ लिया या नमाज़ के बाद पढ़ा या तन्हा पढ़ा या औ़रतों बच्चों के सामने पढ़ा तो इन सब सूरतों में जुमुआ़ न हुवा और अगर बहरों या सोने वालों के सामने पढ़ा या ह़ाज़िरीन दूर हैं कि सुनते नहीं या मुसाफ़िर या बीमारों के सामने पढ़ा जो आ़क़िल बालिग़ मर्द हैं तो हो जाएगा।[6] (درمختار، ردالمحتار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٦. 2 ..... المرجع السابق.
3 ..... المرجع السابق. 4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٦.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢١.
6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في نية آخر ظهر بعد صلاة الجمعة، ج٣، ص٢١.

www.dawateislami.net

मस्अला 21 ख़ुत्बा ज़िक्रे इलाही का नाम है अगर्चे सिर्फ़ एक बार اَلْحَمْدُلِلّٰه या سُبْحٰنَ اللّٰه या لَااِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ कहा इसी क़दर से फ़र्ज़ अदा हो गया मगर इतने ही पर इक्तिफ़ा करना मक्रूह है ।[1] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 22 छींक आई और इस पर اَلْحَمْدُلِلّٰه कहा या तअ़ज्जुब के त़ौर पर سُبْحٰنَ اللّٰه या لَااِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ कहा तो फ़र्ज़ अदा न हुवा ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 23 ख़ुत्बा व नमाज़ में अगर ज़ियादा फ़ासिला हो जाए तो वोह ख़ुत्बा काफ़ी नहीं ।[3] (درمختار)

मस्अला 24 सुन्नत येह है कि दो ख़ुत्बे पढ़े जाएं और बड़े बड़े न हों अगर दोनों मिल कर त़िवाले मुफ़स्सल से बढ़ जाएं तो मक्रूह है ख़ुसूसन जाड़ों[4] में ।[5] (درمختار،غنیہ)

मस्अला 25 ख़ुत्बे में येह चीज़ें सुन्नत हैं :

(1) ख़त़ीब का पाक होना ।

(2) खड़ा होना ।

(3) ख़ुत्बे से पहले ख़त़ीब का बैठना ।

(4) ख़त़ीब का मिम्बर पर होना । और

(5) सामेईन की त़रफ़ मुंह । और

(6) क़िब्ले को पीठ करना और बेहतर येह है कि मिम्बर मेह़राब की बाईं जानिब हो ।

(7) ह़ाज़िरीन का मुतवज्जेह ब इमाम होना ।

(8) ख़ुत्बे से पहले اَعُوْذُ بِاللّٰهِ आहिस्ता पढ़ना ।

(9) इतनी बुलन्द आवाज़ से ख़ुत्बा पढ़ना कि लोग सुनें ।

(10) अलह़म्द से शुरूअ़ करना ।

(11) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सना करना ।

---

1 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ج۳، ص۲۲، وغیرہ .

2 ..... "الفتاوی الھندیۃ"، کتاب الصلاۃ، الباب السادس عشر في صلاۃ الجمعۃ، ج۱، ص۱٤٦.

3 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ج۳، ص۲۷.

4 ...यानी सर्दियों ।

5 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ج۳، ص۲۳.

www.dawateislami.net

(12) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह़दानिय्यत और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की रिसालत की शहादत देना।

(13) हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) पर दुरूद भेजना।

(14) कम से कम एक आयत की तिलावत करना।

(15) पहले ख़ुत्बे में वाज़ो नसीह़त होना।

(16) दूसरे में ह़म्दो सना व शहादत व दुरूद का इआ़दा करना।

(17) दूसरे में मुसलमानों के लिये दुआ़ करना।

(18) दोनों ख़ुत्बे हलके होना।

(19) दोनों के दरमियान ब क़दर तीन आयत पढ़ने के बैठना।

मुस्तह़ब येह है कि दूसरे ख़ुत्बे में आवाज़ ब निस्बत पहले के पस्त हो और ख़ुलफ़ाए राशिदीन व अ़म्मैने मुकर्रमैन ह़ज़रते ह़म्ज़ा व ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُم का ज़िक्र हो बेहतर येह है कि दूसरा ख़ुत्बा इस से शुरूअ़ करें :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ .[1]

(20) मर्द अगर इमाम के सामने हो तो इमाम की त़रफ़ मुंह करे और दह्ने बाएं हो तो इमाम की त़रफ़ मुड़ जाए। और

(21) इमाम से क़रीब होना अफ़्ज़ल है मगर येह जाइज़ नहीं कि इमाम से क़रीब होने के लिये लोगों की गरदनें फलांगे, अलबत्ता अगर इमाम अभी ख़ुत्बे को नहीं गया है और आगे जगह बाक़ी है तो आगे जा सकता है और ख़ुत्बा शुरूअ़ होने के बाद मस्जिद में आया तो मस्जिद के कनारे ही बैठ जाए।

(22) ख़ुत्बा सुनने की ह़ालत में दो ज़ानू बैठे जैसे नमाज़ में बैठते हैं।[2]

(عالمگیری، درمختار، غنیہ وغیرہا)

मस्अला 26 बादशाहे इस्लाम की ऐसी तारीफ़ जो उस में न हो ह़राम है, मसलन मालिके

1...ह़म्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये, हम उस की ह़म्द करते हैं और उस से मदद त़लब करते हैं और मग़्फ़िरत चाहते हैं और उस पर ईमान लाते हैं और उस पर तवक्कुल करते हैं और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की पनाह मांगते हैं अपने नफ़्सों की बुराई से और अपने आमाल की बदी से जिस को **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हिदायत करे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं और जिस को गुमराह करे उसे हिदायत करने वाला कोई नहीं। 12

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٦، ١٤٧.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٣ ـ ٢٦.

www.dawateislami.net

रिक़ाबुल उमम कि येह मह्ज़ झूट और ह़राम है ।[1] (درمختار)

मस्अला 27 ख़ुत्बे में आयत न पढ़ना या दोनों ख़ुत्बों के दरमियान जल्सा न करना या अस्नाए ख़ुत्बा में कलाम करना मक्रूह है, अलबत्ता अगर ख़त़ीब ने नेक बात का हुक्म किया या बुरी बात से मन्अ़ किया तो उसे इस की मुमानअ़त नहीं ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 28 ग़ैर अ़रबी में ख़ुत्बा पढ़ना या अ़रबी के साथ दूसरी ज़बान ख़ुत्बे में ख़ल्त़ करना ख़िलाफ़े सुन्नते मुतवारिसा है। यूंही ख़ुत्बे में अश्आ़र पढ़ना भी न चाहिए अगर्चे अ़रबी ही के हों। हां, दो एक शेर पन्दो नसाएह़ के अगर कभी पढ़ ले तो ह़रज नहीं ।

(5) जमाअ़त यानी इमाम के इलावा कम से कम तीन मर्द

मस्अला 29 अगर तीन ग़ुलाम या मुसाफ़िर या बीमार या गूंगे या अनपढ़ मुक़्तदी हों तो जुमुआ़ हो जाएगा और सिर्फ़ औ़रतें या बच्चे हों तो नहीं ।[3] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 30 ख़ुत्बे के वक़्त जो लोग मौजूद थे वोह भाग गए और दूसरे तीन शख़्स आ गए तो उन के साथ इमाम जुमुआ़ पढ़े यानी जुमुआ़ की जमाअ़त के लिये उन्हीं लोगों का होना ज़रूरी नहीं जो ख़ुत्बे के वक़्त ह़ाज़िर थे बल्कि उन के ग़ैर से भी हो जाएगा ।[4] (درمختار)

मस्अला 31 पहली रक्अ़त का सज्दा करने से पेश्तर सब मुक़्तदी भाग गए या सिर्फ़ दो रह गए तो जुमुआ़ बात़िल हो गया सिरे से ज़ोह्र की निय्यत बांधे और अगर सब भाग गए मगर तीन मर्द बाक़ी हैं या सज्दे के बाद भागे या तह़रीमा के बाद भाग गए थे मगर पहले रुकूअ़ में आ कर शामिल हो गए या ख़ुत्बे के बाद भाग गए और इमाम ने दूसरे तीन मर्दों के साथ जुमुआ़ पढ़ा तो इन सब सूरतों में जुमुआ़ जाइज़ है ।[5] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 32 इमाम ने जब اَللّٰہُ اَکْبَر कहा उस वक़्त मुक़्तदी बा वुज़ू थे मगर इन्हों ने निय्यत न बांधी फिर येह सब बे वुज़ू हो गए और दूसरे लोग आ गए येह चले गए तो हो गया और अगर तह़रीमा ही के वक़्त सब मुक़्तदी बे वुज़ू थे फिर और लोग आ गए तो इमाम सिरे से

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٤.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٦.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٨.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٧.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٧.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في قول الخطيب... إلخ، ج٣، ص٢٧.

www.dawateislami.net

तह़रीमा बांधे ।[1] (خانیہ)

(6) इज़्ने आ़म

यानी मस्जिद का दरवाज़ा खोल दिया जाए कि जिस मुसलमान का जी चाहे आए किसी की रोक टोक न हो, अगर जामेअ़ मस्जिद में जब लोग जम्अ़ हो गए दरवाज़ा बन्द कर के जुमुआ़ पढ़ा, न हुवा ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 33 बादशाह ने अपने मकान में जुमुआ़ पढ़ा और दरवाज़ा खोल दिया लोगों को आने की आ़म इजाज़त है तो हो गया लोग आएं या न आएं और दरवाज़ा बन्द कर के पढ़ा या दरबानों को बिठा दिया कि लोगों को आने न दें तो जुमुआ़ न हुवा ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 34 औ़रतों को अगर मस्जिदे जामेअ़ से रोका जाए तो इज़्ने आ़म के ख़िलाफ़ न होगा कि उन के आने में ख़ौफ़े फ़ितना है ।[4] (ردالمحتار)

जुमुआ़ वाजिब होने के लिये ग्यारह शर्तें हैं । इन में से एक भी मादूम हो तो फ़र्ज़ नहीं फिर भी अगर पढ़ेगा तो हो जाएगा बल्कि मर्द आ़क़िल बालिग़ के लिये जुमुआ़ पढ़ना अफ़्ज़ल है और औ़रत के लिये ज़ोह्र अफ़्ज़ल । हां, औ़रत का मकान अगर मस्जिद से बिल्कुल मुत्तसिल है कि घर में इमामे मस्जिद की इक़्तिदा कर सके तो उस के लिये भी जुमुआ़ अफ़्ज़ल है और ना बालिग़ ने जुमुआ़ पढ़ा तो नफ़्ल है कि उस पर नमाज़ फ़र्ज़ ही नहीं ।[5] (درمختار،ردالمحتار)

(1) शह्र में मुक़ीम होना ।

(2) सिह्ह़त यानी मरीज़ पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं । मरीज़ से मुराद वोह है कि मस्जिदे जुमुआ़ तक न जा सकता हो या चला तो जाएगा मगर मरज़ बढ़ जाएगा या देर में अच्छा होगा ।[6] (غنیہ) शैख़े फ़ानी मरीज़ के हुक्म में है ।[7] (درمختار)

मस्अला 35 जो शख़्स मरीज़ का तीमारदार हो, जानता है कि जुमुआ़ को जाएगा तो मरीज़ दिक़्क़तों में पड़ जाएगा और उस का कोई पुरसाने ह़ाल न होगा तो उस तीमारदार पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं ।[8] (درمختار وغیرہ)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٨. 2 ..... المرجع السابق.
3 ..... المرجع السابق. 4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في قول الخطيب... إلخ، ج٣، ص٢٩.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٠.
6 ..... "غنية المتملي"، فصل في صلاة الجمعة، ص٥٤٨. 7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣١.
8 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣١، وغيره.

www.dawateislami.net

(3) आज़ाद होना। ग़ुलाम पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं और उस का आक़ा मन्अ़ कर सकता है।[1] (عالمگیری)

मस्अला 36 मुकातब ग़ुलाम पर जुमुआ़ वाजिब है। यूंही जिस ग़ुलाम का कुछ हिस्सा आज़ाद हो चुका हो बाक़ी के लिये सआ़यत करता हो यानी बक़िय्या आज़ाद होने के लिये कमा कर अपने आक़ा को देता हो उस पर भी जुमुआ़ फ़र्ज़ है।[2] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 37 जिस ग़ुलाम को उस के मालिक ने तिजारत करने की इजाज़त दी हो या उस के ज़िम्मे कोई ख़ास मिक़्दार कमा कर लाना मुक़र्रर किया हो उस पर जुमुआ़ वाजिब है।[3] (عالمگیری)

मस्अला 38 मालिक अपने ग़ुलाम को साथ ले कर, मस्जिदे जामेअ़ को गया और ग़ुलाम को दरवाज़े पर छोड़ा कि सुवारी की हिफ़ाज़त करे तो अगर जानवर की हिफ़ाज़त में ख़लल न आए पढ़ ले।[4] (عالمگیری)

मस्अला 39 मालिक ने ग़ुलाम को जुमुआ़ पढ़ने की इजाज़त दे दी जब भी वाजिब न हुवा और बिला इजाज़ते मालिक अगर जुमुआ़ या ईद को गया अगर जानता है कि मालिक नाराज़ न होगा तो जाइज़ है वरना नहीं।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 40 नौकर और मज़दूर को जुमुआ़ पढ़ने से नहीं रोक सकता, अलबत्ता अगर मस्जिदे जामेअ़ दूर है तो जितना ह़रज हुवा है उस की मज़दूरी में कम कर सकता है और मज़दूर इस का मुत़ालबा भी नहीं कर सकता।[6] (عالمگیری)

(4) मर्द होना

(5) बालिग़ होना

(6) आ़क़िल होना। येह दोनों शर्तें ख़ास जुमुआ़ के लिये नहीं बल्कि हर इ़बादत के वुजूब में अ़क़्ल व बुलूग़ शर्त़ है।

(7) अंख्यारा होना।[7]

मस्अला 41 यक चश्म और जिस की निगाह कमज़ोर हो उस पर जुमुआ़ फ़र्ज़ है। यूंही जो अन्धा मस्जिद में अज़ान के वक़्त बा वुज़ू हो उस पर जुमुआ़ फ़र्ज़ है और वोह नाबीना जो

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٤.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٤. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣١.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٤. 4 ..... المرجع السابق.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٢.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٤.
7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٢.

www.dawateislami.net

ख़ुद मस्जिदे जुमुआ़ तक बिला तकल्लुफ़ न जा सकता हो अगर्चे मस्जिद तक कोई ले जाने वाला हो, उजरते मिस्ल पर ले जाए या बिला उजरत उस पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं ।[1]

(درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 42 ✧ बाज़ नाबीना बिला तकल्लुफ़ बग़ैर किसी की मदद के बाज़ारों रास्तों में चलते फिरते हैं और जिस मस्जिद में चाहें बिला पूछे जा सकते हैं उन पर जुमुआ़ फ़र्ज़ है ।[2]

(ردالمحتار)

(8) चलने पर क़ादिर होना ।

मस्अला 43 ✧ अपाहज पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं, अगर्चे कोई ऐसा हो कि उसे उठा कर मस्जिद में रख आएगा ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 44 ✧ जिस का एक पाउं कट गया हो या फ़ालिज से बेकार हो गया हो, अगर मस्जिद तक जा सकता हो तो उस पर जुमुआ़ फ़र्ज़ है वरना नहीं ।[4] (درمختار وغیرہ)

(9) क़ैद में न होना, मगर जब कि किसी दैन की वज्ह से क़ैद किया गया और मालदार है यानी अदा करने पर क़ादिर है तो उस पर फ़र्ज़ है ।[5] (ردالمحتار)

(10) बादशाह या चोर वग़ैरा किसी ज़ालिम का ख़ौफ़ न होना, मुफ़्लिस क़र्ज़दार को अगर क़ैद का अन्देशा हो तो उस पर फ़र्ज़ नहीं ।[6] (ردالمحتار)

(11) मींह या आंधी या ओले या सर्दी का न होना यानी इस क़दर कि इन से नुक़्सान का ख़ौफ़े सहीह़ हो ।[7]

मस्अला 45 ✧ जुमुआ़ की इमामत हर मर्द कर सकता है जो और नमाज़ों में इमाम हो सकता हो अगर्चे उस पर जुमुआ़ फ़र्ज़ न हो जैसे मरीज़, मुसाफ़िर, ग़ुलाम ।[8] (درمختار) यानी जब कि सुल्त़ाने इस्लाम या उस का नाइब या जिस को उस ने इजाज़त दी बीमार हो या मुसाफ़िर तो येह सब नमाज़े जुमुआ़ पढ़ा सकते हैं या इन्हों ने किसी मरीज़ या मुसाफ़िर या ग़ुलाम या किसी लाइक़े इमामत को इजाज़त दी हो या ब ज़रूरत आ़म लोगों ने किसी ऐसे को इमाम मुक़र्रर किया हो जो इमामत कर सकता हो, येह नहीं कि बत़ौरे ख़ुद जिस का जी चाहे जुमुआ़ पढ़ावे कि यूं जुमुआ़ न होगा ।

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٢.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٢.
3 ..... المرجع السابق. 4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٢، وغيره .
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٣. 6 ..... المرجع السابق.
7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٣.
8 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 46 जिस पर जुमुआ़ फ़र्ज़ है उसे शह्र में जुमुआ़ हो जाने से पहले ज़ोह्र पढ़ना मक्रूहे तह्रीमी है, बल्कि इमाम इब्ने हुमाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि ह़राम है और पढ़ लिया जब भी जुमुआ़ के लिये जाना फ़र्ज़ है और जुमुआ़ हो जाने के बाद ज़ोह्र पढ़ने में कराहत नहीं, बल्कि अब तो ज़ोह्र ही पढ़ना फ़र्ज़ है, अगर जुमुआ़ दूसरी जगह न मिल सके मगर जुमुआ़ तर्क करने का गुनाह उस के सर रहा।[1] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 47 येह शख़्स कि जुमुआ़ होने से पहले ज़ोह्र पढ़ चुका था नादिम हो कर घर से जुमुआ़ की निय्यत से निकला अगर उस वक़्त इमाम नमाज़ में हो तो नमाज़े ज़ोह्र जाती रही, जुमुआ़ मिल जाए तो पढ़ ले वरना ज़ोह्र की नमाज़ फिर पढ़े अगर्चे मस्जिद दूर होने के सबब जुमुआ़ न मिला हो।[2] (درمختار)

मस्अला 48 मस्जिदे जामेअ़ में येह शख़्स है जिस ने ज़ोह्र की नमाज़ पढ़ ली है और जिस जगह नमाज़ पढ़ी वहीं बैठा है तो जब तक जुमुआ़ शुरूअ़ न करे ज़ोह्र बातिल नहीं और अगर ब क़स्दे जुमुआ़ वहां से हटा तो बातिल हो गई।[3] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 49 येह शख़्स अगर मकान से निकला ही नहीं या किसी और ज़रूरत से निकला या इमाम के फ़ारिग़ होने के वक़्त या फ़ारिग़ होने के बाद निकला या उस दिन जुमुआ़ पढ़ा ही न गया या लोगों ने जुमुआ़ पढ़ना तो शुरूअ़ किया था मगर किसी ह़ादिसे के सबब पूरा न किया तो इन सब सूरतों में ज़ोह्र बातिल नहीं।[4] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 50 जिन सूरतों में ज़ोह्र बातिल होना कहा गया इस से मुराद फ़र्ज़ जाता रहना है कि येह नमाज़ अब नफ़्ल हो गई।[5] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 51 जिस पर जुमुआ़ फ़र्ज़ था उस ने ज़ोह्र की नमाज़ में इमामत की फिर जुमुआ़ को निकला तो उस की ज़ोह्र बातिल है मगर मुक़्तदियों में जो जुमुआ़ को न निकला उस के फ़र्ज़ बातिल न हुए।[6] (درمختار)

मस्अला 52 जिस पर किसी उ़ज़्र के सबब जुमुआ़ फ़र्ज़ न हो वोह अगर ज़ोह्र पढ़ कर जुमुआ़ के लिये निकला तो उस की नमाज़ भी जाती रही, इन शराइत़ के साथ जो ऊपर मज़्कूर हुईं।[7] (درمختار)

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٣.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٤.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٤.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٩.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٥. 6 ..... المرجع السابق. 7 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 53 मरीज़ या मुसाफ़िर या क़ैदी या कोई और जिस पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं उन लोगों को भी जुमुआ़ के दिन शह्र में जमाअ़त के साथ ज़ोह्र पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है, ख़्वाह जुमुआ़ होने से पेश्तर जमाअ़त करें या बाद में। यूंही जिन्हें जुमुआ़ न मिला वोह भी बग़ैर अज़ानो इक़ामत ज़ोह्र की नमाज़ तन्हा तन्हा पढ़ें, जमाअ़त उन के लिये भी मम्नूअ़ है।[1] (درمختار)

मस्अला 54 उ़लमा फ़रमाते हैं जिन मस्जिदों में जुमुआ़ नहीं होता, उन्हें जुमुआ़ के दिन ज़ोह्र के वक़्त बन्द रखें।[2] (درمختار)

मस्अला 55 गाउं में जुमुआ़ के दिन भी ज़ोह्र की नमाज़ अज़ानो इक़ामत के साथ बा जमाअ़त पढ़ें।[3] (عالمگیری)

मस्अला 56 माज़ूर अगर जुमुआ़ के दिन ज़ोह्र पढ़े तो मुस्तह़ब येह है कि नमाज़े जुमुआ़ हो जाने के बाद पढ़े और ताख़ीर न की तो मक्रूह है।[4] (درمختار)

मस्अला 57 जिस ने जुमुआ़ का क़ादा पा लिया या सज्दए सह्व के बाद शरीक हुवा उसे जुमुआ़ मिल गया। लिहाज़ा अपनी दो ही रक्अ़तें पूरी करे।[5] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 58 नमाज़े जुमुआ़ के लिये पेश्तर से जाना और मिस्वाक करना और अच्छे और सफ़ेद कपड़े पहनना और तेल और ख़ुश्बू लगाना और पहली सफ़ में बैठना मुस्तह़ब है और ग़ुस्ल सुन्नत।[6] (عالمگیری،غنیہ)

मस्अला 59 जब इमाम ख़ुत्बे के लिये खड़ा हुवा उस वक़्त से ख़त्मे नमाज़ तक नमाज़ व अज़्कार और हर क़िस्म का कलाम मन्अ़ है, अलबत्ता साह़िबे तरतीब अपनी क़ज़ा नमाज़ पढ़ ले। यूंही जो शख़्स सुन्नत या नफ़्ल पढ़ रहा है जल्द जल्द पूरी कर ले।[7] (درمختار)

मस्अला 60 जो चीज़ें नमाज़ में ह़राम हैं मसलन खाना पीना, सलाम व जवाबे सलाम वग़ैरा येह सब ख़ुत्बे की ह़ालत में भी ह़राम हैं यहां तक कि अम्र बिल मारूफ़। हां, ख़त़ीब अम्र बिल मारूफ़ कर सकता है, जब ख़ुत्बा पढ़े तो तमाम ह़ाज़िरीन पर सुनना और चुप रहना फ़र्ज़ है, जो लोग इमाम से दूर हों कि ख़ुत्बे की आवाज़ उन तक नहीं पहुंचती उन्हें भी चुप

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٦. 2 ..... المرجع السابق.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٩.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٦.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٩.
6 ..... المرجع السابق. و "غنية المتملي"، فصل في صلاة الجمعة، ص٥٥٩.
7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٨.
و "جدالممتار" على "ردالمحتار" كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج١، ص٣٧٨.

www.dawateislami.net

रहना वाजिब है, अगर किसी को बुरी बात करते देखें तो हाथ या सर के इशारे से मन्अ़ कर सकते हैं ज़बान से ना जाइज़ है ।[1] (درمختار)

मस्अला 61 ख़ुत्बा सुनने की ह़ालत में देखा कि अन्धा कूंएं में गिरा चाहता है या किसी को बिच्छू वग़ैरा काटना चाहता है तो ज़बान से कह सकते हैं, अगर इशारा या दबाने से बता सकें तो इस सूरत में भी ज़बान से कहने की इजाज़त नहीं ।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 62 ख़त़ीब ने मुसलमानों के लिये दुआ़ की तो सामेईन को हाथ उठाना या आमीन कहना मन्अ़ है, करेंगे गुनहगार होंगे । ख़ुत्बे में दुरूद शरीफ़ पढ़ते वक़्त ख़त़ीब का दाह़ने बाएं मुंह करना बिद्अ़त है ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 63 हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का नामे पाक ख़त़ीब ने लिया तो ह़ाज़िरीन दिल में दुरूद शरीफ़ पढ़ें, ज़बान से पढ़ने की इस वक़्त इजाज़त नहीं ।[4] यूंही सह़ाबए किराम के ज़िक्र पर इस वक़्त رَضِیَ اللهُ عَنْهُم ज़बान से कहने की इजाज़त नहीं । (درمختار وغیرہ)

मस्अला 64 ख़ुत्बए जुमुआ़ के इ़लावा और ख़ुत्बों का सुनना भी वाजिब है, मसलन ख़ुत्बए ईदैन व निकाह़ वग़ैरहुमा ।[5] (درمختار)

मस्अला 65 पहली अज़ान के होते ही सई वाजिब है और बैअ़ वग़ैरा उन चीज़ों का जो सई के मुनाफ़ी हों छोड़ देना वाजिब यहां तक कि रास्ता चलते हुए अगर ख़रीदो फ़रोख़्त की तो येह भी ना जाइज़ और मस्जिद में ख़रीदो फ़रोख़्त तो सख़्त गुनाह है और खाना खा रहा था कि अज़ाने जुमुआ़ की आवाज़ आई, अगर येह अन्देशा हो कि खाएगा तो जुमुआ़ फ़ौत हो जाएगा तो खाना छोड़ दे और जुमुआ़ को जाए, जुमुआ़ के लिये इत्मीनान व वक़ार के साथ जाए ।[6] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 66 ख़त़ीब जब मिम्बर पर बैठे तो उस के सामने दोबारा अज़ान दी जाए ।[7] (متون)

येह हम ऊपर बयान कर आए कि सामने से येह मुराद नहीं कि मस्जिद के अन्दर मिम्बर से मुत्तसिल हो । कि मस्जिद के अन्दर अज़ान कहने को फ़ुक़हाए किराम मक्रूह फ़रमाते हैं ।

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٣٩.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٩.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة، ج٣، ص٣٨، و مطلب في قول الخطيب... إلخ، ص٢٤.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٤٠. 5 ..... المرجع السابق.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السادس عشر في صلاة الجمعة، ج١، ص١٤٩.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٤٢.
7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٤٢.

www.dawateislami.net

मस्अला 67 अक्सर जगह देखा गया कि अज़ाने सानी पस्त आवाज़ से कहते हैं, येह न चाहिये बल्कि इसे भी बुलन्द आवाज़ से कहें कि इस से भी एलान मक़्सूद है और जिस ने पहली न सुनी इसे सुन कर ह़ाज़िर हो।[1] (بحر وغیرہ)

मस्अला 68 ख़ुत़्बा ख़त्म हो जाए तो फ़ौरन इक़ामत कही जाए, ख़ुत़्बा व इक़ामत के दरमियान दुन्या की बात करना मक्रूह है।[2] (درمختار)

मस्अला 69 जिस ने ख़ुत़्बा पढ़ा वोही नमाज़ पढ़ाए, दूसरा न पढ़ाए और अगर दूसरे ने पढ़ा दी जब भी हो जाएगी जब कि वोह माज़ून[3] हो। यूंही अगर ना बालिग़ ने बादशाह के हुक्म से ख़ुत़्बा पढ़ा और बालिग़ ने नमाज़ पढ़ाई जाइज़ है।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 70 नमाज़े जुमुआ़ में बेहतर येह है कि पहली रक्अ़त में सूरए जुमुअ़ह और दूसरी में सूरए मुनाफ़िक़ून या पहली में سَبِّحِ اسْمَ और दूसरी में هَلْ اَتٰىكَ पढ़े, मगर हमेशा इन्हीं को न पढ़े कभी कभी और सूरतें भी पढ़े।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 71 जुमुआ़ के दिन अगर सफ़र किया और ज़वाल से पहले आबादिये शह्र से बाहर हो गया तो ह़रज नहीं वरना मम्नूअ़ है।[6] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 72 ह़जामत बनवाना और नाख़ुन तरश्वाना जुमुआ़ के बाद[7] अफ़्ज़ल है।[8] (درمختار)

मस्अला 73 सुवाल करने वाला अगर नमाज़ियों के आगे से गुज़रता हो या गरदनें फलांगता हो या बिला ज़रूरत मांगता हो तो सुवाल भी ना जाइज़ है और ऐसे साइल को देना भी ना जाइज़।[9] (ردالمحتار) बल्कि मस्जिद में अपने लिये मुत़्लक़न सुवाल की इजाज़त नहीं।

मस्अला 74 जुमुआ़ के दिन या रात में सूरए कह्फ़ की तिलावत अफ़्ज़ल है और ज़ियादा बुज़ुर्गी रात में पढ़ने की है, नसाई बैहक़ी ब सनदे सह़ीह़ अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से

1 ..... "البحر الرائق"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٢٧٣. وغيره

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٤٣.

3 ...यानी जिस को इजाज़त दी गई।

4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في حكم المرقي... إلخ، ج٣، ص٤٣.

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: أمر الخليفة... إلخ، ج٣، ص٦٤.
و "البحر الرائق"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجمعة، ج٢، ص٢٧٥.

6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٤٤.

7 ...जुमुआ़ से पहले और बाद में नाख़ुन वग़ैरा तरश्वाना जाइज़ है अलबत्ता ह़दीस में जुमुआ़ से पहले का ज़िक्र आया है जैसा कि सदरुश्शरीअ़ह ने बहारे शरीअ़त हिस्सा 16 में येह ह़दीस रक़म फ़रमाई है कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जुमुआ़ के दिन नमाज़ के लिये जाने से पहले मूंछें कतरवाते और नाख़ुन तरश्वाते थे। इल्मिय्या (شعب الايمان، باب العشرون من شعب لايمان...الخ، فضل الوضوء، ج٣، ص٢٤)۔

8 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٤٦.

9 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، مطلب في الصدقة على سؤال المسجد، ج٣، ص٤٧.

www.dawateislami.net

रावी कि फ़रमाते हैं : ''जो शख़्स सूरए कह्फ़ जुमुआ़ के दिन पढ़े, उस के लिये दोनों जुमुओं के दरमियान नूर रोशन होगा।''[1]

और दारिमी की रिवायत में है : ''जो शबे जुमुआ़ में सूरए कह्फ़ पढ़े उस के लिये वहां से काबे तक नूर रोशन होगा।''[2]

और अबू बक्र इब्ने मर्दवैह की रिवायत इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से है कि फ़रमाते हैं : ''जो जुमुआ़ के दिन सूरए कह्फ़ पढ़े उस के क़दम से आस्मान तक नूर बुलन्द होगा जो क़ियामत को उस के लिये रोशन होगा और दो जुमुओं के दरमियान जो गुनाह हुए हैं बख़्श दिये जाएंगे।''[3] इस ह़दीस की अस्नाद में कोई ह़रज नहीं। حٰمٓ الدخان पढ़ने की भी फ़ज़ीलत आई है।

त़बरानी ने अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : ''जो शख़्स जुमुआ़ के दिन या रात में حٰمٓ الدخان पढ़े, उस के लिये **अल्लाह** तआ़ला जन्नत में एक घर बनाएगा।''[4] और अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि ''उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी।''[5] और एक रिवायत में है : ''जो किसी रात में حٰمٓ الدخان पढ़े, उस के लिये सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इस्तिग़्फ़ार करेंगे।''[6] ''जुमुआ़ के दिन या रात में जो सूरए यासीन पढ़े, उस की मग़्फ़िरत हो जाए।''[7]

फ़ाएदा : जुमुआ़ के दिन रूहें जम्अ़ होती हैं, लिहाज़ा इस में ज़ियारते क़ुबूर करनी चाहिये और इस रोज़ जहन्नम नहीं भड़काया जाता।[8] (درمختار)

ईदैन का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ﴾[9]

रोज़ों की गिनती पूरी करो और **अल्लाह** की बड़ाई बोलो कि उस ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई।

1 ..... "السنن الصغرى" للبيهقي، كتاب الصلاة، باب فضل الجمعة، الحديث: ٦٠٨، ج١، ص٢١٠.
2 ..... "سنن الدارمي"، كتاب فضائل القرآن، باب في فضل سورة الكهف، الحديث: ٣٤٠٧، ج٢، ص٥٤٦.
3 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الجمعة، الترغيب في قرأة سورة الكهف... إلخ، الحديث: ٢، ج١، ص٢٩٨.
4 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ٨٠٢٦، ج٨، ص٢٦٤.
5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب فضائل القرآن، باب ماجاء في فضل حٰمٓ الدخان، الحديث: ٢٨٩٨، ج٤، ص٤٠٧.
6 ..... "جامع الترمذي"، أبواب فضائل القرآن، باب ماجاء في فضل حٰمٓ الدخان، الحديث: ٢٨٩٧، ج٤، ص٤٠٦.
7 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الجمعة، الترغيب في قرأة سورة الكهف... إلخ، الحديث: ٤، ج١، ص٢٩٨.
8 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الجمعة، ج٣، ص٤٩. 9 ..... پ٢، البقرة: ١٨٥.

www.dawateislami.net

और फ़रमाता है :

﴿فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝﴾[1]

अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) के लिये नमाज़ पढ़ और क़ुरबानी कर।

ह़दीस 1 इब्ने माजह अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो ईदैन की रातों में क़ियाम करे, उस का दिल न मरेगा जिस दिन लोगों के दिल मरेंगे।"[2]

ह़दीस 2 अस्बहानी मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि फ़रमाते हैं : "जो पांच रातों में शब बेदारी करे उस के लिये जन्नत वाजिब है, ज़ुल ह़िज्जा की आठवीं, नवीं, दसवीं रातें और ईदुल फ़ित्र की रात और शाबान की पन्दरहवीं रात[3] यानी शबे बराअत।"

ह़दीस 3 अबू दावूद अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जब मदीने में तशरीफ़ लाए, उस ज़माने में अहले मदीना साल में दो दिन ख़ुशी करते थे (मोहरगान व नैरोज़), फ़रमाया : येह क्या दिन हैं ? लोगों ने अ़र्ज़ की : जाहिलिय्यत में हम इन दिनों में ख़ुशी करते थे, फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने इन के बदले में इन से बेहतर दो दिन तुम्हें दिये, **ईदे अज़्ह़ा** व **ईदुल फ़ित्र** के दिन।"[4]

ह़दीस 4 व 5 तिरमिज़ी व इब्ने माजह व दारिमी बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि "हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ईदुल फ़ित्र के दिन कुछ खा कर नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते और ईदे अज़्ह़ा को न खाते, जब तक नमाज़ न पढ़ लेते।"[5]

और बुख़ारी की रिवायत अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से है कि "ईदुल फ़ित्र के दिन तशरीफ़ न ले जाते, जब तक चन्द खजूरें न तनावुल फ़रमा लेते और ताक़ होतीं।"[6]

ह़दीस 6 तिरमिज़ी व दारिमी ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत की, कि "ईद को एक रास्ते से तशरीफ़ ले जाते और दूसरे से वापस होते।"[7]

---

1 ..... پ ۳۰، الکوثر: ۲.

2 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الصيام، باب فيمن قام ليلتي العيدين، الحديث: ۱۷۸۲، ج۲، ص۳٦٥.

3 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب العيدين و الأضحية، الترغيب في إحياء ليلتي العيدين، الحديث: ۲، ج۲، ص۹۸.

4 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الصلاة، باب صلاة العيدين، الحديث: ۱۱۳٤، ج۱، ص٤۱۸.

5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب العيدين، باب ماجاء في الأكل يوم الفطر قبل الخروج، الحديث: ٥٤۲، ج۲، ص۷۰.

6 ..... "صحيح البخاري"، كتاب العيدين، باب الأكل يوم الفطر قبل الخروج، الحديث: ۹٥۳، ج۱، ص۳۲۸.

7 ..... "جامع الترمذي"، أبواب العيدين، باب ماجاء في خروج النبي صلى الله عليه وسلم إلى العيد... إلخ، الحديث: ٥٤۱، ج۲، ص٦۹.

www.dawateislami.net

हदीस 7 अबू दावूद व इब्ने माजह की रिवायत इन्हीं से है कि "एक मरतबा ईद के दिन बारिश हुई तो मस्जिद में हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने ईद की नमाज़ पढ़ी।"[1]

हदीस 8 सहीहैन में इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से मरवी कि "हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने ईद की नमाज़ दो रक्अ़त पढ़ी, न इस के क़ब्ल नमाज़ पढ़ी न बाद।"[2]

हदीस 9 सहीह़ मुस्लिम शरीफ़ में है जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللهُ عَنْه कहते हैं : मैं ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के साथ ईद की नमाज़ पढ़ी एक दो मरतबा नहीं (बल्कि बारहा), न अज़ान हुई न इक़ामत।[3]

मसाइले फ़िक़्हिय्या

ईदैन की नमाज़ वाजिब है मगर सब पर नहीं बल्कि उन्हीं पर जिन पर जुमुआ़ वाजिब है और इस की अदा की वोही शर्तें हैं जो जुमुआ़ के लिये हैं सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि जुमुआ़ में ख़ुत्बा शर्त है और ईदैन में सुन्नत, अगर जुमुआ़ में ख़ुत्बा न पढ़ा तो जुमुआ़ न हुवा और इस में न पढ़ा तो नमाज़ हो गई मगर बुरा किया। दूसरा फ़र्क़ येह है कि जुमुआ़ का ख़ुत्बा क़ब्ले नमाज़ है और ईदैन का बादे नमाज़, अगर पहले पढ़ लिया तो बुरा किया, मगर नमाज़ हो गई लौटाई नहीं जाएगी और ख़ुत्बे का भी इआ़दा नहीं और ईदैन में न अज़ान है न इक़ामत, सिर्फ़ दो बार इतना कहने की इजाज़त है। اَلصَّلٰوةُ جَامِعَةٌ[4] (عالمگیری، درمختار وغیرہما) बिला वज्ह ईद की नमाज़ छोड़ना गुमराही व बिदअ़त है।[5] (جوہرہ نیرہ)

मस्अला 1 गाउं में ईदैन की नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है।[6] (درمختار)

---

1 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الصلاة، باب يصلى بالناس العيد في المسجد إذا كان يوم مطر، الحديث: ١١٦٠، ج١، ص٤٢٥.

2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب العيدين، باب الخطبة بعد العيد، الحديث: ٩٦٤، ج١، ص٣٣١.

3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة العيدين، باب كتاب صلاة العيدين، الحديث: ٨٨٧، ص٤٣٩.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١، ص١٥٠.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٥١، وغيرهما.

5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ص١١٩.

6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٥٢.

www.dawateislami.net

रोज़े ईद के मुस्तह़ब्बात

मस्अला 2 ईद के दिन येह उमूर मुस्तह़ब हैं :

(1) ह़जामत बनवाना। (2) नाख़ुन तरश्वाना।

(3) ग़ुस्ल करना। (4) मिस्वाक करना।[1]

(5) अच्छे कपड़े पहनना, नया हो तो नया वरना धुला।

(6) अंगूठी पहनना।[2] (7) ख़ुश्बू लगाना।

(8) सुब्ह़ की नमाज़ मस्जिदे मह़ल्ला में पढ़ना।

(9) ईदगाह जल्द चला जाना।

(10) नमाज़ से पहले सदक़ए फ़ित्र अदा करना।

(11) ईदगाह को पैदल जाना।

(12) दूसरे रास्ते से वापस आना।

(13) नमाज़ को जाने से पेश्तर चन्द खजूरें खा लेना। तीन, पांच, सात या कमो बेश मगर ताक़ हों, खजूरें न हों तो कोई मीठी चीज़ खा ले, नमाज़ से पहले कुछ न खाया तो गुनहगार न हुवा मगर इ़शा तक न खाया तो इ़ताब[3] किया जाएगा।[4] (कुतुबे कसीरा)

मस्अला 3 सुवारी पर जाने में भी ह़रज नहीं मगर जिस को पैदल जाने पर क़ुदरत हो

---

1 ...येह उस के इलावा है जो वुज़ू में की जाती है कि वुज़ू में सुन्नते मुअक्कदा है और ईद की उस में ख़ुसूसिय्यत नहीं, बल्कि वोह तो हर वुज़ू के लिये है। (ردالمحتار) 12 मिन्ह حفظہ ربہ

2 ...इस की तफ़्सीली मालूमात के लिये बहारे शरीअ़त हिस्सा 16 में "**अंगूठी और ज़ेवर का बयान**" मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास** अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "**नमाज़ के अह़काम**" में फ़रमाते हैं : जब कभी अंगूठी पहनिये तो इस बात का ख़ास ख़याल रखिये कि सिर्फ़ साढ़े चार माशा से कम वज़्न चांदी की एक ही अंगूठी पहनिये। एक से ज़ियादा न पहनिये और उस एक अंगूठी में भी नगीना एक ही हो, एक से ज़ियादा नगीने न हों, बग़ैर नगीने की भी मत पहनिये। नगीने के वज़्न की कोई क़ैद नहीं, चांदी का छल्ला या चांदी के बयान कर्दा वज़्न वग़ैरा के इलावा किसी भी धात की अंगूठी या छल्ला मर्द नहीं पहन सकता। ("नमाज़ के अह़काम", स. 444, 445)

3 ...यानी सरज़निश।

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١، ص١٤٩.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٥٤، وغيرهما.

www.dawateislami.net

उस के लिये पैदल जाना अफ़्ज़ल है और वापसी में सुवारी पर आने में ह़रज नहीं ।[1]

(جوہرہ، عالمگیری)

मस्अला 4 ईदगाह को नमाज़ के लिये जाना सुन्नत है अगर्चे मस्जिद में गुन्जाइश हो और ईदगाह में मिम्बर बनाने या मिम्बर ले जाने में ह़रज नहीं ।[2] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 5 (14) ख़ुशी ज़ाहिर करना

(15) कसरत से सदक़ा देना

(16) ईदगाह को इत्मीनानो वक़ार और नीची निगाह किये जाना

(17) आपस में मुबारक देना मुस्तह़ब है और रास्ते में बुलन्द आवाज़ से तक्बीर न कहे ।[3] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 6 नमाज़े ईद से क़ब्ल नफ़्ल नमाज़ मुत्लक़न मक्रूह है, ईदगाह में हो या घर में उस पर ईद की नमाज़ वाजिब हो या नहीं, यहां तक कि औ़रत अगर चाश्त की नमाज़ घर में पढ़ना चाहे तो नमाज़ हो जाने के बाद पढ़े और नमाज़े ईद के बाद ईदगाह में नफ़्ल पढ़ना मक्रूह है, घर में पढ़ सकता है बल्कि मुस्तह़ब है कि चार रक्अ़तें पढ़े । येह अह़्काम ख़वास के हैं, अ़वाम अगर नफ़्ल पढ़ें अगर्चे नमाज़े ईद से पहले अगर्चे ईदगाह में उन्हें मन्अ़ न किया जाए ।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 7 नमाज़ का वक़्त ब क़दर एक नेज़ा आफ़्ताब बुलन्द होने से ज़ह़्वए कुब्रा यानी निस्फ़ुन्नहारे शरई तक है, मगर ईदुल फ़ित्र में देर करना और ईदे अज़्ह़ा में जल्द पढ़ लेना मुस्तह़ब है और सलाम फेरने के पहले ज़वाल हो गया हो तो नमाज़ जाती रही ।[5] (درمختار وغیرہ)

ज़वाल से मुराद निस्फ़ुन्नहारे शरई है, जिस का बयान बाबुल अवक़ात में गुज़रा ।

नमाज़े ईद का त़रीक़ा

नमाज़े ईद का त़रीक़ा येह है कि दो रक्अ़त वाजिब ईदुल फ़ित्र या ईदे अज़्ह़ा की निय्यत कर के कानों तक हाथ उठाए और اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर हाथ बांध ले फिर सना पढ़े फिर कानों तक हाथ उठाए और اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुवा हाथ छोड़ दे फिर हाथ उठाए और اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर हाथ छोड़ दे फिर हाथ उठाए और اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर हाथ बांध ले यानी पहली तक्बीर में हाथ बांधे, इस के बाद दो तक्बीरों में हाथ लटकाए फिर चौथी तक्बीर में बांध ले इस को यूं याद

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ص١١٩.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١، ص١٤٩.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٥٥. وغيره
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٥٦.
4 ..... المرجع السابق، ص٥٧ ـ ٦٠.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٦٠، وغيره.

www.dawateislami.net

रखे कि जहां तक्बीर के बाद कुछ पढ़ना है वहां हाथ बांध लिये जाएं और जहां पढ़ना नहीं वहां हाथ छोड़ दिये जाएं, फिर इमाम अऊ़ज़ु और बिस्मिल्लाह आहिस्ता पढ़ कर जह्र के साथ अलह़म्द और सूरत पढ़े फिर रुकूअ़ व सज्दा करे, दूसरी रक्अ़त में पहले अलह़म्द व सूरत पढ़े फिर तीन बार कानों तक हाथ ले जा कर اَللّٰہُ اَکْبَر कहे और हाथ न बांधे और चौथी बार बग़ैर हाथ उठाए اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुवा रुकूअ़ में जाए, इस से मालूम हो गया कि ईदैन में ज़ाइद तक्बीरें छे हुईं, तीन पहली में क़िराअत से पहले और तक्बीरे तह़रीमा के बाद और तीन दूसरी में क़िराअत के बाद और तक्बीरे रुकूअ़ से पहले, और इन छेओं तक्बीरों में हाथ उठाए जाएंगे और हर दो तक्बीरों के दरमियान तीन तस्बीह़ की क़दर सक्ता करे और ईदैन में मुस्तह़ब येह है कि पहली में सूरए जुमुअ़ह और दूसरी में सूरए मुनाफ़िक़ून पढ़े या पहली में سَبِّحِ اسْمَ और दूसरी में هَلْ اَتٰىكَ ।[1] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 8 इमाम ने छे तक्बीरों से ज़ियादा कहीं तो मुक़्तदी भी इमाम की पैरवी करे मगर तेरह से ज़ियादा में इमाम की पैरवी नहीं ।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 9 पहली रक्अ़त में इमाम के तक्बीर कहने के बाद मुक़्तदी शामिल हुवा तो उसी वक़्त तीन तक्बीरें कह ले अगर्चे इमाम ने क़िराअत शुरूअ़ कर दी हो और तीन ही कहे, अगर्चे इमाम ने तीन से ज़ियादा कही हों और अगर इस ने तक्बीरें न कहीं कि इमाम रुकूअ़ में चला गया तो खड़े खड़े न कहे बल्कि इमाम के साथ रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीर कह ले और अगर इमाम को रुकूअ़ में पाया और ग़ालिब गुमान है कि तक्बीरें कह कर इमाम को रुकूअ़ में पा लेगा तो खड़े खड़े तक्बीरें कहे फिर रुकूअ़ में जाए वरना اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर रुकूअ़ में जाए और रुकूअ़ में तक्बीरें कहे फिर अगर इस ने रुकूअ़ में तक्बीरें पूरी न की थीं कि इमाम ने सर उठा लिया तो बाक़ी साक़ित़ हो गईं और अगर इमाम के रुकूअ़ से उठने के बाद शामिल हुवा तो अब तक्बीरें न कहे बल्कि जब अपनी पढ़े उस वक़्त कहे और रुकूअ़ में जहां तक्बीर कहना बताया गया, उस में हाथ न उठाए और अगर दूसरी रक्अ़त में शामिल हुवा तो पहली रक्अ़त की तक्बीरें अब न कहे बल्कि जब अपनी फ़ौत शुदा पढ़ने खड़ा हो उस वक़्त कहे और दूसरी रक्अ़त की तक्बीरें अगर इमाम के साथ पा जाए, फ़बिहा वरना इस में भी वोही तफ़्सील है जो पहली रक्अ़त के बारे में मज़्कूर हुई ।[3] (عالمگیری، درمختار وغیرہما)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٦١، وغيره .
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: أمر الخليفة... إلخ، ج٣، ص٦٣.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١، ص١٥١.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٦٤ ـ ٦٦، وغيرهما .

www.dawateislami.net

मस्अला 10 जो शख़्स इमाम के साथ शामिल हुवा फिर सो गया या उस का वुज़ू जाता रहा, अब जो पढ़े तो तक्बीरें उतनी कहे जितनी इमाम ने कहीं, अगर्चे उस के मज़्हब में उतनी न थीं।[1] (عالمگیری)

मस्अला 11 इमाम तक्बीर कहना भूल गया और रुकूअ़ में चला गया तो क़ियाम की त़रफ़ न लौटे न रुकूअ़ में तक्बीर कहे।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 12 पहली रक्अ़त में इमाम तक्बीरें भूल गया और क़िराअत शुरूअ़ कर दी तो क़िराअत के बाद कह ले या रुकूअ़ में। और क़िराअत का इआ़दा न करे।[3] (غنیہ، عالمگیری)

मस्अला 13 इमाम ने तक्बीराते ज़वाइद में हाथ न उठाए तो मुक़्तदी उस की पैरवी न करे बल्कि हाथ उठाए।[4] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 14 नमाज़ के बाद इमाम दो ख़ुत़्बे पढ़े और ख़ुत़्बए जुमुआ़ में जो चीज़ें सुन्नत हैं इस में भी सुन्नत हैं और जो वहां मक्रूह यहां भी मक्रूह सिर्फ़ दो बातों में फ़र्क़ है एक येह कि जुमुआ़ के पहले ख़ुत़्बे से पेश्तर ख़त़ीब का बैठना सुन्नत था और इस में न बैठना सुन्नत है दूसरे येह कि इस में पहले ख़ुत़्बे से पेश्तर नव बार और दूसरे के पहले सात बार और मिम्बर से उतरने के पहले चौदह बार اَللّٰہُ اَکْبَر कहना सुन्नत है और जुमुआ़ में नहीं।[5] (عالمگیری، درمختار وغیرہما)

मस्अला 15 ईदुल फ़ित्र के ख़ुत़्बे में सदक़ए फ़ित्र के अह़काम की तालीम करे, वोह पांच बातें हैं :

(1) किस पर वाजिब है ? (2) और किस के लिये ? (3) और कब ? (4) और कितना ? (5) और किस चीज़ से ?

बल्कि मुनासिब येह है कि ईद से पहले जो जुमुआ़ पढ़े उस में भी येह अह़काम बता दिये जाएं कि पेश्तर से लोग वाक़िफ़ हो जाएं और ईदे अज़्हा के ख़ुत़्बे में क़ुरबानी के अह़काम और तक्बीराते तश्रीक़ की तालीम की जाए।[6] (درمختار، عالمگیری)

मस्अला 16 इमाम ने नमाज़ पढ़ ली और कोई शख़्स बाक़ी रह गया ख़्वाह वोह शामिल ही न हुवा था या शामिल तो हुवा मगर उस की नमाज़ फ़ासिद हो गई तो अगर दूसरी जगह मिल जाए पढ़ ले वरना नहीं पढ़ सकता। हां, बेहतर येह है कि येह शख़्स चार रक्अ़त चाश्त की नमाज़ पढ़े।[7] (درمختار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١، ص١٥١.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: أمر الخليفة... إلخ، ج٣، ص٦٥.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين، ج١، ص١٥١. 4 ..... المرجع السابق.
5 ..... المرجع السابق، ص١٥٠، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٦٧، وغيرهما.
6 ..... المرجع السابق. 7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٦٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 17 किसी उ़ज़्र के सबब ईद के दिन नमाज़ न हो सकी (मसलन सख़्त बारिश हुई या अब्र के सबब चांद नहीं देखा गया और गवाही ऐसे वक़्त गुज़री कि नमाज़ न हो सकी या अब्र था और नमाज़ ऐसे वक़्त ख़त्म हुई कि ज़वाल हो चुका था) तो दूसरे दिन पढ़ी जाए और दूसरे दिन भी न हुई तो ईदुल फ़ित्र की नमाज़ तीसरे दिन नहीं हो सकती और दूसरे दिन भी नमाज़ का वोही वक़्त है जो पहले दिन था यानी एक नेज़ा आफ़्ताब बुलन्द होने से निस्फ़ुन्नहारे शरई तक और बिला उ़ज़्र ईदुल फ़ित्र की नमाज़ पहले दिन न पढ़ी तो दूसरे दिन नहीं पढ़ सकते।[1] (عالمگیری، درمختار وغیرہما)

मस्अला 18 ईदे अज़्हा तमाम अह़काम में ईदुल फ़ित्र की त़रह़ है सिर्फ़ बाज़ बातों में फ़र्क़ है, इस में मुस्तह़ब येह है कि नमाज़ से पहले कुछ न खाए अगर्चे क़ुरबानी न करे और खा लिया तो कराहत नहीं और रास्ते में बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहता जाए और ईदे अज़्हा की नमाज़ उ़ज़्र की वज्ह से बारहवीं तक बिला कराहत मुअख़्ख़र कर सकते हैं, बारहवीं के बाद फिर नहीं हो सकती और बिला उ़ज़्र दसवीं के बाद मक्रूह है।[2] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 19 क़ुरबानी करनी हो तो मुस्तह़ब येह है कि पहली से दसवीं ज़ुल ह़िज्जा तक न ह़जामत बनवाए, न नाख़ुन तरश्वाए।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 20 अ़रफ़े के दिन यानी नवीं ज़ुल ह़िज्जा को लोगों का किसी जगह जम्अ़ हो कर ह़ाजियों की त़रह़ वुक़ूफ़ करना और ज़िक्रो दुआ़ में मश्ग़ूल रहना, सह़ीह़ येह है कि कुछ मुज़ायक़ा नहीं जब कि लाज़िम व वाजिब न जाने और अगर किसी दूसरी ग़रज़ से जम्अ़ हुए, मसलन नमाज़े इस्तिस्क़ा पढ़नी है, जब तो बिला इख़्तिलाफ़ जाइज़ है अस्लन ह़रज नहीं।[4] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 21 बाद नमाज़े ईद मुसाफ़ह़ा[5] व मुआ़नक़ा करना[6] जैसा उ़मूमन मुसलमानों में राइज है बेहतर है कि इस में इज़्हारे मसर्रत है।[7] (وشاح الجید)

मस्अला 22 नवीं ज़ुल ह़िज्जा की फ़ज्र से तेरहवीं की अ़स्र तक हर नमाज़े फ़र्ज़ पन्जगाना के बाद जो जमाअ़ते मुस्तह़ब्बा के साथ अदा की गई एक बार तक्बीर बुलन्द आवाज़ से कहना

1 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العیدین، ج۱، ص۱۵۱، ۱۵۲.
و "الدرالمختار"، کتاب الصلاة، باب العیدین، ج۳، ص۶۸، وغیرهما .

2 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العیدین، ج۱، ص۱۵۲، وغیره .

3 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصلاة، باب العیدین مطلب في إزالة الشعر... إلخ، ج۳، ص۷۷.

4 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصلاة، باب العیدین، ج۳، ص۷۰، وغیره .

5 ...यानी हाथ मिलाना।

6 ...यानी गले मिलना।

7 ..... انظر: "الفتاوی الرضویة"، ج۸، ص۶۰۱.

www.dawateislami.net

वाजिब है और तीन बार अफ़्ज़ल। इसे तक्बीरे तश्रीक़ कहते हैं, वोह येह है :

اَللّٰہُ اَکْبَرُ ط اَللّٰہُ اَکْبَرُ ط لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ ط اَللّٰہُ اَکْبَرُ ط وَلِلّٰہِ الْحَمْد (تنویرالابصاروغیرہ) [1]

मस्अला 23 तक्बीरे तश्रीक़ सलाम फेरने के बाद फ़ौरन वाजिब है यानी जब तक कोई ऐसा फ़ेल न किया हो कि उस नमाज़ पर बिना न कर सके, अगर मस्जिद से बाहर हो गया या क़स्दन वुज़ू तोड़ दिया या कलाम किया अगर्चे सह्वन तो तक्बीर साक़ित हो गई और बिला क़स्द वुज़ू टूट गया तो कह ले।[2] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 24 तक्बीरे तश्रीक़ उस पर वाजिब है जो शह्र में मुक़ीम हो या जिस ने उस की इक़्तिदा की अगर्चे औ़रत या मुसाफ़िर या गाउं का रहने वाला और अगर उस की इक़्तिदा न करें तो उन पर वाजिब नहीं।[3] (درمختار)

मस्अला 25 नफ़्ल पढ़ने वाले ने फ़र्ज़ वाले की इक़्तिदा की तो इमाम की पैरवी में उस मुक़्तदी पर भी वाजिब है अगर्चे इमाम के साथ उस ने फ़र्ज़ न पढ़े और मुक़ीम ने मुसाफ़िर की इक़्तिदा की तो मुक़ीम पर वाजिब है अगर्चे इमाम पर वाजिब नहीं।[4]

मस्अला 26 ग़ुलाम पर तक्बीरे तश्रीक़ वाजिब है और औ़रतों पर वाजिब नहीं अगर्चे जमाअ़त से नमाज़ पढ़ी। हां, अगर मर्द के पीछे औ़रत ने पढ़ी और इमाम ने उस के इमाम होने की निय्यत की तो औ़रत पर भी वाजिब है मगर आहिस्ता कहे। यूंही जिन लोगों ने बरह्ना नमाज़ पढ़ी उन पर भी वाजिब नहीं, अगर्चे जमाअ़त करें कि उन की जमाअ़त, जमाअ़ते मुस्तह़ब्बा नहीं।[5] (درمختار، جوہرہ وغیرہا)

मस्अला 27 नफ़्ल व सुन्नत व वित्र के बाद तक्बीर वाजिब नहीं और जुमुआ़ के बाद वाजिब है और नमाज़े ईद के बाद भी कह ले।[6] (درمختار)

मस्अला 28 मस्बूक़ व लाहिक़ पर तक्बीर वाजिब है, मगर जब ख़ुद सलाम फेरें उस वक़्त कहें और इमाम के साथ कह ली तो नमाज़ फ़ासिद न हुई और नमाज़ ख़त्म करने के बाद तक्बीर का इआ़दा भी नहीं।[7] (ردالمحتار)

---

1 ..... "تنوير الأبصار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٧١، ٧٤، وغيره .

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: المختار أن الذبيح إسماعيل، ج٣، ص٧٣.

3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٧٤.

4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: المختار أن الذبيح إسماعيل، ج٣، ص٧٤.

5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٧٤.
و "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة العيدين، ص١٢٢، وغيرهما .

6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: المختار أن الذبيح إسماعيل، ج٣، ص٧٣.

7 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: كلمة لابأس قدتستعمل في المندوب، ج٣، ص٧٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 29 ➡ और दिनों में नमाज़ क़ज़ा हो गई थी अय्यामे तश्रीक़ में उस की क़ज़ा पढ़ी तो तक्बीर वाजिब नहीं। यूंही इन दिनों की नमाज़ें और दिनों में पढ़ीं जब भी वाजिब नहीं। यूंही साले गुज़श्ता के अय्यामे तश्रीक़ की क़ज़ा नमाज़ें इस साल के अय्यामे तश्रीक़ में पढ़े जब भी वाजिब नहीं। हां, अगर उसी साल के अय्यामे तश्रीक़ की क़ज़ा नमाज़ें उसी साल के उन्हीं दिनों में जमाअ़त से पढ़े तो वाजिब है।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 30 ➡ मुन्फ़रिद[2] पर तक्बीर वाजिब नहीं।[3] (جوہرہ نیرہ) मगर मुन्फ़रिद भी कह ले कि साहिबैन[4] के नज़्दीक इस पर भी वाजिब है।

मस्अला 31 ➡ इमाम ने तक्बीर न कही जब भी मुक़्तदी पर कहना वाजिब है अगर्चे मुक़्तदी मुसाफ़िर या दीहाती या औ़रत हो।[5] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 32 ➡ इन तारीख़ों में अगर आ़म लोग बाज़ारों में ब एलान तक्बीरें कहें तो उन्हें मन्अ़ न किया जाए।[6] (درمختار)

ग्रहन की नमाज़ का बयान

ह़दीस 1 ➡ सहीहैन में अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के अ़हदे करीम में एक मरतबा आफ़्ताब में गहन लगा, मस्जिद में तशरीफ़ लाए और बहुत त़वील क़ियाम व रुकूओ़ सुजूद के साथ नमाज़ पढ़ी कि मैं ने कभी ऐसा करते न देखा और येह फ़रमाया कि: "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी की मौत व ह़यात के सबब अपनी येह निशानियां ज़ाहिर नहीं फ़रमाता, व लेकिन इन से अपने बन्दों को डराता है, लिहाज़ा जब इन में से कुछ देखो तो ज़िक्रो दुआ़ व इस्तिग़फ़ार की त़रफ़ घबरा कर उठो।"[7]

ह़दीस 2 ➡ नीज़ इन्हीं में इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी कि लोगों ने अ़र्ज़ की: या रसूलल्लाह ! हम ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) को देखा कि किसी चीज़ के लेने का क़स्द फ़रमाते हैं फिर पीछे हटते देखा, फ़रमाया: "मैं ने जन्नत को देखा और उस से एक ख़ोशा लेना चाहा और अगर ले लेता तो जब तक दुन्या बाक़ी रहती तुम उस से खाते और दोज़ख़ को देखा और आज के मिस्ल कोई ख़ौफ़नाक मन्ज़र कभी न देखा और मैं ने देखा कि अक्सर

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: المختار أن الذبيح إسماعيل، ج٣، ص٧٤.
2 ...यानी तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले।
3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة العيدين، ص١٢٢.
4 ...फ़िक़्हे ह़नफ़ी में इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुह़म्मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا को साहिबैन कहते हैं।
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: كلمة لا بأس قد تستعمل في المندوب، ج٣، ص٧٦.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٧٥.
7 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الكسوف، باب الذكر في الكسوف، الحديث: ١٠٥٩، ج١، ص٣٦٣.

www.dawateislami.net

दोज़ख़ी औ़रतें हैं। अ़र्ज़ की : क्यूं या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ? फ़रमाया कि : कुफ़्र करती हैं। अ़र्ज़ की गई : **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के साथ कुफ़्र करती हैं? फ़रमाया : "शौहर की नाशुक्री करती हैं और एह़सान का कुफ़्रान करती हैं, अगर तू उस के साथ उ़म्र भर एह़सान करे फिर कोई बात भी (ख़िलाफ़े मिज़ाज) देखे, कहेगी : मैं ने कभी कोई भलाई तुम से देखी ही नहीं।"[1]

ह़दीस 3 सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते अस्मा बिन्ते सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से मरवी, फ़रमाती हैं : "हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने आफ़्ताब गहने में ग़ुलाम आज़ाद करने का हुक्म फ़रमाया।"[2]

ह़दीस 4 सुनने अ़र्बआ़ में समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, कहते हैं : "हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने गहन की नमाज़ पढ़ाई और हम हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की आवाज़ नहीं सुनते थे।"[3] यानी क़िराअत आहिस्ता की।

मसाइले फ़िक़्हिय्या

सूरज गहन की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा है और चांद गहन की मुस्तह़ब। सूरज गहन की नमाज़ जमाअ़त से पढ़नी मुस्तह़ब है और तन्हा तन्हा भी हो सकती है और जमाअ़त से पढ़ी जाए तो ख़ुत्बे के सिवा तमाम शराइते़ जुमुआ़ इस के लिये शर्त़ हैं, वोही शख़्स इस की जमाअ़त क़ाइम कर सकता है जो जुमुआ़ की कर सकता है, वोह न हो तो तन्हा तन्हा पढ़ें, घर में या मस्जिद में।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 1 गहन की नमाज़ उसी वक़्त पढ़ें जब आफ़्ताब गहना हो, गहन छूटने के बाद नहीं और गहन छूटना शुरूअ़ हो गया मगर अभी बाक़ी है उस वक़्त भी शुरूअ़ कर सकते हैं और गहन की ह़ालत में उस पर अब्र आ जाए जब भी नमाज़ पढ़ें।[5] (جوہرہ نیرہ)

मस्अला 2 ऐसे वक़्त गहन लगा कि उस वक़्त नमाज़ मम्नूअ़ है तो नमाज़ न पढ़ें, बल्कि दुआ़ में मश्ग़ूल रहें और इसी ह़ालत में डूब जाए तो दुआ़ ख़त्म कर दें और मग़रिब की नमाज़ पढ़ें।[6] (جوہرہ، ردالمحتار)

मस्अला 3 येह नमाज़ और नवाफ़िल की त़रह़ दो रक्अ़त पढ़ें यानी हर रक्अ़त में एक

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الكسوف، باب صلاة الكسوف جماعة، الحديث: ١٠٥٢، ج١، ص٣٦٠.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الكسوف، باب من أحب العتاقة في كسوف الشمس، الحديث: ١٠٥٤، ج١، ص٣٦٢.
3 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلوات والسنة فيها، باب ماجاء في صلاة الكسوف، الحديث: ١٢٦٤، ج٢، ص٩٣.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٧٧ ـ ٨٠.
5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة الكسوف، ص١٢٤.
6 ..... المرجع السابق، و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٧٨.

www.dawateislami.net

रुकूअ़ और दो सज्दे करें न इस में अज़ान है, न इक़ामत, न बुलन्द आवाज़ से क़िराअत। और नमाज़ के बाद दुआ़ करें यहां तक कि आफ़्ताब खुल जाए और दो रक्अ़त से ज़ियादा भी पढ़ सकते हैं, ख़्वाह दो दो रक्अ़त पर सलाम फेरें या चार पर।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 4 अगर लोग जम्अ़ न हुए तो इन लफ़्ज़ों से पुकारें : اَلصَّلٰوۃُ جَامِعَۃٌ[2] (درمختار)

मस्अला 5 अफ़्ज़ल येह है कि ईदगाह या जामेअ़ मस्जिद में इस की जमाअ़त क़ाइम की जाए और अगर दूसरी जगह क़ाइम करें जब भी ह़रज नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 6 अगर याद हो तो सूरए बक़रह और आले इमरान की मिस्ल बड़ी बड़ी सूरतें पढ़ें और रुकूओ सुजूद में भी तूल दें और बादे नमाज़ दुआ़ में मश्ग़ूल रहें यहां तक कि पूरा आफ़्ताब खुल जाए और येह भी जाइज़ है कि नमाज़ में तख़्फ़ीफ़ करें और दुआ़ में तूल, ख़्वाह इमाम क़िब्ला रू दुआ़ करे या मुक़्तदियों की त़रफ़ मुंह कर के खड़ा हो और येह बेहतर है और सब मुक़्तदी आमीन कहें, अगर दुआ़ के वक़्त अ़सा या कमान पर टेक लगा कर खड़ा हो तो येह भी अच्छा है, दुआ़ के लिये मिम्बर पर न जाए।[4] (درمختاروغیرہ)

मस्अला 7 सूरज गहन और जनाज़े का इज्तिमाअ़ हो तो पहले जनाज़ा पढ़े।[5] (جوہرہ)

मस्अला 8 चांद गहन की नमाज़ में जमाअ़त नहीं, इमाम मौजूद हो या न हो बहर ह़ाल तन्हा तन्हा पढ़ें।[6] (درمختاروغیرہ) इमाम के इलावा दो तीन आदमी जमाअ़त कर सकते हैं।

मस्अला 9 तेज़ आंधी आए या दिन में सख़्त तारीकी छा जाए या रात में ख़ौफ़नाक रोशनी हो या लगातार कसरत से मींह बरसे या ब कसरत ओले पड़ें या आस्मान सुर्ख़ हो जाए या बिज्लियां गिरें या ब कसरत तारे टूटें या त़ाऊन वग़ैरा वबा फैले या ज़ल्ज़ले आएं या दुश्मन का ख़ौफ़ हो या और कोई दहशतनाक अम्र पाया जाए इन सब के लिये दो रक्अ़त नमाज़ मुस्तह़ब है।[7] (عالمگیری،درمختاروغیرہما)

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٧٨.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٧٩.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن عشر في صلاة الكسوف، ج١، ص١٥٣.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٧٩.وغيره
5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة الكسوف، ص١٢٤.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن عشر في صلاة الكسوف، ج١، ص١٥٣.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٨٠، وغيره .
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثامن عشر في صلاة الكسوف، ج١، ص١٥٣.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الكسوف، ج٣، ص٨٠، وغيرهما .

www.dawateislami.net

चन्द ह़दीसें जिन में आंधी वग़ैरा का ज़िक्र है, इस मौक़अ़ पर बयान कर देना मुनासिब मालूम होता है कि मुसलमान इन पर अ़मल करें (وباللہ التوفیق) ।

ह़दीस 1 उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम वग़ैरहुमा में मरवी, फ़रमाती हैं : जब तेज़ हवा चलती तो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) येह दुआ़ पढ़ते :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُکَ خَیۡرَھَا وَخَیۡرَمَا فِیۡھَا وَخَیۡرَمَا اُرۡسِلَتۡ بِہٖ وَاَعُوۡذُبِکَ مِنۡ شَرِّھَا وَشَرِّمَا فِیۡھَاوَشَرِّمَا اُرۡسِلَتۡ بِہٖ .(1)

ह़दीस 2 इमाम शाफ़ेई व अबू दावूद व इब्ने माजह व बैहक़ी ने दअ़वातुल कबीर में रिवायत की, कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم : "हवा **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से है, रह़मत व अ़ज़ाब लाती है, इसे बुरा न कहो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से इस के ख़ैर का सुवाल करो और इस के शर से पनाह मांगो ।"(2)

ह़दीस 3 तिरमिज़ी में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से मरवी कि एक शख़्स ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) के सामने हवा पर लानत भेजी । फ़रमाया : "हवा पर लानत न भेजो कि वोह मामूर है और जो शख़्स किसी शै पर लानत भेजे और वोह लानत की मुस्तह़िक़ न हो तो वोह लानत उसी भेजने वाले पर लौट आती है ।"(3)

ह़दीस 4 अबू दावूद व नसाई व इब्ने माजह व इमाम शाफ़ेई ने उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से रिवायत की, कहती हैं : जब आस्मान पर अब्र आता तो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) कलाम तर्क फ़रमा देते और उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर येह दुआ़ पढ़ते :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَعُوۡذُ بِکَ مِنۡ شَرِّ مَا فِیۡہِ .(4)

अगर खुल जाता ह़म्द करते और बरसता तो येह दुआ़ पढ़ते :

اَللّٰھُمَّ سَقۡیاً نَّافِعًا ط(5)

---

1 ..... "صحیح مسلم"، کتاب صلاۃ الاستسقاء، باب التعوذ عند رؤیۃ الریح... إلخ، الحدیث: ۱۵-(۸۹۹)، ص٤٤٦.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तुझ से इस के ख़ैर का सुवाल करता हूं और उस के ख़ैर का जो इस में है और उस के ख़ैर का जिस के साथ येह भेजी गई और तेरी पनाह मांगता हूं इस के शर से और उस चीज़ के शर से जो इस में है और उस के शर से जिस के साथ येह भेजी गई । 12

2 ..... "مسند" الإمام الشافعي، کتاب العیدین، ص۸۱.

3 ..... "جامع الترمذي"، أبواب البر والصلة، باب ماجاء في اللعنة، الحدیث: ۱۹۸۵، ج۳، ص۳۹٤.

4 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं उस चीज़ के शर से जो इस में है । 12

5 ..... "مسند" الإمام الشافعي، کتاب العیدین، ص۸۱.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! ऐसा पानी बरसा जो नफ़्अ़ पहुंचाए । 12

www.dawateislami.net

हदीस 5 इमाम अह़मद व तिरमिज़ी ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) जब बादल की गरज और बिजली की कड़क सुनते तो येह कहते :

اَللّٰھُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِکَ وَلَا تُھْلِکْنَا بِعَذَابِکَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِکَ .[1]

हदीस 6 इमाम मालिक ने अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) जब बादल की आवाज़ सुनते तो कलाम तर्क फ़रमा देते और कहते :

سُبْحٰنَ الَّذِیْ یُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِہٖ وَالْمَلٰئِکَۃُ مِنْ خِیْفَتِہٖ[2] اِنَّ اللّٰہَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ط[3]

हदीस 7 फ़रमाते हैं : ''जब बादल की गरज सुनो तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की तस्बीह़ करो, तक्बीर न कहो।''[4]

नमाज़े इस्तिस्क़ा का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِیْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَیْدِیْكُمْ وَیَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ ﴾[5]

तुम्हें जो मुसीबत पहुंचती है, वोह तुम्हारे हाथों के करतूत से है और बहुत सी मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

येह क़ह़त भी हमारे ही मआ़सी के सबब है, लिहाज़ा ऐसी ह़ालत में कसरते इस्तिग़फ़ार की बहुत ज़रूरत है और येह भी उस का फ़ज़्ल है कि बहुत से मुआ़फ़ फ़रमा देता है, वरना अगर सब बातों पर मुआख़ज़ा करे तो कहां ठिकाना।

फ़रमाता है :

﴿ لَوْ یُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ ﴾[6]

अगर लोगों को उन के फ़ेलों पर पकड़ता तो ज़मीन पर कोई चलने वाला न छोड़ता।

1 ..... "جامع الترمذي"، كتاب الدعوات، باب ما يقول إذا سمع الرعد، الحديث: ٣٤٦١، ج٥، ص٢٨٠.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! अपने ग़ज़ब से तू हम को क़त्ल न कर और अपने अ़ज़ाब से हम को हलाक न कर और इस से क़ब्ल हम को आ़फ़ियत में रख। 12

2 ..... "الموطأ" لإمام مالك، كتاب الكلام، باب القول إذا سمعت الرعد، الحديث: ١٩٢٠، ج٢، ص٤٧٠.

3 ...**तर्जमा :** पाक है वोह कि ह़म्द के साथ रअ़द उस की तस्बीह़ करता है और फ़रिश्ते उस के ख़ौफ़ से, बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हर चीज़ पर क़ादिर है। 12

4 ..... "مراسيل أبي داود" مع "سنن أبي داود"، باب ماجاء في المطر، ص٢٠.

5 ..... پ٢٥، الشوریٰ: ٣٠. 6 ..... پ٢٢، فاطر: ٤٥.

www.dawateislami.net

और फ़रमाता है :

﴿اِسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ﴿۱۰﴾ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّ يُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّ بَنِيْنَ وَ يَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّ يَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ؕ﴿۱۲﴾﴾ (1)

अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) से इस्तिग़फ़ार करो, बेशक वोह बड़ा बख़्शने वाला है, मूस्लाधार पानी तुम पर भेजेगा और मालों और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें बाग़ देगा और तुम्हें नहरें देगा।

हदीस 1 इब्ने माजह की रिवायत इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से है कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "जो लोग नाप और तोल में कमी करते हैं, वोह क़हत़ और शिद्दते मौत में और ज़ुल्मे बादशाह में गिरिफ़्तार होते हैं, अगर चौपाए न होते तो उन पर बारिश न होती।"(2)

हदीस 2 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "क़हत़ इसी का नाम नहीं कि बारिश न हो, बड़ा क़हत़ तो येह है कि बारिश हो और ज़मीन कुछ न उगाए।"(3)

हदीस 3 सह़ीहैन में है, अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ कहते हैं : "हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم किसी दुआ़ में इस क़दर हाथ न उठाते जितना इस्तिस्क़ा में उठाते, यहां तक बुलन्द फ़रमाते कि बग़लों की सपेदी ज़ाहिर होती।"(4)

हदीस 4 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में इन्हीं से मरवी कि "हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने बारिश के लिये दुआ़ की और पुश्ते दस्त से आस्मान की त़रफ़ इशारा किया।"(5) (यानी और दुआ़ओं में तो क़ाइदा येह है कि हथेली आस्मान की त़रफ़ हो, और इस में हाथ लौट दें कि ह़ाल बदलने की फ़ाल हो)।

हदीस 5 सुनने अर्बआ़ में इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, कहते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पुराने कपड़े पहन कर इस्तिस्क़ा के लिये तशरीफ़ ले गए तवाज़ोअ़ व ख़ुशूअ़ व तज़र्रोअ़ के साथ।"(6)

---

1 ..... پ۲۹، نوح: ۱۰ ـ ۱۲. 2 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب الفتن، باب العقوبات، الحديث: ٤٠١٩، ج٤، ص٣٦٧.
3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الفتن وأشراط الساعة، باب في سكنى المدينة... إلخ، الحديث: ٢٩٠٤، ص١٥٥٣.
4 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الاستسقاء، باب رفع الإمام يده في الإستسقاء، الحديث: ١٠٣١، ج١، ص٣٥٢.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب صلاة الاستسقاء، باب رفع اليدين بالدعاء في الاستسقاء، الحديث: ٨٩٦، ص٤٤٤.
6 ..... "جامع الترمذي"، أبواب السفر، باب ماجاء في صلاة الاستسقاء، الحديث: ٥٥٨، ج٢، ص٨٠.
و "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلاة... إلخ، باب ماجاء في صلاة الاستسقاء، الحديث: ١٢٦٦، ج٢، ص٩٤.

www.dawateislami.net

ह़दीस 6 अबू दावूद ने उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से रिवायत की, कहती हैं : लोगों ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) की ख़िदमत में क़ह़्ते बारां की शिकायत पेश की, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ने मिम्बर के लिये हुक्म फ़रमाया, ईदगाह में रखा गया और लोगों से एक दिन का वादा फ़रमाया कि उस रोज़ सब लोग चलें, जब आफ़्ताब का कनारा चमका, उस वक़्त हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) तशरीफ़ ले गए और मिम्बर पर बैठे, तक्बीर कही और ह़म्दे इलाही बजा लाए, फिर फ़रमाया : "तुम लोगों ने अपने मुल्क के क़ह़्त की शिकायत की और येह कि मींह अपने वक़्त से मुअख़्ख़र हो गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें हुक्म दिया है कि उस से दुआ करो और उस ने वादा कर लिया है कि तुम्हारी दुआ क़बूल फ़रमाएगा।" इस के बाद फ़रमाया :

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ یَفۡعَلُ مَا یُرِیۡدُ اَللّٰھُمَّ اَنۡتَ اللّٰہُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنۡتَ الۡغَنِیُّ وَنَحۡنُ الۡفُقَرَاءُ اَنۡزِلۡ عَلَیۡنَا الۡغَیۡثَ وَاجۡعَلۡ مَا اَنۡزَلۡتَ قُوَّۃً وَّ بَلَاغًا اِلٰی حِیۡنٍ o[1]

फिर हाथ बुलन्द फ़रमाया यहां तक कि बग़ल की सपेदी ज़ाहिर हुई फिर लोगों की त़रफ़ पुश्त की और रिदाए मुबारक लौट दी फिर लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए और मिम्बर से उतर कर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी, **अल्लाह** तआ़ला ने उसी वक़्त अब्र पैदा किया, वोह गरजा और चमका और बरसा। और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) अभी मस्जिद को तशरीफ़ भी न लाए थे कि नाले बह गए।[2]

ह़दीस 7 इमाम मालिक व अबू दावूद ब रिवायत अ़म्र बिन शुऐ़ब अ़न अबीह अ़न जिद्दी रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) इस्तिस्क़ा की दुआ में येह कहते :

اَللّٰھُمَّ اسۡقِ عِبَادَکَ وَ بَھِیۡمَتَکَ وَانۡشُرۡ رَحۡمَتَکَ وَاَحۡیِ بَلَدَکَ الۡمَیِّتَ .[3]

ह़दीस 8 सुनने अबू दावूद में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से मरवी, कहते हैं मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم को देखा कि हाथ उठा कर येह दुआ की :

اَللّٰھُمَّ اسۡقِنَا غَیۡثًا مُّغِیۡثًا مَّرِیۡئًا مَّرِیۡعًا نَّافِعًا غَیۡرَ ضَارٍّ عَاجِلًا غَیۡرَ اٰجِلٍ .[4]

---

1 ...**तर्जमा :** ह़म्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये जो रब है सारे जहान का रह़मानो रह़ीम है क़ियामत के दिन का मालिक है। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं वोह जो चाहता है करता है या **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू ही माबूद है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू ग़नी है और हम मोह़ताज हैं हम पर मींह उतार और जो कुछ तू उतारे, उसे हमारे लिये क़ुव्वत और एक वक़्त तक पहुंचने का सबब कर दे। 12

2 ..... "سنن أبي داود"، كتاب صلاة الاستسقاء، باب رفع اليدين في الاستسقاء، الحديث: ١١٧٣، ج١، ص٤٣١.

3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب صلاة الاستسقاء، باب رفع اليدين في الاستسقاء، الحديث: ١١٧٦، ج١، ص٤٣٢.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू अपने बन्दों और चौपायों को सैराब कर और अपनी रह़मत को फैला और अपने शह़रे मुर्दा को ज़िन्दा कर। 12

4 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हम को सैराब कर पूरी बारिश से, जो ख़ुश गवार ताज़गी लाने वाली हो, नाफ़ेअ़ हो, ज़रर न करे, जल्द हो, देर में न हो। 12

www.dawateislami.net

हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने येह दुआ पढ़ी थी कि आस्मान घिर आया।[1]

हदीस 9 सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, कहते हैं : लोग जब क़ह़त में मुब्तला होते तो अमीरुल मुअमिनीन फ़ारूक़े आज़म ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه के तवस्सुल से त़लबे बारां करते, अ़र्ज़ करते : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तेरी त़रफ़ हम अपने नबी का वसीला किया करते थे और तू बरसाता था, अब हम तेरी त़रफ़ नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अ़म्मे मुकर्रम को वसीला करते हैं तो बारिश भेज। अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه कहते हैं : जब यूं करते तो बारिश होती[2] यानी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) आगे होते और हम हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के पीछे सफ़ें बांध कर दुआ करते। अब कि येह मुयस्सर नहीं हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के चचा को आगे कर के दुआ करते हैं येह भी तवस्सुल हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) से है सूरतन मुयस्सर नहीं तो मअ़नन।

मसाइले फ़िक़्हिय्या

इस्तिस्क़ा दुआ व इस्तिग़्फ़ार का नाम है। इस्तिस्क़ा की नमाज़ जमाअ़त से जाइज़ है, मगर जमाअ़त इस के लिये सुन्नत नहीं, चाहें जमाअ़त से पढ़ें या तन्हा तन्हा दोनों त़रह़ इख़्तियार है।[3] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 1 इस्तिस्क़ा के लिये पुराने या पैवन्द लगे कपड़े पहन कर तज़ल्लुल व ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ व तवाज़ोअ़ के साथ सर बरह्ना पैदल जाएं और पा बरह्ना हों तो बेहतर और जाने से पेश्तर ख़ैरात करें। कुफ़्फ़ार को अपने साथ न ले जाएं कि जाते हैं रह़मत के लिये और काफ़िर पर लानत उतरती है। तीन दिन पेश्तर से रोज़े रखें और तौबा व इस्तिग़्फ़ार करें फिर मैदान में जाएं और वहां तौबा करें और ज़बानी तौबा काफ़ी नहीं बल्कि दिल से करें और जिन के ह़ुक़ूक़ इस के ज़िम्मे हैं सब अदा करे या मुआ़फ़ कराए। कमज़ोरों, बूढ़ों, बुढ़ियों बच्चों के तवस्सुल से दुआ करे और सब आमीन कहें कि सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम्हें रोज़ी और मदद कमज़ोरों के ज़रीए से मिलती है।"[4] और एक रिवायत में है : "अगर जवान ख़ुशूअ़ करने वाले और चौपाए चरने वाले और बूढ़े रुकूअ़

1 ..... "سنن أبي داود"، كتاب صلاة الاستسقاء، باب رفع اليدين في الاستسقاء، الحديث: ١١٦٩، ج١، ص٤٣٠.
2 ..... "صحيح البخاري"، أبواب الاستسقاء، باب سؤال الناس الإمام الاستسقاء إذا قحطوا، الحديث: ١٠١٠، ج١، ص٣٤٦.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الاستسقاء، ج٣، ص٨١ ـ ٨٣.
4 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الجهاد، باب من استعان بالضعفاء... إلخ، الحديث: ٢٨٩٦، ج٢، ص٢٨٠.

www.dawateislami.net

करने वाले और बच्चे दूध पीने वाले न होते तो तुम पर शिद्दत से अ़ज़ाब की बारिश होती।"[1] उस वक़्त बच्चे अपनी माओं से जुदा रखे जाएं और मवेशी भी साथ ले जाएं। ग़रज़ येह कि तवज्जोहे रह़मत के तमाम अस्बाब मुहय्या करें और तीन दिन मुतवातिर जंगल को जाएं और दुआ़ करें और येह भी हो सकता है कि इमाम दो रक्अ़त जह्र के साथ नमाज़ पढ़ाए और बेहतर येह है कि पहली में سَبِّحِ اسْمَ और दूसरी में هَلْ اَتٰىكَ पढ़े और नमाज़ के बाद ज़मीन पर खड़ा हो कर ख़ुत्बा पढ़े और दोनों ख़ुत्बों के दरमियान जल्सा करे और येह भी हो सकता है कि एक ही ख़ुत्बा पढ़े और ख़ुत्बे में दुआ़ व तस्बीह़ व इस्तिग़फ़ार करे और अस्नाए ख़ुत्बा में चादर लौट दे यानी ऊपर का कनारा नीचे और नीचे का ऊपर कर दे कि ह़ाल बदलने की फ़ाल हो, ख़ुत्बे से फ़ारिग़ हो कर लोगों की त़रफ़ पीठ और क़िब्ला को मुंह कर के दुआ़ करे। बेहतर वोह दुआ़एं हैं जो अह़ादीस में वारिद हैं और दुआ़ में हाथों को ख़ूब बुलन्द करे और पुश्ते दस्त जानिबे आस्मान[2] रखे।[3] (عالمگیری، غنیہ، درمختار، جوہرہ وغیرہا)

मस्अ़ला 2 अगर जाने से पेश्तर बारिश हो गई, जब भी जाएं और शुक्रे इलाही बजा लाएं और मींह के वक़्त ह़दीस में जो दुआ़ इरशाद हुई पढ़े और बादल गरजे तो इस की दुआ़ पढ़े और बारिश में कुछ देर ठहरे कि बदन पर पानी पहुंचे।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अ़ला 3 कसरत से बारिश हो कि नुक़्सान करने वाली मालूम हो तो उस के रोकने की दुआ़ कर सकते हैं और इस की दुआ़ ह़दीस में येह है :

اَللّٰهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا اَللّٰهُمَّ عَلَى الْاٰكَامِ وَالظِّرَابِ وَبُطُوْنِ الْاَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ.[5]

इस ह़दीस को बुख़ारी व मुस्लिम ने अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत किया।

---

1 ..... "السنن الكبرى"، كتاب صلاة الاستسقاء، باب استحباب الخروج بالضعفاء... إلخ، الحديث: ٦٣٩٠، ج٣، ص٤٨١.

2 ...यानी और दुआ़ओं में तो क़ाइ़दा येह है कि हथेली आस्मान की त़रफ़ हो, और इस में हाथ लौट दें कि ह़ाल बदलने की फ़ाल हो।

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب التاسع عشر في الاستسقاء، ج١، ص١٥٣ ـ ١٥٤.
و "غنية المتملي"، صلاة الاستسقاء، ٤٢٧ ـ ٤٣٠. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الاستسقاء، ج٣، ص٨٣ ـ ٨٥.
و "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة الاستسقاء، ص١٢٤ ـ ١٢٥.

4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الاستسقاء، ج٣، ص٨٥.

5 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الاستسقاء، باب الاستسقاء في المساجد الجامع، الحديث: ١٠١٣، ج١، ص٣٤٧.
و "صحيح مسلم"، كتاب صلاة الاستسقاء، الحديث:٨ـ(٨٩٧)،٩ـ(٨٩٧)، ص٤٤٤،٤٤٥.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हमारे आस पास बरसा, हमारे ऊपर न बरसा। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! बारिश कर टीलों और पहाड़ियों पर और नालों में और जहां दरख़्त उगते हैं। 12

www.dawateislami.net

नमाज़े ख़ौफ़ का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ فَاِذَاۤ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ﴾[1]

अगर तुम्हें ख़ौफ़ हो तो पैदल या सुवारी पर नमाज़ पढ़ो फिर जब ख़ौफ़ जाता रहे तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को इस त़रह़ याद करो जैसा उस ने सिखाया वोह कि तुम नहीं जानते थे।

और फ़रमाता है :

﴿ وَ اِذَا كُنْتَ فِیْهِمْ فَاَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَ لْیَاْخُذُوْۤا اَسْلِحَتَهُمْ ۫ فَاِذَا سَجَدُوْا فَلْیَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآىِٕكُمْ ۪ وَ لْتَاْتِ طَآىِٕفَةٌ اُخْرٰى لَمْ یُصَلُّوْا فَلْیُصَلُّوْا مَعَكَ وَ لْیَاْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَ اَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ وَ اَمْتِعَتِكُمْ فَیَمِیْلُوْنَ عَلَیْكُمْ مَّیْلَةً وَّاحِدَةً ؕ وَ لَا جُنَاحَ عَلَیْكُمْ اِنْ كَانَ بِكُمْ اَذًى مِّنْ مَّطَرٍ اَوْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى اَنْ تَضَعُوْۤا اَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَ خُذُوْا حِذْرَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابًا مُّهِیْنًا ۝ فَاِذَا قَضَیْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَاِذَا اطْمَاْنَنْتُمْ فَاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا ۝ ﴾[2]

और जब तुम उन में हो और नमाज़ क़ाइम करो तो उन में का एक गुरौह तुम्हारे साथ खड़ा हो और उन्हें चाहिये कि अपने हथियार लिये हों फिर जब एक रक्अ़त का सज्दा कर लें तो वोह तुम्हारे पीछे हों और अब दूसरा गुरौह आए, जिस ने तुम्हारे साथ न पढ़ी थी, वोह तुम्हारे साथ पढ़े और अपनी पनाह और अपने हथियार लिये रहें, काफ़िरों की तमन्ना है कि कहीं तुम अपने हथियारों और अपने अस्बाब से ग़ाफ़िल हो जाओ तो एक साथ तुम पर झुक पड़ें और तुम पर कुछ गुनाह नहीं, अगर तुम्हें मींह से तक्लीफ़ हो या बीमार हो कि अपने हथियार रख दो, मगर पनाह की चीज़ लिये रहो, बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने काफ़िरों के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है, फिर जब नमाज़ पूरी कर चुको तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को याद करो, खड़े और बैठे और करवटों पर लैटे, फिर जब इत्मीनान से हो जाओ तो नमाज़ ह़स्बे दस्तूर क़ाइम करो, बेशक नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त बांधा हुवा फ़र्ज़ है।

ह़दीस 1 तिरमिज़ी व नसाई में ब रिवायते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अ़स्फ़ान व ज़जनान के दरमियान उतरे, मुश्रिकीन ने कहा : इन के लिये एक नमाज़ है जो बाप और बेटों से भी ज़ियादा प्यारी है और वोह नमाज़े अ़स्र है, लिहाज़ा सब काम ठीक रखो, जब नमाज़ को खड़े हों एक दम ह़म्ला करो, जिब्रील عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام नबी

1 ..... پ۲، البقرة: ۲۳۹. 2 ..... پ۵، النسآء: ۱۰۲ ـ ۱۰۳.

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) अपने अस्ह़ाब के दो ह़िस्से करें एक गुरौह के साथ नमाज़ पढ़ें और दूसरा गुरौह उन के पीछे सिपर और अस्लह़े लिये खड़ा रहे तो उन की एक एक रक्अ़त होगी (यानी हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ) और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की दो रक्अ़तें।[1]

ह़दीस 2 सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, कहते हैं : हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ गए जब ज़ातुर्रिक़ाअ़ में पहुंचे, एक सायादार दरख़्त हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के लिये छोड़ दिया, उस पर हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने अपनी तल्वार लटका दी थी, एक मुश्रिक आया और तल्वार ले ली और खींच कर कहने लगा : आप मुझ से डरते हैं ? फ़रमाया : "न"। उस ने कहा : तो आप को कौन मुझ से बचाएगा ? फ़रमाया : "**अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ)"। सह़ाबए किराम ने जब देखा तो उसे डराया, उस ने मियान में तल्वार रख कर लटका दी, इस के बाद अज़ान हुई, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने एक गुरौह के साथ दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी फिर येह पीछे हटा और दूसरे गुरौह के साथ दो रक्अ़त पढ़ी तो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की चार हुईं और लोगों की दो दो यानी हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के साथ।[2]

मसाइले फ़िक़्ह़िय्या

नमाज़े ख़ौफ़ जाइज़ है, जब कि दुश्मनों का क़रीब में होना यक़ीन के साथ मालूम हो और अगर येह गुमान था कि दुश्मन क़रीब में हैं और नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ी, बाद को गुमान की ग़लती ज़ाहिर हुई तो मुक़्तदी नमाज़ का इआ़दा करें। यूंही अगर दुश्मन दूर हों तो येह नमाज़ जाइज़ नहीं यानी मुक़्तदी की न होगी और इमाम की हो जाएगी।

नमाज़े ख़ौफ़ का त़रीक़ा येह है कि जब दुश्मन सामने हों और येह अन्देशा हो कि सब एक साथ नमाज़ पढ़ेंगे तो ह़म्ला कर देंगे, ऐसे वक़्त इमाम जमाअ़त के दो ह़िस्से करे, अगर कोई इस पर राज़ी हो कि हम बाद को पढ़ लेंगे तो उसे दुश्मन के मुक़ाबिल करे और दूसरे गुरौह के साथ पूरी नमाज़ पढ़ ले, फिर जिस गुरौह ने नमाज़ नहीं पढ़ी उस में कोई इमाम हो जाए और येह लोग उस के साथ बा जमाअ़त पढ़ लें और अगर दोनों में से बाद को पढ़ने पर कोई राज़ी न हो तो इमाम एक गुरौह को दुश्मन के मुक़ाबिल करे और दूसरा इमाम के पीछे नमाज़ पढ़े, जब इमाम उस गुरौह के साथ एक रक्अ़त पढ़ चुके यानी पहली रक्अ़त के दूसरे सज्दे से सर उठाए तो येह लोग दुश्मन के मुक़ाबिल चले जाएं और जो लोग वहां थे वोह चले आएं अब उन के साथ इमाम एक रक्अ़त पढ़े और तशह्हुद पढ़ कर सलाम फेर दे, मगर

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب تفسير القرآن، باب ومن سورة النساء، الحديث: ٣٠٤٦، ج٥، ص٢٧.
2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب فضائل القرآن وما يتعلق به، باب صلاة الخوف، الحديث: ٨٤٣، ص٤٢٠.

www.dawateislami.net

मुक़्तदी सलाम न फेरें बल्कि येह लोग दुश्मन के मुक़ाबिल चले जाएं या यहीं अपनी नमाज़ पूरी कर के जाएं और वोह लोग आएं और एक रक्अ़त बग़ैर क़िराअत पढ़ कर तशह्हुद के बाद सलाम फेरें और येह भी हो सकता है कि येह गुरौह यहां न आए बल्कि वहीं अपनी नमाज़ पूरी कर ले और दूसरा गुरौह अगर नमाज़ पूरी कर चुका है, फ़बिहा, वरना अब पूरी करे, ख़्वाह वहीं या यहां आ कर और येह लोग क़िराअत के साथ अपनी एक रक्अ़त पढ़ें और तशह्हुद के बाद सलाम फेरें। येह त़रीक़ा दो रक्अ़त वाली नमाज़ का है ख़्वाह नमाज़ ही दो रक्अ़त की हो जैसे फ़ज्र व ईद व जुमुआ़ या सफ़र की वज्ह से चार की दो हो गईं और चार रक्अ़त वाली नमाज़ हो तो हर गुरौह के साथ इमाम दो दो रक्अ़त पढ़े और मग़रिब में पहले गुरौह के साथ दो और दूसरे गुरौह के साथ एक पढ़े, अगर पहले के साथ एक पढ़ी और दूसरे के साथ दो तो नमाज़ जाती रही।[1] (درمختار، عالمگیری وغیرہما)

मस्अला 1 येह सब अह़काम उस सूरत में हैं जब इमाम व मुक़्तदी सब मुक़ीम हों या सब मुसाफ़िर या इमाम मुक़ीम है और मुक़्तदी मुसाफ़िर और अगर इमाम मुसाफ़िर हो और मुक़्तदी मुक़ीम तो इमाम एक गुरौह के साथ एक रक्अ़त पढ़े और दूसरे के साथ एक पढ़ कर सलाम फेर दे, फिर पहला गुरौह आए और तीन रक्अ़तें बग़ैर क़िराअत के पढ़े फिर दूसरा गुरौह आए और तीन पढ़े, पहली में फ़ातिह़ा व सूरत पढ़े और अगर इमाम मुसाफ़िर है और मुक़्तदी बाज़ मुक़ीम हैं बाज़ मुसाफ़िर तो मुक़ीम मुक़ीम के त़रीक़े पर अ़मल करें और मुसाफ़िर मुसाफ़िर के।[2] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 2 एक रक्अ़त के बाद दुश्मन के मुक़ाबिल जाने से मुराद पैदल जाना है, सुवारी पर जाएंगे तो नमाज़ जाती रहेगी।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 3 अगर ख़ौफ़ बहुत ज़ियादा हो कि सुवारी से उतर न सकें तो सुवारी पर तन्हा तन्हा इशारे से, जिस त़रफ़ भी मुंह कर सकें उसी त़रफ़ नमाज़ पढ़ें, सुवारी पर जमाअ़त से नहीं पढ़ सकते। हां, अगर एक घोड़े पर दो सुवार हों तो पिछला अगले की इक़्तिदा कर सकता है और सुवारी पर फ़र्ज़ नमाज़ उसी वक़्त जाइज़ होगी कि दुश्मन उन का तआ़क़ुब कर रहे हों और अगर येह दुश्मन के तआ़क़ुब में हों तो सुवारी पर नमाज़ नहीं होगी।[4] (جوہرہ، درمختار)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٦ ـ ٨٨.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العشرون في صلاة الخوف، ج١، ص١٥٤ـ١٥٥، وغيرهما.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العشرون في صلاة الخوف، ج١، ص١٥٥، وغيره.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٧.
4 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ص ١٣٠.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٨.

www.dawateislami.net

मस्अला 4 नमाज़े ख़ौफ़ में सिर्फ़ दुश्मन के मुक़ाबिल जाना और वहां से इमाम के पास सफ़ में आना या वुज़ू जाता रहा तो वुज़ू के लिये चलना मुआ़फ़ है, इस के इ़लावा चलना नमाज़ को फ़ासिद कर देगा, अगर दुश्मन ने इसे दौड़ाया या इस ने दुश्मन को भगाया तो नमाज़ जाती रही, अलबत्ता पहली सूरत में अगर सुवारी पर हो तो मुआ़फ़ है।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 5 सुवारी पर नहीं था अस्नाए नमाज़ में सुवार हो गया नमाज़ जाती रही, ख़्वाह किसी ग़रज़ से सुवार हुवा हो और लड़ना भी नमाज़ को फ़ासिद कर देता है, मगर एक तीर फेंकने की इजाज़त है।[2] (درمختار) यूंही आज कल बन्दूक़ का एक फ़ायर करने की इजाज़त है।

मस्अला 6 दरिया में तैरने वाला अगर कुछ देर बग़ैर आज़ा को ह़रकत दिये रह सके तो इशारे से नमाज़ पढ़े, वरना नमाज़ न होगी।[3] (درمختار)

मस्अला 7 जंग में मश्ग़ूल है, मसलन तल्वार चला रहा है और वक़्ते नमाज़ ख़त्म होना चाहता है तो नमाज़ को मुअख़्ख़र करे, लड़ाई से फ़ारिग़ हो कर नमाज़ पढ़े।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 8 बाग़ियों और उस शख़्स के लिये जिस का सफ़र किसी मासियत के लिये हो सलातुल ख़ौफ़ जाइज़ नहीं।[5] (درمختار)

मस्अला 9 नमाज़े ख़ौफ़ हो रही थी, अस्नाए नमाज़ में ख़ौफ़ जाता रहा यानी दुश्मन चले गए तो जो बाक़ी है वोह अम्न की सी पढ़ें, अब ख़ौफ़ की पढ़ना जाइज़ नहीं।[6] (عالمگیری)

मस्अला 10 दुश्मनों के चले जाने के बाद किसी ने क़िब्ले से सीना फेरा, नमाज़ जाती रही।[7] (عالمگیری)

मस्अला 11 नमाज़े ख़ौफ़ में हथियार लिये रहना मुस्तह़ब है और ख़ौफ़ का असर सिर्फ़ इतना है कि ज़रूरत के लिये चलना जाइज़ है, बाक़ी मह्ज़ ख़ौफ़ से नमाज़ में क़स्र न होगा।[8] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 12 नमाज़े ख़ौफ़ जिस त़रह़ दुश्मन से डर के वक़्त जाइज़ है यूंही दरिन्दे और बड़े सांप वग़ैरा से ख़ौफ़ हो जब भी जाइज़ है।[9] (درمختار)

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٨.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٨.
3 ..... المرجع السابق، ص٨٩. 4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٩.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٩.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العشرون في صلاة الخوف، ج١، ص١٥٦.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب العشرون في صلاة الخوف، ج١، ص١٥٦.
8 ..... المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٨.
9 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الخوف، ج٣، ص٨٦.

www.dawateislami.net

किताबुल जनाइज़

बीमारी का बयान

बीमारी भी एक बहुत बड़ी नेमत है इस के मनाफ़ेअ़ बे शुमार हैं, अगर्चे आदमी को ब ज़ाहिर इस से तक्लीफ़ पहुंचती है मगर ह़क़ीक़तन राह़तो आराम का एक बहुत बड़ा ज़ख़ीरा हाथ आता है। येह ज़ाहिरी बीमारी जिस को आदमी बीमारी समझता है, ह़क़ीक़त में रूह़ानी बीमारियों का एक बड़ा ज़बरदस्त इ़लाज है। ह़क़ीक़ी बीमारी अमराज़े रूह़ानिया हैं कि येह अलबत्ता बहुत ख़ौफ़ की चीज़ है और इसी को मरज़े मोहलिक समझना चाहिये। बहुत मोटी सी बात है जो हर शख़्स जानता है कि कोई कितना ही ग़ाफ़िल हो मगर जब मरज़ में मुब्तला होता है तो किस क़दर ख़ुदा को याद करता और तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है और येह तो बड़े रुत्बे वालों की शान है कि तक्लीफ़ का भी उसी त़रह़ इस्तिक़्बाल करते हैं जैसे राह़त का।

ع انچہ از دوست میر سد نیکوست[1]

मगर हम जैसे कम से कम इतना तो करें कि सब्रो इस्तिक़्लाल से काम लें और जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ कर के आते हुए सवाब को हाथ से न दें और इतना तो हर शख़्स जानता है कि बे सब्री से आई हुई मुसीबत जाती न रहेगी फिर इस बड़े सवाब से मह़रूमी दोहरी मुसीबत है। बहुत से नादान बीमारी में निहायत बे जा कलिमे बोल उठते हैं बल्कि बाज़ कुफ़्र तक पहुंच जाते हैं مَعَاذَاللہ। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ ज़ुल्म की निस्बत कर देते हैं, येह तो बिल्कुल ही خَسِرَالدُّنْیَاوَالْاٰخِرَۃَ के मिस्दाक़[2] बन जाते हैं, अब हम इस के बाज़ फ़वाइद जो अह़ादीस में वारिद हैं बयान करते हैं कि मुसलमान अपने प्यारे और बरगुज़ीदा रसूल के इरशादात बगोशे दिल सुनें और इन पर अ़मल करें, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

ह़दीस 1 व 2 सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में अबू हुरैरा व अबू सईद رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "मुसलमान को जो तक्लीफ़ो हम्म व हुज़्नो अज़िय्यत व ग़म पहुंचे, यहां तक कि कांटा जो उस के चुभे, **अल्लाह** तआ़ला इन के सबब उस के गुनाह मिटा देता है।"[3]

ह़दीस 3 सह़ीहैन में अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से मरवी कि हुज़ूर

1 ...यानी वोह चीज़ जो दोस्त की त़रफ़ से पहुंचती है, अच्छी होती है।

2 ...यानी दुन्या व आख़िरत में नुक़्सान उठाने वालों की त़रह़।

3 ..... "صحیح البخاري"، کتاب المرضی، باب ماجاء في کفارة المرض... إلخ، الحدیث ٥٦٤١، ج٤، ص٣.

www.dawateislami.net

(صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "मुसलमान को जो अज़िय्यत पहुंचती है मरज़ हो या इस के सिवा कुछ और, **अल्लाह** तआ़ला उस के सय्यिआत को गिरा देता है, जैसे दरख़्त से पत्ते झड़ते हैं।"(1)

हदीस 4 व 5 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उम्मुस्साइब के पास तशरीफ़ ले गए, फ़रमाया : "तुझे क्या हुवा है जो कांप रही है ?" अ़र्ज़ की : बुख़ार है, ख़ुदा इस में बरकत न करे। फ़रमाया : "बुख़ार को बुरा न कह कि वोह आदमी की ख़त़ाओं को इस त़रह़ दूर करता है जैसे भट्टी लोहे के मैल को।"(2) इसी के मिस्ल सुनने इब्ने माजह में अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से भी मरवी।

हदीस 6 सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "जब अपने बन्दे की आंखें ले लूं फिर वोह सब्र करे तो आंखों के बदले उसे जन्नत दूंगा।"(3)

हदीस 7 तिरमिज़ी शरीफ़ में है : उमय्या ने सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से इन दो आयतों का मत़लब दरयाफ़्त किया :

﴿ اِنْ تُبْدُوْا مَا فِیْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ یُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ ﴾(4)

जो तुम्हारे नफ़्स में है उसे ज़ाहिर करो या छुपाओ। **अल्लाह** तुम से इस का ह़िसाब लेगा। और

﴿ مَنْ یَّعْمَلْ سُوْٓءًا یُّجْزَ بِهٖ ۙ ﴾(5)

जो किसी क़िस्म की बुराई करेगा उस का बदला दिया जाएगा।

(कि जब हर बुराई की जज़ा है और जो ख़त़रा दिल में गुज़रे उस का भी ह़िसाब है तो बड़ी मुश्किल है कि इस से कौन बचेगा।)

सिद्दीक़ा ने फ़रमाया : जब से मैं ने इस का सुवाल हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) से किया, किसी ने भी मुझ से न पूछा। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "इस से मुराद इ़ताब है कि **अल्लाह** तआ़ला बन्दों पर करता है कि उसे बुख़ार और तक्लीफ़ पहुंचाता है, यहां तक कि माल जो कुरते की आस्तीन में हो और गुम जाए और इस की वज्ह से घबरा जाए, इन उमूर की वज्ह से गुनाहों से ऐसा निकल जाता है जैसे भट्टी से सुर्ख़ सोना निकलता है।"(6) (यानी गुनाहों से ऐसा पाक साफ़ हो जाता है जैसा भट्टी से सोना मैल से पाक हो कर निकलता है)।

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب المرضى، باب وضع اليد على المريض، الحديث: ٥٦٦٠، ج٤، ص٩.
2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب البر... إلخ، باب ثواب المؤمن فيما يصيبه من مرض... إلخ، الحديث: ٢٥٧٥، ص١٣٩٢.
3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب المرضى، باب فضل من ذهب بصره، الحديث: ٥٦٥٣، ج٤، ص٦. 4 ..... پ٣، البقرة: ٢٨٤.
5 ..... پ٥، النسآء: ١٢٣. 6 ..... "جامع الترمذي"، أبواب تفسير القرآن، باب ومن سورة البقرة، الحديث: ٣٠٠٢، ج٤، ص٤٦٥.

www.dawateislami.net

ह़दीस 8 तिरमिज़ी में अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : ''बन्दे को कोई तक्लीफ़ कमो बेश नहीं पहुंचती मगर गुनाह के सबब और जो **अल्लाह** तआ़ला मुआ़फ़ फ़रमा देता है वोह बहुत ज़ियादा है'' और येह आयत पढ़ी :

﴿ وَمَاۤ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِیْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَیْدِیْكُمْ وَیَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ ﴾[1]

जो तुम्हें मुसीबत पहुंची, वोह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने किया और बहुत सी मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

ह़दीस 9 व 10 शर्ह़े सुन्नत में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : बन्दा जब इ़बादत के अच्छे त़रीक़े पर हो फिर बीमार हो जाए तो जो फ़रिश्ता उस पर मुअक्किल है, उस से फ़रमाया जाता है : ''इस के लिये वैसे ही आमाल लिख जब मरज़ में मुब्तला न था, यहां तक कि मैं इसे मरज़ से रिहा करूं या अपनी त़रफ़ बुला लूं[2] यानी मौत दूं।'' और अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की रिवायत में है कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : ''जब मुसलमान किसी बलाए बदन में मुब्तला होता है, फ़रिश्ते को हुक्म होता है, लिख जो नेक काम पहले किया करता था तो अगर शिफ़ा देता है तो धो देता और पाक कर देता है और मौत देता है तो बख़्श देता है और रह़्म फ़रमाता है।''[3]

ह़दीस 11 तिरमिज़ी ब इफ़ादए तस्ह़ीह़ो तह़सीन व इब्ने माजह व दारिमी साद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) से सुवाल हुवा, किस पर बला ज़ियादा सख़्त होती है ? फ़रमाया : ''अम्बिया पर फिर जो बेहतर हैं फिर जो बेहतर हैं, आदमी में जितना दीन होता है उसी के अन्दाज़े से बला में मुब्तला किया जाता है, अगर दीन में क़वी है बला भी उस पर सख़्त होगी और दीन में ज़ईफ़ है तो उस पर आसानी की जाती है तो हमेशा बला में मुब्तला किया जाता है यहां तक कि ज़मीन पर यूं चलता है कि उस पर कोई गुनाह न रहा।''[4]

ह़दीस 12 तिरमिज़ी व इब्ने माजह अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : ''जितनी बला ज़ियादा उतना ही सवाब ज़ियादा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी क़ौम को मह़बूब रखता है तो उसे बला में डालता है, जो राज़ी हुवा उस के लिये रिज़ा है और जो नाराज़ हुवा उस के लिये नाख़ुशी।''[5] और दूसरी रिवायत तिरमिज़ी की इन्हीं से यूं है कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : जब **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दे के साथ ख़ैर का इरादा रखता है तो उसे दुन्या ही में सज़ा दे देता है और जब शर का इरादा फ़रमाता है तो उसे गुनाह का बदला

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب تفسير القرآن، باب ومن سورة الشورى... إلخ، الحديث: ٣٢٦٣، ج٥، ص١٦٩. پ٢٥، الشورى: ٣٠.
2 ..... "شرح السنة"، كتاب الجنائز، باب المريض يكتب له مثل عمله، الحديث: ١٤٢٣، ج٣، ص١٨٦.
3 ..... "شرح السنة"، كتاب الجنائز، باب المريض يكتب له مثل عمله، الحديث: ١٤٢٤، ج٣، ص١٨٧.
4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الزهد، باب ماجاء في الصبر على البلاء، الحديث: ٢٤٠٦، ج٤، ص١٧٩.
و "سنن الدرامي"، كتاب الرقائق، باب في أشد الناس بلاء، الحديث: ٢٧٨٣، ج٢، ص٤١٢.
5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الزهد، باب ماجاء في الصبر... إلخ، الحديث: ٢٤٠٤، ج٤، ص١٧٨.

www.dawateislami.net

नहीं देता और क़ियामत के दिन उसे पूरा बदला देगा।''(1)

ह़दीस 13 इमाम मालिक व तिरमिज़ी अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : ''मुसलमान मर्द व औ़रत के जानो माल व औलाद में हमेशा बला रहती है, यहां तक कि **अल्लाह** तआ़ला से इस ह़ाल में मिलता है कि उस पर ख़त़ा कुछ नहीं।''(2)

ह़दीस 14 अह़मद व अबू दावूद ब रिवायत मुह़म्मद बिन ख़ालिद अ़न अबीह अ़न जद्दिही रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : ''बन्दे के लिये इ़ल्मे इलाही में कोई मर्तबा मुक़र्रर होता है और वोह आमाल के सबब उस रुत्बे को न पहुंचा तो बदन या माल या औलाद में उस की इब्तिला फ़रमाता है फिर उसे सब्र देता है, यहां तक कि उसे उस मर्तबे को पहुंचा देता है जो उस के लिये इ़ल्मे इलाही में है।''(3)

ह़दीस 15 तिरमिज़ी ने जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : ''जब क़ियामत के दिन अहले बला को सवाब दिया जाएगा तो आ़फ़ियत वाले तमन्ना करेंगे, काश दुन्या में क़ैंचियों से उन की खालें काटी जातीं।''(4)

ह़दीस 16 अबू दावूद व आ़मिर अर्राम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने बीमारियों का ज़िक्र फ़रमाया और फ़रमाया कि : ''मोमिन जब बीमार हो फिर अच्छा हो जाए, उस की बीमारी गुनाहों से कफ़्फ़ारा हो जाती है और आइन्दा के लिये नसीह़त और मुनाफ़िक़ जब बीमार हुवा फिर अच्छा हुवा, उस की मिसाल ऊंट की है कि मालिक ने उसे बांधा फिर खोल दिया तो न उसे येह मालूम कि क्यूं बांधा, न येह कि क्यूं खोला ?'' एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! बीमारी क्या चीज़ है, मैं तो कभी बीमार न हुवा ? फ़रमाया : ''हमारे पास से उठ जा कि तू हम में से नहीं।''(5)

ह़दीस 17 इमाम अह़मद शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ''जब मैं अपने मोमिन बन्दे को बला में डालूं और वोह इस इब्तिला पर मेरी ह़म्द करे तो वोह अपनी ख़्वाब गाह से गुनाहों से ऐसा पाक हो कर उठेगा जैसे उस दिन कि अपनी मां से पैदा हुवा।'' और रब तबारक व तआ़ला फ़रमाता है : ''मैं ने अपने बन्दे को मुक़य्यद और मुब्तला किया, इस के लिये अ़मल वैसा ही जारी रखो जैसा सिह़्ह़त में था।''(6)

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الزهد، باب ماجاء في الصبر... إلخ، الحديث: ٢٤٠٤، ج٤، ص١٧٨.
2 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الزهد، باب ماجاء في الصبر... إلخ، الحديث: ٢٤٠٧، ج٤، ص١٧٩.
3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الجنائز، باب الأمراض المكفرة للذنوب، الحديث: ٣٠٩٠، ج٣، ص٢٤٦.
و "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث رجل، الحديث: ٢٢٤٠١، ج٨، ص٣١٤.
4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الزهد، ٥٩ـباب، الحديث: ٢٤١٠، ج٤، ص١٨٠.
5 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الجنائز، باب الأمراض المكفرة للذنوب، الحديث: ٣٠٨٩، ج٣، ص٢٤٥.
6 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث شداد بن أوس، الحديث: ١٧١١٨، ج٦، ص٧٧.

www.dawateislami.net

मरीज़ की इ़यादत को जाना सुन्नत है। अह़ादीस में इस की बहुत फ़ज़ीलत आई है।

इ़यादत के फ़ज़ाइल

ह़दीस 1 बुख़ारी व मुस्लिम व अबू दावूद व इब्ने माजह अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : मुसलमान पर मुसलमान के पांच ह़क़ हैं :

(1) सलाम का जवाब देना
(2) मरीज़ के पूछने को जाना
(3) जनाज़े के साथ जाना
(4) दावत क़बूल करना
(5) छींकने वाले का जवाब देना।[1] (जब اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहे)

ह़दीस 2 सह़ीह़ैन में है बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहते हैं : हमें सात बातों का हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने हुक्म फ़रमाया, (येह पांच बातें ज़िक्र कर के फ़रमाया) : (6) क़सम खाने वाले की क़सम पूरी करना, (7) मज़्लूम की मदद करना।[2]

ह़दीस 3 बुख़ारी व मुस्लिम सौबान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई की इ़यादत को गया तो वापस होने तक हमेशा जन्नत के फल चुनने में रहा।"[3]

ह़दीस 4 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रोज़े क़ियामत फ़रमाएगा : "ऐ इब्ने आदम ! मैं बीमार हुवा तू ने मेरी इ़यादत न की, अ़र्ज़ करेगा : तेरी इ़यादत कैसे करता ? तू रब्बुल आ़लमीन है (यानी ख़ुदा कैसे बीमार हो सकता है कि उस की इ़यादत की जाए)। फ़रमाएगा : क्या तुझे नहीं मालूम कि मेरा फ़ुलां बन्दा बीमार हुवा और उस की तू ने इ़यादत न की, क्या तू नहीं जानता कि अगर उस की इ़यादत को जाता तो मुझे उस के पास पाता और फ़रमाएगा : ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझ से खाना त़लब किया तू ने न दिया अ़र्ज़ करेगा तुझे किस त़रह़ खाना देता ? तू तो रब्बुल आ़लमीन है। फ़रमाएगा : क्या तुझे नहीं मालूम कि मेरे फ़ुलां बन्दे ने तुझ से खाना मांगा और तू ने न दिया क्या तुझे नहीं मालूम कि अगर तू ने दिया होता तो उस को (यानी उस के सवाब को) मेरे पास पाता, फ़रमाएगा : ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझ से पानी त़लब किया, तू ने न दिया।

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الجنائز، باب الأمر باتباع الجنائز، الحديث: ١٢٤٠، ج١، ص٤٢١.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب اللباس، باب خواتيم الذهب، الحديث: ٥٨٦٣، ج٤، ص٦٧.
3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب البر... إلخ، باب فضل عيادة المريض، الحديث: ٤١-(٢٥٦٨)، ص١٣٨٩.

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ करेगा : तुझे कैसे पानी देता ? तू तो रब्बुल आ़लमीन है। फ़रमाएगा : "मेरे फ़ुलां बन्दे ने तुझ से पानी मांगा तू ने उसे न पिलाया, अगर पिलाया होता तो मेरे यहां पाता।"(1)

ह़दीस 5 सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم एक आराबी की इ़यादत को तशरीफ़ ले गए और आ़दते करीमा येह थी कि जब किसी मरीज़ की इ़यादत को तशरीफ़ ले जाते तो येह फ़रमाते :

لَا بَأْسَ طُهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰہ تَعَالٰی

"यानी कोई ह़रज की बात नहीं اِنْ شَآءَ اللّٰہ تَعَالٰی येह मरज़ गुनाहों से पाक करने वाला है।"

उस आराबी से भी येही फ़रमाया :

لَا بَأْسَ طُهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰہ تَعَالٰی(2)

ह़दीस 6 अबू दावूद व तिरमिज़ी अमीरुल मुअमिनीन मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो मुसलमान किसी मुसलमान की इ़यादत के लिये सुब्ह़ को जाए तो शाम तक उस के लिये सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इस्तिग़्फ़ार करते हैं और शाम को जाए तो सुब्ह़ तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इस्तिग़्फ़ार करते हैं और उस के लिये जन्नत में एक बाग़ होगा।"(3)

ह़दीस 7 अबू दावूद ने अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जो अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के ब ग़रज़े सवाब अपने मुसलमान भाई की इ़यादत को जाए जहन्नम से साठ बरस की राह दूर कर दिया गया।"(4)

ह़दीस 8 तिरमिज़ी ब इफ़ादए तह़सीन व इब्ने माजह अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जो शख़्स मरीज़ की इ़यादत को जाता है आस्मान से मुनादी निदा करता है : तू अच्छा है और तेरा चलना अच्छा और जन्नत की एक मन्ज़िल को तू ने ठिकाना बनाया।"(5)

ह़दीस 9 इब्ने माजह अमीरुल मुअमिनीन फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "जब तू मरीज़ के पास जाए तो उस से कह कि तेरे लिये दुआ़ करे कि उस की दुआ़ दुआ़ए मलाएका की मानिन्द है।"(6)

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب البر... إلخ، باب فضل عيادة المريض، الحديث: ٢٥٦٩، ص١٣٨٩.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب المناقب، باب علامات النبوة في الإسلام، الحديث؛ ٣٦١٦، ج٢، ص٥٠٥.
3 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الجنائز، باب ماجاء في عيادة المريض، الحديث: ٩٧١، ج٢، ص٢٩٠.
4 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الجنائز، باب في فضل العيادة على وضوء، الحديث: ٣٠٩٧، ج٣، ص٢٤٨.
5 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الجنائز، باب ماجاء في ثواب من عاد مريضا، الحديث: ١٤٤٣، ج٢، ص١٩٢.
6 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الجنائز، باب ماجاء في عيادة المريض، الحديث: ١٤٤١، ج٢، ص١٩١.

www.dawateislami.net

ह़दीस 10 बैहक़ी ने सईद बिन अल मुसय्यब से मुरसलन रिवायत की, कि फ़रमाते हैं : "अफ़्ज़ल इयादत येह है कि जल्द उठ आए।"[1] और इसी की मिस्ल अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से भी मरवी।

ह़दीस 11 तिरमिज़ी व इब्ने माजह अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : जब मरीज़ के पास जाओ तो उ़म्र के बारे में दिल ख़ुश कुन बात करो कि येह किसी चीज़ को रद न कर देगा और उस के जी को अच्छा मालूम होगा।[2]

ह़दीस 12 इब्ने ह़ब्बान अपनी सह़ीह़ में इन्हीं से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "पांच चीज़ें जो एक दिन में करेगा, **अल्लाह** तआ़ला उस को जन्नतियों में लिख देगा :

(1) मरीज़ की इयादत करे
(2) जनाज़े में ह़ाज़िर हो
(3) रोज़ा रखे
(4) जुमुआ़ को जाए
(5) गुलाम आज़ाद करे।"[3]

ह़दीस 13 व 14 अह़मद व त़बरानी व अबू याला व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान मुआ़ज़ बिन जबल और अबू दावूद अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "पांच चीज़ें हैं कि जो इन में से एक भी करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़मान में आ जाएगा।

(1) मरीज़ की इयादत करे
(2) या जनाज़े के साथ जाए
(3) या ग़ज़्वे को जाए
(4) या इमाम के पास उस की ताज़ीमो तौक़ीर के इरादे से जाए
(5) या अपने घर में बैठा रहे कि लोग उस से सलामत रहें और वोह लोगों से।"[4]

ह़दीस 15 इब्ने ख़ुज़ैमा अपनी सह़ीह़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "आज तुम में कौन रोज़ादार है ? अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

1 ..... "شعب الإيمان"، باب في عيادة المريض، فصل في آداب العيادة، الحديث: ٩٢٢١، ج٦، ص٥٤٢.
2 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الطب، ٣٥-باب، الحديث: ٢٠٩٤، ج٤، ص٢٥.
3 ..... "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجمعة، الحديث: ٢٧٦٠، ج٤، ص١٩١.
4 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث معاذ بن جبل رضى الله عنه، الحديث: ٢٢١٥٤، ج٨، ص٢٥٥.

www.dawateislami.net

ने अ़र्ज़ की : मैं । फ़रमाया : आज तुम में किस ने मिस्कीन को खाना खिलाया ? अ़र्ज़ की : मैं ने । फ़रमाया : कौन आज जनाज़े के साथ गया ? अ़र्ज़ की : मैं । फ़रमाया : किस ने आज मरीज़ की इ़यादत की ? अ़र्ज़ की : मैं ने । फ़रमाया : येह ख़स्लतें किसी में कभी जम्अ़ न होंगी मगर जन्नत में दाख़िल होगा ।''[1]

ह़दीस 16 अबू दावूद व तिरमिज़ी अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : ''जब कोई मुसलमान किसी मुसलमान की इ़यादत को जाए तो सात बार येह दुआ़ पढ़े :

اَسْئَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ .[2]

अगर मौत नहीं आई है तो उसे शिफ़ा हो जाएगी ।''[3]

मौत आने का बयान

दुन्या गुज़श्तनी व गुज़ाश्तनी[4] है, आख़िर एक दिन मौत आनी है जब यहां से कूच करना ही है तो वहां की तय्यारी चाहिये जहां हमेशा रहना है और उस वक़्त को हर वक़्त पेशे नज़र रखना चाहिये ।

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से फ़रमाया : ''दुन्या में ऐसे रहो जैसे मुसाफ़िर बल्कि राह चलता ।''[5] तो मुसाफ़िर जिस त़रह़ एक अजनबी शख़्स होता है और राहगीर रास्ते के खेल तमाशों में नहीं लगता कि राह खोटी होगी और मन्ज़िले मक़्सूद तक पहुंचने में नाकामी होगी, इसी त़रह़ मुसलमान को चाहिये कि दुन्या में न फंसे और न ऐसे तअ़ल्लुक़ात पैदा करे कि मक़्सूदे अस्ली के ह़ासिल करने में आड़े आएं और मौत को कसरत से याद करे कि इस की याद दुन्यवी तअ़ल्लुक़ात की बेख़कनी करती है ।[6]

ह़दीस में इरशाद फ़रमाया :

---

1 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الجنائز، الترغيب في عيادة المرضى... إلخ، الحديث: ٧، ج٤، ص١٦٣.

2 ...**तर्जमा : अल्लाहु अ़ज़ीम** से सुवाल करता हूं, जो अ़र्शे करीम का मालिक है इस का कि तुझे शिफ़ा दे । 12

3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الجنائز، باب الدعاء للمريض، الحديث: ٣١٠٦، ج٣، ص٢٥١.
و "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبدالله بن العباس، الحديث: ٢١٨٢، ج١، ص٥٢٤.

4 ...यानी दुन्या ख़त्म होने वाली और छूटने वाली ।

5 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الرقائق، باب قول النبي صلى الله تعالىٰ عليه وسلم ((كن في الدنيا كأنك غريب أو عابر سبيل))، الحديث: ٦٤١٦، ج٤، ص٢٢٣.

6 ...यानी जड़ काटती है ।

www.dawateislami.net

اَكْثِرُوْا ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ[1] اَلْمَوْتِ .[2]

मगर किसी मुसीबत पर मौत की आरज़ू न करे कि इस की मुमानअ़त आई है और नाचार करनी ही है तो यूं कहे : इलाही मुझे ज़िन्दा रख जब तक ज़िन्दगी मेरे लिये ख़ैर हो और मौत दे जब मौत मेरे लिये बेहतर हो ।[3] كما هو فى حديث الصحيحين عن انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ[4] और मुसलमान को चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नेक गुमान रखे, उस की रह़मत का उम्मीदवार रहे। ह़दीस में फ़रमाया : कोई न मरे, मगर इस ह़ाल में कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नेक गुमान रखता हो ।''[5] कि इरशादे इलाही है :

اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِیْ بِیْ .[6]

''मेरा बन्दा मुझ से जैसा गुमान रखता है मैं उसी त़रह़ उस के साथ पेश आता हूं ।''

एक जवान के पास तशरीफ़ ले गए और वोह क़रीबुल मौत थे, फ़रमाया : तू अपने को किस ह़ाल में पाता है ? अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से उम्मीद है और अपने गुनाहों से डर। फ़रमाया : ''येह दोनों ख़ौफ़ो रजा, इस मौक़अ़ पर जिस बन्दे के दिल में होंगे, **अल्लाह** उसे वोह देगा जिस की उम्मीद रखता है और उस से अम्न में रखेगा जिस से ख़ौफ़ करता है ।''[7] रूह़ क़ब्ज़ होने का वक़्त बहुत सख़्त वक़्त है कि इसी पर सारे अ़मल का मदार है, बल्कि ईमान के तमाम नताइजे उख़रवी इसी पर मुरत्तब कि एतिबार ख़ातिमे ही का है और शैत़ाने लईन ईमान लेने की फ़िक्र में है, जिस को **अल्लाह** तआ़ला उस के मक्र से बचाए और ईमान पर ख़ातिमा नसीब फ़रमाए वोह मुराद को पहुंचा। اِنَّمَا الْعِبْرَةُ بِالْخَوَاتِيْمِ . ''एतिबार ख़ातिमे ही का है ।'' اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا حُسْنَ الْخَاتِمَةِ .

इरशाद फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ हुवा यानी कलिमए त़य्यिबा वोह जन्नत में दाख़िल हुवा ।[8]

मसाइले फ़िक़्हिय्या

जब मौत का वक़्त क़रीब आए और अ़लामतें पाई जाएं तो सुन्नत येह है कि दह्नी करवट पर लिटा कर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर दें और येह भी जाइज़ है कि चित लिटाएं और

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الزهد، باب ماجاء في ذكر الموت، الحديث: ٢٣١٤، ج٤، ص١٣٨.

2 ...लज़्ज़तों की तोड़ देने वाली मौत को कसरत से याद करो । 12

3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب المرضىٰ، باب تمنى المريض الموت، الحديث: ٥٦٧١، ج٤، ص١٣.

4 ...यानी इस ह़दीस को बुख़ारी व मुस्लिम ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत किया ।

5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الجنة... إلخ، باب الأمر بحسن الظن بالله تعالىٰ عند الموت، الحديث: ٨٢-(٢٨٧٧)، ص١٥٣٨.

6 ..... "صحيح البخاري"، كتاب التوحيد، باب قول الله تعالىٰ ﴿وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهُ﴾... إلخ، الحديث: ٧٤٠٥، ج٤، ص٥٤١.

7 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الجنائز، ١١-باب، الحديث: ٩٨٥، ج٢، ص٢٩٦.

8 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الجنائز، باب في التلقين، الحديث: ٣١١٦، ج٣، ص٢٥٥.

www.dawateislami.net

क़िब्ले को पाउं करें कि यूं भी क़िब्ले को मुंह हो जाएगा मगर इस सूरत में सर को क़दरे ऊंचा रखें और क़िब्ले को मुंह करना दुश्वार हो कि उस को तक्लीफ़ होती हो तो जिस ह़ालत पर है छोड़ दें ।[1] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 1 जांकनी की ह़ालत में जब तक रूह़ गले को न आई उसे तल्क़ीन करें यानी उस के पास बुलन्द आवाज़ से पढ़ें اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ मगर उसे इस के कहने का हुक्म न करें ।[2] (عامۂ کتب)

मस्अला 2 जब उस ने कलिमा पढ़ लिया तो तल्क़ीन मौक़ूफ़ कर दें । हां, अगर कलिमा पढ़ने के बाद उस ने कोई बात की तो फिर तल्क़ीन करें कि उस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ हो ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 3 तल्क़ीन करने वाला कोई नेक शख़्स हो, ऐसा न हो जिस को उस के मरने की ख़ुशी हो और उस के पास इस वक़्त नेक और परहेज़गार लोगों का होना बहुत अच्छी बात है और इस वक़्त वहां सूरए यासीन शरीफ़ की तिलावत और ख़ुश्बू होना मुस्तह़ब, मसलन लोबान या अगर की बत्तियां सुलगा दें ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 4 मौत के वक़्त ह़ैज़ो निफ़ास वाली औ़रतें उस के पास ह़ाज़िर हो सकती हैं ।[5] (عالمگیری) मगर जिस का ह़ैज़ो निफ़ास मुन्क़त़अ़ हो गया और अभी ग़ुस्ल नहीं किया उसे और जुनुब को आना न चाहिये । और कोशिश करे कि मकान में कोई तस्वीर या कुत्ता न हो, अगर येह चीज़ें हों तो फ़ौरन निकाल दी जाएं कि जहां येह होती हैं मलाइकए रह़मत नहीं आते, उस की नज़्अ़ के वक़्त अपने और उस के लिये दुआ़ए ख़ैर करते रहें, कोई बुरा कलिमा ज़बान से न निकालें कि इस वक़्त जो कुछ कहा जाता है मलाएका उस पर आमीन कहते हैं, नज़्अ़ में सख़्ती देखें तो सूरए यासीन व सूरए रअ़्द पढ़ें ।

मस्अला 5 जब रूह़ निकल जाए तो एक चौड़ी पट्टी जबड़े के नीचे से सर पर ले जा कर गिरह दे दें कि मुंह खुला न रहे और आंखें बन्द कर दी जाएं और उंगलियां और हाथ पाउं सीधे कर दिये जाएं, येह काम उस के घर वालों में जो ज़ियादा नर्मी के साथ कर सकता हो बाप या बेटा वोह करे ।[6] (جوہرہ نیرہ)

मस्अला 6 आंखें बन्द करते वक़्त येह दुआ़ पढ़े :

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص٩١، وغيره .
2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٠ .
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الأول، ج١، ص١٥٧ .
4 ..... المرجع السابق. 5 ..... المرجع السابق. 6 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣١ .

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ يَسِّرْ عَلَيْهِ اَمْرَهٗ وَسَهِّلْ عَلَيْهِ مَا بَعْدَهٗ وَاَسْعِدْهُ بِلِقَآئِكَ وَاجْعَلْ مَا خَرَجَ اِلَيْهِ خَيْرًا مِّمَّا خَرَجَ عَنْهُ. [1] (درمختار)

मस्अला 7 उस के पेट पर लोहा या गीली मिट्टी या और कोई भारी चीज़ रख दें कि पेट फूल न जाए।[2] (عالمگیری) मगर ज़रूरत से ज़ियादा वज़्नी न हो कि बाइ़से तक्लीफ़ है।[3]

(درمختار)

मस्अला 8 मय्यित के सारे बदन को किसी कपड़े से छुपा दें और उस को चारपाई या तख़्त वग़ैरा किसी ऊंची चीज़ पर रखें कि ज़मीन की सैल न पहुंचे।[4] (عالمگیری)

मस्अला 9 मरते वक़्त مَعَاذَاللّٰه उस की ज़बान से कलिमए कुफ़्र निकला तो कुफ़्र का हुक्म न देंगे कि मुम्किन है मौत की सख़्ती में अ़क़्ल जाती रही हो और बेहोशी में येह कलिमा निकल गया।[5] (درمختار) और बहुत मुम्किन है कि उस की बात पूरी समझ में न आई कि ऐसी शिद्दत की हालत में आदमी पूरी बात साफ़ तौ़र पर अदा कर ले दुश्वार होता है।

मस्अला 10 उस के ज़िम्मे क़र्ज़ या जिस क़िस्म के दैन हों जल्द से जल्द अदा कर दें।[6] कि ह़दीस में है : ''मय्यित अपने दैन में मुक़य्यद है।''[7] एक रिवायत में है : ''उस की रूह़ मुअ़ल्लक़ रहती है जब तक दैन न अदा किया जाए।''[8]

मस्अला 11 मय्यित के पास तिलावते क़ुरआने मजीद जाइज़ है जब कि उस का तमाम बदन कपड़े से छुपा हो। और तस्बीह़ व दीगर अज़्कार में मुत़्लक़न ह़रज नहीं।[9]

(ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 12 ग़ुस्लो कफ़न व दफ़्न में जल्दी चाहिये कि ह़दीस में इस की बहुत ताकीद आई है।[10] (جوہرہ)

---

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص٩٧.

तर्जमा : अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के नाम के साथ और रसूलुल्लाह की मिल्लत पर, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू इस के काम को इस पर आसान कर और इस के माबाद को इस पर सह्ल कर और अपनी मुलाक़ात से तू इसे नेक बख़्त कर और जिस की त़रफ़ निकला (आख़िरत) उसे इस से बेहतर कर, जिस से निकला (दुन्या)। 12

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الأول، ج١، ص١٥٧.

3 ..... "سنن الدار قطنى"، كتاب البيوع، الحديث ٢٩٦٥، ج٣، ص٥٨.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الأول، ج١، ص١٥٧.

5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص٩٦.

6 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣١. 7 .....

8 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الجنائز، باب ماجاء عن النبى انه قال ... الخ، الحديث: ١٠٨١، ج٢، ص٣٤١.

9 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في القراءة عند الميت، ج٣، ص٩٨ ـ ١٠٠، وغيره.

10 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣١.

www.dawateislami.net

मस्अला 13 पड़ोसियों और उस के दोस्त अह़बाब को इत्तिलाअ़ कर दें कि नमाज़ियों की कसरत होगी और उस के लिये दुआ़ करेंगे कि उन पर ह़क़ है कि उस की नमाज़ पढ़ें और दुआ़ करें ।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 14 बाज़ार व शारेए़ आ़म पर उस की मौत की ख़बर देने के लिये बुलन्द आवाज़ से पुकारना बाज़ ने मक्रूह बताया, मगर असह़ूह़ येह है कि इस में ह़रज नहीं मगर ह़स्बे आ़दते जाहिलिय्यत बड़े बड़े अल्फ़ाज़ से न हो ।[2] (جوہرہ نیرہ، ردالمحتار)

मस्अला 15 ना गहानी मौत से मरा तो जब तक मौत का यक़ीन न हो, तज्हीज़ो तक्फ़ीन मुल्तवी रखें ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 16 औ़रत मर गई और उस के पेट में बच्चा ह़रकत कर रहा है तो बाईं जानिब से पेट चाक कर के बच्चा निकाला जाए और अगर औ़रत ज़िन्दा है और उस के पेट में बच्चा मर गया और औ़रत की जान पर बनी हो तो बच्चा काट कर निकाला जाए और बच्चा भी ज़िन्दा हो तो कैसी ही तक्लीफ़ हो, बच्चा काट कर निकालना जाइज़ नहीं ।[4] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 17 अगर उस ने क़स्दन किसी का माल निगल लिया और मर गया तो अगर इतना माल छोड़ा है कि तावान दे दिया जाए तो तर्के से तावान अदा करें, वरना पेट चीर कर माल निकाला जाएगा और बिला क़स्द है तो चीरा न जाए ।[5] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 18 ह़ामिला औ़रत मर गई और दफ़्न कर दी गई किसी ने ख़्वाब में देखा कि उस के बच्चा पैदा हुवा तो महज़ इस ख़्वाब की बिना पर क़ब्र खोदनी जाइज़ नहीं ।[6] (عالمگیری)

मय्यित के नहलाने का बयान

मस्अला 1 मय्यित को नहलाना फ़र्ज़े किफ़ाया है बाज़ लोगों ने ग़ुस्ल दे दिया तो सब से साक़ित हो गया ।[7] (عالمگیری)

मस्अला 2 नहलाने का त़रीक़ा येह है कि जिस चारपाई या तख़्त या तख़्ते पर नहलाने का इरादा हो उस को तीन या पांच या सात बार धूनी दें यानी जिस चीज़ में वोह ख़ुश्बू सुलगती हो उसे इतनी बार चारपाई वग़ैरा के गिर्द फिराएं और उस पर मय्यित को लिटा कर नाफ़ से

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الأول، ج١، ص١٥٧.
2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣١.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في أطفال المشركين، ج٣، ص٩٧.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الأول، ج١، ص١٥٧.
4 ..... المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٧١.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٧٢.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الكراهية، الباب السادس عشر في زيارة القبور... إلخ، ج٥، ص٣٥١.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٨.

www.dawateislami.net

घुटनों तक किसी कपड़े से छुपा दें, फिर नहलाने वाला अपने हाथ पर कपड़ा लपेट कर पहले इस्तिन्जा कराए फिर नमाज़ का सा वुज़ू कराए यानी मुंह फिर कोहनियों समेत हाथ धोएं फिर सर का मस्ह़ करें फिर पाउं धोएं मगर मय्यित के वुज़ू में गिट्टों तक पहले हाथ धोना और कुल्ली करना और नाक में पानी डालना नहीं है। हां, कोई कपड़ा या रूई की फरेरी भिगो कर दांतों और मसूड़ों और होंटों और नथनों पर फेर दें फिर सर और दाढ़ी के बाल हों तो गुले ख़ैरू से धोएं येह न हो तो पाक साबुन इस्लामी कारख़ाने का बना हुवा या बेसन या किसी और चीज़ से वरना ख़ाली पानी भी काफ़ी है, फिर बाईं करवट पर लिटा कर सर से पाउं तक बेरी का पानी बहाएं कि तख़्ते तक पहुंच जाए फिर दाह्नी करवट पर लिटा कर यूंही करें और बेरी के पत्ते जोश दिया हुवा पानी न हो तो ख़ालिस पानी नीम गर्म काफ़ी है फिर टेक लगा कर बिठाएं और नर्मी के साथ नीचे को पेट पर हाथ फेरें अगर कुछ निकले धो डालें वुज़ू व ग़ुस्ल का इआ़दा न करें फिर आख़िर में सर से पाउं तक काफ़ूर का पानी बहाएं फिर उस के बदन को किसी पाक कपड़े से आहिस्ता पोंछ दें।[1]

मस्अला 3 एक मरतबा सारे बदन पर पानी बहाना फ़र्ज़ है और तीन मरतबा सुन्नत। जहां ग़ुस्ल दें मुस्तह़ब येह है कि पर्दा कर लें कि सिवा नहलाने वालों और मददगारों के दूसरा न देखे, नहलाते वक़्त ख़्वाह इस त़रह़ लिटाएं जैसे क़ब्र में रखते हैं या क़िब्ले की त़रफ़ पाउं कर के या जो आसान हो करें।[2] (عالمگیری)

मस्अला 4 नहलाने वाला बा त़हारत हो, जुनुब या ह़ैज़ वाली औ़रत ने ग़ुस्ल दिया तो कराहत है मगर ग़ुस्ल हो जाएगा और बे वुज़ू ने नहलाया तो कराहत भी नहीं, बेहतर येह है कि नहलाने वाला मय्यित का सब से ज़ियादा क़रीबी रिश्तेदार हो, वोह न हो या नहलाना न जानता हो तो कोई और शख़्स जो अमानत दार व परहेज़गार हो।[3] (عالمگیری)

मस्अला 5 नहलाने वाला मोतमद शख़्स हो कि पूरी त़रह़ ग़ुस्ल दे और जो अच्छी बात देखे, मसलन चेहरा चमक उठा या मय्यित के बदन से ख़ुश्बू आई तो उसे लोगों के सामने बयान करे और कोई बुरी बात देखी, मसलन चेहरे का रंग सियाह हो गया या बदबू आई या सूरत या आज़ा में तग़य्युर आया तो उसे किसी से न कहे और ऐसी बात कहना जाइज़ भी नहीं, कि ह़दीस में इरशाद हुवा : "अपने मुर्दों की ख़ूबियां ज़िक्र करो और उस की बुराइयों से बाज़ रहो।"[4] (جوہرہ نیرہ)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٨، وغيره.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٨.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٩.
4 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣١.
"سنن أبي داود"، كتاب الأدب، باب في النهى عن سب الموتى، الحديث: ٤٩٠٠، ج٤، ص٣٦٠.

www.dawateislami.net

मस्अला 6 अगर कोई बद मज़्हब मरा और उस का रंग सियाह हो गया या और कोई बुरी बात ज़ाहिर हुई तो उस का बयान करना चाहिये कि इस से लोगों को इ़ब्रत व नसीह़त होगी ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 7 नहलाने वाले के पास ख़ुश्बू सुलगाना मुस्तह़ब है कि अगर मय्यित के बदन से बू आए तो उसे पता न चले वरना घबराएगा, नीज़ उसे चाहिये कि ब क़दरे ज़रूरत आज़ाए मय्यित की त़रफ़ नज़र करे बिला ज़रूरत किसी उ़ज़्व की त़रफ़ न देखे कि मुम्किन है उस के बदन में कोई ऐ़ब हो जिसे वोह छुपाता था ।[2] (جوہرہ)

मस्अला 8 अगर वहां उस के सिवा और भी नहलाने वाले हों तो नहलाने पर उजरत ले सकता है मगर अफ़्ज़ल येह है कि न ले और अगर कोई दूसरा नहलाने वाला न हो तो उजरत लेना जाइज़ नहीं ।[3] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 9 जुनुब या ह़ैज़ो निफ़ास वाली औ़रत का इन्तिक़ाल हुवा तो एक ही ग़ुस्ल काफ़ी है कि ग़ुस्ल वाजिब होने के कितने ही अस्बाब हों, सब एक ग़ुस्ल से अदा हो जाते हैं ।[4] (درمختار)

मस्अला 10 मर्द को मर्द नहलाए और औ़रत को औ़रत, मय्यित छोटा लड़का है तो उसे औ़रत भी नहला सकती है और छोटी लड़की को मर्द भी, छोटे से येह मुराद कि ह़द्दे शह्वत को न पहुंचे हों ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 11 जिस मर्द का उ़ज़्वे तनासुल या उन्सयैन काट लिये गए हों वोह मर्द ही है यानी मर्द ही उसे ग़ुस्ल दे सकता है या उस की औ़रत ।[6] (عالمگیری)

मस्अला 12 औ़रत अपने शौहर को ग़ुस्ल दे सकती है जब कि मौत से पहले या बाद कोई ऐसा अम्र न वाक़ेअ़ हुवा हो जिस से उस के निकाह़ से निकल जाए, मसलन शौहर के लड़के या बाप को शह्वत से छुवा या बोसा लिया या مَعَاذَاللہ मुरतद हो गई, अगर्चे ग़ुस्ल से पहले ही फिर मुसलमान हो गई कि इन वुजूह से निकाह़ जाता रहा और अज्नबिय्या हो गई लिहाज़ा ग़ुस्ल नहीं दे सकती ।[7] (عالمگیری)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٩.
2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣١.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٩-١٦٠. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٧.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٢.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٦٠.
6 ..... المرجع السابق. 7 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 13 औ़रत को त़लाक़े रज्ई दी हुनूज़ इद्दत में थी कि शौहर का इन्तिक़ाल हो गया तो ग़ुस्ल दे सकती है और बाइन त़लाक़ दी है तो अगर्चे इद्दत में है ग़ुस्ल नहीं दे सकती ।[1] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 14 उम्मे वलद[2] या मुदब्बरा[3] या मुकातबा[4] या वैसी बांदी अपने आक़ाए मुर्दा को ग़ुस्ल नहीं दे सकती कि येह सब अब उस की मिल्क से ख़ारिज हो गईं । यूंही अगर येह मर जाएं तो आक़ा नहीं नहला सकता ।[5] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 15 औ़रत मर जाए तो शौहर न उसे नहला सकता है न छू सकता है और देखने की मुमानअ़त नहीं ।[6] (درمختار)

अ़वाम में जो येह मश्हूर है कि शौहर औ़रत के जनाज़े को न कन्धा दे सकता है न क़ब्र में उतार सकता है न मुंह देख सकता है, येह महज़ ग़लत़ है सिर्फ़ नहलाने और उस के बदन को बिला ह़ाइल हाथ लगाने की मुमानअ़त है ।

मस्अला 16 औ़रत का इन्तिक़ाल हुवा और वहां कोई औ़रत नहीं कि नहला दे तो तयम्मुम कराया जाए फिर तयम्मुम कराने वाला मह़रम हो तो हाथ से तयम्मुम कराए और अजनबी हो अगर्चे शौहर तो हाथ पर कपड़ा लपेट कर जिन्से ज़मीन पर हाथ मारे और तयम्मुम कराए और शौहर के सिवा कोई और अजनबी हो तो कलाइयों की त़रफ़ नज़र न करे और शौहर को इस की ह़ाजत नहीं और इस मस्अले में जवान और बुढ़िया दोनों का एक हुक्म है ।[7] (درمختار، عالمگیری وغیرہما)

मस्अला 17 मर्द का इन्तिक़ाल हुवा और वहां न कोई मर्द है न उस की बीबी तो जो औ़रत वहां है उसे तयम्मुम कराए फिर अगर औ़रत मह़रम है या उस की बांदी तो तयम्मुम में हाथ पर कपड़ा लपेटने की ह़ाजत नहीं और अजनबी हो तो कपड़ा लपेट कर तयम्मुम कराए ।[8] (عالمگیری)

मस्अला 18 मर्द का सफ़र में इन्तिक़ाल हुवा और उस के साथ औ़रतें हैं और काफ़िर मर्द मगर मुसलमान मर्द कोई नहीं तो औ़रतें उस काफ़िर को नहलाने का त़रीक़ा बता दें कि

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٦٠.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٧.

2 ...यानी वोह लौंडी जिस के बच्चा पैदा हुवा और मौला ने इक़रार किया कि येह मेरा बच्चा है ।

3 ...यानी वोह लौंडी जिस की निस्बत मौला ने कहा कि तू मेरे मरने के बाद आज़ाद है ।

4 ...यानी आक़ा अपनी लौंडी से माल की एक मिक़्दार मुक़र्रर कर के येह कह दे कि इतना अदा कर दे तो आज़ाद है और लौंडी इस को क़बूल भी कर ले ।

नोट : तफ़्सीली मालूमात के लिये **बहारे शरीअ़त हिस्सा 9** में मुदब्बर, मुकातब और उम्मे वलद का बयान मुलाह़ज़ा फ़रमाएं ।

5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٦. وغيره

6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٥.

7 ..... المرجع السابق، ص١١٠.

و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٦٠، وغيرهما.

8 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٦٠.

www.dawateislami.net

वोह नहला दे और अगर मर्द कोई नहीं और छोटी लड़की हमराह है कि नहलाने की ताक़त रखती है तो येह औ़रतें उसे सिखा दें कि वोह नहलाए। यूंही अगर औ़रत का इन्तिक़ाल हुवा और कोई मुसलमान औ़रत नहीं और काफ़िरा औ़रत मौजूद है तो मर्द उस काफ़िरा को ग़ुस्ल की तालीम करे और उस से नहलवाए या छोटा लड़का इस क़ाबिल हो कि नहला सके तो उसे बताए और वोह नहलाए।[1] (عالمگیری)

मस्अला 19 ऐसी जगह इन्तिक़ाल हुवा कि पानी वहां नहीं मिलता तो तयम्मुम कराएं और नमाज़ पढ़ें और नमाज़ के बाद अगर क़ब्ले दफ़्न पानी मिल जाए तो नहला कर नमाज़ का इआ़दा करें।[2] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 20 ख़ुन्सा मुश्किल[3] का इन्तिक़ाल हुवा तो उसे न मर्द नहला सकता है न औ़रत बल्कि तयम्मुम कराया जाए और तयम्मुम कराने वाला अजनबी हो तो हाथ पर कपड़ा लपेट ले और कलाइयों पर नज़र न करे। यूंही ख़ुन्सा मुश्किल किसी मर्द या औ़रत को ग़ुस्ल नहीं दे सकता।[4] (عالمگیری) ख़ुन्सा मुश्किल छोटा बच्चा हो तो उसे मर्द भी नहला सकते हैं और औ़रत भी यूंही अ़क्स।

मस्अला 21 मुसलमान का इन्तिक़ाल हुवा और उस का बाप काफ़िर है तो उसे मुसलमान नहलाएं, उस के बाप के क़ाबू में न दें, काफ़िर मुसलमान हुवा और उस की औ़रत काफ़िरा है तो अगर किताबिया है नहला सकती है मगर बिला ज़रूरत उस से नहलवाना बहुत बुरा है और अगर मजूसिया या बुत परस्त है और उस के मरने के बाद मुसलमान हो गई तो नहला सकती है बशर्ते कि निकाह़ में बाक़ी हो वरना नहीं और निकाह़ में बाक़ी रहने की सूरत येह है कि अगर सल्तनते इस्लामी में है तो ह़ाकिमे इस्लाम शौहर के मुसलमान होने के बाद औ़रत पर इस्लाम पेश करे, अगर मान लिया फ़बिहा वरना फ़ौरन निकाह़ से निकल जाएगी और अगर सल्तनते इस्लामी में नहीं तो इस्लामे शौहर के बाद औ़रत को तीन ह़ैज़ आने का इन्तिज़ार किया जाएगा इस मुद्दत में मुसलमान हो गई फ़बिहा वरना निकाह़ से निकल जाएगी और दोनों सूरतों में फिर अगर्चे मुसलमान हो जाए ग़ुस्ल नहीं दे सकती।[5] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 22 मय्यित से ग़ुस्ल उतर जाने और उस पर नमाज़ सह़ीह़ होने में निय्यत और फ़ेल शर्त नहीं, यहां तक कि मुर्दा अगर पानी में गिर गया या उस पर मींह बरसा कि सारे बदन पर पानी बह गया ग़ुस्ल हो गया, मगर ज़िन्दों पर जो ग़ुस्ले मय्यित वाजिब है येह उस वक़्त

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٦٠.
2 ..... المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١١١.
3 ...यानी जिस में मर्द व औ़रत दोनों की अ़लामतें पाई जाएं और येह साबित न हो कि मर्द है या औ़रत।
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٦٠.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٧، وغيره.

www.dawateislami.net

बरिय्युज़्ज़िम्मा होंगे कि नहलाएं, लिहाज़ा अगर मुर्दा पानी में मिला तो ब निय्यते ग़ुस्ल उसे तीन बार पानी में ह़रकत दे दें कि ग़ुस्ले मस्नून अदा हो जाए और एक बार ह़रकत दी तो वाजिब अदा हो गया मगर सुन्नत का मुत़ालबा रहा और बिला निय्यत नहलाने से बरिय्युज़्ज़िम्मा हो जाएंगे मगर सवाब न मिलेगा। मसलन किसी को सिखाने की निय्यत से मय्यित को ग़ुस्ल दिया वाजिब साक़ित़ हो गया, मगर ग़ुस्ले मय्यित का सवाब न मिलेगा, नीज़ ग़ुस्ल हो जाने के लिये येह भी ज़रूरी नहीं कि नहलाने वाला मुकल्लफ़ या अहले निय्यत हो, लिहाज़ा ना बालिग़ या काफ़िर ने नहला दिया ग़ुस्ल अदा हो गया। यूंही अगर औ़रते अज्नबिय्या ने मर्द को या मर्द ने औ़रत को ग़ुस्ल दिया, ग़ुस्ल अदा हो गया अगर्चे इन को नहलाना जाइज़ न था।[1] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 23 किसी मुसलमान का आधे से ज़ियादा धड़ मिला तो ग़ुस्ल व कफ़न देंगे और जनाज़े की नमाज़ पढ़ेंगे और नमाज़ के बाद वोह बाक़ी टुकड़ा भी मिला तो उस पर दोबारा नमाज़ न पढ़ेंगे और आधा धड़ मिला तो अगर उस में सर भी है जब भी येही ह़ुक्म है और अगर सर न हो या त़ूल में सर से पाउं तक दह्ना या बायां एक जानिब का ह़िस्सा मिला तो इन दोनों सूरतों में न ग़ुस्ल है, न कफ़न, न नमाज़ बल्कि एक कपड़े में लपेट कर दफ़्न कर दें।[2] (عالمگیری، درمختار وغیرہما)

मस्अला 24 मुर्दा मिला और येह नहीं मालूम कि मुसलमान है या काफ़िर तो अगर उस की वज़्अ़ क़त़्अ़ मुसलमानों की हो या कोई अ़लामत ऐसी हो, जिस से मुसलमान होना साबित होता है या मुसलमानों के मह़ल्ले में मिला तो ग़ुस्ल दें और नमाज़ पढ़ें वरना नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 25 मुसलमान मुर्दे काफ़िर मुर्दों में मिल गए तो अगर ख़तना वग़ैरा किसी अ़लामत से शनाख़्त कर सकें तो मुसलमानों को जुदा कर के ग़ुस्ल व कफ़न दें और नमाज़ पढ़ें और इम्तियाज़ न होता हो तो ग़ुस्ल दें और नमाज़ में ख़ास मुसलमानों के लिये दुआ़ की निय्यत करें और उन में अगर मुसलमान की तादाद ज़ियादा हो तो मुसलमानों के मक़्बरे में दफ़्न करें वरना अ़लाह़दा।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 26 काफ़िर मुर्दे के लिये ग़ुस्ल व कफ़न व दफ़्न नहीं बल्कि एक चीथड़े में लपेट कर तंग गढ़े में दाब दें, येह भी जब करें कि उस का कोई हम मज़्हब न हो या उसे ले न जाए, वरना मुसलमान हाथ न लगाए न उस के जनाज़े में शिर्कत करे और अगर ब वज़्हे

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في حديث ((كل سبب و نسب منقطع إلا سببي و نسبي))، ج٣، ص١٠٨.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٧.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٩، وغيرهما.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٩.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في حديث ((كل سبب و نسب منقطع إلا سببي و نسبي))، ج٣، ص١٠٩.

www.dawateislami.net

क़राबते क़रीबा शरीक हो तो दूर दूर रहे और अगर मुसलमान ही उस का रिश्तेदार है और उस का हम मज़्हब कोई न हो या ले नहीं और ब लिहाज़े क़राबत ग़ुस्ल व कफ़न दफ़्न करे तो जाइज़ है, मगर किसी अम्र में सुन्नत का त़रीक़ा न बरते बल्कि नजासत धोने की त़रह़ उस पर पानी बहाए और चीथड़े में लपेट कर तंग गढ़े में दबा दे, येह हुक्म काफ़िरे अस्ली का है और मुरतद का हुक्म येह है कि मुत़्लक़न न उसे ग़ुस्ल दें न कफ़न, बल्कि कुत्ते की त़रह़ किसी तंग गढ़े में धकेल कर मिट्टी से बग़ैर ह़ाइल के पाट दें।[1] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 27 ज़िम्मिया को मुसलमान का ह़म्ल था वोह मर गई अगर बच्चे में जान पड़ गई थी तो उसे मुसलमानों के क़ब्रिस्तान से अ़लाह़दा दफ़्न करें और उस की पीठ क़िब्ला को कर दें कि बच्चे का मुंह क़िब्ले को हो, इस लिये कि बच्चा जब पेट में होता है तो उस का मुंह मां की पीठ की त़रफ़ होता है।[2] (درمختار)

मस्अला 28 मय्यित का बदन अगर ऐसा हो गया कि हाथ लगाने से खाल उधड़ेगी तो हाथ न लगाएं सिर्फ़ पानी बहा दें।[3] (عالمگیری)

मस्अला 29 नहलाने के बाद अगर नाक कान मुंह और दीगर सूराख़ों में रूई रख दें तो ह़रज नहीं मगर बेहतर येह है कि न रखें।[4] (عالمگیری، درمختار وغیرہما)

मस्अला 30 मय्यित की दाढ़ी या सर के बाल में कंघा करना या नाख़ुन तराश्ना या किसी जगह के बाल मूंडना या कतरना या उखाड़ना, ना जाइज़ व मक्रूह व तह़रीमी है बल्कि हुक्म येह है कि जिस ह़ालत पर है उसी ह़ालत में दफ़्न कर दें। हां, अगर नाख़ुन टूटा हो तो ले सकते हैं और अगर नाख़ुन या बाल तराश लिये तो कफ़न में रख दें।[5] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 31 मय्यित के दोनों हाथ करवटों में रखें सीने पर न रखें कि येह कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है।[6] (درمختار) बाज़ जगह नाफ़ के नीचे इस त़रह़ रखते हैं जैसे नमाज़ के क़ियाम में, येह भी न करें।

मस्अला 32 बाज़ जगह दस्तूर है कि उ़मूमन मय्यित के ग़ुस्ल के लिये कोरे घड़े बधने[7] लाते हैं इस की कुछ ज़रूरत नहीं, घर के इस्तिमाली घड़े लोटे से भी ग़ुस्ल दे

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: مهم إذا قال ان شتمت، ج٣، ص١٥٨.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١١٠.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٨.
4 ..... المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٤ ـ ١٠٥، وغيرهما.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في القراءة عند الميت، ج٣، ص١٠٤.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٨.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٠٥.
7 ...यानी मिट्टी के नए मटके, लोटे।

www.dawateislami.net

सकते हैं और बाज़ येह जहालत करते हैं कि ग़ुस्ल के बाद तोड़ डालते हैं, येह ना जाइज़ो ह़राम है कि माल ज़ाएअ़ करना है और अगर येह ख़याल हो कि नजिस हो गए तो येह भी फ़ुज़ूल बात है कि अव्वलन तो उस पर छींटें नहीं पड़तीं और पड़ीं भी तो राजेह़ येह है कि मय्यित का ग़ुस्ल नजासते हुक्मिय्या दूर करने के लिये है तो मुस्तामल पानी की छींटें पड़ीं और मुस्तामल पानी नजिस नहीं, जिस त़रह़ ज़िन्दों के वुज़ू व ग़ुस्ल का पानी और अगर फ़र्ज़ किया जाए कि नजिस पानी की छींटें पड़ीं तो धो डालें, धोने से पाक हो जाएंगे और अक्सर जगह वोह घड़े बधने मस्जिदों में रख देते हैं अगर निय्यत येह हो कि नमाज़ियों को आराम पहुंचेगा और उस का मुर्दे को सवाब तो येह अच्छी निय्यत है और रखना बेहतर और अगर येह ख़याल हो कि घर में रखना नुहूसत है तो येह निरी ह़माक़त और बाज़ लोग घड़े का पानी फेंक देते हैं येह भी ह़राम है।

कफ़न का बयान

मस्अला 1 मय्यित को कफ़न देना फ़र्ज़े किफ़ाया है, कफ़न के तीन दरजे हैं :

(1) ज़रूरत (2) किफ़ायत (3) सुन्नत

मर्द के लिये सुन्नत तीन कपड़े हैं :

(1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार (3) क़मीस

और औ़रत के लिये पांच :

(1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार (3) क़मीस

(4) ओढ़नी (5) सीनाबन्द

कफ़ने किफ़ायत मर्द के लिये दो कपड़े हैं :

(1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार

और औ़रत के लिये तीन :

(1) लिफ़ाफ़ा (2) इज़ार (3) ओढ़नी या

(1) लिफ़ाफ़ा (2) क़मीस (3) ओढ़नी।

कफ़ने ज़रूरत दोनों के लिये येह कि जो मुयस्सर आए और कम से कम इतना तो हो कि सारा बदन ढक जाए।[1] (درمختار، عالمگیری وغیرہما)

[1] ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١١٢ـ ١١٦.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١، ص١٦٠، وغيرهما.

www.dawateislami.net

मस्अला 2 लिफ़ाफ़ा यानी चादर की मिक़्दार येह है कि मय्यित के क़द से इस क़दर ज़ियादा हो कि दोनों त़रफ़ बांध सकें और इज़ार यानी तहबन्द चोटी से क़दम तक यानी लिफ़ाफ़े से इतनी छोटी जो बन्दिश के लिये ज़ियादा था और क़मीस जिस को कफ़नी कहते हैं गरदन से घुटनों के नीचे तक और येह आगे और पीछे दोनों त़रफ़ बराबर हों और जाहिलों में जो रवाज है कि पीछे कम रखते हैं येह ग़लत़ी है, चाक और आस्तीनें इस में न हों। मर्द और औ़रत की कफ़नी में फ़र्क़ है, मर्द की कफ़नी मूंढे पर चीरें और औ़रत के लिये सीने की त़रफ़, ओढ़नी तीन हाथ की होनी चाहिये यानी डेढ़ गज़, सीनाबन्द पिस्तान से नाफ़ तक और बेहतर येह है कि रान तक हो।[1] (عالمگیری، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 3 बिला ज़रूरत कफ़ने किफ़ायत से कम करना ना जाइज़ व मक्रूह है।[2] (درمختار) बाज़ मोह़ताज कफ़ने ज़रूरत पर क़ादिर होते हैं मगर कफ़ने मस्नून मुयस्सर नहीं, वोह कफ़ने मस्नून के लिये लोगों से सुवाल करते हैं येह ना जाइज़ है कि सुवाल बिला ज़रूरत जाइज़ नहीं और यहां ज़रूरत नहीं, अलबत्ता अगर कफ़ने ज़रूरत पर भी क़ादिर न हों तो ब क़दरे ज़रूरत सुवाल करें ज़ियादा नहीं। हां, अगर बग़ैर मांगे मुसलमान ख़ुद कफ़ने मस्नून पूरा कर दें तो اِنْ شَآءَ اللہ تَعَالٰی पूरा सवाब पाएंगे।[3] (फ़तावा रज़विय्या)

मस्अला 4 वुरसा में इख़्तिलाफ़ हुवा, कोई दो कपड़ों के लिये कहता है कोई तीन के लिये, तो तीन कपड़े दिये जाएं कि येह सुन्नत है या यूं किया जाए कि अगर माल ज़ियादा है और वारिस कम तो कफ़ने सुन्नत दें और माल कम है वारिस ज़ियादा तो कफ़ने किफ़ायत।[4] (جوہرہ وغیرہا)

मस्अला 5 कफ़न अच्छा होना चाहिये यानी मर्द ईदैन व जुमुआ़ के लिये जैसे कपड़े पहनता था और औ़रत जैसे कपड़े पहन कर मायके जाती थी उस क़ीमत का होना चाहिये। ह़दीस में है : "मुर्दों को अच्छा कफ़न दो कि वोह बाहम मुलाक़ात करते और अच्छे कफ़न से तफ़ाख़ुर करते हैं, सफ़ेद कफ़न बेहतर है कि नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अपने मुर्दे सफ़ेद कपड़ों में कफ़नाओ।"[5] (غنیہ، ردالمحتار)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١، ص١٦٠.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الكفن، ج٣، ص١١٢، وغيرهما.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الكفن، ج٣، ص١١٥.
3 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص١٠٠. 4 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٥.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الكفن، ج٣، ص١١٢.
و "غنية المتملي"، فصل في الجنائز، ص٥٨١ ـ ٥٨٢.
"جامع الترمذي"، أبواب الجنائز، باب ماجاء ما يستحب من الأكفان، الحديث: ٩٩٦، ج٢، ص٣٠١.

www.dawateislami.net

मस्अला 6 कुसुम या ज़ाफ़रान का रंगा हुवा या रेशम का कफ़न मर्द को मम्नूअ़ है और औ़रत के लिये जाइज़ यानी जो कपड़ा ज़िन्दगी में पहन सकता है, उस का कफ़न दिया जा सकता है और जो ज़िन्दगी में ना जाइज़, उस का कफ़न भी ना जाइज़ ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 7 खुन्सा मुश्किल को औ़रत की त़रह़ पांच कपड़े दिये जाएं मगर कुसुम या ज़ाफ़रान का रंगा हुवा और रेशमी कफ़न इसे ना जाइज़ है ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 8 किसी ने वसिय्यत की, कि कफ़न में उसे दो कपड़े दिये जाएं तो येह वसिय्यत जारी न की जाए, तीन कपड़े दिये जाएं और अगर येह वसिय्यत की, कि हज़ार रुपये का कफ़न दिया जाए तो येह भी नाफ़िज़ न होगी मुतवस्सित़ दरजे का दिया जाए ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 9 जो ना बालिग़ ह़द्दे शह्वत[4] को पहुंच गया वोह बालिग़ के ह़ुक्म में है यानी बालिग़ को कफ़न में जितने कपड़े दिये जाते हैं उसे भी दिये जाएं और इस से छोटे लड़के को एक कपड़ा और छोटी लड़की को दो कपड़े दे सकते हैं और लड़के को भी दो कपड़े दिये जाएं तो अच्छा है और बेहतर येह है कि दोनों को पूरा कफ़न दें अगर्चे एक दिन का बच्चा हो ।[5] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 10 पुराने कपड़े का भी कफ़न हो सकता है, मगर पुराना हो तो धुला हुवा हो कि कफ़न सुथरा होना मरग़ूब है ।[6] (جوہرہ)

मस्अला 11 मय्यित ने अगर कुछ माल छोड़ा तो कफ़न उसी के माल से होना चाहिये और मद्यून[7] है तो क़र्ज़ ख़्वाह[8] कफ़ने किफ़ायत से ज़ियादा को मन्अ़ कर सकता है और मन्अ़ न किया तो इजाज़त समझी जाएगी ।[9] (ردالمحتار) मगर क़र्ज़ ख़्वाह को मुमानअ़त का उस वक़्त ह़क़ है, जब वोह तमाम माल दैन में मुस्त़ग़रक़[10] हो ।

मस्अला 12 दैन व वसिय्यत व मीरास, इन सब पर कफ़न मुक़द्दम है और दैन वसिय्यत पर और वसिय्यत मीरास पर ।[11] (جوہرہ)

मस्अला 13 मय्यित ने माल न छोड़ा तो कफ़न उस के ज़िम्मे है जिस के ज़िम्मे ज़िन्दगी में

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١، ص١٦١.
2 ..... المرجع السابق. 3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الكفن، ج٣، ص١١٢.
4 ...ह़द्दे शह्वत लड़कों में येह कि उस का दिल औ़रतों की त़रफ़ रग़बत करे और लड़की में येह कि उसे देख कर मर्द को उस की त़रफ़ मैलान पैदा हो और इस का अन्दाज़ा लड़कों में बारह साल और लड़कियों में नव बरस है । 12 मिन्ह
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الكفن، ج٣، ص١١٧، وغيره .
6 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، الجزء الأول، ص١٣٥.
7 ...यानी मक़रूज़ । 8 ...यानी क़र्ज़ देने वाला ।
9 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، مطلب في الكفن، ج٣، ص١١٤، وغيره .
10 ...यानी क़र्ज़ में घिरा हुवा । 11 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٤.

www.dawateislami.net

नफ़क़ा था और अगर कोई ऐसा नहीं जिस पर नफ़क़ा वाजिब होता या है मगर नादार है तो बैतुल माल से दिया जाए और बैतुल माल भी वहां न हो, जैसे यहां हिन्दुस्तान में तो वहां के मुसलमानों पर कफ़न देना फ़र्ज़ है, अगर मालूम था और न दिया तो सब गुनहगार होंगे अगर उन लोगों के पास भी नहीं तो एक कपड़े की क़दर और लोगों से सुवाल कर लें।[1] (جوہرہ، درمختار)

मस्अला 14 औ़रत ने अगर्चे माल छोड़ा उस का कफ़न शौहर के ज़िम्मे है बशर्ते कि मौत के वक़्त कोई ऐसी बात न पाई गई जिस से औ़रत का नफ़क़ा शौहर पर से साक़ित हो जाता, अगर शौहर मरा और उस की औ़रत मालदार है, जब भी औ़रत पर कफ़न वाजिब नहीं।[2] (عالمگیری، درمختار وغیرہما)

मस्अला 15 येह जो कहा गया कि फुलां पर कफ़न वाजिब है इस से मुराद कफ़ने शरई है। यूंही बाक़ी सामाने तज्हीज़ मसलन ख़ुश्बू और ग़स्साल और ले जाने वालों की उजरत और दफ़न के मसारिफ़, सब में शरई मिक़्दार मुराद है। बाक़ी और बातें अगर मय्यित के माल से की गईं और वरसा बालिग़ हों और सब वारिसों ने इजाज़त भी दे दी हो तो जाइज़ है, वरना ख़र्च करने वाले के ज़िम्मे है।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 16 कफ़न के लिये सुवाल कर लाए उस में से कुछ बच रहा तो अगर मालूम है कि येह फुलां ने दिया है तो उसे वापस कर दें, वरना दूसरे मोहताज के कफ़न में सर्फ़ कर दें, येह भी न हो तो तसद्दुक़ कर दें।[4] (درمختار)

मस्अला 17 मय्यित ऐसी जगह है कि वहां सिर्फ़ एक शख़्स है और उस के पास सिर्फ़ एक ही कपड़ा है तो उस पर येह ज़रूरी नहीं कि अपने कपड़े का कफ़न कर दे।[5] (درمختار)

मस्अला 18 कफ़न पहनाने का तरीक़ा येह है कि मय्यित को ग़ुस्ल देने के बाद बदन किसी पाक कपड़े से आहिस्ता पोंछ लें कि कफ़न तर न हो और कफ़न को एक या तीन या पांच या सात बार धूनी दे लें इस से ज़ियादा नहीं, फिर कफ़न यूं बिछाएं कि पहले बड़ी चादर फिर तहबन्द फिर कफ़नी फिर मय्यित को उस पर लिटाएं और कफ़नी पहनाएं और दाढ़ी और तमाम बदन पर ख़ुश्बू मलें और मवाज़ए सुजूद यानी माथे, नाक, हाथ, घुटने, क़दम पर काफ़ूर लगाएं फिर इज़ार यानी तहबन्द लपेटें पहले बाईं जानिब से फिर दहनी तरफ़ से फिर

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٤.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١١٨-١٢٠.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١، ص١٦١.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في كفن الزوجة على الزوج، ج٣، ص١١٩.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في كفن الزوجة على الزوج، ج٣، ص١١٩.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٠.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٠.

www.dawateislami.net

लिफ़ाफ़ा लपेटें पहले बाईं त़रफ़ से फिर दह्नी त़रफ़ से ताकि दह्ना ऊपर रहे और सर और पाउं की त़रफ़ बांध दें कि उड़ने का अन्देशा न रहे, औ़रत को कफ़नी पहना कर उस के बाल के दो हि़स्से कर के कफ़नी के ऊपर सीने पर डाल दें और ओढ़नी निस्फ़ पुश्त के नीचे से बिछा कर सर पर ला कर मुंह पर मिस्ले निक़ाब डाल दें कि सीने पर रहे कि उस का त़ूल निस्फ़ पुश्त से सीने तक है और और अ़र्ज़ एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक है और येह जो लोग किया करते हैं कि ज़िन्दगी की त़रह़ उढ़ाते हैं येह मह्ज़ बेजा व ख़िलाफ़े सुन्नत है फिर ब दस्तूर इज़ार व लिफ़ाफ़ा लपेटें फिर सब के ऊपर सीनाबन्द बालाए पिस्तान से रान तक ला कर बांधें।[1] (عالمگیری، درمختار وغیرہما)

मस्अला 19 मर्द के बदन पर ऐसी ख़ुश्बू लगाना जाइज़ नहीं जिस में ज़ाफ़रान की आमेज़िश हो, औ़रत के लिये जाइज़ है। जिस ने एह़राम बांधा है उस के बदन पर भी ख़ुश्बू लगाएं और उस का मुंह और सर कफ़न से छुपाया जाए।[2] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 20 अगर मुर्दे का कफ़न चोरी हो गया और लाश अभी ताज़ा है तो फिर कफ़न दिया जाए अगर मय्यित का माल ब दस्तूर है तो उस से और तक़्सीम हो गया तो वरसा के ज़िम्मे कफ़न देना है, वसिय्यत या क़र्ज़ में दिया गया तो इन लोगों पर नहीं और अगर कुल तर्का दैन में मुस्तग़रक़ है और क़र्ज़ ख़्वाहों ने अब तक क़ब्ज़ा न किया हो तो उसी माल से दें और क़ब्ज़ा कर लिया तो उन से वापस न लेंगे, बल्कि कफ़न उस के ज़िम्मे है कि माल न होने की सूरत में जिस के ज़िम्मे होता है और अगर सूरते मज़्कूरा में लाश फट गई तो कफ़ने मस्नून की ह़ाजत नहीं, एक कपड़ा काफ़ी है।[3] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 21 अगर मुर्दे को जानवर खा गया और कफ़न पड़ा मिला तो अगर मय्यित के माल से दिया गया है तर्के में शुमार होगा और किसी और ने दिया है अजनबी या रिश्तेदार ने तो देने वाला मालिक है जो चाहे करे।[4] (عالمگیری)

मस्अलए ज़रूरिय्या : हिन्दुस्तान में आ़म रवाज है कि कफ़ने मस्नून के इ़लावा ऊपर से एक चादर उढ़ाते हैं वोह तक्यादार या किसी मिस्कीन पर तसद्दुक़ करते हैं और एक जा नमाज़ होती है जिस पर इमाम जनाज़े की नमाज़ पढ़ाता है वोह भी तसद्दुक़ कर देते हैं, अगर येह चादर व जा नमाज़ मय्यित के माल से न हों बल्कि किसी ने अपनी त़रफ़ से दिया है (और आ़दतन वोही देता है जिस ने कफ़न दिया बल्कि कफ़न के लिये जो कपड़ा लाया जाता है वोह उसी अन्दाज़ से लाया जाता है जिस में येह दोनों भी हो जाएं) जब तो ज़ाहिर है कि इस की

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١، ص١٦١.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١١٦، وغيرهما .
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١، ص١٦١.
3 ..... المرجع السابق. 4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثالث، ج١، ص١٦٢.

www.dawateislami.net

इजाज़त है और इस में कोई ह़रज नहीं और अगर मय्यित के माल से है तो दो सूरतें हैं, एक येह कि वरसा सब बालिग़ हों और सब की इजाज़त से हो, जब भी जाइज़ है और अगर इजाज़त न दी तो जिस ने मय्यित के माल से मंगाया और तसदुक़ किया उस के ज़िम्मे येह दोनों चीज़ें हैं यानी इन में जो क़ीमत सर्फ़ हुई तर्के में शुमार की जाएगी और वोह क़ीमत ख़र्च करने वाला अपने पास से देगा, दूसरी सूरत येह कि वरसा में कुल या बाज़ ना बालिग़ हैं तो अब वोह दोनों चीज़ें तर्के से हरगिज़ नहीं दी जा सकतीं, अगर्चे उस ना बालिग़ ने इजाज़त भी दे दी हो। कि ना बालिग़ के माल को सर्फ़ कर लेना ह़राम है। लोटे घड़े होते हुए ख़ास मय्यित के नहलाने के लिये ख़रीदे तो इस में येही तफ़्सील है। तीजा, दसवां, चालीसवां, शशमाही, बरसी के मसारिफ़ में भी येही तफ़्सील है कि अपने माल से जो चाहे ख़र्च करे और मय्यित को सवाब पहुंचाए और मय्यित के माल से येह मसारिफ़ उसी वक़्त किये जाएं कि सब वारिस बालिग़ हों और सब की इजाज़त हो वरना नहीं मगर जो बालिग़ हो अपने हिस्से से कर सकता है। एक सूरत और भी है कि मय्यित ने वसिय्यत की हो तो दैन अदा करने के बाद जो बचे उस की तिहाई में वसिय्यत जारी होगी। अक्सर लोग इस से ग़ाफ़िल हैं या ना वाक़िफ़ कि इस क़िस्म के तमाम मसारिफ़ कर लेने के बाद अब जो बाक़ी रहता है उसे तर्का समझते हैं। इन मसारिफ़ में न वारिस से इजाज़त लेते हैं, न तो ना बालिग़ वारिस होना मुज़िर जानते हैं और येह सख़्त ग़लती है, इस से कोई येह न समझे कि तीजा वग़ैरा को मन्अ़ किया जाता है कि येह तो **ईसाले सवाब** है, इसे कौन मन्अ़ करेगा ! मन्अ़ वोह करे जो वहाबी हो बल्कि ना जाइज़ तौ़र पर जो इन में सर्फ़ किया जाता है उस से मन्अ़ किया जाता है, कोई अपने माल से करे या वरसा बालिग़ीन ही हों, उन से इजाज़त ले कर करे तो मुमानअ़त नहीं।

जनाज़ा ले चलने का बयान

मस्अला 1 जनाज़े को कन्धा देना इबादत है, हर शख़्स को चाहिये कि इबादत में कोताही न करे और हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने साद बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ عَنْه का जनाज़ा उठाया।[1] (جوہرہ)

मस्अला 2 सुन्नत येह है कि चार शख़्स जनाज़ा उठाएं, एक एक पाया एक शख़्स ले और अगर सिर्फ़ दो शख़्सों ने जनाज़ा उठाया, एक सिरहाने और एक पाएंती तो बिला ज़रूरत मक्रूह है और ज़रूरत से हो मसलन जगह तंग है तो ह़रज नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 3 सुन्नत येह है कि यके बाद दीगरे चारों पायों को कन्धा दे और हर बार दस

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٩.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢.

www.dawateislami.net

दस क़दम चले और पूरी सुन्नत येह कि पहले दहने सिरहाने कन्धा दे फिर दहनी पाएंती फिर बाएं सिरहाने फिर बाईं पाएंती और दस दस क़दम चले तो कुल चालीस क़दम हुए कि ह़दीस में है : "जो **चालीस** क़दम जनाज़ा ले चले उस के चालीस कबीरा गुनाह मिटा दिये जाएंगे।" नीज़ ह़दीस में है : "जो जनाज़े के चारों पायों को कन्धा दे, **अल्लाह** तआ़ला उस की ह़त्मी मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।"[1] (جوہرہ، عالمگیری، درمختار)

मस्अला 4 जनाज़ा ले चलने में चारपाई को हाथ से पकड़ कर मूंढे पर रखे, अस्बाब की त़रह़ गरदन या पीठ पर लादना मक्रूह है, चौपाए पर जनाज़ा लादना भी मक्रूह है।[2] (عالمگیری، غنیہ، درمختار) ठेले पर लादने का भी येही हुक्म है।

मस्अला 5 छोटा बच्चा शीर ख़्वार या अभी दूध छोड़ा हो या उस से कुछ बड़ा, उस को अगर एक शख़्स हाथ पर उठा कर ले चले तो ह़रज नहीं और यके बाद दीगरे लोग हाथों हाथ लेते रहें और अगर कोई शख़्स सुवारी पर हो और इतने छोटे जनाज़े को हाथ पर लिये हो, जब भी ह़रज नहीं और इस से बड़ा मुर्दा हो तो चारपाई पर ले जाएं।[3] (غنیہ، عالمگیری وغیرہا)

मस्अला 6 जनाज़ा मोतदिल तेज़ी से ले जाएं मगर न इस त़रह़ कि मय्यित को झटका लगे और साथ जाने वालों के लिये अफ़्ज़ल येह है कि जनाज़े से पीछे चलें, दहने बाएं न चलें और अगर कोई आगे चले तो उसे चाहिये कि इतनी दूर रहे कि साथियों में न शुमार किया जाए और सब के सब आगे हों तो मक्रूह है।[4] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 7 जनाज़े के साथ पैदल चलना अफ़्ज़ल है और सुवारी पर हो तो आगे चलना मक्रूह और आगे हो तो जनाज़े से दूर हो।[5] (عالمگیری، صغیری)

मस्अला 8 औ़रतों को जनाज़े के साथ जाना ना जाइज़ व मम्नूअ़ है और नौह़ा करने वाली साथ में हो तो उसे सख़्ती से मन्अ़ किया जाए, अगर न माने तो उस की वज्ह से जनाज़े के साथ जाना न छोड़ा जाए कि उस के ना जाइज़ फ़ेल से येह क्यूं सुन्नत तर्क करे, बल्कि दिल से उसे बुरा जाने और शरीक हो।[6] (درمختار، صغیری)

---

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٩.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٥٨ ـ ١٥٩.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٥٩.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢.
و "غنية المتملي، فصل في الجنائز، ص٥٩٢. وغيرهما

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢، وغيره.

5 ..... المرجع السابق، و "صغيرى"، فصل في الجنائز، ص٢٩٢.

6 ..... "صغيرى"، فصل في الجنائز، ص٢٩٣. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٦٢.

www.dawateislami.net

मस्अला 9 अगर औ़रतें जनाज़े के पीछे हों और मर्द को येह अन्देशा हो कि पीछे चलने में औ़रतों से इख़्तिलात़ होगा या उन में कोई नौह़ा करने वाली हो तो इन सूरतों में मर्द को आगे चलना बेहतर है ।[1] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 10 जनाज़ा ले चलने में सिरहाना आगे होना चाहिये और जनाज़े के साथ आग ले जाने की मुमानअ़त है ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 11 जनाज़े के साथ चलने वालों को सुकूत की ह़ालत में होना चाहिये । मौत और अह़वाल व अहवाले क़ब्र को पेशे नज़र रखें, दुन्या की बातें न करें न हंसें । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक शख़्स को जनाज़े के साथ हंसते देखा, फ़रमाया : ''तू जनाज़े में हंसता है, तुझ से कभी कलाम न करूंगा ।'' और ज़िक्र करना चाहें तो दिल में करें और ब लिह़ाज़े ह़ाले ज़माना अब उ़लमा ने ज़िक्रे जह्र की भी इजाज़त दी है ।[3]

(صغیری، درمختار وغیرہما)

मस्अला 12 जनाज़ा जब तक रखा न जाए बैठना मक्रूह है और रखने के बाद बे ज़रूरत खड़ा न रहे और अगर लोग बैठे हों और नमाज़ के लिये वहां जनाज़ा लाया गया तो जब तक रखा न जाए खड़े न हों । यूंही अगर किसी जगह बैठे हों और वहां से जनाज़ा गुज़रा तो खड़ा होना ज़रूरी नहीं । हां, जो शख़्स साथ जाना चाहता है वोह उठे और जाए, जब जनाज़ा रखा जाए तो यूं न रखें कि क़िब्ला को पाउं हों या सर बल्कि आड़ा रखें कि दह्नी करवट क़िब्ला को हो ।[4] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 13 जनाज़ा उठाने पर उजरत लेना देना जाइज़ है, जब कि और उठाने वाले भी मौजूद हों ।[5] (عالمگیری) मगर जो सवाब जनाज़ा ले चलने पर ह़दीस में बयान हुवा, उसे न मिलेगा कि उस ने तो बदला ले लिया ।

मस्अला 14 मय्यित अगर पड़ोसी या रिश्तेदार या कोई नेक शख़्स हो तो उस के जनाज़े के साथ जाना नफ़्ल नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है ।[6] (عالمگیری)

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، في حمل الميت، ج٣، ص١٦٢.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢.
3 ..... "صغيرى"، فصل في الجنائز، ص٢٩٢.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٦٣. و "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص١٤٠.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٦٠.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الرابع، ج١، ص١٦٢. 6 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 15 जो शख़्स जनाज़े के साथ हो उसे बग़ैर नमाज़ पढ़े वापस न होना चाहिये और नमाज़ के बाद औलियाए मय्यित से इजाज़त ले कर वापस हो सकता है और दफ़्न के बाद औलिया से इजाज़त की ज़रूरत नहीं।[1] (عالمگیری)

नमाज़े जनाज़ा का बयान

मस्अला 1 नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है कि एक ने भी पढ़ ली तो सब बरिय्युज़्ज़िम्मा हो गए, वरना जिस जिस को ख़बर पहुंची थी और न पढ़ी गुनहगार हुवा।[2] (عامۂ کتب) इस की फ़र्ज़िय्यत का जो इन्कार करे, काफ़िर है।

मस्अला 2 इस के लिये जमाअ़त शर्त़ नहीं, एक शख़्स भी पढ़ ले फ़र्ज़ अदा हो गया।[3] (عالمگیری)

मस्अला 3 नमाज़े जनाज़ा वाजिब होने के लिये वोही शराइत़ हैं जो और नमाज़ों के लिये हैं यानी

(1) क़ादिर (2) बालिग़

(3) आ़क़िल (4) मुसलमान होना

एक बात इस में ज़ियादा है यानी उस की मौत की ख़बर होना।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 4 नमाज़े जनाज़ा में दो त़रह़ की शर्तें हैं : एक मुसल्ली के मुतअ़ल्लिक़ दूसरी मय्यित के मुतअ़ल्लिक़, मुसल्ली के लिह़ाज़ से तो वोही शर्तें हैं जो मुत़्लक़ नमाज़ की हैं यानी

(1) मुसल्ली का नजासते हुक्मिय्या व ह़क़ीक़िय्या से पाक होना, नीज़ उस के कपड़े और जगह का पाक होना

(2) सत्रे औ़रत (3) क़िब्ले को मुंह होना

(4) निय्यत

इस में वक़्त शर्त़ नहीं और तक्बीरे तह़रीमा रुक्न है शर्त़ नहीं जैसा पहले ज़िक्र हुवा।[5] (ردالمحتار وغیرہ)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٥.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٠.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٢.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٢.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢١.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢١، وغيره.

www.dawateislami.net

बाज़ लोग जूता पहने और बहुत लोग जूते पर खड़े हो कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ते हैं, अगर जूता पहने पढ़ी तो जूता और उस के नीचे की ज़मीन दोनों का पाक होना ज़रूरी है, ब क़दरे मानेअ़ नजासत होगी तो उस की नमाज़ न होगी और जूते पर खड़े हो कर पढ़ी तो जूते का पाक होना[1] ज़रूरी है।

मस्अला 5 जनाज़ा तय्यार है जानता है कि वुज़ू या ग़ुस्ल करेगा तो नमाज़ हो जाएगी, तयम्मुम कर के पढ़े। इस की तफ़्सील बाबे तयम्मुम में मज़्कूर हुई।[2]

मस्अला 6 इमाम ताहिर न था तो नमाज़ फिर पढ़ें, अगर्चे मुक़्तदी ताहिर हों कि जब इमाम की न हुई किसी की न हुई और अगर इमाम ताहिर था और मुक़्तदी बिला तहारत तो इआ़दा न की जाए कि अगर्चे मुक़्तदियों की न हुई मगर इमाम की तो हो गई। यूंही अगर औ़रत ने नमाज़ पढ़ाई और मर्दों ने उस की इक़्तिदा की तो लौटाई न जाए कि अगर्चे मर्दों की इक़्तिदा सहीह़ न हुई मगर औ़रत की नमाज़ तो हो गई, वोही काफ़ी है और नमाज़े जनाज़ा की तक्रार जाइज़ नहीं।[3] (درمختار)

मस्अला 7 नमाज़े जनाज़ा सुवारी पर पढ़ी तो न हुई। इमाम का बालिग़ होना शर्त़ है ख़्वाह इमाम मर्द हो या औ़रत, ना बालिग़ ने नमाज़ पढ़ाई तो न हुई।[4] (درمختار، عالمگیری)

नमाज़े जनाज़ा में मय्यित से तअ़ल्लुक़ रखने वाली चन्द शर्तें हैं :

(1) मय्यित का मुसलमान होना।[5]

मस्अला 8 मय्यित से मुराद वोह है जो ज़िन्दा पैदा हुवा फिर मर गया तो अगर मुर्दा पैदा हुवा बल्कि अगर निस्फ़ से कम बाहर निकला उस वक़्त ज़िन्दा था और अक्सर बाहर निकलने से पेश्तर मर गया तो उस की भी नमाज़ न पढ़ी जाए और तफ़्सील आती है।

मस्अला 9 छोटे बच्चे के मां बाप दोनों मुसलमान हों या एक तो वोह मुसलमान है, उस की नमाज़ पढ़ी जाए और दोनों काफ़िर हैं तो नहीं।[6] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 10 मुसलमान को दारुल ह़र्ब में छोटा बच्चा तन्हा मिला और उस ने उठा लिया

---

1 ...इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : एह़तियात येही है कि जूता उतार कर उस पर पाउं रख कर नमाज़ पढ़ी जाए कि ज़मीन या तला अगर नापाक हो तो नमाज़ में ख़लल न आए। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 9, स. 188)....इल्मिय्या

2 ...जनाज़ा तय्यार है जानता है कि वुज़ू या ग़ुस्ल करेगा तो नमाज़ हो जाएगी तयम्मुम कर के पढ़े। अलबत्ता जिस वली को ह़क़्क़े तक़्दुम ह़ासिल हो (मसलन बादशाहे इस्लाम, फिर क़ाज़ी, फिर इमामे जुमुआ़, फिर इमामे मह़ल्ला या वली) उस के लिये जाइज़ नहीं। ऐसा ही हिदाया, ख़ानिया और काफ़ी वग़ैरा में है।
(तफ़्सील के लिये देखिये : बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 351 ३९४ ،ج١ ،كتاب الطهارة، باب التيمم ،(و"جد الممتار"..... इल्मिय्या

3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٢.

4 ..... المرجع السابق، و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٤.

5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢١. 6 .....

www.dawateislami.net

फिर मुसलमान के यहां मरा तो उस की नमाज़ पढ़ी जाए।[1] (عالمگیری)

मस्अला 11 हर मुसलमान की नमाज़ पढ़ी जाए अगर्चे वोह कैसा ही गुनहगार व मुरतकिबे कबाइर हो मगर चन्द क़िस्म के लोग हैं कि उन की नमाज़ नहीं।

(1) बाग़ी जो इमामे बरह़क़ पर नाह़क़ ख़ुरूज करे और उसी बग़ावत में मारा जाए।

(2) डाकू कि डाके में मारे गए, न उन को ग़ुस्ल दिया जाए न उन की नमाज़ पढ़ी जाए, मगर जब कि बादशाहे इस्लाम ने उन पर क़ाबू पाया और क़त्ल किया तो नमाज़ व ग़ुस्ल है या वोह न पकड़े गए न मारे गए बल्कि वैसे ही मरे तो भी ग़ुस्ल व नमाज़ है।

(3) जो लोग नाह़क़ पासदारी से लड़ें बल्कि जो उन का तमाशा देख रहे थे और पथ्थर आ कर लगा और मर गए तो उन की भी नमाज़ नहीं। हां, उन के मुतफ़र्रिक़ होने के बाद मरे तो नमाज़ है।

(4) जिस ने कई शख़्स गला घोंट कर मार डाले।

(5) शह्र में रात को हथियार ले कर लूटमार करें वोह भी डाकू हैं, इस ह़ालत में मारे जाएं तो उन की भी नमाज़ न पढ़ी जाए।

(6) जिस ने अपनी मां या बाप को मार डाला, उस की भी नमाज़ नहीं।

(7) जो किसी का माल छीन रहा था और इस ह़ालत में मारा गया, उस की भी नमाज़ नहीं।[2] (عالمگیری، درمختار وغیرہما)

मस्अला 12 जिस ने ख़ुदकुशी की ह़ालां कि येह बहुत बड़ा गुनाह है, मगर उस के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी जाएगी अगर्चे क़स्दन ख़ुदकुशी की हो, जो शख़्स रज्म किया गया या क़िसास में मारा गया, उसे ग़ुस्ल देंगे और नमाज़ पढ़ेंगे।[3] (عالمگیری، درمختار وغیرہما)

(2) मय्यित के बदन व कफ़न का पाक होना।[4]

मस्अला 13 बदन पाक होने से येह मुराद है कि उसे ग़ुस्ल दिया गया हो या ग़ुस्ल ना मुम्किन होने की सूरत में तयम्मुम कराया गया हो और कफ़न पहनाने से पेश्तर उस के बदन से नजासत निकली तो धो डाली जाए और बाद में ख़ारिज हुई तो धोने की ह़ाजत नहीं और कफ़न पाक होने का येह मत़लब है कि पाक कफ़न पहनाया जाए और बाद में अगर नजासत ख़ारिज हुई और कफ़न आलूदा हुवा तो ह़रज नहीं।[5] (درمختار، ردالمحتار)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٣.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: هل يسقط فرض... إلخ، ج٣، ص١٢٥، ١٢٨.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٣، وغيرهما.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٧، وغيرهما.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٢.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٢.

www.dawateislami.net

मस्अला 14 बग़ैर ग़ुस्ल नमाज़ पढ़ी गई न हुई, उसे ग़ुस्ल दे कर फिर पढ़ें और अगर क़ब्र में रख चुके, मगर मिट्टी अभी नहीं डाली गई तो क़ब्र से निकालें और ग़ुस्ल दे कर नमाज़ पढ़ें और मिट्टी दे चुके तो अब नहीं निकाल सकते, लिहाज़ा अब उस की क़ब्र पर नमाज़ पढ़ें कि पहली नमाज़ न हुई थी कि बग़ैर ग़ुस्ल हुई थी और अब चूंकि ग़ुस्ल ना मुम्किन है लिहाज़ा अब हो जाएगी।[1] (ردالمحتار وغیرہ)

(3) जनाज़े का वहां मौजूद होना यानी कुल या अक्सर या निस्फ़ मअ़ सर के मौजूद होना, लिहाज़ा ग़ाइब की नमाज़ नहीं हो सकती।[2]

(4) जनाज़ा ज़मीन पर रखा होना या हाथ पर हो मगर क़रीब हो, अगर जानवर वग़ैरा पर लदा हो नमाज़ न होगी।[3]

(5) जनाज़ा मुसल्ली के आगे क़िब्ला को होना, अगर मुसल्ली के पीछे होगा नमाज़ न होगी।[4]

मस्अला 15 अगर जनाज़ा उल्टा रखा यानी इमाम के दहने मय्यित का क़दम हो तो नमाज़ हो जाएगी, मगर क़स्दन ऐसा किया तो गुनहगार हुए।[5] (درمختار)

मस्अला 16 अगर क़िब्ले के जानने में ग़लती हुई यानी मय्यित को अपने ख़याल से क़िब्ले ही को रखा था मगर ह़क़ीक़तन क़िब्ले को नहीं तो मौज़ए तह़र्री में अगर तह़र्री की नमाज़ हो गई वरना नहीं।[6] (درمختار)

(6) मय्यित का वोह हि़स्सए बदन जिस का छुपाना फ़र्ज़ है छुपा होना।[7]

(7) मय्यित इमाम के मह़ाज़ी हो यानी अगर एक मय्यित है तो उस का कोई हि़स्सए बदन इमाम के मह़ाज़ी हो और चन्द हों तो किसी एक का हि़स्सए बदन इमाम के मह़ाज़ी होना काफ़ी है।[8] (ردالمحتار)

मस्अला 17 नमाज़े जनाज़ा में दो रुक्न हैं :

(1) चार बार اَللّٰہُ اَکْبَر कहना

(2) क़ियाम

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢١، وغيره.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: هل يسقط فرض الكفاية بفعل الصبي، ج٣، ص١٢٣. 3 ..... المرجع السابق. 4 ..... المرجع السابق.

5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٤. 6 ..... المرجع السابق.

7 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢١.

8 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: هل يسقط فرض الكفاية بفعل الصبي، ج٣، ص١٢٣.

www.dawateislami.net

बग़ैर उ़ज़्र बैठ कर या सुवारी पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, न हुई और अगर वली या इमाम बीमार था उस ने बैठ कर पढ़ाई और मुक़्तदियों ने खड़े हो कर पढ़ी हो गई।[1] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 18 नमाज़े जनाज़ा में तीन चीज़ें सुन्नते मुअक्कदा हैं :

(1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना (2) नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर दुरूद

(3) मय्यित के लिये दुआ़

नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा येह है कि कान तक हाथ उठा कर اَللّٰهُ اَكْبَر कहता हुवा हाथ नीचे लाए और नाफ़ के नीचे ह़स्बे दस्तूर बांध ले और सना पढ़े यानी

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

फिर बग़ैर हाथ उठाए اَللّٰهُ اَكْبَر कहे और दुरूद शरीफ़ पढ़े, बेहतर वोह दुरूद है जो नमाज़ में पढ़ा जाता है और कोई दूसरा पढ़ा जब भी ह़रज नहीं, फिर اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर अपने और मय्यित और तमाम मोमिनीन व मोमिनात के लिये दुआ़ करे और बेहतर येह कि वोह दुआ़ पढ़े जो अह़ादीस में वारिद हैं और मासूर दुआ़एं अगर अच्छी त़रह़ न पढ़ सके तो जो दुआ़ चाहे पढ़े, मगर वोह दुआ़ ऐसी हो कि उमूरे आख़िरत से मुतअ़ल्लिक़ हो।[2]

(جوہرہ نیرہ، عالمگیری، درمختار وغیرہا)

बाज़ मासूर दुआ़एं येह हैं :

(۱) اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ ط اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ (ها)[3] وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ (ها)[4]

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: هل يسقط فرض... إلخ، ج٣، ص١٢٤.

2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٧.

و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٤، ١٢٨.

3 ...इन दुआ़ओं में औ़रतों के लिये जहां सीग़े का इख़्तिलाफ़ है उसे हिलाल के ऊपर लिख दिया है। 12 मिन्ह ۞ जब कि हम ने इसे हिलाल में सामने लिख दिया है। ..... इल्मिय्या

4 ..... رواه احمد وابو داود و الترمذى والنسائى وابن حبان والحاكم عن ابى هريرة و احمد وابو يعلى والبيهقى وسعيد بن منصور فى سننه عن ابى قتادة رضى اللّٰه تعالىٰ عنهما. ۱۲منه

"المستدرك" للحاكم، كتاب الجنائز، باب أدعية صلاة الجنازة، الحديث: ١٣٦٦، ج١، ص٦٨٤.

و "عمل اليوم و الليلة" مع "السنن الكبرى" للنسائي، الحديث: ١٠٩١٩، ج٦، ص٢٦٦.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू बख़्श दे हमारे ज़िन्दा और मुर्दा और हमारे ह़ाज़िर व ग़ाइब को और हमारे छोटे और हमारे बड़े को और हमारे मर्द और औ़रत को। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हम में से तू जिसे ज़िन्दा रखे उसे इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से तू जिस को वफ़ात दे उसे ईमान पर वफ़ात दे। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू हमें इस के अज्र से महरूम न रख और इस के बाद हमें फ़ितने में न डाल। 12

www.dawateislami.net

(۲) اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَهٗ (لَهَا) وَارْحَمْهُ (هَا) وَعَافِهٖ (ها) وَاعْفُ عَنْهُ (هَا) وَاَكْرِمْ نُزُلَهٗ (هَا) وَوَسِّعْ مُدْخَلَهٗ (هَا) وَاغْسِلْهُ (هَا) بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِوَنَقِّهٖ (هَا) مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْاَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَاَبْدِلْهُ (هَا) دَارًا خَيْرًا مِّنْ دَارِهٖ (هَا) وَاَهْلاً خَيْرًا مِّنْ اَهْلِهٖ (هَا) وَزَوْجًا خَيْرًا مِّنْ زَوْجِهٖ [1] وَاَدْخِلْهُ (هَا) اَلْجَنَّةَ وَاَعِذْهُ (هَا) مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ. [2]

(۳) اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ (اَمَتُكَ) وَابْنُ (بِنْتُ) اَمَتِكَ يَشْهَدُ (تَشْهَدُ) اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَ يَشْهَدُ (تَشْهَدُ) اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ اَصْبَحَ فَقِيْرًا (اَصْبَحَتْ فَقِيْرَةً) اِلٰى رَحْمَتِكَ وَاَصْبَحْتَ غَنِيًّا عَنْ عَذَابِهٖ (هَا) تَخَلَّى (تَخَلَّتْ) مِنَ الدُّنْيَا وَاَهْلِهَا اِنْ كَانَ (كَانَتْ) زَاكِيًا (زَكِيَّةً) فَزِكِّهٖ (هَا) وَاِنْ كَانَ (كَانَتْ) مُخْطِئًا (مُخْطِئَةً) فَاغْفِرْ لَهٗ (هَا) اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ (هَا) وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَهٗ (هَا) . [3]

(۴) اَللّٰهُمَّ هٰذَا (هٰذِهٖ) عَبْدُكَ ابْنُ (اَمَتُكَ بِنْتُ) عَبْدِكَ ابْنُ (بِنْتُ) اَمَتِكَ مَاضٍ فِيْهِ (هَا) حُكْمُكَ خَلَقْتَهٗ (هَا) وَلَمْ يَكُ (تَكُ هِيَ) شَيْئًا مَذْكُوْرًا ط نَزَلَ (نَزَلَتْ) بِكَ وَاَنْتَ خَيْرُ مَنْزُوْلٍ بِهٖ اَللّٰهُمَّ لَقِّنْهُ (هَا) حُجَّتَهٗ (هَا) وَاَلْحِقْهُ (ها) بِنَبِيِّهٖ (هَا)مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ط وَثَبِّتْهُ (هَا) بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ

1...यह अल्फ़ाज़ औरत के जनाज़े पर न पढ़े जाएं। 12 मिन्ह

2..... رواه مسلم والترمذی والنسائی و ابن ماجه و ابوبكر بن ابی شيبة عن عوف بن مالك الاشجعی رضی اللّٰه تعالیٰ عنه.۱۲منه

"صحيح مسلم"، كتاب الجنائز، باب الدعاء للميت في الصلاة، الحديث: ٩٦٣، ص٤٧٩.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! इस को बख़्श दे और रहम कर और आफ़ियत दे और मुआफ़ कर और इज़्ज़त की मेहमानी कर और इस की जगह को कुशादा कर और इस को पानी और बर्फ़ और ओले से धो दे और इस को ख़ता से पाक कर जैसा कि तू ने सफ़ेद कपड़े को मैल से किया और इस को घर के बदले में बेहतर घर दे और अहल के बदले में बेहतर अहल दे और बीबी के बदले में बेहतर बीबी और इस को जन्नत में दाख़िल कर और अ़ज़ाबे क़ब्र व फ़ितनए क़ब्र व अ़ज़ाबे जहन्नम से महफ़ूज़ रख। 12

3..... رواه الحاكم عن ابن عباس رضی اللّٰه تعالیٰ عنهما. ۱۲منه

"المستدرك" للحاكم، كتاب الجنائز، باب أدعية صلاة الجنازة، الحديث: ١٣٦٩، ج١، ص٦٨٥.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! येह तेरा बन्दा है और तेरी बांदी का बेटा है गवाही देता है कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू तन्हा है तेरा कोई शरीक नहीं गवाही देता है कि मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) तेरे बन्दे और रसूल हैं येह तेरी रहमत का मोहताज है और तू इस के अ़ज़ाब से ग़नी है दुन्या और दुन्या वालों से जुदा हुवा, अगर येह पाक है तो तू इसे पाको साफ़ कर और अगर ख़ताकार है तो बख़्श दे। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! इस के अज्र से हमें महरूम न रख और इस के बाद हमें गुमराह न कर। 12

www.dawateislami.net

فِاِنَّهٗ (هَا) اِفْتَقَرَ (اِفْتَقَرَتْ) اِلَيْكَ وَاسْتَغْنَيْتَ عَنْهُ (هَا) كَانَ (كَانَتْ) يَشْهَدُ (تَشْهَدُ) اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ فَاغْفِرْلَهٗ (لَهَا) وَارْحَمْهُ (هَا) وَلَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ (هَا) وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ (هَا) ط اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ (كَانَتْ) زَاكِيًا (زَاكِيَةً) فَزَكِّهٖ (هَا) وَاِنْ كَانَ (كَانَتْ) خَاطِئًا (خَاطِئَةً) فَاغْفِرْ لَهٗ (هَا) . (1)

(۵) اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ (اَمَتُكَ) وَابْنُ (بِنْتُ) اَمَتِكَ اِحْتَاجَ (جَتْ) اِلٰى رَحْمَتِكَ وَاَنْتَ غَنِيٌّ عَنْ عَذَابِهٖ (هَا) اِنْ كَانَ (كَانَتْ) مُحْسِنًا (مُحْسِنَةً) فَزِدْ فِيْ اِحْسَانِهٖ (هَا) وَاِنْ كَانَ (كَانَتْ) مُسِيْئًا (مُسِيْئَةً) فَتَجَاوَزْ عَنْهُ (هَا) . (2)

(۶) اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ (اَمَتُكَ) وَابْنُ (بِنْتُ) عَبْدِكَ كَانَ (كَانَتْ) يَشْهَدُ (تَشْهَدُ) اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ط وَاَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ (هَا) مِنَّا اِنْ كَانَ (كَانَتْ) مُحْسِنًا (مُحْسِنَةً) فَزِدْ فِيْ اِحْسَانِهٖ (هَا) وَاِنْ كَانَ (كَانَتْ) مُسِيْئًا (مُسِيْئَةً) فَاغْفِرْ لَهٗ (هَا) وَلَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ (هَا) وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ (هَا) . (3)

1 ..... رواه عن امير المومنين علی کرم اللّٰه تعالیٰ وجهه. ۱۲منه

"کنز العمال"، کتاب الموت، صلاة الجنائز، الحدیث: ۴۲۸۵۷، ج۱۵، ص۳۰۴.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! येह तेरा बन्दा है और तेरे बन्दे और तेरी बांदी का बेटा है, इस के मुतअ़ल्लिक़ तेरा हुक्म नाफ़िज़ है। तू ने इसे पैदा किया हालां कि येह क़ाबिले ज़िक्र शै न था। तेरे पास आया तू उन सब से बेहतर है जिन के पास उतरा जाए। ऐ **अल्लाह** हुज्जत की तू इस को तल्क़ीन कर और इस को इस के नबी मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के साथ मिला दे और क़ौले साबित पर इसे साबित रख इस लिये कि येह तेरी त़रफ़ मोहताज है और तू इस से ग़नी है येह शहादत देता था कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं, पस इसे बख़्श दे और रहम कर और इस के अज्र से हम को महरूम न कर और इस के बाद हमें फ़ितने में न डाल। ऐ **अल्लाह**

2 ..... رواه الحاكم عن يزيد بن ركانة رضی اللّٰه تعالیٰ عنهما. ۱۲منه

"المستدرك" للحاكم، كتاب الجنائز، باب أدعية صلاة الجنازة، الحديث: ۱۳۶۸، ج۱، ص۶۸۵.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! येह तेरा बन्दा है और तेरी बांदी का बेटा है, तेरी रहमत का मोहताज है और तू इस के अ़ज़ाब से ग़नी है अगर नेकोकार है तो इस की ख़ूबी में ज़ियादा कर और अगर गुनहगार है तो दर

3 ..... رواه ابن حبان عن ابی هريرة رضی اللّٰه تعالیٰ عنه. ۱۲منه

"الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الجنائز، فصل في الصلاة على الجنازة، الحديث: ۳۰۶۲، ج۵، ص۳۰.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! येह तेरा बन्दा है और तेरे बन्दे का बेटा है, गवाही देता था कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं और तू हम से ज़ियादा इसे जानता है, अगर नेकोकार है तो नेकी में ज़ियादा कर और अगर गुनहगार है तो इसे बख़्श दे और इस के अज्र से हमें महरूम न कर और इस के बाद फ़ितने में न डाल। 12

www.dawateislami.net

(۷) اَصْبَحَ (اَصْبَحتْ) عَبْدُکَ (اَمَتُکَ) هٰذَا (هٰذِهٖ) قَدْ تَخَلّٰی (تَخَلَّتْ) عَنِ الدُّنْیَا وَتَرَکَهَا (تَرَکَتْهَا) لِاَهْلِهَا وَافْتَقَرَ (اَفْتَقَرَتْ) اِلَیْکَ وَاسْتَغْنَیْتَ عَنْهُ (هَا) وَقَدْ کَانَ (کَانَتْ) یَشْهَدُ (تَشْهَدُ) اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُکَ وَرَسُوْلُکَ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ ط اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَهٗ (هَا) وَتَجَاوَزْ عَنْهُ (هَا) وَاَلْحِقْهُ (هَا) بِنَبِیِّهٖ (هَا) صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ . (1)

(۸) اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبُّهَا وَاَنْتَ خَلَقْتَهَا وَاَنْتَ هَدَیْتَهَا لِلْاِسْلَامِ ط وَاَنْتَ قَبَضْتَ رُوْحَهَا وَاَنْتَ اَعْلَمُ بِسِرِّهَا وَعَلَانِیَتِهَا جِئْنَا شُفَعَاءَ فَاغْفِرْلَهَا . (2)

(۹) اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاِخْوَانِنَا وَاَخَوَاتِنَا وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَیْنِنَا وَاَلِّفْ بَیْنَ قُلُوْبِنَا اَللّٰهُمَّ هٰذَا (هٰذِهٖ) عَبْدُکَ (اَمَتُکَ) فُلَانُ بْنُ فُلَانٍ وَلَا نَعْلَمُ اِلَّا خَیْرًا وَّاَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ (بِهَا) مِنَّا فَاغْفِرْلَنَا وَلَهٗ (لَهَا) . (3)

(۱۰) اَللّٰهُمَّ اِنَّ فُلَانَ بْنَ فُلَانٍ (فُلَانَةَ بِنْتَ فُلَانٍ) فِیْ ذِمَّتِکَ وَحَبْلِ جَوَارِکَ فَقِهٖ (هَا) مِنْ

---

1 ..... رواه ابو یعلی بسند صحیح عن سعید بن المسیب عن امیر المومنین عمر رضی اللّٰہ تعالیٰ عنه من قوله الحقنا بما قبله من المرفوعات للمناسبته. ۱۲منه

"کنز العمال"، کتاب الموت، صلاة الجنائز، الحدیث: ٤٢٨١٧، ج١٥، ص٢٩٩.

तर्जमा : आज तेरा येह बन्दा दुन्या से निकला और दुन्या को अहले दुन्या के लिये छोड़ा। तेरी त़रफ़ मोह़ताज है और तू इस से ग़नी। गवाही देता था कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم तेरे बन्दे और रसूल हैं। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू इस को बख़्श दे और इस से दर गुज़र फ़रमा और इस को इस के नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ लाह़िक़ कर दे। 12

2 ..... رواه ابو داود والنسائی والبیهقی عن ابی هریرة رضی اللّٰه تعالیٰ عنه. ۱۲منه

"سنن أبي داود"، کتاب الجنائز، باب الدعاء للمیت، الحدیث: ٣٢٠٠، ج٣، ص٢٨٣.

و "السنن الکبریٰ" للبیهقي، کتاب الجنائز، باب الدعاء في صلاة الجنازة، الحدیث: ٦٩٧٦، ج٤، ص٦٨.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू इस का रब है और तू ने इस को पैदा किया और तू ने इस को इस्लाम की त़रफ़ हिदायत की और तू ने इस की रूह़ को क़ब्ज़ किया तू इस के पोशीदा और ज़ाहिर को जानता है हम सिफ़ारिश के लिये ह़ाज़िर हुए इसे बख़्श दे।

3 ..... روا ابو نعیم عن عبد اللّٰه بن الحارث بن نوفل عن ابیه رضی اللّٰه تعالیٰ عنه. ۱۲منه

"کنز العمال"، کتاب الموت، صلاة الجنائز، الحدیث: ٤٢٨٣٧، ج١٥، ص٣٠١.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हमारे भाइयों और बहनों को तू बख़्श दे और हमारे आपस की ह़ालत दुरुस्त कर और हमारे दिलों में उल्फ़त पैदा कर दे। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! येह तेरा बन्दा फ़ुलां बिन फ़ुलां है हम इस के मुतअ़ल्लिक़ ख़ैर के सिवा कुछ नहीं जानते और तू इस को हम से ज़ियादा जानता है, तू हम को और इस को बख़्श दे। 12

www.dawateislami.net

فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ وَاَنْتَ اَهْلُ الْوَفَاءِ وَالْحَمْدِ ط اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَهٗ (هَا) وَارْحَمْهُ (هَا) اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ط . (1)

(۱۱) اَللّٰهُمَّ اَجِرْهَا مِنَ الشَّيْطَانِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ ط اَللّٰهُمَّ جَافِ الْاَرْضَ عَنْ جَنْبَيْهَا وَصَعِّدْ رُوْحَهَا وَلَقِّهَا مِنْكَ رِضْوَانًا ط . (2)

(۱۲) اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ خَلَقْتَنَا وَنَحْنُ عِبَادُكَ ط اَنْتَ رَبُّنَا وَ اِلَيْكَ مَعَادُنَا . (3)

(۱۳) اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ (هَا) وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ (هَا) . (4)

(۱۴) اَللّٰهُمَّ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا بَدِيْعَ

1 ..... رواه ابو داود و ابن ماجه عن واثله بن الاسقع رضی اللّٰه تعالیٰ عنه. ۱۲منه

"سنن أبي داود"، كتاب الجنائز، باب الدعاء للميت، الحديث: ۳۲۰۲، ج۳، ص۲۸۳.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! फुलां बिन फुलां तेरे ज़िम्मे और तेरी हिफ़ाज़त में है, इस को फ़ितनए क़ब्र और अ़ज़ाबे जहन्नम से बचा, तू वफ़ा और ह़म्द का अह्ल है ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! इस को बख़्श और रह़्म कर बेशक तू बख़्शने वाला मेह़रबान है । 12

2 ..... رواه ابن ماجه عن ابن عمر رضی اللّٰه تعالیٰ عنهما. ۱۲منه

"سنن ابن ماجه"، كتاب الجنائز، باب ماجاء في إدخال الميت القبر، الحديث: ۱۵۵۳، ج۲، ص۲۴۳.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! इस को शैत़ान से और अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा । ऐ **अल्लाह** ज़मीन को इस की दोनों करवटों से कुशादा कर दे और इस की रूह़ को बुलन्द कर और अपनी ख़ुशनूदी दे । 12

3 ..... رواه البغوی و ابن منده والديلمی فی مسند الفردوس عن ابی حاضر رضی اللّٰه تعالیٰ عنه. ۱۲منه

"كنز العمال"، كتاب الموت، صلاة الجنائز، الحديث: ۴۲۸۴۲، ج۱۵، ص۳۰۲.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू ने हम को पैदा किया और हम तेरे बन्दे हैं । तू हमारा रब है और तेरी ही त़रफ़ हम को लौटना है । 12

नोट : बहारे शरीअ़त के मत़्बूआ़ नुस्ख़ों में अ़न अबी आ़मिर जब कि फ़तावा रज़विय्या क़दीम व जदीद दोनों में अ़न अबी ह़ासिर है । हम ने बहारे शरीअ़त में इसे अ़न अबी ह़ाज़िर लिख दिया है, क्यूं कि येह दोनों किताबत की ग़लतियां मालूम होती हैं । देखिये :

"مسند الفردوس"، الحديث: ۲۰۲۶، ج۱، ص۴۹۷. "الاصابة في تمييز الصحابة" للعسقلاني، رقم: ۹۷۴۱، ج۷، ص۷۰.

4 ..... رواه البغوی عن ابراهيم الاسهلی عن ابيه رضی اللّٰه تعالیٰ عنه. ۱۲منه

"كنز العمال"، كتاب الموت، في الصلاة على الميت، الحديث: ۴۲۲۹۲، ج۱۵، ص۲۴۸.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! बख़्श दे हमारे अगले और पिछले को और हमारे ज़िन्दा व मुर्दा को और हमारे मर्द व औ़रत को और हमारे छोटे और बड़े को और हमारे ह़ाज़िर व ग़ाइब को । ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! इस के अज्र से हमें महरूम न कर और इस के बाद हमें फ़ितने में न डाल । 12

www.dawateislami.net

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ اِنِّیْ اَسْئَالُکَ بِاَنِّیْ اَشْهَدُ اَنَّکَ اَنْتَ اللّٰهُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ o اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْکَ بِنَبِيِّکَ مُحَمَّدٍ نَّبِيِّ الرَّحْمَةِ ط صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ط اَللّٰهُمَّ اِنَّ الْكَرِيْمَ اِذَا اَمَرَ بِالسُّئوَالِ لَمْ يَرُدَّهٗ اَبَدًا وَّقَدْ اَمَرْتَنَا فَدَعَوْنَا وَاَذِنْتَ لَنَا فَشَفِّعْنَا وَاَنْتَ اَكْرَمُ الْاَكْرَمِيْنَ ط فَشَفِّعْنَا فِيْهِ (هَا) وَارْحَمْهُ (هَا) فِیْ وَحْدَتِهٖ (هَا) وَارْحَمْهُ (هَا) فِیْ وَحْشَتِهٖ (هَا) وَارْحَمْهُ (هَا) فِیْ غُرْبَتِهٖ (هَا) وَارْحَمْهُ (هَا) فِیْ كُرْبَتِهٖ (هَا) وَاعْظِمْ لَهٗ (لَهَا) اَجْرَهٗ (هَا) وَنَوِّرْ لَهٗ (هَا) قَبْرَهٗ (هَا) وَبَيِّضْ لَهٗ (لَهَا) وَجْهَهٗ (هَا) وَبَرِّدْ لَهٗ (هَا) مَضْجَعَهٗ (هَا) وَعَطِّرْ لَهٗ (هَا) مَنْزِلَهٗ (هَا) وَاَكْرِمْ لَهٗ (هَا) نُزُلَهٗ (هَا) يَا خَيْرَ الْمُنْزِلِيْنَ ج وَ يَا خَيْرَ الْغَافِرِيْنَ وَ يَا خَيْرَ الرَّاحِمِيْنَ ج اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِکْ عَلٰى سَيِّدِ الشَّافِعِيْنَ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ ط وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o [1]

फ़ाएदा : नवीं दसवीं दुआ़ओं में अगर मय्यित के बाप का नाम मालूम न हो तो उस की जगह आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام कहे कि वोह सब आदमियों के बाप हैं और अगर ख़ुद मय्यित का नाम भी मालूम न हो तो नवीं दुआ़ में هٰذَا عَبْدُکَ या هٰذِهٖ اَمَتُکَ पर क़नाअ़त करे, फ़ुलां बिन फ़ुलां या बिन्ते को छोड़ दे और दसवीं में इस की जगह عَبْدُکَ هٰذَا या औ़रत हो तो اَمَتُکَ هٰذِهٖ कहे ।

फ़ाएदा : मय्यित का फ़िस्क़ो फ़ुजूर मालूम हो तो नवीं दुआ़ में لَا نَعْلَمُ اِلَّا خَيْرًا की जगह قَدْ عَلِمْنَا مِنْهُ خَيْرًا कहे कि इस्लाम हर ख़ैर से बेहतर ख़ैर है ।

---

1 ..... زاده مجدد المأته الحاضرة. ۱۲منه "الفتاوى الرضوية"، ج۹، ص۲۱۷.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! ऐ अर्ह़मर्राहिमीन, ऐ अर्ह़मर्राहिमीन, ऐ अर्ह़मर्राहिमीन ! ऐ ज़िन्दा, ऐ क़य्यूम, ऐ आस्मानो ज़मीन के पैदा करने वाले, ऐ अ़ज़मतो बुज़ुर्गी वाले ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं इस वज्ह से कि मैं शहादत देता हूं कि तू **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) यक्ता है, बे नियाज़ है, जो न दूसरे को जना, न दूसरे से जना और उस का मुक़ाबिल कोई नहीं । ऐ **अल्लाह** ! मैं सुवाल करता हूं और तेरी त़रफ़ नबी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़रीए़ से मुतवज्जेह होता हूं ऐ **अल्लाह** करीम ! जब सुवाल का हुक्म देता है तो वापस कभी नहीं करता और तू ने हमें हुक्म दिया हम ने दुआ़ की और तू ने हमें इजाज़त दी हम ने सिफ़ारिश की और तू सब करीमों से ज़ियादा करीम है, हमारी सिफ़ारिश इस के बारे में क़बूल कर और इस की तन्हाई में तू इस पर रह़म कर और इस की वह़शत में तू रह़म कर और इस की ग़ुर्बत में तू रह़म कर इस की बेचैनी में तू रह़म कर और इस के अ़ज़्र को अ़ज़ीम कर और इस की क़ब्र को मुनव्वर कर और इस के चेहरे को सफ़ेद कर और इस की ख़्वाब गाह को ठन्डा कर और इस की मन्ज़िल को मुअ़त्त़र कर और इस की मेहमानी का सामान अच्छा कर । ऐ बेहतर उतारने वाले और ऐ बेहतर बख़्शने वाले और ऐ बेहतर रह़म करने वाले । आमीन, आमीन, आमीन । दुरूदो सलाम भेज और बरकत कर शफ़ाअ़त करने वालों के सरदार मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) और उन की आलो अस्ह़ाब सब पर । तमाम तारीफ़ें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये, जो रब है तमाम जहान का । 12

www.dawateislami.net

फ़ाएदा : इन दुआ़ओं में बाज़ मज़ामीन मुकर्रर हैं और दुआ़ में तक्रार मुस्तह़सन अगर सब दुआ़एं याद हों और वक़्त में गुन्जाइश हो तो सब का पढ़ना औला, वरना जो चाहे पढ़े और इमाम जितनी देर में येह दुआ़एं पढ़े अगर मुक़्तदी को याद न हों तो पहली दुआ़ के बाद आमीन आमीन कहता रहे।

मस्अला 1 मय्यित मजनून या ना बालिग़ हो तो तीसरी तक्बीर के बाद येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا ذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا .[1]

और लड़की हो तो اجْعَلْهَا और شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً कहे।[2] (جوہرہ)

मजनून से मुराद वोह मजनून है कि बालिग़ होने से पहले मजनून हुवा कि वोह कभी मुकल्लफ़ ही न हुवा और अगर जुनून आ़रिज़ी है तो उस की मग़्फ़िरत की दुआ़ की जाए, जैसे औरों के लिये की जाती है कि जुनून से पहले तो वोह मुकल्लफ़ था और जुनून के पेश्तर के गुनाह जुनून से जाते न रहे।[3] (غنیہ)

मस्अला 2 चौथी तक्बीर के बाद बग़ैर कोई दुआ़ पढ़े हाथ खोल कर सलाम फेर दे,[4] सलाम में मय्यित और फ़रिश्तों और ह़ाज़िरीने नमाज़ की निय्यत करे, उसी त़रह़ जैसे और नमाज़ों के सलाम में निय्यत की जाती है यहां इतनी बात ज़ियादा है कि मय्यित की भी निय्यत करे।[5] (درمختار، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 3 तक्बीर व सलाम को इमाम जह्र के साथ कहे, बाक़ी तमाम दुआ़एं आहिस्ता पढ़ी जाएं और सिर्फ़ पहली मरतबा اَللّٰهُ اَكْبَر कहने के वक़्त हाथ उठाए फिर हाथ उठाना नहीं।[6]

(جوہرہ، درمختار)

मस्अला 4 नमाज़े जनाज़ा में क़ुरआन ब निय्यते क़ुरआन या तशह्हुद पढ़ना मन्अ़ है और ब निय्यते दुआ़ व सना अलह़म्द वग़ैरा आयाते दुआ़इया व सनाइया पढ़ना जाइज़ है।[7]

(درمختار)

मस्अला 5 बेहतर येह है कि नमाज़े जनाज़ा में तीन सफ़ें करें कि ह़दीस में है : "जिस की नमाज़ तीन सफ़ों ने पढ़ी, उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी।" और अगर कुल सात

1...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू इस को हमारे लिये पेश रौ कर और इस को हमारे लिये ज़ख़ीरा कर और इस को हमारी शफ़ाअ़त करने वाला और मक़्बूलुश्शफ़ाअ़ह कर दे। 12

2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٨.

3 ..... "غنية المتملي"، فصل في الجنائز، ص٥٨٧.

4...इस की वज़ाह़त फ़तावा रज़विय्या जिल्द 9 सफ़ह़ा 194 पर मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये।

5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب هل يسقط فرض... إلخ، ج٣، ص١٣٠، وغيرهما.

6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٢٨-١٣٠.

7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣٠.

www.dawateislami.net

ही शख़्स हों तो एक इमाम हो और तीन पहली सफ़ में और दो दूसरी में और एक तीसरी में ।[1] (غنیہ)

मस्अला 6 जनाज़े में पिछली सफ़ को तमाम सफ़ों पर फ़ज़ीलत है ।[2] (درمختار)

नमाज़े जनाज़ा कौन पढ़ाए

मस्अला 7 नमाज़े जनाज़ा में इमामत का ह़क़ बादशाहे इस्लाम को है, फिर क़ाज़ी, फिर इमामे जुमुआ़, फिर इमामे मह़ल्ला, फिर वली को । इमामे मह़ल्ला का वली पर तक़द्दुम बत़ौरे इस्तिह़्बाब है और येह भी उस वक़्त कि वली से अफ़्ज़ल हो वरना वली बेहतर है ।[3]

(غنیہ، درمختار)

मस्अला 8 वली से मुराद मय्यित के अ़सबा हैं और नमाज़ पढ़ाने में औलिया की वोही तरतीब है जो निकाह़ में है, सिर्फ़ फ़र्क़ इतना है कि नमाज़े जनाज़ा में मय्यित के बाप को बेटे पर तक़द्दुम है और निकाह़ में बेटे को बाप पर, अलबत्ता अगर बाप आ़लिम नहीं और बेटा आ़लिम है तो नमाज़े जनाज़ा में भी बेटा मुक़द्दम है, अगर अ़सबा न हों तो ज़विल अरह़ाम ग़ैरों पर मुक़द्दम हैं ।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 9 मय्यित का वलिय्ये अक़रब (सब से ज़ियादा नज़्दीक का रिश्तेदार) ग़ाइब है और वलिय्ये अब्अ़द (दूर का रिश्ते वाला) ह़ाज़िर है तो येही अब्अ़द नमाज़ पढ़ाए, ग़ाइब होने से मुराद येह है कि इतनी दूर है कि उस के आने के इन्तिज़ार में ह़रज हो ।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 10 औ़रत का कोई वली न हो तो शौहर नमाज़ पढ़ाए, वोह भी न हो तो पड़ोसी । यूंही मर्द का वली न हो तो पड़ोसी औरों पर मुक़द्दम हैं ।[6] (درمختار)

मस्अला 11 ग़ुलाम मर गया तो उस का आक़ा बेटे और बाप पर मुक़द्दम है, अगर्चे येह दोनों आज़ाद हों और आज़ाद शुदा ग़ुलाम में बाप और बेटे और दीगर वरसा आक़ा पर मुक़द्दम हैं ।[7] (درمختار، ردالمحتار)

---

1 ..... "غنية المتملي"، فصل في الجنائز، ص٥٨٨.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣١.
3 ..... "غنية المتملي"، فصل في الجنائز، ص٥٨٤.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣٩ ـ ١٤١.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: تعظيم أولى الأمر واجب، ج٣، ص١٤١.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: تعظيم أولى الأمر واجب، ج٣، ص١٤١.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٤٣.
7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: تعظيم أولى الأمر واجب، ج٣، ص١٤٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 12 मुकातब का बेटा या गुलाम मर गया तो नमाज़ पढ़ाने का ह़क़ मुकातब को है, मगर उस का मौला अगर मौजूद हो तो उसे चाहिये कि मौला से पढ़वाए और अगर मुकातब मर गया और इतना माल छोड़ा कि बदले किताबत अदा हो जाए और वोह माल वहां मौजूद है तो उस का बेटा नमाज़ पढ़ाए और माल ग़ाइब है तो मौला।[1] (جوہرہ)

मस्अला 13 औ़रतों और बच्चों को नमाज़े जनाज़ा की विलायत नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 14 वली और बादशाहे इस्लाम को इख़्तियार है कि किसी और को नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने की इजाज़त दे दे।[3] (درمختار)

मस्अला 15 मय्यित के वलिय्ये अक़रब और वलिय्ये अब्अ़द दोनों मौजूद हैं तो वलिय्ये अक़रब को इख़्तियार है कि अब्अ़द के सिवा किसी और से पढ़वा दे अब्अ़द को मन्अ़ करने का इख़्तियार नहीं और अगर वलिय्ये अक़रब ग़ाइब है और इतनी दूर है कि उस के आने का इन्तिज़ार न किया जा सके और किसी तह़रीर के ज़रीए से अब्अ़द के सिवा किसी और से पढ़वाना चाहे तो अब्अ़द को इख़्तियार है कि उसे रोक दे और अगर वलिय्ये अक़रब मौजूद है मगर बीमार है तो जिस से चाहे पढ़वा दे अब्अ़द को मन्अ़ का इख़्तियार नहीं।[4] (عالمگیری)

मस्अला 16 औ़रत मर गई, शौहर और जवान बेटा छोड़ा तो विलायत बेटे को है शौहर को नहीं, अलबत्ता अगर येह लड़का उसी शौहर से है तो बाप पर पेश क़दमी मक्रूह है, उसे चाहिये कि बाप से पढ़वाए और अगर दूसरे शौहर से है तो सोतेले बाप पर तक़द्दुम कर सकता है कोई ह़रज नहीं और बेटा बालिग़ न हो तो औ़रत के जो और वली हों उन का ह़क़ है शौहर का नहीं।[5] (جوہرہ، عالمگیری)

मस्अला 17 दो या चन्द शख़्स एक दरजे के वली हों तो ज़ियादा ह़क़ उस का है जो उ़म्र में बड़ा है, मगर किसी को येह इख़्तियार नहीं कि दूसरे वली के सिवा किसी और से बग़ैर उस की इजाज़त के पढ़वा दे और अगर ऐसा किया यानी ख़ुद न पढ़ाई और किसी और को इजाज़त दे दी तो दूसरे वली को मन्अ़ का इख़्तियार है, अगर्चे येह दूसरा वली उ़म्र में छोटा हो और अगर एक वली ने एक शख़्स को इजाज़त दी, दूसरे ने दूसरे को तो जिस को बड़े ने इजाज़त दी वोह औला है।[6] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 18 मय्यित ने वसिय्यत की थी कि मेरी नमाज़ फ़ुलां पढ़ाए या मुझे फ़ुलां शख़्स ग़ुस्ल दे तो येह वसिय्यत बात़िल है यानी इस वसिय्यत से वली का ह़क़ जाता न रहेगा। हां, वली को इख़्तियार है कि ख़ुद न पढ़ाए उस से पढ़वा दे।[7] (عالمگیری وغیرہ)

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، الجزء الأول، ص١٣٦.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٣.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: تعظيم... إلخ، ج٣، ص١٤١ـ ١٤٤.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٣.
5 ..... المرجع السابق. 6 ..... المرجع السابق.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٣، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 19 वली के सिवा किसी ऐसे ने नमाज़ पढ़ाई जो वली पर मुक़द्दम न हो और वली ने उसे इजाज़त भी न दी थी तो अगर वली नमाज़ में शरीक न हुवा तो नमाज़ का इआ़दा कर सकता है और अगर मुर्दा दफ़्न हो गया है तो क़ब्र पर नमाज़ पढ़ सकता है और अगर वोह वली पर मुक़द्दम है जैसे बादशाह व क़ाज़ी व इमामे महल्ला कि वली से अफ़्ज़ल हो तो अब वली नमाज़ का इआ़दा नहीं कर सकता और अगर एक वली ने नमाज़ पढ़ा दी तो दूसरे औलिया इआ़दा नहीं कर सकते और हर सूरते इआ़दा में जो शख़्स पहली नमाज़ में शरीक न था वोह वली के साथ पढ़ सकता है और जो शख़्स शरीक था वोह वली के साथ नहीं पढ़ सकता है कि जनाज़े की दो मरतबा नमाज़ ना जाइज़ है सिवा इस सूरत के कि ग़ैरे वली ने बग़ैर इज़्ने वली पढ़ाई।[1] (عالمگیری، درمختار وغیرہما)

मस्अला 20 जिन चीज़ों से तमाम नमाज़ें फ़ासिद होती हैं नमाज़े जनाज़ा भी उन से फ़ासिद हो जाती है सिवा एक बात के कि औ़रत मर्द के महाज़ी हो जाए तो नमाज़े जनाज़ा फ़ासिद न होगी।[2] (عالمگیری)

मस्अला 21 मुस्तहब येह है कि मय्यित के सीने के सामने इमाम खड़ा हो और मय्यित से दूर न हो मय्यित ख़्वाह मर्द हो या औ़रत, बालिग़ हो या ना बालिग़ येह उस वक़्त है कि एक ही मय्यित की नमाज़ पढ़ानी हो और अगर चन्द हों तो एक के सीने के मुक़ाबिल और क़रीब खड़ा हो।[3] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 22 इमाम ने पांच तक्बीरें कहीं तो पांचवीं तक्बीर में मुक़्तदी इमाम की मुताबअ़त न करे बल्कि चुप खड़ा रहे जब इमाम सलाम फेरे तो उस के साथ सलाम फेर दे।[4] (درمختار)

मस्अला 23 बाज़ तक्बीरें फ़ौत हो गईं यानी उस वक़्त आया कि बाज़ तक्बीरें हो चुकी हैं तो फ़ौरन शामिल न हो उस वक़्त हो जब इमाम तक्बीर कहे और अगर इन्तिज़ार न किया बल्कि फ़ौरन शामिल हो गया तो इमाम के तक्बीर कहने से पहले जो कुछ अदा किया उस का एतिबार नहीं, अगर वहीं मौजूद था मगर तक्बीरे तह़रीमा के वक़्त इमाम के साथ اَللّٰہُ اَکْبَر न कहा, ख़्वाह ग़फ़्लत की वज्ह से देर हुई या हुनूज़ निय्यत ही करता रह गया तो येह शख़्स इस का इन्तिज़ार न करे कि इमाम दूसरी तक्बीर कहे तो उस के साथ शामिल हो बल्कि फ़ौरन ही शामिल हो जाए।[5] (درمختار، غنیہ)

मस्अला 24 मस्बूक़ यानी जिस की बाज़ तक्बीरें फ़ौत हो गईं वोह अपनी बाक़ी

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٣. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٤٤، وغيرهما.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٤.

3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: هل يسقط فرض... إلخ، ج٣، ص١٣٤.

4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣١.

5 ..... "غنية المتملي"، فصل في الجنائز، ص٥٨٧.

www.dawateislami.net

तक्बीरें इमाम के सलाम फेरने के बाद कहे और अगर येह अन्देशा हो कि दुआ़एं पढ़ेगा तो पूरी करने से पहले लोग मय्यित को कन्धे तक उठा लेंगे तो सिर्फ़ तक्बीरें कह ले दुआ़एं छोड़ दे।[1] (درمختار)

मस्अला 25 लाहिक़ यानी जो शुरूअ़ में शामिल हुवा मगर किसी वज्ह से दरमियान की बाज़ तक्बीरें रह गईं मसलन पहली तक्बीर इमाम के साथ कही, मगर दूसरी और तीसरी जाती रहीं तो इमाम की चौथी तक्बीर से पेश्तर येह तक्बीरें कह ले।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 26 चौथी तक्बीर के बाद जो शख़्स आया तो जब तक इमाम ने सलाम न फेरा शामिल हो जाए और इमाम के सलाम के बाद तीन बार اَللّٰہُ اَکْبَر कह ले।[3] (درمختار)

मस्अला 27 कई जनाज़े जम्अ़ हों तो एक साथ सब की नमाज़ पढ़ सकता है यानी एक ही नमाज़ में सब की निय्यत कर ले और अफ़्ज़ल येह है कि सब की अ़लाह़दा अ़लाह़दा पढ़े और इस सूरत में यानी जब अ़लाह़दा अ़लाह़दा पढ़े तो उन में जो अफ़्ज़ल है उस की पहले पढ़े फिर उस की जो उस के बाद सब में अफ़्ज़ल है وَ عَلٰی ھٰذَا الْقِیاس।[4] (درمختار)

मस्अला 28 चन्द जनाज़े की एक साथ पढ़ाई तो इख़्तियार है कि सब को आगे पीछे रखें यानी सब का सीना इमाम के मुक़ाबिल हो या बराबर बराबर रखें यानी एक की पाइंती या सिरहाने दूसरे को और उस दूसरे की पाइंती या सिरहाने तीसरे को وَ عَلٰی ھٰذَا الْقِیاس। अगर आगे पीछे रखे तो इमाम के क़रीब उस का जनाज़ा हो जो सब में अफ़्ज़ल हो फिर उस के बाद जो अफ़्ज़ल हो وَ عَلٰی ھٰذَا الْقِیاس।

और अगर फ़ज़ीलत में बराबर हों तो जिस की उ़म्र ज़ियादा हो उसे इमाम के क़रीब रखें येह उस वक़्त है कि सब एक जिन्स के हों और अगर मुख़्तलिफ़ जिन्स के हों तो इमाम के क़रीब मर्द हो इस के बाद लड़का फिर ख़ुन्सा फिर औ़रत फिर मुराहिक़ा यानी नमाज़ में जिस त़रह़ मुक़्तदियों की सफ़ में तरतीब है, उस का अ़क्स यहां है और अगर आज़ाद व ग़ुलाम के जनाज़े हों तो आज़ाद को इमाम से क़रीब रखेंगे अगर्चे ना बालिग़ हो, इस के बाद ग़ुलाम को और किसी ज़रूरत से एक ही क़ब्र में चन्द मुर्दे दफ़्न करें तो तरतीब अ़क्स करें यानी क़िब्ला को उसे रखें जो अफ़्ज़ल है जब कि सब मर्द या सब औ़रतें हों, वरना क़िब्ले की जानिब मर्द को रखें फिर लड़के फिर ख़ुन्सा फिर औ़रत फिर मुराहिक़ा को।[5] (عالمگیری، درمختار)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣٦.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: هل يسقط فرض الكفاية بفعل الصبي، ج٣، ص١٣٦.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣٦.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣٨.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٥.
و"الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٣٩.

www.dawateislami.net

मस्अला 29 एक जनाज़े की नमाज़ शुरूअ़ की थी कि दूसरा आ गया तो पहले की पूरी कर ले और अगर दूसरी तक्बीर में दोनों की निय्यत कर ली, जब भी पहले ही की होगी और अगर सिर्फ़ दूसरे की निय्यत की तो दूसरे की होगी उस से फ़ारिग़ हो कर पहले की फिर पढ़े ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 30 नमाज़े जनाज़ा में इमाम बे वुज़ू हो गया और किसी को अपना ख़लीफ़ा किया तो जाइज़ है ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 31 मय्यित को बग़ैर नमाज़ पढ़े दफ़्न कर दिया और मिट्टी भी दे दी गई तो अब उस की क़ब्र पर नमाज़ पढ़ें, जब तक फटने का गुमान न हो और मिट्टी न दी गई हो तो निकालें और नमाज़ पढ़ कर दफ़्न करें और क़ब्र पर नमाज़ पढ़ने में दिनों की कोई तादाद मुक़र्रर नहीं कि कितने दिन तक पढ़ी जाए कि येह मौसिम और ज़मीन और मय्यित के जिस्म व मरज़ के इख़्तिलाफ़ से मुख़्तलिफ़ है, गर्मी में जल्द फटेगा और जाड़े में बदेर तर या शोर ज़मीन में जल्द ख़ुश्क और ग़ैरे शोर में बदेर फ़र्बा जिस्म जल्द लाग़र देर में ।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 32 कूंएं में गिर कर मर गया या उस के ऊपर मकान गिर पड़ा और मुर्दा निकाला न जा सका तो उसी जगह उस की नमाज़ पढ़ें और दरिया में डूब गया और निकाला न जा सका तो उस की नमाज़ नहीं हो सकती कि मय्यित का मुसल्ली के आगे होना मालूम नहीं ।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 33 मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा मुत्लक़न मक्रूहे तह़रीमी है, ख़्वाह मय्यित मस्जिद के अन्दर हो या बाहर, सब नमाज़ी मस्जिद में हों या बाज़ कि ह़दीस में नमाज़े जनाज़ा मस्जिद में पढ़ने की मुमानअ़त आई ।[5] (درمختار)

शारेए़ आ़म और दूसरे की ज़मीन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना मन्अ़ है ।[6] (ردالمحتار) यानी जब कि मालिके ज़मीन मन्अ़ करता हो ।

मस्अला 34 जुमुआ़ के दिन किसी का इन्तिक़ाल हुवा तो अगर जुमुआ़ से पहले तज्हीज़ो तक्फ़ीन हो सके तो पहले ही कर लें, इस ख़याल से रोक रखना कि जुमुआ़ के बाद मज्मअ़ ज़ियादा होगा मक्रूह है ।[7] (ردالمحتار وغیرہ)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الخامس، ج١، ص١٦٥. 2 ..... المرجع السابق.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: تعظيم أولى الأمر واجب، ج٣، ص١٤٦.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: تعظيم أولى الأمر واجب، ج٣، ص١٤٧.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٤٨.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في كراهة صلاة الجنازة في المسجد، ج٣، ص١٤٨.
7 ..... المرجع السابق، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٧٣، و "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٣١٠.

www.dawateislami.net

मस्अला 35 नमाज़े मग़रिब के वक़्त जनाज़ा आया तो फ़र्ज़ और सुन्नतें पढ़ कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ें। यूंही किसी और फ़र्ज़ नमाज़ के वक़्त जनाज़ा आए और जमाअ़त तय्यार हो तो फ़र्ज़ व सुन्नत पढ़ कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ें, बशर्ते कि नमाज़े जनाज़ा की ताख़ीर में जिस्म ख़राब होने का अन्देशा न हो।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 36 नमाज़े ईद के वक़्त जनाज़ा आया तो पहले ईद की नमाज़ पढ़ें फिर जनाज़ा फिर ख़ुत्बा और गहन की नमाज़ के वक़्त आए तो पहले जनाज़ा फिर गहन की।[2] (درمختار، جوہرہ)

मस्अला 37 मुसलमान मर्द या औ़रत का बच्चा ज़िन्दा पैदा हुवा यानी अक्सर हि़स्सा बाहर होने के वक़्त ज़िन्दा था फिर मर गया तो उस को ग़ुस्ल व कफ़न देंगे और उस की नमाज़ पढ़ेंगे, वरना उसे वैसे ही नहला कर एक कपड़े में लपेट कर दफ़्न कर देंगे, उस के लिये ग़ुस्ल व कफ़न ब त़रीक़े मस्नून नहीं और नमाज़ भी उस की नहीं पढ़ी जाएगी, यहां तक कि सर जब बाहर हुवा था उस वक़्त चीख़ता था मगर अक्सर हि़स्सा निकलने से पेश्तर मर गया तो नमाज़ न पढ़ी जाए, अक्सर की मिक़्दार येह है कि सर की जानिब से हो तो सीने तक अक्सर है और पाउं की जानिब से हो तो कमर तक।[3] (درمختار، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 38 बच्चे की मां या जनाई ने ज़िन्दा पैदा होने की शहादत दी तो उस की नमाज़ पढ़ी जाए, मगर विरासत के बारे में उन की गवाही ना मोतबर है यानी बच्चा अपने बाप फ़ौत शुदा का वारिस नहीं क़रार दिया जाएगा न बच्चे की वारिस उस की मां होगी, येह उस वक़्त है कि ख़ुद बाहर निकला। और किसी ने ह़ामिला के शिकम पर ज़र्ब लगाई कि बच्चा मरा हुवा बाहर निकला तो वारिस होगा और वारिस बनाएगा।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 39 बच्चा ज़िन्दा पैदा हुवा या मुर्दा उस की ख़िल्क़त तमाम हो या ना तमाम बहर ह़ाल उस का नाम रखा जाए और क़ियामत के दिन उस का ह़श्र होगा।[5] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 40 काफ़िर का बच्चा दारुल ह़र्ब में अपनी मां या बाप के साथ या बाद में क़ैद किया गया फिर वोह मर गया और उस के मां बाप में से अब तक कोई मुसलमान न हुवा तो उसे न ग़ुस्ल देंगे न कफ़न, ख़्वाह दारुल ह़र्ब ही में मरा हो या दारुल इस्लाम में और अगर तन्हा दारुल इस्लाम में उसे लाएं यानी उस के मां बाप में से किसी को क़ैद कर के न लाए हों

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، مطلب: فيما يترجع تقديمه من صلاة عيد و جنازة... إلخ، ج٣، ص٥٢ ـ ٥٣.
و "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص١٨٣ـ١٨٤.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب العيدين، ج٣، ص٥٢.
و "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب صلاة الكسوف، ص١٢٤.

3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: مهم إذا قال... إلخ، ج٣، ص١٥٢ـ١٥٤.

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: مهم إذا قال... إلخ، ج٣، ص١٥٢. 5 ..... المرجع السابق، ص١٥٤.

www.dawateislami.net

न वोह बत़ौरे ख़ुद बच्चे के लाने से पहले ज़िम्मी बन कर आए तो उसे ग़ुस्ल व कफ़न देंगे और उस की नमाज़ पढ़ी जाएगी, अगर उस ने आ़क़िल हो कर कुफ़्र इख़्तियार न किया।[1]

(عالمگیری، درمختار وغیرہما)

मस्अला 41 काफ़िर के बच्चे को क़ैद किया और अभी वोह दारुल ह़र्ब ही में था कि उस का बाप दारुल इस्लाम में आ कर मुसलमान हो गया तो बच्चा मुसलमान समझा जाएगा यानी अगर्चे दारुल ह़र्ब में मर जाए, उसे ग़ुस्ल व कफ़न देंगे उस की नमाज़ पढ़ेंगे।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 42 बच्चे को मां बाप के साथ क़ैद कर लाए और उन में से कोई मुसलमान हो गया या वोह बच्चा समझवाल था, ख़ुद मुसलमान हो गया तो इन दोनों सूरतों में वोह मुसलमान समझा जाएगा।[3] (تنویرالابصار)

मस्अला 43 काफ़िर के बच्चे को मां बाप के साथ क़ैद किया मगर वोह दोनों वहीं दारुल ह़र्ब में मर गए तो अब मुसलमान समझा जाए, मजनून बालिग़ क़ैद किया गया तो इस का ह़ुक्म वोही है जो बच्चे का है।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 44 मुसलमान का बच्चा काफ़िरा से पैदा हुवा और वोह उस की मन्कूह़ा न थी, यानी वोह बच्चा ज़िना का है तो उस की नमाज़ पढ़ी जाए।[5] (ردالمحتار)

क़ब्र व दफ़्न का बयान

मस्अला 1 मय्यित को दफ़्न करना फ़र्ज़े किफ़ाया है और येह जाइज़ नहीं कि मय्यित को ज़मीन पर रख दें और चारों त़रफ़ से दीवारें क़ाइम कर के बन्द कर दें।[6] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 2 जिस जगह इन्तिक़ाल हुवा उसी जगह दफ़्न न करें कि येह अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के लिये ख़ास है बल्कि मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करें, मक़्सद येह कि उस के लिये कोई ख़ास मदफ़न न बनाया जाए मय्यित बालिग़ हो या ना बालिग़।[7]

(درمختار، ردالمحتار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل الثاني، ج١، ص١٥٩.
و"الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٥٥، وغيرهما.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: مهم إذا قال... إلخ، ج٣، ص١٥٥.

3 ..... "تنوير الأبصار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٥٥ ـ ١٥٧.

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: مهم إذا قال... إلخ، ج٣، ص١٥٧. 5 ..... "ردالمحتار"

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٥.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٣.

7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 3 क़ब्र की लम्बाई मय्यित के क़द बराबर हो और चौड़ाई आधे क़द की और गहराई कम से कम निस्फ़ क़द की और बेहतर येह कि गहराई भी क़द बराबर हो और मुतवस्सित़ दरजा येह कि सीने तक हो।[1] (ردالمحتار) इस से मुराद येह कि लह़द या सन्दूक़ इतना हो, येह नहीं कि जहां से खोदनी शुरूअ़ की वहां से आख़िर तक येह मिक़्दार हो।

मस्अला 4 क़ब्र दो क़िस्म है : **लह़द** कि क़ब्र खोद कर उस में क़िब्ला की त़रफ़ मय्यित रखने की जगह खोदें और **सन्दूक़** वोह जो हिन्दुस्तान में उ़मूमन राइज है, लह़द सुन्नत है अगर ज़मीन इस क़ाबिल हो तो येही करें और नर्म ज़मीन हो तो सन्दूक़ में ह़रज नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 5 क़ब्र के अन्दर चटाई वग़ैरा बिछाना ना जाइज़ है कि बे सबब माल ज़ाएअ़ करना है।[3] (درمختار)

मस्अला 6 ताबूत कि मय्यित को किसी लकड़ी वग़ैरा के सन्दूक़ में रख कर दफ़्न करें येह मक्रूह है, मगर जब ज़रूरत हो मसलन ज़मीन बहुत तर है तो ह़रज नहीं और इस सूरत में ताबूत के मसारिफ़ उस में से लिये जाएं जो मय्यित ने माल छोड़ा है।[4] (عالمگیری، درمختار وغیرہما)

मस्अला 7 अगर ताबूत में रख कर दफ़्न करें तो सुन्नत येह है कि उस में मिट्टी बिछा दें और दह्ने बाएं ख़ाम[5] ईंटें लगा दें और ऊपर कहगिल[6] कर दें ग़रज़ येह कि अन्दर का ह़िस्सा मिस्ल लह़द के हो जाए और लोहे का ताबूत मक्रूह है और क़ब्र की ज़मीन नम हो तो धूल बिछा देना सुन्नत है।[7] (صغیری، ردالمحتار)

मस्अला 8 क़ब्र के उस ह़िस्से में कि मय्यित के जिस्म से क़रीब है, पक्की ईंट लगाना मक्रूह है कि ईंट आग से पकती है। **अल्लाह** तआ़ला मुसलमानों को आग के असर से बचाए।[8] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 9 क़ब्र में उतरने वाले दो तीन जो मुनासिब हों कोई तादाद इस में ख़ास नहीं और बेहतर येह कि क़वी व नेक व अमीन हों कि कोई बात ना मुनासिब देखें तो लोगों पर

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٤.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٥.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٦٤.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٦٥، وغيرهما.

5...यानी कच्ची। 6...यानी मिट्टी की लिपाई।

7 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٥.
8 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦، وغيره.

www.dawateislami.net

ज़ाहिर न करें।[1] (عالمگیری)

मस्अला 10 जनाज़ा क़ब्र से क़िब्ले की जानिब रखना मुस्तहब है कि मुर्दा क़िब्ले की जानिब से क़ब्र में उतारा जाए, यूं नहीं कि क़ब्र की पाइंती रखें और सर की जानिब से क़ब्र में लाएं।[2] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 11 औ़रत का जनाज़ा उतारने वाले महारिम हों, येह न हों तो दीगर रिश्ते वाले येह भी न हों तो परहेज़गार अजनबी के उतारने में मुज़ायक़ा नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 12 मय्यित को क़ब्र में रखते वक़्त येह दुआ पढ़ें :

بِسْمِ اللّٰهِ وَ بِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

और एक रिवायत में بِسْمِ اللّٰهِ के बाद وَفِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ भी आया है।[4] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 13 मय्यित को दह्नी त़रफ़ करवट पर लिटाएं और उस का मुंह क़िब्ला को करें, अगर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह करना भूल गए, तख़्ता लगाने के बाद याद आया तो तख़्ता हटा कर क़िब्ला रू कर दें और मिट्टी देने के बाद याद आया तो नहीं। यूंही अगर बाईं करवट पर रखा या जिधर सिरहाना होना चाहिये उधर पाउं किये तो अगर मिट्टी देने से पहले याद आया ठीक कर दें वरना नहीं।[5] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 14 क़ब्र में रखने के बाद कफ़न की बन्दिश खोल दें कि अब ज़रूरत नहीं और न खोली तो ह़रज नहीं।[6] (جوہرہ)

मस्अला 15 क़ब्र में रखने के बाद लह्द को कच्ची ईंटों से बन्द करें और ज़मीन नर्म हो तो तख़्ते लगाना भी जाइज़ है, तख़्तों के दरमियान झरी रह गई तो उसे ढेले वग़ैरा से बन्द कर दें, सन्दूक़ का भी येही हुक्म है।[7] (درمختار، ردالمحتار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٦٦، وغيره.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.
4 ..... "تنوير الأبصار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٦.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٧.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.
6 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٤٠.
7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 16 औ़रत का जनाज़ा हो तो क़ब्र में उतारने से तख़्ता लगाने तक क़ब्र को कपड़े वग़ैरा से छुपाए रखें, मर्द की क़ब्र को दफ़्न करते वक़्त न छुपाएं अलबत्ता अगर मींह वग़ैरा कोई उ़ज़्र हो तो छुपाना जाइज़ है, औ़रत का जनाज़ा भी ढका रहे।[1] (جوہرہ، درمختار)

मस्अला 17 तख़्ते लगाने के बाद मिट्टी दी जाए मुस्तहब येह है कि सिरहाने की त़रफ़ दोनों हाथों से तीन बार मिट्टी डालें।

पहली बार कहें : [2] مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ.

दूसरी बार : [3] وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ.

तीसरी बार : [4] وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى.

या पहली बार : [5] اَللّٰهُمَّ جَافِ الْاَرْضَ عَنْ جَنْبَيْهِ.

दूसरी बार : [6] اَللّٰهُمَّ افْتَحْ اَبْوَابَ السَّمَآءِ لِرُوْحِهٖ.

तीसरी बार : [7] اَللّٰهُمَّ زَوِّجْهُ مِنْ حُوْرِ الْعِيْنِ.

और मय्यित औ़रत हो तो

तीसरी बार येह कहें : [8] اَللّٰهُمَّ ادْخِلْهَا الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ.

बाक़ी मिट्टी हाथ या खुरपी या फावड़े वग़ैरा जिस चीज़ से मुम्किन हो क़ब्र में डालें और जितनी मिट्टी क़ब्र से निकली उस से ज़ियादा डालना मक्रूह है।[9] (جوہرہ، عالمگیری)

मस्अला 18 हाथ में जो मिट्टी लगी है, उसे झाड़ दें या धो डालें इख़्तियार है।

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٨.
و "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٤٠.

2 ...इसी से हम ने तुम को पैदा किया। 12

3 ...और इसी में तुम को लौटाएंगे। 12

4 ...और इसी से तुम को दोबारा निकालेंगे। 12

5 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ)! ज़मीन को इस के दोनों पहलूओं से कुशादा कर। 12 औ़रत के लिये ज़मीर मुअन्नस हो जैसे جَنْبَيْهَا، لِرُوْحِهَا। 12

6 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ)! इस की रूह के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दे। 12

7 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ)! हूरे ईन को इस की ज़ौजा कर दे। 12

8 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ)! अपनी रह़मत से तू इस को जन्नत में दाख़िल कर दे। 12

9 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٤١.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 19 क़ब्र चौखूंटी न बनाएं बल्कि उस में ढाल रखें जैसे ऊंट का कौहान और उस पर पानी छिड़क्ने में ह़रज नहीं, बल्कि बेहतर है और क़ब्र एक बालिश्त ऊंची हो या कुछ ख़फ़ीफ़ ज़ियादा ।[1] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 20 जहाज़ पर इन्तिक़ाल हुवा और कनारा क़रीब न हो तो ग़ुस्ल व कफ़न दे कर नमाज़ पढ़ कर समुन्दर में डुबो दें ।[2] (غنیہ، ردالمحتار)

मस्अला 21 उ़लमा व सादात की क़ुबूर पर क़ुब्बा वग़ैरा बनाने में ह़रज नहीं और क़ब्र को पुख़्ता न किया जाए ।[3] (درمختار، ردالمحتار) यानी अन्दर से पुख़्ता न की जाए और अगर अन्दर ख़ाम हो, ऊपर से पुख़्ता तो ह़रज नहीं ।

मस्अला 22 अगर ज़रूरत हो तो क़ब्र पर निशान के लिये कुछ लिख सकते हैं, मगर ऐसी जगह न लिखें कि बे अदबी हो, ऐसे मक़्बरे में दफ़्न करना बेहतर है जहां सालेह़ीन की क़ब्रें हों ।[4] (جوہرہ، درمختار)

मस्अला 23 मुस्तह़ब येह है कि दफ़्न के बाद क़ब्र पर सूरए बक़र का अव्वल व आख़िर पढ़ें । सिरहाने الٓمّٓ से مُفْلِحُوْنَ तक और पाइंती اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से ख़त्मे सूरत तक पढ़ें ।[5] (جوہرہ)

मस्अला 24 दफ़्न के बाद क़ब्र के पास इतनी देर तक ठहरना मुस्तह़ब है जितनी देर में ऊंट ज़ब्ह़ कर के गोश्त तक़्सीम कर दिया जाए, कि इन के रहने से मय्यित को उन्स होगा और नकीरैन का जवाब देने में वह़शत न होगी और इतनी देर तक तिलावते क़ुरआन और मय्यित के लिये दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करें और येह दुआ़ करें कि सुवाले नकीरैन के जवाब में साबित क़दम रहे ।[6] (جوہرہ وغیرہا)

मस्अला 25 एक क़ब्र में एक से ज़ियादा बिला ज़रूरत दफ़्न करना जाइज़ नहीं और ज़रूरत हो तो कर सकते हैं, मगर दो मय्यितों के दरमियान मिट्टी वग़ैरा से आड़ कर दें और कौन आगे हो कौन पीछे येह ऊपर मज़्कूर हुवा ।[7] (عالمگیری)

मस्अला 26 जिस शह़र या गाउं वग़ैरा में इन्तिक़ाल हुवा वहीं के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करना मुस्तह़ब है अगर्चे येह वहां रहता न हो, बल्कि जिस घर में इन्तिक़ाल हुवा उस घर वालों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करें और दो एक मील बाहर ले जाने में ह़रज नहीं कि शह़र के क़ब्रिस्तान

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٨.
2 ..... "ردالمحتار" المرجع السابق، ص١٦٥ و "غنية المتملي"، فصل في الجنائز، ص٦٠٧.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٦٩.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٧٠.
و "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٤١.
5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٤١، وغيره. 6 ..... المرجع السابق.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦.

www.dawateislami.net

अक्सर इतने फ़ासिले पर होते हैं और अगर दूसरे शहर को उस की लाश उठा ले जाएं तो अक्सर उ़लमा ने मन्अ़ फ़रमाया और येही सह़ीह़ है। येह उस सूरत में है कि दफ़्न से पेश्तर ले जाना चाहें और दफ़्न के बाद तो मुत्लक़न नक़्ल करना मम्नूअ़ है, सिवा बाज़ सूरतों के जो मज़्कूर होंगी।[1] (عالمگیری) और येह जो बाज़ लोगों का त़रीक़ा है कि ज़मीन को सिपुर्द करते हैं फिर वहां से निकाल कर दूसरी जगह दफ़्न करते हैं, येह ना जाइज़ है और राफ़िज़ियों का त़रीक़ा है।

मस्अला 27 दूसरे की ज़मीन में बिला इजाज़ते मालिक दफ़्न कर दिया तो मालिक को इख़्तियार है ख़्वाह औलियाए मय्यित से कहे अपना मुर्दा निकाल लो या ज़मीन बराबर कर के उस में खेती करे। यूंही अगर वोह ज़मीन शुफ़्अ़ में ले ली गई या ग़स्ब किये हुए कपड़े का कफ़न दिया तो मालिक मुर्दे को निकलवा सकता है।[2] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 28 वक़्फ़ी क़ब्रिस्तान में किसी ने क़ब्र तय्यार कराई उस में दूसरे लोग अपना मुर्दा दफ़्न करना चाहते हैं और क़ब्रिस्तान में जगह है तो मक्रूह है और अगर दफ़्न कर दिया तो क़ब्र खुदवाने वाला मुर्दे को नहीं निकलवा सकता जो ख़र्च हुवा है ले ले।[3]

(عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 29 औ़रत को किसी वारिस ने ज़ेवर समेत दफ़्न कर दिया और बाज़ वरसा मौजूद न थे उन वरसा को क़ब्र खोदने की इजाज़त है, किसी का कुछ माल क़ब्र में गिर गया मिट्टी देने के बाद याद आया तो क़ब्र खोद कर निकाल सकते हैं अगर्चे वोह एक ही दिरहम हो।[4] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 30 अपने लिये कफ़न तय्यार रखे तो ह़रज नहीं और क़ब्र खुदवा रखना बे माना है क्या मालूम कहां मरेगा![5] (درمختار)

मस्अला 31 क़ब्र पर बैठना, सोना, चलना, पाख़ाना, पेशाब करना ह़राम है। क़ब्रिस्तान में जो नया रास्ता निकाला गया उस से गुज़रना ना जाइज़ है, ख़्वाह नया होना उसे मालूम हो या उस का गुमान हो।[6] (عالمگیری،درمختار)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٧.
2 ..... المرجع السابق، و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٧١.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦. و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٧١.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٧. و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في دفن الميت، ج٣، ص١٧١.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٨٣.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السادس، ج١، ص١٦٦. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٨٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 32 अपने किसी रिश्तेदार की क़ब्र तक जाना चाहता है मगर क़ब्रों पर गुज़रना पड़ेगा तो वहां तक जाना मन्अ़ है, दूर ही से फ़ातिहा पढ़ दे, क़ब्रिस्तान में जूतियां पहन कर न जाए। एक शख़्स को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जूते पहने देखा, फ़रमाया : "जूते उतार दे, न क़ब्र वाले को तू ईज़ा दे, न वोह तुझे।"[1]

मस्अला 33 क़ब्र पर कुरआन पढ़ने के लिये हाफ़िज़ मुक़र्रर करना जाइज़ है।[2] (درمختار) यानी जब कि पढ़ने वाले उजरत पर न पढ़ते हों कि उजरत पर कुरआने मजीद पढ़ना और पढ़वाना ना जाइज़ है, अगर उजरत पर पढ़वाना चाहे तो अपने कामकाज के लिये नौकर रखे फिर येह काम ले।

मस्अला 34 शजरा या अ़हदनामा क़ब्र में रखना जाइज़ है और बेहतर येह है कि मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ले की जानिब ताक़ खोद कर उस में रखें, बल्कि दुर्रे मुख़्तार में कफ़न पर अ़हदनामा लिखने को जाइज़ कहा है और फ़रमाया कि इस से मग़्फ़िरत की उम्मीद है और मय्यित के सीने और पेशानी पर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ लिखना जाइज़ है। एक शख़्स ने इस की वसिय्यत की थी, इन्तिक़ाल के बाद सीने और पेशानी पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ लिख दी गई फिर किसी ने उन्हें ख़्वाब में देखा, हाल पूछा ? कहा : जब मैं क़ब्र में रखा गया, अ़ज़ाब के फ़रिश्ते आए, फ़रिश्तों ने जब पेशानी पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ देखी, कहा तू अ़ज़ाब से बच गया।[3] (درمختار، غنیہ، عن التاتارخانیہ) यूं भी हो सकता है कि पेशानी पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ लिखें और सीने पर कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मगर नहलाने के बाद कफ़न पहनाने से पेश्तर कलिमे की उंगली से लिखें, रौशनाई से न लिखें।[4] (ردالمحتار)

ज़ियारते क़ुबूर

मस्अला 35 ज़ियारते क़ुबूर मुस्तह़ब है, हर हफ़्ते में एक दिन ज़ियारत करे। जुमुआ़ या जुमेरात या हफ़्ता या पीर के दिन मुनासिब है, सब में अफ़्ज़ल रोज़े जुमुआ़ वक़्ते सुब्ह़ है। औलियाए किराम के मज़ाराते त़य्यिबा पर सफ़र कर के जाना जाइज़ है, वोह अपने ज़ाइर को नफ़्अ़ पहुंचाते हैं और अगर वहां कोई मुन्किरे शर्ई हो मसलन औ़रतों से इख़्तिलात़ तो इस की वज्ह से ज़ियारत तर्क न की जाए कि ऐसी बातों से नेक काम तर्क नहीं किया जाता, बल्कि उसे बुरा जाने और मुम्किन हो तो बुरी बात ज़ाइल करे।[5] (ردالمحتار)

1 ..... 2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٨٥.
3 ..... المرجع السابق، و "الفتاوى التاتار خانية"، كتاب الصلاة، الفصل الثاني، ج٢، ص١٧٠.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب: فيما يكتب على كفن الميت، ج٣، ص١٨٦.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في زيارة القبور، ج٣، ص١٧٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 36 औ़रतों के लिये बाज़ उ़लमा ने ज़ियारते क़ुबूर को जाइज़ बताया, दुर्रे मुख़्तार में येही क़ौल इख़्तियार किया, मगर अ़ज़ीज़ों की क़ुबूर पर जाएंगी तो जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ करेंगी, लिहाज़ा मम्नूअ़ है और सालिहीन की क़ुबूर पर बरकत के लिये जाएं तो बूढ़ियों के लिये ह़रज नहीं और जवानों के लिये मम्नूअ़ ।[1] (ردالمحتار) और अस्लम येह है कि औ़रतें मुत्लक़न मन्अ़ की जाएं कि अपनों की क़ुबूर की ज़ियारत में तो वोही जज़्अ़ फ़ज़्अ़ है और सालिहीन की क़ुबूर पर या ताज़ीम में ह़द से गुज़र जाएंगी या बे अदबी करेंगी कि औ़रतों में येह दोनों बातें ब कसरत पाई जाती हैं ।[2] (फ़तावा रज़विय्या)

मस्अला 37 ज़ियारते क़ब्र का त़रीक़ा येह है कि पाइंती की जानिब[3] से जा कर मय्यित के मुंह के सामने खड़ा हो, सिरहाने से न आए कि मय्यित के लिये बाइ़से तक्लीफ़ है यानी मय्यित को गरदन फेर कर देखना पड़ेगा कि कौन आता है और येह कहे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ دَارِ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّ اِنَّا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ نَسْأَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ يَرْحَمُ اللّٰهُ الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنَّا وَالْمُسْتَاْخِرِيْنَ اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْاَرْوَاحِ الْفَانِيَةِ وَالْاَجْسَادِ الْبَالِيَةِ وَالْعِظَامِ النَّخِرَةِ اَدْخِلْ هٰذِهِ الْقُبُوْرِ مِنْكَ رَوْحًا وَّرَيْحَانًا وَّمِنَّا تَحِيَّةً وَّسَلَامًا ۔[4]

फिर फ़ातिह़ा पढ़े और बैठना चाहे तो इतने फ़ासिले से बैठे कि उस के पास ज़िन्दगी में नज़्दीक या दूर जितने फ़ासिले पर बैठ सकता था ।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 38 क़ब्रिस्तान में जाए तो अल ह़म्द शरीफ़ और الٓمّٓ से مُفْلِحُوْنَ तक और आयतुल कुर्सी और اٰمَنَ الرَّسُوْلُ आख़िर सूरह तक और सूरए یٰسٓ और تَبٰرَكَ الَّذِیْ और اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ एक एक बार और قُلْ هُوَ اللّٰهُ बारह या ग्यारह या सात या तीन बार पढ़े और इन सब का सवाब मुर्दों को पहुंचाए । ह़दीस में है : "जो ग्यारह बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ शरीफ़ पढ़ कर उस का सवाब मुर्दों को पहुंचाए तो मुर्दों की गिनती के बराबर उसे सवाब मिलेगा ।"[6] (درمختار،ردالمحتار)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في زيارة القبور، ج٣، ص١٧٨.

2 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٥٣٨.

3 ...यानी क़दमों की त़रफ़ ।

4 ...सलाम हो तुम पर ऐ क़ौमे मोमिनीन के घर वालो ! तुम हमारे अगले हो और हम اِنْ شَآءَاللّٰه तुम से मिलने वाले हैं, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से हम अपने और तुम्हारे लिये अ़फ़्वो आ़फ़ियत का सुवाल करते हैं, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हमारे अगलों और पिछलों पर रह़्म करे । ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! रब फ़ानी रूहों के और जिस्म गल जाने वाले और बोसीदा हड्डियों के, तू अपनी त़रफ़ से इन क़ब्रों में ताज़गी और ख़ुश्बू दाख़िल कर और हमारी त़रफ़ से तह़िय्यत व सलाम पहुंचा दे । 12

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في زيارة القبور، ج٣، ص١٧٩.

6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في زيارة القبور، ج٣، ص١٧٩.

www.dawateislami.net

मस्अला 39 नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात और हर क़िस्म की इ़बादत और हर अ़मले नेक फ़र्ज़ व नफ़्ल का सवाब मुर्दों को पहुंचा सकता है, उन सब को पहुंचेगा और इस के सवाब में कुछ कमी न होगी, बल्कि उस की रह़मत से उम्मीद है कि सब को पूरा मिले येह नहीं कि उसी सवाब की तक़्सीम हो कर टुकड़ा टुकड़ा मिले।[1] (ردالمحتار) बल्कि येह उम्मीद है कि इस सवाब पहुंचाने वाले के लिये उन सब के मज्मूए़ के बराबर मिले मसलन कोई नेक काम किया, जिस का सवाब कम से कम दस मिलेगा, इस ने दस मुर्दों को पहुंचाया तो हर एक को दस दस मिलेंगे और इस को एक सो दस और हज़ार को पहुंचाया तो इसे दस हज़ार दस وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس।[2] (फ़तावा रज़विय्या)

मस्अला 40 ना बालिग़ ने कुछ पढ़ कर या कोई नेक अ़मल कर के उस का सवाब मुर्दे को पहुंचाया तो اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰى पहुंचेगा।[3] (फ़तावा रज़विय्या)

मस्अला 41 क़ब्र को बोसा देना बाज़ उ़लमा ने जाइज़ कहा है, मगर सह़ीह़ येह है कि मन्अ़ है।[4] (اشعۃ اللمعات) और क़ब्र का त़वाफ़े ताज़ीमी मन्अ़ है और अगर बरकत के लिये गिर्दे मज़ार फिरा तो ह़रज नहीं, मगर अ़वाम मन्अ़ किये जाएं बल्कि अ़वाम के सामने किया भी न जाए कि कुछ का कुछ समझेंगे।

दफ़्न के बाद तल्क़ीन

मस्अला 42 दफ़्न के बाद मुर्दे को तल्क़ीन करना, अहले सुन्नत के नज़्दीक मश्रूअ़ है।[5] (جوہرہ) येह जो अक्सर किताबों में है कि तल्क़ीन न की जाए येह मोतज़िला का मज़्हब है कि उन्हों ने हमारी किताबों में येह इज़ाफ़ा कर दिया।[6] (ردالمحتار) ह़दीस में है: हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं: "जब तुम्हारा कोई मुसलमान भाई मरे और उस की मिट्टी दे चुको तो तुम में एक शख़्स क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो कर कहे: "या फ़ुलां बिन फ़ुलाना!" वोह सुनेगा और जवाब न देगा फिर कहे: "या फ़ुलां बिन फ़ुलाना!" वोह सीधा हो कर बैठ जाएगा फिर कहे: "या फ़ुलां बिन फ़ुलाना!" वोह कहेगा: हमें इरशाद कर, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तुझ पर रह़म फ़रमाएगा। मगर तुम्हें उस के कहने की ख़बर नहीं होती फिर कहे:

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في القراءة للميت... إلخ، ج٣، ص١٨٠.
2 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٦٢٣ ـ ٦٢٩. 3 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٦٢٩ ـ ٦٤٢.
4 ..... "اشعة اللمعات"، كتاب الجنائز، باب زيارة القبور، ج١، ص٧٦٣.
5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٠.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في التلقين بعد الموت، ج٣، ص٩٤.

www.dawateislami.net

اُذْكُرْ مَا خَرَجْتَ مِنَ الدُّنْيَا شَهَادَةَ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاَنَّكَ رَضِيْتَ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا وَّ بِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا .[1]

नकीरैन एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहेंगे : "चलो हम उस के पास क्या बैठें जिसे लोग उस की हुज्जत सिखा चुके !" इस पर किसी ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) से अ़र्ज़ की : अगर उस की मां का नाम मालूम न हो ? फ़रमाया : ह़व्वा की त़रफ़ निस्बत करे ।"[2] رواه الطبرانی فی الکبیر والضیاء فی الاحکام وغیرهما. बाज़ अजल्लए अइम्मए ताबेईन फ़रमाते हैं : जब क़ब्र पर मिट्टी बराबर कर चुकें और लोग वापस जाएं तो मुस्तह़ब समझा जाता कि मय्यित से उस की क़ब्र के पास खड़े हो कर येह कहा जाए :

يا فلان بن فلان قُلْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ .[3]

तीन बार फिर कहा जाए :

قُلْ رَّبِّيَ اللّٰهُ وَدِيْنِيَ الْاِسْلَامُ وَنَبِيِّ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ .[4]

आला ह़ज़रत क़िब्ला ने इस पर इतना और इज़ाफ़ा किया :

وَاعْلَمْ اَنَّ هٰذَيْنِ الَّذَيْنِ اَتَيَاكَ اَوْيَاْتِيَانِكَ اِنَّمَا هُمَا عَبْدَانِ لِلّٰهِ لَا يَضُرَّانِ وَلَا يَنْفَعَانِ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ فَلَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ وَاَشْهَدْ اَنَّ رَبَّكَ اللّٰهُ وَدِيْنَكَ الْاِسْلَامُ وَنَبِيَّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثَبَّتَنَا اللّٰهُ وَاِيَّاكَ بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ .[5]

मस्अला 43 क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह़ करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा ।[6] (ردالمحتار) यूंही जनाज़े पर फूलों की चादर डालने में ह़रज नहीं ।

---

1 ...**तर्जमा :** तू उसे याद कर, जिस पर तू दुन्या से निकला यानी येह गवाही कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं और येह कि तू **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के रब और इस्लाम के दीन और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के नबी और क़ुरआन के इमाम होने पर राज़ी था । 12

2 ..... "المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ٧٩٧٩، ج٨، ص٢٤٩ ـ ٢٥٠.

3 ...ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां तू कह कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं । 12

4 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٢٢٢.

तू कह मेरा रब **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) है और मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं । 12

5 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٢٢٢.

और जान ले कि येह दो शख़्स जो तेरे पास आए या आएंगे येह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दे हैं बग़ैर ख़ुदा के हुक्म के न ज़रर पहुंचाएं, न नफ़्अ़ पस न ख़ौफ़ कर और न ग़म कर और तू गवाही दे कि तेरा रब **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) है और तेरा दीन इस्लाम है और तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं । **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हम को और तुझ को क़ौले साबित पर साबित रखे, दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में बेशक वोह बख़्शने वाला मेहरबान है । 12

6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في وضع الجريد و نحو الآس على القبور، ج٣، ص١٨٤.

www.dawateislami.net

मस्अला 44 क़ब्र पर से तर घास नोचना न चाहिये कि उस की तस्बीह़ से रह़मत उतरती है और मय्यित को उन्स होता है और नोचने में मय्यित का ह़क़ ज़ाएअ़ करना है।[1] (ردالمحتار)

ताज़ियत का बयान

मस्अला 1 ताज़ियत मस्नून है। ह़दीस में है : "जो अपने भाई मुसलमान की मुसीबत में ताज़ियत करे, क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला उसे करामत का जोड़ा पहनाएगा।"[2] इस को इब्ने माजह ने रिवायत किया। दूसरी ह़दीस तिरमिज़ी व इब्ने माजह में है : "जो किसी मुसीबत ज़दा की ताज़ियत करे, उसे उसी के मिस्ल सवाब मिलेगा।"[3]

मस्अला 2 ताज़ियत का वक़्त मौत से तीन दिन तक है, इस के बाद मक्रूह है कि ग़म ताज़ा होगा मगर जब ताज़ियत करने वाला या जिस की ताज़ियत की जाए वहां मौजूद न हो या मौजूद है मगर उसे इ़ल्म नहीं तो बाद में ह़रज नहीं।[4] (جوہرہ،ردالمحتار)

मस्अला 3 दफ़्न से पेश्तर भी ताज़ियत जाइज़ है, मगर अफ़्ज़ल येह है कि दफ़्न के बाद हो येह उस वक़्त है कि औलियाए मय्यित जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ न करते हों, वरना उन की तसल्ली के लिये दफ़्न से पेश्तर ही करे।[5] (جوہرہ)

मस्अला 4 मुस्तह़ब येह है कि मय्यित के तमाम अक़ारिब को ताज़ियत करें, छोटे बड़े मर्द व औ़रत सब को मगर औ़रत को उस के मह़ारिम ही ताज़ियत करें। ताज़ियत में येह कहे : **अल्लाह** तआ़ला मय्यित की मग़्फ़िरत फ़रमाए और उस को अपनी रह़मत में ढांके और तुम को सब्र रोज़ी करे और इस मुसीबत पर सवाब अ़त़ा फ़रमाए।

नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इन लफ़्ज़ों से ताज़ियत फ़रमाई :

لِلّٰهِ مَا اَخَذَ وَاَعْطٰى وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِاَجَلٍ مُّسَمًّى .

"ख़ुदा ही का है जो उस ने लिया दिया और उस के नज़्दीक हर चीज़ एक मीआ़दे मुक़र्रर के साथ है।"[6] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 5 मुसीबत पर सब्र करे तो उसे दो सवाब मिलते हैं : एक मुसीबत का दूसरा

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في وضع الجريد و نحو الآس على القبور، ج٣، ص١٨٤.
2 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الجنائز، باب ماجاء في ثواب من عزى مصابا، الحديث: ١٦٠١، ج٢، ص٢٦٨.
3 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الجنائز، باب ماجاء في أجر من عزى مصابا، الحديث: ١٠٧٥، ج٢، ص٣٣٨.
4 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٤١.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، مطلب في كراهة الضيافة من أهل الميت، ج٣، ص١٧٧.
5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٤١.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، ج١، ص١٦٧، وغيره.

www.dawateislami.net

सब्र का और जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ से दोनों जाते रहते हैं।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 6 मय्यित के अइज़्ज़ा का घर में बैठना कि लोग इन की ताज़ियत को आएं इस में ह़रज नहीं और मकान के दरवाज़े पर या शारेए़ आ़म पर बिछोने बिछा कर बैठना बुरी बात है।[2] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 7 मय्यित के पड़ोसी या दूर के रिश्तेदार अगर मय्यित के घर वालों के लिये उस दिन और रात के लिये खाना लाएं तो बेहतर है और उन्हें इसरार कर के खिलाएं।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 8 मय्यित के घर वाले तीजा वग़ैरा के दिन दावत करें तो ना जाइज़ व बिद्अ़ते क़बीह़ा है कि दावत तो ख़ुशी के वक़्त मश्रूअ़ है न कि ग़म के वक़्त और अगर फ़ुक़रा को खिलाएं तो बेहतर है।[4] (فتح القدیر)

मस्अला 9 जिन लोगों से क़ुरआने मजीद या कलिमए त़य्यिबा पढ़वाया, उन के लिये भी खाना तय्यार करना ना जाइज़ है।[5] (ردالمحتار) यानी जब कि ठहरा लिया हो या मारूफ़ हो या वोह अग़्निया हों।

मस्अला 10 तीजे वग़ैरा का खाना अक्सर मय्यित के तर्के से किया जाता है, इस में येह लिह़ाज़ ज़रूरी है कि वरसा में कोई ना बालिग़ न हो वरना सख़्त ह़राम है। यूंही अगर बाज़ वरसा मौजूद न हों जब भी ना जाइज़ है, जब कि ग़ैर मौजूदीन से इजाज़त न ली हो और सब बालिग़ हों और सब की इजाज़त से हो या कुछ ना बालिग़ या ग़ैर मौजूद हों मगर बालिग़ मौजूद अपने ह़िस्से से करे तो ह़रज नहीं।[6] (خانیہ وغیرہا)

मस्अला 11 ताज़ियत के लिये अक्सर औ़रतें रिश्तेदार जम्अ़ होती हैं और रोती पीटती नौह़ा करती हैं, उन्हें खाना न दिया जाए कि गुनाह पर मदद देना है।[7] (کشف الغطا)

मस्अला 12 मय्यित के घर वालों को जो खाना भेजा जाता है येह खाना सिर्फ़ घर वाले खाएं और उन्हीं के लाइक़ भेजा जाए, ज़ियादा नहीं। औरों को वोह खाना,

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الثواب على المصيبة، ج٣، ص١٧٥.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، ومما يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١٦٧. و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، مطلب في كراهة الضيافة من أهل الميت، ج٣، ص١٧٦.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في الثواب على المصيبة، ج٣، ص١٧٥.
4 ..... "فتح القدير"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، فصل في الدفن، ج٢، ص١٥١. طبعة مركز اهل السنة بركات رضا.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في كراهة الضيافة من أهل الميت، ج٣، ص١٧٦.
6 ..... "الفتاوى الخانية"، كتاب الحظر و الاباحة، ج٤، ص٣٦٦، و "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٦٦٤، وغيره.
7 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٦٦٦.

www.dawateislami.net

खाना मन्अ़ है ।[1] (کشف الغطا) और सिर्फ़ पहले दिन खाना भेजना सुन्नत है, इस के बाद मक्रूह ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 13 क़ब्रिस्तान में ताज़ियत करना बिद्अ़त है ।[3] (ردالمحتار) और दफ़्न के बाद मय्यित के मकान पर आना और ताज़ियत कर के अपने अपने घर जाना अगर इत्तिफ़ाक़न हो तो ह़रज नहीं और इस की रस्म करना न चाहिये और मय्यित के मकान पर ताज़ियत के लिये लोगों का मज्मअ़ करना दफ़्न के पहले हो या बाद उसी वक़्त हो या किसी और वक़्त ख़िलाफ़े औला है और करें तो गुनाह भी नहीं ।

मस्अला 14 जो एक बार ताज़ियत कर आया उसे दोबारा ताज़ियत के लिये जाना मक्रूह है ।[4] (درمختار)

सोग और नौह़े का ज़िक्र

मस्अला 15 सोग के लिये सियाह कपड़े पहनना मर्दों को ना जाइज़ है ।[5] (عالمگیری) यूंही सियाह बिल्ले लगाना कि इस में नसारा की मुशाबहत भी है ।

मस्अला 16 मय्यित के घर वालों को तीन दिन तक इस लिये बैठना कि लोग आएं और ताज़ियत कर जाएं जाइज़ है मगर तर्क बेहतर और येह उस वक़्त है कि फ़ुरूश और दीगर आराइश न करना हो वरना ना जाइज़ ।[6] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 17 नौह़ा यानी मय्यित के औसाफ़ मुबालग़े के साथ बयान कर के आवाज़ से रोना जिस को बैन कहते हैं बिल इज्माअ़ ह़राम है । यूंही वावेला **वा मुसीबता**[7] कह के चिल्लाना ।[8] (جوہرہ وغیرہا)

मस्अला 18 गिरेबान फाड़ना, मुंह नोचना, बाल खोलना, सर पर ख़ाक डालना, सीना

1 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج٩، ص٦٦٦.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الثاني عشر في الهدايا و الضيافات، ج٥، ص٣٤٤.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، مطلب في كراهة الضيافة من أهل الميت، ج٣، ص١٧٧.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ج٣، ص١٧٧.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، ومما يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١٦٧.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، ومما يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١٦٧.
و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، مطلب في كراهة الضيافة من أهل الميت، ج٣، ص١٧٦.
8 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٩، وغيره.

7 ...यानी हाए मुसीबत ।

www.dawateislami.net

कूटना, रान पर हाथ मारना येह सब जाहिलिय्यत के काम हैं और ह़राम।[1] (عالمگیری)

मस्अला 19 तीन दिन से ज़ियादा सोग जाइज़ नहीं, मगर औ़रत शौहर के मरने पर चार महीने दस दिन सोग करे।[2] (ह़दीस)

मस्अला 20 आवाज़ से रोना मन्अ़ है और आवाज़ बुलन्द न हो तो इस की मुमानअ़त नहीं, बल्कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللهُ عَنْه की वफ़ात पर बुका फ़रमाया।[3] (جوہرہ) इस मक़ाम पर बाज़ अह़ादीस जो नौह़ा वग़ैरा के बारे में वारिद हैं ज़िक्र की जाती हैं कि मुसलमान बग़ौर देखें और अपने यहां की औ़रतों को सुनाएं कि येह बला हिन्दुस्तान की अक्सर औ़रतों में हिन्दूओं की तक़्लीद से पाई जाती है।

ह़दीस 1 बुख़ारी व मुस्लिम अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो मुंह पर त़मांचा मारे और गिरेबान फाड़े और जाहिलिय्यत का पुकारना पुकारे (नौह़ा करे) वोह हम से नहीं।"[4]

ह़दीस 2 सह़ीह़ैन में अबू बुर्दा رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी वल्लफ़्ज़ लि मुस्लिम, फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : "जो सर मुंडाए[5] और नौह़ा करे और कपड़े फाड़े, मैं उस से बरी हूं।"[6]

ह़दीस 3 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, फ़रमाते हैं صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم : "मेरी उम्मत में चार काम जाहिलिय्यत के हैं, लोग इन्हें न छोड़ेंगे :

(1) ह़सब पर फ़ख़्र करना और

(2) नसब में त़ान करना और

(3) सितारों से मींह चाहना (फुलां नक्षत्र के सबब पानी बरसेगा) और

(4) नौह़ा करना

और फ़रमाया : "नौह़ा करने वाली ने अगर मरने से पहले तौबा न की तो क़ियामत के दिन इस त़रह़ खड़ी की जाएगी कि उस पर एक कुरता क़ित़रान का होगा और एक

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، ومما يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١٦٧.

2 ..... انظر: "صحيح البخاري"، كتاب الجنائز، باب إحداد المرأة على غير زوجها، الحديث: ١٢٨٠، ج١، ص٤٣٢.

3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص١٣٩ ـ ١٤٠.

4 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الجنائز، باب ليس منّا من ضرب الخدود، الحديث: ١٢٩٧، ج١، ص٤٣٩.

5 ...यानी किसी के मरने पर जैसे हिन्दू भद्रा करते हैं। 12

6 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الإيمان، باب تحريم ضرب الخدود... إلخ، الحديث: ١٠٤، ص٦٦.

www.dawateislami.net

ख़ारिश्त का।''[1]

ह़दीस 4 सह़ीहैन में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : ''आंख के आंसू और दिल के ग़म के सबब **अल्लाह** तआ़ला अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता और ज़बान की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया : लेकिन इस के सबब अ़ज़ाब या रह़्म फ़रमाता है और घर वालों के रोने की वज्ह से मय्यित पर अ़ज़ाब होता है।''[2] यानी जब कि उस ने वसिय्यत की हो या वहां रोने का रवाज हो और मन्अ़ न किया हो, وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم या येह मुराद है कि इन के रोने से उसे तक्लीफ़ होती है कि दूसरी ह़दीस में आया : ''ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दो ! अपने मुर्दे को तक्लीफ़ न दो, जब तुम रोने लगते हो वोह भी रोता है।''[3]

ह़दीस 5 बुख़ारी व मुस्लिम मुग़ीरा बिन शअ़बा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''जिस पर नौह़ा किया गया, क़ियामत के दिन इस नौह़े के सबब उस पर अ़ज़ाब होगा।''[4] यानी उन्हीं सूरतों में।

ह़दीस 6 सह़ीह़ मुस्लिम में है, उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا कहती हैं : जब अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का इन्तिक़ाल हुवा, मैं ने कहा मुसाफ़रत और परदेस में इन्तिक़ाल हुवा, इन पर इस त़रह़ रोऊंगी जिस का चरचा हो, मैं ने रोने का तहिय्या किया था और एक औ़रत भी इस इरादे से आई कि मेरी मदद करे, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उस औ़रत से फ़रमाया : ''जिस घर से **अल्लाह** तआ़ला ने शैत़ान को दो मरतबा निकाला, तू उस में शैत़ान को दाख़िल करना चाहती है ?'' फ़रमाती हैं : मैं रोने से बाज़ आई और नहीं रोई।[5]

ह़दीस 7 तिरमिज़ी अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''जो मरता है और रोने वाला उस की ख़ूबियां बयान कर के रोता है, **अल्लाह** तआ़ला उस मय्यित पर दो फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमाता है जो उसे कोंचते हैं और कहते हैं : क्या तू ऐसा था ?''[6]

ह़दीस 8 इब्ने माजह अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ''ऐ इब्ने आदम ! अगर तू अव्वल सदमे के वक़्त सब्र

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الجنائز، باب التشديد في النياحة، الحديث: ٩٣٤، ص٤٦٥.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الجنائز، باب البكاء عند المريض، الحديث: ١٣٠٤، ج١، ص٤٤١.
3 ..... "المعجم الكبير"، باب القاف، قيلة بنت مخرمة العنبرية، الحديث ١، ج٢٥، ص١٠.
4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الجنائز، باب الميت يعذب ببكاء أهله عليه، الحديث: ٩٣٣، ص٤٦٥.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الجنائز، باب البكاء على الميت، الحديث: ٩٢٢، ص٤٥٩.
6 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الجنائز، باب ماجاء في كراهية البكاء على الميت، الحديث: ١٠٠٥، ج٢، ص٣٠٥.

www.dawateislami.net

करे और सवाब का त़ालिब हो तो तेरे लिये जन्नत के सिवा किसी सवाब पर मैं राज़ी नहीं।''[1]

ह़दीस 9 अह़मद व बैहक़ी इमाम हुसैन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : ''जिस मुसलमान मर्द या औ़रत पर कोई मुसीबत पहुंची उसे याद कर के اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ कहे, अगर्चे मुसीबत का ज़माना दराज़ हो गया हो तो **अल्लाह** तआ़ला उस पर नया सवाब अ़त़ा फ़रमाता है और वैसा ही सवाब देता है जैसा उस दिन कि मुसीबत पहुंची थी।''[2]

शहीद का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ یُّقْتَلُ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْیَآءٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ ﴾[3]

जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में क़त्ल किये गए, उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वोह ज़िन्दा हैं मगर तुम्हें ख़बर नहीं।

और फ़रमाता है :

﴿ وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْیَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ یُرْزَقُوْنَ ﴿۱۶۹﴾ فَرِحِیْنَ بِمَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَ یَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِیْنَ لَمْ یَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۱۷۰﴾ یَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَ فَضْلٍ ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ لَا یُضِیْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۷۱﴾ ﴾[4]

जो लोग राहे ख़ुदा में क़त्ल किये गए उन्हें मुर्दा न गुमान कर, बल्कि वोह अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) के यहां ज़िन्दा हैं उन्हें रोज़ी मिलती है। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने अपने फ़ज़्ल से जो उन्हें दिया उस पर ख़ुश हैं और जो लोग बाद वाले उन से अभी न मिले, उन के लिये ख़ुश ख़बरी के त़ालिब कि उन पर न कुछ ख़ौफ़ है और न वोह ग़मगीन होंगे, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की नेमत और फ़ज़्ल की ख़ुश ख़बरी चाहते हैं और येह कि ईमान वालों का अज्र **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ज़ाएअ़ नहीं फ़रमाता।

अह़ादीस में इस के फ़ज़ाइल ब कसरत वारिद हैं, शहादत सिर्फ़ इसी का नाम नहीं कि जिहाद में क़त्ल किया जाए बल्कि :

ह़दीस 1 एक ह़दीस में फ़रमाया : इस के सिवा सात शहादतें और हैं :

(1) जो त़ाऊ़न से मरा शहीद है।

1 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الجنائز، باب ماجاء في العبد على المصيبة، الحديث: ١٥٩٧، ج٢، ص٢٦٦.
2 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث الحسين بن على رضى الله عنهما، الحديث: ١٧٣٤، ج١، ص٤٢٩.
3 ..... پ٢، البقرة: ١٥٤. 4 ..... پ٤، اٰل عمرٰن: ١٦٩-١٧١.

www.dawateislami.net

(2) जो डूब कर मरा शहीद है।

(3) ज़ातुल जम्ब में मरा शहीद है।

(4) जो पेट की बीमारी में मरा शहीद है।[1]

(5) जो जल कर मरा शहीद है।

(6) जिस के ऊपर दीवार वग़ैरा ढह पड़े और मर जाए शहीद है।

(7) औ़रत कि बच्चा पैदा होने या कुंवारे पन में मर जाए शहीद है।[2]

इस ह़दीस को इमाम मालिक[3] व अबू दावूद व नसाई ने जाबिर बिन अ़तीक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत और :

ह़दीस 2 इमाम अह़मद की रिवायत जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ता़ऊ़न से भागने वाला उस के मिस्ल है जो जिहाद से भागा और जो सब्र करे उस के लिये शहीद का अज्र है।"[4]

ह़दीस 3 अह़मद व नसाई इ़रबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "जो ता़ऊ़न में मरे, उन के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरबार में मुक़द्दमा पेश होगा। शुहदा कहेंगे : येह हमारे भाई हैं येह वैसे ही क़त्ल किये गए जैसे हम। और बिछोनों पर वफ़ात पाने वाले कहेंगे : येह हमारे भाई हैं येह अपने बिछोनों पर मरे जैसे हम। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "इन के ज़ख़्म देखो, अगर इन के ज़ख़्म मक़्तूलीन के मुशाबेह हों तो येह इन्हीं में हैं और इन्हीं के साथ हैं।" देखेंगे तो उन के ज़ख़्म शुहदा के ज़ख़्म से मुशाबेह होंगे, शुहदा में शामिल कर दिये जाएंगे।"[5]

ह़दीस 4 इब्ने माजह की रिवायत इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से है कि इरशाद फ़रमाया : मुसाफ़िरत की मौत शहादत है।[6]

---

1 ...इस से मुराद इस्तिस्क़ा है या दस्त आना दोनों क़ौल हैं और येह लफ़्ज़ दोनों को शामिल हो सकता है, लिहाज़ा उस के फ़ज़्ल से उम्मीद है कि दोनों को शहादत का अज्र मिले। 12 मिन्ह حفظہ ربہ

2 ...ह़दीस के अल्फ़ाज़ येह हैं ((وَالْمَرْأَةُ تَمُوْتُ بِجُمْعٍ فَهِيَ شَهِيْدَةٌ))

("سنن النسائي"، كتاب الجنائز، باب النهى عن البكاء على الميت، الحديث: ١٨٤٧، ص٢٢٠٩) دون قوله: فهي.

जिस के येह माना हैं कि ऐसी चीज़ से मरी, जो उस में इकट्ठी है जुदा न हुई इस में विलादत व ज़वाले बकारत दोनों दाख़िल हैं। 12

3 ..... "الموطأ" لإمام مالك، كتاب الجنائز، باب النهى عن البكاء على الميت، الحديث: ٥٦٣، ج١، ص٢١٨.

4 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند جابر بن عبد الله، الحديث: ١٤٨٨١، ج٥، ص١٤٢.

5 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث العرباض بن سارية، الحديث: ١٧١٥٩، ج٦، ص٨٦.

6 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الجنائز، باب ماجاء فيمن مات غريبا، الحديث: ١٦١٣، ج٢، ص٢٧٥.

www.dawateislami.net

इन के सिवा और बहुत सूरतें हैं जिन में शहादत का सवाब मिलता है, इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी वग़ैरा अइम्मा ने इन को ज़िक्र किया है, बाज़ येह हैं :

(9) सिल की बीमारी में मरा।

(10) सुवारी से गिर कर या मिर्गी से मरा।

(11) बुख़ार में मरा।

(12) माल या

(13) जान या

(14) अह्ल या

(15) किसी ह़क़ के बचाने में क़त्ल किया गया।

(16) इ़श्क़ में मरा बशर्ते कि पाक दामन हो और छुपाया हो।

(17) किसी दरिन्दे ने फाड़ खाया।

(18) बादशाह ने ज़ुल्मन क़ैद किया या

(19) मारा और मर गया।

(20) किसी मूज़ी जानवर के काटने से मरा।

(21) इ़ल्मे दीन की त़लब में मरा।

(22) मुअज़्ज़िन कि त़लबे सवाब के लिये अज़ान कहता हो।

(23) ताजिर रास्त गो।

(24) जिसे समुन्दर के सफ़र में मतली और क़ै आई।

(25) जो अपने बाल बच्चों के लिये सई करे, उन में अम्रे इलाही क़ाइम करे और उन्हें ह़लाल खिलाए।

(26) जो हर रोज़ पच्चीस बार येह पढ़े. اَللّٰھُمَّ بَارِکْ لِیْ فِی الْمَوْتِ وَفِیْمَا بَعْدَ الْمَوْتِ

(27) जो चाश्त की नमाज़ पढ़े और हर महीने में तीन रोज़े रखे और वित्र को सफ़र व ह़ज़र में कहीं तर्क न करे।

(28) फ़सादे उम्मत के वक़्त सुन्नत पर अ़मल करने वाला, इस के लिये सो शहीद का सवाब है।

www.dawateislami.net

(29) जो मरज़ में لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ चालीस बार कहे और उसी मरज़ में मर जाए और अच्छा हो गया तो उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी।

(30) कुफ़्फ़ार से मुक़ाबले के लिये सरहद पर घोड़ा बांधने वाला।

(31) जो हर रात में सूरए यासीन शरीफ़ पढ़े।

(32) जो बा तहारत सोया और मर गया।

(33) जो नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े।

(34) जो सच्चे दिल से येह सुवाल करे कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में क़त्ल किया जाऊं।

(35) जो जुमुआ़ के दिन मरे।

(36) जो सुब्ह़ को اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِیْعِ الْعَلِیْمِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ तीन बार पढ़ कर सूरए ह़श्र की पिछली तीन आयतें पढ़े, **अल्लाह** तआ़ला सत्तर हज़ार फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमाएगा कि उस के लिये शाम तक इस्तिग़्फ़ार करें और अगर उस दिन में मरा तो शहीद मरा और जो शाम को कहे सुब्ह़ तक के लिये येही बात है।[1]

मसाइले फ़िक़्ह़िय्या

इस्तिलाहे फ़िक़्ह़ में शहीद उस मुसलमान आ़क़िल बालिग़ ताहिर को कहते हैं जो बतौरे ज़ुल्म किसी आलए जारेह़ा से क़त्ल किया गया और नफ़्से क़त्ल से माल न वाजिब हुवा हो और दुन्या से नफ़्अ़ न उठाया हो।[2] शहीद का हुक्म येह है कि ग़ुस्ल न दिया जाए, वैसे ही ख़ून समेत दफ़्न कर दिया जाए।[3] तो जहां येह हुक्म पाया जाएगा फ़ुक़ह़ा उसे शहीद कहेंगे वरना नहीं, मगर शहीदे फ़िक़्ही न होने से येह लाज़िम नहीं कि शहीद का सवाब भी न पाए, सिर्फ़ इस का मत़लब इतना होगा कि ग़ुस्ल दिया जाए व बस।

मस्अला 1 ना बालिग़ और मजनून को ग़ुस्ल दिया जाए, अगर्चे वोह किसी त़रह़ क़त्ल किये गए, जुनुब और ह़ैज़ो निफ़ास वाली औ़रत ख़्वाह अभी ह़ैज़ो निफ़ास में हो या ख़त्म हो गया मगर अभी ग़ुस्ल न किया तो इन सब को ग़ुस्ल दिया जाए।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 2 ह़ैज़ शुरूअ़ हुए अभी पूरे तीन दिन न हुए थे कि क़त्ल की गई तो उसे ग़ुस्ल

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، مطلب في تعداد الشهداء، ج٣، ص١٩٥ ـ ١٩٧.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٨٧ ـ ١٨٩.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٩١.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٨٧.

www.dawateislami.net

न देंगे कि अभी येह नहीं कह सकते कि ह़ाइज़ है ।[1] (درمختار)

मस्अला 3 जुनुब होना यूं मालूम होगा कि क़त्ल से पहले उस ने ख़ुद बयान किया हो या उस की औ़रत ने बताया ।[2] (جوہرہ)

मस्अला 4 आलए जारेह़ा वोह जिस से क़त्ल करने से क़ातिल पर क़िसास वाजिब होता है यानी जो आज़ा को जुदा कर दे जैसे तल्वार, बन्दूक़ को भी आलए जारेह़ा कहेंगे ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 5 जब नफ़्से क़त्ल से क़ातिल पर क़िसास वाजिब न हो बल्कि माल वाजिब हो तो ग़ुस्ल दिया जाएगा, मसलन लाठी से मारा या क़त्ले ख़त़ा कि निशाने पर मार रहा था मगर किसी आदमी को लगा और मर गया या कोई शख़्स नंगी तल्वार लिये सो गया और सोते में किसी आदमी पर वोह तल्वार गिर पड़ी वोह मर गया या किसी शह्र या गाउं में या इन के क़रीब मक़्तूल पड़ा मिला और उस का क़ातिल मालूम नहीं, इन सब सूरतों में ग़ुस्ल देंगे और अगर मक़्तूल शह्र वग़ैरा में मिला और मालूम है कि चोरों ने क़त्ल किया है ख़्वाह अस्लह़े से क़त्ल किया हो या किसी और चीज़ से तो ग़ुस्ल न दिया जाए, अगर्चे येह मालूम नहीं कि किस चोर ने क़त्ल किया । यूंही अगर जंगल में मिला और मालूम नहीं कि किस ने क़त्ल किया तो ग़ुस्ल न देंगे । यूंही अगर डाकूओं ने क़त्ल किया तो ग़ुस्ल न देंगे, हथियार से क़त्ल किया हो या किसी और चीज़ से ।[4] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 6 अगर नफ़्से क़त्ल से माल वाजिब न हुवा बल्कि वुजूबे माल किसी अम्रे ख़ारिज से है, मसलन क़ातिल व औलियाए मक़्तूल में सुल्ह़ हो गई या बाप ने बेटे को मार डाला या किसी ऐसे को मारा कि उस का वारिस बेटा है, मसलन अपनी औ़रत को मार डाला और औ़रत का वारिस बेटा है जो उसी शौहर से है तो क़िसास का मालिक येही लड़का होगा मगर चूंकि उस का बाप क़ातिल है क़िसास साक़ित़ हो गया तो इन सूरतों में ग़ुस्ल न दिया जाए ।[5] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 7 अगर क़त्ल बत़ौरे ज़ुल्म न हो बल्कि क़िसास या ह़द या ताज़ीर में क़त्ल किया गया या दरिन्दे ने मार डाला तो ग़ुस्ल देंगे ।[6] (درمختار)

मस्अला 8 कोई शख़्स घायल हुवा मगर उस के बाद दुन्या से मुतमत्तेअ़ हुवा, मसलन खाया या पिया या सोया या इलाज किया, अगर्चे येह चीज़ें बहुत क़लील हों या ख़ैमे में ठहरा यानी वहीं जहां ज़ख़्मी हुवा या नमाज़ का एक वक़्त पूरा होश में गुज़रा, बशर्ते कि नमाज़ अदा करने पर क़ादिर हो या वहां से उठ कर दूसरी जगह को चला या लोग उसे

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٨٧. 2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ص١٤٣.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٨٩. 4 ..... المرجع السابق، وغيره.
5 ..... المرجع السابق. 6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٩٢.

www.dawateislami.net

मअ़रिके से उठा कर दूसरी जगह ले गए ख़्वाह ज़िन्दा पहुंचा हो या रास्ते ही में इन्तिक़ाल हुवा या किसी दुन्यवी बात की वसिय्यत की या बैअ़ की या कुछ ख़रीदा या बहुत सी बातें कीं तो इन सब सूरतों में ग़ुस्ल देंगे, बशर्ते कि येह उमूर जिहाद ख़त्म होने के बाद वाक़ेअ़ हुए और अगर अस्नाए जंग में हों तो येह चीज़ें मानेअ़ शहादत नहीं यानी ग़ुस्ल न देंगे और वसिय्यत अगर आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ हो या दो एक बात बोला अगर्चे लड़ाई के बाद तो शहीद है ग़ुस्ल न देंगे और अगर लड़ाई में नहीं क़त्ल किया गया बल्कि ज़ुल्मन तो इन चीज़ों में से अगर कोई पाई गई ग़ुस्ल देंगे, वरना नहीं।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 9 जिस को हर्बी या बाग़ी डाकू ने किसी आले से क़त्ल किया हो या उन के जानवरों ने उसे कुचल दिया, अगर्चे ख़ुद येही उन के जानवर पर सुवार था या खींचे लिये जाता था या उस जानवर ने अपने हाथ पाउं उस पर मारे या दांत से काटा या उस की सुवारी को उन लोगों ने भड़का दिया उस से गिर कर मर गया या उन्हों ने उस पर आग फेंकी या उन के यहां से हवा आग उड़ा लाई या उन्हों ने किसी लकड़ी में आग लगा दी जिस का एक कनारा उधर था और इन सूरतों में जल कर मर गया या मअ़रिके में मरा हुवा मिला और उस पर ज़ख़्म का निशान है, मसलन आंख कान से ख़ून निकला है या हल्क़ से साफ़ ख़ून निकला या उन लोगों ने शहर पनाह पर से उसे फेंक दिया या उस के ऊपर दीवार ढा दी या पानी में डुबा दिया या पानी बन्द था उन्हों ने खोल कर उधर बहा दिया कि डूब गया या गला घोंट दिया, ग़रज़ वोह लोग जिस तरह भी मुसलमान को क़त्ल करें या क़त्ल के सबब बनें वोह शहीद है।[2]

(عالمگیری،درمختار وغیرہما)

मस्अला 10 मअ़रिके में मुर्दा मिला और उस पर क़त्ल का कोई निशान नहीं या उस की नाक या पाख़ाना पेशाब के मक़ाम से ख़ून निकला है या हल्क़ से बस्ता ख़ून निकला या दुश्मन के ख़ौफ़ से मर गया तो ग़ुस्ल दिया जाए।[3] (درمختار)

मस्अला 11 अपनी जान या माल या किसी मुसलमान के बचाने में लड़ा और मारा गया वोह शहीद है, लोहे या पथ्थर या लकड़ी किसी चीज़ से क़त्ल किया गया हो।[4] (عالمگیری)

मस्अला 12 दो कश्तियों में मुसलमान थे, दुश्मन ने एक कश्ती पर आग फेंकी येह लोग जल गए, वोह आग बढ़ कर दूसरी कश्ती में लगी येह भी जले तो उस दूसरी कश्ती वाले भी शहीद हैं।[5] (عالمگیری)

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٩٢-١٩٤.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السابع، ج١، ص١٦٧ - ١٦٨.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٨٩، وغيرهما.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج٣، ص١٩٠.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادى والعشرون في الجنائز، الفصل السابع، ج١، ص١٦٨. 5 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 13 मुश्रिक का घोड़ा छूट कर भागा और उस पर कोई सुवार नहीं उस ने किसी मुसलमान को कुचल दिया या मुसलमान ने काफ़िर पर तीर चलाया वोह मुसलमान को लगा या काफ़िर के घोड़े से मुसलमान का घोड़ा भड़का उस ने मुसलमान सुवार को गिरा दिया या مَعَاذَاللہ मुसलमानों ने फ़िरार की, काफ़िरों ने उन को आग या ख़न्दक़ की त़रफ़ मुज़्त़र किया या मुसलमानों ने अपने गिर्द गोखरू बिछाए थे फिर उस पर चले और मर गए इन सब सूरतों में ग़ुस्ल दिया जाए।[1] (عالمگیری)

मस्अला 14 लड़ाई में किसी मुसलमान का घोड़ा भड़का या काफ़िरों का झन्डा देख कर बिदका, मगर काफ़िरों ने उसे नहीं भड़काया और उस ने सुवार को गिरा दिया वोह मर गया या काफ़िर क़ल्आ़बन्द हुए और मुसलमान शह्र पनाह पर चढ़े, उस पर से फिसल कर कोई गिरा और मर गया या مَعَاذَاللہ ! मुसलमानों को शिकस्त हुई और एक मुसलमान की सुवारी ने दूसरे मुसलमानों को कुचल दिया, ख़्वाह वोह मुसलमान उस पर सुवार हो या बाग पकड़ कर लिये जाता या पीछे से हांकता हो या दुश्मन पर ह़म्ला किया और घोड़े से गिर कर मर गया, इन सब सूरतों में ग़ुस्ल दिया जाए।[2] (عالمگیری)

मस्अला 15 दोनों फ़रीक़ आमने सामने हुए, मगर लड़ाई की नौबत नहीं आई और एक शख़्स मुर्दा मिला तो जब तक येह न मालूम हो कि आलए जारेह़ा से ज़ुल्मन क़त्ल किया गया ग़ुस्ल दिया जाए।[3] (عالمگیری)

मस्अला 16 शहीद के बदन पर जो चीज़ें अज़ क़िस्मे कफ़न न हों उतार ली जाएं, मसलन पोस्तीन, ज़िरह, टोपी, ख़ौद, हथियार, रूई का कपड़ा और अगर कफ़ने मस्नून में कुछ कमी पड़े तो इज़ाफ़ा किया जाए और पाजामा न उतारा जाए और अगर कमी है मगर पूरा करने को कुछ नहीं तो पोस्तीन और रूई का कपड़ा न उतारें, शहीद के सब कपड़े उतार कर नए कपड़े देना मक्रूह है।[4] (عالمگیری، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 17 जैसे और मुर्दों को ख़ुश्बू लगाते हैं शहीद को भी लगाएं, शहीद का ख़ून न धोया जाए, ख़ून समेत दफ़्न करें और अगर कपड़े में नजासत लगी हो तो धो डालें।[5] (عالمگیری وغیرہ) शहीद की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए।[6] (عامۂ کتب)

मस्अला 18 दुश्मन पर वार किया ज़र्ब उस पर न पड़ी, बल्कि ख़ुद इस पर पड़ी और मर गया तो इन्दल्लाह शहीद है, मगर ग़ुस्ल दें और नमाज़ पढ़ें।[7] (جوہرہ)

1 ..... "الفتاوی الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادی والعشرون في الجنائز، الفصل السابع، ج۱، ص۱٦۸. 2 ..... المرجع السابق.
3 ..... المرجع السابق. 4 ..... المرجع السابق، " و ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج۳، ص۱۹۱، وغيرهما.
5 ..... "الفتاوی الهندية"، كتاب الصلاة، الباب الحادی والعشرون في الجنائز، الفصل السابع، ج۱، ص۱٦۸، وغيره.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ج۳، ص۱۹۱. 7 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الشهيد، ص۱٤٥.

www.dawateislami.net

काबए मुअ़ज़्ज़मा में नमाज़ पढ़ने का बयान

हदीस 1 व 2 सह़ीह़ मुस्लिम व सह़ीह़ बुख़ारी में है अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا कहते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم और उसामा बिन ज़ैद व उ़स्मान बिन त़ल्ह़ा ह़जबी व बिलाल बिन रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم काबए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हुए और दरवाज़ा बन्द कर लिया गया कुछ देर तक वहां ठहरे जब बाहर तशरीफ़ लाए, मैं ने बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से पूछा : हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ने क्या किया ? कहा : एक सुतून बाईं त़रफ़ किया और दो दाह़नी त़रफ़ और तीन पीछे फिर नमाज़ पढ़ी और उस ज़माने में बैतुल्लाह शरीफ़ के छे सुतून थे ।[1]

मस्अला 1 काबए मुअ़ज़्ज़मा के अन्दर हर नमाज़ जाइज़ है, फ़र्ज़ हो या नफ़्ल, तन्हा पढ़े या बा जमाअ़त, अगर्चे इमाम का रुख़ और त़रफ़ हो और मुक़्तदी का और त़रफ़ मगर जब कि मुक़्तदी की पुश्त इमाम के सामने हो तो मुक़्तदी की नमाज़ न होगी और अगर मुक़्तदी का मुंह इमाम के मुंह के सामने हो तो हो जाएगी, मगर कोई चीज़ अगर दरमियान में ह़ाइल न हो तो मक्रूह है और अगर मुक़्तदी का मुंह इमाम की करवट की त़रफ़ हो तो बिला कराहत जाइज़ ।[2] (جوہرہ، درمختار وغیرہما)

मस्अला 2 काबए मुअ़ज़्ज़मा की छत पर नमाज़ पढ़ी जब भी येही सूरतें हैं, मगर उस की छत पर नमाज़ पढ़ना भी मक्रूह है ।[3] (تنویر الابصار)

मस्अला 3 मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में काबए मुअ़ज़्ज़मा के गिर्द जमाअ़त की और मुक़्तदी काबए मुअ़ज़्ज़मा के चारों त़रफ़ हों जब भी जाइज़ है अगर्चे मुक़्तदी ब निस्बत इमाम के काबे से क़रीब तर हो, बशर्ते कि येह मुक़्तदी जो ब निस्बत इमाम के क़रीब तर है उधर न हो जिस त़रफ़ इमाम हो बल्कि दूसरी त़रफ़ हो और अगर उसी त़रफ़ है जिस त़रफ़ इमाम है और ब निस्बत इमाम के क़रीब तर है तो उस की नमाज़ न हुई ।[4] (عامۂ کتب)

मस्अला 4 इमाम काबे के अन्दर है और मुक़्तदी बाहर तो इक़्तिदा सह़ीह़ है, ख़्वाह इमाम तन्हा अन्दर हो या उस के साथ बाज़ मुक़्तदी भी हों, मगर दरवाज़ा खुला होना चाहिये कि इमाम के रूकूअ़ व सुजूद का ह़ाल मालूम होता रहे और अगर दरवाज़ा बन्द है मगर इमाम की आवाज़ आती है जब भी ह़रज नहीं मगर जिस सूरत में इमाम तन्हा अन्दर हो कराहत है कि इमाम तन्हा

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الصلاة، باب الصلاة بين السواري في غير جماعة، الحديث: ٥٠٥، ج١، ص١٨٨.

2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصلاة، باب الصلاة في الكعبة، ص١٤٥.
و "الدرالمختار"، كتاب الصلاة، باب الصلاة في الكعبة، ج٣، ص١٩٨، وغيرهما.

3 ..... "تنوير الأبصار"، كتاب الصلاة، باب الصلاة في الكعبة، ج٣، ص١٩٨.

4 ..... "تنوير الأبصار" و "ردالمحتار" كتاب الصلاة، باب الصلاة في الكعبة، ج٣، ص١٩٩، وغيرهما.

www.dawateislami.net

बुलन्दी पर होगा और येह मक्रूह है ।[1] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 5 इमाम बाहर हो और मुक़्तदी अन्दर जब भी नमाज़ सह़ीह़ है बशर्ते कि मुक़्तदी की पुश्त इमाम के मुवाजह में न हो ।[2] (ردالمحتار)

قد تم هذا الجزء بحمد اللّٰه تعالى وله الحمد اولا واٰخرا وباطنا وظاهرا والصلٰوة والسلام على من ارسله شاهدا ومبشرا ونذيرا وداعيا الى اللّٰه باذنه وسراجا منيرا واٰله واصحابه وابنه وحزبه اجمعين الٰى يوم الدين والحمد للّٰه رب العٰلمين وانا الفقير الى الغنى ابو العلا امجد على الاعظمى غفر اللّٰه ولوالديه اٰمين.

तस्दीक़ जलील व तक़्रीज़ बे मसील

इमामे अहले सुन्नत, नासिरे दीनो मिल्लत, मुह़ियुस्सुन्नह़ शरीअ़ह कासिरुल फ़ितनह, क़ामिउ़ल बिद्अ़ह, मुजद्दिदुल मिअतिल ह़ाज़िरह, साह़िबुल हुज्जतिल क़ाहिरह, सय्यिदी व सनदी व कन्ज़ी व ज़ुख़्री लि यौमी व ग़दी आला ह़ज़रत मौलाना मौलवी ह़ाजी क़ारी मुफ़्ती **अह़मद रज़ा ख़ां** साह़िब क़ादिरी बरकाती

نفع الاسلام و المسلمين باسراره القدسيه وكمالاته المعنويه والصوريه

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الحمد للّٰه وكفى وسلٰم على عباده الذين اصطفٰى لا سيما على الشارع المصطفٰى ومقتفيه فى المشارع اولى الصّدق والصفا.

फ़क़ीर غفرلہ المولی القدیر ने येह मुबारक रिसाला **बहारे शरीअ़त** हिस्सए चहारुम तस्नीफ़े लत़ीफ़ اخی فی اللہ ذی المجد والجاہ والطبع السلیم والفکر القویم والفضل والعلیٰ **मौलाना अबुल उ़ला मौलवी ह़कीम अमजद अ़ली क़ादिरी बरकाती आज़मी** बिल मज़हब वल मश्रब वस्सुक्ना رزقہ اللہ تعالیٰ فی الدارین الحسنیٰ मुत़ालआ़ किया اَلْحَمْدُ لِلّٰه मसाइले सह़ीह़ा रजीह़ा मुह़क़्क़क़ा मुनक़्क़ह़ा पर मुश्तमिल पाया । आज कल ऐसी किताब की ज़रूरत थी कि अ़वाम भाई सलीस उर्दू में सह़ीह़ मस्अले पाएं और गुमराही व अग़लात़ के मस्नूअ़ व मुलम्मअ़ ज़ेवरों की त़रफ़ आंख न उठाएं । मौला عَزَّوَجَلَّ मुसन्निफ़ की उ़म्र व इल्म व फ़ैज़ में बरकत दे और हर बाब में इस किताब के और ह़िसस काफ़ी व शाफ़ी व वाफ़ी व साफ़ी तालीफ़ करने की तौफ़ीक़ बख़्शे और उन्हें अहले सुन्नत में शाएअ़ व मामूल और दुन्या व आख़िरत में मक़्बूल फ़रमाए । आमीन ।

والحمد للّٰه رب العٰلمين وصلى اللّٰه تعالٰى على سيدنا ومولٰنا محمد واٰله وصحبه وابنه وحزبه اجمعين امين. ذى الحجة الحرام ١٣٣٧ھ هجريه على صاحبها واٰله الكرام افضل الصلوة والتحية اٰمين.

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الصلاة في الكعبة، ج٣، ص٢٠٠.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصلاة، باب الصلاة في الكعبة، ج٣، ص٢٠٠.

www.dawateislami.net

ज़कात व रोज़े के मसाइल का बयान

बहारे शरीअ़त

पांचवां ह़िस्सा (5)

(तस्हील व तख़्रीज शुदा)

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्तरीक़ह
ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शोबए तख़्रीज)

नाशिर
मक्तबतुल मदीना (दावते इस्लामी)

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نَحْمَدُهٗ وَ نُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ط

ज़कात का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ﴾[1]

और मुत्तक़ी वोह हैं कि हम ने जो उन्हें दिया है, उस में से हमारी राह में ख़र्च करते हैं।

और फ़रमाता है :

﴿ خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا ﴾[2]

उन के मालों में से सदक़ा लो, इस की वज्ह से उन्हें पाक और सुथरा बना दो।

और फ़रमाता है :

﴿ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۙ﴾[3]

और फ़लाह़ पाते वोह हैं जो ज़कात अदा करते हैं।

और फ़रमाता है :

﴿ وَمَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴾[4]

और जो कुछ तुम ख़र्च करोगे, **अल्लाह** तआ़ला उस की जगह और देगा और वोह बेहतर रोज़ी देने वाला है।

और फ़रमाता है :

﴿ مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ

---

1 ..... پ١، البقرة: ٣. 2 ..... پ١١، التوبة: ١٠٣.
3 ..... پ١٨، المؤمنون: ٤. 4 ..... پ٢٢، سبا: ٣٩.

www.dawateislami.net

مَاۤ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّ لَاۤ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّ مَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَاۤ اَذًى ؕ وَ اللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ۝ (1)

जो लोग **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में ख़र्च करते हैं उन की कहावत उस दाने की है जिस से सात बालें निकलीं। हर बाल में सो दाने और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) जिसे चाहता है ज़ियादा देता है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) वुस्अ़त वाला, बड़ा इल्म वाला है। जो लोग **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में अपने माल ख़र्च करते फिर ख़र्च करने के बाद न एह़सान जताते, न अज़िय्यत देते हैं, उन के लिये उन का सवाब उन के रब के हुज़ूर है और न उन पर कुछ ख़ौफ़ है और न वोह ग़मगीन होंगे। अच्छी बात और मग़्फ़िरत उस सदक़े से बेहतर है जिस के बाद अज़िय्यत देना हो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) बे परवाह हिल्म वाला है।

और फ़रमाता है :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۬ؕ وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝ (2)

हरगिज़ नेकी ह़ासिल न करोगे जब तक उस में से न ख़र्च करो जिसे महबूब रखते हो और जो कुछ ख़र्च करोगे **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उसे जानता है।

और फ़रमाता है :

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰٓىِٕكَةِ وَ الْكِتٰبِ وَ النَّبِيّٖنَ ۚ وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنَ وَ ابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَ السَّآىِٕلِيْنَ وَ فِي الرِّقَابِ ۚ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَ الْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَ الصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ حِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝ (3)

नेकी इस का नाम नहीं कि मशरिक़ो मग़रिब की त़रफ़ मुंह कर दो, नेकी तो उस की है जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और पिछले दिन और मलाएका व किताब व अम्बिया पर ईमान लाया और माल को उस की महब्बत पर रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िर और साइलीन को और गरदन छुटाने में दिया और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात दी और नेक वोह लोग हैं कि जब कोई मुआ़हदा करें तो अपने अ़हद को पूरा करें और तक्लीफ़ व मुसीबत और लड़ाई के वक़्त सब्र करने वाले वोह लोग सच्चे हैं और वोही लोग मुत्तक़ी हैं।

1 ..... پ٣، البقرة: ٢٦١ ـ ٢٦٣.
2 ..... پ٤، اٰل عمرٰن: ٩٢.
3 ..... پ٢، البقرة: ١٧٧.

www.dawateislami.net

और फ़रमाता है :

﴿ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ ﴾[1]

जो लोग बुख़्ल करते हैं उस के साथ जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दिया। वोह येह गुमान न करें कि येह उन के लिये बेहतर है बल्कि येह उन के लिये बुरा है। उस चीज़ का क़ियामत के दिन उन के गले में तौ़क़ डाला जाएगा जिस के साथ बुख़्ल किया।

और फ़रमाता है :

﴿ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ﴿۳۴﴾ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿۳۵﴾ ﴾[2]

जो लोग सोना और चांदी जम्अ़ करते और उसे **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में ख़र्च नहीं करते हैं, उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुश ख़बरी सुना दो, जिस दिन आतिशे जहन्नम में वोह तपाए जाएंगे और उन से उन की पेशानियां और करवटें और पीठें दाग़ी जाएंगी[3] (और उन से कहा जाएगा) येह वोह है जो तुम ने अपने नफ़्स के लिये जम्अ़ किया था तो अब चखो जो जम्अ़ करते थे।

नीज़ ज़कात के बयान में ब कसरत आयात वारिद हुईं जिन से इस का मुहत्तम बिश्शान होना ज़ाहिर।

अहादीस इस के बयान में बहुत हैं बाज़ उन में से येह हैं :

हदीस 1 व 2 सहीह़ बुख़ारी शरीफ़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस को **अल्लाह** तआ़ला माल दे और वोह उस की ज़कात अदा न करे तो क़ियामत के दिन वोह माल गन्जे सांप की सूरत में कर दिया जाएगा, जिस के सर पर दो चित्तियां होंगी। वोह सांप उस के गले में तौ़क़ बना कर डाल दिया जाएगा फिर उस की बाछें पकड़ेगा और कहेगा : मैं तेरा माल हूं, मैं तेरा ख़ज़ाना हूं।" इस के बाद हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)

1 ..... پ٤، اٰلِ عمرٰن: ١٨٠. 2 ..... پ١٠، التوبة: ٣٤ ـ ٣٥.

3 ...हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : कोई रुपया दूसरे रुपये पर न रखा जाएगा, न कोई अशरफ़ी दूसरी अशरफ़ी पर बल्कि ज़कात न देने वाले का जिस्म इतना बड़ा कर दिया जाएगा कि लाखों करोड़ों जम्अ़ किये हों तो हर रुपिया जुदा दाग़ देगा। رواہ الطبرانی فی الکبیر 12 मिन्ह

"الترغیب و الترھیب"، کتاب الصدقات، الترھیب من منع الزکاۃ، الحدیث: ٢٢، ج١، ص٣١٠.

www.dawateislami.net

ने इस आयत की तिलावत की الآیہ [1] ﴿وَلَا یَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ﴾ इसी के मिस्ल तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह ने अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत की।

ह़दीस 3 अह़मद की रिवायत अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से यूं है : "जिस माल की ज़कात नहीं दी गई, क़ियामत के दिन वोह गन्जा सांप[2] होगा, मालिक को दौड़ाएगा, वोह भागेगा यहां तक कि अपनी उंग्लियां उस के मुंह में डाल देगा।"[3]

ह़दीस 4 व 5 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "जो शख़्स सोने चांदी का मालिक हो और उस का ह़क़ अदा न करे तो जब क़ियामत का दिन होगा उस के लिये आग के पत्तर बनाए जाएंगे उन पर जहन्नम की आग भड़काई जाएगी और उन से उस की करवट और पेशानी और पीठ दाग़ी जाएगी, जब ठन्डे होने पर आएंगे फिर वैसे ही कर दिये जाएंगे। येह मुआ़मला उस दिन का है जिस की मिक़्दार पचास हज़ार बरस है यहां तक कि बन्दों के दरमियान फ़ैसला हो जाए, अब वोह अपनी राह देखेगा ख़्वाह जन्नत की त़रफ़ जाए या जहन्नम की त़रफ़ और ऊंट के बारे में फ़रमाया : जो उस का ह़क़ नहीं अदा करता, क़ियामत के दिन हमवार मैदान में लिटा दिया जाएगा और वोह ऊंट सब के सब निहायत फ़र्बा हो कर आएंगे, पाउं से उसे रौंदेंगे और मुंह से काटेंगे, जब उन की पिछली जमाअ़त गुज़र जाएगी, पहली लौटेगी। और गाय और बकरियों के बारे में फ़रमाया कि : उस शख़्स को हमवार मैदान में लिटाएंगे और वोह सब की सब आएंगी, न उन में मुड़े हुए सींग की कोई होगी, न बे सींग की, न टूटे सींग की और सींगों से मारेंगी और खुरों से रौंदेंगी।"[4] और इसी के मिस्ल सह़ीह़ैन में ऊंट और गाय और बकरियों की ज़कात न देने में अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी।[5]

ह़दीस 6 सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के बाद जब सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ख़लीफ़ा हुए, उस वक़्त आराब में कुछ लोग काफ़िर हो गए (कि ज़कात की फ़र्ज़िय्यत से इन्कार कर बैठे), सिद्दीक़े अक्बर ने उन पर जिहाद का हुक्म दिया, अमीरुल मुअमिनीन फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने कहा : उन से आप

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب إثم مانع الزكاة، الحديث: ١٤٠٣، ج١، ص٤٧٤. پ٤، ال عمران: ١٨٠.

2 ...सांप जब हज़ार बरस का होता है तो उस के सर पर बाल निकलते हैं और जब दो हज़ार बरस का होता है, वोह बाल गिर जाते हैं। येह माना हैं गन्जे सांप के कि इतना पुराना होगा। 12 मिन्ह

3 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة، الحديث: ١٠٨٥٧، ج٣، ص٦٢٦.
येह ह़दीस त़वील है मुख़्तसरन ज़िक्र की गई। 12 मिन्ह

4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب إثم مانع الزكاة، الحديث: ٩٨٧، ص٤٩١.

5 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب زكاة البقر، الحديث: ١٤٦٠، ج١، ص٤٩٢.

www.dawateislami.net

क्यूंकर क़िताल करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तो येह फ़रमाया है, मुझे हुक्म है कि लोगों से लड़ूं यहां तक कि لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ कहें और जिस ने لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ कह लिया, उस ने अपनी जान और माल बचा लिया, मगर ह़क़ इस्लाम में और इस का ह़िसाब **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के ज़िम्मे है (यानी येह लोग तो لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ कहने वाले हैं, इन पर कैसे जिहाद किया जाएगा) सिद्दीक़े अक्बर ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मैं उस से जिहाद करूंगा जो नमाज़ व ज़कात में तफ़रीक़ करे[1] (कि नमाज़ को फ़र्ज़ माने और ज़कात की फ़र्ज़िय्यत से इन्कार करे), ज़कात ह़क़्क़ुल माल है, ख़ुदा की क़सम ! बकरी का बच्चा जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर किया करते थे, अगर मुझे देने से इन्कार करेंगे तो इस पर उन से जिहाद करूंगा, फ़ारूक़े आज़म फ़रमाते हैं : वल्लाह मैं ने देखा कि **अल्लाह** तआ़ला ने सिद्दीक़ का सीना खोल दिया है। उस वक़्त मैं ने भी पहचान लिया कि वोही ह़क़ है।[2]

ह़दीस 7 अबू दावूद ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत की, कि जब येह आयए करीमा ﴿وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ﴾[3] नाज़िल हुई, मुसलमानों पर शाक़ हुई (समझे कि चांदी सोना जम्अ़ करना ह़राम है तो बहुत दिक़्क़त का सामना होगा), फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه ने कहा : मैं तुम से मुसीबत दूर कर दूंगा। ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुए, अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) येह आयत हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के अस्ह़ाब पर गिरां मालूम हुई, फ़रमाया कि "**अल्लाह** तआ़ला ने ज़कात तो इस लिये फ़र्ज़ की, कि तुम्हारे बाक़ी माल को पाक कर दे और मवारीस इस लिये फ़र्ज़ किये कि तुम्हारे बाद वालों के लिये हो (यानी मुत्लक़न माल जम्अ़ करना ह़राम होता तो ज़कात से माल की त़हारत न होती, बल्कि ज़कात किस चीज़ पर वाजिब होती और मीरास काहे में जारी होती, बल्कि जम्अ़ करना ह़राम वोह है कि ज़कात न दे) इस पर फ़ारूक़े आज़म ने तक्बीर कही।"[4]

ह़दीस 8 बुख़ारी अपनी तारीख़ में और इमाम शाफ़ेई व बज़्ज़ार व बैहक़ी उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "ज़कात किसी माल में न मिलेगी, मगर उसे हलाक कर देगी।"[5] बाज़ अइम्मा ने इस ह़दीस के येह

1...इस ह़दीस से मालूम हुवा कि निरी कलिमा गोई इस्लाम के लिये काफ़ी नहीं, जब तक तमाम ज़रूरिय्याते दीन का इक़्रार न करे और अमीरुल मुअमिनीन फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه का बह़स करना इस वज्ह से था कि उन के इ़ल्म में पहले येह बात न थी, कि वोह फ़र्ज़िय्यत के मुन्किर हैं येह ख़याल था कि ज़कात देते नहीं इस की वज्ह से गुनहगार हुए, काफ़िर तो न हुए कि उन पर जिहाद क़ाइम किया जाए, मगर जब मालूम हो गया तो फ़रमाते हैं मैं ने पहचान लिया कि वोही ह़क़ है, जो सिद्दीक़ ने समझा और किया। 12 मिन्ह

2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الاعتصام، باب الإقتداء بسنن رسول الله صلى الله عليه وسلم، الحديث: ٧٢٨٤، ج٤ ص٥٠٠.

3 ..... پ١٠، التوبة: ٣٤. 4 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب في حقوق المال، الحديث: ١٦٦٤، ج٢، ص١٧٦.

5 ..... "شعب الإيمان"، باب في الزكاة، فصل في الاستعفاف عن المسألة، الحديث: ٣٥٢٢، ج٣، ص٢٧٣.

www.dawateislami.net

माना बयान किये कि ज़कात वाजिब हुई और अदा न की और अपने माल में मिलाए रहा तो येह ह़राम उस ह़लाल को हलाक कर देगा और इमाम अह़मद ने फ़रमाया कि माना येह हैं कि मालदार शख़्स माले ज़कात ले तो येह माले ज़कात उस के माल को हलाक कर देगा कि ज़कात तो फ़क़ीरों के लिये है और दोनों माना सह़ीह़ हैं।[1]

ह़दीस 9 ✦ त़बरानी ने औसत़ में बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जो क़ौम ज़कात न देगी, **अल्लाह** तआ़ला उसे क़ह़त़ में मुब्तला फ़रमाएगा।"[2]

ह़दीस 10 ✦ त़बरानी ने औसत़ में फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "ख़ुश्की व तरी में जो माल तलफ़ होता है, वोह ज़कात न देने से तलफ़ होता है।"[3]

ह़दीस 11 ✦ सह़ीह़ैन में अह़नफ़ बिन क़ैस से मरवी, सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : "उन के सरे पिस्तान पर जहन्नम का गर्म पथ्थर रखेंगे कि सीना तोड़ कर शाने से निकल जाएगा और शाने की हड्डी पर रखेंगे कि हड्डियां तोड़ता सीने से निकलेगा।"[4] और सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में येह भी है कि मैं ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि "पीठ तोड़ कर करवट से निकलेगा और गुद्दी तोड़ कर पेशानी से।"[5]

ह़दीस 12 ✦ त़बरानी अमीरुल मुअमिनीन अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "फ़क़ीर हरगिज़ नंगे भूके होने की तक्लीफ़ न उठाएंगे मगर मालदारों के हाथों, सुन लो ! ऐसे तवंगरों से **अल्लाह** तआ़ला सख़्त ह़िसाब लेगा और उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा।"[6]

ह़दीस 13 ✦ नीज़ त़बरानी अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "क़ियामत के दिन तवंगरों के लिये मोह़ताजों के हाथों से ख़राबी है।" मोह़ताज अ़र्ज़ करेंगे : हमारे ह़ुक़ूक़ जो तू ने उन पर फ़र्ज़ किये थे, उन्हों ने ज़ुल्मन न दिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : "मुझे क़सम है अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की, कि तुम्हें अपना क़ुर्ब अ़त़ा करूंगा और उन्हें दूर रखूंगा।"[7]

---

1 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الصدقات، الترهيب من منع الزكاة،الحديث:١٨، ج١، ص٣٠٩.
2 ..... "المعجم الأوسط"، الحديث: ٤٥٧٧، ج٣، ص٢٧٥ ـ ٢٧٦.
3 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الصدقات، الترهيب من منع الزكاة،الحديث:١٦، ج١، ص٣٠٨.
4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب في الكنازين للأموال والتغليظ عليهم، الحديث: (٩٩٢)، ص٤٩٧.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب في الكنازين للأموال والتغليظ عليهم، الحديث: ٣٥ـ(٩٩٢)، ص٤٩٨.
6 ..... "الترغيب والترهيب"، كتاب الصدقات، الحديث: ٥، ج١، ص٣٠٦.
و "المعجم الأوسط"، الحديث: ٣٥٧٩، ج٢، ص٣٧٤ ـ ٣٧٥.
7 ..... "المعجم الأوسط"، باب العين، الحديث: ٤٨١٣، ج٣، ص٣٤٩.

www.dawateislami.net

ह़दीस 14 इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान अपनी सह़ीह़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "दोज़ख़ में सब से पहले तीन शख़्स जाएंगे, उन में एक वोह तवंगर है कि अपने माल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ अदा नहीं करता।"(1)

ह़दीस 15 इमाम अह़मद मुस्नद में उ़म्मारा बिन ह़ज़्म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम में चार चीज़ें फ़र्ज़ की हैं, जो उन में से तीन अदा करे, वोह उसे कुछ काम न देंगी जब तक पूरी चारों न बजा लाए। नमाज़, ज़कात, रोज़ए रमज़ान, ह़ज्जे बैतुल्लाह।"(2)

ह़दीस 16 त़बरानी कबीर में ब सनदे सह़ीह़ रावी, अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हमें हुक्म दिया गया कि नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें और जो ज़कात न दे, उस की नमाज़ क़बूल नहीं।(3)

ह़दीस 17 सह़ीह़ैन व मुस्नदे अह़मद व सुनने तिरमिज़ी में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "सदक़ा देने से माल कम नहीं होता और बन्दा किसी का क़ुसूर मुआ़फ़ करे तो **अल्लाह** तआ़ला उस की इ़ज़्ज़त ही बढ़ाएगा और जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये तवाज़ोअ़ करे, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उसे बुलन्द फ़रमाएगा।"(4)

ह़दीस 18 बुख़ारी व मुस्लिम इन्हीं से रावी, फ़रमाते हैं صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم : "जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जोड़ा ख़र्च करे, वोह जन्नत के सब दरवाज़ों से बुलाया जाएगा और जन्नत के कई दरवाज़े हैं, जो नमाज़ी है दरवाज़ए नमाज़ से बुलाया जाएगा, जो अहले जिहाद से है दरवाज़ए जिहाद से बुलाया जाएगा और जो अहले सदक़ा से है दरवाज़ए सदक़ा से बुलाया जाएगा, जो रोज़ादार है बाबुर्रय्यान से बुलाया जाएगा।" सिद्दीक़े अक्बर ने अ़र्ज़ की : इस की तो कुछ ज़रूरत नहीं कि हर दरवाज़े से बुलाया जाए (यानी मक़्सूद दुख़ूले जन्नत है, वोह एक दरवाज़े से ह़ासिल है) मगर कोई है ऐसा जो सब दरवाज़ों से बुलाया जाए ? फ़रमाया : "हां, और मैं उम्मीद करता हूं कि तुम उन में से हो।"(5)

ह़दीस 19 बुख़ारी व मुस्लिम व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह व इब्ने ख़ुज़ैमा अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो शख़्स खजूर बराबर ह़लाल कमाई से सदक़ा करे और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) नहीं क़बूल फ़रमाता मगर ह़लाल को तो

1 ..... "صحيح ابن خزيمة"، كتاب الزكاة، باب ذكر إدخال مانع الزكاة النار... إلخ، الحديث: ٢٢٤٩، ج٤، ص٨.
2 ..... "المسند"،حديث زياد بن نعيم، الحديث: ١٧٨٠٤، ج٦، ص٢٣٦. "الترغيب و الترهيب" ،الحديث:١٤، ج١،ص٣٠٨.
3 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ١٠٠٩٥، ج١٠، ص١٠٣.
4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب البر و الصلة و الأدب، باب استحباب العفو و التواضع، الحديث: ٢٥٨٨، ص١٣٩٧.
5 ..... "صحيح البخاري"، كتاب فضائل أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ٣٦٦٦، ج٢، ص٥٢٠.
و "المسند" للإمام أحمدبن حنبل، مسندأبي هريرة، الحديث: ٧٦٣٧، ج٣، ص٩٣.

www.dawateislami.net

उसे **अल्लाह** तआ़ला दस्ते रास्त से क़बूल फ़रमाता है फिर उसे उस के मालिक के लिये परवरिश करता है, जैसे तुम में कोई अपने बछेरे की तरबियत करता है, यहां तक कि वोह सदक़ा पहाड़ बराबर हो जाता है।''(1)

हदीस 20 व 21 नसाई व इब्ने माजह अपनी सुनन में और इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान अपनी सह़ीह़ में और ह़ाकिम ने ब इफ़ादए तस्ह़ीह़ अबू हुरैरा व अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़ुत्बा पढ़ा और येह फ़रमाया कि: ''क़सम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है।'' इस को तीन बार फ़रमाया फिर सर झुका लिया तो हम सब ने सर झुका लिये और रोने लगे, येह नहीं मालूम कि किस चीज़ पर क़सम खाई। फिर हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने सरे मुबारक उठा लिया और चेहरए अक़्दस में ख़ुशी नुमायां थी तो हमें येह बात सुर्ख़ ऊंटों से ज़ियादा प्यारी थी और फ़रमाया: ''जो बन्दा पांचों नमाज़ें पढ़ता है और रमज़ान का रोज़ा रखता है और ज़कात देता है और सातों कबीरा गुनाहों से बचता है उस के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाएंगे और उस से कहा जाएगा कि सलामती के साथ दाख़िल हो।''(2)

हदीस 22 इमाम अह़मद ने ब रिवायते सिक़ात अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं: ''अपने माल की ज़कात निकाल, कि वोह पाक करने वाली है, तुझे पाक कर देगी और रिश्तेदारों से सुलूक कर और मिस्कीन और पड़ोसी और साइल का ह़क़ पहचान।''(3)

हदीस 23 त़बरानी ने औसत़ व कबीर में अबुद्दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया: ''ज़कात इस्लाम का पुल है।''(4)

हदीस 24 त़बरानी ने औसत़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं: ''जो मेरे लिये छे चीज़ों की कफ़ालत करे, मैं उस के लिये जन्नत का ज़ामिन हूं।'' मैं ने अ़र्ज़ की: वोह क्या हैं या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم)! फ़रमाया: ''नमाज़ व ज़कात व अमानत व शर्मगाह व शिकम व ज़बान।''(5)

हदीस 25 बज़्ज़ार ने अ़ल्क़मा से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया: ''तुम्हारे इस्लाम का पूरा होना येह है कि अपने अम्वाल की ज़कात अदा करो।''(6)

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب لاتقبل صدقة من غلول، الحديث: ١٤١٠، ج١، ص٤٧٦.
2 ..... "سنن النسائي"، كتاب الزكاة، باب وجوب الزكاة، الحديث: ٢٤٣٥، ص٣٩٩.
3 ..... "المسند" للإمام أحمدبن حنبل، مسندانس بن مالك، الحديث: ١٢٣٩٧، ج٤، ص٢٧٣.
4 ..... "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٨٩٣٧، ج٦، ص٣٢٨.
5 ..... "المعجم الأوسط"، باب الفاء، الحديث: ٤٩٢٥، ج٣، ص٣٩٦.
6 ..... "مجمع الزوائد"، كتاب الزكاة، باب فرض الزكاة، الحديث: ٤٣٢٦، ج٣، ص١٩٨.

www.dawateislami.net

हदीस 26 तबरानी ने कबीर में इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) व रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) पर ईमान लाता है, वोह अपने माल की ज़कात अदा करे और जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) व रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) पर ईमान लाता है, वोह हक़ बोले या सुकूत करे यानी बुरी बात ज़बान से न निकाले और जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) व रसूल (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) पर ईमान लाता है, वोह अपने मेहमान का इक्राम करे।"(1)

हदीस 27 अबू दावूद ने हसन बसरी से मुरसलन और तबरानी व बैहक़ी ने एक जमाअ़ते सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं कि "ज़कात दे कर अपने मालों को मज़बूत क़ल्ओं में कर लो और अपने बीमारों का इलाज सदक़े से करो और बला नाज़िल होने पर दुआ व तज़र्रोअ़ से इस्तिआ़नत करो।"(2)

हदीस 28 इब्ने खुज़ैमा अपनी सहीह और तबरानी औसत और हाकिम मुस्तद्रक में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने अपने माल की ज़कात अदा कर दी, बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने उस से शर दूर फ़रमा दिया।"(3)

मसाइले फ़िक़्हिय्या

ज़कात शरीअ़त में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये माल के एक हिस्से का जो शर्अ़ ने मुक़र्रर किया है, मुसलमान फ़क़ीर को मालिक कर देना है और वोह फ़क़ीर न हाशिमी हो, न हाशिमी का आज़ाद कर्दा गुलाम और अपना नफ़्अ़ उस से बिल्कुल जुदा कर ले।(4) (درمختار)

मस्अला 1 ज़कात फ़र्ज़ है, इस का मुन्किर काफ़िर और न देने वाला फ़ासिक़ और क़त्ल का मुस्तहिक़ और अदा में ताख़ीर करने वाला गुनहगार व मरदूदुश्शहादह है।(5) (عالمگیری)

मस्अला 2 मुबाह कर देने से ज़कात अदा न होगी, मसलन फ़क़ीर को ब निय्यते ज़कात खाना खिला दिया ज़कात अदा न हुई कि मालिक कर देना नहीं पाया गया। हां, अगर खाना दे दिया कि चाहे खाए या ले जाए तो अदा हो गई। यूंही ब निय्यते ज़कात फ़क़ीर को कपड़ा दे दिया या पहना दिया अदा हो गई।(6) (درمختار)

1 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ١٣٥٦١، ج١٢، ص٣٢٤.
2 ..... "مراسيل أبي داود" مع "سنن أبي داود"، باب في الصائم يصيب أهله، ص٨.
3 ..... "المعجم الأوسط"، باب الألف، الحديث: ١٥٧٩، ج١، ص٤٣١.
4 ..... "تنوير الأبصار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٠٣ ـ ٢٠٦.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٠.
6 ..... "الدرالمختار" معه "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٠٤.

www.dawateislami.net

मस्अला 3 फ़क़ीर को ब निय्यते ज़कात मकान रहने को दिया ज़कात अदा न हुई कि माल का कोई हिस्सा उसे न दिया बल्कि मन्फ़अ़त का मालिक किया।[1] (درمختار)

मस्अला 4 मालिक करने में येह भी ज़रूरी है कि ऐसे को दे जो क़ब्ज़ा करना जानता हो, यानी ऐसा न हो कि फेंक दे या धोका खाए वरना अदा न होगी, मसलन निहायत छोटे बच्चे या पागल को देना और अगर बच्चे को इतनी अ़क़्ल न हो तो उस की त़रफ़ से उस का बाप जो फ़क़ीर हो या वसी या जिस की निगरानी में है क़ब्ज़ा करें।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 5 ज़कात वाजिब होने के लिये चन्द शर्तें हैं :

(1) मुसलमान होना :

काफ़िर पर ज़कात वाजिब नहीं यानी अगर कोई काफ़िर मुसलमान हुवा तो उसे येह हुक्म नहीं दिया जाएगा कि ज़मानए कुफ़्र की ज़कात अदा करे।[3] (عامۂ کتب) مَعَاذَاللہ कोई मुरतद हो गया तो ज़मानए इस्लाम में जो ज़कात नहीं दी थी साक़ित़ हो गई।[4] (عالمگیری)

मस्अला 6 काफ़िर दारुल ह़र्ब में मुसलमान हुवा और वहीं चन्द बरस तक इक़ामत की फिर दारुल इस्लाम में आया, अगर उस को मालूम था कि मालदार मुसलमान पर ज़कात वाजिब है तो उस ज़माने की ज़कात वाजिब है वरना नहीं और अगर दारुल इस्लाम में मुसलमान हुवा और चन्द साल की ज़कात नहीं दी तो उन की ज़कात वाजिब है, अगर्चे कहता हो कि मुझे फ़र्ज़िय्यते ज़कात का इल्म नहीं कि दारुल इस्लाम में जहल उ़ज़्र नहीं।[5]

(عالمگیری وغیرہ)

(2) बुलूग़ :

ना बालिग़ पर ज़कात वाजिब नहीं और जुनून अगर पूरे साल को घेर ले तो ज़कात वाजिब नहीं और अगर साल के अव्वल आख़िर में इफ़ाक़ा होता है, अगर्चे बाक़ी ज़माना जुनून में गुज़रता है तो वाजिब है, और जुनून अगर अस्ली हो यानी जुनून ही की ह़ालत में बुलूग़ हुवा तो उस का साल होश आने से शुरूअ़ होगा। यूंही अगर आ़रिज़ी है मगर पूरे साल को घेर लिया तो जब इफ़ाक़ा होगा उस वक़्त से साल की इब्तिदा होगी।[6] (جوہرہ،عالمگیری،ردالمحتار)

(3) अ़क़्ल :

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٠٥.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٠٤.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في احكام المعتوه، ج٣، ص ٢٠٧.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١، وغيره.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٢.
و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في احكام المعتوه، ج٣، ص٢٠٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 7 बोहरे पर ज़कात वाजिब नहीं, जब कि इसी हालत में पूरा साल गुज़रे और अगर कभी कभी उसे इफ़ाक़ा भी होता है तो वाजिब है। जिस पर ग़शी तारी हुई उस पर ज़कात वाजिब है, अगर्चे ग़शी कामिल साल भर तक हो।[1] (عالمگیری، ردالمحتار)

(4) आज़ाद होना।

ग़ुलाम पर ज़कात वाजिब नहीं, अगर्चे माज़ून हो (यानी उस के मालिक ने तिजारत की इजाज़त दी हो) या मुकातब[2] या उम्मे वलद[3] या मुस्तस्आ़ (यानी ग़ुलामे मुश्तरक जिस को एक शरीक ने आज़ाद कर दिया और चूंकि वोह मालदार नहीं है, इस वज्ह से बाक़ी शरीकों के हिस्से कमा कर पूरे करने का उसे हुक्म दिया गया)।[4] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 8 माज़ून ग़ुलाम ने जो कुछ कमाया है उस की ज़कात न उस पर है न उस के मालिक पर। हां, जब मालिक को दे दिया तो अब उन बरसों की भी ज़कात मालिक अदा करे, जब कि ग़ुलामे माज़ून दैन में मुस्तग़रक़ न हो, वरना उस की कमाई पर मुत्लक़न ज़कात वाजिब नहीं, न मालिक के क़ब्ज़ा करने के पहले, न बाद।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 9 मुकातब ने जो कुछ कमाया उस की ज़कात वाजिब नहीं न इस पर न इस के मालिक पर, जब मालिक को दे दे और साल गुज़र जाए, अब ब शराइते ज़कात मालिक पर वाजिब होगी और गुज़श्ता बरसों की वाजिब नहीं।[6] (ردالمحتار)

(5) माल ब क़दरे निसाब उस की मिल्क में होना। अगर निसाब से कम है तो ज़कात वाजिब न हुई।[7] (تنویر، عالمگیری)

(6) पूरे तौर पर उस का मालिक हो। यानी उस पर क़ाबिज़ भी हो।[8]

मस्अला 10 जो माल गुम गया या दरिया में गिर गया या किसी ने ग़स्ब कर लिया और उस के पास ग़स्ब के गवाह न हों या जंगल में दफ़्न कर दिया था और येह याद न रहा कि कहां दफ़्न किया था या अन्जान के पास अमानत रखी थी और येह याद न रहा कि वोह

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في احكام المعتوه، ج٣، ص٢٠٧.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٢.

2 ...यानी वोह ग़ुलाम जिस का आक़ा माल की एक मिक़्दार मुक़र्रर कर के येह कह दे कि इतना अदा कर दे तो आज़ाद है और ग़ुलाम उसे क़बूल भी कर ले।

3 ...यानी वोह लौंडी जिस के बच्चा पैदा हुवा और मौला ने इक़रार किया कि येह मेरा बच्चा है।
तफ़्सीली मालूमात के लिये बहारे शरीअ़त हिस्सा 9 में मुदब्बर, मुकातब और उम्मे वलद का बयान मुलाहज़ा फ़रमाएं।

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١، وغيره.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٤. 6 ..... المرجع السابق.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٢. 8 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

कौन है या मद्यून ने दैन से इन्कार कर दिया और उस के पास गवाह नहीं फिर येह अम्वाल मिल गए तो जब तक न मिले थे, उस ज़माने की ज़कात वाजिब नहीं ।[1]

(درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 11 अगर दैन ऐसे पर है जो इस का इक़्रार करता है मगर अदा में देर करता है या नादार है या क़ाज़ी के यहां उस के मुफ़्लिस होने का हुक्म हो चुका या वोह मुन्किर है, मगर उस के पास गवाह मौजूद हैं तो जब माल मिलेगा, सालहाए गुज़श्ता की भी ज़कात वाजिब है ।[2] (تنویر)

मस्अला 12 चराई का जानवर अगर किसी ने ग़स्ब किया, अगर्चे वोह इक़्रार करता हो तो मिलने के बाद भी उस ज़माने की ज़कात वाजिब नहीं ।[3] (خانیہ)

मस्अला 13 ग़स्ब किये हुए की ज़कात ग़ासिब पर वाजिब नहीं कि येह उस का माल ही नहीं, बल्कि ग़ासिब पर येह वाजिब है कि जिस का माल है उसे वापस दे और अगर ग़ासिब ने उस माल को अपने माल में ख़ल्त़ कर दिया कि तमीज़ ना मुम्किन हो और उस का अपना माल ब क़दरे निसाब है तो मज्मूए पर ज़कात वाजिब है ।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 14 एक ने दूसरे के मसलन हज़ार रुपये ग़स्ब कर लिये फिर वोही रुपये उस से किसी और ने ग़स्ब कर के ख़र्च कर डाले और इन दोनों ग़ासिबों के पास हज़ार हज़ार रुपये अपनी मिल्क के हैं तो ग़ासिबे अव्वल पर ज़कात वाजिब है दूसरे पर नहीं ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 15 शैए मरहून[6] की ज़कात न मुरतहिन[7] पर है, न राहिन[8] पर, मुर्तहिन तो मालिक ही नहीं और राहिन की मिल्के ताम नहीं कि इस के क़ब्ज़े में नहीं और बादे रह्न छुड़ाने के भी इन बरसों की ज़कात वाजिब नहीं ।[9] (درمختار وغیرہ)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢١٨.
2 ..... "تنوير الأبصار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢١٩.
3 ..... "الفتاوى الخانية، كتاب الزكاة، ج١، ص١٢٤.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب فيما لو صادر السلطان رجلا... إلخ، ج٣، ص٢٥٩.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٣.

6...यानी जो चीज़ गिरवी रखी गई है ।
7...यानी जिस के पास चीज़ गिरवी रखी गई हो ।
8...यानी गिरवी रखने वाला ।
तफ़्सीली मालूमात के लिये देखिये : बहारे शरीअ़त हिस्सा 17 में रह्न का बयान ।

9 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢١٤، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 16 जो माल तिजारत के लिये ख़रीदा और साल भर तक उस पर क़ब्ज़ा न किया तो क़ब्ज़े के क़ब्ल मुश्तरी पर ज़कात वाजिब नहीं और क़ब्ज़े के बाद उस साल की भी ज़कात वाजिब है।[1] (درمختار،ردالمحتار)

(7) निसाब का दैन से फ़ारिग़ होना।

मस्अला 17 निसाब का मालिक है मगर उस पर दैन है कि अदा करने के बाद निसाब नहीं रहती तो ज़कात वाजिब नहीं, ख़्वाह वोह दैन बन्दे का हो, जैसे क़र्ज़, ज़रे समन,[2] किसी चीज़ का तावान या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दैन हो : जैसे ज़कात, ख़िराज मसलन कोई शख़्स सिर्फ़ एक निसाब का मालिक है और दो साल गुज़र गए कि ज़कात नहीं दी तो सिर्फ़ पहले साल की ज़कात वाजिब है, दूसरे साल की नहीं कि पहले साल की ज़कात इस पर दैन है इस के निकालने के बाद निसाब बाक़ी नहीं रहती, लिहाज़ा दूसरे साल की ज़कात वाजिब नहीं। यूंही अगर तीन साल गुज़र गए, मगर तीसरे में एक दिन बाक़ी था कि पांच दिरम ह़ासिल हुए जब भी पहले ही साल की ज़कात वाजिब है कि दूसरे और तीसरे साल में ज़कात निकालने के बाद निसाब बाक़ी नहीं। हां, जिस दिन कि वोह पांच दिरम ह़ासिल हुए उस दिन से एक साल तक अगर निसाब बाक़ी रह जाए तो अब उस साल के पूरे होने पर ज़कात वाजिब होगी। यूंही अगर निसाब का मालिक था और साले तमाम पर ज़कात न दी फिर सारे माल को हलाक कर दिया फिर और माल ह़ासिल किया कि येह ब क़दरे निसाब है, मगर साले अव्वल की ज़कात जो इस के ज़िम्मे दैन है उस में से निकालें तो निसाब बाक़ी नहीं रहती तो इस नए साल की ज़कात वाजिब नहीं और अगर उस पहले माल को उस ने क़स्दन हलाक न किया, बल्कि बिला क़स्द हलाक हो गया तो उस की ज़कात जाती रही, लिहाज़ा उस की ज़कात दैन नहीं तो इस सूरत में इस नए साल की ज़कात वाजिब है।[3] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 18 अगर ख़ुद मद्यून[4] नहीं मगर मद्यून का कफ़ील[5] है और कफ़ालत के रुपये निकालने के बाद निसाब बाक़ी नहीं रहती, ज़कात वाजिब नहीं, मसलन ज़ैद के पास हज़ार रुपये हैं और अम्र ने किसी से हज़ार क़र्ज़ लिये और ज़ैद ने उस की कफ़ालत की तो ज़ैद पर इस सूरत में ज़कात वाजिब नहीं कि ज़ैद के पास अगर्चे रुपये हैं मगर अम्र के क़र्ज़ में मुस्तग़रक़ हैं कि क़र्ज़ ख़्वाह को इख़्तियार है ज़ैद से मुत़ालबा करे और रुपये न मिलने पर येह इख़्तियार है कि ज़ैद को क़ैद करा दे तो येह रुपये दैन में मुस्तग़रक़ हैं, लिहाज़ा ज़कात वाजिब

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٥.

2 ...यानी किसी ख़रीदी गई चीज़ के दाम।

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٢-١٧٤ و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب: الفرق بين السبب والشرط والعلة، ج٣، ص٢١٠.

4 ...यानी मक़्रूज़।

5 ...यानी मक़्रूज़ का ज़ामिन।

www.dawateislami.net

नहीं और अगर अ़म्र की दस शख़्सों ने कफ़ालत की और सब के पास हज़ार हज़ार रुपये हैं जब भी उन में किसी पर ज़कात वाजिब नहीं कि क़र्ज़ ख़्वाह हर एक से मुत़ालबा कर सकता है और ब सूरत न मिलने के जिस को चाहे क़ैद करा दे।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 19 जो दैन मीआ़दी हो वोह मज़्हबे सह़ीह़ में वुजूबे ज़कात का मानेअ़ नहीं।[2] (ردالمحتار)

चूंकि आ़दतन दैने मह्र का मुत़ालबा नहीं होता, लिहाज़ा अगर्चे शौहर के ज़िम्मे कितना ही दैने मह्र हो जब वोह मालिके निसाब है, ज़कात वाजिब है।[3] (عالمگیری) ख़ुसूसन महरे मुअख़्ख़र जो आ़म त़ौर पर यहां राइज है जिस की अदा की कोई मीआ़द मुअ़य्यन नहीं होती, इस के मुत़ालबे का तो औ़रत को इख़्तियार ही नहीं, जब तक मौत या त़लाक़ वाक़ेअ़ न हो।

मस्अला 20 औ़रत का नफ़्क़ा शौहर पर दैन नहीं क़रार दिया जाएगा जब तक क़ाज़ी ने हुक्म न दिया हो या दोनों ने बाहम किसी मिक़्दार पर तस्फ़िया न कर लिया हो और अगर येह दोनों न हों तो साक़ित़ हो जाएगा शौहर पर इस का देना वाजिब न होगा, लिहाज़ा मानेए़ ज़कात नहीं। औ़रत के इ़लावा किसी रिश्तेदार का नफ़्क़ा उस वक़्त दैन है जब एक महीने से कम ज़माना गुज़रा हो या उस रिश्तेदार ने क़ाज़ी के हुक्म से क़र्ज़ लिया और अगर येह दोनों बातें नहीं तो साक़ित़ है और मानेए़ ज़कात नहीं।[4] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 21 दैन उस वक़्त मानेए़ ज़कात है जब ज़कात वाजिब होने से पहले का हो और अगर निसाब पर साल गुज़रने के बाद हुवा तो ज़कात पर इस दैन का कुछ असर नहीं।[5] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 22 जिस दैन का मुत़ालबा बन्दों की त़रफ़ से न हो उस का इस जगह एतिबार नहीं यानी वोह मानेए़ ज़कात नहीं मसलन नज़्र व कफ़्फ़ारा व सदक़ए फ़ित्र व ह़ज व क़ुरबानी कि अगर इन के मसारिफ़ निसाब से निकालें तो अगर्चे निसाब बाक़ी न रहे ज़कात वाजिब है, उ़श्र व ख़िराज वाजिब होने के लिये दैन मानेअ़ नहीं यानी अगर्चे मद्यून हो, येह चीज़ें उस पर वाजिब हो जाएंगी।[6] (درمختار،ردالمحتار وغیرہما)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب: الفرق بين السبب والشرط والعلة، ج٣، ص٢١٠.

2 ..... المرجع السابق، ص٢١١. 3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٣.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٣.
و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب: الفرق بين السبب والشرط والعلة، ج٣، ص٢١١.

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب: الفرق بين السبب والشرط والعلة، ج٣، ص٢١٠.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٣.

6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب: الفرق بين السبب والشرط والعلة، ج٣، ص٢١١، وغيرهما.

www.dawateislami.net

मस्अला 23 जो दैन अस्नाए साल में आ़रिज़ हुवा यानी शुरूए़ साल में मद्यून न था फिर मद्यून हो गया फिर साले तमाम पर इलावा दैन के निसाब का मालिक हो गया तो ज़कात वाजिब हो गई, इस की सूरत येह है कि फ़र्ज़ करो क़र्ज़ ख़्वाह ने क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया तो अब चूंकि इस के ज़िम्मे दैन न रहा और साल भी पूरा हो चुका है, लिहाज़ा वाजिब है कि अभी ज़कात दे, येह नहीं कि अब से एक साल गुज़रने पर ज़कात वाजिब होगी और अगर शुरूए़ साल से मद्यून था और साले तमाम पर मुआ़फ़ किया तो अभी ज़कात वाजिब न होगी बल्कि अब से साल गुज़रने पर।[1] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 24 एक शख़्स मद्यून है और चन्द निसाब का मालिक कि हर एक से दैन अदा हो जाता है, मसलन इस के पास रुपये अशरफ़ियां भी हैं, तिजारत के अस्बाब भी, चराई के जानवर भी तो रुपये अशरफ़ियां दैन के मुक़ाबिल समझे और, और चीज़ों की ज़कात दे और अगर रुपये अशरफ़ियां न हों और चराई के जानवरों की चन्द निसाबें हों, मसलन चालीस बकरियां हैं और तीस गाय और पांच ऊंट तो जिस की ज़कात में इसे आसानी हो, उस की ज़कात दे और दूसरे को दैन में समझे तो इस सूरते मज़्कूरा में अगर बकरियों या ऊंटों की ज़कात देगा तो एक बकरी देनी होगी और गाय की ज़कात में साल भर का बछड़ा और ज़ाहिर है कि एक बकरी देना बछड़ा देने से आसान है, लिहाज़ा बकरी दे सकता है और अगर बराबर हों तो उसे इख़्तियार है। मसलन पांच ऊंट हैं और चालीस बकरियां दोनों की ज़कात एक बकरी है, उसे इख़्तियार है जिसे चाहे दैन के लिये समझे और जिस की चाहे ज़कात दे और येह सब तफ़्सील उस वक़्त है कि बादशाह की त़रफ़ से कोई ज़कात वुसूल करने वाला आए, वरना अगर बत़ौरे ख़ुद देना चाहता है तो हर सूरत में इख़्तियार है।[2] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 25 इस पर हज़ार रुपये क़र्ज़ हैं और इस के पास हज़ार रुपये हैं और एक मकान और ख़िदमत के लिये एक ग़ुलाम तो ज़कात वाजिब नहीं, अगर्चे मकान व ग़ुलाम दस हज़ार रुपये की क़ीमत के हों कि येह चीज़ें ह़ाजते अस्लिय्या से हैं और जब रुपये मौजूद हैं तो क़र्ज़ के लिये रुपये क़रार दिये जाएंगे न कि मकान व ग़ुलाम।[3] (عالمگیری)

(8) निसाब ह़ाजते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हो।[4]

मस्अला 26 ह़ाजते अस्लिय्या यानी जिस की त़रफ़ ज़िन्दगी बसर करने में आदमी को ज़रूरत है उस में ज़कात वाजिब नहीं, जैसे रहने का मकान, जाड़े गर्मियों में पहनने के कपड़े,

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٥، وغيره.
2 ..... "الدرالمختار"، "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٦.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٣. 4 ..... المرجع السابق، ص١٧٢.

www.dawateislami.net

ख़ानादारी के सामान, सुवारी के जानवर, ख़िदमत के लिये लौंडी ग़ुलाम, आलाते ह़र्ब, पेशावरों के औज़ार, अहले इ़ल्म के लिये ह़ाजत की किताबें, खाने के लिये ग़ल्ला।[1]

(ہدایہ، عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 27 ऐसी चीज़ ख़रीदी जिस से कोई काम करेगा और काम में उस का असर बाक़ी रहेगा, जैसे चमड़ा पकाने के लिये माज़ू[2] और तेल वग़ैरा अगर इस पर साल गुज़र गया ज़कात वाजिब है। यूंही रंगरेज़ ने उजरत पर कपड़ा रंगने के लिये कुसुम, ज़ाफ़रान ख़रीदा तो अगर ब क़दरे निसाब है और साल गुज़र गया ज़कात वाजिब है। पुड़िया वग़ैरा रंग का भी येही हुक्म है और अगर वोह ऐसी चीज़ है जिस का असर बाक़ी नहीं रहेगा, जैसे साबून तो अगर्चे ब क़दरे निसाब हो और साल गुज़र जाए ज़कात वाजिब नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 28 इत्र फ़रोश ने इत्र बेचने के लिये शीशियां ख़रीदीं, इन पर ज़कात वाजिब है।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 29 ख़र्च के लिये रुपये के पैसे लिये तो येह भी ह़ाजते अस्लिय्या में हैं। ह़ाजते अस्लिय्या में ख़र्च करने के रुपये रखे हैं तो साल में जो कुछ ख़र्च किया किया और जो बाक़ी रहे अगर ब क़दरे निसाब हैं तो इन की ज़कात वाजिब है, अगर्चे इसी निय्यत से रखे हैं कि आइन्दा ह़ाजते अस्लिय्या ही में सर्फ़ होंगे और अगर साले तमाम के वक़्त ह़ाजते अस्लिय्या में ख़र्च करने की ज़रूरत है तो ज़कात वाजिब नहीं।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 30 अहले इ़ल्म के लिये किताबें ह़ाजते अस्लिय्या से हैं और ग़ैर अह्ल के पास हों, जब भी किताबों की ज़कात वाजिब नहीं जब कि तिजारत के लिये न हों, फ़र्क़ इतना है कि अहले इ़ल्म के पास इन किताबों के इ़लावा अगर माल ब क़दरे निसाब न हो तो ज़कात लेना जाइज़ है और ग़ैर अहले इ़ल्म के लिये ना जाइज़, जब कि दो सो दिरम क़ीमत की हों। अह्ल वोह है जिसे पढ़ने पढ़ाने या तस्फ़ीह़ के लिये इन किताबों की ज़रूरत हो। किताब से मुराद मज़्हबी किताब फ़िक़्ह व तफ़्सीर व ह़दीस है, अगर एक किताब के चन्द नुस्ख़े हों तो एक से ज़ाइद जितने नुस्ख़े हों अगर दो सो दिरम की क़ीमत के हों तो उस अह्ल को भी ज़कात लेना ना जाइज़ है, ख़्वाह एक ही किताब के ज़ाइद नुस्ख़े इस क़ीमत के हों या मुतअ़द्दद किताबों के ज़ाइद नुस्ख़े मिल कर इस क़ीमत के हों।[6] (درمختار، ردالمحتار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٢.
و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٢.

2 ...एक दवा का नाम।

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٢.

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٨.

5 ..... المرجع السابق، ص٢١٣.

6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 31 ✒ ह़ाफ़िज़ के लिये कुरआने मजीद ह़ाजते अस्लिय्या से नहीं और ग़ैरे ह़ाफ़िज़ के लिये एक से ज़ियादा ह़ाजते अस्लिय्या के इ़लावा है यानी अगर मुस्ह़फ़ शरीफ़ दो सौ दिरम क़ीमत का हो तो ज़कात लेना जाइज़ नहीं ।[1] (جوہرہ،ردالمحتار)

मस्अला 32 ✒ त़बीब के लिये त़िब की किताबें ह़ाजते अस्लिय्या में हैं, जब कि मुत़ालए़ में रखता हो या उसे देखने की ज़रूरत पड़े, नह़्व व सर्फ़ व नुजूम और दीवान और क़िस्से कहानी की किताबें ह़ाजते अस्लिय्या में नहीं, उसूले फ़िक़्ह व इ़ल्मे कलाम व अख़्लाक़ की किताबें जैसे एह़याउल उ़लूम व कीमियाए सआ़दत वग़ैरहुमा ह़ाजते अस्लिय्या से हैं ।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 33 ✒ कुफ़्फ़ार और बद मज़्हबों के रद और अहले सुन्नत की ताईद में जो किताबें हैं वोह ह़ाजते अस्लिय्या से हैं । यूंही आ़लिम अगर बद मज़्हब वग़ैरा की किताबें इस लिये रखे कि उन का रद करेगा तो येह भी ह़ाजते अस्लिय्या में हैं और ग़ैरे आ़लिम को तो इन का देखना ही जाइज़ नहीं ।

(9) माले नामी होना । यानी बढ़ने वाला ख़्वाह ह़क़ीक़तन बढ़े या ह़ुक्मन यानी अगर बढ़ाना चाहे तो बढ़ाए यानी उस के या उस के नाइब के क़ब्ज़े में हो, हर एक की दो सूरतें हैं वोह इसी लिये पैदा किया गया हो इसे ख़ल्क़ी कहते हैं, जैसे सोना चांदी कि येह इसी लिये पैदा हुए कि इन से चीज़ें ख़रीदी जाएं या इस लिये मख़्लूक़ तो नहीं, मगर उस से येह भी ह़ासिल होता है, उसे फ़ेली कहते हैं । सोने चांदी के इ़लावा सब चीज़ें फ़ेली हैं कि तिजारत से सब में नुमू होगा ।[3] सोने चांदी में मुत़्लक़न ज़कात वाजिब है, जब कि ब क़दरे निसाब हों अगर्चे दफ़्न कर के रखे हों, तिजारत करे या न करे और इन के इ़लावा बाक़ी चीज़ों पर ज़कात उस वक़्त वाजिब है कि तिजारत की निय्यत हो या चराई पर छूटे जानवर व बस, ख़ुलासा येह कि ज़कात **तीन** क़िस्म के माल पर है :

(1) समन यानी सोना चांदी ।

(2) माले तिजारत ।

(3) साइमा यानी चराई पर छूटे जानवर ।[4] (عامۂ کتب)

मस्अला 34 ✒ निय्यते तिजारत कभी सराह़तन होती है कभी दलालतन, सराह़तन येह कि अ़क़्द के वक़्त ही निय्यते तिजारत कर ली ख़्वाह वोह अ़क़्दे ख़रीदारी हो या इजारा, समन रुपिया अशरफ़ी हो या अस्बाब में से कोई शै । दलालतन की सूरत येह है कि माले तिजारत के बदले कोई

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، ص١٤٨ . و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٧.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢١٧.

3 ...यानी ज़ियादती होगी ।

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ١٧٤. و "الفتاوى الرضوية"، ج١٠، ص١٦١.

www.dawateislami.net

चीज़ ख़रीदी या मकान जो तिजारत के लिये है इस को किसी अस्बाब के बदले किराए पर दिया तो येह अस्बाब और वोह ख़रीदी हुई चीज़ तिजारत के लिये हैं अगर्चे सराहतन तिजारत की निय्यत न की। यूंही अगर किसी से कोई चीज़ तिजारत के लिये क़र्ज़ ली तो येह भी तिजारत के लिये है, मसलन दो सौ दिरम का मालिक है और मन भर गेहूं क़र्ज़ लिये तो अगर तिजारत के लिये नहीं लिये तो ज़कात वाजिब नहीं कि गेहूं के दाम इन्हीं दो सौ से मुजरा किये जाएंगे तो निसाब बाक़ी न रही और अगर तिजारत के लिये लिये तो ज़कात वाजिब होगी कि उन गेहूं की क़ीमत दो सौ पर इज़ाफ़ा करें और मज्मूए से क़र्ज़ मुजरा करें तो दो सौ सालिम रहे, लिहाज़ा ज़कात वाजिब हुई।[1] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 35 जिस अ़क़्द में तबादला ही न हो जैसे हिबा, वसिय्यत, सदक़ा या तबादला हो मगर माल से तबादला न हो जैसे महर, बदले ख़ुलअ़[2] बदले उ़त्क़[3] इन दोनों क़िस्म के अ़क़्द के ज़रीए से अगर किसी चीज़ का मालिक हुवा तो इस में निय्यते तिजारत सहीह़ नहीं यानी अगर्चे तिजारत की निय्यत करे, ज़कात वाजिब नहीं। यूंही अगर ऐसी चीज़ मीरास में मिली तो इस में भी निय्यते तिजारत सहीह़ नहीं।[4] (عالمگیری)

मस्अला 36 मूरिस के पास तिजारत का माल था, उस के मरने के बाद वारिसों ने तिजारत की निय्यत की तो ज़कात वाजिब है। यूंही चराई के जानवर विरासत में मिले, ज़कात वाजिब है चराई पर रखना चाहते हों या नहीं।[5] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 37 निय्यते तिजारत के लिये येह शर्त है कि वक़्ते अ़क़्द निय्यत हो, अगर्चे दलालतन तो अगर अ़क़्द के बाद निय्यत की ज़कात वाजिब न हुई। यूंही अगर रखने के लिये कोई चीज़ ली और येह निय्यत की, कि नफ़्अ़ मिलेगा तो बेच डालूंगा तो ज़कात वाजिब नहीं।[6] (درمختار)

मस्अला 38 तिजारत के लिये ग़ुलाम ख़रीदा था फिर ख़िदमत लेने की निय्यत कर ली फिर तिजारत की निय्यत की तो तिजारत का न होगा जब तक ऐसी चीज़ के बदले न बेचे जिस में ज़कात वाजिब होती है।[7] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 39 मोती और जवाहिर पर ज़कात वाजिब नहीं, अगर्चे हज़ारों के हों। हां, अगर तिजारत की निय्यत से लिये तो वाजिब हो गई।[8] (درمختار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٤.
و "الدرالمختار"، و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢١.

2 ...यानी वोह माल जिस के बदले में निकाह़ ज़ाइल किया जाए।

3 ...यानी वोह माल जिस के बदले में ग़ुलाम या लौंडी को आज़ाद किया जाए।

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٤. 5 ..... المرجع السابق.

6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٣١. 7 ..... المرجع السابق، ص٢٢٨.

8 ..... "تنويرالأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٣٠.

www.dawateislami.net

मस्अला 40 ज़मीन से जो पैदावार हुई उस में निय्यते तिजारत से ज़कात वाजिब नहीं, ज़मीन उ़श्री हो या ख़िराजी, इस की मिल्क हो या आ़रिय्यत या किराए पर ली हो। हां, अगर ज़मीन ख़िराजी हो और आ़रिय्यत या किराए पर ली और बीज वोह डाले जो तिजारत के लिये थे तो पैदावार में तिजारत की निय्यत सहीह़ है।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 41 मुज़ारिब[2] माले मुज़ारबत से जो कुछ ख़रीदे, अगर्चे तिजारत की निय्यत न हो, अगर्चे अपने ख़र्च करने के लिये ख़रीदे, उस पर ज़कात वाजिब है यहां तक कि अगर माले मुज़ारबत से ग़ुलाम ख़रीदे फिर इन के पहनने को कपड़ा और खाने के लिये ग़ल्ला वग़ैरा ख़रीदा तो येह सब कुछ तिजारत ही के लिये हैं और सब की ज़कात वाजिब।[3]

(درمختار، ردالمحتار)

(10) साल गुज़रना। साल से मुराद क़मरी साल है यानी चांद के महीनों से बारह महीने। शुरूए़ साल और आख़िरे साल में निसाब कामिल है, मगर दरमियान में निसाब की कमी हो गई तो येह कमी कुछ असर नहीं रखती यानी ज़कात वाजिब है।[4] (عالمگیری)

मस्अला 42 माले तिजारत या सोने चांदी को दरमियाने साल में अपनी जिन्स[5] या ग़ैर जिन्स से बदल लिया तो इस की वज्ह से साल गुज़रने में नुक़्सान न आया और अगर चराई के जानवर बदल लिये तो साल कट गया यानी अब साल उस दिन से शुमार करेंगे जिस दिन बदला है।[6] (عالمگیری)

मस्अला 43 जो शख़्स मालिके निसाब है अगर दरमियाने साल में कुछ और माल उसी जिन्स का ह़ासिल किया तो उस नए माल का जुदा साल नहीं, बल्कि पहले माल का ख़त्मे साल उस के लिये भी साले तमाम है, अगर्चे साले तमाम से एक ही मिनट पहले ह़ासिल किया हो, ख़्वाह वोह माल उस के पहले माल से ह़ासिल हुवा या मीरास व हिबा या और किसी जाइज़ ज़रीए़ से मिला हो और अगर दूसरी जिन्स का है मसलन पहले उस के पास ऊंट थे और अब बकरियां मिलीं तो उस के लिये जदीद साल शुमार होगा।[7] (جوہرہ)

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٢.

2 ...मुज़ारबत, तिजारत में एक क़िस्म की शिर्कत है कि एक जानिब से माल हो और एक जानिब से काम और मनाफ़ेअ़ में दोनों शरीक। काम करने वाले को मुज़ारिब और मालिक ने जो कुछ दिया उसे रासुल माल (माले मुज़ारबत) कहते हैं। तफ़्सीली मालूमात के लिये बहारे शरीअ़त हिस्सा 14 में "मुज़ारबत का बयान" देख लीजिये।

3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢١.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٥.

5 ...सोना, चांदी तो मुत्लक़न यहां एक ही जिन्स हैं। यूंही इन के ज़ेवर, बरतन वग़ैरा अस्बाब, बल्कि माले तिजारत भी इन्हीं की जिन्स से शुमार होगा, अगर्चे किसी क़िस्म का हो कि इस की ज़कात भी चांदी सोने से क़ीमत लगा कर दी जाती है। 12 मिन्ह

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٥.

7 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب الزكاة الخيل، ص١٥٥.

www.dawateislami.net

मस्अला 44 मालिके निसाब को दरमियाने साल में कुछ माल ह़ासिल हुवा और उस के पास दो निसाबें हैं और दोनों का जुदा जुदा साल है तो जो माल दरमियाने साल में ह़ासिल हुवा उसे उस के साथ मिलाए जिस की ज़कात पहले वाजिब हो मसलन उस के पास एक हज़ार रुपये हैं और साइमा की क़ीमत जिस की ज़कात दे चुका था कि दोनों मिलाए नहीं जाएंगे, अब दरमियाने साल में एक हज़ार रुपये और ह़ासिल किये तो इन का साले तमाम उस वक़्त है जब इन दोनों में पहले का हो।[1] (درمختار)

मस्अला 45 उस के पास चराई के जानवर थे और साले तमाम पर उन की ज़कात दी फिर उन्हें रुपयों से बेच डाला और उस के पास पहले से भी ब क़दरे निसाब रुपये हैं जिन पर निस्फ़ साल गुज़रा है तो येह रुपये उन रुपयों के साथ नहीं मिलाए जाएंगे, बल्कि इन के लिये उस वक़्त से नया साल शुरूअ़ होगा। येह उस वक़्त है कि येह समन के रुपये ब क़दरे निसाब हों, वरना बिल इज्माअ़ उन्हीं के साथ मिलाएं यानी इन की ज़कात उन्हीं रुपयों के साथ दी जाए।[2] (جوہرہ)

मस्अला 46 साले तमाम से पेश्तर अगर साइमा को रुपये के बदले बेचा तो अब इन रुपयों को उन रुपयों के साथ मिला लेंगे जो पेश्तर से उस के पास ब क़दरे निसाब मौजूद हैं यानी उन के साले तमाम पर इन की भी ज़कात दी जाए, इन के लिये नया साल शुरूअ़ न होगा। यूंही अगर जानवर के बदले बेचा तो इस जानवर को उस जानवर के साथ मिलाए, जो पेश्तर से उस के पास है। अगर साइमा की ज़कात दे दी फिर इसे साइमा न रखा फिर बेच डाला तो समन को अगले माल के साथ मिला देंगे।[3] (عالمگیری)

मस्अला 47 ऊंट, गाय, बकरी में एक को दूसरे के बदले साले तमाम से पहले बेचा तो अब से उन के लिये नया साल शुरूअ़ होगा। यूंही अगर और चीज़ के बदले ब निय्यते तिजारत बेचा तो अब से एक साल गुज़रने पर ज़कात वाजिब होगी और अगर अपनी जिन्स के बदले बेचा यानी ऊंट को ऊंट और गाय को गाय के बदले जब भी येही हुक्म है और अगर बाद साले तमाम बेचा तो ज़कात वाजिब हो चुकी और वोह उस के ज़िम्मे है।[4] (جوہرہ)

मस्अला 48 दरमियाने साल में साइमा को बेचा था और साले तमाम से पहले ऐब की वज्ह से ख़रीदार ने वापस कर दिया तो अगर क़ाज़ी के हुक्म से वापसी हुई तो नया साल शुरूअ़ न होगा, वरना अब से साल शुरूअ़ किया जाए और अगर हिबा कर दिया था फिर साले तमाम से पहले वापस कर लिया तो नया साल लिया जाएगा, क़ाज़ी के फ़ैसले से वापसी हो या बतौ़रे ख़ुद।[5] (جوہرہ)

---

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٥٥.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٥. 3 ..... المرجع السابق.
4 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب زكاة الابل، ص١٥٠. 5 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 49 उस के पास ख़िराजी ज़मीन थी, ख़िराज अदा करने के बाद बेच डाली तो समन को अस्ल निसाब के साथ मिला देंगे।[1] (عالمگیری)

मस्अला 50 उस के पास रुपये हैं जिन की ज़कात दे चुका है फिर उन से चराई के जानवर ख़रीदे और इस के यहां इस जिन्स के जानवर पहले से मौजूद हैं तो इन को उन के साथ न मिलाएंगे।[2] (عالمگیری)

मस्अला 51 किसी ने इसे चार हज़ार रुपये बतौ़रे हिबा दिये और साल पूरा होने से पहले हज़ार रुपये और ह़ासिल किये फिर हिबा करने वाले ने अपने दिये हुए रुपये हुक्मे क़ाज़ी से वापस ले लिये तो उन जदीद रुपयों की भी इस पर ज़कात वाजिब नहीं जब तक उन पर साल न गुज़र ले।[3] (عالمگیری)

मस्अला 52 किसी के पास तिजारत की बकरियां हैं, जिन की क़ीमत दो सौ दिरम है और साले तमाम से पहले एक बकरी मर गई, साल पूरा होने से पहले उस ने उस की खाल निकाल कर पका ली तो ज़कात वाजिब है।[4] (عالمگیری) यानी जब कि वोह खाल निसाब को पूरा करे।

मस्अला 53 ज़कात देते वक़्त या ज़कात के लिये माल अ़लाह़दा करते वक़्त निय्यते ज़कात शर्त़ है। निय्यत के येह माना हैं कि अगर पूछा जाए तो बिला तअम्मुल बता सके कि ज़कात है।[5] (عالمگیری)

मस्अला 54 साल भर तक ख़ैरात करता रहा, अब निय्यत की, कि जो कुछ दिया है ज़कात है तो अदा न हुई।[6] (عالمگیری)

मस्अला 55 एक शख़्स को वकील बनाया उसे देते वक़्त तो निय्यते ज़कात न की, मगर जब वकील ने फ़क़ीर को दिया उस वक़्त मुअक्किल ने निय्यत कर ली हो गई।[7] (عالمگیری)

मस्अला 56 देते वक़्त निय्यत नहीं की थी, बाद को की तो अगर वोह माल फ़क़ीर के पास मौजूद है यानी उस की मिल्क में है तो येह निय्यत काफ़ी है वरना नहीं।[8] (درمختار)

मस्अला 57 ज़कात देने के लिये वकील बनाया और वकील को ब निय्यते ज़कात माल

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٥.
2 ..... المرجع السابق.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٥ - ١٧٦.
4 ..... المرجع السابق، ص١٧٦. 5 ..... المرجع السابق، ص١٧٠.
6 ..... المرجع السابق، ص١٧١. 7 ..... المرجع السابق.
8 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٢٢.

www.dawateislami.net

दिया मगर वकील ने फ़क़ीर को देते वक़्त निय्यत नहीं की अदा हो गई। यूंही ज़कात का माल ज़िम्मी को दिया कि वोह फ़क़ीर को दे दे और ज़िम्मी को देते वक़्त निय्यत कर ली थी तो येह निय्यत काफ़ी है।[1] (درمختار)

मस्अला 58 वकील को देते वक़्त कहा : "नफ़्ल सदक़ा या कफ़्फ़ारा है।" मगर क़ब्ल इस के कि वकील फ़क़ीरों को दे, उस ने ज़कात की निय्यत कर ली तो ज़कात ही है, अगर्चे वकील ने नफ़्ल या कफ़्फ़ारे की निय्यत से फ़क़ीर को दिया हो।[2] (درمختار)

मस्अला 59 एक शख़्स चन्द ज़कात देने वालों का वकील है और सब की ज़कात मिला दी तो उसे तावान देना पड़ेगा और जो कुछ फ़क़ीरों को दे चुका है वोह तबर्रोअ़ है यानी न मालिकों से इस का मुआ़वज़ा पाएगा न फ़क़ीरों से, अलबत्ता अगर फ़क़ीरों को देने से पहले मालिकों ने मिलाने की इजाज़त दे दी तो तावान इस के ज़िम्मे नहीं। यूंही अगर फ़क़ीरों ने भी उसे ज़कात लेने का वकील किया और उस ने मिला दिया तो तावान इस पर नहीं मगर उस वक़्त येह ज़रूर है कि अगर एक फ़क़ीर का वकील है और चन्द जगह से उसे इतनी ज़कात मिली कि मज्मूआ़ ब क़दरे निसाब है तो अब जो जान कर ज़कात दे उस की ज़कात अदा न होगी या चन्द फ़क़ीरों का वकील है और ज़कात इतनी मिली कि हर एक का हिस्सा निसाब की क़दर है तो अब उस वकील को ज़कात देना जाइज़ नहीं मसलन तीन फ़क़ीरों का वकील है और छे सो दिरम मिले कि हर एक का हिस्सा दो सो हुवा जो निसाब है और छे सो से कम मिला तो किसी को निसाब की क़दर न मिला और अगर हर एक फ़क़ीर ने उसे अ़लाहिदा अ़लाहिदा वकील बनाया तो मज्मूआ़ नहीं देखा जाएगा, बल्कि हर एक को जो मिला है वोह देखा जाएगा और इस सूरत में बग़ैर फ़क़ीरों की इजाज़त के मिलाना जाइज़ नहीं और मिला देगा जब भी ज़कात अदा हो जाएगी और फ़क़ीरों को तावान देगा और अगर फ़क़ीरों का वकील न हो तो उसे दे सकते हैं अगर्चे कितनी ही निसाबें उस के पास जम्अ़ हो गईं।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 60 चन्द अवक़ाफ़ के मुतवल्ली को एक की आमदनी दूसरी में मिलाना जाइज़ नहीं। यूंही दल्लाल को ज़रे समन या मबीअ़ का ख़ल्त़[4] जाइज़ नहीं। यूंही अगर चन्द फ़क़ीरों के लिये सुवाल किया तो जो मिला बे उन की इजाज़त के ख़ल्त़ करना जाइज़ नहीं। यूंही आटा पीसने वाले को येह जाइज़ नहीं कि लोगों के गेहूं मिला दे, मगर जहां मिला देने पर उ़र्फ़ जारी हो तो मिला देना जाइज़ है और इन सब सूरतों में तावान देगा।[5] (خانیہ)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٢٢.
2 ..... "الدرالمختار" و"ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٣.
3 ..... "الدرالمختار" و"ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٣.
4 ...यानी दल्लाल को ख़रीदी गई चीज़ की क़ीमत या ख़रीदी गई चीज़ का मिलाना।
5 ..... "الفتاوى الخانية"، كتاب الزكاة، فصل في اداء الزكاة، ج١، ص١٢٥.

www.dawateislami.net

मस्अला 61 अगर मुअक्किलों[1] ने सराहतन मिलाने की इजाज़त न दी मगर उ़र्फ़ ऐसा जारी हो गया कि वकील मिला दिया करते हैं तो येह भी इजाज़त समझी जाएगी, जब कि मुअक्किल[2] इस उ़र्फ़ से वाक़िफ़ हो, मगर दल्लाल को ख़ल्त़ की इजाज़त नहीं कि इस में उ़र्फ़ नहीं ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 62 वकील को इख़्तियार है कि माले ज़कात अपने लड़के या बीबी को दे दे जब कि येह फ़क़ीर हों और अगर लड़का ना बालिग़ है तो उसे देने के लिये ख़ुद इस वकील का फ़क़ीर होना भी ज़रूरी है, मगर अपनी औलाद या बीबी को उस वक़्त दे सकता है, जब मुअक्किल ने उन के सिवा किसी ख़ास शख़्स को देने के लिये न कह दिया हो वरना इन्हें नहीं दे सकता ।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 63 वकील को येह इख़्तियार नहीं कि ख़ुद ले ले । हां, अगर ज़कात देने वाले ने येह कह दिया हो कि जिस जगह चाहो सर्फ़ करो, तो ले सकता है ।[5] (درمختار)

मस्अला 64 अगर ज़कात देने वाले ने उसे हुक्म नहीं दिया, ख़ुद ही उस की त़रफ़ से ज़कात दे दी तो न हुई अगर्चे अब उस ने जाइज़ कर दिया हो ।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 65 ज़कात देने वाले ने वकील को ज़कात का रुपिया दिया, वकील ने उसे रख लिया और अपना रुपया ज़कात में दे दिया तो जाइज़ है, अगर येह निय्यत हो कि इस के इ़वज़ मुअक्किल का रुपया ले लेगा और अगर वकील ने पहले उस रुपये को ख़ुद ख़र्च कर डाला बाद को अपना रुपया ज़कात में दिया तो ज़कात अदा न हुई बल्कि येह तबर्रोअ़ है और मुअक्किल को तावान देगा ।[7] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 66 ज़कात के वकील को येह इख़्तियार है कि बग़ैर इजाज़ते मालिक दूसरे को वकील बना दे ।[8] (ردالمحتار)

मस्अला 67 किसी ने येह कहा कि अगर मैं उस घर में जाऊं तो मुझ पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये इन सौ रुपयों का ख़ैरात कर देना है फिर गया और जाते वक़्त येह निय्यत की, कि ज़कात में दे दूंगा तो ज़कात में नहीं दे सकता ।[9] (عالمگیری)

---

1 ...वकील करने वालों । 2 ...यानी वोह शख़्स जो वकील मुक़र्रर करे । वकील करने वाला ।

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٣.
4 ..... المرجع السابق، ص٢٢٤. 5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٢٤.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣٢٢٣
7 ..... "الدرالمختار" و"ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٤.
8 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٤.
9 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١.

www.dawateislami.net

मस्अला 68 ज़कात का माल हाथ पर रखा था, फ़ुक़रा लूट ले गए अदा हो गई और अगर हाथ से गिर गया और फ़क़ीर ने उठा लिया अगर येह उसे पहचानता है और राज़ी हो गया और माल ज़ाएअ़ नहीं हुवा तो हो गई ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 69 अमीन के पास से अमानत ज़ाएअ़ हो गई, उस ने मालिक को दफ़्ए़ ख़ुसूमत के लिये कुछ रुपये दे दिये और देते वक़्त ज़कात की निय्यत कर ली और मालिक फ़क़ीर भी है ज़कात अदा न हुई ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 70 माल को ब निय्यते ज़कात अ़लाहदा कर देने से बरिय्युज़्ज़िम्मा न होगा जब तक फ़क़ीरों को न दे दे, यहां तक कि अगर वोह जाता रहा तो ज़कात साक़ित़ न हुई और अगर मर गया तो इस में विरासत जारी होगी ।[3] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 71 साल पूरा होने पर कुल निसाब ख़ैरात कर दी, अगर्चे ज़कात की निय्यत न की बल्कि नफ़्ल की निय्यत की या कुछ निय्यत न की ज़कात अदा हो गई और अगर कुल फ़क़ीर को दे दिया और मन्नत या किसी और वाजिब की निय्यत की तो देना सह़ीह़ है, मगर ज़कात इस के ज़िम्मे है साक़ित़ न हुई और अगर माल का कोई हिस्सा ख़ैरात किया तो उस हिस्से की भी ज़कात साक़ित़ न होगी, बल्कि इस के ज़िम्मे है और अगर कुल माल हलाक हो गया तो कुल की ज़कात साक़ित़[4] हो गई और कुछ हलाक हुवा तो जितना हलाक हुवा उस की साक़ित़ और जो बाक़ी है उस की वाजिब, अगर्चे वोह ब क़दरे निसाब न हो । हलाक के येह माना हैं कि बग़ैर इस के फ़ेल के ज़ाएअ़ हो गया, मसलन चोरी हो गई या किसी को क़र्ज़ व आ़रिय्यत दी उस ने इन्कार कर दिया और गवाह नहीं या वोह मर गया और कुछ तर्के में न छोड़ा और अगर अपने फ़ेल से हलाक किया मसलन सर्फ़ कर डाला या फेंक दिया या ग़नी को हिबा कर दिया[5] तो ज़कात ब दस्तूर वाजिबुल अदा है, एक पैसा भी साक़ित़ न होगा अगर्चे बिल्कुल नादार हो ।[6] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 72 फ़क़ीर पर उस का क़र्ज़ था और कुल मुआ़फ़ कर दिया तो ज़कात साक़ित़ हो गई और जुज़ मुआ़फ़ किया तो उस जुज़ की साक़ित़ हो गई और अगर इस सूरत में येह निय्यत की, कि पूरा ज़कात में हो जाए तो न होगी और अगर मालदार पर क़र्ज़ था और कुल मुआ़फ़ कर दिया तो ज़कात साक़ित़ न हुई बल्कि उस के ज़िम्मे है । फ़क़ीर पर क़र्ज़ था मुआ़फ़ कर दिया और येह निय्यत की, कि फ़ुलां पर जो दैन है येह उस की ज़कात है अदा न हुई ।[7] (عالمگیری،درمختار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثالث،الفصل الثاني، ج١، ص١٨٣.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١.

3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٥.

4 ...यानी मुआ़फ़ ।

5 ...यानी ग़नी को तोह़फ़े में दे दिया ।

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١. 7 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 73 किसी पर उस के रुपये आते हैं, फ़क़ीर से कह दिया उस से वुसूल कर ले और निय्यत ज़कात की की, बादे क़ब्ज़ा अदा हो गई। फ़क़ीर पर क़र्ज़ है उस क़र्ज़ को अपने माल की ज़कात में देना चाहता है यानी येह चाहता है कि मुआ़फ़ कर दे और वोह मेरे माल की ज़कात हो जाए येह नहीं हो सकता, अलबत्ता येह हो सकता है कि उसे ज़कात का माल दे और अपने आते हुए में ले ले, अगर वोह देने से इन्कार करे तो हाथ पकड़ कर छीन सकता है और यूं भी न मिले तो क़ाज़ी के पास मुक़द्दमा पेश करे कि उस के पास है और मेरा नहीं देता।[1] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 74 ज़कात का रुपिया मुर्दे की तज्हीज़ो तक्फ़ीन[2] या मस्जिद की तामीर में सर्फ़ नहीं कर सकते कि तम्लीके फ़क़ीर नहीं पाई गई और इन उमूर में सर्फ़ करना चाहें तो इस का त़रीक़ा येह है कि फ़क़ीर को मालिक कर दें और वोह सर्फ़ करे और सवाब दोनों को होगा बल्कि ह़दीस में आया : "अगर सौ हाथों में सदक़ा गुज़रा तो सब को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा देने वाले के लिये और उस के अज्र में कुछ कमी न होगी।"[3] (ردالمحتار)

मस्अला 75 ज़कात अ़लानिया और ज़ाहिर त़ौर पर अफ़्ज़ल है और नफ़्ल सदक़ा छुपा कर देना अफ़्ज़ल।[4] (عالمگیری) ज़कात में एलान इस वज्ह से है कि छुपा कर देने में लोगों को तोहमत और बद गुमानी का मौक़अ़ मिलेगा, नीज़ एलान औरों के लिये बाइ़से तरग़ीब है कि इस को देख कर और लोग भी देंगे मगर येह ज़रूर है कि रिया न आने पाए कि सवाब जाता रहेगा बल्कि गुनाह व इस्तिह़क़ाक़े अ़ज़ाब है।

मस्अला 76 ज़कात देने में इस की ज़रूरत नहीं कि फ़क़ीर को ज़कात कह कर दे, बल्कि सिर्फ़ निय्यते ज़कात काफ़ी है यहां तक कि अगर हिबा या क़र्ज़ कह कर दे और निय्यत ज़कात की हो अदा हो गई।[5] (عالمگیری) यूंही नज़्र या हदिय्या या पान खाने या बच्चों के मिठाई खाने या ईदी के नाम से दी अदा हो गई। बाज़ मोह़ताज ज़रूरत मन्द ज़कात का रुपिया नहीं लेना चाहते, उन्हें ज़कात कह कर दिया जाएगा तो नहीं लेंगे लिहाज़ा ज़कात का लफ़्ज़ न कहे।

मस्अला 77 ज़कात अदा नहीं की थी और अब बीमार है तो वारिसों से छुपा कर दे और अगर न दी थी और अब देना चाहता है, मगर माल नहीं जिस से अदा करे और येह चाहता है कि क़र्ज़ ले कर अदा करे तो अगर ग़ालिब गुमान क़र्ज़ अदा हो जाने का है तो

---

2 ...यानी कफ़न दफ़न।

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، ج٣، ص٢٢٦، وغيره.

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٧.
"تاريخ بغداد"، رقم: ٣٥٦٨، ج٧، ص١٣٥.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧١. 5 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

बेहतर येह है कि क़र्ज़ ले कर अदा करे वरना नहीं कि ह़क़्क़ुल अ़ब्द ह़क़्क़ुल्लाह से सख़्त तर है ।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 78 मालिके निसाब साले तमाम से पेश्तर भी अदा कर सकता है, बशर्ते कि साले तमाम पर भी उस निसाब का मालिक रहे और अगर ख़त्मे साल पर मालिके निसाब न रहा या अस्नाए साल में वोह माले निसाब बिल्कुल हलाक हो गया तो जो कुछ दिया नफ़्ल है और जो शख़्स निसाब का मालिक न हो, वोह ज़कात नहीं दे सकता यानी आइन्दा अगर निसाब का मालिक हो गया तो जो कुछ पहले दिया है वोह उस की ज़कात में मह़सूब न होगा ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 79 मालिके निसाब अगर पेश्तर से चन्द निसाबों की ज़कात देना चाहे तो दे सकता है यानी शुरूए साल में एक निसाब का मालिक है और दो या तीन निसाबों की ज़कात दे दी और ख़त्मे साल पर जितनी निसाबों की ज़कात दी है उतनी निसाबों का मालिक हो गया तो सब की अदा हो गई और साले तमाम तक एक ही निसाब का मालिक रहा, साल के बाद और ह़ासिल किया तो वोह ज़कात उस में मह़सूब न होगी ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 80 मालिके निसाब पेश्तर से चन्द साल की भी ज़कात दे सकता है ।[4] (عالمگیری) लिहाज़ा मुनासिब है कि थोड़ा थोड़ा ज़कात में देता रहे, ख़त्मे साल पर ह़िसाब करे, अगर ज़कात पूरी हो गई फ़बिहा और कुछ कमी हो तो अब फ़ौरन दे दे, ताख़ीर जाइज़ नहीं कि न उस की इजाज़त कि अब थोड़ा थोड़ा कर के अदा करे, बल्कि जो कुछ बाक़ी है कुल फ़ौरन अदा कर दे और ज़ियादा दे दिया है तो साले आइन्दा में मुजरा कर दे ।[5]

मस्अला 81 एक हज़ार का मालिक है और दो हज़ार की ज़कात दी और निय्यत येह है कि साले तमाम तक अगर एक हज़ार और हो गए तो येह उस की है, वरना साले आइन्दा में मह़सूब होगी येह जाइज़ है ।[6] (عالمگیری)

मस्अला 82 येह गुमान कर के कि पांच सौ रुपये हैं, पांच सौ की ज़कात दी फिर मालूम हुवा कि चार ही सो थे तो जो ज़ियादा दिया है, साले आइन्दा में मह़सूब कर सकता है ।[7] (خانیہ)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٨.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٦.

3 ..... المرجع السابق. 4 ..... المرجع السابق.

5 ...यानी आइन्दा साल में इस को शुमार कर ले ।

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٦.

7 ..... "الفتاوى الخانية"، كتاب الزكاة، فصل في اداء الزكاة، ج١، ص١٢٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 83 किसी के पास सोना चांदी दोनों हैं और साले तमाम से पहले एक की ज़कात दी तो वोह दोनों की ज़कात है यानी दरमियाने साल में इन में से एक हलाक हो गया, अगर्चे वोही जिस की निय्यत से ज़कात दी है तो जो रह गया है उस की ज़कात येह हो गई और अगर उस के पास गाय बकरी ऊंट सब ब क़दरे निसाब हैं और पेश्तर से इन में एक की ज़कात दी तो जिस की ज़कात दी उसी की है दूसरे की नहीं यानी जिस की ज़कात दी है अगर अस्नाए साल में उस की निसाब जाती रही तो वोह बाक़ियों की ज़कात नहीं क़रार दी जाएगी।[1] (عالمگیری)

मस्अला 84 अस्नाए साल में जिस फ़क़ीर को ज़कात दी थी, ख़त्मे साल पर वोह मालदार हो गया या मर गया या مَعَاذَاللہ मुरतद हो गया तो ज़कात पर उस का कुछ असर नहीं वोह अदा हो गई, जिस शख़्स पर ज़कात वाजिब है अगर वोह मर गया तो साक़ित हो गई यानी उस के माल से ज़कात देना ज़रूरी नहीं। हां, अगर वसिय्यत कर गया तो तिहाई माल तक वसिय्यत नाफ़िज़ है और अगर आक़िल बालिग़ वरसा इजाज़त दे दें तो कुल माल से ज़कात अदा की जाए।[2] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 85 अगर शक है कि ज़कात दी या नहीं तो अब दे।[3] (ردالمحتار)

साइमा की ज़कात का बयान

साइमा वोह जानवर है जो साल के अक्सर हिस्से में चर कर गुज़र करता हो और उस से मक़्सूद सिर्फ़ दूध और बच्चे लेना या फ़र्बा करना है।[4] (تنویر) अगर घर में घास ला कर खिलाते हों या मक़्सूद बोझ लादना या हल वग़ैरा किसी काम में लाना या सुवारी लेना है तो अगर्चे चर कर गुज़र करता हो, वोह साइमा नहीं और उस की ज़कात वाजिब नहीं। यूंही अगर गोश्त खाने के लिये है तो साइमा नहीं, अगर्चे जंगल में चरता हो और अगर तिजारत का जानवर चराई पर है तो येह भी साइमा नहीं, बल्कि इस की ज़कात क़ीमत लगा कर अदा की जाएगी।[5] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 1 छे महीने चराई पर रहता है और छे महीने चारा पाता है तो साइमा नहीं और अगर येह इरादा था कि इसे चारा देंगे या इस से काम लेंगे मगर किया नहीं, यहां तक कि साल ख़त्म हो गया तो ज़कात वाजिब है और अगर तिजारत के लिये था और छे महीने या ज़ियादा

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الأول، ج١، ص١٧٦. 2 ..... المرجع السابق.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في زكاة ثمن المبيع وفاء، ج٣، ص٢٢٨.
4 ..... "تنويرالأبصار"، كتاب الزكاة، باب السائمة، ج٣، ص٢٣٢.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب السائمة، ج٣، ص٢٣٣.

www.dawateislami.net

तक चराई पर रखा तो जब तक येह निय्यत न करे कि येह साइमा है, फ़क़त़ चराने से साइमा न होगा।[1] (عالمگیری)

मस्अला 2 तिजारत के लिये ख़रीदा था फिर साइमा कर दिया तो ज़कात के लिये इब्तिदाए साल इस वक़्त से है ख़रीदने के वक़्त से नहीं।[2] (درمختار)

मस्अला 3 साले तमाम से पहले साइमा को किसी चीज़ के बदले बेच डाला, अगर येह चीज़ उस क़िस्म की है जिस पर ज़कात वाजिब होती है और पहले से इस की निसाब उस के पास मौजूद नहीं तो अब उस के लिये इस वक़्त से साल शुमार किया जाएगा।[3] (درمختار)

मस्अला 4 वक़्फ़ के जानवर और जिहाद के घोड़े की ज़कात नहीं। यूंही अन्धे या हाथ पाउं कटे हुए जानवर की ज़कात नहीं, अलबत्ता अन्धा अगर चराई पर रहता है तो वाजिब है।[4] यूंही अगर निसाब में कमी है और इस के पास अन्धा जानवर है कि इस के मिलाने से निसाब पूरी हो जाती है तो ज़कात वाजिब है। (عالمگیری)

तीन क़िस्म के जानवरों की ज़कात वाजिब है, जब कि साइमा हों :

(1) ऊंट।

(2) गाय।

(3) बकरी।

लिहाज़ा इन की निसाब की तफ़्सील बयान करने के बाद दीगर अह़काम बयान किये जाएंगे।

ऊंट की ज़कात का बयान

सह़ीह़ैन में अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''पांच ऊंट से कम में ज़कात नहीं।''[5] और इस की ज़कात में तफ़्सील सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ की उस ह़दीस में है, जो अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी।[6]

मस्अला 1 पांच ऊंट से कम में ज़कात वाजिब नहीं और जब पांच या पांच से ज़ियादा हों, मगर पच्चीस[25] से कम हों तो हर पांच में एक बकरी वाजिब है यानी पांच हों तो एक

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثاني في صدقة السوائم، ج١، ص١٧٦.
2 ..... "تنويرالأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب السائمة، ج٣، ص٢٣٥.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب السائمة، ج٣، ص٢٣٥.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب السائمة، ج٣، ص٢٣٦.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب ليس فيما دون خمسة أوسق صدقة، الحديث:٩٧٩، ص٤٨٧.
6 ..... "صحيح البخارى"، كتاب الزكاة، باب من بلغت عندة صدقة...الخ، الحديث١٤٥٣، ١٤٥٤، ج١، ص٤٩٠.

www.dawateislami.net

बकरी, दस[10] हों तो दो[2], وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس ।[1] (عامۂ کتب)

मस्अला 2 ज़कात में जो बकरी दी जाए वोह साल भर से कम की न हो बकरी दें या बकरा इस का इख़्तियार है ।[2] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 3 दो निसाबों के दरमियान में जो हों वोह अ़फ़्व हैं यानी उन की कुछ ज़कात नहीं, मसलन सात आठ हों जब भी वोही एक बकरी है ।[3] (درمختار)

मस्अला 4 पच्चीस[25] ऊंट हों तो एक बिन्ते मख़ाज़ यानी ऊंट का बच्चा मादा जो एक साल का हो चुका, दूसरी बरस में हो । पैंतीस[35] तक येही हुक्म है यानी वोही बिन्ते मख़ाज़ देंगे । छत्तीस[36] से पैंतालीस[45] तक में एक बिन्ते लबून यानी ऊंट का मादा बच्चा जो दो साल का हो चुका और तीसरी बरस में है । छियालीस[46] से साठ[60] तक में हिक़्क़ा यानी ऊंटनी जो तीन बरस की हो चुकी चौथी में हो । इक्सठ[61] से पछत्तर[75] तक जज़्आ़ यानी चार साल की ऊंटनी जो पांचवें में हो । छहत्तर[76] से नव्वे[90] तक में दो बिन्ते लबून । इकानवे[91] से एक सौ बीस[120] तक में दो हिक़्क़ा । इस के बाद एक सौ पैंतालीस[145] तक दो हिक़्क़ा और हर पांच में एक बकरी, मसलन एक सौ पच्चीस[125] में दो हिक़्क़ा एक बकरी और एक सौ तीस[130] में दो हिक़्क़ा दो बकरियां,[4] وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس ।[5] फिर एक सौ पचास[150] में तीन हिक़्क़ा अगर इस से ज़ियादा हों तो इन में वैसा ही करें जैसा शुरूअ़ में किया था यानी हर पांच में एक बकरी और

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثاني في صدقة السوائم، الفصل الثاني، ج١، ص١٧٧.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب نصاب الابل، ج٣، ص٢٣٨.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب نصاب الابل، ج٣، ص٢٣٨.

4 ...मज़ीद आसानी के लिये ज़ैल का नक़्शा मुलाहज़ा कीजिये :

ऊंट का निसाब

तादाद जिन पर ज़कात वाजिब है	शर्हे ज़कात
05 से 09 तक	एक बकरी
10 से 14 तक	दो बकरियां
15 से 19 तक	तीन बकरियां
20 से 24 तक	चार बकरियां
25 से 35 तक	एक साल की ऊंटनी
36 से 45 तक	दो साल की ऊंटनी
46 से 60 तक	तीन साल की ऊंटनी
61 से 75 तक	चार साल की ऊंटनी
76 से 90 तक	दो दो साल की दो ऊंटनियां
91 से 120 तक	तीन तीन साल की दो ऊंटनियां

5 ...यानी एक सौ पैंतीस[135] में दो हिक़्क़ा तीन बकरियां, एक सौ चालीस[140] में दो हिक़्क़ा चार बकरियां और एक सौ पैंतालीस[145] में दो हिक़्क़ा और एक बिन्ते मख़ाज़ ।

www.dawateislami.net

पच्चीस[25] में बिन्ते मख़ाज़, छत्तीस[36] में बिन्ते लबून, येह एक सौ छियासी[186] बल्कि एक सौ पिचानवे[195] तक का हुक्म हो गया यानी इतने में तीन हिक़्क़ा और एक बिन्ते लबून। फिर एक सौ छियानवे[196] से दो सौ[200] तक चार हिक़्क़ा और येह भी इख़्तियार है कि पांच बिन्ते लबून दे दें। फिर दो सौ[200] के बाद वोही त़रीक़ा बरतें, जो एक सौ पचास[150] के बाद है यानी हर पांच में एक बकरी, पच्चीस[25] में बिन्ते मख़ाज़, छत्तीस[36] में बिन्ते लबून। फिर दो सौ छियालीस[246] से दो सौ पचास[250] तक पांच हिक़्क़ा وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس।[1] (عامۂ کتب)

मस्अला 5 ऊंट की ज़कात में जिस मौक़अ़ पर एक या दो या तीन या चार साल का ऊंट का बच्चा दिया जाता है तो ज़रूर है कि वोह मादा हो, नर दें तो मादा की क़ीमत का हो वरना नहीं लिया जाएगा।[2] (درمختار)

गाय की ज़कात का बयान

अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व दारिमी मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन को यमन का ह़ाकिम बना कर भेजा तो येह फ़रमाया कि: "हर तीस[30] गाय से एक तबीअ़ या तबीआ़ लें और हर चालीस[40] में एक मुसिन्न या मुसिन्ना।"[3] और इसी के मिस्ल अबू दावूद की दूसरी रिवायत अमीरुल मुअमिनीन मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ وَجْہَہُ الْکَرِیْم से है और उस में येह भी है कि काम करने वाले जानवर की ज़कात नहीं।[4]

मस्अला 1 तीस से कम गाय हों तो ज़कात वाजिब नहीं, जब तीस[30] पूरी हों तो इन की ज़कात एक तबीअ़ यानी साल भर का बछड़ा या तबीआ़ यानी साल भर की बछिया है और चालीस[40] हों तो एक मुसिन्न यानी दो साल का बछड़ा या मुसिन्ना यानी दो साल की बछिया, उन्सठ[59] तक येही हुक्म है। फिर साठ[60] में दो तबीअ़ या तबीआ़ फिर हर तीस[30] में एक तबीअ़ या तबीआ़ और हर चालीस[40] में एक मुसिन्न या मुसिन्ना, मसलन सत्तर[70] में एक तबीअ़ और

1 ..... "تبيين الحقائق"، كتاب الزكاة، باب صدقة السوائم، ج٢، ص٣٤.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب نصاب الابل، ج٣، ص٢٣٨ ـ ٢٤٠،وغيرهما.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب نصاب الابل، ج٣، ص٢٤٠.

3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب في زكاة السائمة، الحديث: ١٥٧٦، ج٢، ص١٤٥.

4 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب في زكاة السائمة، الحديث: ١٥٧٢، ج٢، ص١٤٢.

www.dawateislami.net

एक मुसिन्न और अस्सी[80] में दो मुसिन्न[1], وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس । और जिस जगह तीस[30] और चालीस[40] दोनों हो सकते हों वहां, इख़्तियार है कि तबीअ़ ज़कात में दें या मुसिन्न, मसलन एक सौ बीस[120] में इख़्तियार है कि चार तबीअ़ दें या तीन मुसिन्न ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 2 भैंस गाय के हुक्म में है और अगर गाय भैंस दोनों हों तो ज़कात में मिला दी जाएंगी, मसलन बीस[20] गाय हैं और दस[10] भैंसें तो ज़कात वाजिब हो गई और ज़कात में उस का बच्चा लिया जाए जो ज़ियादा हो यानी गाय ज़ियादा हों तो गाय का बच्चा और भेंसें ज़ियादा हों तो भैंस का और अगर कोई ज़ियादा न हो तो ज़कात में वोह लें जो आला से कम हो और अदना से अच्छा ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 3 गाय भैंस की ज़कात में इख़्तियार है कि नर लिया जाए या मादा, मगर अफ़्ज़ल येह है कि गाय ज़ियादा हों तो बछिया और नर ज़ियादा हों तो बछड़ा ।[4] (عالمگیری)

बकरियों की ज़कात का बयान

सहीह़ बुख़ारी शरीफ़ में अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने जब उन्हें बेह़रीन भेजा तो फ़राइज़ सदक़े जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने मुक़र्रर फ़रमाए थे लिख कर दिये, उन में बकरी की निसाब का भी बयान है और येह कि ज़कात में न बूढ़ी बकरी दी जाए, न ऐ़ब वाली, न बकरा ।

हां, अगर मुसद्दक़ (सदक़ा वुसूल करने वाला) चाहे तो ले सकता है ।[5] और ज़कात के ख़ौफ़ से न मुतफ़र्रिक़ को जम्अ़ करें न मुज्तमअ़ को मुतफ़र्रिक़ करें ।

मस्अला 1 चालीस[40] से कम बकरियां हों तो ज़कात वाजिब नहीं और चालीस[40] हों

1...मज़ीद आसानी के लिये ज़ैल का नक़्शा मुलाह़ज़ा कीजिये :

गाय का निसाब

तादाद जिन पर ज़कात वाजिब है	शर्ह़े ज़कात
30 से 39 तक	एक साल का बछड़ा या बछिया
40 से 59 तक	पूरे दो साल का बछड़ा या बछिया
60 से 69 तक	एक एक साल के दो बछड़े या बछियां
70 से 79 तक	एक साल का बछड़ा या बछिया और एक दो साल का बछड़ा
80 से 89 तक	दो साल के दो बछड़े

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة البقر، ج٣، ص٢٤١.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثانى في صدقة السوائم، الفصل الثالث، ج١، ص١٧٨.

4 ..... المرجع السابق.

5 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، الحديث: ١٤٥٤، ١٤٥٥، ج١، ص٤٩٠.

www.dawateislami.net

तो एक बकरी और येही हुक्म एक सौ बीस[120] तक है यानी इन में भी वोही एक बकरी है और एक सौ इक्कीस[121] में दो और दो सौ एक[201] में तीन[3] और चार सौ[400] में चार फिर हर सौ पर एक[1] और जो दो निसाबों के दरमियान में है मुआ़फ़ है।[2] (عالمگیری کتب)

मस्अला 2 ज़कात में इख़्तियार है कि बकरी दे या बकरा, जो कुछ हो येह ज़रूर है कि साल भर से कम का न हो, अगर कम का हो तो क़ीमत के हिसाब से दिया जा सकता है।[3] (درمختار)

मस्अला 3 भेड़ दुम्बा बकरी में दाख़िल हैं कि एक से निसाब पूरी न होती हो तो दूसरी को मिला कर पूरी करें और ज़कात में भी इन को दे सकते हैं मगर साल से कम के न हों।[4] (درمختار)

मस्अला 4 जानवरों में नसब मां से होता है तो अगर हिरन और बकरी से बच्चा पैदा हुवा तो बकरियों में शुमार होगा और निसाब में अगर एक की कमी है तो उसे मिला कर पूरी करेंगे, बकरे और हिरनी से है तो नहीं। यूंही नीलगाय और बैल से है तो गाय नहीं और नीलगाय नर और गाय से है तो गाय है।[5] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 5 जिन जानवरों की ज़कात वाजिब है वोह कम से कम साल भर के हों, अगर सब एक साल से कम के बच्चे हों तो ज़कात वाजिब नहीं और अगर एक भी उन में साल भर का हो तो सब उसी के ताबेअ़ हैं, ज़कात वाजिब हो जाएगी, यानी मसलन बकरी के चालीस[40] बच्चे साल साल भर से कम के ख़रीदे तो वक़्ते ख़रीदारी से एक साल पर ज़कात वाजिब नहीं कि उस वक़्त क़ाबिले निसाब न थे बल्कि उस वक़्त से साल लिया जाएगा कि इन में का कोई साल भर का हो गया। यूंही अगर इस के पास ब क़दरे निसाब बकरियां थीं और छे महीने गुज़रने के बाद उन के चालीस[40] बच्चे हुए फिर बकरियां जाती रहीं, बच्चे बाक़ी रह गए तो अब साले

---

1 ...मज़ीद आसानी के लिये ज़ैल का नक़्शा मुलाहज़ा कीजिये :

बकरी का निसाब

तादाद जिन पर ज़कात फ़र्ज़ है	शर्हे ज़कात
40 से 120 तक	एक बकरी
121 से 200 तक	दो बकरियां
201 से 399 तक	तीन बकरियां
400 से 499 तक	चार बकरियां
फिर हर सो पर	एक बकरी का इज़ाफ़ा

2 ..... "تنویر الأبصار" و "الدرالمختار"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ الغنم، ج۳، ص۲۴۳.
و "الفتاوی الهندیة"، کتاب الزکاۃ، الباب الثاني في صدقة السوائم، الفصل الرابع، ج۱، ص۱۷۸.

3 ..... "الدرالمختار"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ الغنم، ج۳، ص۲۴۳. 4 ..... المرجع السابق، ص۲۴۲.

5 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الزکاۃ، الباب الثاني في صدقة السوائم، الفصل الرابع، ج۱، ص۱۷۸، وغیره.

www.dawateislami.net

तमाम पर येह बच्चे क़ाबिले निसाब नहीं, लिहाज़ा ज़कात वाजिब नहीं ।[1] (جوہرہ)

मस्अला 6 अगर उस के पास ऊंट, गाय, बकरियां सब हैं मगर निसाब से सब कम हैं या बाज़ तो निसाब पूरी करने के लिये ख़ल्त़ न करेंगे और ज़कात वाजिब न होगी ।[2]

(درمختار وغیرہ)

मस्अला 7 ज़कात में मुतवस्सित़ दरजे का जानवर लिया जाएगा चुन कर उ़म्दा न लें । हां, उस के पास सब अच्छे ही हों तो वोही लें और गाभन और वोह जानवर न लें जिसे खाने के लिये फ़र्बा किया हो, न वोह मादा लें जो अपने बच्चे को दूध पिलाती है न बकरा लिया जाए ।[3] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 8 जिस उ़म्र का जानवर देना वाजिब आया वोह उस के पास नहीं और उस से बढ़ कर मौजूद है तो वोह दे दे और जो ज़ियादती हो वापस ले, मगर सदक़ा वुसूल करने वाले पर ले लेना वाजिब नहीं अगर न ले और उस जानवर को त़लब करे जो वाजिब आया या उस की क़ीमत तो उसे इस का इख़्तियार है जिस उ़म्र का जानवर वाजिब हुवा वोह नहीं है और इस से कम उ़म्र का है तो वोही दे दे और जो कमी पड़े उस की क़ीमत दे या वाजिब की क़ीमत दे दे दोनों त़रह़ कर सकता है ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 9 घोड़े, गधे, ख़च्चर अगर्चे चराई पर हों इन की ज़कात नहीं । हां, अगर तिजारत के लिये हों तो इन की क़ीमत लगा कर उस का चालीसवां[40] ह़िस्सा ज़कात में दें ।[5]

(درمختار وغیرہ)

मस्अला 10 दो निसाबों के दरमियान जो अ़फ़्व है उस की ज़कात नहीं होती यानी बादे साले तमाम अगर वोह अ़फ़्व हलाक हो जाए तो ज़कात में कोई कमी न होगी और वाजिब होने के बाद निसाब हलाक हो गई तो उस की ज़कात भी साक़ित़ हो गई और हलाक पहले अ़फ़्व की त़रफ़ फेरेंगे, उस से बचे तो उस के मुत्तसिल जो निसाब है उस की त़रफ़ फिर भी बचे तो इस के बाद وَ عَلٰی هٰذَا الْقِیاس । मसलन अस्सी[80] बकरियां थीं चालीस[40] मर गईं तो अब भी एक बकरी वाजिब रही कि चालीस के बाद दूसरा चालीस अ़फ़्व है और चालीस ऊंट में पन्दरह मर गए तो बिन्ते मख़ाज़ वाजिब है कि चालीस में चार अ़फ़्व हैं वोह निकाले, इस के बाद छत्तीस[36] की निसाब है वोह भी काफ़ी नहीं, लिहाज़ा ग्यारह और निकाले, पच्चीस रहे उन में बिन्ते मख़ाज़

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب زكاة الخيل، ص ١٥٤.
2 ..... "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص ٢٨٠. وغيره
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، ج٣، ص ٢٥١.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثاني في صدقة السوائم، الفصل الثاني، ج ١، ص١٧٧.
5 ..... "تنوير الأبصار" و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، ج٣، ص٢٤٤، وغيره.

www.dawateislami.net

का हुक्म है बस येही देंगे ।[1] (درمختار، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 11 दो बकरियां ज़कात में वाजिब हुईं और एक फ़र्बा बकरी दी जो क़ीमत में दो के बराबर है ज़कात अदा हो गई ।[2] (جوہرہ)

मस्अला 12 साले तमाम के बाद मालिके निसाब ने निसाब ख़ुद हलाक कर दी तो ज़कात साक़ित न होगी, मसलन जानवर को चारा पानी न दिया गया कि मर गया ज़कात देनी होगी । यूंही अगर इस का किसी पर क़र्ज़ था और वोह मक़्रूज़ मालदार है, साले तमाम के बाद इस ने मुआ़फ़ कर दिया तो येह हलाक करना है, लिहाज़ा ज़कात दे और अगर वोह नादार था और इस ने मुआ़फ़ कर दिया तो साक़ित हो गई ।[3] (درمختار)

मस्अला 13 मालिके निसाब ने साले तमाम के बाद क़र्ज़ दे दिया या आ़रिय्यत दी या माले तिजारत को माले तिजारत के बदले बेचा और जिस को दिया था उस ने इन्कार कर दिया और उस के पास सुबूत नहीं या वोह मर गया और तर्का न छोड़ा तो येह हलाक करना नहीं, लिहाज़ा ज़कात साक़ित हो गई । और अगर साले तमाम के बाद माले तिजारत को ग़ैरे माले तिजारत के इ़वज़ बेच डाला यानी उस के बदले में जो चीज़ ली उस से तिजारत मक़्सूद नहीं, मसलन ख़िदमत के लिये ग़ुलाम या पहनने के लिये कपड़े ख़रीदे या साइमा को साइमा के बदले बेचा और जिस के हाथ बेचा उस ने इन्कार कर दिया और इस के पास गवाह नहीं या वोह मर गया और तर्का न छोड़ा तो येह हलाक नहीं बल्कि हलाक करना है, लिहाज़ा ज़कात वाजिब है । साले तमाम के बाद माले तिजारत को औ़रत के महर में दे दिया या औ़रत ने अपनी निसाब के बदले शौहर से ख़ुल्अ़ लिया तो ज़कात देनी होगी ।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 14 इस के पास रुपये अशरफ़ियां थीं जिन पर साल गुज़रा मगर अभी ज़कात नहीं दी, उन के बदले तिजारत के लिये कोई चीज़ ख़रीदी और येह चीज़ हलाक हो गई तो ज़कात साक़ित हो गई मगर जब कि इतनी गिरां[5] ख़रीदी कि इतने नुक़्सान के साथ लोग न ख़रीदते हों तो उस की अस्ली क़ीमत पर जो कुछ ज़ियादा दिया है, उस की ज़कात साक़ित न होगी कि वोह हलाक करना है और अगर तिजारत के लिये न हो, मसलन ख़िदमत के लिये ग़ुलाम ख़रीदा, वोह मर गया तो उस रुपये की ज़कात साक़ित न होगी ।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 15 बादशाहे इस्लाम ने अगर्चे ज़ालिम या बाग़ी हो, साइमा की ज़कात ले ली या उ़श्र वुसूल कर लिया और उन्हें महल पर सर्फ़ किया तो इआ़दे की ह़ाजत नहीं और महल

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ الغنم، ج۳، ص۲٤٦، وغیرھما.
2 ..... "الجوھرۃ النیرۃ"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ الذھب، الجزء الاوّل، ص۱۵۹.
3 ..... "الدرالمختار"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ الغنم، ج۳، ص۲٤۷.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ الغنم، ج۳، ص۲٤۸ ـ ۲۵۰.
6 ..... "ردالمحتار"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ الغنم، ج۳، ص۲٤۸.

5 ...यानी मेहंगी ।

www.dawateislami.net

पर सर्फ़ न किया तो इआ़दा किया जाए और ख़िराज ले लिया तो मुत्लक़न इआ़दे की ह़ाजत नहीं ।[1] (درمختار)

मस्अला 16 मुसद्दक़ (ज़कात वुसूल करने वाले) के सामने साइमा बेच डाला तो मुसद्दक़ को इख़्तियार है चाहे ब क़दरे ज़कात उस में से क़ीमत ले ले और इस सूरत में बैअ़ तमाम हो गई और चाहे जो जानवर वाजिब हुवा वोह ले ले और उस वक़्त जो लिया उस के ह़क़ में बैअ़ बातिल होगी और अगर मुसद्दक़ वहां मौजूद न था बल्कि उस वक़्त आया कि मजलिसे अ़क़्द से वोह दोनों जुदा हो गए तो अब जानवर नहीं ले सकता । जो जानवर वाजिब हुवा उस की क़ीमत ले ले ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 17 जिस ग़ल्ले पर उ़श्र वाजिब हुवा उसे बेच डाला तो मुसद्दक़ को इख़्तियार है चाहे बाएअ़[3] से उस की क़ीमत ले या मुश्तरी[4] से उतना ग़ल्ला वापस ले, बैअ़ उस के सामने हुई हो या दोनों के जुदा होने के बाद मुसद्दक़ आया ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 18 अस्सी[80] बकरियां हैं तो एक बकरी ज़कात की है, येह नहीं किया जा सकता कि चालीस[40] चालीस[40] के दो[2] गुरौह कर के दो[2] ज़कात में लें और अगर दो[2] शख़्सों की चालीस[40] चालीस[40] बकरियां हैं तो येह नहीं कर सकते कि उन्हें जम्अ़ कर के एक गुरौह कर दें कि एक ही बकरी ज़कात में देनी पड़े, बल्कि हर एक से एक एक ली जाएगी । यूंही अगर एक की उन्तालीस[39] हैं और एक की चालीस[40] तो उन्तालीस[39] वाले से कुछ न लेंगे, ग़रज़ न मुज्तमअ़ को मुतफ़र्रिक़ करेंगे, न मुतफ़र्रिक़ को मुज्तमअ़ ।[6] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 19 मवेशी में शिर्कत से ज़कात पर कुछ असर नहीं पड़ता, ख़्वाह वोह किसी क़िस्म की हो । अगर हर एक का ह़िस्सा ब क़दरे निसाब है तो दोनों पर पूरी पूरी ज़कात वाजिब और एक का ह़िस्सा ब क़दरे निसाब है दूसरे का नहीं तो इस पर वाजिब है, उस पर नहीं मसलन एक की चालीस[40] बकरियां हैं दूसरे की तीस[30] तो चालीस वाले पर एक बकरी तीस वाले पर कुछ नहीं अगर और किसी की ब क़दरे निसाब न हों मगर मज्मूआ़ ब क़दरे निसाब है तो किसी पर कुछ नहीं ।[7] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 20 अस्सी[80] बकरियों में इकासी[81] शरीक हैं, यूं कि एक शख़्स हर बकरी में निस्फ़ का मालिक है और हर बकरी के दूसरे निस्फ़ का उन में से एक एक शख़्स मालिक है तो उस के सब ह़िस्सों का मज्मूआ़ चालीस[40] के बराबर हुवा और येह सब सिर्फ़ आधी आधी

1 ..... "الدرالمختار" كتاب الزكاة، باب زكاة الغنم، ج٣، ص٢٥٥.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثالث، في زكاة الذهب والفضة والعروض مسائل شتى، ج١، ص١٨١.

3 ...यानी फ़रोख़्त करने वाले । 4 ...यानी ख़रीदने वाले ।

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثالث، في زكاة الذهب والفضة والعروض مسائل شتى، ج١، ص١٨١.

6 ..... المرجع السابق، وغيره. 7 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

बकरी के हिस्सेदार हुए, मगर ज़कात किसी पर नहीं।[1] (درمختار)

मस्अला 21 शिर्कत की मवेशी में ज़कात दी गई तो हर एक पर उस के हिस्से की क़दर है, जो कुछ हिस्से से ज़ाइद गया वोह शरीक से वापस ले, मसलन एक की इक्तालीस[41] बकरियां हैं, दूसरे की बयासी[82], कुल एक सो तेईस[123] हुईं और दो[2] ज़कात में ली गईं, यानी हर एक से एक मगर चूंकि एक एक तिहाई का शरीक है और दूसरा दो का, लिहाज़ा हर बकरी में दो तिहाई वाले की दो तिहाइयां गईं, जिन का मज्मूआ़ एक तिहाई और एक बकरी है और एक तिहाई वाले की हर बकरी में एक ही तिहाई गई कि मज्मूआ़ दो तिहाइयां हुवा और उस पर वाजिब एक बकरी है, लिहाज़ा दो तिहाइयों वाला एक तिहाई वाले से तिहाई लेने का मुस्तहिक़ है और अगर कुल अस्सी[80] बकरियां हैं, एक दो तिहाई का शरीक है, दूसरा एक तिहाई का और ज़कात में एक बकरी ली गई तो तिहाई का हिस्सेदार अपने शरीक से तिहाई बकरी की क़ीमत ले कि इस पर ज़कात वाजिब नहीं।[2] (ردالمحتار)

सोने चांदी माले तिजारत की ज़कात का बयान

हदीस 1 सुनने अबी दावूद व तिरमिज़ी में अमीरुल मुअमिनीन मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "घोड़े और लौंडी ग़ुलाम की ज़कात मैं ने मुआ़फ़ फ़रमाई तो अब चांदी की ज़कात हर चालीस दिरहम से एक दिरहम अदा करो, मगर एक सौ नव्वे[190] में कुछ नहीं, जब दो सौ[200] दिरहम हों तो पांच दिरहम दो।"[3]

हदीस 2 अबू दावूद की दूसरी रिवायत इन्हीं से यूं है कि हर चालीस[40] दिरहम से एक दिरहम है, मगर जब तक दो सौ[200] दिरहम पूरे न हों कुछ नहीं जब दो सौ[200] पूरे हों तो पांच दिरहम और इस से ज़ियादा हों तो इसी हिसाब से दें।[4]

हदीस 3 तिरमिज़ी शरीफ़ में ब रिवायते अम्र बिन शुऐ़ब अ़न अबीह अ़न जद्दिही मरवी, कि दो औ़रतें हाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुईं, उन के हाथों में सोने के कंगन थे, इरशाद फ़रमाया : "तुम इस की ज़कात अदा करती हो ?" अ़र्ज़ की : नहीं। फ़रमाया : तो क्या तुम इसे पसन्द करती हो कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें आग के कंगन पहनाए ? अ़र्ज़ की : ना। फ़रमाया : "तो इस की ज़कात अदा करो।"[5]

हदीस 4 इमाम मालिक व अबू दावूद व उम्मुल मुअमिनीन उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से रिवायत करते हैं फ़रमाती हैं : मैं सोने के ज़ेवर पहना करती थी, मैं ने अ़र्ज़ की :

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٨١.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٨٠.
3 ..... "جامع الترمذی"، أبواب الزكاة، باب ما جاء في زكاة الذهب والورق، الحديث: ٦٢٠، ج٢، ص١٢٢.
4 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب في زكاة السائمة، الحديث: ١٥٧٢، ج٢، ص١٤٢.
5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الزكاة، باب ماجاء في زكاة الحلي، الحديث: ٦٣٧، ج٢، ص١٣٢.

www.dawateislami.net

या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) क्या येह कन्ज़ है (जिस के बारे में कुरआने मजीद में वईद आई) ? इरशाद फ़रमाया : "जो इस ह़द को पहुंचे कि उस की ज़कात अदा की जाए और अदा कर दी गई तो कन्ज़ नहीं।"(1)

ह़दीस 5 इमाम अह़मद ब अस्नादे ह़सन अस्मा बिन्ते यज़ीद से रावी, कहती हैं : मैं और मेरी ख़ाला ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हुईं और हम सोने के कंगन पहने हुए थे। इरशाद फ़रमाया : "इस की ज़कात देती हो ?" अ़र्ज़ की : नहीं। फ़रमाया : "क्या डरती नहीं हो कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें आग के कंगन पहनाए, इस की ज़कात अदा करो।"(2)

ह़दीस 6 अबू दावूद व समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि हम को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हुक्म दिया करते कि "जिस को हम बैअ़ (तिजारत) के लिये मुहय्या करें, उस की ज़कात निकालें।"(3)

मस्अला 1 सोने की निसाब बीस[20] मिस्क़ाल है यानी साढ़े सात तोले और चांदी की दो सौ[200] दिरम यानी साढ़े बावन तोले यानी वोह तोला जिस से येह राइज रुपिया सवा ग्यारह माशे है। सोने चांदी की ज़कात में वज़्न का एतिबार है क़ीमत का लिह़ाज़ नहीं, मसलन सात तोले सोने या कम का ज़ेवर या बरतन बना हो कि उस की कारीगरी की वज्ह से दो सौ[200] दिरम से ज़ाइद क़ीमत हो जाए या सोना गिरां हो कि साढ़े सात तोले से कम की क़ीमत दो सौ दिरम से बढ़ जाए, जैसे आज कल कि साढ़े सात तोले सोने की क़ीमत चांदी की कई निसाबें होंगी, ग़रज़ येह कि वज़्न में ब क़दरे निसाब न हो तो ज़कात वाजिब नहीं क़ीमत जो कुछ भी हो। यूंही सोने की ज़कात में सोने और चांदी की ज़कात में चांदी की कोई चीज़ दी तो उस की क़ीमत का एतिबार न होगा, बल्कि वज़्न का अगर्चे उस में बहुत कुछ सन्अ़त हो जिस की वज्ह से क़ीमत बढ़ गई या फ़र्ज़ करो दस आने भरी चांदी बिक रही है और ज़कात में एक रुपिया दिया जो सोलह आने का क़रार दिया जाता है तो ज़कात अदा करने में वोह येही समझा जाएगा कि सवा ग्यारह माशे चांदी दी, येह छे आने बल्कि कुछ ऊपर जो उस की क़ीमत में ज़ाइद हैं लग़्व हैं।(4) (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 2 येह जो कहा गया कि अदाए ज़कात में क़ीमत का एतिबार नहीं, येह उसी सूरत में है कि उस की जिन्स की ज़कात उसी जिन्स से अदा की जाए और अगर सोने की ज़कात चांदी से या चांदी की सोने से अदा की तो क़ीमत का एतिबार होगा, मसलन सोने की ज़कात में चांदी की कोई चीज़ दी जिस की क़ीमत एक अशरफ़ी है तो एक अशरफ़ी देना क़रार

1 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب الكنز ما هو؟ وزكاة الحلي، الحديث: ١٥٦٤، ج٢، ص١٣٧.
2 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، من حديث أسماء ابنة يزيد، الحديث: ٢٧٦٨٥، ج١٠، ص٤٤٦.
3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب العروض اذا كانت للتجارة هل فيها زكاة؟، الحديث: ١٥٦٢، ج٢، ص١٣٦.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٦٧ ـ ٢٧٠.

www.dawateislami.net

पाएगा, अगर्चे वज़्न में उस की चांदी पन्दरह रुपये भर भी न हो।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 3 सोना चांदी जब कि ब क़दरे निसाब हों तो इन की ज़कात चालीसवां हिस्सा है, ख़्वाह वोह वैसे ही हों या उन के सिक्के जैसे रुपये अशरफ़ियां या उन की कोई चीज़ बनी हुई ख़्वाह उस का इस्तिमाल जाइज़ हो जैसे औ़रत के लिये ज़ेवर, मर्द के लिये चांदी की एक नग की एक अंगूठी साढ़े चार माशे से कम की या सोने चांदी के बिला ज़न्जीर के बटन या इस्तिमाल ना जाइज़ हो जैसे चांदी सोने के बरतन, घड़ी, सुरमा दानी, सलाई कि इन का इस्तिमाल मर्द व औ़रत सब के लिये ह़राम है या मर्द के लिये सोने चांदी का छल्ला या ज़ेवर या सोने की अंगूठी या साढ़े चार माशे से ज़ियादा चांदी की अंगूठी या चन्द अंगूठियां या कई नग की एक अंगूठी, ग़रज़ जो कुछ हो ज़कात सब की वाजिब है, मसलन $7\frac{1}{2}$ तोला सोना है तो दो माशा ज़कात वाजिब है या 52 तोला 6 माशा चांदी है तो एक तोला 3 माशा 6 रत्ती।[2] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 4 सोने चांदी के इलावा तिजारत की कोई चीज़ हो, जिस की क़ीमत सोने चांदी की निसाब को पहुंचे तो उस पर भी ज़कात वाजिब है यानी क़ीमत का चालीसवां$\frac{1}{40}$ ह़िस्सा और अगर अस्बाब की क़ीमत तो निसाब को नहीं पहुंचती मगर उस के पास इन के इलावा सोना चांदी भी है तो उन की क़ीमत सोने चांदी के साथ मिला कर मज्मूआ़ करें, अगर मज्मूआ़ निसाब को पहुंचा ज़कात वाजिब है और अस्बाबे तिजारत की क़ीमत उस सिक्के से लगाएं जिस का रवाज वहां ज़ियादा हो, जैसे हिन्दुस्तान में रुपये का ज़ियादा चलन है, इसी से क़ीमत लगाई जाए और अगर कहीं सोने चांदी दोनों के सिक्कों का यक्सां चलन हो तो इख़्तियार है जिस से चाहें क़ीमत लगाएं, मगर जब कि रुपये से क़ीमत लगाएं तो निसाब नहीं होती और अशरफ़ी से हो जाती है या बिल अ़क्स तो उसी से क़ीमत लगाई जाए जिस से निसाब पूरी हो और अगर दोनों से निसाब पूरी होती है मगर एक से निसाब के इलावा निसाब का पांचवां ह़िस्सा ज़ियादा होता है, दूसरे से नहीं तो उस से क़ीमत लगाएं जिस से एक निसाब और निसाब का पांचवां ह़िस्सा हो।[3] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 5 निसाब से ज़ियादा माल है तो अगर येह ज़ियादती निसाब का पांचवां ह़िस्सा है तो उस की ज़कात भी वाजिब है, मसलन दो सौ चालीस$\frac{240}{1}$ दिरम यानी 63 तोला चांदी हो तो ज़कात में छे दिरम वाजिब, यानी एक तोला 6 माशा $\frac{1}{5}$ रत्ती यानी 52 तोला 6 माशा के बाद हर 10 तोला 6 माशा पर 3 माशा $1\frac{1}{5}$ रत्ती बढ़ाएं और सोना नव तोला हो तो दो 2 माशा $5\frac{3}{5}$ रत्ती यानी 7 तोला 6 माशा के बाद हर एक तोला 6 माशा पर $3\frac{3}{5}$ रत्ती बढ़ाएं और पांचवां ह़िस्सा न हो तो मुआ़फ़ यानी मसलन नव तोला से एक रत्ती कम अगर सोना है तो ज़कात वोही 7 तोला 6 माशा की वाजिब है यानी 2 माशा। यूंही चांदी अगर 63 तोला से एक

1 ..... "ردالمحتار"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ المال، ج۳، ص۲۷۰.
2 ..... "الدرالمختار"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ المال، ج۳، ص۲۷۰، وغیرہ.
3 ..... المرجع السابق، ص۲۷۰ - ۲۷۲، وغیرہ.

www.dawateislami.net

रत्ती भी कम है तो ज़कात वोही 52 तोला 6 माशा की एक तोला 3 माशा 6 रत्ती वाजिब। यूंही पांचवें हिस्से के बाद जो ज़ियादती है, अगर वोह भी पांचवां हिस्सा है तो उस का चालीसवां हिस्सा वाजिब वरना मुआफ़ وَعَلٰی هٰذَا الْقِیاس। माले तिजारत का भी येही हुक्म है।[1] (درمختار)

मस्अला 6 अगर सोने चांदी में खोट हो और ग़ालिब सोना चांदी है तो सोना चांदी क़रार दें और कुल पर ज़कात वाजिब है। यूंही अगर खोट सोने चांदी के बराबर हो तो ज़कात वाजिब और अगर खोट ग़ालिब हो तो सोना चांदी नहीं फिर इस की चन्द सूरतें हैं : अगर उस में सोना चांदी इतनी मिक़्दार में हो कि जुदा करें तो निसाब को पहुंच जाए या वोह निसाब को नहीं पहुंचता मगर इस के पास और माल है कि उस से मिल कर निसाब हो जाएगी या वोह समन में चलता है और उस की क़ीमत निसाब को पहुंचती है तो इन सब सूरतों में ज़कात वाजिब है और अगर इन सूरतों में कोई न हो तो इस में अगर तिजारत की निय्यत हो तो ब शराइते तिजारत उसे माले तिजारत क़रार दें और उस की क़ीमत निसाब की क़दर हो, ख़ुद या औरों के साथ मिल कर तो ज़कात वाजिब है वरना नहीं।[2] (درمختار)

मस्अला 7 सोने चांदी को बाहम ख़ल्त कर दिया तो अगर सोना ग़ालिब हो, सोना समझा जाए और दोनों बराबर हों और सोना ब क़दरे निसाब है, तन्हा या चांदी के साथ मिल कर जब भी सोना समझा जाए और चांदी ग़ालिब हो तो चांदी है, निसाब को पहुंचे तो चांदी की ज़कात दी जाए मगर जब कि उस में जितना सोना है वोह चांदी की क़ीमत से ज़ियादा है तो अब भी कुल सोना ही क़रार दें।[3] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 8 किसी के पास सोना भी है और चांदी भी और दोनों की कामिल निसाबें तो येह ज़रूरी नहीं कि सोने को चांदी या चांदी को सोना क़रार दे कर ज़कात अदा करे, बल्कि हर एक की ज़कात अ़लाहदा अ़लाहदा वाजिब है। हां, ज़कात देने वाला अगर सिर्फ़ एक चीज़ से दोनों निसाबों की ज़कात अदा करे तो उसे इख़्तियार है, मगर इस सूरत में येह वाजिब होगा कि क़ीमत वोह लगाए जिस में फ़क़ीरों का ज़ियादा नफ़्अ़ है मसलन हिन्दुस्तान में रुपये का चलन ब निस्बत अशरफ़ियों के ज़ियादा है तो सोने की क़ीमत चांदी से लगा कर चांदी ज़कात में दे और अगर दोनों में से कोई ब क़दरे निसाब नहीं तो सोने की क़ीमत की चांदी या चांदी की क़ीमत का सोना फ़र्ज़ कर के मिलाएं फिर अगर मिलाने पर भी निसाब नहीं होती तो कुछ नहीं और अगर सोने की क़ीमत की चांदी चांदी में मिलाएं तो निसाब हो जाती है और चांदी की क़ीमत का सोना सोने में मिलाएं तो नहीं होती या बिल अ़क्स तो वाजिब है कि जिस में निसाब पूरी हो वोह करें और अगर दोनों सूरत में निसाब हो जाती है तो इख़्तियार है जो चाहें करें मगर जब कि एक सूरत में निसाब

1 ..... "الدرالمختار"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ المال، ج۳، ص۲۷۲.
2 ..... "الدرالمختار"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ المال، ج۳، ص۲۷۳ ـ ۲۷۵.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ المال، ج۳، ص۲۷۵ ـ ۲۷۷.

www.dawateislami.net

पर पांचवां हिस्सा बढ़ जाता है तो जिस में पांचवां हिस्सा बढ़ जाए वोही करना वाजिब है, मसलन सवा छब्बीस[26] तोले चांदी है और पौने चार तोले सोना, अगर पौने चार तोले सोने की चांदी सवा छब्बीस तोले आती है और सवा छब्बीस तोले चांदी का पौने चार तोले सोना आता है तो सोने को चांदी या चांदी को सोना जो चाहें तसव्वुर करें और अगर पौने चार तोले सोने के बदले 37 तोले चांदी आती है और सवा छब्बीस तोले चांदी का पौने चार तोले सोना नहीं मिलता तो वाजिब है कि सोने को चांदी क़रार दें कि इस सूरत में निसाब हो जाती है, बल्कि पांचवां हिस्सा ज़ियादा होता है और इस सूरत में निसाब भी पूरी नहीं होती। यूंही अगर हर एक निसाब से कुछ ज़ियादा है तो अगर ज़ियादती निसाब का पांचवां है तो उस की भी ज़कात दें और अगर हर एक में ज़ियादती पांचवां हिस्सा निसाब से कम है तो दोनों मिलाएं, अगर मिल कर भी किसी की निसाब का पांचवां हिस्सा नहीं होता तो इस ज़ियादती पर कुछ नहीं और अगर दोनों में निसाब या निसाब का पांचवां हिस्सा हो तो इख़्तियार है, मगर जब कि एक में निसाब हो और दूसरे में पांचवां हिस्सा तो वोह करें जिस में निसाब हो और अगर एक में निसाब या पांचवां हिस्सा होता है और दूसरे में नहीं तो वोही करना वाजिब है, जिस से निसाब हो या निसाब का पांचवां हिस्सा।[1] (درمختار، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 9 पैसे जब राइज हों और दो सौ[200] दिरम चांदी[2] या बीस मिस्क़ाल सोने[3] की क़ीमत के हों तो इन की ज़कात वाजिब है[4], अगर्चे तिजारत के लिये न हों और अगर चलन उठ गया हो तो जब तक तिजारत के लिये न हों ज़कात वाजिब नहीं। (فتاوی قاری الہدایہ) नोट की ज़कात भी वाजिब है, जब तक इन का रवाज और चलन हो कि येह भी समने इस्तिलाह़ी[5] हैं और पैसों के हुक्म में हैं।

मस्अला 10 जो माल किसी पर दैन[6] हो, उस की ज़कात कब वाजिब होती है और अदा कब ? इस में तीन सूरतें हैं : अगर दैने क़वी हो, जैसे क़र्ज़ जिसे उ़र्फ़ में दस्त गर्दां कहते हैं और माले तिजारत का समन मसलन कोई माल उस ने ब निय्यते तिजारत ख़रीदा, उसे किसी के हाथ उधार बेच डाला या माले तिजारत का किराया मसलन कोई मकान या ज़मीन ब निय्यते तिजारत ख़रीदी, उसे किसी को सुकूनत या ज़राअ़त के लिये किराए पर दे दिया, येह किराया अगर उस पर दैन है तो दैने क़वी होगा और दैने क़वी की ज़कात ब ह़ालते दैन ही साल ब साल वाजिब होती रहेगी, मगर वाजिबुल अदा उस वक़्त है जब पांचवां हिस्सा निसाब का

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الزکاۃ، باب زکاۃ المال، ج۳، ص۲۷۸، وغیرھما.

2 ...यानी साढ़े बावन तोले। 3 ...यानी साढ़े सात तोले। 4 ..... "فتاوی قاری الھدایۃ"، ص۲۹.

5 ...यानी वोह समन है जो दर ह़क़ीक़त मताअ़ (सामान) है लेकिन लोगों की इस्तिलाह़ ने इसे समन बना दिया।

6 ...यहां दैन से मुराद मुत्लक़न क़र्ज़ ही नहीं, बल्कि हर वोह माल है जो किसी भी सबब से किसी शख़्स के ज़िम्मे वाजिब हो।

www.dawateislami.net

वुसूल हो जाए, मगर जितना वुसूल हुवा उतने ही की वाजिबुल अदा है यानी चालीस दिरम वुसूल होने से एक दिरम देना वाजिब होगा और अस्सी[80] वुसूल हुए तो दो, وَ عَلٰی هٰذَا الْقِیاس । दूसरे दैने मुतवस्सित़ कि किसी माले ग़ैरे तिजारती का बदल हो मसलन घर का ग़ल्ला या सुवारी का घोड़ा या ख़िदमत का ग़ुलाम या और कोई शै ह़ाजते अस्लिय्या की बेच डाली और दाम ख़रीदार पर बाक़ी हैं इस सूरत में ज़कात देना उस वक़्त लाज़िम आएगा कि दो सौ दिरम पर क़ब्ज़ा हो जाए। यूंही अगर मूरिस का दैन उसे तर्के में मिला अगर्चे माले तिजारत का इ़वज़ हो, मगर वारिस को दो सौ दिरम वुसूल होने और मूरिस की मौत को साल गुज़रने पर ज़कात देना लाज़िम आएगा। तीसरे दैने ज़ईफ़ जो ग़ैर माल का बदल हो जैसे महर, बदले ख़ुलअ़, दियत, बदले किताबत या मकान या दुकान कि ब निय्यते तिजारत ख़रीदी न थी उस का किराया किराएदार पर चढ़ा, इस में ज़कात देना उस वक़्त वाजिब है कि निसाब पर क़ब्ज़ा करने के बाद साल गुज़र जाए या उस के पास कोई निसाब उस जिन्स की है और उस का साल तमाम हो जाए तो ज़कात वाजिब है।

फिर अगर दैने क़वी या मुतवस्सित़ कई साल के बाद वुसूल हो तो अगले साल की ज़कात जो इस के ज़िम्मे दैन होती रही वोह पिछले साल के ह़िसाब में उसी रक़म पर डाली जाएगी, मसलन अ़म्र पर ज़ैद के तीन सौ दिरम दैने क़वी थे, पांच बरस बाद चालीस दिरम से कम वुसूल हुए तो कुछ नहीं और चालीस वुसूल हुए तो एक दिरम देना वाजिब हुवा, अब उन्तालीस बाक़ी रहे कि निसाब के पांचवें ह़िस्से से कम है, लिहाज़ा बाक़ी बरसों की अभी वाजिब नहीं और अगर तीन सौ दिरम दैने मुतवस्सित़ थे तो जब तक दो सौ दिरम वुसूल न हों कुछ नहीं और पांच बरस बाद दो सौ वुसूल हुए तो इक्कीस[21] वाजिब होंगे, साले अव्वल के पांच अब साले दुवुम में एक सौ पिचानवे रहे इन में से पैंतीस कि ख़ुम्स से कम हैं मुआ़फ़ हो गए, एक सौ साठ रहे उस के चार दिरम वाजिब लिहाज़ा साले सिवुम में एक सौ इकानवे रहे, इन में भी चार दिरम वाजिब, चहारुम में एक सौ सतासी रहे, पन्जुम में एक सौ तिरासी रहे इन में भी चार चार दिरम वाजिब, लिहाज़ा कुल इक्कीस दिरम वाजिबुल अदा हुए।[1]

(दुर्रे मुख़्तार, रद्दुल मुह़्तार वग़ैरहुमा)

मस्अला 11 अगर दैन से पहले साले निसाब रवां था तो जो दैन अस्नाए साल में किसी पर लाज़िम आया, उस का साल भी वोही क़रार दिया जाएगा जो पहले से चल रहा है, वक़्ते दैन से नहीं और अगर दैन से पहले उस जिन्स की निसाब का साल रवां न हो तो वक़्ते दैन से शुमार होगा।[2] (रद्दुल मुह़्तार)

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، مطلب في وجوب الزكاة في دين المرصد، ج٣، ص٢٨١ ـ ٢٨٣، وغيرهما.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، مطلب في وجوب الزكاة في دين المرصد، ج٣، ص٢٨٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 12 किसी पर दैने क़वी या मुतवस्सित़ है और क़र्ज़ ख़्वाह का इन्तिक़ाल हो गया तो मरते वक़्त उस दैन की ज़कात की वसिय्यत ज़रूरी नहीं कि उस की ज़कात वाजिबुल अदा थी ही नहीं और वारिस पर ज़कात उस वक़्त होगी जब मूरिस की मौत को एक साल गुज़र जाए और चालीस दिरम दैने क़वी में और दो सौ दिरम दैने मुतवस्सित़ में वुसूल हो जाएं।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 13 साले तमाम के बाद दाइन ने दैन मुआ़फ़ कर दिया या साले तमाम से पहले माले ज़कात हिबा कर दिया तो ज़कात साक़ित़ हो गई।[2] (درمختار)

मस्अला 14 औ़रत ने महर का रुपिया वुसूल कर लिया, साल गुज़रने के बाद शौहर ने क़ब्ले दुख़ूल त़लाक़ दे दी तो निस्फ़ महर वापस करना होगा और ज़कात पूरे की वाजिब है और शौहर पर वापसी के बाद से साल का एतिबार है।[3] (درمختار)

मस्अला 15 एक शख़्स ने येह इक़रार किया कि फ़ुलां का मुझ पर दैन है और उसे दे भी दिया फिर साल भर बाद दोनों ने कहा : दैन न था तो किसी पर ज़कात वाजिब न हुई।[4] (عالمگیری) मगर ज़ाहिर येह है कि येह उस सूरत में है जब कि उस के ख़याल में दैन हो, वरना अगर महज़ ज़कात साक़ित़ करने के लिये येह ह़ीला किया तो इन्दल्लाह मुआख़ज़ा का मुस्तह़िक़ है।

मस्अला 16 माले तिजारत में साल गुज़रने पर जो क़ीमत होगी उस का एतिबार है, मगर शर्त़ येह है कि शुरूए साल में उस की क़ीमत दो सौ दिरम से कम न हो और अगर मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अस्बाब हों तो सब की क़ीमतों का मज्मूआ़ साढ़े बावन तोले चांदी या साढ़े सात तोले सोने की क़दर हो।[5] (عالمگیری) यानी जब कि उस के पास येही माल हो और अगर उस के पास सोना चांदी इस के इलावा हो तो उसे मिला लेंगे।

मस्अला 17 ग़ल्ला या कोई माले तिजारत साले तमाम पर दो सौ दिरम का है फिर निर्ख़ बढ़ घट गया तो अगर उसी में से ज़कात देना चाहें तो जितना उस दिन था उस का चालीसवां हिस्सा दे दें और अगर उस क़ीमत की कोई और चीज़ देना चाहें तो वोह क़ीमत ली जाए जो साले तमाम के दिन थी और अगर वोह चीज़ साले तमाम के दिन तर थी अब ख़ुश्क हो गई, जब भी वोही क़ीमत लगाएं जो उस दिन थी और अगर उस रोज़ ख़ुश्क थी, अब भीग गई तो आज की क़ीमत लगाएं।[6] (عالمگیری)

मस्अला 18 क़ीमत उस जगह की होनी चाहिये जहां माल है और अगर माल जंगल में

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، مطلب في وجوب الزكاة في دين المرصد، ج٣، ص٢٨٣.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب زكاة المال، ج٣، ص٢٨٣ ـ ٢٨٥. 3 ..... المرجع السابق، ص٢٨٥.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، في مسائل شتى، ج١، ص١٨٢.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثالث في زكاة الذهب والفضة والعروض، الفصل الثاني، ج١، ص١٧٩.
6 ..... المرجع السابق، ص١٧٩ـ١٨٠.

www.dawateislami.net

हो तो उस के क़रीब जो आबादी है वहां जो क़ीमत हो उस का एतिबार है।[1] (عالمگیری) ज़ाहिर येह है कि येह उस माल में है जिस की जंगल में ख़रीदारी न होती हो और अगर जंगल में ख़रीदा जाता हो, जैसे लकड़ी और वोह चीज़ें जो वहां पैदा होती हैं तो जब तक माल वहां पड़ा है, वहीं की क़ीमत लगाई जाए।

मस्अला 19 किराए पर उठाने के लिये देगें हों, उन की ज़कात नहीं। यूंही किराए के मकान की।[2] (عالمگیری)

मस्अला 20 घोड़े की तिजारत करता है, झूल[3] और लगाम और रस्सियां वग़ैरा इस लिये ख़रीदीं कि घोड़ों की हिफ़ाज़त में काम आएंगी तो इन की ज़कात नहीं और अगर इस लिये ख़रीदीं कि घोड़े इन के समेत बेचे जाएंगे तो इन की भी ज़कात दे। नानबाई ने रोटी पकाने के लिये लकड़ियां ख़रीदीं या रोटी में डालने को नमक ख़रीदा तो इन की ज़कात नहीं और रोटी पर छिड़क्ने को तिल ख़रीदे तो तिलों की ज़कात वाजिब है।[4] (عالمگیری)

मस्अला 21 एक शख़्स ने अपना मकान तीन साल के लिये तीन सौ दिरम साल के किराए पर दिया और उस के पास कुछ नहीं है और जो किराए में आता है, सब को महफ़ूज़ रखता है तो आठ महीने गुज़रने पर निसाब का मालिक हो गया कि आठ माह में दो सौ दिरम किराए के हुए, लिहाज़ा आज से साले ज़कात शुरूअ़ होगा और साल पूरा होने पर पानसौ[500] दिरम की ज़कात दे कि बीस माह का किराया पानसौ हुवा, अब इस के बाद एक साल और गुज़रा तो आठ सौ[800] की ज़कात दे, मगर साले अव्वल की ज़कात के साढ़े बारह दिरम कम किये जाएं।[5] (عالمگیری) बल्कि आठ सौ में चालीस कम की ज़कात वाजिब होगी कि चालीस से कम की ज़कात नहीं बल्कि अ़फ़्व है।

मस्अला 22 एक शख़्स के पास सिर्फ़ एक हज़ार दिरम हैं और कुछ माल नहीं, उस ने सौ दिरम सालाना किराए पर दस[10] साल के लिये मकान लिया और वोह कुल रुपये मालिके मकान को दे दिये तो पहले साल में नव सौ की ज़कात दे कि सो किराए में गए, दूसरे साल आठ सौ की बल्कि पहले साल की ज़कात के साढ़े बाईस दिरम आठ सौ में से कम कर के बाक़ी की ज़कात दे। इसी त़रह़ हर साल में सौ रुपये और साले गुज़श्ता की ज़कात के रुपये कम कर के बाक़ी की ज़कात उस के ज़िम्मे है और मालिके मकान के पास भी अगर उस किराए के हज़ार के सिवा कुछ न हो तो दो साल तक कुछ नहीं। दो साल गुज़रने पर अब दो सौ का मालिक हुवा, तीन बरस पर तीन सौ की ज़कात दे। यूंही हर साल सौ दिरम की ज़कात

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثالث في زكاة الذهب والفضة والعروض، الفصل الثاني، ج١، ص١٨٠.
2 ..... المرجع السابق.
3 ...यानी घोड़े के ऊपर डालने का कपड़ा।
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثالث في زكاة الذهب والفضة والعروض، الفصل الثاني، ج١، ص١٨٠.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، في مسائل شتى، ج١، ص١٨١.

www.dawateislami.net

बढ़ती जाएगी, मगर अगली बरसों की मिक़्दार ज़कात कम करने के बाद बाक़ी की ज़कात वाजिब होगी। सूरते मज़्कूरा में अगर उस क़ीमत की कनीज़ किराए में दी तो किराएदार पर कुछ वाजिब नहीं और मालिके मकान पर उसी त़रह़ वुजूब है, जो दिरम की सूरत में है।[1] (عالمگیری)

मस्अला 23 तिजारत के लिये गुलाम क़ीमती दो सौ दिरम का दो सौ में ख़रीदा और समन बाएअ़ को दे दिया, मगर गुलाम पर क़ब्ज़ा न किया यहां तक कि एक साल गुज़र गया, अब वोह बाएअ़ के यहां मर गया तो बाएअ़ व मुश्तरी दोनों पर दो दो सौ की ज़कात वाजिब है और अगर गुलाम दो सो दिरम से कम क़ीमत का था और मुश्तरी ने दो सौ पर लिया तो बाएअ़ दो सौ की ज़कात दे और मुश्तरी पर कुछ नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 24 ख़िदमत का गुलाम हज़ार रुपये में बेचा और समन पर क़ब्ज़ा कर लिया, साल भर बाद वोह गुलाम ऐबदार निकला इस बिना पर वापस हुवा, क़ाज़ी ने वापसी का हुक्म दिया हो या उस ने ख़ुद अपनी ख़ुशी से वापस ले लिया हो तो हज़ार की ज़कात दे।[3] (عالمگیری)

मस्अला 25 रुपये के इ़वज़ खाना, ग़ल्ला, कपड़ा वग़ैरा फ़क़ीर को दे कर मालिक कर दिया तो ज़कात अदा हो जाएगी, मगर उस चीज़ की क़ीमत जो बाज़ार भाव से होगी वोह ज़कात में समझी जाए, बालाई मसारिफ़ मसलन बाज़ार से लाने में जो मज़दूर को दिया है या गाउं से मंगवाया तो किराया और चुंगी वग़ैरा न करेंगे या पकवा कर दिया तो पकवाई या लकड़ियों की क़ीमत मुजरा न करें, बल्कि उस पकी हुई चीज़ की जो क़ीमत बाज़ार में हो, उस का एतिबार है।[4] (درمختار، عالمگیری)

आ़शिर का बयान

मस्अला 1 आ़शिर उस को कहते हैं जिसे बादशाहे इस्लाम ने रास्ते पर मुक़र्रर कर दिया हो कि तुज्जार[5] जो अम्वाल ले कर गुज़रें, उन से सदक़ात वुसूल करे। आ़शिर के लिये शर्त़ येह है कि मुसलमान हुर[6] ग़ैरे हाशिमी हो, चोर और डाकूओं से माल की ह़िफ़ाज़त पर क़ादिर हो।[7] (ر)

मस्अला 2 जो राहगीर येह कहे कि मेरे इस माल पर नीज़ घर में जो मौजूद है किसी पर साल नहीं गुज़रा या कहता है कि मैं ने इस में तिजारत की निय्यत नहीं की या कहे येह मेरा माल नहीं बल्कि मेरे पास अमानत या बत़ौरे मुज़ारबत है, बशर्ते कि उस में इतना नफ़्अ़ न हो कि उस का ह़िस्सा निसाब को पहुंच जाए या अपने को मज़दूर या मुकातब या माज़ून बताए

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، في مسائل شتى، ج١، ص١٨١ - ١٨٢.
2 ..... المرجع السابق، ص١٨٢. 3 ..... المرجع السابق.
4 ..... المرجع السابق، ص١٨٠، "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣، ص٢٠٤.
7 ..... "البحر الرائق"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٢، ص٤٠٢.

5...यानी तिजारत करने वाले।
6...यानी जो गुलाम न हो।

www.dawateislami.net

या इतना ही कहे कि इस माल पर ज़कात नहीं, अगर्चे वज्ह न बताए या कहे : मुझ पर दैन है जो माल के बराबर है या इतना है कि उसे निकालें तो निसाब बाक़ी न रहे या कहे : दूसरे आ़शिर को दे दिया है और जिस को देना बताता है वाक़ेअ़ में वोह आ़शिर है और इस आ़शिर को भी उस का आ़शिर होना मालूम हो या कहे : शहर में फ़क़ीरों को ज़कात दे दी और अपने बयान पर ह़ल्फ़ करे तो उस का क़ौल मान लिया जाएगा, इस की कुछ ज़रूरत नहीं कि उस से रसीद त़लब करें कि रसीद कभी जाली होती है और कभी ग़लती से रसीद नहीं ली जाती और कभी गुम हो जाती है और अगर रसीद पेश की और उस में उस आ़शिर का नाम नहीं जिसे उस ने बताया, जब भी ह़ल्फ़ ले कर उस का क़ौल मान लेंगे और अगर चन्द साल गुज़रने पर मालूम हुवा कि उस ने झूट कहा था तो अब उस से ज़कात ली जाएगी।[1] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 3 अगर उस माल पर साल नहीं गुज़रा मगर उस के मकान पर जो माल है उस पर साल गुज़र गया है और उस माल को उस माल के साथ मिला सकते हों तो उस का क़ौल नहीं माना जाएगा। यूंही अगर ऐसे आ़शिर को देना बताए जो उसे मालूम नहीं या कहे : किसी बद मज़्हब को ज़कात दे दी या कहे : शहर में फ़क़ीर को नहीं दी बल्कि शहर से बाहर जा कर दी तो इन सब सूरतों में उस का क़ौल न माना जाए।[2] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 4 साइमा और अम्वाले बात़िना में उस का क़ौल नहीं माना जाएगा और जिन उमूर में मुसलमान का क़ौल माना जाता है, ज़िम्मी काफ़िर का भी मान लिया जाएगा, मगर इस सूरत में कि शहर में फ़क़ीर को देना बताए तो उस का क़ौल मोतबर नहीं।[3] (درمختار)

मस्अला 5 ह़र्बी काफ़िर का क़ौल बिल्कुल मोतबर नहीं, अगर्चे जो कुछ कहता है उस पर गवाह पेश करे और अगर कनीज़ को उम्मे वलद बताए या गुलाम को अपना लड़का कहे और उस की उ़म्र इस क़ाबिल हो कि येह उस का लड़का हो सकता है या कहे : मैं ने दूसरे को दे दिया है और जिसे बताता है वोह वहां मौजूद है तो इन उमूर में ह़र्बी का भी क़ौल मान लिया जाए।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 6 जो शख़्स दो सो दिरम से कम का माल ले कर गुज़रा तो आ़शिर उस से कुछ न लेगा, ख़्वाह वोह मुसलमान हो या ज़िम्मी या ह़र्बी, ख़्वाह उस के घर में और माल होना मालूम हो या नहीं।[5] (عالمگیری)

---

1 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الزکاة، الباب الرابع فیمن یمر علی العاشر، ج۱، ص۱۸۳.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الزکاة، باب العاشر، مطلب: لاتسقط الزکاة... إلخ، ج۳، ص۲۸۹ ـ ۲۹۱.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الزکاة، باب العاشر، مطلب: لاتسقط الزکاة... إلخ، ج۳، ص۲۹۰.

3 ..... "الدرالمختار"، کتاب الزکاة، باب العاشر، ج۳، ص۲۹۱.

4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الزکاة، باب العاشر، ج۳، ص۲۹۳.

5 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الزکاة، الباب الرابع فیمن یمر علی العاشر، ج۱، ص۱۸۳.

www.dawateislami.net

मस्अला 7 मुसलमान से चालीसवां हिस्सा लिया जाए और ज़िम्मी से बीसवां और ह़र्बी से दसवां हिस्सा।[1] (تنویر) ह़र्बी से दसवां हिस्सा लेना उस वक़्त है जब मालूम न हो कि ह़र्बियों ने मुसलमानों से कितना लिया था और अगर मालूम हो तो जितना उन्हों ने लिया मुसलमान भी ह़र्बियों से उतना ही लें, मगर ह़र्बियों ने अगर मुसलमानों का कुल माल ले लिया हो तो मुसलमान कुल न लें, बल्कि इतना छोड़ दें कि अपने ठिकाने पहुंच जाए और अगर ह़र्बियों ने मुसलमानों से कुछ न लिया तो मुसलमान भी कुछ न लें।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 8 ह़र्बी बच्चे और मुकातब से कुछ न लेंगे, मगर जब मुसलमानों के बच्चों और मुकातब से ह़र्बियों ने लिया हो तो मुसलमान भी उन से लें।[3] (درمختار)

मस्अला 9 एक बार जब ह़र्बी से ले लिया तो दोबारा उस साल में न लें, मगर जब लेने के बाद दारुल ह़र्ब को वापस गया और अब फिर दारुल ह़र्ब से आया तो दोबारा लेंगे।[4]

(تنویرالابصار)

मस्अला 10 ह़र्बी दारुल इस्लाम में आया और वापस गया मगर आ़शिर को ख़बर न हुई फिर दोबारा दारुल ह़र्ब से आया तो पहली मरतबा का न लें और अगर मुसलमान या ज़िम्मी के आने और जाने की ख़बर न हुई और अब दोबारा आया तो पहली बार का लेंगे।[5]

(درمختار)

मस्अला 11 माज़ून[6] के साथ अगर उस का मालिक भी है और उस पर इतना दैन नहीं, जो ज़ात व माल को मुस्तग़रक़[7] हो तो आ़शिर उस से लेगा।[8] (درمختار)

मस्अला 12 आ़शिर के पास ऐसी चीज़ ले कर गुज़रा जो जल्द ख़राब होने वाली है, जैसे मेवा, तरकारी, ख़रबूज़ा, तरबूज़, दूध वग़ैरहा। अगर्चे इन की क़ीमत निसाब की क़दर हो मगर उ़श्र न लिया जाए। हां, अगर वहां फ़ुक़रा मौजूद हों तो ले कर फ़ुक़रा को बांट दे।[9]

(عالمگیری،درمختار)

1 ..... "تنوير الأبصار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣ ص٢٩٤.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣، ص٢٩٥.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣، ص٢٩٥.
4 ..... "تنوير الأبصار"، كتاب الزكاة، باب العاشرج٣ ص٢٩٥.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣، ص٢٩٦.
6...यानी वोह गुलाम जिसे उस के मालिक ने तिजारत की इजाज़त दे दी हो। 7...यानी घेरे हुए।
8 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العاشر، ج٣، ص٢٩٩. 9 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 13 आ़शिर ने माल ज़ियादा ख़याल कर के ज़कात ली फिर मालूम हुवा कि इतने का माल न था तो जितना ज़ियादा लिया है साले आइन्दा में महसूब होगा और अगर क़स्दन ज़ियादा लिया तो येह ज़कात में महसूब न होगा कि ज़ुल्म है।[1] (خانیہ)

कान और दफ़ीने का बयान

सहीह़ बुख़ारी व सहीह़ मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "रकाज़ (कान) में ख़ुम्स है।"[2]

मस्अला 1 कान से लोहा, सीसा, तांबा, पीतल, सोना चांदी निकले, उस में ख़ुम्स (पांचवां हिस्सा) लिया जाएगा और बाक़ी पाने वाले का है। ख़्वाह वोह पाने वाला आज़ाद हो या ग़ुलाम, मुसलमान हो या ज़िम्मी, मर्द हो या औ़रत, बालिग़ हो या ना बालिग़, वोह ज़मीन जिस से येह चीज़ें निकलीं उ़श्री हो या ख़िराजी।[3] (عالمگیری) येह उस सूरत में है कि ज़मीन किसी शख़्स की मम्लूक न हो, मसलन जंगल हो या पहाड़ और अगर मम्लूक है तो कुल मालिके ज़मीन को दिया जाए ख़ुम्स भी न लिया जाए।[4] (درمختار)

मस्अला 2 फ़ीरोज़ा व याक़ूत व ज़ुमुर्रुद व दीगर जवाहिर और सुरमा, फिट्करी, चूना, मोती में और नमक वग़ैरा बहने वाली चीज़ों में ख़ुम्स नहीं।[5] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 3 मकान या दुकान में कान निकली तो ख़ुम्स न लिया जाए, बल्कि कुल मालिक को दिया जाए।[6] (درمختار)

मस्अला 4 फ़ीरोज़ा, याक़ूत, ज़ुमुर्रुद वग़ैरा जवाहिर सल्तनते इस्लाम से पेश्तर के दफ़्न थे और अब निकले तो ख़ुम्स लिया जाएगा येह माले ग़नीमत है।[7] (درمختار)

मस्अला 5 मोती और इस के इ़लावा जो कुछ दरिया से निकले, अगर्चे सोना कि पानी की तह में था, सब पाने वाले का है बशर्ते कि उस में कोई इस्लामी निशानी न हो।[8]

(درمختار)

1 ..... "الفتاوى الخانية"، كتاب الزكاة، فصل في اداء الزكاة، ص١٢٦.
2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحدود، باب جرح العجماء والمعدن... إلخ، الحديث: ١٧١٠، ص٩٤٠.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الخامس في المعادن و الركاز، ج١، ص١٨٤.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص٣٠٥.
5 ..... المرجع السابق، ص٣٠١. 6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص٣٠٥.
7 ..... المرجع السابق، ص٣٠٦. 8 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 6 जिस दफ़ीने[1] में इस्लामी निशानी पाई जाए ख़्वाह नक़्द हो या हथियार या ख़ानादारी के सामान वग़ैरा, वोह पड़े माल के हुक्म में है यानी मस्जिदों, बाज़ारों में उस का एलान इतने दिनों तक करे कि ज़न ग़ालिब हो जाए अब इस का तलाश करने वाला न मिलेगा फिर मसाकीन को दे दे और ख़ुद फ़क़ीर हो तो अपने सर्फ़ में लाए और अगर उस में कुफ़्र की अ़लामत हो, मसलन बुत की तस्वीर हो या काफ़िर बादशाह का नाम उस पर लिखा हो, उस में से ख़ुम्स लिया जाए, बाक़ी पाने वाले को दिया जाए, ख़्वाह अपनी ज़मीन में पाए या दूसरे की ज़मीन में या मुबाह़ ज़मीन में।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 7 ह़र्बी काफ़िर ने दफ़ीना निकाला तो उसे कुछ न दिया जाए और जो उस ने ले लिया है वापस लिया जाए। हां, अगर बादशाहे इस्लाम के हुक्म से खोद कर निकाला तो जो ठहरा है वोह देंगे।[3] (عالمگیری)

मस्अला 8 दफ़ीना निकालने में दो शख़्सों ने काम किया ख़ुम्स के बाद बाक़ी उसे देंगे जिस ने पाया, अगर्चे दोनों ने शिर्कत के साथ काम किया है कि येह शिर्कते फ़ासिदा है और अगर शिर्कत की सूरत में दोनों ने पाया और येह नहीं मालूम कि कितना किस ने पाया तो निस्फ़ निस्फ़ के शरीक हैं और इस सूरत में अगर एक ने पाया और दूसरे ने मदद की तो वोह पाने वाले का है और मददगार को काम की मज़दूरी दी जाएगी और अगर दफ़ीना निकालने पर मज़दूर रखा तो जो बरआमद होगा मज़दूर को मिलेगा, मुस्ताजिर को कुछ नहीं कि येह इजारए फ़ासिद[4] है।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 9 दफ़ीने में न इस्लामी अ़लामत है, न कुफ़्र की तो ज़मानए कुफ़्र का क़रार दिया जाए।[6] (عالمگیری)

मस्अला 10 सह़राए दारुल ह़र्ब में से जो कुछ निकला मादिनी हो या दफ़ीना उस में ख़ुम्स नहीं, बल्कि कुल पाने वाले को मिलेगा और अगर बहुत से लोग बतौ़रे ग़लबा के निकाल लाए तो उस में ख़ुम्स लिया जाएगा कि येह ग़नीमत है।[7] (درمختار)

मस्अला 11 मुसलमान दारुल ह़र्ब में अम्न ले कर गया और वहां किसी की मम्लूक ज़मीन से ख़ज़ाना या कान निकाली तो मालिके ज़मीन को वापस दे और अगर वापस न किया बल्कि दारुल इस्लाम में ले आया तो येही मालिक है मगर मिल्के ख़बीस है, लिहाज़ा तसद्दुक़

---

1 ...यानी दफ़्न किया हुवा माल।

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص٣٠٧.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الخامس في المعادن والركاز، ج١، ص١٨٤.

4 .....

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص٣٠٨.

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الخامس في المعادن والركاز، ج١، ص١٨٥.

7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص٣٠٩.

www.dawateislami.net

करे और बेच डाला तो बैअ़ सहीह़ है, मगर ख़रीदार के लिये भी ख़बीस है और अगर अमान ले कर नहीं गया था तो येह माल उस के लिये ह़लाल है, न वापस करे न उस में ख़ुम्स लिया जाए।[1] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 12 ख़ुम्स मसाकीन का ह़क़ है कि बादशाहे इस्लाम उन पर सर्फ़ करे और अगर उस ने बत़ौरे ख़ुद मसाकीन को दे दिया जब भी जाइज़ है, बादशाहे इस्लाम को ख़बर पहुंचे तो उसे बर क़रार रखे और उस के तसर्रुफ़ को नाफ़िज़ कर दे और अगर येह ख़ुद मिस्कीन है तो ब क़दरे ह़ाजत अपने सर्फ़ में ला सकता है और अगर ख़ुम्स निकालने के बाद बाक़ी दो सौ दिरम की क़दर है तो ख़ुम्स अपने सर्फ़ में नहीं ला सकता कि अब येह फ़क़ीर नहीं। हां, अगर मद्यून हो कि दैन निकालने के बाद दो सौ दिरम की क़दर बाक़ी नहीं रहता तो ख़ुम्स अपने सर्फ़ में ला सकता है और अगर मां बाप या औलाद जो मसाकीन हैं, उन को ख़ुम्स दे दे तो येह भी जाइज़ है।[2] (درمختار، ردالمحتار)

ज़राअ़त और फलों की ज़कात

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ یَوْمَ حَصَادِهٖ ﴾[3]

खेती कटने के दिन उस का ह़क़ अदा करो।

ह़दीस 1 सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ज़मीन को आस्मान या चश्मों ने सेराब किया या उ़श्री हो यानी नह्र के पानी से उसे सेराब करते हों, उस में उ़श्र है और जिस ज़मीन के सेराब करने के लिये जानवर पर पानी लाद कर लाते हों, उस में निस्फ़ उ़श्र[4] यानी बीसवां ह़िस्सा।"

ह़दीस 2 इब्ने नज्जार अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं कि "हर उस शै में जिसे ज़मीन ने निकाला, उ़श्र या निस्फ़ उ़श्र है।"[5]

मसाइले फ़िक़्हिय्या

ज़मीन तीन क़िस्म है :

(1) उ़श्री। (2) ख़िराजी। (3) न उ़श्री, न ख़िराजी।

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص٣٠٩.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب الركاز، ج٣، ص٣١١. 3 ..... پ٨، الانعام: ١٤١.
4 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب في العشر فيما من ماء السماء... الخ، الحديث: ١٤٨٣، ج١، ص٥٠١.
5 ..... "كنزالعمال"، كتاب الزكاة، زكاة النبات والفواكه، الحديث: ١٥٨٧٣، ج٦، ص١٤٠.

www.dawateislami.net

अव्वल व सिवुम दोनों का हुक्म एक है यानी उ़श्र देना।

हिन्दुस्तान में मुसलमानों की ज़मीनें ख़िराजी न समझी जाएंगी, जब तक किसी ख़ास ज़मीन की निस्बत ख़िराजी होना दलीले शर्ई से साबित न हो ले। उ़श्री होने की बहुत सी सूरतें हैं मसलन मुसलमानों ने फ़त्ह़ किया और ज़मीन मुजाहिदीन पर तक़्सीम हो गई या वहां के लोग ख़ुद ब ख़ुद मुसलमान हो गए, जंग की नौबत न आई या उ़श्री ज़मीन के क़रीब पड़ती थी, उसे काश्त में लाया या उस पड़ती को खेत बनाया जो उ़श्री व ख़िराजी दोनों से कुर्ब व बोअ़ूद की यक्सां निस्बत रखती है या उस खेत को उ़श्री पानी से सेराब किया या ख़िराजी व उ़श्री दोनों से या मुसलमान ने अपने मकान को बाग़ या खेत बना लिया और उसे उ़श्री पानी से सेराब करता है। या उ़श्री व ख़िराजी दोनों से या उ़श्री ज़मीन काफ़िर ज़िम्मी ने ख़रीदी, मुसलमान ने शुफ़्आ़ में उसे ले लिया या बैअ़ फ़ासिद हो गई या ख़यारे शर्त़ या ख़यारे रूयत की वज्ह से वापस हुई या ख़यारे ऐ़ब[1] की वज्ह से क़ाज़ी के हुक्म से वापस हुई।

और बहुत सूरतों में ख़िराजी है मसलन फ़त्ह़ कर के वहीं वालों को एह़सान के त़ौर पर वापस दी या दूसरे काफ़िरों को दे दी या वोह मुल्क सुल्ह़ के त़ौर पर फ़त्ह़ किया गया या ज़िम्मी ने मुसलमान से उ़श्री ज़मीन ख़रीद ली या ख़िराजी ज़मीन मुसलमान ने ख़रीदी या ज़िम्मी ने बादशाहे इस्लाम के हुक्म से बन्जर को आबाद किया या बन्जर ज़मीन ज़िम्मी को दे दी गई या उसे मुसलमान ने आबाद किया और वोह ख़िराजी ज़मीन के पास थी या उसे ख़िराजी पानी से सेराब किया। ख़िराजी ज़मीन अगर्चे उ़श्री पानी से सेराब की जाए, ख़िराजी ही रहेगी।

और ख़िराजी व उ़श्री दोनों न हों, मसलन मुसलमानों ने फ़त्ह़ कर के अपने लिये क़ियामत तक के लिये बाक़ी रखी या उस ज़मीन के मालिक मर गए और ज़मीन बैतुलमाल की मिल्क हो गई।

मस्अला 1 ख़िराज दो क़िस्म है :

(1) ख़िराजे मुक़ासिमा कि पैदावार का कोई ह़िस्सा आधा या तिहाई या चौथाई वग़ैरहा मुक़र्रर हो, जैसे हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने यहूदे ख़ैबर पर मुक़र्रर फ़रमाया था। और

(2) ख़िराजे मुअज़्ज़फ़ कि एक मिक़्दारे मुअ़य्यन लाज़िम कर दी जाए ख़्वाह रुपिये, मसलन सालाना दो रुपये बीघा या कुछ और जैसे फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने मुक़र्रर फ़रमाया था।

मस्अला 2 अगर मालूम हो कि सल्त़नते इस्लामिया में इतना ख़िराज मुक़र्रर था तो वोही दें, बशर्ते कि ख़िराजे मुअज़्ज़फ़ में जहां जहां फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मिक़्दार मन्क़ूल

1 ...बैए फ़ासिद, ख़यारे शर्त़, ख़यारे रूयत और ख़यारे ऐ़ब की तफ़्सीली मालूमात के लिये बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 11, मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

www.dawateislami.net

है, उस पर ज़ियादत न हो और जहां मन्क़ूल नहीं उस में निस्फ़ पैदावार से ज़ियादा न हो। यूंही ख़िराजे मुक़ासिमा में निस्फ़ से ज़ियादत न हो और येह भी शर्त़ है कि ज़मीन उतने देने की त़ाक़त भी रखती हो।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 3 अगर मालूम न हो कि सल्त़नते इस्लाम में क्या मुक़र्रर था तो जहां जहां फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मुक़र्रर फ़रमा दिया है, वोह दें और जहां मुक़र्रर न फ़रमाया हो निस्फ़ दें।[2] (फ़तावा रज़विय्या)

मस्अला 4 फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने येह मुक़र्रर फ़रमाया था कि हर क़िस्म के ग़ल्ले में फ़ी जरीब एक दिरम और उस ग़ल्ले का एक साअ़ और ख़रबूज़े, तरबूज़ की पालीज़ और खीरे, ककड़ी, बैगन वग़ैरा तरकारियों में फ़ी जरीब पांच दिरम अंगूर व ख़ुरमे के घने बाग़ों में जिन के अन्दर ज़राअ़त न हो सके। दस दिरम फिर ज़मीन की हैसिय्यत और उस शख़्स की क़ुदरत का एतिबार है, इस का एतिबार नहीं कि उस ने क्या बोया यानी जो ज़मीन जिस चीज़ के बोने के लाइक़ है और येह शख़्स उस के बोने पर क़ादिर है तो इस के एतिबार से ख़िराज अदा करे, मसलन अंगूर बो सकता है तो अंगूर का ख़िराज दे, अगर्चे गेहूं बोए और गेहूं के क़ाबिल है तो उस का ख़िराज अदा करे अगर्चे जव बोए। जरीब की मिक़्दार अंग्रेज़ी गज़ से 35 गज़ त़ूल, 35 गज़ अ़र्ज़ है और साअ़ दो सो अठासी[288] रुपिया भर और दस दिरम के $\frac{9}{12}$ $\frac{3}{5}$ पाई पांच दिरम $\frac{4}{6}$ $\frac{4}{5}$ पाई और एक दिरम $\frac{5}{4}$ $\frac{19}{25}$ पाई।[3] (درمختار)

मस्अला 5 जहां इस्लामी सल्त़नत न हो, वहां के लोग बत़ौरे ख़ुद फ़ुक़रा वग़ैरा जो मसारिफ़े ख़िराज हैं, उन पर सर्फ़ करें।

मस्अला 6 उ़श्री ज़मीन से ऐसी चीज़ पैदा हुई जिस की ज़राअ़त से मक़्सूद ज़मीन से मनाफ़ेअ़ ह़ासिल करना है तो उस पैदावार की ज़कात फ़र्ज़ है और इस ज़कात का नाम उ़श्र है यानी दसवां हिस्सा कि अक्सर सूरतों में दसवां हिस्सा फ़र्ज़ है, अगर्चे बाज़ सूरतों में निस्फ़ उ़श्र यानी बीसवां हिस्सा लिया जाएगा।[4] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 7 उ़श्र वाजिब होने के लिये आ़क़िल, बालिग़ होना शर्त़ नहीं। मज्नून और ना बालिग़ की ज़मीन में जो कुछ पैदा हुवा उस में भी उ़श्र वाजिब है।[5] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 8 ख़ुशी से उ़श्र न दे तो बादशाहे इस्लाम जबरन ले सकता है और इस सूरत

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الجهاد، باب العشر و الخراج و الجزية، مطلب في خراج المقاسمة، ج٦، ص٢٩٢ ـ ٢٩٤.
2 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج١٠، ص٢٣٨.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الجهاد، باب العشر و الخراج و الجزية، ج٦، ص٢٩٢.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٥.
5 ..... المرجع السابق، وغيره.

www.dawateislami.net

में भी उ़श्र अदा हो जाएगा, मगर सवाब का मुस्तहि़क़ नहीं और ख़ुशी से अदा करे तो सवाब का मुस्तहि़क़ है।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 9 जिस पर उ़श्र वाजिब हुवा, उस का इन्तिक़ाल हो गया और पैदावार मौजूद है तो उस में से उ़श्र लिया जाएगा।[2] (عالمگیری)

मस्अला 10 उ़श्र में साल गुज़रना भी शर्त़ नहीं, बल्कि साल में चन्द बार एक खेत में ज़राअ़त हुई तो हर बार उ़श्र वाजिब है।[3] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 11 इस में निसाब भी शर्त़ नहीं, एक साअ़ भी पैदावार हो तो उ़श्र वाजिब है और येह शर्त़ भी नहीं कि वोह चीज़ बाक़ी रहने वाली हो और येह शर्त़ भी नहीं कि काश्तकार ज़मीन का मालिक हो यहां तक कि मुकातब व माज़ून ने काश्त की तो उस पैदावार पर भी उ़श्र वाजिब है, बल्कि वक़्फ़ी ज़मीन में ज़राअ़त हुई तो उस पर भी उ़श्र वाजिब है, ख़्वाह ज़राअ़त करने वाले अहले वक़्फ़ हों या उजरत पर काश्त की।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 12 जो चीज़ें ऐसी हों कि उन की पैदावार से ज़मीन के मनाफ़ेअ़ हासिल करना मक़्सूद न हो उन में उ़श्र नहीं : जैसे ईंधन, घास, नरकुल, सेंठा, झाव, खजूर के पत्ते, ख़त़्मी, कपास, बैगन का दरख़्त, ख़रबूज़ा, तरबूज़, खीरा, ककड़ी के बीज। यूंही हर क़िस्म की तरकारियों के बीज कि उन की खेती से तरकारियां मक़्सूद होती हैं, बीज मक़्सूद नहीं होते। यूंही जो बीज दवा हैं मसलन कुन्दुर, मेथी, कलौंजी और अगर नरकल, घास, बैद, झाव वग़ैरा से ज़मीन के मनाफ़ेअ़ हासिल करना मक़्सूद हो और ज़मीन इन के लिये ख़ाली छोड़ दी तो इन में भी उ़श्र वाजिब है।[5] (درمختار، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 13 जो खेत बारिश या नहर नाले के पानी से सेराब किया जाए, उस में उ़श्र यानी दसवां हि़स्सा वाजिब है और जिस की आबपाशी चरसे[6] या डोल से हो, उस में निस्फ़ उ़श्र यानी बीसवां हि़स्सा वाजिब और पानी ख़रीद कर आबपाशी हो यानी वोह पानी किसी की मिल्क है, उस से ख़रीद कर आबपाशी की जब भी निस्फ़ उ़श्र वाजिब है और अगर वोह खेत कुछ दिनों मींह के पानी से सेराब किया जाता है और कुछ दिनों डोल चरसे से तो अगर अक्सर

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٥. وغيره.
2 ..... المرجع السابق. 3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص٣١٣.
4 ..... المرجع السابق. 5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص٣١٥، وغيرهما.
6 ...यानी चमड़े का बड़ा डोल।

www.dawateislami.net

मींह[1] के पानी से काम लिया जाता है और कभी कभी डोल चरसे से तो उ़श्र वाजिब है वरना निस्फ़ उ़श्र ।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 14 उ़श्री ज़मीन या पहाड़ या जंगल में शह्द हुवा, उस पर उ़श्र वाजिब है । यूंही पहाड़ और जंगल के फलों में भी उ़श्र वाजिब है, बशर्ते कि बादशाहे इस्लाम ने ह़र्बियों और डाकूओं और बाग़ियों से उन की ह़िफ़ाज़त की हो, वरना कुछ नहीं ।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 15 गेहूं, जव, जुवार, बाजरा, धान[4] और हर क़िस्म के ग़ल्ले और अलसी, कुसुम, अख़रोट, बादाम और हर क़िस्म के मेवे, रूई, फूल, गन्ना, ख़रबूज़ा, तरबूज़, खीरा, ककड़ी, बैगन और हर क़िस्म की तरकारी सब में उ़श्र वाजिब है,[5] थोड़ा पैदा हो या ज़ियादा ।[6] (عالمگیری)

मस्अला 16 जिस चीज़ में उ़श्र या निस्फ़ उ़श्र वाजिब हुवा उस में कुल पैदावार का उ़श्र या निस्फ़ उ़श्र लिया जाएगा, येह नहीं हो सकता कि मसारिफ़े ज़राअ़त, हल बैल, ह़िफ़ाज़त करने वाले और काम करने वालों की उजरत या बीज वग़ैरा निकाल कर बाक़ी का उ़श्र या निस्फ़ उ़श्र दिया जाए ।[7] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 17 उ़श्र सिर्फ़ मुसलमानों से लिया जाएगा, यहां तक कि उ़श्री ज़मीन मुसलमान से ज़िम्मी ने ख़रीद ली और क़ब्ज़ा भी कर लिया तो अब ज़िम्मी से उ़श्र नहीं लिया जाएगा बल्कि ख़िराज लिया जाएगा और मुसलमान ने ज़िम्मी से ख़िराजी ज़मीन ख़रीदी तो येह ख़िराजी ही रहेगी । उस मुसलमान से उस ज़मीन का उ़श्र न लेंगे बल्कि ख़िराज लिया जाए ।[8] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 18 ज़िम्मी ने मुसलमान से उ़श्री ज़मीन ख़रीदी फिर किसी मुसलमान ने शुफ़्आ़ में वोह ज़मीन ले ली या किसी वज्ह से बैअ़ फ़ासिद हो गई थी और बाएअ़ के पास वापस हुई या बाएअ़ को ख़यारे शर्त़ था या किसी को ख़यारे रूयत था इस वज्ह से वापस हुई या मुश्तरी को ख़यारे ऐ़ब था और ह़ुक्मे क़ाज़ी से वापस हुई, इन सब सूरतों में फिर उ़श्री ही है और अगर ख़यारे ऐ़ब में बग़ैर ह़ुक्मे क़ाज़ी वापस हुई तो अब ख़िराजी ही

---

1 ...बारिश ।

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص٣١٣ ـ ٣١٦.

3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص٣١١ ـ ٣١٣.

4 ...चावल ।

5 ...मसलन दस मन में एक मन, दस सेर में एक सेर या दस फल में एक फल ।

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٦.

7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضى مصر... إلخ، ج٣، ص٣١٧.

8 ..... المرجع السابق، ص٣١٨.

www.dawateislami.net

रहेगी ।[1] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 19 मुसलमान ने अपने घर को बाग़ बना लिया, अगर उस में उ़श्री पानी देता है तो उ़श्री है और ख़िराजी पानी देता है तो ख़िराजी और दोनों क़िस्म के पानी देता है, जब भी उ़श्री और ज़िम्मी ने अपने घर को बाग़ बनाया तो मुत्लक़न ख़िराज लेंगे । आस्मान और कूंएं और चश्मे और दरिया का पानी उ़श्री है और जो नह्र अ़जमिय्यों ने खोदी उस का पानी ख़िराजी है । काफ़िरों ने कूंवां खोदा था और अब मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया या ख़िराजी ज़मीन में खोदा गया वोह भी ख़िराजी है ।[2] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 20 मकान या मक़्बरे में जो पैदावार हो, उस में न उ़श्र है न ख़िराज ।[3] (درمختار)

मस्अला 21 ज़िफ़्त और नफ़्त के चश्मे उ़श्री ज़मीन में हों या ख़िराजी में उन में कुछ नहीं लिया जाएगा, अलबत्ता अगर ख़िराजी ज़मीन में हों और आस पास की ज़मीन क़ाबिले ज़राअ़त हो तो उस ज़मीन का ख़िराज लिया जाएगा, चश्मे का नहीं और उ़श्री ज़मीन में हों तो जब तक आस पास की ज़मीन में ज़राअ़त न हो कुछ नहीं लिया जाएगा, फ़क़त क़ाबिले ज़राअ़त होना काफ़ी नहीं ।[4] (درمختار)

मस्अला 22 जो चीज़ ज़मीन की ताबेअ़ हो, जैसे दरख़्त और जो चीज़ दरख़्त से निकले जैसे गोंद उस में उ़श्र नहीं ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 23 उ़श्र उस वक़्त लिया जाए जब फल निकल आएं और काम के क़ाबिल हो जाएं और फ़साद का अन्देशा जाता रहे, अगर्चे अभी तोड़ने के लाइक़ न हुए हों ।[6]

(جوہرہ نیرہ)

मस्अला 24 ख़िराज अदा करने से पेश्तर उस की आमदनी खाना ह़लाल नहीं । यूंही उ़श्र अदा करने से पेश्तर मालिक को खाना ह़लाल नहीं, खाएगा तो ज़मान देगा । यूंही अगर दूसरे को खिलाया तो इतने का उ़श्र का तावान दे और अगर येह इरादा है कि कुल का उ़श्र अदा कर देगा तो खाना ह़लाल है ।[7] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضى مصر... إلخ، ج٣، ص٣١٨.
2 ..... المرجع السابق، ص٣١٩، و "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٦.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص٣٢٠.
4 ..... المرجع السابق، ص٣٢١.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٦.
6 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب زكاة الزروع و الثمار، ص١٦٢.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٧.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضى مصر... إلخ، ج٣، ص٣٢١.

www.dawateislami.net

मस्अला 25 बादशाहे इस्लाम को इख़्तियार है कि ख़िराज लेने के लिये ग़ल्ले को रोक ले, मालिक को तसर्रुफ़ न करने दे और उस ने कई साल का ख़िराज न दिया हो और आ़जिज़ हो तो अगले बरसों का मुआ़फ़ है और आ़जिज़ न हो तो लेंगे।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 26 ज़राअ़त पर क़ादिर है और बोया नहीं तो ख़िराज वाजिब है और उ़श्र जब तक काश्त न करे और पैदावार न हो वाजिब नहीं।[2] (درمختار)

मस्अला 27 खेत बोया मगर पैदावार मारी गई मसलन खेती डूब गई या जल गई या टेरी खा गई या पाले और लू से जाती रही तो उ़श्र व ख़िराज दोनों साक़ित हैं, जब कि कुल जाती रही और अगर कुछ बाक़ी है तो उस बाक़ी का उ़श्र लेंगे और अगर चौपाए खा गए तो साक़ित नहीं और साक़ित होने के लिये येह भी शर्त है कि उस के बाद उस साल के अन्दर उस में दूसरी ज़राअ़त तय्यार न हो सके और येह भी शर्त है कि तोड़ने या काटने से पहले हलाक हो वरना साक़ित नहीं।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 28 ख़िराजी ज़मीन किसी ने ग़स्ब की और ग़स्ब से इन्कार करता है और मालिक के पास गवाह भी नहीं, तो अगर काश्त करे ख़िराज ग़ासिब पर होगा।[4] (درمختار)

मस्अला 29 बैए़ वफ़ा यानी जिस बैअ़ में येह शर्त हो कि बाएअ़ जब समन मुश्तरी को वापस देगा तो मुश्तरी मबीअ़ फेर देगा तो जब ख़िराजी ज़मीन इस तौ़र पर किसी के हाथ बेचे और बाएअ़ के क़ब्ज़े में ज़मीन है तो ख़िराज बाएअ़ पर और मुश्तरी के क़ब्ज़े में हो और मुश्तरी ने बोया भी तो ख़िराज मुश्तरी पर।[5] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 30 तय्यार होने से पेश्तर ज़राअ़त बेच डाली तो उ़श्र मुश्तरी पर है, अगर्चे मुश्तरी ने येह शर्त लगाई कि पकने तक ज़राअ़त काटी न जाए बल्कि खेत में रहे और बेचने के वक़्त ज़राअ़त तय्यार थी तो उ़श्र बाएअ़ पर है और अगर ज़मीन व ज़राअ़त दोनों या सिर्फ़ ज़मीन बेची और इस सूरत में साल पूरा होने में इतना ज़माना बाक़ी है कि ज़राअ़त हो सके, तो ख़िराज मुश्तरी पर है वरना बाएअ़ पर।[6] (درمختار،ردالمحتار)

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضي مصر... إلخ، ج٣، ص٣٢٢.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص٣٢٣.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضي مصر... إلخ، ج٣، ص٣٢٣.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب العشر، ج٣، ص٣٢٣.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضي مصر... إلخ، ج٣، ص٣٢٤.
6 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 31 उ़श्री ज़मीन आ़रिय्यतन दी तो उ़श्र काश्तकार पर है मालिक पर नहीं और काफ़िर को आ़रिय्यत दी तो मालिक पर उ़श्र है।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 32 उ़श्री ज़मीन बटाई पर दी तो उ़श्र दोनों पर है और ख़िराजी ज़मीन बटाई पर दी तो ख़िराज मालिक पर है।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 33 ज़मीन जो ज़राअ़त के लिये नक़्दी पर दी जाती है, इमाम के नज़्दीक उस का उ़श्र ज़मीनदार पर है और साहिबैन[3] के नज़्दीक काश्तकार पर और अ़ल्लामा शामी ने येह तह़क़ीक़ फ़रमाई कि ह़ालते ज़माना के एतिबार से अब क़ौले साहिबैन पर अ़मल है।[4]

मस्अला 34 गवर्नमेंट को जो माल गुज़ारी दी जाती है, उस से ख़िराजे शरई नहीं अदा होता बल्कि वोह मालिक के ज़िम्मे है उस का अदा करना ज़रूरी और ख़िराज का मसरफ़ सिर्फ़ लश्करे इस्लाम नहीं, बल्कि तमाम मसालेह़े आ़म्मए मुस्लिमीन हैं जिन में तामीरे मस्जिद व ख़र्चे मस्जिद व वज़ीफ़ए इमाम व मुअज़्ज़िन व तनख़्वाहे मुदर्रिसीने इल्मे दीन व ख़बरगीरिये त़लबए इल्मे दीन व ख़िदमते उ़लमाए अहले सुन्नत ह़ामियाने दीन जो वाज़ कहते हैं और इल्मे दीन की तालीम करते और फ़तवे के काम में मश्ग़ूल रहते हों और पुल व सरा बनाने में भी सर्फ़ किया जा सकता है।[5] (फ़तावा रज़विय्या)

मस्अला 35 उ़श्र लेने से पहले ग़ल्ला बेच डाला तो मुसद्दिक़ को इख़्तियार है कि उ़श्र मुश्तरी से ले या बाएअ़ से और अगर जितनी क़ीमत होनी चाहिये उस से ज़ियादा पर बेचा तो मुसद्दिक़ को इख़्तियार है कि ग़ल्ले का उ़श्र ले या समन का उ़श्र और अगर कम क़ीमत पर बेचा और इतनी कमी है कि लोग इतने नुक़्सान पर नहीं बेचते तो ग़ल्ले ही का उ़श्र लेगा और वोह ग़ल्ला न रहा तो उस का उ़श्र क़रार दे कर बाएअ़ से लें या उस की वाजिबी क़ीमत।[6] (عالمگیری)

मस्अला 36 अंगूर बेच डाले तो समन का उ़श्र ले और शीरा कर के बेचा तो उस की क़ीमत का उ़श्र ले।[7] (عالمگیری)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٧.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب: هل يجب العشرعلى المزارعين في الاراضى السلطانية، ج٣،ص٣٢٧ ـ ٣٢٨.

3 ...फ़िक़्हे ह़नफ़ी में इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِما को साहिबैन कहते हैं।

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب العشر، مطلب مهم: في حكم اراضى مصر وشام السلطانية، ج٣، ص٣٢٥.

5 ..... "الفاوى الرضوية" (الجديدة)، كتاب الزكاة، رساله افصح البيان، ج١٠، ص٢٢٣.

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٧.

7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السادس في زكاة الزرع والثمار، ج١، ص١٨٧.

www.dawateislami.net

माले ज़कात किन लोगों पर सर्फ़ किया जाए

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِیْنِ وَالْعٰمِلِیْنَ عَلَیْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِی الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِیْنَ وَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِیْلِ ؕ فَرِیْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِیْمٌ حَكِیْمٌ ۝۶۰ ﴾[1]

सदक़ात फ़ुक़रा व मसाकीन के लिये हैं और उन के लिये जो इस काम पर मुक़र्रर हैं और वोह जिन के क़ुलूब की तालीफ़ मक़्सूद है और गरदन छुड़ाने में और तावान वाले के लिये और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में और मुसाफ़िर के लिये, येह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ से मुक़र्रर करना है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) इल्मो हिक्मत वाला है।

ह़दीस 1 सुनने अबी दावूद में ज़ियाद बिन ह़ारिस सुदाई رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह** तआ़ला ने सदक़ात को नबी या किसी और के हुक्म पर नहीं रखा बल्कि उस ने ख़ुद इस का हुक्म बयान फ़रमाया और इस के आठ हिस्से किये।"[2]

ह़दीस 2 इमाम अह़मद व अबू दावूद व ह़ाकिम अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "ग़नी के लिये सदक़ा ह़लाल नहीं मगर पांच शख़्स के लिये :

(1) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में जंग करने वाला या

(2) सदक़े पर आ़मिल या

(3) तावान वाले के लिये या

(4) जिस ने अपने माल से ख़रीद लिया हो या

(5) मिस्कीन को सदक़ा दिया गया और उस मिस्कीन ने अपने पड़ोसी मालदार को हदिया किया।"[3] और अह़मद व बैहक़ी की दूसरी रिवायत में मुसाफ़िर के लिये भी जवाज़ आया है।[4]

ह़दीस 3 बैहक़ी ने ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि फ़रमाया :

1 ..... پ١٠، التوبة: ٦٠.

2 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب يعطىٰ من الصدقة وحدالغنى، الحديث: ١٦٣٠، ج٢، ص١٦٥.

3 ..... "المستدرك" للحاكم، كتاب الزكاة، باب مقدار الغنى الذى يحرم السؤال، الحديث: ١٥٢٠، ج٢، ص٢٩.

4 ..... انظر: "السنن الكبرى" للبيهقي، كتاب قسم الصدقات، باب العامل على الصدقة ياخذ منها بقدر عمله... إلخ، الحديث: ١٣١٦٧، ج٧، ص٢٣.

www.dawateislami.net

"सदक़ए मफ़रूज़ा में औलाद और वालिद का हक़ नहीं।"[1]

हदीस 4 तबरानी कबीर में इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "ऐ बनी हाशिम ! तुम अपने नफ़्स पर सब्र करो कि सदक़ात आदमियों के धोवन हैं।"[2]

हदीस 5 ता 7 इमाम अहमद व मुस्लिम मुत्तलिब बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "आले मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के लिये सदक़ा जाइज़ नहीं कि येह तो आदमियों के मैल हैं।"[3]

और इब्ने सअ़ूद की रिवायत इमाम ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से है कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने मुझ पर और मेरी अहले बैत पर सदक़ा ह़राम फ़रमा दिया।"[4]

और तिरमिज़ी व नसाई व ह़ाकिम की रिवायत अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से है कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "हमारे लिये सदक़ा ह़लाल नहीं और जिस क़ौम का आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हो, वोह उन्हीं में से है।"[5]

हदीस 8 सह़ीहैन में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी कि इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने सदक़े का ख़ुरमा ले कर मुंह में रख लिया। इस पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "छी छी" कि उसे फेंक दें, फिर फ़रमाया : क्या तुम्हें नहीं मालूम कि हम सदक़ा नहीं खाते।[6] त़हमान व बहज़ बिन ह़कीम व बराअ व ज़ैद बिन अरक़म व अ़म्र बिन ख़ारिजा व सलमान व अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला व मैमून व कैसान व हुरमुज़ व ख़ारिजा बिन अ़म्र व मुग़ीरा व अनस वग़ैरहुम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से भी रिवायतें हैं कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) की अहले बैत के लिये सदक़ात ना जाइज़ हैं।[7]

मस्अला 1 ज़कात के मसारिफ़ सात हैं :

(1) फ़क़ीर

---

1 ..... "السنن الكبرى"، كتاب قسم الصدقات باب المراة تصيرف من زكاتها في زوجها، الحديث: ١٣٢٢٩، ج٧، ص٤٥.

2 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ١٢٩٨٠، ج١٢، ص١٨٢.

3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب ترك استعمال آل النبى على الصدقة، الحديث: ١٠٧٢، ص٥٣٩.

4 ..... "الطبقات الكبرى"لابن سعد، ج١،ص٢٩٧

5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الزكاة، باب ماجاء في كراهية الصدقة للنبى صلى الله عليه وسلم وأهل بيته ومواليه، الحديث: ٦٥٧، ج٢، ص١٤٢.

6 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب مايذكر في الصدقة للنبى صلى الله عليه وسلم وآله، الحديث: ١٤٩١، ج١، ص٥٠٣.

7 ..... انظر: "كنز العمال"، كتاب الزكاة، ج٦، ص١٩٥ ـ ١٩٦.

www.dawateislami.net

(2) मिस्कीन
(3) आ़मिल
(4) रिक़ाब
(5) ग़ारिम
(6) फ़ी सबीलिल्लाह
(7) इब्ने सबील ।[1]

मस्अला 2 फ़क़ीर वोह शख़्स है जिस के पास कुछ हो मगर न इतना कि निसाब को पहुंच जाए या निसाब की क़दर हो तो उस की ह़ाजते अस्लिय्या में मुस्तग़रक़ हो, मसलन रहने का मकान पहनने के कपड़े ख़िदमत के लिये लौंडी ग़ुलाम, इ़ल्मी शग़्ल रखने वाले को दीनी किताबें जो उस की ज़रूरत से ज़ियादा न हों जिस का बयान गुज़रा। यूंही अगर मद्यून है और दैन निकालने के बाद निसाब बाक़ी न रहे तो फ़क़ीर है अगर्चे उस के पास एक तो क्या कई निसाबें हों ।[2] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 3 फ़क़ीर अगर आ़लिम हो तो उसे देना जाहिल को देने से अफ़्ज़ल है ।[3] (عالمگیری) मगर आ़लिम को दे तो उस का लिह़ाज़ रखे कि उस का एज़ाज़ मद्दे नज़र हो, अदब के साथ दे जैसे छोटे बड़ों को नज़्र देते हैं और مَعَاذَاللہ आ़लिमे दीन की ह़िक़ारत अगर क़ल्ब में आई तो येह हलाकत और बहुत सख़्त हलाकत है ।

मस्अला 4 मिस्कीन वोह है जिस के पास कुछ न हो यहां तक कि खाने और बदन छुपाने के लिये इस का मोह़ताज है कि लोगों से सुवाल करे और उसे सुवाल ह़लाल है, फ़क़ीर को सुवाल ना जाइज़ कि जिस के पास खाने और बदन छुपाने को हो उसे बग़ैर ज़रूरत व मजबूरी सुवाल ह़राम है ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 5 आ़मिल वोह है जिसे बादशाहे इस्लाम ने ज़कात और उ़श्र वुसूल करने के लिये मुक़र्रर किया, उसे काम के लिह़ाज़ से इतना दिया जाए कि उस को और उस के मददगारों का मुतवस्सित़ तौ़र पर काफ़ी हो, मगर इतना न दिया जाए कि जो वुसूल कर लाया है उस के निस्फ़ से ज़ियादा हो जाए ।[5] (درمختار وغیرہ)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٣ ـ ٣٤٠.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٣. وغيره
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٧.
4 ..... المرجع السابق، ص١٨٧ ـ ١٨٨.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٤ ـ ٣٣٦، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 6 आ़मिल अगर्चे ग़नी हो अपने काम की उजरत ले सकता है और हाशिमी हो तो उस को माले ज़कात में से देना भी ना जाइज़ और उसे लेना भी ना जाइज़। हां, अगर किसी और मद से दें तो लेने में भी ह़रज नहीं।[1] (عالمگیری)

मस्अला 7 ज़कात का माल आ़मिल के पास से जाता रहा तो अब उसे कुछ न मिलेगा, मगर देने वालों की ज़कातें अदा हो गईं।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 8 कोई शख़्स अपने माल की ज़कात ख़ुद ले कर बैतुलमाल में दे आया तो उस का मुआ़वज़ा आ़मिल नहीं पाएगा।[3] (عالمگیری)

मस्अला 9 वक़्त से पहले मुआ़वज़ा ले लिया या क़ाज़ी ने दे दिया येह जाइज़ है, मगर बेहतर येह है कि पहले न दें और अगर पहले ले लिया और वुसूल किया हुवा माल हलाक हो गया तो ज़ाहिर येह कि वापस न लेंगे।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 10 रिक़ाब से मुराद मुकातब ग़ुलाम को देना कि उस माले ज़कात से बदले किताबत अदा करे और ग़ुलामी से अपनी गरदन रिहा करे।[5] (عامۂ کتب)

मस्अला 11 ग़नी के मुकातब को भी माले ज़कात दे सकते हैं अगर्चे मालूम है कि येह ग़नी का मुकातब है। मुकातब पूरा बदले किताबत अदा करने से आ़जिज़ हो गया और फिर ब दस्तूर ग़ुलाम हो गया तो जो कुछ उस ने माले ज़कात लिया है, उस को मौला तसर्रुफ़ में ला सकता है अगर्चे ग़नी हो।[6] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 12 मुकातब को जो ज़कात दी गई वोह ग़ुलामी से रिहाई के लिये है, मगर अब उसे इख़्तियार है दीगर मसारिफ़ में भी ख़र्च कर सकता है, अगर मुकातब के पास ब क़दरे निसाब माल है और बदले किताबत से भी ज़ियादा है, जब भी ज़कात दे सकते हैं मगर हाशिमी के मुकातब को ज़कात नहीं दे सकते।[7] (عالمگیری،ردالمحتار)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٤.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨.

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٦.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨.

6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٧، وغيره.

7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨.
و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 13 ग़ारिम से मुराद मद्यून है यानी उस पर इतना दैन हो कि उसे निकालने के बाद निसाब बाक़ी न रहे, अगर्चे उस का औरों पर बाक़ी हो मगर लेने पर क़ादिर न हो, मगर शर्त येह है कि मद्यून हाशिमी न हो।[1] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 14 फ़ी सबीलिल्लाह यानी राहे ख़ुदा में ख़र्च करना इस की चन्द सूरतें हैं, मसलन कोई शख़्स मोहताज है कि जंग में जाना चाहता है, सुवारी और ज़ादे राह उस के पास नहीं तो उसे माले ज़कात दे सकते हैं कि येह राहे ख़ुदा में देना है अगर्चे वोह कमाने पर क़ादिर हो या कोई ह़ज को जाना चाहता है और उस के पास माल नहीं उस को ज़कात दे सकते हैं, मगर उसे ह़ज के लिये सुवाल करना जाइज़ नहीं। या त़ालिबे इ़ल्म कि इ़ल्मे दीन पढ़ता या पढ़ना चाहता है, उसे दे सकते हैं कि येह भी राहे ख़ुदा में देना है बल्कि त़ालिबे इ़ल्म सुवाल कर के भी माले ज़कात ले सकता है, जब कि उस ने अपने आप को इसी काम के लिये फ़ारिग़ कर रखा हो अगर्चे कस्ब पर क़ादिर हो। यूंही हर नेक बात में ज़कात सर्फ़ करना फ़ी सबीलिल्लाह है, जब कि बत़ौरे तम्लीक[2] हो कि बग़ैर तम्लीक ज़कात अदा नहीं हो सकती।[3] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 15 बहुत से लोग माले ज़कात इस्लामी मदारिस में भेज देते हैं उन को चाहिये कि मुतवल्लिये मद्रसा को इत्तिलाअ़ दें कि येह माले ज़कात है ताकि मुतवल्ली उस माल को जुदा रखे और माल में न मिलाए और ग़रीब त़लबा पर सर्फ़ करे, किसी काम की उजरत में न दे वरना ज़कात अदा न होगी।

मस्अला 16 इब्नुस्सबील यानी मुसाफ़िर जिस के पास माल न रहा ज़कात ले सकता है, अगर्चे उस के घर माल मौजूद हो मगर उसी क़दर ले जिस से ह़ाजत पूरी हो जाए, ज़ियादा की इजाज़त नहीं। यूंही अगर मालिके निसाब का माल किसी मीआ़द तक के लिये दूसरे पर दैन है और हुनूज़ मीआ़द पूरी न हुई और अब उसे ज़रूरत है या जिस पर उस का आता है वोह यहां मौजूद नहीं या मौजूद है मगर नादार है या दैन से मुन्किर है, अगर्चे येह सुबूत रखता हो तो इन सब सूरतों में ब क़दरे ज़रूरत ज़कात ले सकता है, मगर बेहतर येह है कि क़र्ज़ मिले तो क़र्ज़ ले कर काम चलाए।[4] (عالمگیری، درمختار) और अगर दैने मुअ़ज्जल है या मीआ़द पूरी हो गई और मद्यून ग़नी ह़ाज़िर और इक़रार भी करता है तो ज़कात नहीं ले सकता कि उस से ले कर अपनी ज़रूरत में सर्फ़ कर सकता है लिहाज़ा ह़ाजत मन्द न हुवा। और याद रखना चाहिये कि क़र्ज़ जिसे उ़र्फ़ में लोग दस्तगर्दां कहते हैं, शर्अ़न हमेशा मुअ़ज्जल होता है कि जब चाहे इस का मुत़ालबा कर सकता है, अगर्चे हज़ार अ़ह्दो पैमान व वसीक़ा व तमस्सुक के ज़रीए से

❷...यानी जिस को दे, उसे मालिक बना दे।

❶..... "الدرالمختار"، کتاب الزکاۃ، باب المصرف، ج۳، ص۳۳۹، وغیرہ.

❸..... "الدرالمختار"، کتاب الزکاۃ، باب المصرف، ج۳، ص۳۳۹، وغیرہ.

❹..... "الفتاوی الھندیۃ"، کتاب الزکاۃ، الباب السابع في المصارف، ج۱، ص۱۸۸.
و "الدرالمختار"، کتاب الزکاۃ، باب المصرف، ج۳، ص۳٤۰.

www.dawateislami.net

उस में मीआ़द मुक़र्रर की हो कि इतनी मुद्दत के बाद दिया जाएगा, अगर्चे येह लिख दिया हो कि उस मीआ़द से पहले मुत़ालबे का इख़्तियार न होगा अगर मुत़ालबा करे तो बात़िल व ना मस्मूअ़ होगा कि सब शर्तें बात़िल हैं और क़र्ज़ देने वाले को हर वक़्त मुत़ालबे का इख़्तियार है ।[1] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 17 मुसाफ़िर या उस मालिके निसाब ने जिस का अपना माल दूसरे पर दैन है, ब वक़्ते ज़रूरत माले ज़कात ब क़दरे ज़रूरत लिया फिर अपना माल मिल गया मसलन मुसाफ़िर घर पहुंच गया या मालिके निसाब का दैन वुसूल हो गया, तो जो कुछ ज़कात में का बाक़ी है अब भी अपने सर्फ़ में ला सकता है ।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 18 ज़कात देने वाले को इख़्तियार है कि इन सातों क़िस्मों को दे या इन में किसी एक को दे दे, ख़्वाह एक क़िस्म के चन्द अश्ख़ास को या एक को और माले ज़कात अगर ब क़दरे निसाब न हो तो एक को देना अफ़्ज़ल है और एक शख़्स को ब क़दरे निसाब दे देना मक्रूह, मगर दे दिया तो अदा हो गई । एक शख़्स को ब क़दरे निसाब देना मक्रूह उस वक़्त है कि वोह फ़क़ीर मद्यून न हो और मद्यून हो तो उतना दे देना कि दैन निकाल कर कुछ न बचे या निसाब से कम बचे मक्रूह नहीं । यूंही अगर वोह फ़क़ीर बाल बच्चों वाला है कि अगर्चे निसाब या ज़ियादा है, मगर अहलो अ़याल पर तक़्सीम करें तो सब को निसाब से कम मिलता है तो इस सूरत में भी ह़रज नहीं ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 19 ज़कात अदा करने में येह ज़रूरी है कि जिसे दें मालिक बना दें, इबाह़त काफ़ी नहीं, लिहाज़ा माले ज़कात मस्जिद में सर्फ़ करना या उस से मय्यित को कफ़न देना या मय्यित का दैन अदा करना या ग़ुलाम आज़ाद करना, पुल, सरा, सक़ाया, सड़क बनवा देना, नह्र या कूंवां खुदवा देना इन अफ़्आ़ल में ख़र्च करना या किताब वग़ैरा कोई चीज़ ख़रीद कर वक़्फ़ कर देना नाकाफ़ी है ।[4] (جوہرہ، تنویر، عالمگیری)

मस्अला 20 फ़क़ीर पर दैन है उस के कहने से माले ज़कात से वोह दैन अदा किया गया ज़कात अदा हो गई और अगर उस के हुक्म से न हो तो ज़कात अदा न हुई और अगर फ़क़ीर ने इजाज़त दी मगर अदा से पहले मर गया, तो येह दैन अगर माले ज़कात से अदा करें ज़कात अदा न होगी ।[5] (درمختار) इन चीज़ों में माले ज़कात सर्फ़ करने का ह़ीला हम बयान कर चुके, अगर ह़ीला करना चाहें तो कर सकते हैं ।

मस्अला 21 (1) अपनी अस्ल यानी मां बाप, दादा दादी, नाना नानी वग़ैरहुम जिन की औलाद में येह है (2) और अपनी नस्ल बेटा बेटी, पोता पोती, नवासा नवासी वग़ैरहुम को

1 ..... 2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٤٠.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨.
و "تنوير الأبصار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٤١ ـ ٣٤٣.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٤٢.

www.dawateislami.net

ज़कात नहीं दे सकता। यूंही सदक़ए फ़ित्र व नज़्र व कफ़्फ़ारा भी इन्हें नहीं दे सकता। रहा सदक़ए नफ़्ल वोह दे सकता है बल्कि बेहतर है।[1] (عالمگیری، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 22 ज़िना का बच्चा जो इस के नुत्फ़े से हो या वोह बच्चा कि इस की मन्कूहा से ज़मानए निकाह़ में पैदा हुवा, मगर येह कह चुका कि मेरा नहीं, उन्हें नहीं दे सकता।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 23 बहू और दामाद और सोतेली मां या सोतेले बाप या ज़ौजा की औलाद या शौहर की औलाद को दे सकता है और रिश्तेदारों में जिस का नफ़्क़ा उस के ज़िम्मे वाजिब है, उसे ज़कात दे सकता है जब कि नफ़्क़े में मह़सूब न करे।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 24 मां बाप मोह़ताज हों और ह़ीला कर के ज़कात देना चाहता है कि येह फ़क़ीर को दे दे फिर फ़क़ीर उन्हें दे येह मक्रूह है।[4] (ردالمحتار) यूंही ह़ीला कर के अपनी औलाद को देना भी मक्रूह है।

मस्अला 25 (3) अपने या अपनी अस्ल या अपनी फ़र्अ़ या अपने ज़ौज या अपनी ज़ौजा के ग़ुलाम या मुकातब[5] या मुदब्बिर[6] या उम्मे वलद[7] या उस ग़ुलाम को जिस के किसी जुज़ का येह मालिक हो, अगर्चे बाज़ हिस्सा आज़ाद हो चुका हो ज़कात नहीं दे सकता।[8] (عالمگیری)

मस्अला 26 (4) औ़रत शौहर को (5) और शौहर औ़रत को ज़कात नहीं दे सकता, अगर्चे त़लाक़े बाइन बल्कि तीन त़लाक़ें दे चुका हो, जब तक इद्दत में है और इद्दत पूरी हो गई तो अब दे सकता है।[9] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 27 (6) जो शख़्स मालिके निसाब हो (जब कि वोह चीज़ ह़ाजते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हो यानी मकान, सामाने ख़ानादारी, पहनने के कपड़े, ख़ादिम, सुवारी का जानवर, हथियार, अहले इ़ल्म के लिये किताबें जो इस के काम में हों कि येह सब ह़ाजते अस्लिय्या से हैं और वोह चीज़ इन के इ़लावा हो, अगर्चे उस पर साल न गुज़रा हो अगर्चे वोह माले नामी न हो) ऐसे को ज़कात देना जाइज़ नहीं।

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٤٤، وغيره.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٤٤.

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٤٤. 4 ..... المرجع السابق.

5 ...यानी आक़ा अपने ग़ुलाम से माल की एक मिक़्दार मुक़र्रर कर के येह कह दे कि इतना अदा कर दे तो आज़ाद है और ग़ुलाम इस को क़बूल भी कर ले।

6 ...यानी वोह ग़ुलाम जिस की निस्बत मौला (मालिक) ने कहा कि तू मेरे मरने के बाद आज़ाद है।

7 ...यानी वोह लोंडी जिस के बच्चा पैदा हुवा और मौला ने इक़्रार किया कि येह मेरा बच्चा है।

तफ़्सीली मालूमात के लिये बहारे शरीअ़त हिस्सा 9 में मुदब्बिर, मुकातब और उम्मे वलद का बयान मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

8 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٩.

9 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٤٥.

www.dawateislami.net

और निसाब से मुराद यहां येह है कि उस की क़ीमत दो सौ[200] दिरम हो, अगर्चे वोह ख़ुद इतनी न हो कि उस पर ज़कात वाजिब हो मसलन छे तोले सोना जब दो सौ[200] दिरम क़ीमत का हो तो जिस के पास है अगर्चे उस पर ज़कात वाजिब नहीं कि सोने की निसाब साढ़े सात तोले है मगर उस शख़्स को ज़कात नहीं दे सकते या उस के पास तीस बकरियां या बीस गाय हों जिन की क़ीमत दो सौ[200] दिरम है उसे ज़कात नहीं दे सकता, अगर्चे उस पर ज़कात वाजिब नहीं या उस के पास ज़रूरत के सिवा अस्बाब हैं जो तिजारत के लिये भी नहीं और वोह दो सौ[200] दिरम के हैं तो उसे ज़कात नहीं दे सकते।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 28 सहीह़ तन्दुरुस्त को ज़कात दे सकते हैं, अगर्चे कमाने पर क़ुदरत रखता हो मगर सुवाल करना उसे जाइज़ नहीं।[2] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 29 (7) जो शख़्स मालिके निसाब है उस के ग़ुलाम को भी ज़कात नहीं दे सकते, अगर्चे ग़ुलाम अपाहज हो और उस का मौला खाने को भी नहीं देता या उस का मालिक ग़ायब हो, मगर मालिके निसाब के मुकातब को और उस माज़ून को दे सकते हैं जो ख़ुद और उस का माल दैन में मुस्तग़रक़ हो। (8) यूंही ग़नी मर्द के ना बालिग़ बच्चे को भी नहीं दे सकते और ग़नी की बालिग़ औलाद को दे सकते हैं जब कि फ़क़ीर हों।[3] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 30 ग़नी की बीबी को दे सकते हैं जब कि मालिके निसाब न हो। यूंही ग़नी के बाप को दे सकते हैं जब कि फ़क़ीर है।[4] (عالمگیری)

मस्अला 31 जिस औ़रत का दैने महर उस के शौहर पर बाक़ी है, अगर्चे वोह ब क़दरे निसाब हो अगर्चे शौहर मालदार हो अदा करने पर क़ादिर हो उसे ज़कात दे सकते हैं।[5] (جوہرہ نیرہ)

मस्अला 32 जिस बच्चे की मां मालिके निसाब है, अगर्चे उस का बाप ज़िन्दा न हो उसे ज़कात दे सकते हैं।[6] (درمختار)

मस्अला 33 जिस के पास मकान या दुकान है जिसे किराए पर उठाता है और उस की क़ीमत मसलन तीन हज़ार हो मगर किराया इतना नहीं जो उस की और बाल बच्चों की ख़ूरिश

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، مطلب في حوائج الأصلية، ج٣، ص٣٤٦.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٩، وغيره.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص ٣٤٨.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٩.
5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب من يجوز دفع الصدقة اليه ومن لا يجوز، ص١٦٧.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص ٣٤٩.

www.dawateislami.net

को काफ़ी हो सके तो उस को ज़कात दे सकते हैं। यूंही उस की मिल्क में खेत हैं जिन की काश्त करता है, मगर पैदावार इतनी नहीं जो साल भर की ख़ूरिश के लिये काफ़ी हो उस को ज़कात दे सकते हैं, अगर्चे खेत की क़ीमत दो सौ[200] दिरम या ज़ाइद हो।[1] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 34 जिस के पास खाने के लिये ग़ल्ला हो जिस की क़ीमत दो सौ[200] दिरम हो और वोह ग़ल्ला साल भर को काफ़ी है, जब भी उस को ज़कात देना ह़लाल है।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 35 जाड़े[3] के कपड़े जिन की गर्मियों में ह़ाजत नहीं पड़ती ह़ाजते अस्लिय्या में हैं, वोह कपड़े अगर्चे बेश क़ीमत हों ज़कात ले सकता है, जिस के पास रहने का मकान ह़ाजत से ज़ियादा हो यानी पूरे मकान में उस की सुकूनत नहीं येह शख़्स ज़कात ले सकता है।[4]

(ردالمحتار)

मस्अला 36 औ़रत को मां बाप के यहां से जो जहेज़ मिलता है उस की मालिक औ़रत ही है, इस में दो त़रह़ की चीज़ें होती हैं एक ह़ाजत की जैसे ख़ानादारी के सामान, पहनने के कपड़े, इस्तिमाल के बरतन इस क़िस्म की चीज़ें कितनी ही क़ीमत की हों इन की वज्ह से औ़रत ग़नी नहीं, दूसरी वोह चीज़ें जो ह़ाजते अस्लिय्या से ज़ाइद हैं ज़ीनत के लिये दी जाती हैं जैसे ज़ेवर और ह़ाजत के इलावा अस्बाब और बरतन और आने जाने के बेश क़ीमत भारी जोड़े, इन चीज़ों की क़ीमत अगर ब क़दरे निसाब है औ़रत ग़नी है ज़कात नहीं ले सकती।[5]

(ردالمحتار)

मस्अला 37 मोती वग़ैरा जवाहिर जिस के पास हों और तिजारत के लिये न हों तो उन की ज़कात वाजिब नहीं, मगर जब निसाब की क़ीमत के हों तो ज़कात ले नहीं सकता।[6]

(ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 38 जिस के मकान में निसाब की क़ीमत का बाग़ हो और बाग़ के अन्दर ज़रूरिय्याते मकान बावर्ची ख़ाना, ग़ुस्ल ख़ाना वग़ैरा नहीं तो उसे ज़कात लेना जाइज़ नहीं।[7]

(عالمگیری)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٩.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، مطلب في حوائج الأصلية، ج٣، ص٣٤٦.

3 ...यानी सर्दी।

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٤٧.

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، مطلب في جهاز المرأة هل تصير به غنية، ج٣، ص٣٤٧.

6 ..... المرجع السابق، وغيره. 7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٩.

www.dawateislami.net

मस्अला 39 (9) बनी हाशिम को ज़कात नहीं दे सकते। न ग़ैर उन्हें दे सके, न एक हाशिमी दूसरे हाशिमी को।

बनी हाशिम से मुराद ह़ज़रते अ़ली व जाफ़र व अ़क़ील और ह़ज़रते अ़ब्बास व ह़ारिस बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब की औलादें हैं। इन के इ़लावा जिन्हों ने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की इआ़नत न की, मसलन अबू लहब कि अगर्चे येह काफ़िर भी ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब का बेटा था, मगर इस की औलादें बनी हाशिम में शुमार न होंगी।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 40 बनी हाशिम के आज़ाद किये हुए ग़ुलामों को भी नहीं दे सकते तो जो ग़ुलाम उन की मिल्क में हैं, उन्हें देना ब त़रीक़े औला ना जाइज़।[2] (عامۂ کتب, درمختار وغیرہ)

मस्अला 41 मां हाशिमी बल्कि सय्यिदानी हो और बाप हाशिमी न हो तो वोह हाशिमी नहीं कि शर्अ़ में नसब बाप से है, लिहाज़ा ऐसे शख़्स को ज़कात दे सकते हैं अगर कोई दूसरा मानेअ़ न हो।

मस्अला 42 सदक़ए नफ़्ल और अवक़ाफ़ की आमदनी बनी हाशिम को दे सकते हैं, ख़्वाह वक़्फ़ करने वाले ने इन की तअ़्यीन की हो या नहीं।[3] (درمختار)

मस्अला 43 (10) ज़िम्मी काफ़िर को न ज़कात दे सकते हैं, न कोई सदक़ए वाजिबा जैसे नज़्र व कफ़्फ़ारा व सदक़ए फ़ित्र[4] और ह़र्बी को किसी क़िस्म का सदक़ा देना जाइज़ नहीं न वाजिबा न नफ़्ल, अगर्चे वोह दारुल इस्लाम में बादशाहे इस्लाम से अमान ले कर आया हो।[5] (درمختار) हिन्दुस्तान अगर्चे दारुल इस्लाम है मगर यहां के कुफ़्फ़ार ज़िम्मी नहीं, इन्हें सदक़ाते नफ़्ल मसलन हदिय्या वग़ैरा देना भी ना जाइज़ है।

फ़ाएदा : जिन लोगों को ज़कात देना ना जाइज़ है उन्हें और भी कोई सदक़ए वाजिबा नज़्र व कफ़्फ़ारा व फ़ित्रा देना जाइज़ नहीं, सिवा दफ़ीना और मादिन के कि इन का ख़ुम्स अपने

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٩، وغيره.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٥١، وغيره.
3 ..... المرجع السابق، ص٣٥٢.

4 ...**फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में है :** सदक़ए फ़ित्र ज़िम्मी फ़ुक़रा को देना जाइज़ है मगर मक्रूह है। ("الفتاوى الخانية"، كتاب الصوم، فصل في صدقة الفطر، ج١، ص١١١).

फ़तावा आ़लमगीरी में है : ज़िम्मी काफ़िरों को ज़कात देना बिल इत्तिफ़ाक़ जाइज़ नहीं और नफ़्ली सदक़ा उन को देना जाइज़ है। सदक़ए फ़ित्र, नज़्र और कफ़्फ़ारात में इख़्तिलाफ़ है इमाम अबू ह़नीफ़ा और इमाम मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِما फ़रमाते हैं कि जाइज़ है मगर मुसलमान फ़ुक़रा को देना हमें ज़ियादा महबूब है। ("الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٨٨).
انظر: "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، مطلب في حوائج الأصلية، ج٣، ص٣٥٣.
و "المبسوط"، كتاب الصوم، فصل في صدقة الفطر، ج٢، ص١٢٣.

5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٥٣.

www.dawateislami.net

वालिदैन व औलाद को भी दे सकता है, बल्कि बाज़ सूरत में खुद भी सर्फ़ कर सकता है जिस का बयान गुज़रा ।[1] (جوہرہ)

मस्अला 44 जिन लोगों की निस्बत बयान किया गया कि उन्हें ज़कात दे सकते हैं, उन सब का फ़क़ीर होना शर्त है, सिवा आ़मिल के कि उस के लिये फ़क़ीर होना शर्त नहीं और इब्नुस्सबील अगर्चे ग़नी हो, उस वक़्त हुक्मे फ़क़ीर में है, बाक़ी किसी को जो फ़क़ीर न हो ज़कात नहीं दे सकते ।[2] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 45 जो शख़्स मरज़ुल मौत में है उस ने ज़कात अपने भाई को दी और येह भाई उस का वारिस है तो ज़कात इन्दल्लाह अदा हो गई, मगर बाक़ी वारिसों को इख़्तियार है कि उस से उस ज़कात को वापस लें कि येह वसिय्यत के हुक्म में है और वारिस के लिये बग़ैर इजाज़ते दीगर वरसा वसिय्यत सहीह़ नहीं ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 46 जो शख़्स उस की ख़िदमत करता और उस के यहां के काम करता है उसे ज़कात दी या उस को दी जिस ने ख़ुश ख़बरी सुनाई या उसे दी जिस ने उस के पास हदिय्या भेजा येह सब जाइज़ है। हां, अगर इ़वज़ कह कर दी तो अदा न हुई। ईद, बक़र ईद में ख़ुद्दाम मर्द व औ़रत को ईदी कह कर दी तो अदा हो गई ।[4] (جوہرہ، عالمگیری)

मस्अला 47 जिस ने तह़र्री की यानी सोचा और दिल में येह बात जमी कि उस को ज़कात दे सकते हैं और ज़कात दे दी बाद में ज़ाहिर हुवा कि वोह मस्रफ़े ज़कात है या कुछ ह़ाल न खुला तो अदा हो गई और अगर बाद में मालूम हुवा कि वोह ग़नी था या उस के वालिदैन में कोई था या अपनी औलाद थी या शौहर था या ज़ौजा थी या हाशिमी या हाशिमी का ग़ुलाम था या ज़िम्मी था, जब भी अदा हो गई और अगर येह मालूम हुवा कि उस का ग़ुलाम था या ह़र्बी था तो अदा न हुई। अब फिर दे और येह भी तह़र्री ही के हुक्म में है कि उस ने सुवाल किया, इस ने उसे ग़नी न जान कर दे दिया या वोह फ़क़ीरों की जमाअ़त में उन्हीं की वज़्अ़ में था उसे दे दिया ।[5] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 48 अगर बे सोचे समझे दे दी यानी येह ख़याल भी न आया कि उसे दे सकते हैं या नहीं और बाद में मालूम हुवा कि उसे नहीं दे सकते थे तो अदा न हुई, वरना हो गई और अगर देते वक़्त शक था और तह़र्री न की या की मगर किसी त़रफ़ दिल न जमा या तह़र्री की

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، ص١٦٧.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٣٤ ـ ٣٤١، وغيره.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٤٤.
4 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب من يجوز دفع الصدقة... إلخ، ص١٦٩.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٩٠.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، المرجع السابق، ص١٨٩، و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٥٣.

www.dawateislami.net

और ग़ालिब गुमान येह हुवा कि येह ज़कात का मसरफ़ नहीं और दे दिया तो इन सब सूरतों में अदा न हुई मगर जब कि देने के बाद येह ज़ाहिर हुवा कि वाक़ेई वोह मस्रफ़े ज़कात था तो हो गई ।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 49 ज़कात वग़ैरा सदक़ात में अफ़्ज़ल येह है कि अव्वलन अपने भाइयों बहनों को दे फिर उन की औलाद को फिर चचा और फूपियों को फिर उन की औलाद को फिर मामूं और ख़ाला को फिर उन की औलाद को फिर ज़विल अरहाम यानी रिश्ते वालों को फिर पड़ोसियों को फिर अपने पेशे वालों को फिर अपने शहर या गाउं के रहने वालों को ।[2] (جوہرہ،عالمگیری)

ह़दीस में है कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ उम्मते मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! क़सम है उस की जिस ने मुझे ह़क़ के साथ भेजा, **अल्लाह** तआ़ला उस शख़्स के सदक़े को क़बूल नहीं फ़रमाता जिस के रिश्तेदार उस के सुलूक करने के मोह़ताज हों और येह ग़ैरों को दे, क़सम है उस की जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है **अल्लाह** तआ़ला उस की त़रफ़ क़ियामत के दिन नज़र न फ़रमाएगा ।''[3] (ردالمحتار)

मस्अला 50 दूसरे शहर को ज़कात भेजना मक्रूह है, मगर जब कि वहां उस के रिश्ते वाले हों तो उन के लिये भेज सकता है या वहां के लोगों को ज़ियादा ह़ाजत है या ज़ियादा परहेज़गार हैं या मुसलमानों के ह़क़ में वहां भेजना ज़ियादा नाफ़ेअ़ है या त़ालिबे इल्म के लिये भेजे या ज़ाहिदों के लिये या दारुल ह़र्ब में है और ज़कात दारुल इस्लाम में भेजे या साले तमाम से पहले ही भेज दे, इन सब सूरतों में दूसरे शहर को भेजना बिला कराहत जाइज़ है ।[4] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 51 शहर से मुराद वोह शहर है जहां माल हो, अगर ख़ुद एक शहर में है और माल दूसरे शहर में तो जहां माल हो वहां के फ़ुक़रा को ज़कात दी जाए और सदक़ए फ़ित्र में वोह शहर मुराद है जहां ख़ुद है, अगर ख़ुद एक शहर में है उस के छोटे बच्चे और ग़ुलाम दूसरे शहर में तो जहां ख़ुद है वहां के फ़ुक़रा पर सदक़ए फ़ित्र तक़्सीम करे ।[5] (جوہرہ،عالمگیری)

मस्अला 52 बद मज़्हब को ज़कात देना जाइज़ नहीं ।[6] (درمختار) जब बद मज़्हब का येह ह़ुक्म है तो वहाबियए ज़माना कि तौहीने ख़ुदा व तन्क़ीसे शाने रिसालत करते और शाएअ़ करते हैं, जिन को अकाबिर उ़लमाए ह़रमैने त़य्यिबैन ने बिल इत्तिफ़ाक़ काफ़िर व मुरतद

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٩٠، وغيره.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٩٠.
3 ..... "المعجم الاوسط"، الحديث٨٨٢٨، ج٦، ص٢٩٦.
و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، مطلب في حوائج الأصلية، ج٣، ص٣٥٥.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب السابع في المصارف، ج١، ص١٩٠.
و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٥٥.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، المرجع السابق. 6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٥٦.

www.dawateislami.net

फ़रमाया।[1] अगर्चे वोह अपने आप को मुसलमान कहें, उन्हें ज़कात देना ह़राम व सख़्त ह़राम है और दी तो हरगिज़ अदा न होगी।

मस्अला 53 जिस के पास आज खाने को है या तन्दुरुस्त है कि कमा सकता है उसे खाने के लिये सुवाल ह़लाल नहीं और बे मांगे कोई ख़ुद दे दे तो लेना जाइज़ और खाने को उस के पास है मगर कपड़ा नहीं तो कपड़े के लिये सुवाल कर सकता है। यूंही अगर जंग या त़लबे इल्मे दीन में मश्ग़ूल है तो अगर्चे सह़ीह़ तन्दुरुस्त कमाने पर क़ादिर हो उसे सुवाल की इजाज़त है, जिसे सुवाल जाइज़ नहीं उस के सुवाल पर देना भी ना जाइज़ देने वाला भी गुनहगार होगा।[2] (درمختار)

मस्अला 54 मुस्तह़ब येह है कि एक शख़्स को इतना दें कि उस दिन उसे सुवाल की ह़ाजत न पड़े और येह उस फ़क़ीर की ह़ालत के एतिबार से मुख़्तलिफ़ है, उस के खाने बाल बच्चों की कसरत और दीगर उमूर का लिह़ाज़ कर के दे।[3] (درمختار،ردالمحتار)

सदक़ए फ़ित्र का बयान

ह़दीस 1 सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ज़काते फ़ित्र एक साअ़ खुरमा या जव, ग़ुलाम व आज़ाद मर्द व औ़रत छोटे और बड़े मुसलमानों पर मुक़र्रर की और येह हुक्म फ़रमाया कि "नमाज़ को जाने से पेशतर अदा कर दें।"[4]

ह़दीस 2 अबू दावूद व नसाई की रिवायत में है कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने आख़िरे रमज़ान में फ़रमाया : अपने रोज़े का सदक़ा अदा करो, इस सदक़े को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने मुक़र्रर फ़रमाया, एक साअ़ खुरमा या जव या निस्फ़ साअ़ गेहूं।[5]

---

1 ...तफ़्सीली मालूमात के लिये आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अ़ल्लामा मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की किताब "हुस्सामुल ह़रमैन अ़ला मन्ह़रिल कुफ़्रि वलमैन" का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये। "हुस्सामुल ह़रमैन" की अहम्मिय्यत के पेशे नज़र, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : "तम्हीदुल ईमान और हुस्सामुल ह़रमैन के क्या कहने ! واللہ العظیم جَلَّ جَلَالُہ मेरे आक़ा इमाम अह़मद रज़ा عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने येह किताबें लिख कर दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया। तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से मेरी मदनी इल्तिजा है कि पहली फ़ुरसत में इन किताबों का मुत़ालआ़ फ़रमा लें।" आप के अ़त़ाकर्दा नेक आमाल में से एक नेक अ़मल है कि "क्या आप ने आला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की कुतुब **तम्हीदुल ईमान** और **हुस्सामुल ह़रमैन** पढ़ या सुन ली हैं ?"

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، ج٣، ص٣٥٧.

3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب المصرف، مطلب في حوائج الأصلية، ج٣، ص٣٥٨.

4 ..... "صحيح البخاري"، أبواب صدقة الفطر، باب فرض صدقة الفطر، الحديث: ١٥٠٣، ج١، ص٥٠٧.

5 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب من روى نصف صاع من قمح، الحديث: ١٦٢٢، ج٢، ص١٦١.

www.dawateislami.net

ह़दीस 3 तिरमिज़ी शरीफ़ में ब रिवायते अ़म्र बिन शुऐ़ब अ़न अबीह अ़न जद्दिही मरवी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने एक शख़्स को भेजा कि मक्के के कूचों में एलान कर दे कि सदक़ए फ़ित्र वाजिब है।[1]

ह़दीस 4 अबू दावूद व इब्ने माजह व ह़ाकिम इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ज़कातेे फ़ित्र मुक़र्रर फ़रमाई कि लग़्व और बेहूदा कलाम से रोज़े की त़हारत हो जाए और मसाकीन की ख़ूरिश[2] हो जाए।[3]

ह़दीस 5 दैलमी व ख़त़ीब व इब्ने अ़साकिर अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "बन्दे का रोज़ा आस्मानो ज़मीन के दरमियान मुअ़ल्लक़ रहता है, जब तक सदक़ए फ़ित्र अदा न करे।"[4]

मस्अला 1 सदक़ए फ़ित्र वाजिब है, उ़म्र भर इस का वक़्त है यानी अगर अदा न किया हो तो अब अदा कर दे। अदा न करने से साक़ित न होगा, न अब अदा करना क़ज़ा है बल्कि अब भी अदा ही है अगर्चे मस्नून क़ब्ले नमाज़े ईद अदा कर देना है।[5] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 2 सदक़ए फ़ित्र शख़्स पर वाजिब है माल पर नहीं, लिहाज़ा मर गया तो उस के माल से अदा नहीं किया जाएगा। हां, अगर वरसा बत़ौरे एह़सान अपनी त़रफ़ से अदा करें तो हो सकता है कुछ उन पर जब्र नहीं और अगर वसिय्यत कर गया है तो तिहाई माल से ज़रूर अदा किया जाएगा अगर्चे वरसा इजाज़त न दें।[6] (جوہرہ وغیرہ)

मस्अला 3 ईद के दिन सुब्हे सादिक़ तुलूअ़ होते ही सदक़ए फ़ित्र वाजिब होता है, लिहाज़ा जो शख़्स सुब्ह होने से पहले मर गया या ग़नी था फ़क़ीर हो गया या सुब्ह तुलूअ़ होने के बाद काफ़िर मुसलमान हुवा या बच्चा पैदा हुवा या फ़क़ीर था ग़नी हो गया तो वाजिब न हुवा और अगर सुब्ह तुलूअ़ होने के बाद मरा या सुब्ह तुलूअ़ होने से पहले काफ़िर मुसलमान हुवा या बच्चा पैदा हुवा या फ़क़ीर था ग़नी हो गया तो वाजिब है।[7] (عالمگیری)

मस्अला 4 सदक़ए फ़ित्र हर मुसलमान आज़ाद मालिके निसाब पर जिस की निसाब ह़ाजते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हो वाजिब है। इस में आ़क़िल बालिग़ और माले नामी होने की शर्त नहीं।[8] (درمختار) माले नामी और ह़ाजते अस्लिय्या का बयान गुज़र चुका, इस की सूरतें वहीं से मालूम करें।

---

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الزكاة، باب ماجاء في صدقة الفطر، الحديث: ٦٧٤، ج٢، ص١٥١.

2 ...यानी ख़ूराक।

3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب زكاة الفطر، الحديث: ١٦٠٩، ج٢، ص١٥٧.

4 ..... "تاريخ بغداد"، رقم: ٤٧٣٥، ج٩، ص١٢٢.

5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٢، وغيره.

6 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ص١٧٤، وغيره.

7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٢.

8 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٢ ـ ٣٦٥.

www.dawateislami.net

मस्अला 5 ना बालिग़ या मज्नून अगर मालिके निसाब हैं तो उन पर सदक़ए फ़ित्र वाजिब है, उन का वली उन के माल से अदा करे, अगर वली ने अदा न किया और ना बालिग़ बालिग़ हो गया या मज्नून का जुनून जाता रहा तो अब येह ख़ुद अदा कर दें और अगर ख़ुद मालिके निसाब न थे और वली ने अदा न किया तो बालिग़ होने या होश में आने पर उन के ज़िम्मे अदा करना नहीं।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 6 सदक़ए फ़ित्र अदा करने के लिये माल का बाक़ी रहना भी शर्त नहीं, माल हलाक होने के बाद भी सदक़ा वाजिब रहेगा साक़ित न होगा, ब ख़िलाफ़े ज़कात व उ़श्र कि येह दोनों माल हलाक हो जाने से साक़ित हो जाते हैं।[2] (درمختار)

मस्अला 7 मर्द मालिके निसाब पर अपनी त़रफ़ से और अपने छोटे बच्चे की त़रफ़ से वाजिब है, जब कि बच्चा ख़ुद मालिके निसाब न हो, वरना उस का सदक़ा उसी के माल से अदा किया जाए और मज्नून औलाद अगर्चे बालिग़ हो जब कि ग़नी न हो तो उस का सदक़ा उस के बाप पर वाजिब है और ग़नी हो तो ख़ुद उस के माल से अदा किया जाए, जुनून ख़्वाह अस्ली हो यानी इसी ह़ालत में बालिग़ हुवा या बाद को आ़रिज़ हुवा दोनों का एक हुक्म है।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 8 सदक़ए फ़ित्र वाजिब होने के लिये रोज़ा रखना शर्त नहीं, अगर किसी उ़ज़्र, सफ़र, मरज़, बुढ़ापे की वज्ह से या مَعَاذَاللہ बिला उ़ज़्र रोज़ा न रखा जब भी वाजिब है।[4] (درمختار)

मस्अला 9 ना बालिग़ लड़की जो इस क़ाबिल है कि शौहर की ख़िदमत कर सके उस का निकाह़ कर दिया और शौहर के यहां उसे भेज भी दिया तो किसी पर उस की त़रफ़ से सदक़ा वाजिब नहीं, न शौहर पर न बाप पर और अगर क़ाबिले ख़िदमत नहीं या शौहर के यहां उसे भेजा नहीं तो ब दस्तूर बाप पर है फिर येह सब उस वक़्त है कि लड़की ख़ुद मालिके निसाब न हो, वरना बहर ह़ाल उस का सदक़ए फ़ित्र उस के माल से अदा किया जाए।[5] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 10 बाप न हो तो दादा बाप की जगह है यानी अपने फ़क़ीर व यतीम पोते पोती की त़रफ़ से उस पर सदक़ा देना वाजिब है।[6] (درمختار)

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٥.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٦.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٧.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٧.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٨.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٦٨.

www.dawateislami.net

मस्अला 11 मां पर अपने छोटे बच्चों की त़रफ़ से सदक़ा देना वाजिब नहीं ।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 12 ख़िदमत के ग़ुलाम और मुदब्बिर व उम्मे वलद की त़रफ़ से उन के मालिक पर सदक़ए फ़ित्र वाजिब है, अगर्चे ग़ुलाम मद्यून हो, अगर्चे दैन में मुस्त़ग़रक़ हो और अगर ग़ुलाम गिरवी हो और मालिक के पास ह़ाजते अस्लिय्या के सिवा इतना हो कि दैन अदा कर दे और फिर निसाब का मालिक रहे तो मालिक पर उस की त़रफ़ से भी सदक़ा वाजिब है ।[2] (درمختار، عالمگیری وغیرہما)

मस्अला 13 तिजारत के ग़ुलाम का फ़ित्रा मालिक पर वाजिब नहीं अगर्चे उस की क़ीमत ब क़दरे निसाब न हो ।[3] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 14 ग़ुलाम आ़रिय्यतन[4] दे दिया या किसी के पास अमानतन रखा तो मालिक पर फ़ित्रा वाजिब है और अगर येह वसिय्यत कर गया कि येह ग़ुलाम फ़ुलां का काम करे और मेरे बाद इस का मालिक फ़ुलां है तो फ़ित्रा मालिक पर है, उस पर नहीं जिस के क़ब्ज़े में है ।[5] (درمختار)

मस्अला 15 भागा हुवा ग़ुलाम और वोह जिसे ह़र्बियों ने क़ैद कर लिया उन की त़रफ़ से सदक़ा मालिक पर नहीं । यूंही अगर किसी ने ग़स्ब कर लिया और ग़ासिब इन्कार करता है और इस के पास गवाह नहीं तो उस का फ़ित्रा भी वाजिब नहीं, मगर जब कि वापस मिल जाएं तो अब उन की त़रफ़ से सालहाए गुज़श्ता का फ़ित्रा दे, मगर ह़र्बी अगर ग़ुलाम के मालिक हो गए तो वापसी के बाद भी उस का फ़ित्रा नहीं ।[6] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 16 मुकातब का फ़ित्रा न मुकातब पर है, न उस के मालिक पर । यूंही मुकातब और माज़ून के ग़ुलाम का और मुकातब अगर बदले किताबत अदा करने से आ़जिज़ आया तो मालिक पर सालहाए गुज़श्ता का फ़ित्रा नहीं ।[7] (عالمگیری)

मस्अला 17 दो या चन्द शख़्सों में ग़ुलाम मुश्तरक है तो उस का फ़ित्रा किसी पर नहीं ।[8] (عالمگیری)

---

1 ..... "ردالمحتار"، کتاب الزکاۃ، باب صدقة الفطر، ج۳، ص۳٦۸.
2 ..... "الدرالمختار"، کتاب الزکاۃ، باب صدقة الفطر، ج۳، ص۳٦۹.
و "الفتاوی الهندیة"، کتاب الزکاۃ، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج۱، ص۱۹۲، وغیرهما.
3 ..... "ردالمحتار"، کتاب الزکاۃ، باب صدقة الفطر، ج۳، ص۳٦۹.
4 ...यानी उधार ।
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الزکاۃ، باب صدقة الفطر، ج۳، ص۳٦۹.
6 ..... المرجع السابق، ص۳۷۰.
7 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الزکاۃ، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج۱، ص۱۹۳.
8 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 18 गुलाम बेच डाला और बाएअ़ या मुश्तरी या दोनों ने वापसी का इख़्तियार रखा ईदुल फ़ित्र आ गई और मीआ़दे इख़्तियार ख़त्म न हुई तो उस का फ़ित्रा मौक़ूफ़ है, अगर बैअ़ क़ाइम रही तो मुश्तरी दे वरना बाएअ़।[1] (عالمگیری)

मस्अला 19 अगर मुश्तरी ने ख़यारे ऐ़ब या ख़यारे रूयत के सबब वापस किया तो अगर क़ब्ज़ा कर लिया था तो मुश्तरी पर है, वरना बाएअ़ पर।[2] (عالمگیری)

मस्अला 20 गुलाम को बेचा मगर वोह बैअ़ फ़ासिद हुई और मुश्तरी ने क़ब्ज़ा कर के वापस कर दिया या ईद के बाद क़ब्ज़ा कर के आज़ाद कर दिया तो बाएअ़ पर है और अगर ईद से पहले क़ब्ज़ा किया और बादे ईद आज़ाद किया तो मुश्तरी पर।[3] (عالمگیری)

मस्अला 21 मालिक ने गुलाम से कहा जब ईद का दिन आए तू आज़ाद है। ईद के दिन गुलाम आज़ाद हो जाएगा और मालिक पर उस का फ़ित्रा वाजिब।[4] (عالمگیری)

मस्अला 22 अपनी औ़रत और औलाद आ़क़िल बालिग़ का फ़ित्रा उस के ज़िम्मे नहीं अगर्चे अपाहज हो, अगर्चे उस के नफ़क़ात इस के ज़िम्मे हों।[5] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 23 औ़रत या बालिग़ औलाद का फ़ित्रा इन के बग़ैर इज़्न अदा कर दिया तो अदा हो गया, बशर्ते कि औलाद उस के अ़याल में हो यानी इस का नफ़क़ा वग़ैरा उस के ज़िम्मे हो, वरना औलाद की त़रफ़ से बिला इज़्न[6] अदा न होगा और औ़रत ने अगर शौहर का फ़ित्रा बग़ैर हुक्म अदा कर दिया अदा न हुवा।[7] (عالمگیری، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 24 मां बाप, दादा दादी, ना बालिग़ भाई और दीगर रिश्तेदारों का फ़ित्रा उस के ज़िम्मे नहीं और बग़ैर हुक्म अदा भी नहीं कर सकता।[8] (عالمگیری، جوہرہ)

मस्अला 25 सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार येह है : गेहूं या उस का आटा या सत्तू निस्फ़ साअ़, खजूर या मुनक़्क़े या जव या उस का आटा या सत्तू एक साअ़।[9] (ردالمحتار، عالمگیری)

1 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الزکاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج۱، ص۱۹۳.
2 ..... المرجع السابق. 3 ..... المرجع السابق. 4 ..... المرجع السابق.
5 ..... "الدرالمختار"، کتاب الزکاة، باب صدقة الفطر، ج۳، ص۳۷۰، وغیره.
6 ...यानी बग़ैर इजाज़त
7 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الزکاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج۱، ص۱۹۳.
و "ردالمحتار"، کتاب الزکاة، باب صدقة الفطر، ج۳، ص۳۷۰، وغیرهما.
8 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الزکاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج۱، ص۱۹۳.
9 ..... المرجع السابق، ص۱۹۱، و "الدرالمختار"، کتاب الزکاة، باب صدقة الفطر، ج۳، ص۳۷۲.

www.dawateislami.net

मस्अला 26 गेहूं, जव, खजूरें, मुनक़्क़े दिये जाएं तो इन की क़ीमत का एतिबार नहीं, मसलन निस्फ़ साअ़ उ़म्दा जव जिन की क़ीमत एक साअ़ जव के बराबर है या चहारुम साअ़ खरे गेहूं जो क़ीमत में आधे साअ़ गेहूं के बराबर हैं या निस्फ़ साअ़ खजूरें दीं जो एक साअ़ जव या निस्फ़ साअ़ गेहूं की क़ीमत की हों येह सब ना जाइज़ है जितना दिया उतना ही अदा हुवा, बाक़ी उस के ज़िम्मे बाक़ी है अदा करे।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 27 निस्फ़ साअ़ जव और चहारुम साअ़ गेहूं दिये या निस्फ़ साअ़ जव और निस्फ़ साअ़ खजूर तो भी जाइज़ है।[2] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 28 गेहूं और जव मिले हुए हों और गेहूं ज़ियादा हैं तो निस्फ़ साअ़ दे वरना एक साअ़।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 29 गेहूं और जव के देने से उन का आटा देना अफ़्ज़ल है और इस से अफ़्ज़ल येह कि क़ीमत दे दे, ख़्वाह गेहूं की क़ीमत दे या जव की या खजूर की मगर गिरानी में ख़ुद उन का देना क़ीमत देने से अफ़्ज़ल है और अगर ख़राब गेहूं या जव की क़ीमत दी तो अच्छे की क़ीमत से जो कमी पड़े पूरी करे।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 30 इन चार चीज़ों के इ़लावा अगर किसी दूसरी चीज़ से फ़ित्रा अदा करना चाहे, मसलन चावल, जुवार, बाजरा या और कोई ग़ल्ला या और कोई चीज़ देना चाहे तो क़ीमत का लिहाज़ करना होगा यानी वोह चीज़ आधे साअ़ गेहूं या एक साअ़ जव की क़ीमत की हो, यहां तक कि रोटी दें तो इस में भी क़ीमत का लिहाज़ किया जाएगा अगर्चे गेहूं या जव की हो।[5] (درمختار، عالمگیری وغیرہما)

मस्अला 31 आला दरजे की तह़क़ीक़ और एह़तियात येह है कि साअ़ का वज़्न तीन सो इकावन[351] रुपये भर है और निस्फ़ साअ़ एक सो पछत्तर[175] रुपये अठन्नी भर ऊपर।[6]

(फ़तावा रज़विय्या)

मस्अला 32 फ़ित्रे का मुक़द्दम करना मुत्लक़न जाइज़ है जब कि वोह शख़्स मौजूद हो, जिस की त़रफ़ से अदा करता हो अगर्चे रमज़ान से पेश्तर अदा कर दे और अगर फ़ित्रा अदा करते वक़्त मालिके निसाब न था फिर हो गया तो फ़ित्रा सह़ीह़ है और बेहतर येह है

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٢، وغيره.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٢.

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٧٣.

4 ..... المرجع السابق، ص٣٧٦، و "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩١ ـ ١٩٢.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، المرجع السابق، ص١٩١، و "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٧٣، وغيرهما.

6 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج١٠، ص٢٩٥.

www.dawateislami.net

कि ईद की सुब्हे सादिक़ होने के बाद और ईदगाह जाने से पहले अदा कर दे ।[1] (درمختار، عالمگیری)

मस्अला 33 एक शख़्स का फ़ित्रा एक मिस्कीन को देना बेहतर है और चन्द मसाकीन को दे दिया जब भी जाइज़ है। यूंही एक मिस्कीन को चन्द शख़्सों का फ़ित्रा देना भी बिला ख़िलाफ़ जाइज़ है अगर्चे सब फ़ित्रे मिले हुए हों ।[2] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 34 शौहर ने औ़रत को अपना फ़ित्रा अदा करने का हुक्म दिया, उस ने शौहर के फ़ित्रे के गेहूं अपने फ़ित्रे के गेहूं में मिला कर फ़क़ीर को दे दिये और शौहर ने मिलाने का हुक्म न दिया था तो औ़रत का फ़ित्रा अदा हो गया शौहर का नहीं मगर जब कि मिला देने पर उ़र्फ़ जारी हो तो शौहर का भी अदा हो जाएगा ।[3] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 35 औ़रत ने शौहर को अपना फ़ित्रा अदा करने का इज़्न दिया, उस ने औ़रत के गेहूं अपने गेहूं में मिला कर सब की निय्यत से फ़क़ीर को दे दिये जाइज़ है ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 36 सदक़ए फ़ित्र के मसारिफ़ वोही हैं जो ज़कात के हैं यानी जिन को ज़कात दे सकते हैं, उन्हें फ़ित्रा भी दे सकते हैं और जिन्हें ज़कात नहीं दे सकते, उन्हें फ़ित्रा भी नहीं । सिवा आ़मिल के कि उस के लिये ज़कात है फ़ित्रा नहीं ।[5] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 37 अपने ग़ुलाम की औ़रत को फ़ित्रा दे सकते हैं, अगर्चे उस का नफ़क़ा इसी पर हो ।[6] (درمختار)

सुवाल किसे ह़लाल है और किसे नहीं

आज कल एक आ़म बला येह फैली हुई है कि अच्छे ख़ासे तन्दुरुस्त चाहें तो कमा कर औरों को खिलाएं, मगर उन्हों ने अपने वुजूद को बेकार क़रार दे रखा है, कौन मेह़नत करे मुसीबत झेले ! बे मशक़्क़त जो मिल जाए तो तक्लीफ़ क्यूं बरदाश्त करे ! ना जाइज़ तौ़र पर सुवाल करते और भीक मांग कर पेट भरते हैं और बहुतेरे ऐसे हैं कि मज़दूरी तो मज़दूरी, छोटी मोटी तिजारत को नंगो आ़र ख़याल करते और भीक मांगना कि ह़क़ीक़तन ऐसों के लिये बे इ़ज़्ज़ती व बे ग़ैरती है मायए इ़ज़्ज़त जानते हैं और बहुतों ने तो भीक मांगना अपना पेशा ही बना रखा है, घर में हज़ारों रुपये हैं, सूद का लेनदेन करते, ज़राअ़त वग़ैरा करते हैं मगर भीक मांगना नहीं छोड़ते, उन से कहा जाता है तो जवाब देते हैं कि येह हमारा पेशा है वाह साहिब वाह !

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٧٦.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الزكاة، الباب الثامن في صدقة الفطر، ج١، ص١٩٢.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، مطلب في مقدار الفطرة بالمد الشامي، ج٣، ص٣٧٧.
3 ..... المرجع السابق، ص٣٧٨. 4 ..... "الفتاوى الهندية"،
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، مطلب في مقدار الفطرة بالمد الشامي، ج٣، ص٣٧٩.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الزكاة، باب صدقة الفطر، ج٣، ص٣٨٠.

www.dawateislami.net

क्या हम अपना पेशा छोड़ दें। ह़ालां कि ऐसों को सुवाल ह़राम है और जिसे इन की ह़ालत मालूम हो, उसे जाइज़ नहीं कि इन को दे।

अब चन्द ह़दीसें सुनिये ! देखिये कि आक़ाए दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ऐसे साइलों के बारे में क्या फ़रमाते हैं :

ह़दीस 1 बुख़ारी व मुस्लिम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "आदमी सुवाल करता रहेगा, यहां तक कि क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस के चेहरे पर गोश्त का टुकड़ा न होगा।"[1] (यानी निहायत बे आबरू हो कर)

ह़दीस 2 ता 4 अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने ह़ब्बान समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "सुवाल एक क़िस्म की ख़राश है कि आदमी सुवाल कर के अपने मुंह को नोचता है, जो चाहे अपने मुंह पर इस ख़राश को बाक़ी रखे और जो चाहे छोड़ दे। हां, अगर आदमी साह़िबे सल्त़नत से अपना ह़क़ मांगे या ऐसे अम्र में सुवाल करे कि उस से चारा न हो[2] (तो जाइज़ है)।" और इसी के मिस्ल इमाम अह़मद ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर और त़बरानी ने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से रिवायत की।

ह़दीस 5 बैहक़ी ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स लोगों से सुवाल करे, ह़ालां कि न उसे फ़ाक़ा पहुंचा, न इतने बाल बच्चे हैं जिन की त़ाक़त नहीं रखता तो क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएगा कि उस के मुंह पर गोश्त न होगा।" और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "जिस पर न फ़ाक़ा गुज़रा और न इतने बाल बच्चे हैं जिन की त़ाक़त नहीं और सुवाल का दरवाज़ा खोले **अल्लाह** तआ़ला उस पर फ़ाक़े का दरवाज़ा खोल देगा, ऐसी जगह से जो उस के दिल में भी नहीं।"[3]

ह़दीस 6 व 7 नसाई ने आ़इज़ बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत की, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "अगर लोगों को मालूम होता कि सुवाल करने में क्या है तो कोई किसी के पास सुवाल करने न जाता।"[4] इसी की मिस्ल त़बरानी ने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत की।

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب كراهة المسألة للناس، الحديث: ١٠٤-(١٠٤٠)، ص٥١٨.
2 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب ماتجوز فيه المسألة، الحديث: ١٦٣٩، ج٢، ص١٦٨.
3 ..... "شعب الإيمان"، باب في الزكاة، فصل في الاستعفاف عن المسألة، الحديث: ٣٥٢٦، ج٣، ٢٧٤.
4 ..... "سنن النسائي"، كتاب الزكاة، باب المسألة، الحديث: ٢٥٨٣، ص٤٢٥.

www.dawateislami.net

हदीस 8 व 9 इमाम अह़मद ब सनदे जय्यिद व त़बरानी व बज़्ज़ार इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रावी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "ग़नी का सुवाल करना, क़ियामत के दिन उस के चेहरे में ऐ़ब होगा।"(1) और बज़्ज़ार की रिवायत में येह भी है कि "ग़नी का सुवाल आग है, अगर थोड़ा दिया गया तो थोड़ी और ज़ियादा दिया तो ज़ियादा।"(2) और इसी के मिस्ल इमाम अह़मद व बज़्ज़ार व त़बरानी ने सौबान رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत की।

हदीस 10 त़बरानी कबीर में और इब्ने ख़ुज़ैमा अपनी सह़ीह़ में और तिरमिज़ी और बैहक़ी ह़बशी बिन जनादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स बग़ैर ह़ाजत सुवाल करता है, गोया वोह अंगारा खाता है।"(3)

हदीस 11 मुस्लिम व इब्ने माजह अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रिवायत करते हैं, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो माल बढ़ाने के लिये सुवाल करता है, वोह अंगारे का सुवाल करता है तो चाहे ज़ियादा मांगे या कम का सुवाल करे।"(4)

हदीस 12 अबू दावूद व इब्ने ह़ब्बान व इब्ने ख़ुज़ैमा सह्ल बिन ह़न्ज़लिय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स सुवाल करे और उस के पास इतना है जो उसे बे परवाह करे, वोह आग की ज़ियादती चाहता है।" लोगों ने अ़र्ज़ की : वोह क्या मिक़्दार है, जिस के होते सुवाल जाइज़ नहीं ? फ़रमाया : "सुब्ह़ो शाम का खाना।"(5)

हदीस 13 इब्ने ह़ब्बान अपनी सह़ीह़ में अमीरुल मुअमिनीन उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स लोगों से सुवाल करे, इस लिये कि अपने माल को बढ़ाए तो वोह जहन्नम का गर्म पथ्थर है, अब उसे इख़्तियार है, चाहे थोड़ा मांगे या ज़ियादा त़लब करे।"(6)

हदीस 14 व 15 इमाम अह़मद व अबू याला व बज़्ज़ार ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और त़बरानी ने सग़ीर में उम्मुल मुअमिनीन उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सदक़े से माल कम नहीं होता और ह़क़ मुआ़फ़ करने से क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला बन्दे की इ़ज़्ज़त बढ़ाएगा और बन्दा सुवाल का दरवाज़ा न खोलेगा, मगर **अल्लाह** तआ़ला उस पर मोह़ताजी का दरवाज़ा खोलेगा।"(7)

1 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث عمران بن حصين، الحديث: ١٩٨٤٢، ج٧، ص١٩٣.
2 ..... "مسند البزار"، مسند عمران بن حصين، الحديث: ٣٥٧٢، ج٩، ص٤٩.
3 ..... "المعجم الكبير"، باب الحاء، الحديث: ٣٥٠٦، ج٤، ص١٥.
4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب كراهة المسألة للناس، الحديث: ١٠٤١، ص٥١٨.
5 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب من يعطى من الصدقة وحد الغنى، الحديث: ١٦٢٩، ج٢، ص١٦٤.
6 ..... "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الزكاة، باب المسألة... إلخ، الحديث: ٣٣٨٢، ج٥، ص١٦٦.
7 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث عبدالرحمن بن عوف، الحديث: ١٦٧٤، ج١، ص٤١٠.

www.dawateislami.net

ह़दीस 16 मुस्लिम व अबू दावूद व नसाई क़बीसा बिन मुख़ारिक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, कहते हैं : मुझ पर एक मरतबा तावान लाज़िम आया। मैं ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर सुवाल किया, फ़रमाया : "ठहरो हमारे पास सदक़े का माल आएगा तो तुम्हारे लिये हुक्म फ़रमाएंगे, फिर फ़रमाया : ऐ क़बीसा ! सुवाल ह़लाल नहीं, मगर तीन बातों में : किसी ने ज़मानत की हो (यानी किसी क़ौम की त़रफ़ से दियत का ज़ामिन हुवा या आपस की जंग में सुल्ह़ कराई और इस पर किसी माल का ज़ामिन हुवा) तो उसे सुवाल ह़लाल है, यहां तक कि वोह मिक़्दार पाए फिर बाज़ रहे या किसी शख़्स पर आफ़त आई कि उस के माल को तबाह कर दिया तो उसे सुवाल ह़लाल है, यहां तक कि बसरे अवक़ात के लिये पा जाए या किसी को फ़ाक़ा पहुंचा और उस की क़ौम के तीन अ़क़्लमन्द शख़्स गवाही दें[1] कि फ़ुलां को फ़ाक़ा पहुंचा है तो उसे सुवाल ह़लाल है, यहां तक कि बसरे अवक़ात के लिये ह़ासिल कर ले और इन तीन बातों के सिवा ऐ क़बीसा सुवाल करना ह़राम है कि सुवाल करने वाला ह़राम खाता है।"[2]

ह़दीस 17 व 18 इमाम बुख़ारी व इब्ने माजह ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कोई शख़्स रस्सी ले कर जाए और अपनी पीठ पर लकड़ियों का गठ्ठा ला कर बेचे और सुवाल की ज़िल्लत से **अल्लाह** तआ़ला उस के चेहरे को बचाए येह इस से बेहतर है कि लोगों से सुवाल करे कि लोग उसे दें या न दें।"[3] इसी के मिस्ल इमाम बुख़ारी व मुस्लिम व इमाम मालिक व तिरमिज़ी व नसाई ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की।

ह़दीस 19 इमाम मालिक व बुख़ारी व मुस्लिम व अबू दावूद व नसाई अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा थे, सदक़े का और सुवाल से बचने का ज़िक्र फ़रमा रहे थे, येह फ़रमाया कि "ऊपर वाला हाथ, नीचे वाले हाथ से बेहतर है, ऊपर वाला हाथ ख़र्च करने वाला है और नीचे वाला मांगने वाला।"[4]

ह़दीस 20 इमाम मालिक व बुख़ारी व मुस्लिम व अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि अन्सार में से कुछ लोगों ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) से सुवाल किया, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने अ़त़ा फ़रमाया, फिर मांगा हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने अ़त़ा फ़रमाया, फिर मांगा हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने अ़त़ा फ़रमाया, यहां तक वोह माल जो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के पास था ख़त्म हो गया फिर फ़रमाया : "जो कुछ मेरे पास माल होगा, उसे मैं तुम से उठा न रखूंगा और जो सुवाल से बचना चाहेगा, **अल्लाह** तआ़ला उसे

---

1 ...तीन शख़्सों की गवाही जुम्हूर के नज़्दीक बत़ौरे इस्तिह़बाब है और येह हुक्म उस शख़्स के लिये है जिस का मालदार होना मालूम व मश्हूर है तो बग़ैर गवाह उस का क़ौल मुसल्लम नहीं और जिस का मालदार होना मालूम न हो तो फ़क़त़ उस का कह देना काफ़ी है। 12 मिन्ह

2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب من تحل له المسألة، الحديث: ١٠٤٤، ص٥١٩.

3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب الاستعفاف عن المسألة، الحديث: ١٤٧١، ج١، ص٤٩٧.

4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب بيان ان اليد العليا خيرٌ من اليد السفلى... إلخ، الحديث: ١٠٣٣، ص٥١٥.

www.dawateislami.net

बचाएगा और जो ग़नी बनना चाहेगा, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उसे ग़नी कर देगा और जो सब्र करना चाहेगा, **अल्लाह** तआ़ला उसे सब्र देगा और सब्र से बढ़ कर और इस से ज़ियादा वसीअ़ अ़ता किसी को न मिली।"(1)

ह़दीस 21 ह़ज़रत अमीरुल मुअमिनीन उ़मर फ़ारूफ़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि लालच मोह़ताजी है और ना उम्मीदी तवंगरी। आदमी जब किसी चीज़ से ना उम्मीद हो जाता है तो उस की परवाह नहीं रहती।(2)

ह़दीस 22 इमाम बुख़ारी व मुस्लिम फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मुझे अ़ता फ़रमाते तो मैं अ़र्ज़ करता : किसी ऐसे को दीजिये जो मुझ से ज़ियादा ह़ाजतमन्द हो, इरशाद फ़रमाया : "इसे लो और अपना कर लो और ख़ैरात कर दो, जो माल तुम्हारे पास बे त़मअ़ और बे मांगे आ जाए, उसे ले लो और जो न आए तो उस के पीछे अपने नफ़्स को न डालो।"(3)

ह़दीस 23 अबू दावूद अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि एक अन्सारी ने ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हो कर सुवाल किया, इरशाद फ़रमाया : "क्या तुम्हारे घर में कुछ नहीं है?" अ़र्ज़ की : है तो, एक टाट है जिस का एक ह़िस्सा हम ओढ़ते हैं और एक ह़िस्सा बिछाते हैं और एक लकड़ी का पियाला है जिस में हम पानी पीते हैं, इरशाद फ़रमाया : मेरे हुज़ूर दोनों चीज़ों को ह़ाज़िर करो, वोह ह़ाज़िर लाए, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने अपने दस्ते मुबारक में ले कर इरशाद फ़रमाया : इन्हें कौन ख़रीदता है? एक साहिब ने अ़र्ज़ की : एक दिरहम के इ़वज़ मैं ख़रीदता हूं, इरशाद फ़रमाया : एक दिरहम से ज़ियादा कौन देता है? दो या तीन बार फ़रमाया, किसी और साह़िब ने अ़र्ज़ की : मैं दो दिरहम पर लेता हूं, उन्हें येह दोनों चीज़ें दे दीं और दिरहम ले लिये और अन्सारी को दोनों दिरहम दे कर इरशाद फ़रमाया : एक का ग़ल्ला ख़रीद कर घर डाल आओ और एक की कुल्हाड़ी ख़रीद कर मेरे पास लाओ। वोह ह़ाज़िर लाए, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने अपने दस्ते मुबारक से उस में बनेट डाला और फ़रमाया : जाओ लकड़ियां काटो और बेचो और पन्दरह दिन तक तुम्हें न देखूं (यानी इतने दिनों तक यहां ह़ाज़िर न होना)। वोह गए, लकड़ियां काट कर बेचते रहे, अब ह़ाज़िर हुए तो उन के पास दस दिरहम थे, चन्द दिरहम का कपड़ा ख़रीदा और चन्द का ग़ल्ला। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह इस से बेहतर है कि क़ियामत के दिन सुवाल तुम्हारे मुंह पर छाला हो कर आता। सुवाल दुरुस्त नहीं, मगर तीन शख़्स के लिये, ऐसी मोह़ताजी वाले के लिये जो उसे ज़मीन पर लिटा दे या तावान वाले के लिये जो रुस्वा कर दे या ख़ून वाले (दियत) के लिये जो उसे तक्लीफ़ पहुंचाए।"(4)

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب التعفف والصبر... إلخ، الحديث: ١٠٥٣، ص٥٢٤.

2 ..... "حلية الأولياء و طبقات الأصفياء"، رقم: ١٢٥، ج١، ص٨٧.

3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الأحكام، باب رزق الحكام والعاملين عليها، الحديث: ٧١٦٤، ج٤، ص٤٦١.

4 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب ماتجوز فيه المسألة، الحديث: ١٦٤١، ج٢، ص١٦٨.

www.dawateislami.net

ह़दीस 24 व 25 अबू दावूद व तिरमिज़ी ब इफ़ादए तस्ह़ीह़ व तह़सीन व ह़ाकिम ब इफ़ादए तस्ह़ीह़ अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिसे फ़ाक़ा पहुंचा और उस ने लोगों के सामने बयान किया तो उस का फ़ाक़ा बन्द न किया जाएगा और अगर उस ने **अल्लाह** तआ़ला से अ़र्ज़ की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जल्द उसे बे नियाज़ कर देगा, ख़्वाह जल्द मौत दे दे या जल्द मालदार कर दे।"(1) और त़बरानी की रिवायत अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से है कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "जो भूका या मोह़ताज हुवा और उस ने आदमियों से छुपाया और **अल्लाह** तआ़ला के हुज़ूर अ़र्ज़ की तो **अल्लाह** तआ़ला पर ह़क़ है कि एक साल की ह़लाल रोज़ी उस पर कुशादा फ़रमाए।"(2)

बाज़ साइल कह दिया करते हैं कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये दो, ख़ुदा के वासिते दो, ह़ालां कि इस की बहुत सख़्त मुमानअ़त आई है। एक ह़दीस में उसे मल्ऊ़न फ़रमाया गया है। और एक ह़दीस में बद तरीन ख़लाइक़ और अगर किसी ने इस त़रह़ सुवाल किया तो जब तक बुरी बात का सुवाल न हो या ख़ुद सुवाल बुरा न हो (जैसे मालदार या ऐसे शख़्स का भीक मांगना जो क़वी तन्दुरुस्त कमाने पर क़ादिर हो) और येह सुवाल को बिला दिक़्क़त पूरा कर सकता है तो पूरा करना ही अदब है कि कहीं बरूए ज़ाहिरे ह़दीस येह भी उसी वईद का मुस्तह़िक़ न हो,(3) वहां अगर साइल मुतअ़न्नत हो(4) तो न दे। नीज़ येह भी लिह़ाज़ रहे कि मस्जिद में सुवाल न करे, ख़ुसूसन जुमुआ़ के दिन लोगों की गरदनें फलांग कर कि येह ह़राम है, बल्कि बाज़ उ़लमा फ़रमाते हैं कि "मस्जिद के साइल को अगर एक पैसा दिया तो सत्तर पैसे और ख़ैरात करे कि उस एक पैसे का कफ़्फ़ारा हो।"(5) मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने एक शख़्स को अ़रफ़े के दिन अ़रफ़ात में सुवाल करते देखा, उसे दुर्रे लगाए और फ़रमाया कि इस दिन में और ऐसी जगह ग़ैरे ख़ुदा से सुवाल करता है!(6)

---

1 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب في الاستعفاف، الحديث: ١٦٤٥، ج٢، ص١٧٠.

2 ..... "المعجم الصغير"للطبرانی ، الحديث: ٢١٤، ج١، ص١٤١.

3 ...त़बरानी मोअ्जमे कबीर में अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं :

((ملعون من سال بوجه اللّٰه و ملعون من سئِل بوجه اللّٰه ثم منع سائله مالم يسال هجرا)).

("الترغيب و الترهيب"، كتاب الصدقات، ترهيب السائل أن يسأل بوجه اللّٰه غير الجنة... إلخ، الحديث: ١، ج١، ص٣٤٠).

तजनीस नासिरी फिर तातारख़ानिया फिर हिन्दिय्या में है :

اذا قال السائل بحق اللّٰه تعالیٰ او بحق محمد صلی اللّٰه تعالیٰ علیه وسلّم ان تعطینی کذا لا یحب علیه فی الحکم والاحسن فی المروءة ان یعطیه. وعن ابن المبارك قال یعجبنی اذا سأل سائل بوجه اللّٰه تعالیٰ ان لا یعطی۔ ۱۲منہ

(انظر: "ردالمحتار"، كتاب الهبة، مطلب في معنى التمليك، ج١٢، ص٦٤٩.)

4 ...यानी सुवाल करने वाला ख़ुद अपनी ज़िल्लत के दरपै हो यानी पेशावर भिकारी हो।

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الهبة، مطلب في معنى التمليك، ج١٢، ص٦٤٩.

6 ..... "مشكاة المصابيح"، كتاب الزكاة، باب من لا تحل له المسألة ومن تحل له، الحديث: ١٨٥٥، ج١، ص٥١٤.

www.dawateislami.net

इन चन्द अह़ादीस के देखने से मालूम हुवा होगा कि भीक मांगना बहुत ज़िल्लत की बात है बग़ैर ज़रूरत सुवाल न करे और ह़ालते ज़रूरत में भी उन उमूर का लिह़ाज़ रखे, जिन से मुमानअ़त वारिद है और सुवाल की अगर ह़ाजत ही पड़ जाए तो मुबालग़ा हरगिज़ न करे कि बे लिये पीछा न छोड़े कि इस की भी मुमानअ़त आई है।

सदक़ाते नफ़्ल का बयान

अल्लाह तआ़ला की राह में देना निहायत अच्छा काम है, माल से तुम को फ़ाएदा न पहुंचा तो तुम्हारे क्या काम आया और अपने काम का वोही है जो खा पहन लिया या आख़िरत के लिये ख़र्च किया, न वोह कि जम्अ़ किया और दूसरों के लिये छोड़ गए। इस के फ़ज़ाइल में चन्द ह़दीसें सुनिये और इन पर अ़मल कीजिये, **अल्लाह** तआ़ला तौफ़ीक़ देने वाला है।

ह़दीस 1 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "बन्दा कहता है : मेरा माल है, मेरा माल है और उसे तो उस के माल से तीन ही क़िस्म का फ़ाएदा है, जो खा कर फ़ना कर दिया, या पहन कर पुराना कर दिया, या अ़त़ा कर के आख़िरत के लिये जम्अ़ किया और इस के सिवा जाने वाला है कि औरों के लिये छोड़ जाएगा।"(1)

ह़दीस 2 बुख़ारी व नसाई इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "तुम में कौन है कि उसे अपने वारिस का माल अपने माल से ज़ियादा मह़बूब है ?" सह़ाबा ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! हम में कोई ऐसा नहीं, जिसे अपना माल ज़ियादा मह़बूब न हो। फ़रमाया : "अपना माल तो वोह है, जो आगे रवाना कर चुका और जो पीछे छोड़ गया, वोह वारिस का माल है।"(2)

ह़दीस 3 इमाम बुख़ारी अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "अगर मेरे पास उ़ह़ुद बराबर सोना हो तो मुझे येही पसन्द आता है कि तीन रातें न गुज़रने पाएं और उस में का मेरे पास कुछ रह जाए। हां, अगर मुझ पर दैन हो तो उस के लिये कुछ रख लूंगा।"(3)

ह़दीस 4 व 5 सह़ीह़ मुस्लिम में इन्हीं से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कोई दिन ऐसा नहीं कि सुब्ह़ होती है, मगर दो फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं और उन में एक कहता है : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! ख़र्च करने वाले को बदला दे और दूसरा कहता है : ऐ

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزهد والرقائق، باب الدنيا سجن للمؤمن وجنة للكافر، الحديث: ٢٩٥٩، ص١٥٨٢.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الرقائق، باب ماقدم من ماله فهو له، الحديث: ٦٤٤٢، ج٤، ص٢٣٠.
3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الرقائق، باب قول النبى صلى الله عليه وسلم ما يسرنى أن عندى مثل احد هذا ذهبا، الحديث: ٦٤٤٥، ج٤، ص٢٣٢.

www.dawateislami.net

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! रोकने वाले के माल को तलफ़ कर।''[1] और इसी के मिस्ल इमाम अह़मद व इब्ने ह़ब्बान व ह़ाकिम ने अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की।

ह़दीस 6 सह़ीह़ैन में है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से फ़रमाया : ''ख़र्च कर और शुमार न कर कि **अल्लाह** तआ़ला शुमार कर के देगा और बन्द न कर कि **अल्लाह** तआ़ला भी तुझ पर बन्द कर देगा। कुछ दे जो तुझे इस्तिता़अ़त हो।''[2]

ह़दीस 7 नीज़ सह़ीह़ैन में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ इब्ने आदम ! ख़र्च कर, मैं तुझ पर ख़र्च करूंगा।''[3]

ह़दीस 8 सह़ीह़ मुस्लिम व सुनने तिरमिज़ी में अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ऐ इब्ने आदम ! बचे हुए का ख़र्च करना, तेरे लिये बेहतर है और उस का रोकना, तेरे लिये बुरा है और ब क़दरे ज़रूरत रोकने पर मलामत नहीं और उन से शुरूअ़ कर जो तेरी परवरिश में हैं।''[4]

ह़दीस 9 सह़ीह़ैन में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''बख़ील और सदक़ा देने वाले की मिसाल उन दो शख़्सों की है जो लोहे की ज़िरह पहने हुए हैं, जिन के हाथ सीने और गले से जकड़े हुए हैं तो सदक़ा देने वाले ने जब सदक़ा दिया वोह ज़िरह कुशादा हो गई और बख़ील जब सदक़ा देने का इरादा करता है, हर कड़ी अपनी जगह को पकड़ लेती है वोह कुशादा करना भी चाहता है तो कुशादा नहीं होती।''[5]

ह़दीस 10 सह़ीह़ मुस्लिम में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''ज़ुल्म से बचो कि ज़ुल्म क़ियामत के दिन तारीकियां है और बुख़्ल से बचो कि बुख़्ल ने अगलों को हलाक किया, इसी बुख़्ल ने उन्हें ख़ून बहाने और ह़राम को ह़लाल करने पर आमादा किया।''[6]

ह़दीस 11 नीज़ इसी में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) किस सदक़े का ज़ियादा अज्र है ? फ़रमाया : उस का कि सिह़्ह़त की ह़ालत में हो और लालच हो, मोह़ताजी का डर हो और तवंगरी की आरज़ू, येह नहीं कि

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب في المنفق والممسك، الحديث: ١٠١٠ ص٥٠٤.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب الصدقة فيما استطاع، الحديث: ١٤٣٤، ج١، ص٤٨٣. كتاب الهبة، باب هبة المرأة لغير زوجها... إلخ، الحديث: ٢٥٩١، ص٢٠٤.
3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب النفقات، باب فضل النفقة على الأهل، الحديث: ٥٣٥٢، ج٣، ص٥١١.
4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب بيان أن اليد العليا خير من اليد السفلى... إلخ، الحديث: ١٠٣٦، ص٥١٦.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب مثل المنفق والبخيل، ٧٦-(١٠٢١)، ص٥١٠.
6 ..... "صحيح مسلم"، كتاب البر والصلة والأدب، باب تحريم الظلم، الحديث: ٢٥٧٨، ص١٣٩٤.

www.dawateislami.net

छोड़े रहे और जब जान गले को आ जाए तो कहे इतना फ़ुलां को और इतना फ़ुलां को देना और येह तो फ़ुलां का हो चुका यानी वारिस का।''(1)

ह़दीस 12 सह़ीहैन में अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, कहते हैं : मैं हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) काबए मुअ़ज़्ज़मा के साए में तशरीफ़ फ़रमा थे, मुझे देख कर फ़रमाया : ''क़सम है रब्बे काबा की ! वोह टोटे में हैं।'' मैं ने अ़र्ज़ की : मेरे मां बाप हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) पर क़ुरबान वोह कौन लोग हैं ? फ़रमाया : ''ज़ियादा माल वाले, मगर जो इस त़रह़ और इस त़रह़ और इस त़रह़ करे आगे पीछे दहने बाएं यानी हर मौक़अ़ पर ख़र्च करे और ऐसे लोग बहुत कम हैं।''(2)

ह़दीस 13 सुनने तिरमिज़ी में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''सख़ी क़रीब है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से, क़रीब है जन्नत से, क़रीब है आदमियों से, दूर है जहन्नम से और बख़ील दूर है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से, दूर है जन्नत से, दूर है आदमियों से, क़रीब है जहन्नम से, और जाहिल सख़ी **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नज़्दीक ज़ियादा प्यारा है, बख़ील आ़बिद से।''(3)

ह़दीस 14 सुनने अबू दावूद में अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''आदमी का अपनी ज़िन्दगी (यानी सिह़्ह़त) में एक दिरम सदक़ा करना, मरते वक़्त के सौ दिरहम सदक़ा करने से ज़ियादा बेहतर है।''(4)

ह़दीस 15 इमाम अह़मद व नसाई व दारिमी व तिरमिज़ी अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो शख़्स मरते वक़्त सदक़ा देता या आज़ाद करता है, उस की मिसाल उस शख़्स की है कि जब आसूदा हो लिया तो हदिय्या करता है।''(5)

ह़दीस 16 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''एक शख़्स जंगल में था, उस ने अब्र में एक आवाज़ सुनी कि फ़ुलां के बाग़ को सेराब कर, वोह अब्र एक किनारे को हो गया और उस ने पानी संगिस्तान में गिराया और एक नाली ने वोह सारा पानी ले लिया, वोह शख़्स पानी के पीछे हो लिया, एक शख़्स को देखा कि अपने बाग़ में खड़ा हुवा खुरपिया से पानी फेर रहा है। उस ने कहा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दे ! तेरा क्या नाम है ? उस ने कहा : फ़ुलां नाम, वोही नाम जो उस ने अब्र में से सुना। उस ने कहा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के बन्दे ! तू मेरा नाम क्यूं पूछता है ? उस ने

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب بيان ان افضل الصدقة صدقة الصحيح الشحيح، الحديث: ١٠٣٢، ص٥١٥.
2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب تغليظ عقوبة من لايؤدى الزكاة، الحديث: ٩٩٠، ص٤٩٥.
3 ..... "جامع الترمذي"، أبواب البر والصلة، باب ماجاء في السخاء، الحديث: ١٩٦٨، ج٣، ص٣٨٧.
4 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الوصايا، باب ماجاء في كراهية الإضرار في الوصية، الحديث: ٢٨٦٦، ج٣، ص١٥٥.
5 ..... "سنن الدارمي"، كتاب الوصايا، باب من أحب الوصية ومن كره، الحديث: ٣٢٢٦، ج٢، ص٥٠٥.
و "جامع الترمذي"، ابواب الوصايا... الخ، باب ماجاء في الرجل يتصدق ... الخ، الحديث: ٢١٢٣، ج٤، ص٤٤.

www.dawateislami.net

कहा : मैं ने उस अब्र में से जिस का येह पानी है, एक आवाज़ सुनी कि वोह तेरा नाम ले कर कहता है : फ़ुलां के बाग़ को सेराब कर, तो तू क्या करता है (कि तेरा नाम ले कर पानी भेजा जाता है) ? जवाब दिया कि जो कुछ पैदा होता उस में से एक तिहाई ख़ैरात करता हूं और एक तिहाई मैं और मेरे बाल बच्चे खाते हैं और एक तिहाई बोने के लिये रखता हूं।"[1]

ह़दीस 17 सह़ीहैन में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "बनी इसराईल में तीन शख़्स थे : एक बरस वाला, दूसरा गन्जा, तीसरा अन्धा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन का इम्तिह़ान लेना चाहा, उन के पास एक फ़रिश्ता भेजा, वोह फ़रिश्ता बरस वाले के पास आया। उस से पूछा, तुझे क्या चीज़ ज़ियादा मह़बूब है ? उस ने कहा : अच्छा रंग और अच्छा चमड़ा और येह बात जाती रहे, जिस से लोग घिन करते हैं। फ़रिश्ते ने उस पर हाथ फेरा, वोह घिन की चीज़ जाती रही और अच्छा रंग और अच्छी खाल उसे दी गई, फ़रिश्ते ने कहा : तुझे कौन सा माल ज़ियादा मह़बूब है ? उस ने ऊंट कहा या गाय (रावी का शक है, मगर बरस वाले और गन्जे में से एक ने ऊंट कहा, दूसरे ने गाय)। उसे दस[10] महीने की ह़ामिला ऊंटनी दी और कहा कि **अल्लाह** तआ़ला तेरे लिये इस में बरकत दे।

फिर गन्जे के पास आया, उस से कहा : तुझे क्या शै ज़ियादा मह़बूब है ? उस ने कहा : ख़ूब सूरत बाल और येह जाता रहे, जिस से लोग मुझ से घिन करते हैं। फ़रिश्ते ने उस पर हाथ फेरा, वोह बात जाती रही और ख़ूबसूरत बाल उसे दिये गए। उस से कहा : तुझे कौन सा माल मह़बूब है ? उस ने गाय बताई। एक गाभन गाय उसे दी गई और कहा **अल्लाह** तआ़ला तेरे लिये इस में बरकत दे।

फिर अन्धे के पास आया और कहा : तुझे क्या चीज़ ज़ियादा मह़बूब है ? उस ने कहा : येह कि **अल्लाह** तआ़ला मेरी निगाह वापस दे कि मैं लोगों को देखूं। फ़रिश्ते ने हाथ फेरा, **अल्लाह** तआ़ला ने उस की निगाह वापस दी। फ़रिश्ते ने पूछा, तुझे कौन सा माल ज़ियादा पसन्द है ? उस ने कहा : बकरी। उसे एक गाभन बकरी दी। अब ऊंटनी और गाय और बकरी सब के बच्चे हुए, एक के लिये ऊंटों से जंगल भर गया। दूसरे के लिये गाय से, तीसरे के लिये बकरियों से।

फिर वोह फ़रिश्ता बरस वाले के पास उस की सूरत और हैअत में हो कर आया (यानी बरस वाला बन कर) और कहा : मैं मर्दे मिस्कीन हूं, मेरे सफ़र में वसाइल मुन्क़त़अ़ हो गए, पहुंचने की सूरत मेरे लिये आज नज़र नहीं आती, मगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की मदद से फिर तेरी मदद से, मैं उस के वासित़े से जिस ने तुझे ख़ूब सूरत रंग और अच्छा चमड़ा और माल दिया है। एक ऊंट का सुवाल करता हूं, जिस से मैं सफ़र में मक़्सद तक पहुंच जाऊं। उस ने जवाब दिया : हुक़ूक़ बहुत हैं। फ़रिश्ते ने कहा : गोया मैं तुझे पहचानता हूं, क्या तू कोढ़ी न था कि

[1] ..... "صحیح مسلم"، کتاب الزھد و الرقائق، باب فضل الانفاق علی المساکین وابن السبیل، الحدیث: ۲۹۸٤، ص۱۵۹۳.

www.dawateislami.net

लोग तुझ से घिन करते थे, फ़क़ीर न था, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने तुझे माल दिया। उस ने कहा : मैं तो इस माल का नस्लन बाद नस्लिन वारिस किया गया हूं। फ़रिश्ते ने कहा : अगर तू झूटा है तो **अल्लाह** तआ़ला तुझे वैसा ही कर दे जैसा तू था।

फिर गन्जे के पास उसी की सूरत बन कर आया, उस से भी वोही कहा : उस ने भी वैसा ही जवाब दिया। फ़रिश्ते ने कहा : अगर तू झूटा है तो **अल्लाह** तआ़ला तुझे वैसा ही कर दे, जैसा तू था।

फिर अन्धे के पास उस की सूरत व हैअत बन कर आया और कहा : मैं मिस्कीन शख़्स और मुसाफ़िर हूं, मेरे सफ़र में वसाइल मुन्क़त़अ़ हो गए, आज पहुंचने की सूरत नहीं, मगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की मदद से फिर तेरी मदद से, मैं उस के वसीले से जिस ने तुझे निगाह वापस दी, एक बकरी का सुवाल करता हूं जिस की वज्ह से मैं अपने सफ़र में मक़्सद तक पहुंच जाऊं। उस ने कहा : मैं अन्धा था, **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे आंखें दीं तू जो चाहे ले ले और जितना चाहे छोड़ दे। ख़ुदा की क़सम ! **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये तू जो कुछ लेगा, मैं तुझ पर मशक़्क़त न डालूंगा। फ़रिश्ते ने कहा : तू अपना माल अपने क़ब्ज़े में रख, बात येह है कि तुम तीनों शख़्सों का इम्तिहान था, तेरे लिये **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रिज़ा है और उन दोनों पर नाराज़ी।"[1]

ह़दीस 18 इमाम अह़मद व अबू दावूद व तिरमिज़ी उम्मे बुजैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से रावी, कहती हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ! मिस्कीन दरवाज़े पर खड़ा होता है और मुझे शर्म आती है कि घर में कुछ नहीं होता कि उसे दूं, इरशाद फ़रमाया : "उसे कुछ दे दे, अगर्चे खुर जला हुवा।"[2]

ह़दीस 19 बैहक़ी ने दलाइलुन्नुबुव्वह में रिवायत की, कि उम्मुल मुअमिनीन उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की ख़िदमत में गोश्त का टुकड़ा हदिय्ये में आया और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم को गोश्त पसन्द था। उन्हों ने ख़ादिमा से कहा : इसे घर में रख दे, शायद हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) तनावुल फ़रमाएं, उस ने त़ाक़ में रख दिया। एक साइल आ कर दरवाज़े पर खड़ा हुवा और कहा : सदक़ा करो, **अल्लाह** तआ़ला तुम में बरकत देगा। लोगों ने कहा : **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तुझ में बरकत दे।[3] साइल चला गया, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : तुम्हारे यहां कुछ खाने की चीज़ है ? उम्मुल मुअमिनीन ने अ़र्ज़ की : हां और ख़ादिमा से फ़रमाया : जा वोह गोश्त ले आ। वोह गई तो त़ाक़ में एक पथ्थर का एक टुकड़ा पाया।

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزهد... الخ، باب الدنيا سجن للمؤمن... إلخ، الحديث: ٢٩٦٤، ص ١٥٨٤.
و "صحيح البخاري"، كتاب احاديث الأنبياء، باب حديث أبرص وأعمى وأقرع في بني إسرائيل، الحديث: ٣٤٦٤، ج٢، ص٤٦٣.

2 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث أم بجيد، الحديث: ٢٧٢١٨، ج ١٠، ص٣٢٨.

3 ...साइल को वापस करना होता तो येह लफ़्ज़ बोलते। 12 मिन्ह

www.dawateislami.net

हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने इरशाद फ़रमाया : "चूंकि तुम ने साइल को न दिया, लिहाज़ा वोह गोश्त पथ्थर हो गया।"(1)

हदीस 20 बैहक़ी शुअ़बुल ईमान में अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सख़ावत जन्नत में एक दरख़्त है, जो सख़ी है, उस ने उस की टहनी पकड़ ली है, वोह टहनी उस को न छोड़ेगी जब तक जन्नत में दाख़िल न कर ले और बुख़्ल जहन्नम में एक दरख़्त है, जो बख़ील है उस ने उस की टहनी पकड़ ली है, वोह टहनी उसे जहन्नम में दाख़िल किये बग़ैर न छोड़ेगी।"(2)

हदीस 21 रज़ीन ने अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "सदक़े में जल्दी करो कि बला सदक़े को नहीं फलांगती।"(3)

हदीस 22 सहीहैन में अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "हर मुसलमान पर सदक़ा है। लोगों ने अ़र्ज़ की : अगर न पाए ? फ़रमाया : अपने हाथ से काम करे, अपने को नफ़्अ़ पहुंचाए और सदक़ा भी दे। अ़र्ज़ की : अगर इस की इस्तिताअ़त न हो या न करे ? फ़रमाया : साहिबे ह़ाजत परेशान की इआ़नत करे। अ़र्ज़ की : अगर येह भी न करे ? फ़रमाया : नेकी का हुक्म करे। अ़र्ज़ की : अगर येह भी न करे ? फ़रमाया : शर से बाज़ रहे कि येही उस के लिये सदक़ा है।"(4)

हदीस 23 सहीहैन में अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "दो शख़्सों में अ़द्ल करना सदक़ा है, किसी को जानवर पर सुवार होने में मदद देना या उस का अस्बाब उठा देना सदक़ा है और अच्छी बात सदक़ा है और जो क़दम नमाज़ की त़रफ़ चलेगा सदक़ा है, रास्ते से अज़िय्यत की चीज़ दूर करना सदक़ा है।"(5)

हदीस 24 सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो मुसलमान पेड़ लगाए या खेत बोए, उस में से किसी आदमी या परिन्द या चौपाए ने खाया, वोह सब उस के लिये सदक़ा है।"(6)

1 ..... "دلائل النبوة" للبيهقي، باب ماجاء في اللحم الذى صا رحجرا... إلخ، ج٦، ص٣٠٠.
و "مشكاة المصابيح"، كتاب الزكاة، باب الانفاق و كراهية الامساك، الحديث: ١٨٨٠، ج١، ص٥٢١.

2 ..... "شعب الإيمان"، باب في الجودو السخاء، الحديث: ١٠٨٧٧، ج٧، ص٤٣٥.

3 ..... "مشكاة المصابيح"، كتاب الزكاة، باب الانفاق و كراهيةالأمساك، الحديث: ١٨٨٧، ج١، ص٥٢٢.

4 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الأدب، باب كل معروف صدقة، الحديث: ٦٠٢٢، ج٤، ص١٠٥.

5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب بيان أن اسم الصدقة يقع... إلخ، الحديث: ١٠٠٩، ص٥٠٤.

6 ..... "صحيح مسلم"، كتاب المساقاة والمزارعة، باب فضل الغرس والزرع، الحديث: ١٥٥٣، ص٨٤٠.

www.dawateislami.net

ह़दीस 25 व 26 सुनने तिरमिज़ी में अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "अपने भाई के सामने मुस्कुराना भी सदक़ा है, नेक बात का हुक्म करना भी सदक़ा है, बुरी बात से मन्अ़ करना सदक़ा है, राह भूले हुए को राह बताना सदक़ा है, कमज़ोर निगाह वाले की मदद करना सदक़ा है। रास्ते से पथ्थर, कांटा, हड्डी दूर करना सदक़ा है, अपने डोल में से अपने भाई के डोल में पानी डाल देना सदक़ा है।"(1) इसी के मिस्ल इमाम अह़मद व तिरमिज़ी ने जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत की ।

ह़दीस 27 सह़ीह़ैन में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "एक दरख़्त की शाख़ बीच रास्ते पर थी, एक शख़्स गया और कहा : मैं इस को मुसलमानों के रास्ते से दूर कर दूंगा कि उन को ईज़ा न दे, वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया गया।"(2)

ह़दीस 28 अबू दावूद व तिरमिज़ी अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो मुसलमान किसी मुसलमान नंगे को कपड़ा पहना दे, **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नत के सब्ज़ कपड़े पहनाएगा और जो मुसलमान किसी भूके मुसलमान को खाना खिलाए, **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नत के फल खिलाएगा और जो मुसलमान किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलाए, **अल्लाह** तआ़ला उसे रह़ीक़े मख़्तूम (यानी जन्नत की शराबे सर बन्द) पिलाएगा।"(3)

ह़दीस 29 इमाम अह़मद व तिरमिज़ी इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो मुसलमान किसी मुसलमान को कपड़ा पहना दे तो जब तक उस में का उस शख़्स पर एक पैवन्द भी रहेगा, येह **अल्लाह** तआ़ला की ह़िफ़ाज़त में रहेगा।"(4)

ह़दीस 30 व 31 तिरमिज़ी व इब्ने ह़ब्बान अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "सदक़ा रब्बुल इ़ज़्ज़त के ग़ज़ब को बुझाता है और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है।"(5) नीज़ इस के मिस्ल अबू बक्र सिद्दीक़ व दीगर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से मरवी ।

ह़दीस 32 तिरमिज़ी ने ब इफ़ादए तस्ह़ीह़ उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत की, लोगों ने एक बकरी ज़ब्ह़ की थी, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने इरशाद फ़रमाया : "इस में से क्या बाक़ी रहा ?" अ़र्ज़ की : सिवा शाने के कुछ बाक़ी नहीं, इरशाद फ़रमाया :

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب البر والصلة، باب ماجاء في صنائع المعروف، الحديث: ١٩٦٣، ج٣، ص٣٨٤.

2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب البر والصلة والأدب، باب فضل إزالة الأذى عن الطريق، الحديث: ١٢٨-(١٩١٤)(٢٦١٨) ص١٤١٠، ١٤١١.

3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب في فضل سقى الماء، الحديث: ١٦٨٢، ج٢، ص١٨٠.

4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب صفة القيامة، باب ماجاء في ثواب من كسا مسلما، الحديث: ٢٤٩٢، ج٤، ص٢١٨.

5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الزكاة، باب ماجاء في فضل الصدقة، الحديث: ٦٦٤، ج٢، ص١٤٦.

www.dawateislami.net

"शाने के सिवा सब बाक़ी है।"(1)

हदीस 33 अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने खुज़ैमा व इब्ने हब्बान अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "तीन शख़्सों को **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) महबूब रखता है और तीन शख़्सों को मबग़ूज़। जिन को **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) महबूब रखता है, उन में एक येह है कि एक शख़्स किसी क़ौम के पास आया और उन से **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नाम पर सुवाल किया, उस क़राबत के वासिते से सुवाल न किया जो साइल और क़ौम के दरमियान है, उन्हों ने न दिया। उन में से एक शख़्स चला गया और साइल को छुपा कर दिया कि उस को **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) जानता है और वोह शख़्स जिस को दिया और किसी ने न जाना। और एक क़ौम रात भर चली, यहां तक कि जब उन्हें नींद हर चीज़ से ज़ियादा प्यारी हो गई, सब ने सर रख दिये (यानी सो गए), उन में से एक शख़्स खड़ा हो कर दुआ करने लगा और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की आयतें पढ़ने लगा। और एक शख़्स लश्कर में था, दुश्मन से मुक़ाबला हुवा और इन को शिकस्त हुई, उस शख़्स ने अपना सीना आगे कर दिया, यहां तक कि क़त्ल किया जाए या फ़त्ह हो। और वोह तीन जिन्हें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ना पसन्द फ़रमाता है। एक बूढ़ा ज़िनाकार, दूसरा फ़क़ीरे मुतकब्बिर, तीसरा मालदार ज़ालिम।"(2)

हदीस 34 तिरमिज़ी ने अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जब **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने ज़मीन पैदा फ़रमाई तो उस ने हिलना शुरूअ़ किया तो पहाड़ पैदा फ़रमा कर उस पर नस्ब फ़रमा दिये अब ज़मीन ठहर गई, फ़रिश्तों को पहाड़ की सख़्ती देख कर तअ़ज्जुब हुवा, अ़र्ज़ की : ऐ परवरदिगार ! तेरी मख़्लूक़ में कोई ऐसी शै है कि वोह पहाड़ से ज़ियादा सख़्त है ? फ़रमाया : हां, लोहा। अ़र्ज़ की : ऐ रब (عَزَّوَجَلَّ) ! लोहे से ज़ियादा सख़्त कोई चीज़ है ? फ़रमाया : हां, आग। अ़र्ज़ की : आग से भी ज़ियादा कोई सख़्त है ? फ़रमाया : हां, पानी। अ़र्ज़ की : पानी से भी ज़ियादा सख़्त कुछ है ? फ़रमाया : हां, हवा। अ़र्ज़ की : हवा से भी ज़ियादा सख़्त कोई शै है ? फ़रमाया : हां, इब्ने आदम कि दहने हाथ से सदक़ा करता है और उसे बाएं हाथ से छुपाता है।" (3)

हदीस 35 नसाई ने अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मुसलमान अपने कुल माल से **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में जोड़ा ख़र्च करे, जन्नत के दरबान उस का इस्तिक़्बाल करेंगे। हर एक उसे उस की तरफ़ बुलाएगा जो उस के पास है। "मैं ने अ़र्ज़ की : इस की क्या सूरत है ? फ़रमाया : "अगर ऊंट दे तो दो ऊंट और गाय दे तो दो गाय।"(4)

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب صفة القيامة... إلخ، ٣٣_باب، الحديث: ٢٤٧٨، ج٤، ص٢١٢.
2 ..... "سنن النسائي"، كتاب الزكاة، باب ثواب من يعطي، الحديث: ٢٥٦٧، ص٤٢٢.
3 ..... "جامع الترمذي"، أبواب تفسير القرآن، باب في حكمة خلق الجبال... إلخ، الحديث: ٣٣٨٠، ج٥، ص٢٤٢.
4 ..... "سنن النسائي"، كتاب الجهاد، باب فضل النفقة في سبيل الله تعالىٰ، الحديث: ٣١٨٢، ص٥١٩.

www.dawateislami.net

ह़दीस 36 इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व इब्ने माजह मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सदक़ा ख़त़ा को ऐसे दूर करता है जैसे पानी आग को बुझाता है।"(1)

ह़दीस 37 इमाम अह़मद बाज़ सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि "मुसलमान का साया क़ियामत के दिन उस का सदक़ा होगा।"(2)

ह़दीस 38 सह़ीह़ बुख़ारी में अबू हुरैरा व ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "बेहतर सदक़ा वोह है कि पुश्ते ग़ना से हो यानी उस के बाद तवंगरी बाक़ी रहे और उन से शुरूअ़ करो जो तुम्हारी अ़याल में हैं यानी पहले उन को दो फिर औरों को।"(3)

ह़दीस 39 अबू मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से सह़ीह़ैन में मरवी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "मुसलमान जो कुछ अपने अह़्ल पर ख़र्च करता है, अगर सवाब के लिये है तो येह भी सदक़ा है।"(4)

ह़दीस 40 ज़ैनब ज़ौजए अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से सह़ीह़ैन में मरवी, उन्हों ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त कराया, शौहर और यतीम बच्चे जो परवरिश में हैं उन को सदक़ा देना काफ़ी हो सकता है ? इरशाद फ़रमाया : "उन को देने में दूना अज्र है, एक अज्रे क़राबत और एक अज्रे सदक़ा।"(5)

ह़दीस 41 इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व इब्ने माजह व दारिमी सुलैमान बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मिस्कीन को सदक़ा देना, सिर्फ़ सदक़ा है और रिश्ते वाले को देना, सदक़ा भी है और सिलए रेह़्मी भी।"(6)

ह़दीस 42 इमाम बुख़ारी व मुस्लिम उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : घर में जो खाने की चीज़ है, अगर औ़रत उस में से कुछ दे दे मगर ज़ाएअ़ करने के त़ौर पर न हो तो उसे देने का सवाब मिलेगा और शौहर को कमाने का सवाब मिलेगा और ख़ाज़िन (भंडारी) को भी उतना ही सवाब मिलेगा। एक का अज्र दूसरे के अज्र को कम न करेगा।(7) यानी इस सूरत में कि जहां ऐसी आ़दत जारी हो कि औ़रतें दिया करती हों और शौहर मन्अ़ न करते हों और उसी ह़द तक जो आ़दत के मुवाफ़िक़ है मसलन रोटी दो रोटी, जैसा कि हिन्दुस्तान में उ़मूमन रवाज है और अगर शौहर ने मन्अ़ कर

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الإيمان، باب ماجاء في حرمة الصلاة، الحديث: ٢٦٢٥، ج٤، ص٢٨٠.
2 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث رجل من أصحاب النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ١٨٠٦٥، ج٦، ص٣٠٢.
3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب لاصدقة إلا عن ظهر غنى، الحديث: ١٤٢٦، ج١، ص٤٨١.
4 ..... "صحيح البخاري"، كتاب النفقات، باب فضل النفقة على الأهل... إلخ، الحديث: ٥٣٥١، ج٣، ص٥١١.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب فضل النفقة والصدقة... إلخ، الحديث: ١٠٠٠، ص٥٠١.
6 ..... "جامع الترمذي"، ابواب الزكاة، باب ماجاء في الصدقة على ذى القرابة، الحديث: ٦٥٨، ج٢، ص١٤٢.
7 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب من أمر خادمه... إلخ، الحديث: ١٤٢٥، ج١، ص٤٨١.

www.dawateislami.net

दिया हो या वहां की ऐसी आ़दत न हो तो बग़ैर इजाज़त औ़रत को देना जाइज़ नहीं। तिरमिज़ी में अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने ख़ुत्बए हिज्जतुल वदाअ़ में फ़रमाया : औ़रत शौहर के घर से बग़ैर इजाज़त कुछ न ख़र्च करे। अ़र्ज़ की गई : खाना भी नहीं ? फ़रमाया : येह तो बहुत अच्छा माल है।[1]

हदीस 43 सहीहैन में अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ख़ाज़िने मुसलमान अमानत दार कि जो उसे हुक्म दिया गया, पूरा पूरा उस को दे देता है, वोह दो सदक़ा देने वालों में का एक है।"[2]

हदीस 44 हाकिम और त़बरानी औसत़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि "एक लुक़्मा रोटी और एक मुट्ठी ख़ुरमा और इस की मिस्ल कोई और चीज़ जिस से मिस्कीन को नफ़्अ़ पहुंचे। इन की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला तीन शख़्सों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाता है : एक साहिबे ख़ाना जिस ने हुक्म दिया, दूसरी ज़ौजा कि उसे तय्यार करती है, तीसरे ख़ादिम जो मिस्कीन को दे आता है। फिर हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : हम्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये जिस ने हमारे ख़ादिमों को भी न छोड़ा।"[3]

हदीस 45 इब्ने माजह जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी, कहते हैं कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने ख़ुत्बे में फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मरने से पहले **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ रुजूअ़ करो और मश्ग़ूली से पहले आमाले सालिह़ा की त़रफ़ सब्क़त करो और पोशीदा व अ़लानिया सदक़ा दे कर अपने और अपने रब के दरमियान तअ़ल्लुक़ात को मिलाओ तो तुम्हें रोज़ी दी जाएगी और तुम्हारी मदद की जाएगी और तुम्हारी शिकस्तगी दूर की जाएगी।"[4]

हदीस 46 सहीहैन में अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "तुम में हर शख़्स से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कलाम फ़रमाएगा, उस के और **अल्लाह** तआ़ला के माबैन कोई तरजुमान न होगा, वोह अपनी दहनी त़रफ़ नज़र करेगा तो जो कुछ पहले कर चुका है, दिखाई देगा। फिर बाईं त़रफ़ देखेगा तो वोही देखेगा जो पहले कर चुका है। फिर अपने सामने नज़र करेगा तो मुंह के सामने आग दिखाई देगी तो आग से बचो, अगर्चे ख़ुरमे का एक टुकड़ा दे कर।"[5] और इसी के मिस्ल अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द व सिद्दीक़े अक्बर व उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा व अनस व अबू हुरैरा व अबू उमामा व नोमान बिन बशीर वग़ैरहुम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से मरवी।

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الزكاة، باب ماجاء في نفقة المرأة من بيت زوجها، الحديث: ٦٧٠، ج٢، ص١٤٩.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الزكاة، باب اجر الخادم... إلخ، الحديث: ١٤٣٨، ج١، ص٤٨٤.
3 ..... "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٥٣٠٩، ج٤، ص٨٩.
4 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلوات، باب في فرض الجمعة، الحديث: ١٠٨١، ج٢، ص٥.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الزكاة، باب الحث على الصدقة... إلخ، الحديث: ٦٧-(١٠١٦)، ص٥٠٧.

www.dawateislami.net

ह़दीस 47 अबू याला जाबिर और तिरमिज़ी मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने इरशाद फ़रमाया : "सदक़ा ख़त़ा को ऐसे बुझाता है जैसे पानी आग को।"(1)

ह़दीस 48 इमाम अह़मद व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान व ह़ाकिम उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "हर शख़्स क़ियामत के दिन अपने सदक़े के साए में होगा, उस वक़्त तक कि लोगों के दरमियान फ़ैसला हो जाए।"(2) और त़बरानी की रिवायत में येह भी है कि "सदक़ा क़ब्र की ह़रारत को दफ़्अ़ करता है।"(3)

ह़दीस 49 त़बरानी व बैहक़ी ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मुरसलन रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम ! अपने ख़ज़ाने में से मेरे पास कुछ जम्अ़ कर दे, न जलेगा, न डूबेगा, न चोरी जाएगा। तुझे मैं पूरा दूंगा, उस वक़्त कि तू इस का ज़ियादा मोह़ताज होगा।"(4)

ह़दीस 50 व 51 इमाम अह़मद व बज़्ज़ार व त़बरानी व इब्ने ख़ुज़ैमा व ह़ाकिम व बैहक़ी बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से और बैहक़ी अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि "आदमी जब कुछ भी सदक़ा निकालता है तो सत्तर[70] शैत़ान के जबड़े चीर कर निकलता है।"(5)

ह़दीस 52 त़बरानी ने अ़म्र बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि "मुसलमान का सदक़ा उ़म्र में ज़ियादती का सबब है और बुरी मौत को दफ़्अ़ करता है और **अल्लाह** तआ़ला इस की वज्ह से तकब्बुर व फ़ख़्र को दूर फ़रमा देता है।"(6)

ह़दीस 53 त़बरानी कबीर में राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि "सदक़ा बुराई के सत्तर[70] दरवाज़ों को बन्द कर देता है।"(7)

ह़दीस 54 तिरमिज़ी व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान व ह़ाकिम ह़ारिस अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने यह़या बिन ज़करिय्या عَلَیْہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को पांच बातों की वह़ी भेजी कि ख़ुद अ़मल करें और बनी इस्राईल को ह़ुक्म फ़रमाएं कि वोह इन पर अ़मल करें। उन में एक येह है कि उस ने तुम्हें सदक़े का ह़ुक्म फ़रमाया है और इस की मिसाल ऐसी है जैसे किसी को दुश्मन ने क़ैद किया और उस का हाथ

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الإيمان، باب ماجاء في حرمة الصلاة، الحديث: ٢٦٢٥، ج٤، ص٢٨٠.
2 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند الشاميين، حديث عقبه بن عامر، الحديث: ١٧٣٣٥ ج٦، ص١٢٦.
3 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ٧٨٧، ج١٧، ص٢٨٦.
4 ..... "شعب الإيمان"، باب في الزكاة، التحريض على صدقة التطوع، الحديث: ٣٣٤٢، ج٣، ص٢١١.
5 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث بريدة الأسلمي، الحديث: ٢٣٠٢٣، ج٩، ص١٢.
6 ..... "المعجم الكبير"، ، الحديث: ٣١، ج١٧، ص٢٢.
7 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ٤٤٠٢، ج٤، ص٢٧٤.

www.dawateislami.net

गरदन से मिला कर बांध दिया और उसे मारने के लिये लाए, उस वक़्त थोड़ा बहुत जो कुछ था, सब को दे कर अपनी जान बचाई।"[1]

ह़दीस 55 इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान व ह़ाकिम अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "जिस ने ह़राम माल जम्अ़ किया फिर उसे सदक़ा किया तो उस में उस के लिये कुछ सवाब नहीं, बल्कि गुनाह है।"[2]

ह़दीस 56 अबू दावूद व इब्ने ख़ुज़ैमा व ह़ाकिम इन्हीं से रावी, अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : "कम माया शख़्स का कोशिश कर के सदक़ा देना।"[3]

ह़दीस 57 नसाई व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान इन्हीं से रावी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "एक दिरहम लाख दिरहम से बढ़ गया।" किसी ने अ़र्ज़ की : येह क्यूंकर या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ? फ़रमाया : "एक शख़्स के पास माले कसीर है, उस ने उस में से लाख दिरहम ले कर सदक़ा किये और एक शख़्स के पास सिर्फ़ दो[2] हैं, उस ने उन में से एक को सदक़ा कर दिया।"[4]

रोज़े का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ الصِّیَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۝ اَیَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِیْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَیَّامٍ اُخَرَ ؕ وَ عَلَى الَّذِیْنَ یُطِیْقُوْنَهٗ فِدْیَةٌ طَعَامُ مِسْكِیْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَیْرًا فَهُوَ خَیْرٌ لَّهٗ ؕ وَ اَنْ تَصُوْمُوْا خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَ الْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْیَصُمْهُ ؕ وَ مَنْ كَانَ مَرِیْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَیَّامٍ اُخَرَ ؕ یُرِیْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْیُسْرَ وَ لَا یُرِیْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۫ وَ لِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لِیْ وَ لْیُؤْمِنُوْا بِیْ لَعَلَّهُمْ یَرْشُدُوْنَ ۝ اُحِلَّ لَكُمْ لَیْلَةَ الصِّیَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآىٕكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الأمثال، باب ماجاء في مثل الصلاة والصيام والصدقة، الحديث: ٢٨٧٢، ج٤، ص٣٩٤.

2 ..... "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الزكاة، باب التطوع، الحديث: ٣٣٥٦، ج٥، ص١٥١.

3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب الرخصة في ذلك، الحديث: ١٦٧٧، ج٢، ص١٧٩.

4 ..... "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الزكاة، باب صدقة التطوع، الحديث: ٣٣٣٦، ج٥، ص١٤٤.

www.dawateislami.net

وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ ۪ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۪ ثُمَّ اَتِمُّوا الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِي الْمَسٰجِدِ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ (1)

ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़ा फ़र्ज़ किया गया जैसा उन पर फ़र्ज़ हुवा था जो तुम से पहले हुए, ताकि तुम गुनाहों से बचो चन्द दिनों का। फिर तुम में जो कोई बीमार हो या सफ़र में हो, वोह और दिनों में गिनती पूरी कर ले और जो ताक़त नहीं रखते, वोह फ़िदया दें। एक मिस्कीन का खाना फिर जो ज़ियादा भलाई करे तो येह उस के लिये बेहतर है और रोज़ा रखना तुम्हारे लिये बेहतर है, अगर तुम जानते हो। माहे रमज़ान जिस में क़ुरआन उतारा गया। लोगों की हिदायत को और हिदायत और हक़्क़ो बातिल में जुदाई बयान करने के लिये तो तुम में जो कोई येह महीना पाए तो इस का रोज़ा रखे और जो बीमार या सफ़र में हो वोह दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तुम्हारे साथ आसानी का इरादा करता है, सख़्ती का इरादा नहीं फ़रमाता और तुम्हें चाहिये कि गिनती पूरी करो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की बड़ाई बोलो कि उस ने तुम्हें हिदायत की और इस उम्मीद पर कि उस के शुक्र गुज़ार हो जाओ। और ऐ महबूब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! जब मेरे बन्दे तुम से मेरे बारे में सुवाल करें तो मैं नज़्दीक हूं, दुआ करने वाले की दुआ सुनता हूं जब वोह मुझे पुकारे तो उन्हें चाहिये कि मेरी बात क़बूल करें और मुझ पर ईमान लाएं, इस उम्मीद पर कि राह पाएं। तुम्हारे लिये रोज़े की रात में औरतों से जिमाअ़ हलाल किया गया, वोह तुम्हारे लिये लिबास हैं और तुम उन के लिये लिबास। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को मालूम है कि तुम अपनी जानों पर ख़ियानत करते हो तो तुम्हारी तौबा क़बूल की और तुम से मुआ़फ़ फ़रमाया तो अब उन से जिमाअ़ करो और उसे चाहो जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने तुम्हारे लिये लिखा और खाओ और पियो उस वक़्त तक कि फ़ज्र का सपेद डोरा सियाह डोरे से मुम्ताज़ हो जाए फिर रात तक रोज़ा पूरा करो और उन से जिमाअ़ न करो इस हाल में कि तुम मस्जिदों में मोतकिफ़ हो। येह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की हदें हैं, इन के क़रीब न जाओ, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) अपनी निशानियां यूंही बयान फ़रमाता है कि कहीं वोह बचें।

रोज़ा बहुत उ़म्दा इबादत है, इस की फ़ज़ीलत में बहुत हदीसें आईं। इन में से बाज़ ज़िक्र की जाती हैं :

हदीस 1 सहीह़ बुख़ारी व सहीह़ मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''जब रमज़ान आता है, आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।''(2)

(1) ..... پ۲، البقرة: ۱۸۳ ـ ۱۸۷.

(2) ..... "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب هل يقال رمضان أو شهر رمضان... إلخ، الحديث: ۱۸۹۹، ج۱، ص٦٢٦.

www.dawateislami.net

एक रिवायत में है कि "जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।"(1)

एक रिवायत में है कि "रह़मत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयात़ीन ज़न्जीरों में जकड़ दिये जाते हैं।"(2)

और इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व इब्ने माजह की रिवायत में है : "जब माहे रमज़ान की पहली रात होती है तो शयात़ीन और सरकश जिन्न क़ैद कर लिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं तो उन में से कोई दरवाज़ा खोला नहीं जाता और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं तो उन में से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता और मुनादी पुकारता है : "ऐ ख़ैर त़लब करने वाले ! मुतवज्जेह हो और ऐ शर के चाहने वाले ! बाज़ रह" और कुछ लोग जहन्नम से आज़ाद होते हैं और येह हर रात में होता है।"(3)

इमाम अह़मद व नसाई की रिवायत इन्हीं से है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "रमज़ान आया, येह बरकत का महीना है, **अल्लाह** तआ़ला ने इस के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये, इस में आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और सरकश शैत़ानों के त़ौक़ डाल दिये जाते हैं और इस में एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है, जो इस की भलाई से मह़रूम रहा वोह बेशक मह़रूम है।"(4)

ह़दीस 2 इब्ने माजह अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी, कहते हैं : रमज़ान आया तो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "येह महीना आया, इस में एक रात हज़ार महीनों से बेहतर है, जो इस से मह़रूम रहा, वोह हर चीज़ से मह़रूम रहा और इस की ख़ैर से वोही मह़रूम होगा जो पूरा मह़रूम है।"(5)

ह़दीस 3 बैहक़ी इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रावी, कहते हैं : "जब रमज़ान का महीना आता रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم सब क़ैदियों को रिहा फ़रमा देते और हर साइल को अ़त़ा फ़रमाते।"(6)

ह़दीस 4 बैहक़ी शुअ़बुल ईमान में इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रावी कि नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जन्नत इब्तिदाए साल से साले आइन्दा तक रमज़ान के लिये आरास्ता की जाती है, जब रमज़ान का पहला दिन आता है तो जन्नत के पत्तों से अ़र्श के नीचे एक हवा हूरे ईन पर चलती है, वोह कहती हैं : ऐ रब ! तू अपने बन्दों से हमारे लिये उन को

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب هل يقال رمضان أوشهر رمضان... إلخ، الحديث: ١٨٩٨، ج١، ص٦٢٥.
2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب فضل شهر رمضان، الحديث: ٢ـ(١٠٧٩)، ص٥٤٣.
3 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، با ب ماجاء في فضل شهر رمضان، الحديث: ٦٨٢، ج٢، ص١٥٥.
4 ..... "سنن النسائي"، كتاب الصيام، باب ذكر الاختلاف على معمر فيه، الحديث: ٢١٠٣، ص٣٥٥.
5 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الصيام، باب ماجاء في فضل شهر رمضان، الحديث: ١٦٤٤، ج٢، ص٢٩٨.
6 ..... "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فضائل شهر رمضان، الحديث: ٣٦٢٩، ج٣، ص٣١١.

www.dawateislami.net

शौहर बना, जिन से हमारी आंखें ठन्डी हों और उन की आंखें हम से ठन्डी हों।"[1]

ह़दीस 5 इमाम अह़मद अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "रमज़ान की आख़िर शब में इस उम्मत की मग़्फ़िरत होती है। अ़र्ज़ की गई : क्या वोह शबे क़द्र है ? फ़रमाया : नहीं व लेकिन काम करने वाले को उस वक़्त मज़दूरी पूरी दी जाती है जब काम पूरा कर ले।"[2]

ह़दीस 6 बैहक़ी शुअ़बुल ईमान में सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, कहते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने शाबान के आख़िर दिन में वाज़ फ़रमाया। फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम्हारे पास अ़ज़मत वाला, बरकत वाला महीना आया, वोह महीना जिस में एक रात हज़ार महीनों से बेहतर है, इस के रोज़े **अल्लाह** तआ़ला ने फ़र्ज़ किये और इस की रात में क़ियाम (नमाज़ पढ़ना) तत़व्वोअ़ (यानी सुन्नत), जो इस में नेकी का कोई काम करे तो ऐसा है जैसे और किसी महीने में फ़र्ज़ अदा किया और इस में जिस ने फ़र्ज़ अदा किया तो ऐसा है जैसे और दिनों में सत्तर[70] फ़र्ज़ अदा किये। येह महीना सब्र का है और सब्र का सवाब जन्नत है और येह महीना मुवासात[3] का है और इस महीने में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ाया जाता है, जो इस में रोज़ेदार को इफ़्तार कराए उस के गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है और उस की गरदन आग से आज़ाद कर दी जाएगी और उस इफ़्तार कराने वाले को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा रोज़ा रखने वाले को मिलेगा बग़ैर इस के कि उस के अज्र में से कुछ कम हो।" हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! हम में का हर शख़्स वोह चीज़ नहीं पाता जिस से रोज़ा इफ़्तार कराए ! हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला येह सवाब उस शख़्स को देगा जो एक घूंट दूध या एक खुरमे या एक घूंट पानी से रोज़ा इफ़्तार कराए और जिस ने रोज़ेदार को भर पेट खाना खिलाया उस को **अल्लाह** तआ़ला मेरे ह़ौज़ से पिलाएगा कि कभी प्यासा न होगा यहां तक कि जन्नत में दाख़िल हो जाए। येह वोह महीना है कि इस का अव्वल रह़मत है और इस का औसत़ मग़्फ़िरत है और इस का आख़िर जहन्नम से आज़ादी है। जो अपने ग़ुलाम पर इस महीने में तख़्फ़ीफ़ करे यानी काम में कमी करे, **अल्लाह** तआ़ला उसे बख़्श देगा और जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा।"[4]

ह़दीस 7 सह़ीहैन व तिरमिज़ी व नसाई व सह़ीह़ इब्ने ख़ुज़ैमा में सह्ल बिन सअ़्द

1 ..... "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فضائل شهر رمضان، الحديث: ٣٦٣٣، ج٣، ص٣١٢ ـ ٣١٣.

2 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة، الحديث: ٧٩٢٢، ج٣، ص١٤٤.

3 ...यानी ग़म ख़्वारी और भलाई।

4 ....."شعب الإيمان"، باب في الصيام، فضائل شهر رمضان، الحديث: ٣٦٠٨، ج٣، ص٣٠٥.
و "صحيح ابن خزيمة"، كتاب الصيام، باب فضائل شهر رمضان... إلخ، الحديث: ١٨٨٧، ج٣، ص١٩١.

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जन्नत में आठ दरवाज़े हैं, उन में एक दरवाज़े का नाम रय्यान है, उस दरवाज़े से वोही जाएंगे जो रोज़े रखते हैं।"(1)

ह़दीस 8 बुख़ारी व मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो ईमान की वज्ह से और सवाब के लिये रमज़ान का रोज़ा रखेगा उस के अगले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और जो ईमान की वज्ह से और सवाब के लिये रमज़ान की रातों का क़ियाम करेगा, उस के अगले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और जो ईमान की वज्ह से और सवाब के लिये शबे क़द्र का क़ियाम करेगा उस के अगले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।"(2)

ह़दीस 9 इमाम अह़मद व ह़ाकिम और त़बरानी कबीर में और इब्ने अबिद्दुन्या और बैहक़ी शुअ़बुल ईमान में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "रोज़ा व क़ुरआन बन्दे के लिये शफ़ाअ़त करेंगे, रोज़ा कहेगा : ऐ रब (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं ने खाने और ख़्वाहिशों से दिन में इसे रोक दिया, मेरी शफ़ाअ़त इस के ह़क़ में क़बूल फ़रमा। क़ुरआन कहेगा : ऐ रब (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं ने इसे रात में सोने से बाज़ रखा, मेरी शफ़ाअ़त इस के बारे में क़बूल कर। दोनों की शफ़ाअ़तें क़बूल होंगी।"(3)

ह़दीस 10 सह़ीह़ैन में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "आदमी के हर नेक काम का बदला दस[10] से सात सौ[700] तक दिया जाता है, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : "मगर रोज़ा कि वोह मेरे लिये है और उस की जज़ा मैं दूंगा। बन्दा अपनी ख़्वाहिश और खाने को मेरी वज्ह से तर्क करता है। रोज़ेदार के लिये दो ख़ुशियां हैं : एक इफ़्तार के वक़्त और एक अपने रब (عَزَّوَجَلَّ) से मिलने के वक़्त और रोज़ेदार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है और रोज़ा सिपर है और जब किसी के रोज़े का दिन हो तो न बेहूदा बके और न चीख़े फिर अगर उस से कोई गाली गलोच करे या लड़ने पर आमादा हो तो कह दे : मैं रोज़ादार हूं।"(4) इसी के मिस्ल इमाम मालिक व अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई और इब्ने ख़ुज़ैमा ने रिवायत की।

ह़दीस 11 त़बरानी औसत़ में और बैहक़ी इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक आमाल सात[7] क़िस्म के हैं : दो अ़मल वाजिब करने वाले और दो का बदला उन के बराबर है और एक अ़मल का बदला दस[10] गुना और एक अ़मल का मुआ़वज़ा सात सो है और एक वोह अ़मल है जिस का

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب بدء الخلق، باب صفة أبواب الجنة، الحديث: ٣٢٥٧، ج٢، ص٣٩٤.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب صلاة التراويح، باب فضل من قام رمضان، الحديث: ٢٠٠٩، ج١، ص٦٥٨.
و "صحيح البخاري، كتاب فضل ليلة القدر، باب فضل ليلة القدر، الحديث: ٢٠١٤، ج١، ص٦٦٠.
3 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، الحديث: ٦٦٣٧، ج٢، ص٥٨٦.
4 ..... "مشكاة المصابيح"، كتاب الصوم، الفصل الأول، الحديث: ١٩٥٩، ج١، ص٥٤١.

www.dawateislami.net

सवाब **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ही जाने। वोह दो जो वाजिब करने वाले हैं उन में :

(1) एक येह कि जो ख़ुदा से इस ह़ाल में मिले कि ख़ालिस उसी की इबादत करता था, किसी को उस के साथ शरीक न करता था, उस के लिये जन्नत वाजिब।

(2) दूसरा येह कि जो ख़ुदा से मिला इस ह़ाल में कि उस ने शिर्क किया है तो उस के लिये जहन्नम वाजिब और

(3) जिस ने बुराई की, उस को उसी क़दर सज़ा दी जाएगी और

(4) जिस ने नेकी का इरादा किया, मगर अ़मल न किया तो उस को एक नेकी का बदला दिया जाएगा और

(5) जिस ने नेकी की, उसे दस गुना सवाब मिलेगा और

(6) जिस ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में ख़र्च किया, उस को सात सौ[700] का सवाब मिलेगा। एक दिरहम का सात सौ दिरहम और एक दीनार का सवाब सात सौ[700] दीनार और रोज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये है, इस का सवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता।"[1]

ह़दीस 12 ता 15 इमाम अह़मद ब अस्नादे ह़सन और बैहक़ी रिवायत करते हैं कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "रोज़ा सिपर है और दोज़ख़ से हिफ़ाज़त का मज़बूत क़ल्आ।"[2] इसी के क़रीब जाबिर व उ़स्मान बिन अबिल आ़स व मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से मरवी।

ह़दीस 16 व 17 अबू याला व बैहक़ी सलमह बिन क़ैस और अह़मद व बज़्ज़ार अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दिन का रोज़ा रखा, **अल्लाह** तआ़ला उस को जहन्नम से इतना दूर कर देगा जैसे कव्वा कि जब बच्चा था, उस वक़्त से उड़ता रहा यहां तक कि बूढ़ा हो कर मरा।"[3]

ह़दीस 18 अबू याला व त़बरानी अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अगर किसी ने एक दिन नफ़्ल रोज़ा रखा और ज़मीन भर उसे सोना दिया जाए, जब भी उस का सवाब पूरा न होगा। उस का सवाब तो क़ियामत ही के दिन मिलेगा।"[4]

ह़दीस 19 इब्ने माजह अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने

1 ..... "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فضائل الصوم، الحديث: ٣٥٨٩، ج٣، ص٢٩٨.
و "الترغيب و الترهيب"، كتاب الصوم، الحديث: ٨، ج٢، ص٤٩.
2 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسندأبي هريرة، الحديث: ٩٢٣٦، ج٣، ص٣٦٧.
3 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسندأبي هريرة، الحديث: ١٠٨١٠، ج٣، ص٦١٩.
4 ..... "مسند أبي يعلى"، مسند أبي هريرة، الحديث: ٦١٠٤، ج٥، ص٣٥٣.

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "हर शै के लिये ज़कात है और बदन की ज़कात रोज़ा है और रोज़ा निस्फ़ सब्र है।"[1]

हदीस 20 नसाई व इब्ने खुज़ैमा व हाकिम अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! मुझे किसी अ़मल का हुक्म फ़रमाइये ? फ़रमाया : "रोज़े को लाज़िम कर लो कि इस के बराबर कोई अ़मल नहीं।" मैं ने अ़र्ज़ की : मुझे किसी अ़मल का हुक्म फ़रमाइये ! इरशाद फ़रमाया : "रोज़े को लाज़िम कर लो कि इस के बराबर कोई अ़मल नहीं।" उन्हों ने फिर वोही अ़र्ज़ की : वोही जवाब इरशाद हुवा।[2]

हदीस 21 ता 26 बुख़ारी व मुस्लिम व तिरमिज़ी व नसाई अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो बन्दा **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में एक दिन रोज़ा रखे, **अल्लाह** तआ़ला उस के मुंह को दोज़ख़ से सत्तर[70] बरस की राह दूर फ़रमा देगा।"[3] और इसी की मिस्ल नसाई व तिरमिज़ी व इब्ने माजह अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, और त़बरानी अबू दरदा और तिरमिज़ी अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं, फ़रमाया कि "उस के और जहन्नम के दरमियान **अल्लाह** तआ़ला इतनी बड़ी ख़न्दक़ कर देगा जितना आस्मानो ज़मीन के दरमियान फ़ासिला है।"[4]

और त़बरानी की रिवायत अम्र बिन अ़बसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से है कि "दोज़ख़ उस से सौ बरस की राह दूर होगी।"[5] और अबू याला की रिवायत मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से है कि "ग़ैरे रमज़ान में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में रोज़ा रखा तो तेज़ घोड़े की रफ़्तार से सौ बरस की मसाफ़त पर जहन्नम से दूर होगा।"[6]

हदीस 27 बैहक़ी अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : रोज़ेदार की दुआ़, इफ़्त़ार के वक़्त रद नहीं की जाती।"[7]

हदीस 28 इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व इब्ने माजह व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते : "तीन शख़्स की दुआ़ रद नहीं की जाती। रोज़ादार जिस वक़्त इफ़्त़ार करता है और बादशाहे आ़दिल और मज़्लूम की दुआ़, इस को **अल्लाह** तआ़ला अब्र से ऊपर बुलन्द करता है और

1 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الصيام، باب في الصوم زكاة الجسد، الحديث: ١٧٤٥، ج٢، ص٣٤٦.
2 ..... "سنن النسائي"، كتاب الصيام، باب ذكر الاختلاف... إلخ، الحديث: ٢٢٢٠، ص٣٧١.
و "الترغيب و الترهيب"، كتاب الصوم، الحديث: ٢١، ج٢، ص٥٢.
3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب فضل الصيام في سبيل الله... إلخ، الحديث: ١٦٨-(١١٥٣)، ص٥٨١.
4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب فضائل الجهاد، باب ماجاء في فضل الصوم... إلخ، الحديث: ١٦٣٠، ج٣، ص٢٣٣.
5 ..... "المعجم الأوسط"، باب الباء، الحديث: ٣٢٤٩، ج٢، ص٢٦٨.
6 ..... "مسند أبي يعلىٰ"، مسندمعاذ بن أنس، الحديث: ١٤٨٤، ج٢، ص٣٦.
7 ..... "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فصل فيما يفطر الصائم عليه، الحديث: ٣٩٠٤، ج٣، ص٤٠٧.

www.dawateislami.net

उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोले जाते हैं।" और रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! ज़रूर तेरी मदद करूंगा, अगर्चे थोड़े ज़माने बाद।"(1)

ह़दीस 29 इब्ने ह़ब्बान व बैहक़ी अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने रमज़ान का रोज़ा रखा और उस की ह़ुदूद को पहचाना और जिस चीज़ से बचना चाहिये उस से बचा तो जो पहले कर चुका है उस का कफ़्फ़ारा हो गया।"(2)

ह़दीस 30 इब्ने माजह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने मक्के में माहे रमज़ान पाया और रोज़ा रखा और रात में जितना मुयस्सर आया क़ियाम किया तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये और जगह के एक लाख रमज़ान का सवाब लिखेगा और हर दिन एक गरदन आज़ाद करने का सवाब और हर रात एक गरदन आज़ाद करने का सवाब और हर रोज़ जंग में घोड़े पर सुवार कर देने का सवाब और हर दिन में ह़सना और हर रात में ह़सना लिखेगा।"(3)

ह़दीस 31 बैहक़ी जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "मेरी उम्मत को माहे रमज़ान में पांच बातें दी गईं कि मुझ से पहले किसी नबी को न मिलीं। अव्वल येह कि जब रमज़ान की पहली रात होती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है और जिस की त़रफ़ नज़र फ़रमाएगा, उसे कभी अ़ज़ाब न करेगा। दूसरी येह कि शाम के वक़्त उन के मुंह की बू **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नज़्दीक मुश्क से ज़ियादा अच्छी है। तीसरी येह है कि हर दिन और हर रात में फ़रिश्ते उन के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं। चौथी येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत को हुक्म फ़रमाता है, कहता है : मुस्तइ़द हो जा और मेरे बन्दों के लिये मुज़य्यन हो जा, क़रीब है कि दुन्या की तअ़ब से यहां आ कर आराम करें। पांचवीं येह कि जब आख़िरी रात होती है तो उन सब की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।" किसी ने अ़र्ज़ की : क्या वोह शबे क़द्र है ? फ़रमाया : "नहीं, क्या तू नहीं देखता कि काम करने वाले काम करते हैं, जब काम से फ़ारिग़ होते हैं उस वक़्त मज़दूरी पाते हैं।"(4)

ह़दीस 32 ता 34 ह़ाकिम ने कअ़ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत की, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सब लोग मिम्बर के पास ह़ाज़िर हों। हम ह़ाज़िर हुए, जब हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) मिम्बर के पहले दरजे पर चढ़े, कहा : आमीन। दूसरे पर चढ़े, कहा : आमीन। तीसरे पर चढ़े, कहा : आमीन। जब मिम्बर से तशरीफ़ लाए, हम ने अ़र्ज़ की :

1 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الصيام، باب في الصائم لاترددعوته، الحديث: ١٧٥٢، ج٢، ص٣٤٩.
2 ..... "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الصوم، باب فضل رمضان، الحديث: ٣٤٢٤، ج٥، ص١٨٢-١٨٣.
3 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب الصوم شهر رمضان بمكة، الحديث: ٣١١٧، ج٣، ص٥٢٣.
4 ..... "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فضائل شهر رمضان، الحديث: ٣٦٠٣، ج٣، ص٣٠٣.

www.dawateislami.net

आज हम ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) से ऐसी बात सुनी कि कभी न सुनते थे। फ़रमाया : जिब्रईल ने आ कर अ़र्ज़ की : "वोह शख़्स दूर हो जिस ने रमज़ान पाया और अपनी मग़्फ़िरत न कराई। मैं ने कहा : आमीन। जब दूसरे दरजे पर चढ़ा तो कहा : वोह शख़्स दूर हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और मुझ पर दुरूद न भेजे। मैं ने कहा : आमीन। जब मैं तीसरे दरजे पर चढ़ा कहा : वोह शख़्स दूर हो जिस के मां बाप दोनों या एक को बुढ़ापा आए और उन की ख़िदमत कर के जन्नत में न जाए। मैं ने कहा : आमीन।"(1) इसी के मिस्ल अबू हुरैरा व ह़सन बिन मालिक बिन हुवैरिस رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से इब्ने ह़ब्बान ने रिवायत की।

ह़दीस 35 अस्बहानी ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब रमज़ान की पहली रात होती है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी मख़्लूक़ की त़रफ़ नज़र फ़रमाता है और जब **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) किसी बन्दे की त़रफ़ नज़र फ़रमाए तो उसे कभी अ़ज़ाब न देगा और हर रोज़ दस[10] लाख को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब उन्तीसवीं[29] रात होती है तो महीने भर में जितने आज़ाद किये, उन के मज्मूए़ के बराबर उस एक रात में आज़ाद करता है फिर जब ईदुल फ़ित्ऱ की रात आती है, मलाएका ख़ुशी करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने नूर की ख़ास तजल्ली फ़रमाता है, फ़रिश्तों से फ़रमाता है : "ऐ गुरौहे मलाएका ! उस मज़दूर का क्या बदला है, जिस ने काम पूरा कर लिया ?" फ़रिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : उस को पूरा अज्र दिया जाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मैं तुम्हें गवाह करता हूं कि मैं ने उन सब को बख़्श दिया।"(2)

ह़दीस 36 इब्ने ख़ुज़ैमा ने अबू मस्ऊ़द ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ عَنْه से एक त़वील ह़दीस रिवायत की, उस में येह भी है कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "अगर बन्दों को मालूम होता कि रमज़ान क्या चीज़ है तो मेरी उम्मत तमन्ना करती कि पूरा साल रमज़ान ही हो।"(3)

ह़दीस 37 बज़्ज़ार व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान अम्र बिन मुर्रह जुहन्नी رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! फ़रमाइये तो अगर मैं इस की गवाही दूं कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के रसूल हैं और पांचों नमाज़ें पढ़ूं और ज़कात अदा करूं और रमज़ान के रोज़े रखूं और उस की रातों का क़ियाम करूं तो मैं किन लोगों में से होउंगा ? फ़रमाया : "सिद्दीक़ीन और शुहदा में से।"(4)

---

1 ..... "المستدرك"، كتاب البرو الصلة، باب لعن الله العاق لوالديه... إلخ، الحديث: ٧٣٣٨، ج٥، ص٢١٢.
2 ..... "كنزالعمال"، كتاب الصوم، الحديث: ٢٣٧٠٢، ج٨، ص٢١٩.
3 ..... "صحيح ابن خزيمة"، كتاب الصيام، باب ذكر تزيين الجنة لشهر رمضان... إلخ، الحديث: ١٨٨٦، ج٣، ص١٩٠.
4 ..... "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الصوم، باب فضل رمضان، الحديث: ٣٤٢٩، ج٥، ص١٨٤.

www.dawateislami.net

मसाइले फ़िक़्हिय्या

रोज़ा उ़र्फ़े शर्अ़ में मुसलमान का ब निय्यते इ़बादत सुब्हे सादिक़ से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक अपने को क़स्दन खाने, पीने, जिमाअ़ से बाज़ रखना। औ़रत का हैज़ो निफ़ास से ख़ाली होना शर्त़ है।[1] (عالمگیری)

मस्अला 1 रोज़े के तीन दरजे हैं : एक आ़म लोगों का रोज़ा कि येही पेट और शर्मगाह को खाने पीने जिमाअ़ से रोकना। दूसरा ख़वास का रोज़ा कि इन के इ़लावा कान, आंख, ज़बान, हाथ पाउं और तमाम आज़ा को गुनाह से बाज़ रखना। तीसरा ख़ासुल ख़ास का कि जमीअ़ मा सिवा **अल्लाह**[2] से अपने को बिल कुल्लिया जुदा कर के सिर्फ़ उसी की त़रफ़ मुतवज्जेह रहना।[3] (جوہرہ نیرہ)

मस्अला 2 **रोज़े की पांच क़िस्में हैं :**

(1) फ़र्ज़।

(2) वाजिब।

(3) नफ़्ल।

(4) मक्रूहे तन्ज़ीही।

(5) मक्रूहे तह़रीमी।

फ़र्ज़ व वाजिब की दो क़िस्में हैं : मुअ़य्यन व ग़ैर मुअ़य्यन। फ़र्ज़े मुअ़य्यन जैसे अदाए रमज़ान। फ़र्ज़े ग़ैर मुअ़य्यन जैसे क़ज़ाए रमज़ान और रोज़ए कफ़्फ़ारा। वाजिबे मुअ़य्यन जैसे नज़्रे मुअ़य्यन। वाजिबे ग़ैर मुअ़य्यन जैसे नज़्रे मुत्लक़।

नफ़्ल दो[2] हैं : नफ़्ले मस्नून, नफ़्ले मुस्तह़ब जैसे आ़शूरा यानी दसवीं मुह़र्रम का रोज़ा और इस के साथ नवीं का भी और हर महीने में तेरहवीं, चौदहवीं, पन्दरहवीं और अ़रफ़े का रोज़ा, पीर और जुमेरात का रोज़ा, शश ईद के रोज़े, सौमे दावूद عَلَیْہِ السَّلَام यानी एक दिन रोज़ा एक दिन इफ़्त़ार।

मक्रूहे तन्ज़ीही जैसे सिर्फ़ हफ़्ते के दिन रोज़ा रखना। नैरोज़ व मेहरगान के दिन रोज़ा। सौमे दह्र (यानी हमेशा रोज़ा रखना), सौमे सुकूत (यानी ऐसा रोज़ा जिस में कुछ बात न करे), सौमे विसाल कि रोज़ा रख कर इफ़्त़ार न करे और दूसरे दिन फिर रोज़ा रखे, येह सब

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٤.

2 ...यानी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा काएनात की हर चीज़।

3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.

www.dawateislami.net

मक्रूहे तन्ज़ीही हैं। मक्रूहे तह़रीमी जैसे ईद और अय्यामे तशरीक़[1] के रोज़े।[2] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 3 रोज़े के मुख़्तलिफ़ अस्बाब हैं, रोज़ए रमज़ान का सबब माहे रमज़ान का आना, रोज़ए नज़्र का सबब मन्नत मानना, रोज़ए कफ़्फ़ारा का सबब क़सम तोड़ना या क़त्ल या ज़िहार वग़ैरा।[3] (عالمگیری)

मस्अला 4 माहे रमज़ान का रोज़ा फ़र्ज़ जब होगा कि वोह वक़्त जिस में रोज़े की इब्तिदा कर सके पा ले यानी सुब्ह़े सादिक़ से ज़ह़्वए कुब्रा तक कि इस के बाद रोज़े की निय्यत नहीं हो सकती, लिहाज़ा रोज़ा नहीं हो सकता और रात में निय्यत हो सकती है मगर रोज़े की मह़ल नहीं, लिहाज़ा अगर मज्नून को रमज़ान की किसी रात में होश आया और सुब्ह़ जुनून की ह़ालत में हुई या ज़ह़्वए कुब्रा के बाद किसी दिन होश आया तो उस पर रमज़ान के रोज़े की क़ज़ा नहीं, जब कि पूरा रमज़ान इसी जुनून में गुज़र जाए और एक दिन भी ऐसा वक़्त मिल गया, जिस में निय्यत कर सकता है तो सारे रमज़ान की क़ज़ा लाज़िम है।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 5 रात में रोज़े की निय्यत की और सुब्ह़ ग़शी की ह़ालत में हुई और येह ग़शी कई दिन तक रही तो सिर्फ़ पहले दिन का रोज़ा हुवा बाक़ी दिनों की क़ज़ा रखे, अगर्चे पूरे रमज़ान भर ग़शी रही अगर्चे निय्यत का वक़्त न मिला।[5] (جوہرہ، درمختار)

मस्अला 6 अदाए रोज़ए रमज़ान और नज़्रे मुअ़य्यन और नफ़्ल के रोज़ों के लिये निय्यत का वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब से ज़ह़्वए कुब्रा तक है, इस वक़्त में जब निय्यत कर ले, येह रोज़े हो जाएंगे। लिहाज़ा आफ़्ताब डूबने से पहले निय्यत की, कि कल रोज़ा रखूंगा फिर बेहोश हो गया और ज़ह़्वए कुब्रा के बाद होश आया तो येह रोज़ा न हुवा और आफ़्ताब डूबने के बाद निय्यत की थी तो हो गया।[6] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 7 ज़ह़्वए कुब्रा निय्यत का वक़्त नहीं, बल्कि इस से पेशतर निय्यत हो जाना ज़रूरी है और अगर ख़ास उस वक़्त यानी जिस वक़्त आफ़्ताब ख़त्ते निस्फ़ुन्नहारे शरई पर पहुंच गया, निय्यत की तो रोज़ा न हुवा।[7] (درمختار)

---

1 ...यानी ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्ह़ा और ग्यारह, बारह, तेरह ज़ुल ह़िज्जा, इन पांच दिनों।

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٤.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٣٨٨ ـ ٣٩٢.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٤.

4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٣٨٥ ـ ٣٨٧.

5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.
و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٣٨٨.

6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٣٩٣.

7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٣٩٤.

www.dawateislami.net

मस्अला 8 निय्यत के बारे में नफ़्ल आ़म है, सुन्नत व मुस्तह़ब व मक्रूह सब को शामिल है कि इन सब के लिये निय्यत का वोही वक़्त है।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 9 जिस त़रह़ और जगह बताया गया कि निय्यत दिल के इरादे का नाम है, ज़बान से कहना शर्त़ नहीं। यहां भी वोही मुराद है मगर ज़बान से कह लेना मुस्तह़ब है, अगर रात में निय्यत करे तो यूं कहे :

نَوَيْتُ اَنْ اَصُوْمَ غَدًا لِلّٰهِ تَعَالٰى مِنْ فَرْضِ رَمَضَانَ هٰذَا .

''यानी मैं ने निय्यत की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इस रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा कल रखूंगा।''

और अगर दिन में निय्यत करे तो येह कहे :

نَوَيْتُ اَنْ اَصُوْمَ هٰذَا الْيَوْمَ لِلّٰهِ تَعَالٰى مِنْ فَرْضِ رَمَضَانَ .

''यानी मैं ने निय्यत की, कि **अल्लाह** तआ़ला के लिये आज रमज़ान का फ़र्ज़ रोज़ा रखूंगा।''

और अगर तबर्रुक व त़लबे तौफ़ीक़ के लिये निय्यत के अल्फ़ाज़ में اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰى भी मिला लिया तो ह़रज नहीं और अगर पक्का इरादा न हो, मुज़ब्ज़ब हो तो निय्यत ही कहां हुई।[2] (جوہرہ نیرہ)

मस्अला 10 दिन में निय्यत करे तो ज़रूरी है कि येह निय्यत करे कि मैं सुब्ह़े सादिक़ से रोज़ादार हूं और अगर येह निय्यत है कि अब से रोज़ादार हूं, सुब्ह़ से नहीं तो रोज़ा न हुवा।[3] (جوہرہ، ردالمحتار)

मस्अला 11 अगर्चे इन तीन क़िस्म के रोज़ों की निय्यत दिन में भी हो सकती है, मगर रात में निय्यत कर लेना मुस्तह़ब है।[4] (جوہرہ)

मस्अला 12 यूं निय्यत की, कि कल कहीं दावत हुई तो रोज़ा नहीं और न हुई तो रोज़ा है येह निय्यत सह़ीह़ नहीं, बहर ह़ाल वोह रोज़ादार नहीं।[5] (عالمگیری)

मस्अला 13 रमज़ान के दिन में न रोज़े की निय्यत है न येह कि रोज़ा नहीं, अगर्चे मालूम

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٣٩٣.

2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.

3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.
و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص ٣٩٤.

4 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول في تعريفه... إلخ، ج١، ص١٩٥.

www.dawateislami.net

है कि येह महीना रमज़ान का है तो रोज़ा न हुवा।[1] (عالمگیری)

मस्अला 14 रात में निय्यत की फिर इस के बाद रात ही में खाया पिया, तो निय्यत जाती न रही वोही पहली काफ़ी है फिर से निय्यत करना ज़रूरी नहीं।[2] (جوہرہ)

मस्अला 15 औ़रत हैज़ो निफ़ास वाली थी, उस ने रात में कल रोज़ा रखने की निय्यत की और सुब्हे सादिक़ से पहले हैज़ो निफ़ास से पाक हो गई तो रोज़ा सहीह़ हो गया।[3] (جوہرہ)

मस्अला 16 दिन में वोह निय्यत काम की है कि सुब्हे सादिक़ से निय्यत करते वक़्त तक रोज़े के ख़िलाफ़ कोई अम्र न पाया गया हो, लिहाज़ा अगर सुब्हे सादिक़ के बाद भूल कर भी खा पी लिया हो या जिमाअ़ कर लिया तो अब निय्यत नहीं हो सकती।[4] (جوہرہ) मगर मोतमद येह है कि भूलने की ह़ालत में अब भी निय्यत सहीह़ है।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 17 जिस त़रह़ नमाज़ में कलाम की निय्यत की, मगर बात न की तो नमाज़ फ़ासिद न होगी। यूंही रोज़े में तोड़ने की निय्यत से रोज़ा नहीं टूटेगा, जब तक तोड़ने वाली चीज़ न करे।[6] (جوہرہ)

मस्अला 18 अगर रात में रोज़े की निय्यत की फिर पक्का इरादा कर लिया कि नहीं रखेगा तो वोह निय्यत जाती रही। अगर नई निय्यत न की और दिन भर भूका प्यासा रहा और जिमाअ़ से बचा तो रोज़ा न हुवा।[7] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 19 सह़री खाना भी निय्यत है, ख़्वाह रमज़ान के रोज़े के लिये हो या किसी और रोज़े के लिये, मगर जब सह़री खाते वक़्त येह इरादा है कि सुब्ह़ को रोज़ा न होगा तो येह सह़री खाना निय्यत नहीं।[8] (جوہرہ،ردالمحتار)

मस्अला 20 रमज़ान के हर रोज़े के लिये नई निय्यत की ज़रूरत है। पहली या किसी तारीख़ में पूरे रमज़ान के रोज़े की निय्यत कर ली तो येह निय्यत सिर्फ़ उसी एक दिन के ह़क़ में है, बाक़ी दिनों के लिये नहीं।[9] (جوہرہ)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول في تعريفه... إلخ، ج١، ص١٩٥.
2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.
3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.
4 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٦.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب مايفسد الصوم ومالايفسده، ج٣، ص٤١٩.
6 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٥.
7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٣٩٨.
8 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٦.
9 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 21 येह तीनों यानी रमज़ान की अदा और नफ़्ल व नज़्रे मुअ़य्यन मुत्लक़न रोज़े की निय्यत से हो जाते हैं, ख़ास इन्हीं की निय्यत ज़रूरी नहीं। यूंही नफ़्ल की निय्यत से भी अदा हो जाते हैं, बल्कि ग़ैरे मरीज़ व मुसाफ़िर ने रमज़ान में किसी और वाजिब की निय्यत की जब भी इसी रमज़ान का होगा।[1] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 22 मुसाफ़िर और मरीज़ अगर रमज़ान शरीफ़ में नफ़्ल या किसी दूसरे वाजिब की निय्यत करें तो जिस की निय्यत करेंगे वोही होगा रमज़ान का नहीं।[2] (تنویرالابصار) और मुत्लक़ रोज़े की निय्यत करें तो रमज़ान का होगा।[3] (عالمگیری)

मस्अला 23 नज़्रे मुअ़य्यन यानी फ़ुलां दिन रोज़ा रखूंगा, इस में अगर उस दिन किसी और वाजिब की निय्यत से रोज़ा रखा तो जिस की निय्यत से रोज़ा रखा वोह हुवा, मन्नत की क़ज़ा दे।[4] (عالمگیری)

मस्अला 24 रमज़ान के महीने में कोई और रोज़ा रखा और उसे येह मालूम न था कि येह माहे रमज़ान है, जब भी रमज़ान ही का रोज़ा हुवा।[5] (درمختار)

मस्अला 25 कोई मुसलमान दारुल ह़र्ब में क़ैद था और हर साल येह सोच कर कि रमज़ान का महीना आ गया, रमज़ान के रोज़े रखे, बाद को मालूम हुवा कि किसी साल भी रमज़ान में न हुए बल्कि हर साल रमज़ान से पेश्तर हुए तो पहले साल का तो हुवा ही नहीं कि रमज़ान से पेश्तर रमज़ान का रोज़ा हो नहीं सकता और दूसरे तीसरे साल की निस्बत येह है कि अगर मुत्लक़ रमज़ान की निय्यत की थी तो हर साल के रोज़े साले गुज़श्ता के रोज़ों की क़ज़ा हैं और अगर इस साल के रमज़ान की निय्यत से रखे तो किसी साल के न हुए।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 26 अगर सूरते मज़्कूरा में तह़र्री की यानी सोचा और दिल में येह बात जमी कि येह रमज़ान का महीना है और रोज़ा रखा, मगर वाक़ेई में रोज़े शव्वाल के महीने में हुए तो अगर रात से निय्यत की तो हो गए, क्यूं कि क़ज़ा में क़ज़ा की निय्यत शर्त़ नहीं, बल्कि अदा की निय्यत से भी क़ज़ा हो जाती है फिर अगर रमज़ान व शव्वाल दोनों तीस[30] तीस[30] दिन या उन्तीस[29] उन्तीस[29] दिन के हैं तो एक रोज़ा और रखे कि ईद का रोज़ा मम्नूअ़ है और अगर रमज़ान तीस[30] का और शव्वाल उन्तीस[29] का तो दो और रखे और रमज़ान उन्तीस[29] का था और येह तीस[30] का तो पूरे हो गए और अगर वोह महीना ज़ुल ह़िज्जा का था तो अगर दोनों

1 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، ج۳، ص۳۹۳، وغیرہ.
2 ..... "تنویر الأبصار"، کتاب الصوم، ج۳، ص۳۹۵.
3 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب الأول، ج۱، ص۱۹۵ ـ ۱۹۶.
4 ..... المرجع السابق، ص۱۹۶. 5 ..... "الدرالمختار"،
6 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصوم، ج۳، ص۳۹۷.

www.dawateislami.net

तीस[30] या उन्तीस[29] के हैं तो चार रोज़े और रखे और रमज़ान तीस का था येह उन्तीस का तो पांच और बिल अ़क्स तो तीन रखे। ग़रज़ मम्नूअ़ रोज़े निकाल कर वोह तादाद पूरी करनी होगी जितने रमज़ान के दिन थे।[1] (عالمگیری)

मस्अला 27 अदाए रमज़ान और नज़्रे मुअ़य्यन और नफ़्ल के इ़लावा बाक़ी रोज़े, मसलन क़ज़ाए रमज़ान और नज़्रे ग़ैरे मुअ़य्यन और नफ़्ल की क़ज़ा (यानी नफ़्ली रोज़ा रख कर तोड़ दिया था उस की क़ज़ा) और नज़्रे मुअ़य्यन की क़ज़ा और कफ़्फ़ारे का रोज़ा और ह़रम में शिकार करने की वज्ह से जो रोज़ा वाजिब हुवा वोह और ह़ज में वक़्त से पहले सर मुंडाने का रोज़ा और तमत्तोअ़ का रोज़ा, इन सब में ऐ़न सुब्ह़ चमकते वक़्त या रात में निय्यत करना ज़रूरी है और येह भी ज़रूरी है कि जो रोज़ा रखना है, ख़ास उस मुअ़य्यन की निय्यत करे और इन रोज़ों की निय्यत अगर दिन में की तो नफ़्ल हुए फिर भी इन का पूरा करना ज़रूरी है, तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी। अगर्चे येह उस के इ़ल्म में हो कि जो रोज़ा रखना चाहता है येह वोह नहीं होगा बल्कि नफ़्ल होगा।[2] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 28 येह गुमान कर के कि उस के ज़िम्मे रोज़े की क़ज़ा है रोज़ा रखा, अब मालूम हुवा कि गुमान ग़लत़ था तो अगर फ़ौरन तोड़ दे तो तोड़ सकता है, अगर्चे बेहतर येह है कि पूरा कर ले और फ़ौरन न तोड़ा तो अब नहीं तोड़ सकता, तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब है।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 29 रात में क़ज़ा रोज़े की निय्यत की, सुब्ह़ को उसे नफ़्ल करना चाहता है तो नहीं कर सकता।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 30 नमाज़ पढ़ते में रोज़े की निय्यत की तो निय्यत सह़ीह़ है।[5] (درمختار)

मस्अला 31 कई रोज़े क़ज़ा हो गए तो निय्यत में येह होना चाहिये कि उस रमज़ान के पहले रोज़े की क़ज़ा, दूसरे की क़ज़ा और अगर कुछ इस साल के क़ज़ा हो गए, कुछ अगले साल के बाक़ी हैं तो येह निय्यत होनी चाहिये कि इस रमज़ान की और उस रमज़ान की क़ज़ा और अगर दिन और साल को मुअ़य्यन न किया, जब भी हो जाएंगे।[6] (عالمگیری)

मस्अला 32 रमज़ान का रोज़ा क़स्दन तोड़ा था तो इस पर उस रोज़े की क़ज़ा है और[7] साठ रोज़े कफ़्फ़ारे के। अब उस ने इक्सठ रोज़े रख लिये, क़ज़ा का दिन मुअ़य्यन

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٦.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٣٩٣، وغيره.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، ج٣ ص٣٩٩. 4 ..... المرجع السابق، ص٣٩٨.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٣٩٨.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٦.
7 ...अगर कफ़्फ़ारे की शराइत़ पाई गईं तो।

www.dawateislami.net

न किया तो हो गया।[1] (عالمگیری)

मस्अला 33 यौमुश्शक यानी शाबान की तीसवीं तारीख़ को नफ़्ले ख़ालिस की निय्यत से रोज़ा रख सकते हैं और नफ़्ल के सिवा कोई और रोज़ा रखा तो मक्रूह है, ख़्वाह मुत्लक़ रोज़े की निय्यत हो या फ़र्ज़ की या किसी वाजिब की, ख़्वाह निय्यत मुअ़य्यन की, की हो या तरद्दुद के साथ येह सब सूरतें मक्रूह हैं। फिर अगर रमज़ान की निय्यत है तो मक्रूहे तह़रीमी है, वरना मुक़ीम के लिये तन्ज़ीही और मुसाफ़िर ने अगर किसी वाजिब की निय्यत की तो कराहत नहीं फिर अगर उस दिन का रमज़ान होना साबित हो जाए तो मुक़ीम के लिये बहर ह़ाल रमज़ान का रोज़ा है और अगर येह ज़ाहिर हो कि वोह शाबान का दिन था और निय्यत किसी वाजिब की, की थी तो जिस वाजिब की निय्यत थी वोह हुवा और अगर कुछ ह़ाल न खुला तो वाजिब की निय्यत बेकार गई और मुसाफ़िर ने जिस की निय्यत की बहर सूरत वोही हुवा।[2] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 34 अगर तीसवीं तारीख़ ऐसे दिन हुई कि उस दिन रोज़ा रखने का आ़दी था तो उसे रोज़ा रखना अफ़्ज़ल है, मसलन कोई शख़्स पीर या जुमेरात का रोज़ा रखा करता है और तीसवीं उसी दिन पड़ी तो रखना अफ़्ज़ल है। यूंही अगर चन्द रोज़ पहले से रख रहा था तो अब यौमुश्शक में कराहत नहीं। कराहत उसी सूरत में है कि रमज़ान से एक[1] या दो[2] दिन पहले रोज़ा रखा जाए यानी सिर्फ़ तीस[30] शाबान को या उन्तीस[29] और तीस[30] को।[3] (درمختار)

मस्अला 35 अगर न तो उस दिन रोज़ा रखने का आ़दी था न कई रोज़ पहले से रोज़े रखे तो अब ख़ास लोग रोज़ा रखें और अ़वाम न रखें, बल्कि अ़वाम के लिये येह हुक्म है कि ज़ह़्वए कुब्रा तक रोज़े के मिस्ल रहें, अगर उस वक़्त तक चांद का सुबूत हो जाए तो रमज़ान के रोज़े की निय्यत कर लें वरना खा पी लें। ख़वास से मुराद यहां उ़लमा ही नहीं, बल्कि जो शख़्स येह जानता हो कि यौमुश्शक में इस त़रह़ रोज़ा रखा जाता है, वोह ख़वास में है वरना अ़वाम में।[4] (درمختار)

मस्अला 36 यौमुश्शक के रोज़े में येह पक्का इरादा कर ले कि येह रोज़ए नफ़्ल है तरद्दुद न रहे, यूं न हो कि अगर रमज़ान है तो येह रोज़ा रमज़ान का है, वरना नफ़्ल का या यूं कि अगर आज रमज़ान का दिन है तो येह रोज़ा रमज़ान का है, वरना किसी और वाजिब का कि येह दोनों सूरतें मक्रूह हैं। फिर अगर उस दिन का रमज़ान होना साबित हो जाए तो फ़र्ज़े रमज़ान अदा

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص١٩٦.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مبحث في صوم يوم الشك، ج٣، ص٣٩٩.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٠.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٢.

www.dawateislami.net

होगा। वरना दोनों सूरतों में नफ़्ल है और गुनहगार बहर ह़ाल हुवा और यूं भी निय्यत न करे कि येह दिन रमज़ान का है तो रोज़ा है, वरना रोज़ा नहीं कि इस सूरत में तो न निय्यत ही हुई, न रोज़ा हुवा और अगर नफ़्ल का पूरा इरादा है मगर कभी कभी दिल में येह ख़याल गुज़र जाता है कि शायद आज रमज़ान का दिन हो तो इस में ह़रज नहीं।[1] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 37 अ़वाम को जो येह हुक्म दिया गया कि ज़ह़्वए कुब्रा तक इन्तिज़ार करें, जिस ने इस पर अ़मल किया मगर भूल कर खा लिया फिर उस दिन का रमज़ान होना ज़ाहिर हुवा तो रोज़े की निय्यत कर ले हो जाएगा कि इन्तिज़ार करने वाला रोज़ेदार के हुक्म में है और भूल कर खाने से रोज़ा नहीं टूटता।[2] (درمختار)

चांद देखने का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِؕ قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّؕ ﴾[3]

ऐ महबूब ! तुम से हिलाल के बारे में लोग सुवाल करते हैं, तुम फ़रमा दो वोह लोगों के कामों और ह़ज के लिये अवक़ात हैं।

ह़दीस 1 सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "रोज़ा न रखो, जब तक चांद न देख लो और इफ़्तार न करो, जब तक चांद न देख लो और अगर अब्र हो तो मिक़्दार पूरी कर लो।"[4]

ह़दीस 2 नीज़ सह़ीह़ैन में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "चांद देख कर रोज़ा रखना शुरूअ़ करो और चांद देख कर इफ़्तार करो और अगर अब्र हो तो शाबान की गिनती तीस30 पूरी कर लो।"[5]

ह़दीस 3 अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह व दारिमी इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी, एक आराबी ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मैं ने रमज़ान का चांद देखा है। फ़रमाया : "तू गवाही देता है कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं ?" अ़र्ज़ की : हां। फ़रमाया : "तू गवाही देता है कि मुह़म्मद

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الأول، ج١، ص٢٠٠.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مبحث في صوم يوم الشك، ج٣، ص٤٠٣.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٤. 3 ..... پ٢، البقرة: ١٨٩.
4 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم، إذا رأيتم الهلال فصوموا... إلخ، الحديث: ١٩٠٦، ج١، ص٦٢٩.
5 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم، إذا رأيتم ... إلخ، الحديث: ١٩٠٩، ج١، ص٦٣٠.

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के रसूल हैं ?" उस ने कहा : हां । इरशाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! लोगों में एलान कर दो कि कल रोज़ा रखें ।"[1]

ह़दीस 4 अबू दावूद व दारिमी इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रावी कि लोगों ने बाहम चांद देखना शुरूअ़ किया, मैं ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) को ख़बर दी कि मैं ने चांद देखा है, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने भी रोज़ा रखा और लोगों को रोज़ा रखने का हुक्म फ़रमाया ।[2]

ह़दीस 5 अबू दावूद उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم शाबान का इस क़दर तह़फ़्फ़ुज़ करते कि इतना और किसी का न करते फिर रमज़ान का चांद देख कर रोज़ा रखते और अगर अब्र होता तो तीस दिन पूरे कर के रोज़ा रखते ।[3]

ह़दीस 6 सह़ीह़ मुस्लिम में अबिल बख़्तरी से मरवी, कहते हैं हम उ़मरह के लिये गए, जब बत़ने नख़्ला में पहुंचे तो चांद देख कर किसी ने कहा : तीन रात का है, किसी ने कहा : दो रात का है । इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से हम मिले और उन से वाक़िआ़ बयान किया, फ़रमाया : तुम ने देखा किस रात में ? हम ने कहा : फ़ुलां रात में । फ़रमाया कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस की मुद्दत देखने से मुक़र्रर फ़रमाई, लिहाज़ा उस रात का क़रार दिया जाएगा जिस रात को तुम ने देखा ।[4]

मस्अला 1 पांच महीनों का चांद देखना वाजिबे किफ़ाया है :

(1) शाबान ।

(2) रमज़ान ।

(3) शव्वाल ।

(4) ज़ी क़ादा ।

(5) ज़ुल ह़िज्जा ।

शाबान का इस लिये कि अगर रमज़ान का चांद देखते वक़्त अब्र या ग़ुबार हो तो येह तीस पूरे कर के रमज़ान शुरूअ़ करें और रमज़ान का रोज़ा रखने के लिये और शव्वाल का रोज़ा ख़त्म करने के लिये और ज़ी क़ादा का ज़ुल ह़िज्जा के लिये[5] और ज़ुल ह़िज्जा का बक़र ईद के लिये ।[6] (फ़तावा रज़विय्या)

1 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب في شهادة الواحد على رؤية هلال رمضان، الحديث: ٢٣٤٠، ج٢، ص٤٤٠.

2 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب في شهادة الواحد على رؤية هلال رمضان، الحديث: ٢٣٤٢، ج٢، ص٤٤١.

3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب إذا أغمي الشهر، الحديث: ٢٣٢٥، ج٢، ص٤٣٤.

4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب بيان أنه لااعتبار بكبر الهلال وصغره... إلخ، الحديث: ١٠٨٨، ص٥٤٩.

5 ...कि वोह ह़ज का ख़ास महीना है ।

6 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج١٠ ص٤٤٩ ـ ٤٥١.

www.dawateislami.net

मस्अला 2 शाबान की उन्तीस[29] को शाम के वक़्त चांद देखें, दिखाई दे तो कल रोज़ा रखें, वरना शाबान के तीस[30] दिन पूरे कर के रमज़ान का महीना शुरूअ़ करें।[1] (عالمگیری)

मस्अला 3 किसी ने रमज़ान या ईद का चांद देखा मगर उस की गवाही किसी वज्हे शर्ई से रद कर दी गई मसलन फ़ासिक़ है या ईद का चांद उस ने तन्हा देखा तो उसे हुक्म है कि रोज़ा रखे, अगर्चे अपने आप ईद का चांद देख लिया है। और उस रोज़े को तोड़ना जाइज़ नहीं, मगर तोड़ेगा तो कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं[2] और इस सूरत में अगर रमज़ान का चांद था और इस ने अपने हिसाबों तीस रोज़े पूरे किये, मगर ईद के चांद के वक़्त फिर अब्र या ग़ुबार है तो इसे भी एक दिन और रखने का हुक्म है।[3] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 4 तन्हा इस ने चांद देख कर रोज़ा रखा फिर रोज़ा तोड़ दिया या क़ाज़ी के यहां गवाही भी दी थी और अभी उस ने इस की गवाही पर हुक्म नहीं दिया था कि इस ने रोज़ा तोड़ दिया तो भी कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं, सिर्फ़ उस रोज़े की क़ज़ा दे और अगर क़ाज़ी ने इस की गवाही क़बूल कर ली। इस के बाद इस ने रोज़ा तोड़ दिया तो कफ़्फ़ारा लाज़िम है अगर्चे येह फ़ासिक़ हो।[4] (درمختار)

मस्अला 5 जो शख़्स इल्मे हैअत जानता है, उस का अपने इल्मे हैअत के ज़रीए़ से कह देना कि आज चांद हुवा या नहीं हुवा, कोई चीज़ नहीं अगर्चे वोह आ़दिल हो, अगर्चे कई शख़्स ऐसा कहते हों कि शर्अ़ में चांद देखने या गवाही से सुबूत का एतिबार है।[5] (عالمگیری)

मस्अला 6 हर गवाही में येह कहना ज़रूरी है कि मैं गवाही देता हूं कि बग़ैर इस के शहादत नहीं, मगर अब्र में रमज़ान के चांद की गवाही में इसे कहने की ज़रूरत नहीं, इतना कह देना काफ़ी है कि मैं ने अपनी आंख से इस रमज़ान का चांद आज या कल या फ़ुलां दिन देखा है। यूंही उस की गवाही में दावा और मजलिसे क़ज़ा और ह़ाकिम का हुक्म भी शर्त नहीं, यहां तक कि अगर किसी ने ह़ाकिम के यहां गवाही दी तो जिस ने उस की गवाही सुनी और उस को ब ज़ाहिर मालूम हुवा कि येह आ़दिल है उस पर रोज़ा रखना ज़रूरी है, अगर्चे ह़ाकिम का हुक्म उस ने न सुना हो मसलन हुक्म देने से पहले ही चला गया।[6] (درمختار، عالمگیری)

मस्अला 7 अब्र और ग़ुबार में रमज़ान का सुबूत एक मुसलमान आ़क़िल बालिग़, मस्तूर या आ़दिल शख़्स से हो जाता है, वोह मर्द हो ख़्वाह औ़रत, आज़ाद हो या बांदी ग़ुलाम या उस पर तोहमते ज़िना की ह़द मारी गई हो, जब कि तौबा कर चुका है।

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص١٩٧.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٤.
3 .....
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٤.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص١٩٧.
6 ..... المرجع السابق، و "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٦.

www.dawateislami.net

आ़दिल होने के माने येह हैं कि कम से कम मुत्तक़ी हो यानी कबाइर गुनाह से बचता हो और सग़ीरा पर इसरार न करता हो और ऐसा काम न करता हो जो मुरव्वत के ख़िलाफ़ हो मसलन बाज़ार में खाना।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 8 फ़ासिक़ अगर्चे रमज़ान के चांद की शहादत दे उस की गवाही क़ाबिले क़बूल नहीं, रहा येह कि उस के ज़िम्मे गवाही देना लाज़िम है या नहीं। अगर उम्मीद है कि उस की गवाही क़ाज़ी क़बूल कर लेगा तो उसे लाज़िम है कि गवाही दे।[2]

मस्तूर यानी जिस का ज़ाहिर हाल मुताबिक़े शर्अ़ है, मगर बातिन का हाल मालूम नहीं, उस की गवाही भी ग़ैरे रमज़ान में क़ाबिले क़बूल नहीं। (درمختار)

मस्अला 9 जिस शख़्से आ़दिल ने रमज़ान का चांद देखा, उस पर वाजिब है कि उसी रात में शहादत अदा कर दे, यहां तक कि अगर लौंडी या पर्दा नशीन औ़रत ने चांद देखा तो उस पर गवाही देने के लिये उसी रात में जाना वाजिब है। लौंडी को इस की कुछ ज़रूरत नहीं कि अपने आक़ा से इजाज़त ले। यूंही आज़ाद औ़रत को गवाही के लिये जाना वाजिब, इस के लिये शौहर से इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं, मगर येह हुक्म उस वक़्त है जब उस की गवाही पर सुबूत मौक़ूफ़ हो कि बे उस की गवाही के काम न चले वरना क्या ज़रूरत![3]

(درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 10 जिस के पास रमज़ान के चांद की शहादत गुज़री, उसे येह ज़रूरी नहीं कि गवाह से दरयाफ़्त करे तुम ने कहां से देखा और वोह किस त़रफ़ था और कितने ऊंचे पर था वग़ैरा वग़ैरा।[4] (عالمگیری وغیرہ) मगर जब कि उस का बयान मुश्तबह हो तो सुवालात करे ख़ुसूसन ईद में कि लोग ख़्वाह म ख़्वाह इस का चांद देख लेते हैं।

मस्अला 11 तन्हा इमाम (बादशाहे इस्लाम) या क़ाज़ी ने चांद देखा तो उसे इख़्तियार है, ख़्वाह ख़ुद ही रोज़ा रखने का हुक्म दे या किसी को शहादत लेने के लिये मुक़र्रर करे और उस के पास शहादत अदा करे।[5] (عالمگیری)

मस्अला 12 गाउं में चांद देखा और वहां कोई ऐसा नहीं जिस के पास गवाही दे तो गाउं वालों को जम्अ़ कर के शहादत अदा करे और अगर येह आ़दिल है तो लोगों पर रोज़ा रखना लाज़िम है।[6] (عالمگیری)

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مبحث في صوم يوم الشك، ج٣، ص٤٠٦.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٦. 3 ..... المرجع السابق، ص٤٠٧.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص١٩٧، وغيره.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص١٩٧. 6 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 13 किसी ने ख़ुद तो चांद नहीं देखा, मगर देखने वाले ने अपनी शहादत का गवाह बनाया तो उस की शहादत का वोही हुक्म है जो चांद देखने वाले की गवाही का है, जब कि शहादत अलश्शहादत के तमाम शराइत़ पाए जाएं।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 14 अगर मत्लअ़ साफ़ हो तो जब तक बहुत से लोग शहादत न दें चांद का सुबूत नहीं हो सकता, रहा येह कि इस के लिये कितने लोग चाहिये येह क़ाज़ी के मुतअ़ल्लिक़ है, जितने गवाहों से उसे ग़ालिब गुमान हो जाए हुक्म दे देगा, मगर जब कि बैरूने शह्र या बुलन्द जगह से चांद देखना बयान करता है तो एक मस्तूर का क़ौल भी रमज़ान के चांद में क़बूल कर लिया जाएगा।[2] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 15 जमाअ़ते कसीरा की शर्त उस वक़्त है जब रोज़ा रखने या ईद करने के लिये शहादत गुज़रे और अगर किसी और मुआ़मले के लिये दो मर्द या एक मर्द और दो औ़रतों सिक़ा की शहादत गुज़री और क़ाज़ी ने शहादत की बिना पर हुक्म दे दिया तो अब येह शहादत काफ़ी है। रोज़ा रखने या ईद करने के लिये भी सुबूत हो गया, मसलन एक शख़्स ने दूसरे पर दावा किया कि मेरा इस के ज़िम्मे इतना दैन है और उस की मीआ़द येह ठहरी थी कि जब रमज़ान आ जाए तो दैन अदा कर देगा और रमज़ान आ गया मगर येह नहीं देता। मुद्दआ़ अ़लैह[3] ने कहा : बेशक इस का दैन मेरे ज़िम्मे है और मीआ़द भी येही ठहरी थी, मगर अभी रमज़ान नहीं आया इस पर मुद्दई ने दो गवाह गुज़ारे जिन्हों ने चांद देखने की शहादत दी, क़ाज़ी ने हुक्म दे दिया कि दैन अदा कर, तो अगर्चे मत्लअ़ साफ़ था और दो[2] ही की गवाहियां हुईं, मगर अब रोज़ा रखने और ईद करने के ह़क़ में भी येही दो गवाहियां काफ़ी हैं।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 16 यहां मत्लअ़ साफ़ था, मगर दूसरी जगह ना साफ़ था, वहां क़ाज़ी के सामने शहादत गुज़री, क़ाज़ी ने चांद होने का हुक्म दिया, अब दो या चन्द आदमियों ने यहां आ कर जहां मत्लअ़ साफ़ था, इस बात की गवाही दी कि फ़ुलां क़ाज़ी के यहां दो शख़्सों ने फ़ुलां रात में चांद देखने की गवाही दी और उस क़ाज़ी ने हमारे सामने हुक्म दे दिया और दावे के शराइत़ भी पाए जाते हैं तो यहां का क़ाज़ी भी इन शहादतों की बिना पर हुक्म दे देगा।[5] (درمختار)

मस्अला 17 अगर कुछ लोग आ कर येह कहें कि फ़ुलां जगह चांद हुवा, बल्कि अगर शहादत भी दें कि फ़ुलां जगह चांद हुवा, बल्कि अगर येह शहादत दें कि फ़ुलां फ़ुलां ने देखा, बल्कि अगर येह शहादत दें कि फ़ुलां जगह के क़ाज़ी ने रोज़ा या इफ़्त़ार के लिये लोगों से कहा येह सब त़रीक़े ना काफ़ी हैं।[6] (درمختار، ردالمحتار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص١٩٧، وغيره.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٩. وغيره

3 ...यानी वोह शख़्स जिस पर दावा किया जाए।

4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب: ما قاله السبكي من الاعتماد على قول... إلخ، ج٣، ص٤١١.

5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤١٢.

6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب: ما قاله السبكي من الاعتماد على قول... إلخ، ج٣، ص٤١٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 18 किसी शहर में चांद हुवा और वहां से मुतअ़द्दद जमाअ़तें दूसरे शहर में आईं और सब ने इस की ख़बर दी कि वहां फुलां दिन चांद हुवा है और तमाम शहर में येह बात मश्हूर है और वहां के लोगों ने रूयत की बिना पर फुलां दिन से रोज़े शुरूअ़ किये तो यहां वालों के लिये भी सुबूत हो गया।[1] (درمختار)

मस्अला 19 रमज़ान की चांदरात को अब्र था, एक शख़्स ने शहादत दी और इस की बिना पर रोज़े का हुक्म दे दिया गया, अब ईद का चांद अगर ब वज्ह अब्र के नहीं देखा गया तो तीस रोज़े पूरे कर के ईद कर लें और अगर मत्लअ़ साफ़ है तो ईद न करें, मगर जब कि दो आ़दिलों की गवाही से रमज़ान साबित हुवा हो।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 20 मत्लअ़ ना साफ़ है तो इलावा रमज़ान के शव्वाल व ज़ुल हिज्जा बल्कि तमाम महीनों के लिये दो मर्द या एक मर्द और दो औ़रतें गवाही दें और सब आ़दिल हों और आज़ाद हों और उन में किसी पर तोहमते ज़िना की ह़द न क़ाइम की गई हो, अगर्चे तौबा कर चुका हो और येह भी शर्त़ है कि गवाह गवाही देते वक़्त येह लफ़्ज़ कहे : ''मैं गवाही देता हूं...।''[3] (عامۂ کتب)

मस्अला 21 गाउं में दो शख़्सों ने ईद का चांद देखा और मत्लअ़ ना साफ़ है और वहां कोई ऐसा नहीं जिस के पास शहादत दें तो गाउं वालों से कहें, अगर येह आ़दिल हों तो लोग ईद कर लें।[4] (عالمگیری)

मस्अला 22 तन्हा इमाम या क़ाज़ी ने ईद का चांद देखा तो उन्हें ईद करना या ईद का हुक्म देना जाइज़ नहीं।[5] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 23 उन्तीसवीं[29] रमज़ान को कुछ लोगों ने येह शहादत दी कि हम ने लोगों से एक दिन पहले चांद देखा जिस के ह़िसाब से आज तीस[30] है तो अगर येह लोग यहीं थे तो अब इन की गवाही मक़्बूल नहीं कि वक़्त पर गवाही क्यूं न दी और अगर यहां न थे और आ़दिल हों तो क़बूल कर ली जाए।[6] (عالمگیری)

मस्अला 24 रमज़ान का चांद दिखाई न दिया, शाबान के तीस[30] दिन पूरे कर के रोज़े शुरूअ़ कर दिये, अठ्ठाईस[28] ही रोज़े रखे थे कि ईद का चांद हो गया तो अगर शाबान का चांद देख कर तीस[30] दिन का महीना क़रार दिया था तो एक रोज़ा रखें और अगर शाबान का भी

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب: ما قاله السبكي من الاعتماد على قول الحساب مردود، ج٣، ص٤١٣.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب: ما قاله السبكي من الاعتماد على قول الحساب مردود، ج٣، ص٤١٣.
3 ..... "الفتاوى الهنديه"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص١٩٨.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص١٩٨.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٠٨، وغيره.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص١٩٨.

www.dawateislami.net

चांद दिखाई न दिया था, बल्कि रजब की तीस[30] तारीख़ें पूरी कर के शाबान का महीना शुरूअ़ किया तो दो रोज़े क़ज़ा के रखें।[1] (عالمگیری)

मस्अला 25 दिन में हिलाल दिखाई दिया ज़वाल से पहले या बाद, बहर ह़ाल वोह आइन्दा रात का क़रार दिया जाएगा यानी अब जो रात आएगी उस से महीना शुरूअ़ होगा तो अगर तीसवीं रमज़ान के दिन में देखा तो येह दिन रमज़ान ही का है शव्वाल का नहीं और रोज़ा पूरा करना फ़र्ज़ है और अगर शाबान की तीसवीं तारीख़ के दिन में देखा तो येह दिन शाबान का है रमज़ान का नहीं लिहाज़ा आज का रोज़ा फ़र्ज़ नहीं।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 26 एक जगह चांद हुवा तो वोह सिर्फ़ वहीं के लिये नहीं, बल्कि तमाम जहान के लिये है। मगर दूसरी जगह के लिये इस का हुक्म उस वक़्त है कि उन के नज़्दीक उस दिन तारीख़ में चांद होना शरई सुबूत से साबित हो जाए[3] यानी देखने की गवाही या क़ाज़ी के हुक्म की शहादत गुज़रे या मुतअ़द्दद जमाअ़तें वहां से आ कर ख़बर दें कि फ़ुलां जगह चांद

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثاني في رؤية الهلال، ج١، ص١٩٩.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في اختلاف المطالع، ج٣، ص٤١٧.

3 ...मुजद्दिदे आज़म, आला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि रूयते हिलाल के सुबूत के लिये शर्अ़ में सात त़रीक़े हैं :

(1) ख़ुद शहादते रूयत यानी चांद देखने वालों की गवाही।

(2) शहादत अ़लश्शहादत यानी गवाहों ने चांद ख़ुद न देखा बल्कि देखने वालों ने उन के सामने गवाही दी और अपनी गवाही पर उन्हें गवाह किया। उन्हों ने इस गवाही की गवाही दी। येह वहां है कि गवाहाने अस्ल ह़ाज़िरी से माज़ूर हों।

(3) शहादत अ़लल क़ज़ा यानी दूसरे किसी इस्लामी शह्र में ह़ाकिमे इस्लाम के यहां रूयते हिलाल पर शहादतें गुज़रीं और उस ने सुबूते हिलाल का हुक्म दिया और दो आ़दिल गवाहों ने जो इस गवाही के वक़्त मौजूद थे, उन्हों ने दूसरे मक़ाम पर उस क़ाज़िये इस्लाम के रूबरू गवाही गुज़रे और क़ाज़ी के हुक्म पर गवाही दे।

(4) किताबुल क़ाज़ी इलल क़ाज़ी यानी क़ाज़िये शर्अ़ जिसे सुल्त़ाने इस्लाम ने मुक़द्दमात का इस्लामी फ़ैसला करने के लिये मुक़र्रर किया हो वोह दूसरे शह्र के क़ाज़ी को, गवाहियां गुज़रने की शरई त़रीक़े पर इत्तिलाअ़ दे।

(5) इस्तिफ़ाज़ा यानी किसी इस्लामी शह्र से मुतअ़द्दद जमाअ़तें आईं और सब यक ज़बान अपने इल्म से ख़बर दें कि वहां फ़ुलां दिन रूयते हिलाल की बिना पर रोज़ा हुवा या ईद की गई।

(6) इक्माले मुद्दत यानी एक महीने के जब तीस[30] दिन कामिल हो जाएं तो दूसरे माह का हिलाल आप ही साबित हो जाएगा महीना तीस[30] से ज़ाइद का न होना यक़ीनी है।

(7) इस्लामी शह्र में ह़ाकिमे शर्अ़ के हुक्म से उन्तीस[29] की शाम को मसलन तोपें दाग़ी गईं या फ़ायर हुए तो ख़ास उस शह्र वालों या उस शह्र के गिर्द अगर दीहात वालों के वासिते तोपों की आवाज़ें सुनना भी सुबूते हिलाल के ज़रीओं में से एक ज़रीआ़ है। (انظر: "الفتاوى الرضوية"، ج١٠، ص٤٠٥ ـ ٤٢٠، ملخصاً)

www.dawateislami.net

हुवा है और वहां लोगों ने रोज़ा रखा या ईद की है।[1] (درمختار)

मस्अला 27 तार या टेलीफ़ोन से रूयते हिलाल नहीं साबित हो सकती, न बाज़ारी अफ़्वाह और जन्त्रियों और अख़्बारों में छपा होना कोई सुबूत है। आज कल उ़मूमन देखा जाता है कि उन्तीस[29] रमज़ान को ब कसरत एक जगह से दूसरी जगह तार भेजे जाते हैं कि चांद हुवा या नहीं, अगर कहीं से तार आ गया बस लो ईद आ गई येह महज़ ना जाइज़ व ह़राम है।

तार क्या चीज़ है? अव्वलन तो येही मालूम नहीं कि जिस का नाम लिखा है वाक़ेई उसी का भेजा हुवा है और फ़र्ज़ करो उसी का हो तो तुम्हारे पास क्या सुबूत और येह भी सही तो तार में अक्सर ग़लतियां होती ही रहती हैं। "हां" का "नहीं", "नहीं" का "हां" मामूली बात है और माना कि बिल्कुल सह़ीह़ पहुंचा तो येह महज़ एक ख़बर है शहादत नहीं और और वोह भी बीसों वासिते से, अगर तार देने वाला अंग्रेज़ी पढ़ा हुवा नहीं तो किसी और से लिखवाएगा मालूम नहीं कि इस ने क्या लिखवाया उस ने क्या लिखा, आदमी को दिया उस ने तार देने वाले के ह़वाले किया, अब यहां के तारघर में पहुंचा तो उस ने तक़्सीम करने वाले को दिया उस ने अगर किसी और के ह़वाले कर दिया तो मालूम नहीं कितने वसाइत़ से उस को मिले और अगर उसी को दिया जब भी कितने वासिते हैं फिर येह देखिये कि मुसलमान मस्तूर जिस का आ़दिल व फ़ासिक़ होना मालूम न हो उस तक की गवाही मोतबर नहीं और यहां जिन जिन ज़रीओं से तार पहुंचा उन में सब के सब मुसलमान ही हों, येह एक अ़क़्ली एह़तिमाल है जिस का वुजूद मालूम नहीं होता और अगर येह मक्तूब इलैह[2] साह़िब भी अंग्रेज़ी पढ़े न हों तो किसी से पढ़वाएंगे, अगर किसी काफ़िर ने पढ़ा तो क्या एतिबार और मुसलमान ने पढ़ा तो क्या एतिमाद कि सह़ीह़ पढ़ा। ग़रज़ शुमार कीजिये तो ब कसरत ऐसी वज्हें हैं जो तार के एतिबार को खोती हैं, फ़ुक़हा ने ख़त़ का तो एतिबार ही न किया अगर्चे कातिब के दस्तख़त़ पहचानता हो और उस पर उस की मोहर भी हो कि الخط یشبه الخاتم والخاتم یشبه الخط ख़त़ ख़त़ के मुशाबेह होता है और मोहर मोहर के। तो कुजा तार। وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم

मस्अला 28 हिलाल[3] देख कर उस की त़रफ़ उंगली से इशारा करना मक्रूह है,[4] अगर्चे दूसरे को बताने के लिये हो।[5] (عالمگیری، درمختار)

उन चीज़ों का बयान जिन से रोज़ा नहीं जाता

ह़दीस 1 सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, रसूलुल्लाह

1 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، ج۳، ص۴۱۹.

2 ...यानी जिसे ख़त़ पहुंचा। 3 ...यानी चांद।

4 ...क्यूं कि येह अहले जाहिलिय्यत का अ़मल है।

5 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصوم، مطلب في اختلاف المطالع، ج۳، ص۴۱۹.

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस रोज़ेदार ने भूल कर खाया या पिया, वोह अपने रोज़े को पूरा करे कि उसे **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने खिलाया और पिलाया।"(1)

ह़दीस 2 अबू दावूद व तिरमिज़ी व इब्ने माजह व दारिमी अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस पर क़ै ने ग़लबा किया, उस पर क़ज़ा नहीं और जिस ने क़स्दन क़ै की, उस पर रोज़े की क़ज़ा है।"(2)

ह़दीस 3 तिरमिज़ी अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि एक शख़्स ने ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मेरी आंख में मरज़ है, क्या रोज़े की ह़ालत में सुरमा लगाऊं ? फ़रमाया : "हां।"(3)

ह़दीस 4 तिरमिज़ी अबू सईद رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तीन चीज़ें रोज़ा नहीं तोड़तीं, पछना और क़ै और एह़तिलाम।"(4)

तम्बीह : इस बाब में उन चीज़ों का बयान है जिन से रोज़ा नहीं टूटता। रहा येह अम्र कि उन से रोज़ा मक्रूह भी होता है या नहीं उस से इस बाब को तअ़ल्लुक़ नहीं, न येह कि वोह फ़ेल जाइज़ है या ना जाइज़।

मस्अला 1 भूल कर खाया या पिया या जिमाअ़ किया रोज़ा फ़ासिद न हुवा। ख़्वाह वोह रोज़ा फ़र्ज़ हो या नफ़्ल और रोज़े की निय्यत से पहले येह चीज़ें पाई गईं या बाद में, मगर जब याद दिलाने पर भी याद न आया कि रोज़ेदार है तो अब फ़ासिद हो जाएगा, बशर्ते कि याद दिलाने के बाद येह अफ़्आ़ल वाक़ेअ़ हुए हों मगर इस सूरत में कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं।(5) (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 2 किसी रोज़ेदार को इन अफ़्आ़ल में देखे तो याद दिलाना वाजिब है, याद न दिलाया तो गुनहगार हुवा, मगर जब कि वोह रोज़ेदार बहुत कमज़ोर हो कि याद दिलाएगा तो वोह खाना छोड़ देगा और कमज़ोरी इतनी बढ़ जाएगी कि रोज़ा रखना दुश्वार होगा और खा लेगा तो रोज़ा भी अच्छी त़रह़ पूरा कर लेगा और दीगर इबादतें भी बख़ूबी अदा कर लेगा तो इस सूरत में याद न दिलाना बेहतर है।

बाज़ मशाइख़ ने कहा : जवान को देखे तो याद दिला दे और बूढ़े को देखे तो याद न दिलाने में ह़रज नहीं। मगर येह ह़ुक्म अक्सर के लिह़ाज़ से है कि जवान अक्सर क़वी होते हैं और बूढ़े अक्सर कमज़ोर और अस्ल ह़ुक्म येह है कि जवानी और बुढ़ापे को कोई दख़्ल नहीं, बल्कि क़ुव्वत व ज़ोफ़(6) का लिह़ाज़ है, लिहाज़ा अगर जवान इस क़दर कमज़ोर हो तो याद

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب أكل الناسي وشربه وجماعه لايفطر، الحديث: ١١٥٥، ص٥٨٢.

2 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصوم... إلخ، باب ماجاء فيمن استقاء عمدا، الحديث: ٧٢٠، ج٢، ص١٧٣.

3 ..... "جامع الترمذي"، ابواب الصوم، باب ماجاء في الكحل للصائم، الحديث: ٧٢٦، ج٢، ص١٧٧.

4 ..... "جامع الترمذي"، ابواب الصوم، باب ماجاء في الصائم يذرعه القيء، الحديث: ٧١٩، ج٢، ص١٧٢.

5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤١٩.

6 ...यानी त़ाक़त और जिस्मानी कमज़ोरी।

www.dawateislami.net

न दिलाने में ह़रज नहीं और बूढ़ा क़वी हो तो याद दिलाना वाजिब ।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 3 मख्खी या धूआं या ग़ुबार ह़ल्क़ में जाने से रोज़ा नहीं टूटता । ख़्वाह वोह ग़ुबार आटे का हो कि चक्की पीसने या छानने में उड़ता है या ग़ल्ले का ग़ुबार हो या हवा से ख़ाक उड़ी या जानवरों के ख़ुर या टाप से ग़ुबार उड़ कर ह़ल्क़ में पहुंचा, अगर्चे रोज़ेदार होना याद था और अगर ख़ुद क़स्दन धूआं पहुंचाया तो फ़ासिद हो गया जब कि रोज़ादार होना याद हो, ख़्वाह वोह किसी चीज़ का धूआं हो और किसी त़रह़ पहुंचाया हो, यहां तक कि अगरबत्ती वग़ैरा ख़ुश्बू सुलगती थी, उस ने मुंह क़रीब कर के धूएं को नाक से खींचा रोज़ा जाता रहा । यूंही हुक़्क़ा पीने से भी रोज़ा टूट जाता है, अगर रोज़ा याद हो और हुक़्क़ा पीने वाला अगर पियेगा तो कफ़्फ़ारा भी लाज़िम आएगा ।[2] (درمختار، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 4 भरी सिंगी लगवाई[3] या तेल या सुरमा लगाया तो रोज़ा न गया, अगर्चे तेल या सुरमे का मज़ा ह़ल्क़ में मह़सूस होता हो बल्कि थूक में सुरमे का रंग भी दिखाई देता हो, जब भी नहीं टूटा ।[4] (جوہرہ، ردالمحتار)

मस्अला 5 बोसा लिया मगर इन्ज़ाल न हुवा तो रोज़ा नहीं टूटा । यूंही औ़रत की त़रफ़ बल्कि उस की शर्मगाह की त़रफ़ नज़र की मगर हाथ न लगाया और इन्ज़ाल हो गया, अगर्चे बार बार नज़र करने या जिमाअ़ वग़ैरा के ख़याल करने से इन्ज़ाल हुवा, अगर्चे देर तक ख़याल जमाने से ऐसा हुवा हो इन सब सूरतों में रोज़ा नहीं टूटा ।[5] (جوہرہ، درمختار)

मस्अला 6 ग़ुस्ल किया और पानी की ख़ुन्की[6] अन्दर मह़सूस हुई या कुल्ली की और पानी बिल्कुल फेंक दिया सिर्फ़ कुछ तरी मुंह में बाक़ी रह गई, थूक के साथ उसे निगल गया या दवा कूटी और ह़ल्क़ में उस का मज़ा मह़सूस हुवा या हड़ चूसी और थूक निगल गया, मगर थूक के साथ हड़[7] का कोई जुज़ ह़ल्क़ में न पहुंचा या कान में पानी चला गया या तिन्के से कान खुजाया और उस पर कान का मैल लग गया फिर वोही मैल लगा हुवा तिन्का कान में डाला, अगर्चे चन्द बार किया हो या दांत या मुंह में ख़फ़ीफ़ चीज़ बे मालूम सी रह गई कि

1 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم وما لا یفسدہ، ج۳، ص۴۲۰.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم وما لا یفسدہ، ج۳، ص۴۲۰. وغیرھما

3 ...जहां सिंगी लगानी होती है पहले उस जगह को तेज़धार आले (उस्तरे) वग़ैरा से ज़ख़्म लगाते हैं, फिर किसी जानवर के सींग का चोड़ा ह़िस्सा ज़ख़्म पर रख कर उस का बारीक ह़िस्सा अपने मुंह में ले कर ज़ोर से चूसते हैं, फिर उस सूराख़ को आटे वग़ैरा से बन्द कर देते हैं, फिर जब उखेड़ते हैं तो फ़ासिद ख़ून निकल जाता है ।

4 ..... "الجوھرۃ النیرۃ"، کتاب الصوم، ص۱۷۹.
و "ردالمحتار"، کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم وما لا یفسدہ، مطلب: یکرہ السھر... إلخ، ج۳، ص۴۲۱.

5 ..... "الجوھرۃ النیرۃ"، کتاب الصوم، ص۱۷۸.
و "الدرالمختار" کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم وما لا یفسدہ، ج۳، ص۴۲۱.

6 ...ठन्डक । 7 ...एक दवा का नाम ।

www.dawateislami.net

लुआ़ब के साथ ख़ुद ही उतर जाएगी और वोह उतर गई या दांतों से ख़ून निकल कर ह़ल्क़ तक पहुंचा, मगर ह़ल्क़ से नीचे न उतरा तो इन सब सूरतों में रोज़ा न गया।[1] (درمختار، فتح القدیر)

मस्अला 7 रोज़ेदार के पेट में किसी ने नेज़ा या तीर भोंक दिया, अगर्चे उस की भाल या पैकान[2] पेट के अन्दर रह गई या उस के पेट में झिल्ली तक ज़ख़्म था, किसी ने कंकरी मारी कि अन्दर चली गई तो रोज़ा नहीं टूटा और अगर ख़ुद उस ने येह सब किया और भाल या पैकान या कंकरी अन्दर रह गई तो जाता रहा।[3] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 8 बात करने में थूक से होंट तर हो गए और उसे पी गया या मुंह से राल टपकी, मगर तार टूटा न था कि उसे चढ़ा कर पी गया या नाक में रींठ आ गई बल्कि नाक से बाहर हो गई मगर मुन्क़त़अ़ न हुई थी कि उसे चढ़ा कर निगल गया या ख़न्कार मुंह में आया और खा गया अगर्चे कितना ही हो, रोज़ा न जाएगा मगर इन बातों से एह़तियात़ चाहिये।[4]

(عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 9 मख्खी ह़ल्क़ में चली गई रोज़ा न गया और क़स्दन निगली तो जाता रहा।[5] (عالمگیری)

मस्अला 10 भूले से जिमाअ़ कर रहा था याद आते ही अलग हो गया या सुब्ह़े सादिक़ से पेश्तर जिमाअ़ में मश्ग़ूल था सुब्ह़ होते ही जुदा हो गया रोज़ा न गया, अगर्चे दोनों सूरतों में जुदा होने के बाद इन्ज़ाल हो गया हो अगर्चे दोनों सूरतों में जुदा होना याद आने और सुब्ह़ होने पर हुवा कि जुदा होने की ह़रकत जिमाअ़ नहीं और अगर याद आने या सुब्ह़ होने पर फ़ौरन अलग न हुवा अगर्चे सिर्फ़ ठहर गया और ह़रकत न की रोज़ा जाता रहा।[6] (درمختار)

मस्अला 11 भूले से खाना खा रहा था, याद आते ही फ़ौरन लुक़्मा फेंक दिया या सुब्ह़े सादिक़ से पहले खा रहा था और सुब्ह़ होते ही उगल दिया, रोज़ा न गया और निगल लिया तो दोनों सूरतों में जाता रहा।[7] (عالمگیری)

मस्अला 12 ग़ैरे सबीलैन[8] में जिमाअ़ किया तो जब तक इन्ज़ाल न हो रोज़ा न टूटेगा।

1 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم وما لا یفسده، ج۳، ص۴۲۱.
و "فتح القدیر"، کتاب الصوم، باب ما یوجب القضاء و الکفارة، ج۲، ص۲۵۷ ـ ۲۵۸.

2 ...तीर या नेज़े की नोक।

3 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم وما لا یفسده، ج۳، ص۴۲۳.

4 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد وما لا یفسد، ج۱، ص۲۰۳.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم... إلخ، مطلب في حکم الاستمناء بالکف، ج۳، ص۴۲۸.

5 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد وما لا یفسد، ج۱، ص۲۰۳.

6 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد وما لا یفسده، ج۳، ص۴۲۴.

7 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد وما لا یفسد، ج۱، ص۲۰۳.

8 ...यानी आगे और पीछे के मक़ाम के इलावा।

www.dawateislami.net

यूंही हाथ से मनी निकालने में अगर्चे येह सख़्त ह़राम है कि ह़दीस में इसे मल्ऊ़न फ़रमाया ।[1] (درمختار)

मस्अला 13 चौपाए या मुर्दे से जिमाअ़ किया और इन्ज़ाल न हुवा तो रोज़ा न गया और इन्ज़ाल हुवा तो जाता रहा । जानवर का बोसा लिया या उस की फुर्ज को छुवा तो रोज़ा न गया अगर्चे इन्ज़ाल हो गया हो ।[2] (درمختار)

मस्अला 14 एह़तिलाम हुवा या ग़ीबत की तो रोज़ा न गया,[3] अगर्चे ग़ीबत बहुत सख़्त कबीरा है ।

क़ुरआने मजीद में ग़ीबत करने की निस्बत फ़रमाया : ''जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना ।''[4]

और ह़दीस में फ़रमाया : ''ग़ीबत ज़िना से भी सख़्त तर है ।''[5] अगर्चे ग़ीबत की वज्ह से रोज़े की नूरानिय्यत जाती रहती है । (درمختار وغیرہ)

मस्अला 15 जनाबत[6] की ह़ालत में सुब्ह़ की बल्कि अगर्चे सारे दिन जुनुब रहा रोज़ा न गया[7] मगर इतनी देर तक क़स्दन ग़ुस्ल न करना कि नमाज़ क़ज़ा हो जाए गुनाह व ह़राम है । ह़दीस में फ़रमाया कि जुनुब जिस घर में होता है, उस में रह़मत के फ़रिश्ते नहीं आते ।[8] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 16 जिन्न यानी परी से जिमाअ़ किया तो जब तक इन्ज़ाल न हो, रोज़ा न टूटेगा ।[9] (ردالمحتار) यानी जब कि इन्सानी शक्ल में न हो और इन्सानी शक्ल में हो तो वोही ह़ुक्म है जो इन्सान से जिमाअ़ करने का है ।

मस्अला 17 तिल या तिल के बराबर कोई चीज़ चबाई और थूक के साथ ह़ल्क़ से उतर गई तो रोज़ा न गया, मगर जब कि उस का मज़ा ह़ल्क़ में महसूस होता हो तो रोज़ा जाता रहा ।[10] (فتح القدیر)

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٢٦.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٢٧.

3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٢١، ٤٢٨.

4 ..... پ٢٦، الحجرات: ١٢. 5 ..... "المعجم الأوسط" للطبراني، الحديث: ٦٥٩٠، ج٥، ص٦٣.

6 ...यानी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने ।

7 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٢٨.

8 ..... انظر: "سنن أبي داود"، كتاب الطهارة، باب في الجنب يؤخر الغسل، الحديث: ٢٢٧، ج١، ص١٠٩.

9 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في جواز الافطار بالتحرى، ج٣، ص٤٤٢.

10 ..... "فتح القدير"، كتاب الصوم، باب ما يوجب القضاء و الكفارة، ج٢، ص٢٥٩.

www.dawateislami.net

रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ों का बयान

ह़दीस 1 बुख़ारी व अह़मद व अबू दावूद व तिरमिज़ी व इब्ने माजह व दारिमी अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने रमज़ान के एक दिन का रोज़ा बग़ैर रुख़्सत व बग़ैर मरज़ इफ़्तार किया तो ज़माने भर का रोज़ा उस की क़ज़ा नहीं हो सकता, अगर्चे रख भी ले।"(1) यानी वोह फ़ज़ीलत जो रमज़ान में रखने की थी किसी त़रह़ ह़ासिल नहीं कर सकता तो जब रोज़ा न रखने में येह सख़्त वईद है, रख कर तोड़ देना तो इस से सख़्त तर है।

ह़दीस 2 इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान अपनी सह़ीह़ में अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, कहते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से सुना कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : मैं सो रहा था, दो शख़्स ह़ाज़िर हुए और मेरे बाज़ू पकड़ कर एक पहाड़ के पास ले गए और मुझ से कहा : चढ़िये। मैं ने कहा : मुझ में इस की त़ाक़त नहीं, उन्हों ने कहा : हम सह्ल कर देंगे, मैं चढ़ गया, जब बीच पहाड़ पर पहुंचा तो सख़्त आवाज़ें सुनाई दीं, मैं ने कहा : येह कैसी आवाज़ें हैं ? उन्हों ने कहा : येह जहन्नमियों की आवाज़ें हैं फिर मुझे आगे ले गए, मैं ने एक क़ौम को देखा कि वोह लोग उलटे लटकाए गए हैं और उन की बाछें चीरी जा रही हैं, जिन से ख़ून बहता है। मैं ने कहा : "येह कौन लोग हैं ?" कहा : "येह वोह लोग हैं कि वक़्त से पहले रोज़ा इफ़्तार कर देते हैं।"(2)

ह़दीस 3 अबू याला ब अस्नादे ह़सन इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि "इस्लाम के कड़े और दीन के क़वाइद तीन हैं, जिन पर इस्लाम की बिना मज़बूत़ की गई, जो इन में एक को तर्क करे वोह काफ़िर है, उस का ख़ून ह़लाल है : **कलिमए तौह़ीद की शहादत** और **नमाज़े फ़र्ज़** और **रोज़ए रमज़ान**।"(3)

और एक रिवायत में है : "जो इन में से एक को तर्क करे, वोह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के साथ कुफ़्र करता है और उस का फ़र्ज़ व नफ़्ल कुछ मक़्बूल नहीं।"(4)

मस्अला 1 खाने पीने, जिमाअ़ करने से रोज़ा जाता रहता है, जब कि रोज़ादार होना याद हो।(5) (عامۂ کتب)

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في الإفطار متعمدا، الحديث: ۷۲۳، ج۲، ص۱۷۵.
2 ..... "صحيح ابن خزيمة"، أبواب صوم التطوع، باب ذكر تعليق المفطرين قبل وقت الإفطار... إلخ، الحديث: ۱۹۸٦، ج۳، ص۲۳۷.
3 ..... "مسند أبي يعلى"، مسند ابن عباس، الحديث: ۲۳٤٥، ج۲، ص۳۷۸.
4 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الصوم، الترهيب من إفطار شئى من رمضان من غير عذر، الحديث: ۳، ج۲، ص٦٦.
5 ..... "الهداية"، كتاب الصوم، باب مايوجب القضاء والكفارة، ج۱، ص۱۲۰.

www.dawateislami.net

मस्अला 2 हुक़्क़ा, सिगार, सिगरेट, चुरट पीने से रोज़ा जाता रहता है, अगर्चे अपने ख़याल में हल्क़ तक धूआं न पहुंचाता हो, बल्कि पान या सिर्फ़ तम्बाकू खाने से भी रोज़ा जाता रहेगा, अगर्चे पीक थूक दी हो कि इस के बारीक अज्ज़ा ज़रूर हल्क़ में पहुंचते हैं।

मस्अला 3 शकर वग़ैरा ऐसी चीज़ें जो मुंह में रखने से घुल जाती हैं, मुंह में रखी और थूक निगल गया रोज़ा जाता रहा। यूंही दांतों के दरमियान कोई चीज़ चने के बराबर या ज़ियादा थी उसे खा गया या कम ही थी,[1] मगर मुंह से निकाल कर फिर खा ली या दांतों से ख़ून निकल कर हल्क़ से नीचे उतरा और ख़ून थूक से ज़ियादा या बराबर था या कम था, मगर उस का मज़ा हल्क़ में महसूस हुवा तो इन सब सूरतों में रोज़ा जाता रहा और अगर कम था और मज़ा भी महसूस न हुवा, तो नहीं।[2] (درمختار)

मस्अला 4 रोज़े में दांत उखड़वाया और ख़ून निकल कर हल्क़ से नीचे उतरा, अगर्चे सोते में ऐसा हुवा तो इस रोज़े की क़ज़ा वाजिब है।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 5 कोई चीज़ पाख़ाना के मक़ाम में रखी, अगर उस का दूसरा सिरा बाहर रहा तो नहीं टूटा, वरना जाता रहा लेकिन अगर वोह तर है और उस की रुतूबत अन्दर पहुंची तो मुत्लक़न जाता रहा, येही हुक्म शर्मगाहे ज़न[4] का है, शर्मगाह से मुराद इस बाब में फ़ुर्जे दाख़िल[5] है। यूंही अगर डोरे में बोटी बांध कर निगल ली, अगर डोरे का दूसरा कनारा बाहर रहा और जल्द निकाल ली कि गलने न पाई तो नहीं गया और अगर डोरे का दूसरा कनारा भी अन्दर चला गया या बोटी का कुछ हिस्सा अन्दर रह गया तो रोज़ा जाता रहा।[6] (درمختار، عالمگیری)

मस्अला 6 औ़रत ने पेशाब के मक़ाम में रूई का कपड़ा रखा और बिल्कुल बाहर न रहा, रोज़ा जाता रहा और ख़ुश्क उंगली पाख़ाना के मक़ाम में रखी या औ़रत ने शर्मगाह में तो रोज़ा न गया और भीगी थी या उस पर कुछ लगा था तो जाता रहा, बशर्ते कि पाख़ाना के मक़ाम में उस जगह रखी हो जहां अ़मल देते वक़्त हुक़्ना का सिरा रखते हैं।[7] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

---

1 ...मगर फ़त्हुल क़दीर में फ़रमाया कि अगर इतनी हो कि बग़ैर थूक की मदद के हल्क़ से नीचे उतर सकती है तो इस से भी रोज़ा टूट जाएगा। और अगर इतनी ख़फ़ीफ़ हो कि लुआ़ब के साथ उतर सकती है वरना नहीं तो रोज़ा नहीं टूटेगा। 12 मिन्ह

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٢٢.

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم... إلخ، مطلب: يكره السهر اذا خاف فوت الصبح، ج٣، ص٤٢٢.

4 ...औ़रत की शर्मगाह। 5 ...यानी शर्मगाह का अन्दरूनी हिस्सा।

6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٢٣.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٤.

7 ..... "الفتاوى الهندية"، المرجع السابق، و "الدرالمختار"، المرجع السابق، ص٤٢٤.

www.dawateislami.net

मस्अला 7 मुबालगे़ के साथ इस्तिन्जा किया, यहां तक कि हुक़्ना रखने की जगह तक पानी पहुंच गया, रोज़ा जाता रहा और इतना मुबालगा़ चाहिये भी नहीं कि इस से सख़्त बीमारी का अन्देशा है।[1] (درمختار)

मस्अला 8 मर्द ने पेशाब के सूराख़ में पानी या तेल डाला तो रोज़ा न गया, अगर्चे मसाने तक पहुंच गया हो और औ़रत ने शर्मगाह में टपकाया तो जाता रहा।[2] (عالمگیری)

मस्अला 9 दिमाग़ या शिकम की झिल्ली तक ज़ख़्म है, उस में दवा डाली अगर दिमाग़ या शिकम तक पहुंच गई रोज़ा जाता रहा, ख़्वाह वोह दवा तर हो या ख़ुश्क और अगर मालूम न हो कि दिमाग़ या शिकम तक पहुंची या नहीं और वोह दवा तर थी, जब भी जाता रहा और ख़ुश्क थी तो नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 10 हुक़्ना[4] लिया या नथनों से दवा चढ़ाई या कान में तेल डाला या तेल चला गया, रोज़ा जाता रहा और पानी कान में चला गया या डाला तो नहीं।[5] (عالمگیری)

मस्अला 11 कुल्ली कर रहा था बिला क़स्द पानी ह़ल्क़ से उतर गया या नाक में पानी चढ़ाया और दिमाग़ को चढ़ गया रोज़ा जाता रहा, मगर जब कि रोज़ा होना भूल गया हो तो न टूटेगा अगर्चे क़स्दन हो। यूंही किसी ने रोज़ेदार की त़रफ़ कोई चीज़ फेंकी, वोह उस के ह़ल्क़ में चली गई रोज़ा जाता रहा।[6] (عالمگیری)

मस्अला 12 सोते में पानी पी लिया या कुछ खा लिया या मुंह खोला था और पानी का क़त़रा या ओला ह़ल्क़ में जा रहा, रोज़ा जाता रहा।[7] (جوہرہ،عالمگیری)

मस्अला 13 दूसरे का थूक निगल गया या अपना ही थूक हाथ पर ले कर निगल गया रोज़ा जाता रहा।[8] (عالمگیری)

मस्अला 14 मुंह में रंगीन डोरा रखा जिस से थूक रंगीन हो गया फिर थूक निगल लिया रोज़ा जाता रहा।[9] (عالمگیری)

मस्अला 15 डोरा बटा उसे तर करने के लिये मुंह पर गुज़ारा फिर दोबारा, सेहबारा यूंही

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٢٤.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٤.
3 ..... المرجع السابق.
4 ...यानी किसी दवा की बत्ती या पिचकारी पीछे के मक़ाम में चढ़ाना जिस से इजाबत हो जाए।
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٤.
6 ..... المرجع السابق، ص٢٠٢. 7 ..... المرجع السابق. و "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٧٨.
8 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٣.
9 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

किया रोज़ा न जाएगा मगर जब कि डोरे से कुछ रत़ूबत जुदा हो कर मुंह में रही और थूक के निगल लिया तो रोज़ा जाता रहा।[1] (جوہرہ)

मस्अला 16 आंसू मुंह में चला गया और निगल लिया, अगर क़त़रा दो क़त़रा है तो रोज़ा न गया और ज़ियादा था कि उस की नमकीनी पूरे मुंह में महसूस हुई तो जाता रहा। पसीने का भी येही हुक्म है।[2] (عالمگیری)

मस्अला 17 पाख़ाने का मक़ाम बाहर निकल पड़ा तो हुक्म है कि कपड़े से ख़ूब पोंछ कर उठे कि तरी बिल्कुल बाक़ी न रहे और अगर कुछ पानी उस पर बाक़ी था और खड़ा हो गया कि पानी अन्दर को चला गया तो रोज़ा फ़ासिद हो गया। इसी वज्ह से फ़ुक़हाए किराम फ़रमाते हैं कि रोज़ादार इस्तिन्जा करने में सांस न ले।[3] (عالمگیری)

मस्अला 18 औ़रत का बोसा लिया या छुवा या मुबाशरत की या गले लगाया और इन्ज़ाल हो गया तो रोज़ा जाता रहा और औ़रत ने मर्द को छुवा और मर्द को इन्ज़ाल हो गया तो रोज़ा न गया। औ़रत को कपड़े के ऊपर से छुवा और कपड़ा इतना दबीज़ है कि बदन की गर्मी महसूस नहीं होती तो फ़ासिद न हुवा अगर्चे इन्ज़ाल हो गया।[4] (عالمگیری)

मस्अला 19 क़स्दन भर मुंह क़ै की और रोज़ादार होना याद है तो मुत़्लक़न रोज़ा जाता रहा और इस से कम की तो नहीं और बिला इख़्तियार क़ै हो गई तो भर मुंह है या नहीं और बहर तक़्दीर वोह लौट कर ह़ल्क़ में चली गई या उस ने ख़ुद लौटाई या न लौटी, न लौटाई तो अगर भर मुंह न हो तो रोज़ा न गया, अगर्चे लौट गई या उस ने ख़ुद लौटाई और भर मुंह है और उस ने लौटाई, अगर्चे उस में से सिर्फ़ चने बराबर ह़ल्क़ से उतरी तो रोज़ा जाता रहा, वरना नहीं।[5] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 20 क़ै के येह अह़काम उस वक़्त हैं कि क़ै में खाना आए या सफ़रा[6] या ख़ून और बलग़म आया तो मुत़्लक़न रोज़ा न टूटा।[7] (عالمگیری)

मस्अला 21 रमज़ान में बिला उ़ज़्र जो शख़्स अ़लानिया क़स्दन खाए तो हुक्म है कि उसे क़त़्ल किया जाए।[8] (ردالمحتار)

---

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص ١٨١.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٣.

3 ..... المرجع السابق، ص٢٠٤. 4 ..... المرجع السابق، ص٢٠٤ ـ ٢٠٥.

5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لايفسده، ج٣، ص٤٥٠، وغيره.

6 ...यानी कड़वा पानी।

7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٤.

8 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لايفسده، مطلب في الكفارة، ج٣، ص٤٤٩.

www.dawateislami.net

उन सूरतों का बयान जिन में सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम है

मस्अला 1 येह गुमान था कि सुब्ह़ नहीं हुई और खाया पिया या जिमाअ़ किया, बाद को मालूम हुवा कि सुब्ह़ हो चुकी थी या खाने पीने पर मजबूर किया गया यानी इक्राहे शर्ई[1] पाया गया, अगर्चे अपने हाथ से खाया हो तो सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम है यानी उस रोज़े के बदले में एक रोज़ा रखना पड़ेगा।[2] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 2 भूल कर खाया या पिया या जिमाअ़ किया था या नज़र करने से इन्ज़ाल हुवा था या एह़तिलाम हुवा या क़ै हुई और इन सब सूरतों में येह गुमान किया कि रोज़ा जाता रहा अब क़स्दन खा लिया तो सिर्फ़ क़ज़ा फ़र्ज़ है।[3] (درمختار)

मस्अला 3 कान में तेल टपकाया या पेट या दिमाग़ की झिल्ली तक ज़ख़्म था, उस में दवा डाली कि पेट या दिमाग़ तक पहुंच गई या हुक़्ना लिया या नाक से दवा चढ़ाई या पथ्थर, कंकरी, मिट्टी, रूई, काग़ज़, घास वग़ैरहा ऐसी चीज़ खाई जिस से लोग घिन करते हैं या रमज़ान में बिला निय्यते रोज़ा रोज़े की त़रह़ रहा या सुब्ह़ को निय्यत नहीं की थी, दिन में ज़वाल से पेश्तर निय्यत की और बादे निय्यत खा लिया या रोज़े की निय्यत थी मगर रोज़ए रमज़ान की निय्यत न थी या उस के ह़ल्क़ में मींह की बूंद या ओला जा रहा या बहुत सा आंसू या पसीना निगल गया या बहुत छोटी लड़की से जिमाअ़ किया जो क़ाबिले जिमाअ़ न थी या मुर्दा या जानवर से वत़ी की या रान या पेट पर जिमाअ़ किया या बोसा लिया या औ़रत के होंट चूसे या औ़रत का बदन छुवा अगर्चे कोई कपड़ा ह़ाइल हो, मगर फिर भी बदन की गर्मी महसूस होती हो।

और इन सब सूरतों में इन्ज़ाल भी हो गया या हाथ से मनी निकाली या मुबाशरते फ़ाह़िशा से इन्ज़ाल हो गया या अदाए रमज़ान के इलावा और कोई रोज़ा फ़ासिद कर दिया, अगर्चे वोह रमज़ान ही की क़ज़ा हो या औ़रत रोज़ादार सो रही थी, सोते में उस से वत़ी की गई या सुब्ह़ को होश में थी और रोज़े की निय्यत कर ली थी फिर पागल हो गई और इसी ह़ालत में उस से वत़ी की गई या येह गुमान कर के कि रात है, सह़री खा ली या रात होने में शक था और सह़री खा ली ह़ालां कि सुब्ह़ हो चुकी थी या येह गुमान कर के कि आफ़्ताब डूब गया है, इफ़्त़ार कर लिया ह़ालां कि डूबा न था या दो शख़्सों ने शहादत दी कि आफ़्ताब डूब गया और दो ने शहादत दी कि दिन है और उस ने रोज़ा इफ़्त़ार कर लिया, बाद को मालूम हुवा कि ग़ुरूब नहीं हुवा था इन सब सूरतों में सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम है, कफ़्फ़ारा नहीं।[4] (درمختار وغیرہ)

---

1 ...इक्राहे शर्ई येह है कि कोई शख़्स किसी को सह़ीह़ धमकी दे कि अगर तू रोज़ा न तोड़ेगा तो मैं तुझे मार डालूंगा या हाथ पाउं तोड़ दूंगा या नाक, कान वग़ैरा कोई उ़ज़्व काट डालूंगा या सख़्त मार मारूंगा और रोज़ेदार येह समझता हो कि येह कहने वाला जो कुछ कहता है, कर गुज़रेगा।

2 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم وما لا یفسده، ج۳، ص۴۳۰، ۴۳۶، وغیره.

3 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم وما لا یفسده، ج۳، ص۴۳۱.

4 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم وما لا یفسده، ج۳، ص۴۳۱ ـ ۴۳۹، وغیره.

www.dawateislami.net

मस्अला 4 मुसाफ़िर ने इक़ामत की, हैज़ो निफ़ास वाली पाक हो गई, मज्नून को होश हो गया, मरीज़ था अच्छा हो गया, जिस का रोज़ा जाता रहा अगर्चे जबरन किसी ने तुड़वा दिया या ग़लती से पानी वग़ैरा कोई चीज़ हल्क़ में जा रही। काफ़िर था मुसलमान हो गया, ना बालिग़ था बालिग़ हो गया, रात समझ कर सहरी खाई थी हालां कि सुब्ह़ हो चुकी थी, ग़ुरूब समझ कर इफ़्तार कर दिया हालां कि दिन बाक़ी था इन सब बातों में जो कुछ दिन बाक़ी रह गया है, उसे रोज़े के मिस्ल गुज़ारना वाजिब है और ना बालिग़ जो बालिग़ हुवा या काफ़िर था मुसलमान हुवा इन पर उस दिन की क़ज़ा वाजिब नहीं बाक़ी सब पर क़ज़ा वाजिब है।[1] (درمختار)

मस्अला 5 ना बालिग़ दिन में बालिग़ हुवा या काफ़िर दिन में मुसलमान हुवा और वोह वक़्त ऐसा था कि रोज़े की निय्यत हो सकती है और निय्यत कर भी ली फिर वोह रोज़ा तोड़ दिया तो उस दिन की क़ज़ा वाजिब नहीं।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 6 बच्चे की उ़म्र दस[10] साल की हो जाए और उस में रोज़ा रखने की ताक़त हो तो उस से रोज़ा रखवाया जाए न रखे तो मार कर रखवाएं, अगर पूरी ताक़त देखी जाए और रख कर तोड़ दिया तो क़ज़ा का हुक्म न देंगे और नमाज़ तोड़े तो फिर पढ़वाएं।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 7 हैज़ो निफ़ास वाली औ़रत सुब्ह़े सादिक़ के बाद पाक हो गई, अगर्चे ज़ह़्वए कुब्रा से पेश्तर और रोज़े की निय्यत कर ली तो आज का रोज़ा न हुवा, न फ़र्ज़ न नफ़्ल और मरीज़ या मुसाफ़िर ने निय्यत की या मज्नून था होश में आ कर निय्यत की तो इन सब का रोज़ा हो गया।[4] (درمختار)

मस्अला 8 सुब्ह़ से पहले या भूल कर जिमाअ़ में मश्ग़ूल था, सुब्ह़ होते ही या याद आने पर फ़ौरन जुदा हो गया तो कुछ नहीं और इसी ह़ालत पर रहा तो क़ज़ा वाजिब है कफ़्फ़ारा नहीं।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 9 मय्यित के रोज़े क़ज़ा हो गए थे तो उस का वली उस की तरफ़ से फ़िदया अदा कर दे यानी जब कि वसिय्यत की और माल छोड़ा हो, वरना वली पर ज़रूरी नहीं, कर दे तो बेहतर है।

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٤٠.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في جواز الإفطار بالتحرى، ج٣، ص٤٤١.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في جواز الإفطار بالتحرى،ج٣، ص٤٤٢.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٤١.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب يكره السهر... إلخ، ج٣، ص٤٢٥.

www.dawateislami.net

उन सूरतों का बयान जिन में कफ़्फ़ारा भी लाज़िम है

मस्अला 1 रमज़ान में रोज़ेदार मुकल्लफ़ मुक़ीम ने कि अदाए रोज़ए रमज़ान की निय्यत से रोज़ा रखा और किसी आदमी के साथ जो क़ाबिले शह्वत है, उस के आगे या पीछे के मक़ाम में जिमाअ़ किया, इन्ज़ाल हुवा हो या नहीं या उस रोज़ेदार के साथ जिमाअ़ किया गया या कोई ग़िज़ा या दवा खाई या पानी पिया या कोई चीज़ लज़्ज़त के लिये खाई या पी या कोई ऐसा फ़ेल किया, जिस से इफ़्तार का गुमान न होता हो और उस ने गुमान कर लिया कि रोज़ा जाता रहा फिर क़स्दन खा पी लिया, मसलन फ़स्द या पछना लिया या सुरमा लगाया या जानवर से वती की या औ़रत को छुवा या बोसा लिया या साथ लिटाया या मुबाशरते फ़ाहिशा की, मगर इन सब सूरतों में इन्ज़ाल न हुवा या पाख़ाने के मक़ाम में ख़ुश्क उंगली रखी, अब इन अफ़्आ़ल के बाद क़स्दन खा लिया।

तो इन सब सूरतों में रोज़े की क़ज़ा और कफ़्फ़ारा दोनों लाज़िम हैं और अगर इन सूरतों में कि इफ़्तार का गुमान न था और इस ने गुमान कर लिया अगर किसी मुफ़्ती ने फ़तवा दे दिया था कि रोज़ा जाता रहा और वोह मुफ़्ती ऐसा हो कि अहले शहर का उस पर एतिमाद हो, उस के फ़तवा देने पर इस ने क़स्दन खा लिया या इस ने कोई ह़दीस सुनी थी जिस के सह़ीह़ माना न समझ सका और इस ग़लत़ माना के लिह़ाज़ से जान लिया कि रोज़ा जाता रहा और क़स्दन खा लिया तो अब कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं, अगर्चे मुफ़्ती ने ग़लत़ फ़तवा दिया या जो ह़दीस इस ने सुनी वोह साबित न हो।[1] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 2 जिस जगह रोज़ा तोड़ने से कफ़्फ़ारा लाज़िम आता है उस में शर्त़ येह है कि रात ही से रोज़ए रमज़ान की निय्यत की हो, अगर दिन में निय्यत की और तोड़ दिया तो कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं।[2] (جوہرہ)

मस्अला 3 मुसाफ़िर बाद सुब्ह़ के ज़ह़्वए कुब्रा से पहले वत़न को आया और रोज़े की निय्यत कर ली फिर तोड़ दिया या मज्नून उस वक़्त होश में आया और रोज़े की निय्यत कर के फिर तोड़ दिया तो कफ़्फ़ारा नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 4 कफ़्फ़ारा लाज़िम होने के लिये येह भी ज़रूरी है कि रोज़ा तोड़ने के बाद कोई ऐसा अम्र वाक़ेअ़ न हुवा हो जो रोज़े के मुनाफ़ी हो या बग़ैर इख़्तियार ऐसा अम्र न पाया गया हो जिस की वज्ह से रोज़ा इफ़्तार करने की रुख़्सत होती, मसलन औ़रत को उसी दिन में ह़ैज़ या निफ़ास आ गया या रोज़ा तोड़ने के बाद उसी दिन में ऐसा बीमार हो गया जिस में रोज़ा न रखने की इजाज़त है तो कफ़्फ़ारा साक़ित़ है और सफ़र से साक़ित़ न होगा कि येह इख़्तियारी

1 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم وما لا یفسدہ، ج۳، ص۴۴۲ ـ ۴۴۶.
2 ..... "الجوهرة النيرة"، کتاب الصوم، ص۱۸۰ ـ ۱۸۱.
3 ..... "الفتاوی الهندية"، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد وما لا یفسد، ج۱، ص۲۰۶.

www.dawateislami.net

अम्र है। यूंही अगर अपने को ज़ख़्मी कर लिया और ह़ालत येह हो गई कि रोज़ा नहीं रख सकता, कफ़्फ़ारा साक़ित़ न होगा।[1] (جوہرہ)

मस्अला 5 वोह काम किया जिस से कफ़्फ़ारा वाजिब होता है फिर बादशाह ने उसे सफ़र पर मजबूर किया कफ़्फ़ारा साक़ित़ न होगा।[2] (عالمگیری)

मस्अला 6 मर्द को मजबूर कर के जिमाअ़ कराया या औ़रत को मर्द ने मजबूर किया फिर अस्नाए जिमाअ़ में अपनी ख़ुशी से मश्ग़ूल रहा या रही तो कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं कि रोज़ा तो पहले ही टूट चुका है।[3] (جوہرہ) मजबूरी से मुराद इक्राहे शरई है, जिस में क़त्ल या उ़ज़्व काट डालने या ज़र्बे शदीद[4] की सह़ीह़ धमकी दी जाए और रोज़ादार भी समझे कि अगर मैं इस का कहा न मानूंगा तो जो कहता है, कर गुज़रेगा।

मस्अला 7 कफ़्फ़ारा वाजिब होने के लिये भरपेट खाना ज़रूरी नहीं, थोड़ा सा खाने से भी वाजिब हो जाएगा।[5] (جوہرہ)

मस्अला 8 तेल लगाया या ग़ीबत की फिर येह गुमान कर लिया कि रोज़ा जाता रहा या किसी आ़लिम ही ने रोज़ा जाने का फ़तवा दे दिया, अब उस ने खा पी लिया जब भी कफ़्फ़ारा लाज़िम है।[6] (درمختار)

मस्अला 9 क़ै आई या भूल कर खाया या पिया या जिमाअ़ किया और इन सब सूरतों में उसे मालूम था कि रोज़ा न गया फिर इस के बाद खा लिया तो कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं और अगर एह़तिलाम हुवा और इसे मालूम था कि रोज़ा न गया फिर खा लिया तो कफ़्फ़ारा लाज़िम है।[7] (ردالمحتار)

मस्अला 10 लुआ़ब थूक कर चाट गया या दूसरे का थूक निगल गया तो कफ़्फ़ारा नहीं, मगर मह़बूब का लज़्ज़त या मुअ़ज़्ज़मे दीनी[8] का तबर्रुक के लिये थूक निगल गया तो कफ़्फ़ारा लाज़िम है।[9] (ردالمحتار)

मस्अला 11 जिन सूरतों में रोज़ा तोड़ने पर कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं उन में शर्त़ है कि एक ही बार ऐसा हुवा हो और मआ़सियत का क़स्द न किया हो, वरना उन में कफ़्फ़ारा देना होगा।[10] (درمختار)

---

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨١.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٦.
3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨٠ ـ ١٨١.
4 ...यानी सख़्त मार।
5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨٠.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٤٦.
7 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم... إلخ، مطلب في حكم الاستمناء بالكف، ج٣، ص٤٣١، وغيره.
8 ...यानी बुज़ुर्ग। 9 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في جواز الإفطار بالتحري، ج٣، ص٤٤٤.
10 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٤٠.

www.dawateislami.net

मस्अला 12 कच्चा गोश्त खाया अगर्चे मुर्दार का हो तो कफ़्फ़ारा लाज़िम है, मगर जब कि सड़ा हो या उस में कीड़े पड़ गए हों तो कफ़्फ़ारा नहीं।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 13 मिट्टी खाने से कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं, मगर गिले अर्मनी या वोह मिट्टी जिस के खाने की उसे आ़दत है, खाई तो कफ़्फ़ारा वाजिब है और नमक अगर थोड़ा खाया तो कफ़्फ़ारा वाजिब है, ज़ियादा खाया तो नहीं।[2] (جوہرہ،عالمگیری)

मस्अला 14 नजिस शोरबे में रोटी भिगो कर खाई या किसी की कोई चीज़ ग़स्ब कर के खा ली तो कफ़्फ़ारा वाजिब है और थूक में ख़ून था अगर्चे ख़ून ग़ालिब हो, निगल लिया या ख़ून पी लिया तो कफ़्फ़ारा नहीं।[3] (جوہرہ)

मस्अला 15 कच्ची बिही खाई या पिस्ता या अख़्रोट मुसल्लम या ख़ुश्क या बादाम मुसल्लम निगल लिया या छिलके समेत अन्डा या छिलके के साथ अनार खा लिया तो कफ़्फ़ारा नहीं और ख़ुश्क पिस्ता या ख़ुश्क बादाम अगर चबा कर खाया और उस में मग़्ज़ भी हो तो कफ़्फ़ारा है और मुसल्लम निगल लिया हो तो नहीं, अगर्चे फटा हो और तर बादाम मुसल्लम निगलने में भी कफ़्फ़ारा है।[4] (عالمگیری)

मस्अला 16 चने का साग खाया तो कफ़्फ़ारा वाजिब, येही हुक्म दरख़्त के पत्तों का है जब कि खाए जाते हों, वरना नहीं।

मस्अला 17 ख़रबूज़ा या तरबूज़ का छिलका खाया, अगर ख़ुश्क हो या ऐसा हो कि लोग उस के खाने से घिन करते हों तो कफ़्फ़ारा नहीं, वरना है। कच्चे चावल, बाजरा, मसूर, मूंग खाई तो कफ़्फ़ारा नहीं, येही हुक्म कच्चे जव का है और भुने हुए हों तो कफ़्फ़ारा लाज़िम।[5] (عالمگیری)

मस्अला 18 तिल या तिल के बराबर खाने की कोई चीज़ बाहर से मुंह में डाल कर बग़ैर चबाए निगल गया तो रोज़ा गया और कफ़्फ़ारा वाजिब।[6] (درمختار)

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في جواز الإفطار بالتحري، ج٣،ص٤٤٤ ـ ٤٤٥
2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨١.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٢، ٢٠٥.
3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨١.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٢، ٢٠٥.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد وما لا يفسد، ج١، ص٢٠٢، ٢٠٥.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٥٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 19 दूसरे ने निवाला चबा कर दिया, उस ने खा लिया या उस ने खुद अपने मुंह से निकाल कर खा लिया तो कफ़्फ़ारा नहीं।[1] (عالمگیری) बशर्ते कि उस के चबाए हुए को लज़्ज़त या तबर्रुक न समझता हो।

मस्अला 20 सह्‌री का निवाला मुंह में था कि सुब्ह़ तुलूअ़ हो गई या भूल कर खा रहा था, निवाला मुंह में था कि याद आ गया और निगल लिया तो दोनों सूरतों में कफ़्फ़ारा वाजिब, मगर जब मुंह से निकाल कर फिर खाया हो तो सिर्फ़ क़ज़ा वाजिब होगी कफ़्फ़ारा नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 21 औ़रत ने ना बालिग़ या मज्नून से वती करा‌ई या मर्द को वती करने पर मजबूर किया, तो औ़रत पर कफ़्फ़ारा वाजिब है मर्द पर नहीं।[3] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 22 मुश्क, ज़ाफ़रान, काफ़ूर, सिर्का खाया या ख़रबूज़ा, तरबूज़, ककड़ी, खीरा, बाक़िला का पानी पिया तो कफ़्फ़ारा वाजिब है।[4] (عالمگیری)

मस्अला 23 रमज़ान में रोज़ादार क़त्ल के लिये लाया गया, उस ने पानी मांगा, किसी ने उसे पानी पिला दिया फिर वोह छोड़ दिया गया तो उस पर कफ़्फ़ारा वाजिब है।[5] (عالمگیری)

मस्अला 24 बारी से बुख़ार आता था और आज बारी का दिन था, उस ने येह गुमान कर के कि बुख़ार आएगा रोज़ा क़स्दन तोड़ दिया तो इस सूरत में कफ़्फ़ारा साक़ित है।[6] यूंही औ़रत को मुअ़य्यन तारीख़ पर ह़ैज़ आता था और आज ह़ैज़ आने का दिन था, उस ने क़स्दन रोज़ा तोड़ दिया और ह़ैज़ न आया तो कफ़्फ़ारा साक़ित हो गया। यूंही अगर यक़ीन था कि दुश्मन से आज लड़ना है और रोज़ा तोड़ डाला और लड़ाई न हुई तो कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं।[7] (درمختار)

मस्अला 25 रोज़ा तोड़ने का कफ़्फ़ारा येह है कि मुम्किन हो तो एक रक़बा यानी बांदी या ग़ुलाम आज़ाद करे और येह न कर सके मसलन इस के पास न लौंडी ग़ुलाम है, न इतना माल कि ख़रीदे या माल तो है मगर रक़बा मुयस्सर नहीं जैसे आज कल यहां हिन्दुस्तान में। तो पै दर पै साठ रोज़े रखे, येह भी न कर सके तो साठ[60] मसाकीन को भर भर पेट दोनों वक़्त खाना खिलाए और रोज़े की सूरत में अगर दरमियान में एक दिन का भी छूट गया तो अब से साठ[60] रोज़े रखे, पहले के रोज़े मह़सूब न होंगे अगर्चे उन्सठ[59] रख चुका था, अगर्चे बीमारी वग़ैरा

1 ..... 2 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد وما لا یفسد، ج۱، ص۲۰۳.
3 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد وما لا یفسد، ج۱، ص۲۰۵، وغیره.
4 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد وما لا یفسد، ج۱، ص۲۰۵.
5 ..... المرجع السابق، ص۲۰۶.
6 ...यानी कफ़्फ़ारे की ज़रूरत नहीं।
7 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، باب ما یفسد الصوم وما لا یفسده، ج۳، ص۴۴۸.

www.dawateislami.net

किसी उ़ज़्र के सबब छूटा हो, मगर औ़रत को हैज़ आ जाए तो हैज़ की वज्ह से जितने नागे़ हुए येह नागे़ नहीं शुमार किये जाएंगे यानी पहले के रोज़े और हैज़ के बाद वाले दोनों मिल कर साठ[60] हो जाने से कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा ।[1] (कुतुबे कसीरा)

मस्अला 26 अगर दो रोज़े तोड़े तो दोनों के लिये दो कफ़्फ़ारे दे, अगर्चे पहले का अभी कफ़्फ़ारा न अदा किया हो ।[2] (ردالمحتار) यानी जब कि दोनों दो रमज़ान के हों और अगर दोनों रोज़े एक ही रमज़ान के हों और पहले का कफ़्फ़ारा अदा न किया हो तो एक ही कफ़्फ़ारा दोनों के लिये काफ़ी है ।[3] (جوہرہ)

कफ़्फ़ारे के मुतअ़ल्लिक़ दीगर जुज़्इय्यात किताबुत्तलाक़ बाबुज़्ज़िहार में اِنْ شَآءَ اللہ تَعَالٰی मालूम होंगी ।

मस्अला 27 आज़ाद व ग़ुलाम, मर्द व औ़रत, बादशाह व फ़क़ीर सब पर रोज़ा तोड़ने से कफ़्फ़ारा वाजिब होता है, यहां तक कि बांदी को अगर मालूम था कि सुब्ह़ हो गई उस ने अपने आक़ा को ख़बर दी कि अभी सुब्ह़ न हुई उस ने इस के साथ जिमाअ़ किया तो लौंडी पर कफ़्फ़ारा वाजिब होगा और उस के मौला पर सिर्फ़ क़ज़ा है कफ़्फ़ारा नहीं ।[4] (ردالمحتار)

रोज़े के मक्रूहात का बयान

ह़दीस 1 व 2 बुख़ारी व अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो बुरी बात कहना और उस पर अ़मल करना न छोड़े, तो **अल्लाह** तआ़ला को इस की कुछ ह़ाजत नहीं कि उस ने खाना पीना छोड़ दिया है ।"[5] और इसी के मिस्ल त़बरानी ने अनस رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत की ।

ह़दीस 3 व 4 इब्ने माजह व नसाई व इब्ने ख़ुज़ैमा व ह़ाकिम व बैहक़ी व दारिमी अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बहुत से रोज़ेदार ऐसे हैं कि उन्हें रोज़े से सिवा प्यास के कुछ ह़ासिल नहीं और बहुत से रात में क़ियाम करने वाले

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في الكفارة، ج٣، ص٤٤٧.
و "الفتاوى الرضوية"، ج١٠، ص٥٩٥،وغيرهما.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في الكفارة، ج٣، ص٤٤٩.
3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨٢.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في الكفارة، ج٣، ص٤٤٧.
5 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب من لم يدع قول الزور والعمل به في الصوم، الحديث: ١٩٠٣،ج١، ص٦٢٨.

www.dawateislami.net

ऐसे कि उन्हें जागने के सिवा कुछ ह़ासिल नहीं।"[1] और इसी के मिस्ल त़बरानी ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रिवायत की।

ह़दीस 5 व 6 बैहक़ी अबू उ़बैदा और त़बरानी अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "रोज़ा सिपर है, जब तक इसे फाड़ा न हो।" अ़र्ज़ की गई : किस चीज़ से फाड़ेगा ? इरशाद फ़रमाया : झूट या ग़ीबत से।"[2]

ह़दीस 7 इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान व ह़ाकिम अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "रोज़ा इस का नाम नहीं कि खाने और पीने से बाज़ रहना हो, रोज़ा तो येह है कि लग़्व व बेहूदा बातों से बचा जाए।"[3]

ह़दीस 8 अबू दावूद ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रिवायत की, कि एक शख़्स ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم से रोज़ादार को मुबाशरत करने के बारे में सुवाल किया, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ने उन्हें इजाज़त दी फिर एक दूसरे साहिब ने ह़ाज़िर हो कर येही सुवाल किया तो उन्हें मन्अ़ फ़रमाया और जिन को इजाज़त दी थी, बूढ़े थे और जिन को मन्अ़ फ़रमाया, जवान थे।[4]

ह़दीस 9 अबू दावूद व तिरमिज़ी आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रावी, कहते हैं : मैं ने बे शुमार बार नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم को रोज़े में मिस्वाक करते देखा।[5]

मस्अला 1 झूट, चुग़ली, ग़ीबत, गाली देना, बेहूदा बात, किसी को तक्लीफ़ देना कि येह चीज़ें वैसे भी ना जाइज़ व ह़राम हैं, रोज़े में और ज़ियादा ह़राम और इन की वज्ह से रोज़े में कराहत आती है।

मस्अला 2 रोज़ेदार को बिला उ़ज़्र किसी चीज़ का चखना या चबाना मक्रूह है। चखने के लिये उ़ज़्र येह है कि मसलन औ़रत का शौहर या बांदी ग़ुलाम का आक़ा बद मिज़ाज है कि नमक कमो बेश होगा तो उस की नाराज़ी का बाइ़स होगा इस वज्ह से चखने में ह़रज नहीं, चबाने के लिये येह उ़ज़्र है कि इतना छोटा बच्चा है कि रोटी नहीं खा सकता और कोई नर्म ग़िज़ा नहीं जो उसे खिलाई जाए, न हैज़ो निफ़ास वाली या कोई और बे रोज़ा ऐसा है जो उसे चबा कर दे दे, तो बच्चे के खिलाने के लिये रोटी वग़ैरा चबाना मक्रूह नहीं।[6] (درمختار وغیرہ)

1 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الصيام، باب ماجاء في الغيبة والرفث للصائم، الحديث: ١٦٩٠، ج٢، ص٣٢٠. و "السنن الكبرى"، كتاب الصيام، باب الصائم... الخ، الحديث: ٨٣١٣، ج٤، ص٤٤٩.
2 ..... "المعجم الأوسط"، باب العين، الحديث: ٤٥٣٦، ج٣، ص٢٦٤.
3 ..... "المستدرك" للحاكم، كتاب الصوم، باب من أفطر في رمضان ناسيا... إلخ، الحديث: ١٦١١، ج٢، ص٦٧.
4 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب كراهية للشاب، الحديث: ٢٣٨٧، ج٢، ص٤٥٧.
5 ..... "جامع الترمذي"، ابواب الصوم، باب ماجاء في السواك للصائم، الحديث: ٧٢٥، ج٢، ص١٧٦.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لايفسده، ج٣، ص٤٥٣، وغيره.

www.dawateislami.net

चखने के वोह माना नहीं जो आज कल आ़म मुहावरा है यानी किसी चीज़ का मज़ा दरयाफ़्त करने के लिये उस में से थोड़ा खा लेना कि यूं हो तो कराहत कैसी रोज़ा ही जाता रहेगा, बल्कि कफ़्फ़ारे के शराइत़ पाए जाएं तो कफ़्फ़ारा भी लाज़िम होगा। बल्कि चखने से मुराद येह है कि ज़बान पर रख कर मज़ा दरयाफ़्त कर लें और उसे थूक दें उस में से ह़ल्क़ में कुछ न जाने पाए।

मस्अला 3 कोई चीज़ ख़रीदी और उस का चखना ज़रूरी है कि न चखेगा तो नुक़्सान होगा तो चखने में ह़रज नहीं वरना मक्रूह है।[1] (درمختار)

मस्अला 4 बिला उ़ज़्र चखना जो मक्रूह बताया गया येह फ़र्ज़ रोज़े का हुक्म है, नफ़्ल में कराहत नहीं, जब कि इस की ह़ाजत हो।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 5 औ़रत का बोसा लेना और गले लगाना और बदन छूना मक्रूह है जब कि येह अन्देशा हो कि इन्ज़ाल हो जाएगा या जिमाअ़ में मुब्तला होगा और होंट और ज़बान चूसना रोज़े में मुत़्लक़न[3] मक्रूह है। यूंही मुबाशरते फ़ाह़िशा।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 6 गुलाब या मुश्क वग़ैरा सूंघना, दाढ़ी मूंछ में तेल लगाना और सुरमा लगाना मक्रूह नहीं, मगर जब कि ज़ीनत के लिये सुरमा लगाया या इस लिये तेल लगाया कि दाढ़ी बढ़ जाए, ह़ालां कि एक मुश्त[5] दाढ़ी है तो येह दोनों बातें बग़ैर रोज़े के भी मक्रूह हैं और रोज़े में ब दरजए औला।[6] (درمختار)

मस्अला 7 रोज़े में मिस्वाक करना मक्रूह नहीं, बल्कि जैसे और दिनों में सुन्नत है रोज़े में भी मस्नून है। मिस्वाक ख़ुश्क हो या तर अगर्चे पानी से तर की हो, ज़वाल से पहले करे या बाद किसी वक़्त मक्रूह नहीं।[7] (عامۂ کتب) अक्सर लोगों में मश्हूर है कि दोपहर बाद रोज़ेदार के लिये मिस्वाक करना मक्रूह है, येह हमारे मज़्हब के ख़िलाफ़ है।

मस्अला 8 फ़स्द खुलवाना, पछने लगवाना मक्रूह नहीं जब कि ज़ोफ़ का अन्देशा न

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٥٣.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد ما لا يفسده، ج٣، ص٤٥٣.
3 ...यानी चाहे इन्ज़ाल व जिमाअ़ का डर हो या न हो।
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب: فيما يكره للصائم، ج٣، ص٤٥٤.
5 ...यानी एक मुठ्ठी।
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٥٥.
7 ..... "البحر الرائق"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٢، ص٤٩١.

मुजद्दिदे आज़म आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं कि अगर मिस्वाक चबाने से रेशे छूटें या मज़ा मह़सूस हो तो ऐसी मिस्वाक रोज़े में नहीं करना चाहिये। ("الفتاوى الرضوية"، ج١٠، ص٥١١).

www.dawateislami.net

हो और अन्देशा हो तो मक्रूह है, उसे चाहिये कि ग़ुरूब तक मुअख़्ख़र करे।[1] (عالمگیری)

मस्अला 9 रोज़ेदार के लिये कुल्ली करने और नाक में पानी चढ़ाने में मुबालग़ा करना मक्रूह है। कुल्ली में मुबालग़ा करने के येह माना हैं कि भर मुंह पानी ले और वुज़ू व ग़ुस्ल के इ़लावा ठन्ड पहुंचाने की ग़रज़ से कुल्ली करना या नाक में पानी चढ़ाना या ठन्ड के लिये नहाना बल्कि बदन पर भीगा कपड़ा लपेटना मक्रूह नहीं। हां, अगर परेशानी ज़ाहिर करने के लिये भीगा कपड़ा लपेटा तो मक्रूह है कि इ़बादत में दिलतंग होना अच्छी बात नहीं।[2] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 10 पानी के अन्दर[3] रियाह़ ख़ारिज करने से रोज़ा नहीं जाता, मगर मक्रूह है और रोज़ादार को इस्तिन्जे में मुबालग़ा करना भी मक्रूह है।[4] (عالمگیری) यानी और दिनों में हुक्म येह है कि इस्तिन्जा करने में नीचे को ज़ोर दिया जाए और रोज़े में येह मक्रूह है।

मस्अला 11 मुंह में थूक इकठ्ठा कर के निगल जाना बग़ैर रोज़े के भी ना पसन्द है और रोज़े में मक्रूह।[5] (عالمگیری)

मस्अला 12 रमज़ान के दिनों में ऐसा काम करना जाइज़ नहीं जिस से ऐसा ज़ोफ़ आ जाए कि रोज़ा तोड़ने का ज़न ग़ालिब हो। लिहाज़ा नानबाई को चाहिये कि दोपहर तक रोटी पकाए फिर बाक़ी दिन में आराम करे।[6] (درمختار) येही हुक्म मिअ़मार व मज़दूर और मशक़्क़त के काम करने वालों का है कि ज़ियादा ज़ोफ़ का अन्देशा हो तो काम में कमी कर दें कि रोज़े अदा कर सकें।

मस्अला 13 अगर रोज़ा रखेगा तो कमज़ोर हो जाएगा, खड़े हो कर नमाज़ न पढ़ सकेगा तो हुक्म है कि रोज़ा रखे और बैठ कर नमाज़ पढ़े।[7] (درمختار) जब कि खड़ा होने से इतना ही आ़जिज़ हो जो बाबे सलातुल मरीज़ में गुज़रा।

मस्अला 14 सह़री खाना और इस में ताख़ीर करना मुस्तह़ब है, मगर इतनी ताख़ीर मक्रूह है कि सुब्ह़ हो जाने का शक हो जाए।[8] (عالمگیری)

मस्अला 15 इफ़्तार में जल्दी करना मुस्तह़ब है, मगर इफ़्तार उस वक़्त करे कि ग़ुरूब का ग़ालिब गुमान हो, जब तक गुमाने ग़ालिब न हो इफ़्तार न करे, अगर्चे मुअज़्ज़िन ने अज़ान कह

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثالث، فيما يكره للصائم وما لا يكره، ج١، ص١٩٩ ـ ٢٠٠.
2 ..... المرجع السابق، ص١٩٩، و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في حديث التوسعة على العيال والاكتحال يوم عاشوراء، ج٣، ص٤٥٩. وغيرهما
3 ...मसलन नह्र, नदी, तालाब वग़ैरा में नहाते वक़्त।
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثالث فيمايكره للصائم وما لا يكره، ج١، ص١٩٩.
5 ..... المرجع السابق، وغيره.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، ج٣، ص٤٦٠.
7 ..... المرجع السابق، ص٤٦١.
8 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الثالث، فيمايكره للصائم وما لا يكره، ج١، ص٢٠٠.

www.dawateislami.net

दी है और अब्र के दिनों में इफ़्तार जल्दी न चाहिये।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 16 एक आ़दिल के क़ौल पर इफ़्तार कर सकता है, जब कि उस की बात सच्ची मानता हो और अगर उस की तस्दीक़ न करे तो उस के क़ौल की बिना पर इफ़्तार न करे। यूंही मस्तूर के कहने पर भी इफ़्तार न करे और आज कल अक्सर इस्लामी मक़ामात में इफ़्तार के वक़्त तोप चलने का रवाज है, इस पर इफ़्तार कर सकता है, अगर्चे तोप चलाने वाले फ़ासिक़ हों जब कि किसी आ़लिमे मुह़क़्क़क़ तौक़ीत दान मोह़तात़ फ़िद्दीन के हुक्म पर चलती हो।[2]

आज कल के आ़म उ़लमा भी इस फ़न से ना वाक़िफ़े मह़ज़ हैं और जन्त्रियां कि शाएअ़ होती हैं अक्सर ग़लत़ होती हैं उन पर अ़मल जाइज़ नहीं। यूंही सह़री के वक़्त अक्सर जगह नक़्क़ारा बजता है, इन्हीं शराइत़ के साथ इस का भी एतिबार है अगर्चे बजाने वाले कैसे ही हों।

मस्अला 17 सह़री के वक़्त मुर्ग़ की अज़ान का एतिबार नहीं कि अक्सर देखा गया है कि सुब्ह़ से बहुत पहले अज़ान शुरूअ़ कर देते हैं, बल्कि जाड़े के दिनों में तो बाज़ मुर्ग़ दो बजे से अज़ान कहना शुरूअ़ कर देते हैं, ह़ालां कि इस वक़्त सुब्ह़ होने में बहुत वक़्त बाक़ी रहता है। यूंही बोलचाल सुन कर और रोशनी देख कर बोलने लगते हैं।[3] (ردالمحتار مع زيادة)

मस्अला 18 सुब्ह़े सादिक़ को रात का मुत़्लक़न छटा या सातवां हिस्सा समझना ग़लत़ है। रहा येह कि सुब्ह़ किस वक़्त होती है उसे हम हिस्सए सिवुम बाबुल अवक़ात में बयान कर आए वहां से मालूम करें।

सह़री व इफ़्तार का बयान

ह़दीस 1 बुख़ारी व मुस्लिम व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सह़री खाओ कि सह़री खाने में बरकत है।"[4]

ह़दीस 2 मुस्लिम व अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने ख़ुज़ैमा अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हमारे और अहले किताब के रोज़ों में फ़र्क़ सह़री का लुक़्मा है।"[5]

ह़दीस 3 त़बरानी ने कबीर में सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "तीन चीज़ों में बरकत है, जमाअ़त और सरीद और

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم... إلخ، مطلب في حديث التوسعة على العيال... إلخ، ج٣، ص٤٥٩.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب ما يفسد الصوم وما لا يفسده، مطلب في جواز الإفطار التحرى، ج٣، ص٤٣٩، وغيره.
3 ..... 4 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، بابركة السحور من غير ايجاب، الحديث: ١٩٢٣، ج١، ص٦٣٣.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب فضل السحور... إلخ، الحديث: ١٠٩٦، ص٥٥٢.

www.dawateislami.net

सह़री में।"[1]

ह़दीस 4 त़बरानी औसत़ में और इब्ने ह़ब्बान सह़ीह़ में इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के फ़रिश्ते, सह़री खाने वालों पर दुरूद भेजते हैं।"[2]

ह़दीस 5 इब्ने माजह व इब्ने ख़ुज़ैमा व बैहक़ी इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सह़री खाने से दिन के रोज़े पर इस्तिआ़नत करो और क़ैलूला से रात के क़ियाम पर।"[3]

ह़दीस 6 नसाई ब अस्नादे ह़सन एक सह़ाबी से रावी, कहते हैं : मैं हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) सह़री तनावुल फ़रमा रहे थे, इरशाद फ़रमाया : "येह बरकत है कि **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हें दी तो इसे न छोड़ना।"[4]

ह़दीस 7 त़बरानी कबीर में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तीन शख़्सों पर खाने में اِنْ شَآءَ اللّٰہ تَعَالٰی ह़िसाब नहीं, जब कि ह़लाल खाया। रोज़ादार और सह़री खाने वाला और सरह़द पर घोड़ा बांधने वाला।"[5]

ह़दीस 8 ता 10 इमाम अह़मद अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सह़री कुल की कुल बरकत है इसे न छोड़ना, अगर्चे एक घूंट पानी ही पी ले क्यूं कि सह़री खाने वालों पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और उस के फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं।"[6] नीज़ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर व साइब बिन यज़ीद व अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से भी इसी क़िस्म की रिवायतें आईं।

ह़दीस 11 बुख़ारी व मुस्लिम व तिरमिज़ी सह्ल बिन सअ़्द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "हमेशा लोग ख़ैर के साथ रहेंगे, जब तक इफ़्तार में जल्दी करेंगे।"[7]

ह़दीस 12 इब्ने ह़ब्बान सह़ीह़ में इन्हीं से रावी कि फ़रमाया : "मेरी उम्मत मेरी सुन्नत पर रहेगी, जब तक इफ़्तार में सितारों का इन्तिज़ार न करे।"[8]

1 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ٦١٢٧، ج٦، ص٢٥١.
2 ..... "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الصوم، باب السحور، الحديث: ٣٤٥٨، ج٥، ص١٩٤.
3 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ماجاء في الصيام، باب ماجاء في السحور، الحديث: ١٦٩٣، ج٢، ص٣٢١.
4 ..... "السنن الكبرى" للنسائي، كتاب الصيام، باب فضل السحور، الحديث: ٢٤٧٢، ج٢، ص٧٩.
5 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ١٢٠١٢، ج١١، ص٢٨٥.
6 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي سعيد الخدرى، الحديث: ١١٠٨٦، ج٤، ص٢٦.
7 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب تعجيل الإفطار، الحديث: ١٩٥٧، ج١، ص٦٤٥.
8 ..... "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الصوم، باب الإفطار و تعجيله، الحديث: ٣٥٠١، ج٥، ص٢٠٩.

www.dawateislami.net

ह़दीस 13 अह़मद व तिरमिज़ी व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "मेरे बन्दों में मुझे ज़ियादा प्यारा वोह है, जो इफ़्त़ार में जल्दी करता है।"(1)

ह़दीस 14 त़बरानी औसत़ में याला बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि फ़रमाया : "तीन चीज़ों को **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) महबूब रखता है : इफ़्त़ार में जल्दी करना और सह़री में ताख़ीर और नमाज़ में हाथ पर हाथ रखना।"(2)

ह़दीस 15 अबू दावूद व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "येह दीन हमेशा ग़ालिब रहेगा, जब तक लोग इफ़्त़ार में जल्दी करते रहेंगे कि यहूदो नसारा ताख़ीर करते हैं।"(3)

ह़दीस 16 इमाम अह़मद व अबू दावूद व तिरमिज़ी व इब्ने माजह व दारिमी सलमान बिन आ़मिर ज़ब्बी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जब तुम में कोई रोज़ा इफ़्त़ार करे तो खजूर या छूहारे से इफ़्त़ार करे कि वोह बरकत है और अगर न मिले तो पानी से कि वोह पाक करने वाला है।"(4)

ह़दीस 17 अबू दावूद व तिरमिज़ी अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) नमाज़ से पहले तर खजूरों से रोज़ा इफ़्त़ार फ़रमाते, तर खजूरें न होतीं तो चन्द ख़ुश्क खजूरों से और अगर येह भी न होतीं तो चन्द चुल्लू पानी पीते।"(5)

अबू दावूद ने रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) इफ़्त़ार के वक़्त येह दुआ़ पढ़ते :

اَللّٰھُمَّ لَکَ صُمْتُ وَ عَلٰی رِزْقِکَ اَفْطَرْتُ.(6)

ह़दीस 18 नसाई व इब्ने ख़ुज़ैमा ज़ैद बिन ख़ालिद जुहन्नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि फ़रमाया : "जो रोज़ादार का रोज़ा इफ़्त़ार कराए या ग़ाज़ी का सामान कर दे तो उसे भी उतना ही मिलेगा।"(7)

ह़दीस 19 त़बरानी कबीर में सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने ह़लाल खाने या पानी से रोज़ा इफ़्त़ार कराया। फ़रिश्ते

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في تعجيل الإفطار، الحديث: ٧٠٠، ج٢، ص١٦٤.
2 ..... "المعجم الأوسط"، الحديث: ٧٤٧٠، ج٥، ص٣٢٠.
3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب ما يستحب من تعجيل الفطر، الحديث: ٢٣٥٣، ج٢، ص٤٤٦.
4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصوم باب ماجاء ما يستحب عليه الإفطار، الحديث: ٦٩٥، ج٢، ص١٦٢.
5 ..... "جامع الترمذي"، ابواب ا لصوم، باب ماجاء ما يستحب عليه الافطار، الحديث: ٦٩٦، ج٢، ص١٦٢.
6 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب القول عند الإفطار، الحديث: ٢٣٥٨، ج٢، ص٤٤٧.
7 ..... "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فصل فيمن فطر صائما، الحديث: ٣٩٥٣، ج٣، ص٤١٨.

www.dawateislami.net

माहे रमज़ान के अवक़ात में उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं और जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام शबे क़द्र में उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं।"[1]

और एक रिवायत में है : "जो ह़लाल कमाई से रमज़ान में रोज़ा इफ़्तार कराए, रमज़ान की तमाम रातों में फ़रिश्ते उस पर दुरूद भेजते हैं और शबे क़द्र में जिब्रईल उस से मुसाफ़ह़ा करते हैं।"[2]

और एक रिवायत में है : "जो रोज़ादार को पानी पिलाएगा, **अल्लाह** तआ़ला उसे मेरे ह़ौज़ से पिलाएगा कि जन्नत में दाख़िल होने तक प्यासा न होगा।"[3]

बयान उन वुजूहात का जिन से रोज़ा न रखने की इजाज़त है

ह़दीस 1 सह़ीह़ैन में उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से मरवी, कहती हैं : ह़म्ज़ा बिन अ़म्र अस्लमी बहुत रोज़े रखा करते थे, उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि सफ़र में रोज़ा रखूं ? इरशाद फ़रमाया : "चाहो रखो, चाहे न रखो।"[4]

ह़दीस 2 सह़ीह़ मुस्लिम में अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, कहते हैं : सोलहवें रमज़ान को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ हम जंग में गए। हम में बाज़ ने रोज़ा रखा और बाज़ ने न रखा तो न रोज़ादारों ने ग़ैर रोज़ादारों पर ऐ़ब लगाया और न इन्हों ने उन पर।[5]

ह़दीस 3 अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह अनस बिन मालिक कअ़बी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह** तआ़ला ने मुसाफ़िर से आधी नमाज़ मुआ़फ़ फ़रमा दी (यानी चार रक्अ़त वाली दो पढ़ेगा) और मुसाफ़िर और दूध पिलाने वाली और ह़ामिला से रोज़ा मुआ़फ़ फ़रमा दिया।"[6] (कि उन को इजाज़त है कि उस वक़्त न रखें बाद में वोह मिक़्दार पूरी कर लें)।

मस्अला 1 सफ़र व ह़म्ल और बच्चे को दूध पिलाना और मरज़ और बुढ़ापा और ख़ौफ़े हलाक व इक्राह व नुक़्साने अ़क़्ल और जंग येह सब रोज़ा न रखने के लिये उ़ज़्र हैं, इन वुजूह से अगर कोई रोज़ा न रखे तो गुनहगार नहीं।[7] (درمختار)

1 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ٦١٦٢، ج٦، ص٢٦١.
2 ..... "كنز العمال"، كتاب الصوم، الحديث: ٢٣٦٥٣، ج٨، ص٢١٥.
3 ..... "شعب الإيمان"، باب في الصيام، فضائل شهر رمضان، الحديث: ٣٦٠٨، ج٣، ص٣٠٥ ـ ٣٠٦.
4 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب الصوم في السفر والإفطار، الحديث: ١٩٤٣، ج١، ص٦٤٠.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب جواز الصوم والفطر في الشهر رمضان... إلخ، الحديث: ١١١٦، ص٥٦٤.
6 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في الرخصة في الإفطار للحبلى والمرضع، الحديث: ٧١٥، ج٢، ص١٧٠.
7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٢.

www.dawateislami.net

मस्अला 2 सफ़र से मुराद सफ़रे शर्ई है यानी इतनी दूर जाने के इरादे से निकले कि यहां से वहां तक तीन दिन की मसाफ़त हो, अगर्चे वोह सफ़र किसी ना जाइज़ काम के लिये हो ।[1] (درمختار)

मस्अला 3 दिन में सफ़र किया तो उस दिन का रोज़ा इफ़्तार करने के लिये आज का सफ़र उ़ज़्र नहीं । अलबत्ता अगर तोड़ेगा तो कफ़्फ़ारा लाज़िम न आएगा मगर गुनहगार होगा और अगर सफ़र करने से पहले तोड़ दिया फिर सफ़र किया तो कफ़्फ़ारा भी लाज़िम और अगर दिन में सफ़र किया और मकान पर कोई चीज़ भूल गया था, उसे लेने वापस आया और मकान पर आ कर रोज़ा तोड़ डाला तो कफ़्फ़ारा वाजिब है ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 4 मुसाफ़िर ने ज़ह़्वए कुब्रा से पेश्तर इक़ामत की और अभी कुछ खाया नहीं तो रोज़े की निय्यत कर लेना वाजिब है ।[3] (جوہرہ)

मस्अला 5 ह़म्ल वाली और दूध पिलाने वाली को अगर अपनी जान या बच्चे का सह़ीह़ अन्देशा है तो इजाज़त है कि इस वक़्त रोज़ा न रखे, ख़्वाह दूध पिलाने वाली बच्चे की मां हो या दाई अगर्चे रमज़ान में दूध पिलाने की नौकरी की हो ।[4] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 6 मरीज़ को मरज़ बढ़ जाने या देर में अच्छा होने या तन्दुरुस्त को बीमार हो जाने का गुमाने ग़ालिब हो या ख़ादिम व ख़ादिमा को ना क़ाबिले बरदाश्त ज़ोफ़ का ग़ालिब गुमान हो तो इन सब को इजाज़त है कि उस दिन रोज़ा न रखें ।[5] (جوہرہ،درمختار)

मस्अला 7 इन सूरतों में ग़ालिब गुमान की क़ैद है, महज़ वहम नाकाफ़ी है ।

ग़ालिब गुमान की तीन सूरतें हैं :

(1) इस की ज़ाहिर निशानी पाई जाती है या

(2) उस शख़्स का ज़ाती तजरिबा है या

(3) किसी मुसलमान त़बीबे ह़ाज़िक़ मस्तूर यानी ग़ैरे फ़ासिक़ ने इस की ख़बर दी हो और अगर न कोई अ़लामत हो न तजरिबा न इस क़िस्म के त़बीब ने उसे बताया, बल्कि किसी काफ़िर या फ़ासिक़ त़बीब के कहने से इफ़्तार कर लिया तो कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा ।[6] (ردالمحتار) आज कल के अक्सर अत़िब्बा अगर काफ़िर नहीं तो फ़ासिक़ ज़रूर हैं और न सही तो ह़ाज़िक त़बीब फ़ी ज़माना नायाब से हो रहे हैं, इन लोगों का कहना कुछ क़ाबिले एतिबार नहीं, न इन के कहने पर रोज़ा इफ़्तार किया जाए । इन त़बीबों को देखा जाता है कि ज़रा ज़रा

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٣.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التي تبيح الافطار، ج١، ص٢٠٦ - ٢٠٧.
3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨٦.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٣.
5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨٣.
و "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٣.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٤.

www.dawateislami.net

सी बीमारी में रोज़े को मन्अ़ कर देते हैं, इतनी भी तमीज़ नहीं रखते कि किस मरज़ में रोज़ा मुज़िर है किस में नहीं !

मस्अला 8 बांदी को अपने मालिक की इताअ़त में फ़राइज़ का मौक़अ़ न मिले तो येह कोई उ़ज़्र नहीं। फ़राइज़ अदा करे और इतनी देर के लिये उस पर इताअ़त नहीं। मसलन फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त तंग हो जाएगा तो काम छोड़ दे और फ़र्ज़ अदा करे और अगर इताअ़त की और रोज़ा तोड़ दिया तो कफ़्फ़ारा दे।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 9 औ़रत को जब हैज़ो निफ़ास आ गया तो रोज़ा जाता रहा और हैज़ से पूरे दस दिन रात में पाक हुई तो बहर हाल कल का रोज़ा रखे और कम में पाक हुई तो अगर सुब्ह़ होने को इतना अ़र्सा है कि नहा कर ख़फ़ीफ़ सा वक़्त बचेगा तो भी रोज़ा रखे और अगर नहा कर फ़ारिग़ होने के वक़्त सुब्ह़ चमकी तो रोज़ा नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 10 हैज़ो निफ़ास वाली के लिये इख़्तियार है कि छुप कर खाए या ज़ाहिरन, रोज़े की त़रह़ रहना इस पर ज़रूरी नहीं।[3] (جوہرہ) मगर छुप कर खाना औला है ख़ुसूसन हैज़ वाली के लिये।

मस्अला 11 भूक और प्यास ऐसी हो कि हलाक का ख़ौफ़े सह़ीह़ या नुक़्साने अ़क़्ल का अन्देशा हो तो रोज़ा न रखे।[4] (عالمگیری)

मस्अला 12 रोज़ा तोड़ने पर मजबूर किया गया तो उसे इख़्तियार है और सब्र किया तो अज्र मिलेगा।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 13 सांप ने काटा और जान का अन्देशा हो तो इस सूरत में रोज़ा तोड़ दें।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 14 जिन लोगों ने इन उ़ज़्रों के सबब रोज़ा तोड़ा, उन पर फ़र्ज़ है कि इन रोज़ों की क़ज़ा रखें और इन क़ज़ा रोज़ों में तरतीब फ़र्ज़ नहीं। फ़लिहाज़ा अगर इन रोज़ों के पहले नफ़्ल रोज़े रखे तो येह नफ़्ली रोज़े हो गए, मगर हुक्म येह है कि उ़ज़्र जाने के बाद दूसरे रमज़ान के आने से पहले क़ज़ा रख लें।

ह़दीस में फ़रमाया : ''जिस पर अगले रमज़ान की क़ज़ा बाक़ी है और वोह न रखे उस के इस रमज़ान के रोज़े क़बूल न होंगे।''[7]

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٤.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التى تبيح الإفطار، ج١، ص٢٠٧.
3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، ص١٨٦.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التى تبيح الإفطار، ج١، ص٢٠٧.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٢. 6 ..... المرجع السابق.
7 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة، الحديث: ٨٦٢٩، ج٣، ص٢٦٦.

www.dawateislami.net

और अगर रोज़े न रखे और दूसरा रमज़ान आ गया तो अब पहले उस रमज़ान के रोज़े रख ले, क़ज़ा न रखे। बल्कि अगर ग़ैरे मरीज़ व मुसाफ़िर ने क़ज़ा की निय्यत की जब भी क़ज़ा नहीं बल्कि उसी रमज़ान के रोज़े हैं।[1] (درمختار)

मस्अला 15 ख़ुद उस मुसाफ़िर को और उस के साथ वाले को रोज़ा रखने में ज़रर न पहुंचे तो रोज़ा रखना सफ़र में बेहतर है वरना न रखना बेहतर।[2] (درمختار)

मस्अला 16 अगर येह लोग अपने उसी उ़ज़्र में मर गए, इतना मौक़अ़ न मिला कि क़ज़ा रखते तो उन पर येह वाजिब नहीं कि फ़िदये की वसिय्यत कर जाएं फिर भी वसिय्यत की तो तिहाई माल में जारी होगी और अगर इतना मौक़अ़ मिला कि क़ज़ा रोज़े रख लेते, मगर न रखे तो वसिय्यत कर जाना वाजिब है और अ़म्दन न रखे हों तो ब दरजए औला वसिय्यत करना वाजिब है और वसिय्यत न की, बल्कि वली ने अपनी त़रफ़ से दे दिया तो भी जाइज़ है मगर वली पर देना वाजिब न था।[3] (درمختار، عالمگیری)

मस्अला 17 हर रोज़े का फ़िदया ब क़दर सदक़ए फ़ित्र है और तिहाई माल में वसिय्यत उस वक़्त जारी होगी, जब उस मय्यित के वारिस भी हों और अगर वारिस न हों और सारे माल से फ़िदया अदा होता हो तो सब फ़िदये में सर्फ़ कर देना लाज़िम है। यूंही अगर वारिस सिर्फ़ शौहर या ज़ौजा है तो तिहाई निकालने के बाद उन का ह़क़ दिया जाए, इस के बाद जो कुछ बचे अगर फ़िदये में सर्फ़ हो सकता है तो सर्फ़ कर दिया जाएगा।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 18 वसिय्यत करना सिर्फ़ उतने ही रोज़ों के ह़क़ में वाजिब है जिन पर क़ादिर हुवा था, मसलन दस क़ज़ा हुए थे और उ़ज़्र जाने के बाद पांच पर क़ादिर हुवा था कि इन्तिक़ाल हो गया तो पांच ही की वसिय्यत वाजिब है।[5] (درمختار)

मस्अला 19 एक शख़्स की त़रफ़ से दूसरा शख़्स रोज़ा नहीं रख सकता।[6] (عامۂ کتب)

मस्अला 20 एतिकाफ़े वाजिब और सदक़ए फ़ित्र का बदला अगर वरसा अदा कर दें तो

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٥.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٥.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٦.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التى تبيح الإفطار، ج١، ص٢٠٧.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٧.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٦٧.
6 ..... انظر: "فتح القدير"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٢، ص٢٧٩.

www.dawateislami.net

जाइज़ है और उन की मिक़्दार वोही ब क़दर सदक़ए फ़ित्र है और ज़कात देना चाहें तो जितनी वाजिब थी उस क़दर निकालें।[1] (درمختار)

मस्अला 21 शैख़े फ़ानी यानी वोह बूढ़ा जिस की उ़म्र ऐसी हो गई कि अब रोज़ बरोज़ कमज़ोर ही होता जाएगा, जब वोह रोज़ा रखने से आ़जिज़ हो यानी न अब रख सकता है न आइन्दा उस में इतनी ताक़त आने की उम्मीद है कि रोज़ा रख सकेगा, उसे रोज़ा न रखने की इजाज़त है और हर रोज़े के बदले में फ़िदया यानी दोनों वक़्त एक मिस्कीन को भर पेट खाना खिलाना उस पर वाजिब है या हर रोज़े के बदले में सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार मिस्कीन को दे दे।[2] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 22 अगर ऐसा बूढ़ा गर्मियों में ब वज्ह गर्मी के रोज़ा नहीं रख सकता, मगर जाड़ों[3] में रख सकेगा तो अब इफ़्तार कर ले और इन के बदले के जाड़ों में रखना फ़र्ज़ है।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 23 अगर फ़िदया देने के बाद इतनी ताक़त आ गई कि रोज़ा रख सके तो फ़िदया सदक़ए नफ़्ल हो कर रह गया, उन रोज़ों की क़ज़ा रखे।[5] (عالمگیری)

मस्अला 24 येह इख़्तियार है कि शुरूए रमज़ान ही में पूरे रमज़ान का एक दम फ़िदया दे दे या आख़िर में दे और इस में तम्लीक[6] शर्त नहीं बल्कि इबाहत भी काफ़ी है और येह भी ज़रूरी नहीं कि जितने फ़िदये हों उतने ही मसाकीन को दे बल्कि एक मिस्कीन को कई दिन के फ़िदये दे सकते हैं।[7] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 25 क़सम[8] या क़त्ल[9] के कफ़्फ़ारे का इस पर रोज़ा है और बुढ़ापे की वज्ह से रोज़ा नहीं रख सकता तो इस रोज़े का फ़िदया नहीं और रोज़ा तोड़ने या ज़िहार[10] का कफ़्फ़ारा इस पर है, तो अगर रोज़ा न रख सके साठ मिस्कीनों को खाना खिलावे।[11] (عالمگیری)

---

1 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، فصل في العوارض، ج۳، ص٤٧١.
2 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، فصل في العوارض، ج۳، ص٤٧١، وغیره.
3 ...सर्दियों।
4 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصوم، فصل في العوارض، ج۳، ص٤٧٢.
5 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التی تبیح الإفطار، ج۱، ص۲۰۷.
6 ...यानी मालिक बना देना।
7 ..... "الدرالمختار"، کتاب الصوم، فصل في العوارض، ج۳، ص٤٧٢، وغیره.
8 ...क़सम के कफ़्फ़ारे में तीन रोज़े हैं।
9 ...यानी क़त्ले ख़ता के कफ़्फ़ारे में दो माह के रोज़े हैं।
10 ...ज़िहार के कफ़्फ़ारे में दो माह के रोज़े हैं। (النتف في الفتاوی"، کتاب الصوم، ص۹۳ ـ ۹٤).
11 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التی تبیح الإفطار، ج۱، ص۲۰۷.

www.dawateislami.net

मस्अला 26 किसी ने हमेशा रोज़ा रखने की मन्नत मानी और बराबर रोज़े रखे तो कोई ऐसा काम नहीं कर सकता जिस से बसरे अवक़ात हो तो उसे ब क़दरे ज़रूरत इफ़्तार की इजाज़त है और हर रोज़े के बदले में फ़िदया दे और इस की भी क़ुव्वत न हो तो इस्तिग़फ़ार करे।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 27 नफ़्ल रोज़ा क़स्दन शुरूअ़ करने से लाज़िम हो जाता है कि तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी और येह गुमान कर के कि इस के ज़िम्मे कोई रोज़ा है, शुरूअ़ किया बाद को मालूम हुवा कि नहीं है, अब अगर फ़ौरन तोड़ दिया तो कुछ नहीं और येह मालूम करने के बाद न तोड़ा तो अब नहीं तोड़ सकता, तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी।[2] (درمختار)

मस्अला 28 नफ़्ल रोज़ा क़स्दन नहीं तोड़ा बल्कि बिला इख़्तियार टूट गया, मसलन अस्नाए रोज़ा में हैज़ आ गया, जब भी क़ज़ा वाजिब है।[3] (درمختار)

मस्अला 29 ईदैन या अय्यामे तश्रीक़ में रोज़ए नफ़्ल रखा तो इस रोज़े का पूरा करना वाजिब नहीं, न इस के तोड़ने से क़ज़ा वाजिब, बल्कि इस रोज़े का तोड़ देना वाजिब है और अगर इन दिनों में रोज़ा रखने की मन्नत मानी तो मन्नत पूरी करनी वाजिब है मगर इन दिनों में नहीं बल्कि और दिनों में।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 30 नफ़्ल रोज़ा बिला उ़ज़्र तोड़ देना ना जाइज़ है, मेहमान के साथ अगर मेज़बान न खाएगा तो उसे ना गवार होगा या मेहमान अगर खाना न खाए तो मेज़बान को अज़िय्यत होगी तो नफ़्ल रोज़ा तोड़ देने के लिये येह उ़ज़्र है, बशर्ते कि येह भरोसा हो कि इस की क़ज़ा रख लेगा और बशर्ते कि ज़ह्वए कुब्रा से पहले तोड़े बाद को नहीं। ज़वाल के बाद मां बाप की नाराज़ी के सबब तोड़ सकता है और इस में भी अ़स्र के क़ब्ल तक तोड़ सकता है बादे अ़स्र नहीं।[5] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 31 किसी ने येह क़सम खाई कि अगर तू रोज़ा न तोड़े तो मेरी औ़रत को त़लाक़ है, तो उसे चाहिये कि उस की क़सम सच्ची कर दे यानी रोज़ा तोड़ दे अगर्चे रोज़ए क़ज़ा हो[6] अगर्चे बादे ज़वाल हो। (درمختار)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٢.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٣.
3 ..... المرجع السابق، ص٤٧٤.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٤.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٥ ـ ٤٧٧.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب الخامس في الاعذار التى تبيح الإفطار، ج١، ص٢٠٨.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 32 उस की किसी भाई ने दावत की तो ज़ुहूवए कुब्रा के क़ब्ल रोज़ए नफ़्ल तोड़ देने की इजाज़त है।[1] (درمختار)

मस्अला 33 औ़रत बग़ैर शौहर की इजाज़त के नफ़्ल और मन्नत व क़सम के रोज़े न रखे और रख लिये तो शौहर तुड़वा सकता है मगर तोड़ेगी तो क़ज़ा वाजिब होगी, मगर इस की क़ज़ा में भी शौहर की इजाज़त दरकार है या शौहर और उस के दरमियान जुदाई हो जाए यानी त़लाक़े बाइन दे दे या मर जाए। हां, अगर रोज़ा रखने में शौहर का कुछ ह़रज न हो मसलन वोह सफ़र में है या बीमार है या एह़राम में है तो इन ह़ालतों में बग़ैर इजाज़त के भी क़ज़ा रख सकती है, बल्कि अगर वोह मन्अ़ करे जब भी और इन दिनों में भी बे उस की इजाज़त के नफ़्ल नहीं रख सकती। रमज़ान और क़ज़ाए रमज़ान के लिये शौहर की इजाज़त की कुछ ज़रूरत नहीं बल्कि उस की मुमानअ़त पर भी रखे।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 34 बांदी ग़ुलाम भी इ़लावा फ़राइज़ के मालिक की इजाज़त बग़ैर नहीं रख सकते। उन का मालिक चाहे तो तुड़वा सकता है। फिर उस की क़ज़ा मालिक की इजाज़त पर या आज़ाद होने के बाद रखें। अलबत्ता ग़ुलाम ने अगर अपनी औ़रत से ज़िहार किया तो कफ़्फ़ारे के रोज़े बग़ैर मौला की इजाज़त के रख सकता है।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 35 मज़दूर या नौकर अगर नफ़्ल रोज़ा रखे तो काम पूरा अदा न कर सकेगा तो मुस्ताजिर यानी जिस का नौकर है या जिस ने मज़दूरी पर उसे रखा है, उस की इजाज़त की ज़रूरत है और काम पूरा कर सके तो कुछ ज़रूरत नहीं।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 36 लड़की को बाप और मां को बेटे और बहन को भाई से इजाज़त लेने की कुछ ज़रूरत नहीं और मां बाप अगर बेटे को रोज़ए नफ़्ल से मन्अ़ कर दें, इस वज्ह से कि मरज़ का अन्देशा है तो मां बाप की इत़ाअ़त करे।[5] (ردالمحتار)

रोज़ए नफ़्ल के फ़ज़ाइल

(1) आ़शूरा यानी दसवीं मुह़र्रम का रोज़ा और बेहतर येह है कि नवीं को भी रखे :

ह़दीस 1 सह़ीह़ैन में इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने आ़शूरा का रोज़ा ख़ुद रखा और इस के रखने का ह़ुक्म फ़रमाया।[6]

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٧.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٧.
3 ..... المرجع السابق، ص٤٧٨.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٧٨ 5 ..... المرجع السابق، ص٤٧٨.
6 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب اى يوم يصام في عاشوراء، الحديث: ١١٣٤، ص٥٧٣.

www.dawateislami.net

ह़दीस 2 मुस्लिम व अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "रमज़ान के बाद अफ़्ज़ल रोज़ा मुह़र्रम का रोज़ा है और फ़र्ज़ के बाद अफ़्ज़ल नमाज़ सलातुल्लैल है।"(1)

ह़दीस 3 सह़ीह़ैन में इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, फ़रमाते हैं : मैं ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को किसी दिन के रोज़े को और दिन पर फ़ज़ीलत दे कर जुस्तजू फ़रमाते न देखा मगर येह आ़शूरा का दिन और येह रमज़ान का महीना।(2)

ह़दीस 4 सह़ीह़ैन में इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जब मदीने में तशरीफ़ लाए, यहूद को आ़शूरा के दिन रोज़ादार पाया, इरशाद फ़रमाया : येह क्या दिन है कि तुम रोज़ा रखते हो ? अ़र्ज़ की : येह अ़ज़मत वाला दिन है कि इस में मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को **अल्लाह** तआ़ला ने नजात दी और फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को डुबो दिया, लिहाज़ा मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने बत़ौरे शुक्र इस दिन का रोज़ा रखा तो हम भी रोज़ा रखते हैं। इरशाद फ़रमाया : मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुवाफ़क़त करने में ब निस्बत तुम्हारे हम ज़ियादा ह़क़दार और ज़ियादा क़रीब हैं तो हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने ख़ुद भी रोज़ा रखा और इस का हुक्म भी फ़रमाया।(3)

ह़दीस 5 सह़ीह़ मुस्लिम में अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "मुझे **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर गुमान है कि आ़शूरे का रोज़ा एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है।"(4)

(2) अ़रफ़ा यानी नवीं ज़ुल ह़िज्जा का रोज़ा :

ह़दीस 6 ता 10 सह़ीह़ मुस्लिम व सुनने अबी दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह में अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "मुझे **अल्लाह**

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب فضل صوم المحرم، الحديث: ١١٦٣، ص٥٩١.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب صوم يوم عاشوراء، الحديث: ٢٠٠٦، ج١، ص٦٥٧.
3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب صوم يوم عاشوراء، الحديث: ١٢٨-(١١٣٠)، ص٥٧١.

इस ह़दीस से मालूम हुवा कि जिस रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कोई ख़ास नेमत अ़त़ा फ़रमाए उस की यादगार क़ाइम करना दुरुस्त व मह़बूब है कि वोह नेमते ख़ास्सा याद आएगी और उस का शुक्र अदा करने का सबब होगा। ख़ुद कुरआने अ़ज़ीम में इरशाद फ़रमाया : ﴿وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ﴾ (پ١٣، ابراهيم: ٥) "ख़ुदा के इन्आ़म के दिनों को याद करो।"

और हम मुसलमानों के लिये विलादते अक़्दस सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से बेहतर कौन सा दिन होगा, जिस की यादगार क़ाइम करें कि तमाम नेमतें इन्हीं के तुफ़ैल में हैं और येह दिन ईद से भी बेहतर कि इन्हीं के सदक़े में तो ईद ईद हुई इसी वज्ह से पीर के दिन रोज़ा रखने का सबब इरशाद फ़रमाया कि ((فِيْهِ وُلِدْتُ)) ("صحيح مسلم"، كتاب الصيام، الحديث: ١١٦٢-(١١٩٨)، ص٥٩١) इस दिन मेरी विलादत हुई। 12 मिन्ह

4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب استحباب صيام ثلاثة ايام من كل شهر... إلخ، الحديث: ١١٦٢، ص٥٨٩.

www.dawateislami.net

(عَزَّوَجَلَّ) पर गुमान है कि अ़रफ़े का रोज़ा एक साल क़ब्ल और एक साल बाद के गुनाह मिटा देता है।"[1] और इस के मिस्ल सह्ल बिन सअ़्द व अबू सईद ख़ुदरी व अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर व ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से मरवी।

ह़दीस 11 उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से बैहक़ी व त़बरानी रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अ़रफ़े के रोज़े को हज़ार दिन के बराबर बताते।[2] मगर ह़ज करने वाले पर जो अ़रफ़ात में है, उसे अ़रफ़े के दिन का रोज़ा मक्रूह है कि अबू दावूद व नसाई व इब्ने ख़ुज़ैमा व अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने अ़रफ़े के दिन अ़रफ़े में रोज़ा रखने से मन्अ़ फ़रमाया।[3]

(3) शव्वाल में छे दिन के रोज़े[4] जिन्हें लोग शश ईद के रोज़े कहते हैं :

ह़दीस 12 व 13 मुस्लिम व अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह व त़बरानी अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर इन के बाद छे दिन शव्वाल में रखे तो ऐसा है जैसे दह्र का रोज़ा रखा।"[5] और इसी के मिस्ल अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी।

ह़दीस 14 व 15 नसाई व इब्ने माजह व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान सौबान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से और इमाम अह़मद व त़बरानी व बज़्ज़ार जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने ईदुल फ़ित्र के बाद छे रोज़े रख लिये तो उस ने पूरे साल का रोज़ा रखा कि जो एक नेकी लाएगा उसे दस मिलेंगी तो माहे रमज़ान का रोज़ा दस महीने के बराबर है और इन छे दिनों के बदले में दो महीने तो पूरे साल के रोज़े हो गए।"[6]

ह़दीस 16 त़बरानी औसत़ में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर इस के बाद छे दिन शव्वाल में रखे तो गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे आज मां के पेट से पैदा हुवा है।"[7]

---

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب استحباب صيام ثلاثة ايام من كل شهر... إلخ، الحديث: ١١٦٢، ص٥٨٩.

2 ..... "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٦٨٠٢، ج٥، ص١٢٧.

3 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الصيام، باب في صوم يوم عرفة بعرفة، الحديث: ٢٤٤٠، ج٢، ص٤٧٩.

4 ...बेहतर येह है कि येह रोज़े मुतफ़र्रिक़ रखे जाएं और ईद के बाद लगातार छे दिन में एक साथ रख लिये, तब भी ह़रज नहीं। کذا فی الدر 12 मिन्ह

5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب استحباب صوم ستة ايام من شوال اتباعا لرمضان، الحديث: ١١٦٤، ص٥٩٢.

6 ..... "السنن الكبرى" للنسائي، كتاب الصيام، باب صيام ستة ايام من شوال، الحديث: ٢٨٦٠ ـ ٢٨٦١، ج٢، ص١٦٢ـ١٦٣.

7 ..... "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٨٦٢٢، ج٦، ص٢٣٤.

www.dawateislami.net

(4) शाबान का रोज़ा और पन्दरहवीं शाबान के फ़ज़ाइल :

ह़दीस 17 त़बरानी व इब्ने ह़ब्बान मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "शाबान की पन्दरहवीं शब में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ तजल्ली फ़रमाता है और सब को बख़्श देता है, मगर काफ़िर और अ़दावत वाले को।"(1)

ह़दीस 18 व 19 बैहक़ी ने उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "मेरे पास जिब्रईल आए और येह कहा : येह शाबान की पन्दरहवीं रात है, इस में **अल्लाह** तआ़ला जहन्नम से इतनों को आज़ाद फ़रमाता है जितने बनी कल्ब(2) के बकरियों के बाल हैं, मगर काफ़िर और अ़दावत वाले और रिश्ता काटने वाले और कपड़ा लटकाने वाले और वालिदैन की ना फ़रमानी करने वाले और शराब की मुदावमत करने वाले की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता।"(3) इमाम अह़मद ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से जो रिवायत की, उस में क़ातिल का भी ज़िक्र है।

ह़दीस 20 बैहक़ी ने उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत की, कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ शाबान की पन्दरहवीं शब में तजल्ली फ़रमाता है, इस्तिग़्फ़ार करने वालों को बख़्श देता है और त़ालिबे रह़मत पर रह़म फ़रमाता है और अ़दावत वालों को जिस ह़ाल पर हैं, उसी पर छोड़ देता है।"(4)

ह़दीस 21 इब्ने माजह मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रावी, नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जब शाबान की पन्दरहवीं रात आ जाए तो उस रात को क़ियाम करो और दिन में रोज़ा रखो कि रब तबारक व तआ़ला ग़ुरूबे आफ़्ताब से आस्माने दुन्या पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और फ़रमाता है कि है कोई बख़्शिश चाहने वाला कि उसे बख़्श दूं, है कोई रोज़ी त़लब करने

1 ..... "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الحظر والإباحة، باب ماجاء في التباغض... إلخ، الحديث: ٥٦٣٦، ج٧، ص٤٧٠.

जिन दो शख़्सों में कोई दुन्यवी अ़दावत हो तो इस रात के आने से पहले उन्हें चाहिये कि हर एक दूसरे से मिल जाए और हर एक दूसरे की ख़त़ा मुआ़फ़ कर दे ताकि मग़्फ़िरते इलाही उन्हें भी शामिल हो। इन्हीं अह़ादीस की बिना पर बरेली में आला ह़ज़रत क़िब्ला مدظلہ الاقدس ने त़रीक़ा मुक़र्रर फ़रमाया कि चौदह[14] शाबान को रात आने से पहले मुसलमान आपस में मिलते और अ़फ़्वे तक़्सीर कराते और जगह के मुसलमान भी ऐसा ही करें तो निहायत अन्सब व बेहतर हो। 12 मिन्ह

2 ...अ़रब में बनी कल्ब एक क़बीला है, जिन के यहां बकरियां ब कसरत होती थीं। 12 मिन्ह

3 ..... "شعب الإيمان"، باب في الصيام، ماجاء في ليلة النصف من شعبان، الحديث: ٣٨٣٧، ج٣، ص٣٨٣.

4 ..... "شعب الإيمان"، باب في الصيام، ماجاء في ليلة النصف من شعبان، الحديث: ٣٨٣٥، ج٣، ص٣٨٢.

www.dawateislami.net

वाला कि उसे रोज़ी दूं, है कोई मुब्तला कि उसे आ़फ़ियत दूं, है कोई ऐसा, है कोई ऐसा और येह उस वक़्त तक फ़रमाता है कि फ़ज्र तुलूअ़ हो जाए।"[1]

ह़दीस 22 उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم को शाबान से ज़ियादा किसी महीने में रोज़ा रखते मैं ने न देखा।[2]

(5) हर महीने में तीन रोज़े ख़ुसूसन अय्यामे बीज़ तेरह, चौदह, पन्दरह :

ह़दीस 23 व 24 बुख़ारी व मुस्लिम व नसाई अबू हुरैरा और मुस्लिम अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने मुझे तीन बातों की वसिय्यत फ़रमाई, उन में एक येह है कि हर महीने में तीन रोज़े रखूं।[3]

ह़दीस 25 व 26 सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हर महीने में तीन दिन के रोज़े ऐसे हैं जैसे दह्र (हमेशा) का रोज़ा।"[4] इसी के मिस्ल कुर्रह बिन इयास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से मरवी।

ह़दीस 27 व 28 इमाम अह़मद व इब्ने ह़ब्बान इब्ने अ़ब्बास और बज़्ज़ार मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "रमज़ान के रोज़े और हर महीने में तीन दिन के रोज़े सीने की ख़राबी को दूर करते हैं।"[5]

ह़दीस 29 त़बरानी मैमूना बिन्ते सअ़्द رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) फ़रमाते हैं : "जिस से हो सके, हर महीने में तीन रोज़े रखे कि हर रोज़ा दस गुनाह मिटाता है और गुनाह से ऐसा पाक कर देता है जैसा पानी कपड़े को।"[6]

ह़दीस 30 इमाम अह़मद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब महीने में तीन रोज़े रखने हों तो तेरह, चौदह, पन्दरह को रखो।"[7]

ह़दीस 31 नसाई ने उम्मुल मुअमिनीन ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से रिवायत की, कि हुज़ूरे

1 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب إقامة الصلوات... إلخ، باب ماجاء في ليلة النصف من شعبان، الحديث: ١٣٨٨، ج٢، ص١٦٠.
2 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في وصال شعبان برمضان، الحديث: ٧٣٦، ج٢، ص١٨٢.
3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الصوم، باب صيام البيض ثلاث عشرة... إلخ، الحديث: ١٩٨١، ج١، ص٦٥١.
4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب النهي عن صوم الدهر... إلخ، الحديث: ١٨٧-(١١٥٩)،١٩٧-(١١٦٢)، ص٥٨٧، ٥٩٠.
5 ..... "مسند البزار"، مسند علي بن طالب، الحديث: ٦٨٨، ج٢، ص٢٧١.
6 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ٦٠، ج٢٥، ص٣٥.
7 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في صوم ثلاثة ايام من كل شهر... إلخ، الحديث: ٧٦١، ج٢، ص١٩٣.

www.dawateislami.net

अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم चार चीज़ों को नहीं छोड़ते थे। आ़शूरा और अ़शरए ज़ुल हिज्जा और हर महीने में तीन दिन के रोज़े और फ़ज्र के पहले दो रक्अ़तें।(1)

ह़दीस 32 नसाई इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم अय्यामे बीज़ में बग़ैर रोज़े के न होते, न सफ़र में, न ह़ज़र में।(2)

(6) पीर और जुमेरात के रोज़े :

ह़दीस 33 ता 35 सुनने तिरमिज़ी में अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "पीर और जुमेरात को आमाल पेश होते हैं तो मैं पसन्द करता हूं कि मेरा अ़मल उस वक़्त पेश हो कि मैं रोज़ादार होउं।"(3) इसी के मिस्ल उसामा बिन ज़ैद व जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से मरवी।

ह़दीस 36 इब्ने माजह इन्हीं से रावी कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) पीर और जुमेरात को रोज़े रखा करते थे, इस के बारे में अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाया : इन दोनों दिनों में **अल्लाह** तआ़ला हर मुसलमान की मग़्फ़िरत फ़रमाता है, मगर वोह दो शख़्स जिन्हों ने बाहम जुदाई कर ली है, उन की निस्बत मलाएका से फ़रमाता है : "इन्हें छोड़ो, यहां तक कि सुल्ह़ कर लें।"(4)

ह़दीस 37 तिरमिज़ी शरीफ़ में उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पीर और जुमेरात को ख़याल कर के रोज़ा रखते थे।(5)

ह़दीस 38 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) से पीर के दिन रोज़े का सबब दरयाफ़्त किया गया, फ़रमाया : "इसी में मेरी विलादत हुई और इसी में मुझ पर वह़ी नाज़िल हुई।"(6)

(7) बाज़ और दिनों के रोज़े :

ह़दीस 39 अबू याला इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो चहार शम्बा और पंज शम्बा को रोज़े रखे, उस के लिये दोज़ख़ से बराअत

1 ..... "سنن النسائي"، كتاب الصيام، باب كيف يصوم ثلاثة ايام من كل شهر... إلخ، الحديث: ٢٤١٣، ص٣٩٥.
2 ..... "سنن النسائي"، كتاب الصيام، باب صوم النبي صلى الله تعالىٰ عليه وسلم بأبي هو وامي... إلخ، الحديث: ٢٣٤٢، ص٣٨٦.
3 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في صوم يوم الاثنين و الخميس، الحديث: ٧٤٧، ج٢، ص١٨٧.
4 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ما جاء في الصيام، باب صيام يوم الاثنين و الخميس، الحديث: ١٧٤٠، ج٢، ص٣٤٤.
5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الصوم، باب ماجاء في صوم يوم الاثنين و الخميس، الحديث: ٧٤٥، ج٢، ص١٨٦.
6 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب استحباب صيام ثلاثة ايام من كل شهر... إلخ، الحديث: ١٩٨-(١١٦٢)، ص٥٩١.

www.dawateislami.net

लिख दी जाएगी।''(1)

ह़दीस 40 ता 42 त़बरानी औसत़ में इन्हीं से रावी कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस ने चहार शम्बा व पंज शम्बा व जुमुआ़ को रोज़े रखे, **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में एक मकान बनाएगा, जिस का बाहर का हिस्सा अन्दर से दिखाई देगा और अन्दर का बाहर से।''(2)

और अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه की रिवायत में है कि ''जन्नत में मोती और याक़ूत व ज़बरजद का महल बनाएगा और उस के लिये दोज़ख़ से बराअत लिख दी जाएगी।''(3)

और इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا की रिवायत में है कि ''जो इन तीन दिनों के रोज़े रखे फिर जुमुआ़ को थोड़ा या ज़ियादा तसद्दुक़ करे तो जो गुनाह किया है, बख़्श दिया जाएगा और ऐसा हो जाएगा जैसे उस दिन कि अपनी मां के पेट से पैदा हुवा।''(4) मगर ख़ुसूसिय्यत के साथ जुमुआ़ के दिन रोज़ा रखना मक्रूह है।

ह़दीस 43 मुस्लिम व नसाई अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''रातों में से जुमुआ़ की रात को क़ियाम के लिये और दिनों में जुमुआ़ के दिन को रोज़े के लिये ख़ास न करो। हां, कोई किसी क़िस्म का रोज़ा रखता था और जुमुआ़ का दिन रोज़े में वाक़ेअ़ हो गया तो ह़रज नहीं।''(5)

ह़दीस 44 बुख़ारी व मुस्लिम व नसाई व इब्ने माजह व इब्ने ख़ुज़ैमा इन्हीं से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''जुमुआ़ के दिन कोई रोज़ा न रखे, मगर इस सूरत में कि उस के पहले या बाद एक दिन और रोज़ा रखे।''(6) और इब्ने ख़ुज़ैमा की रिवायत में है : ''जुमुआ़ का दिन ईद है, लिहाज़ा ईद के दिन को रोज़े का दिन न करो, मगर येह कि इस के क़ब्ल या बाद रोज़ा रखो।''(7)

ह़दीस 45 सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में मुह़म्मद बिन उ़बाद से है कि जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه ख़ानए काबा का त़वाफ़ करते थे, मैं ने उन से पूछा : क्या नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने जुमुए़ के रोज़े से मन्अ़ फ़रमाया ? कहा : हां, इस घर के रब की क़सम।(8)

1 ..... "مسند أبي يعلىٰ"، مسند عبد الله بن عمر، الحديث: ٥٦١٠، ج٥، ص١١٥.
2 ..... "المعجم الأوسط"، الحديث: ٢٥٣، ج١، ص٨٧.
3 ..... "المعجم الأوسط"، الحديث: ٢٥٤، ج١، ص٨٧.
4 ..... "شعب الإيمان"، باب في الصيام، صوم شوال والأربعاء والخميس والجمعة، الحديث: ٣٨٧٢، ج٣، ص٣٩٧.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب كراهية إفراد يوم الجمعة... إلخ، الحديث: ١٤٨-(١١٤٤)، ص٥٧٦.
6 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب كراهية إفراد يوم الجمعة... إلخ، الحديث: ١١٤٤، ص٥٧٦.
7 ..... "صحيح ابن خزيمة"، كتاب الصيام، باب الدليل على ان يوم الجمعة يوم عيد... إلخ، الحديث: ٢١٦١، ج٣، ص٣١٥.
8 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الصيام، باب كراهية إفراد يوم الجمعة... إلخ، الحديث: ١١٤٣، ص٥٧٥.

www.dawateislami.net

मन्नत के रोज़े का बयान

शर्ई मन्नत : जिस के मानने से शर्अ़न उस का पूरा करना वाजिब होता है, इस के लिये मुत़्लक़न चन्द शर्तें हैं :

(1) ऐसी चीज़ की मन्नत हो कि उस की जिन्स से कोई वाजिब हो, इयादते मरीज़ और मस्जिद में जाने और जनाज़े के साथ जाने की मन्नत नहीं हो सकती ।

(2) वोह इबादत ख़ुद बिज़्ज़ात मक़्सूद हो किसी दूसरी इबादत के लिये वसीला न हो, लिहाज़ा वुज़ू व ग़ुस्ल व नज़्रे मुस्ह़फ़ की मन्नत सह़ीह़ नहीं ।

(3) उस चीज़ की मन्नत न हो जो शर्अ़ ने ख़ुद उस पर वाजिब की हो, ख़्वाह फ़िलह़ाल या आइन्दा मसलन आज की ज़ोह्र या किसी फ़र्ज़ नमाज़ की मन्नत सह़ीह़ नहीं कि येह चीज़ें तो ख़ुद ही वाजिब हैं ।

(4) जिस चीज़ की मन्नत मानी वोह ख़ुद बि ज़ातिही कोई गुनाह की बात न हो और अगर किसी और वज्ह से गुनाह हो तो मन्नत सह़ीह़ हो जाएगी, मसलन ईद के दिन रोज़ा रखना मन्अ़ है, अगर इस की मन्नत मानी तो मन्नत हो जाएगी अगर्चे हुक्म येह है कि उस दिन न रखे, बल्कि किसी दूसरे दिन रखे कि येह मुमानअ़त आ़रिज़ी है यानी ईद के दिन होने की वज्ह से, ख़ुद रोज़ा एक जाइज़ चीज़ है ।

(5) ऐसी चीज़ की मन्नत न हो जिस का होना मुह़ाल हो, मसलन येह मन्नत मानी कि कल गुज़श्ता मैं रोज़ा रखूंगा येह मन्नत सह़ीह़ नहीं ।[1]

मस्अला 1 मन्नत सह़ीह़ होने के लिये कुछ येह ज़रूरी नहीं कि दिल में उस का इरादा भी हो, अगर कहना कुछ चाहता था, ज़बान से मन्नत के अल्फ़ाज़ जारी हो गए मन्नत सह़ीह़ हो गई या कहना येह चाहता था कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये मुझ पर एक दिन का रोज़ा रखना है और ज़बान से एक महीना निकला महीने भर का रोज़ा वाजिब हो गया ।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 2 अय्यामे मन्हिय्या यानी ईद व बक़र ईद और ज़ुल ह़िज्जा की ग्यारहवीं बारहवीं तेरहवीं के रोज़े रखने की मन्नत मानी और इन्हीं दिनों में रख भी लिये तो अगर्चे येह गुनाह हुवा मगर मन्नत अदा हो गई ।[3] (درمختاروغیرہ)

मस्अला 3 इस साल के रोज़े की मन्नत मानी तो अय्यामे मन्हिय्या छोड़ कर बाक़ी दिनों

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السادس في النذر، ج١، ص٢٠٨.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في الكلام على النذر، ج٣، ص٤٨٢.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السادس في النذر، ج١، ص٢٠٩.
3 ..... "الدرالمختار" كتاب الصوم، فصل في العوارض، ج٣، ص٤٨١ ـ ٤٨٣، وغيره.

www.dawateislami.net

में रोज़े रखे और इन दिनों के बदले के और दिनों में रखे और अगर अय्यामे मन्हिय्या में भी रख लिये तो मन्नत पूरी हो गई मगर गुनहगार हुवा। येह हुक्म उस वक़्त है कि अय्यामे मन्हिय्या से पहले मन्नत मानी और अगर अय्यामे मन्हिय्या गुज़रने के बाद मसलन ज़ुल हि़ज्जा की चौदहवीं शब में इस साल के रोज़े की मन्नत मानी तो ख़त्मे ज़ुल हि़ज्जा तक रोज़ा रखने से मन्नत पूरी हो गई कि येह साल ख़त्मे ज़ुल हि़ज्जा पर ख़त्म हो जाता है और रमज़ान से पहले इस सिन के रोज़े की मन्नत मानी थी तो रमज़ान के बदले के रोज़े उस के ज़िम्मे नहीं।

और अगर मन्नत में पै दर पै रोज़े की शर्त या निय्यत की जब भी जिन दिनों में रोज़े की मुमानअ़त है, उन में रोज़ा न रखे। मगर बाद में पै दर पै उन दिनों की क़ज़ा रखे और अगर एक दिन भी बे रोज़ा रहा तो उस दिन के पहले जितने रोज़े रखे थे उन सब का इआ़दा करे और अगर एक साल के रोज़े की मन्नत की तो साल भर रोज़ा रखने के बाद पैंतीस[35] या चौंतीस[34] दिन के और रखे यानी माहे रमज़ान और पांच दिन अय्यामे मम्नूआ़ के बदले के, अगर्चे इन दिनों में भी उस ने रोज़े रखे हों कि इस सूरत में येह ना काफ़ी हैं। अलबत्ता अगर यूं कहा कि एक साल के रोज़े पै दर पै रखूंगा तो अब इन पैंतीस[35] दिनों के रोज़ों की ज़रूरत नहीं, मगर इस सूरत में अगर पै दर पै न होंगे तो सिरे से फिर रखने होंगे, मगर अय्यामे मम्नूआ़ में न रखे बल्कि साल पूरा होने पर पांच दिन अ़लल इत्तिसाल रख ले।[1] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 4 मन्नत के अल्फ़ाज़ में यमीन[2] का भी एह़तिमाल है, लिहाज़ा यहां छे सूरतें होंगी :

(1) इन लफ़्ज़ों से कुछ निय्यत न की न मन्नत की न यमीन की।

(2) फ़क़त़ मन्नत की निय्यत की यानी यमीन होने न होने किसी का इरादा न किया।

(3) मन्नत की निय्यत की और येह कि यमीन नहीं।

(4) यमीन की निय्यत की और येह कि मन्नत नहीं।

(5) मन्नत और यमीन दोनों की निय्यत की।

(6) फ़क़त़ यमीन की निय्यत की और मन्नत होने या न होने किसी की नहीं।

पहली तीन सूरतों में फ़क़त़ मन्नत है कि पूरी न करे तो क़ज़ा दे और चौथी सूरत में यमीन है कि अगर पूरी न की तो कफ़्फ़ारा देना होगा। पांचवीं और छटी सूरतों में मन्नत और यमीन दोनों हैं, पूरी न करे तो मन्नत की क़ज़ा दे और यमीन का कफ़्फ़ारा।[3] (تنویرالابصار)

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في الكلام على النذر، ج٣، ص٤٨٢ ـ ٤٨٤.

2 ...यानी क़सम।

3 ..... "تنويرالأبصار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٨٤.

www.dawateislami.net

मस्अला 5 इस महीने के रोज़े की मन्नत मानी और इस में अय्यामे मन्हिय्या हैं तो इन में रोज़े न रखे, बल्कि इन के बदले के बाद में रखे और रख लिये तो गुनहगार हुवा मगर मन्नत पूरी हो गई और इस सूरत में पूरे एक महीने के रोज़े वाजिब नहीं, बल्कि मन्नत मानने के वक़्त से उस महीने में जितने दिन बाक़ी हैं उन दिनों में रोज़े वाजिब हैं और अगर वोह महीना रमज़ान का था तो मन्नत ही न हुई कि रमज़ान के रोज़े तो ख़ुद ही फ़र्ज़ हैं। हां, अगर माहे रमज़ान के रोज़ों की मन्नत मानी और रमज़ान आने से पहले इन्तिक़ाल हो गया तो एक माह तक मिस्कीन को खाना खिलाने की वसिय्यत वाजिब है।

और अगर किसी मुअ़य्यन महीने की मन्नत मानी, मसलन रजब या शाबान की तो पूरे महीने का रोज़ा ज़रूरी है, वोह महीना उन्तीस का हो तो उन्तीस रोज़े और तीस का हो तो तीस और नाग़ा न करे फिर अगर कोई रोज़ा छूट गया तो उस को बाद में रख ले पूरे महीने के लौटाने की ज़रूरत नहीं।[1] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 6 एक महीने के रोज़े की मन्नत मानी तो पूरे तीस[30] दिन के रोज़े वाजिब हैं, अगर्चे जिस महीने में रखे वोह उन्तीस ही का हो और येह भी ज़रूरी है कि कोई रोज़ा अय्यामे मन्हिय्या में न हो कि इस सूरत में अगर अय्यामे मन्हिय्या में रोज़े रखे तो गुनहगार तो हुवा ही, वोह रोज़े भी ना काफ़ी हैं और पै दर पै की शर्त लगाई या दिल में निय्यत की तो येह भी ज़रूरी है कि नाग़ा न होने पाए अगर नाग़ा हुवा, अगर्चे अय्यामे मन्हिय्या में तो अब से एक महीने के अ़लल इत्तिसाल रोज़े रखे यानी येह ज़रूरी है कि इन तीस दिनों में कोई दिन ऐसा न हो, जिस में रोज़े की मुमानअ़त है और पै दर पै की न शर्त लगाई, न निय्यत में है तो मुतफ़र्रिक़ तौर पर तीस रोज़े रख लेने से भी मन्नत पूरी हो जाएगी।

और अगर औ़रत ने एक माह पै दर पै रोज़े रखने की मन्नत मानी तो अगर एक महीना या ज़ियादा तहारत का ज़माना उसे मिलता है तो ज़रूरी है कि ऐसे वक़्त शुरूअ़ करे कि हैज़ आने से पेश्तर तीस दिन पूरे हो जाएं, वरना हैज़ आने के बाद अब से तीस पूरे करने होंगे और अगर महीना पूरा होने से पहले उसे हैज़ आ जाया करता है तो हैज़ से पहले जितने रोज़े रख चुकी है उन्हें हिसाब कर ले, जो बाक़ी रह गए उन्हें हैज़ ख़त्म होने के बाद मुत्तसिलन बिला नाग़ा पूरा कर ले।[2] (درمختار، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 7 पै दर पै रोज़े की मन्नत मानी तो नाग़ा करना जाइज़ नहीं और मुतफ़र्रिक़ तौर पर मसलन दस[10] रोज़े की मन्नत मानी तो लगातार रखना जाइज़ है।[3] (ک)

1 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصوم، ج۳، ص٤٨٤، ٤٨٦، وغیرہ.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الصوم، مطلب في صوم الست من شوال، ج۳، ص ٤٨٦، وغیرهما.
3 ..... "البحر الرائق"، کتاب الصوم، فصل في النذر، ج۲، ص٥١٩.

www.dawateislami.net

मस्अला 8 मन्नत दो क़िस्म है :

एक मुअ़ल्लक़ कि मेरा फ़ुलां काम हो जाएगा या फ़ुलां शख़्स सफ़र से आ जाए तो मुझ पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये इतने रोज़े या नमाज़ या सदक़ा वग़ैरा है।

दूसरी ग़ैरे मुअ़ल्लक़ जो किसी चीज़ के होने, न होने पर मौक़ूफ़ नहीं बल्कि येह कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये मैं अपने ऊपर इतने रोज़े या नमाज़ या सदक़ा वग़ैरहा वाजिब करता हूं। ग़ैरे मुअ़ल्लक़ में अगर्चे वक़्त या जगह वग़ैरा मुअ़य्यन करे, मगर मन्नत पूरी करने के लिये येह ज़रूरी नहीं कि उस से पेश्तर या उस के ग़ैर में न हो सके, बल्कि अगर उस वक़्त से पेश्तर रोज़े रख लिये या नमाज़ पढ़ ली वग़ैरा वग़ैरा तो मन्नत पूरी हो गई।[1] (درمختار)

मस्अला 9 इस रजब के रोज़े की मन्नत मानी और जुमादल आख़िरा में रोज़े रख लिये और येह महीना उन्तीस का हुवा, अगर येह रजब भी उन्तीस का हो तो पूरी हो गई एक और रोज़े की ज़रूरत नहीं और तीस का हुवा तो एक रोज़ा और रखे।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 10 इस रजब के रोज़े की मन्नत मानी और रजब में बीमार रहा तो दूसरे दिनों में उन की क़ज़ा रखे और क़ज़ा में इख़्तियार है कि लगातार रोज़े हों या नाग़ा दे कर।[3] (درمختار)

मस्अला 11 मुअ़ल्लक़ में शर्त पाई जाने से पहले मन्नत पूरी नहीं कर सकता, अगर पहले ही रोज़े रख लिये बाद में शर्त पाई गई तो अब फिर रखना वाजिब होगा, पहले के रोज़े इस के क़ाइम मक़ाम नहीं हो सकते।[4] (درمختار)

मस्अला 12 एक दिन के रोज़े की मन्नत मानी तो इख़्तियार है कि अय्यामे मन्हिय्या के सिवा जिस दिन चाहे रोज़ा रख ले। यूंही दो दिन, तीन दिन में भी इख़्तियार है, अलबत्ता अगर इन में पै दर पै की निय्यत की तो पै दर पै रखना वाजिब होगा, वरना इख़्तियार है कि एक साथ रखे या नाग़ा दे कर और मुतफ़र्रिक़ की निय्यत की और पै दर पै रख लिये जब भी जाइज़ है।[5] (عالمگیری)

मस्अला 13 एक साथ दस[10] रोज़ों की मन्नत मानी और पन्दरह रोज़े रखे, बीच में एक दिन इफ़्तार किया और येह याद नहीं कि कौन से दिन रोज़ा न था तो लगातार पांच दिन और रख ले।[6] (عالمگیری)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم،باب مايفسدالصوم... إلخ،فصل فى العوارض... إلخ، ج٣، ص٤٨٦.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في صوم الست من شوال، ج٣، ص ٤٨٧.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، ج٣، ص٤٨٩. 4 ..... المرجع السابق. ص٤٨٨.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السادس في النذر، ج١، ص٢٠٩. 6 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

मस्अला 14 मरीज़ ने एक माह रोज़ा रखने की मन्नत मानी और सिह्हत न हुई मर गया तो उस पर कुछ नहीं और अगर एक दिन के लिये भी अच्छा हो गया था और रोज़ा न रखा तो पूरे महीने भर के फ़िदये की वसिय्यत करना वाजिब है और उस दिन रोज़ा रख लिया जब भी बाक़ी दिनों के लिये वसिय्यत चाहिये। यूंही अगर तन्दुरुस्त ने मन्नत मानी और महीना पूरा होने से पहले मर गया तो उस पर भी वसिय्यत करना वाजिब है और अगर रात में मन्नत मानी थी और रात ही में मर गया जब भी वसिय्यत कर देनी चाहिये।[1] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 15 येह मन्नत मानी कि जिस दिन फुलां शख़्स आएगा उस दिन **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये मुझ पर रोज़ा रखना वाजिब है तो अगर ज़ह्वए कुब्रा से पेश्तर आया और उस ने कुछ खाया पिया नहीं है तो रोज़ा रख ले और अगर रात में आया तो कुछ नहीं। यूंही अगर ज़वाल के बाद आया या खाने के बाद आया या मन्नत मानने वाली औ़रत थी और उस दिन उसे हैज़ था तो इन सूरतों में भी कुछ नहीं और अगर येह कहा था कि जिस दिन फुलां आएगा उस दिन का **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये मुझे हमेशा रोज़ा रखना है और खाना खाने के बाद आया तो उस दिन का रोज़ा तो नहीं, मगर आइन्दा हर हफ़्ते में उस दिन का रोज़ा उस पर वाजिब हो गया, मसलन पीर के दिन आया तो हर पीर को रोज़ा रखे।[2] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 16 येह मन्नत मानी कि जिस दिन फुलां आएगा उस रोज़ का रोज़ा मुझ पर हमेशा है और दूसरी मन्नत येह मानी कि जिस दिन फुलां को सिह्हत हो जाए उस दिन का रोज़ा मुझ पर हमेशा है। इत्तिफ़ाक़न जिस दिन वोह आया, उसी दिन वोह अच्छा भी हो गया तो हर हफ़्ते में सिर्फ़ उसी एक दिन का रोज़ा रखना उस पर हमेशा वाजिब हुवा।[3] (عالمگیری)

मस्अला 17 आधे दिन के रोज़े की मन्नत मानी तो येह मन्नत सह़ीह़ नहीं।[4] (عالمگیری)

एतिकाफ़ का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِي الْمَسٰجِدِ ؕ ﴾[5]

औ़रतों से मुबाशरत न करो, जब कि तुम मस्जिदों में एतिकाफ़ किये हुए हो।

ह़दीस 1 सह़ीहैन में उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से मरवी कि रसूलुल्लाह

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، مطلب في صوم الست من شوال، ج٣، ص ٤٨٨.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السادس في النذر، ج١، ص٢٠٨، ٢٠٩، وغيره.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السادس في النذر، ج١، ص٢٠٩.
4 ..... المرجع السابق. 5 ..... پ٢، البقرة: ١٨٧.

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم रमज़ान के आख़िरी अ़शरे का एतिकाफ़ फ़रमाया करते ।[1]

ह़दीस 2 अबू दावूद इन्हीं से रावी, कहती हैं : मोतकिफ़ पर सुन्नत (यानी ह़दीस से साबित) येह है कि न मरीज़ की इ़यादत को जाए, न जनाज़े में ह़ाज़िर हो, न औ़रत को हाथ लगाए और न उस से मुबाशरत करे और न किसी ह़ाजत के लिये जाए, मगर उस ह़ाजत के लिये जा सकता है जो ज़रूरी है और एतिकाफ़ बग़ैर रोज़े के नहीं और एतिकाफ़ जमाअ़त वाली मस्जिद में करे ।[2]

ह़दीस 3 इब्ने माजह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मोतकिफ़ के बारे में फ़रमाया : ''वोह गुनाहों से बाज़ रहता है और नेकियों से उसे इस क़दर सवाब मिलता है जैसे उस ने तमाम नेकियां कीं ।''[3]

ह़दीस 4 बैहक़ी इमाम ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस ने रमज़ान में दस[10] दिनों का एतिकाफ़ कर लिया तो ऐसा है जैसे दो[2] ह़ज और दो[2] उ़मरह किये ।''[4]

मस्अला 1 मस्जिद में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये निय्यत के साथ ठहरना एतिकाफ़ है और इस के लिये मुसलमान, आ़क़िल और जनाबत व ह़ैज़ो निफ़ास से पाक होना शर्त़ है । बुलूग़ शर्त़ नहीं बल्कि ना बालिग़ जो तमीज़ रखता है अगर ब निय्यते एतिकाफ़ मस्जिद में ठहरे तो येह एतिकाफ़ सह़ीह़ है, आज़ाद होना भी शर्त़ नहीं लिहाज़ा ग़ुलाम भी एतिकाफ़ कर सकता है, मगर उसे मौला से इजाज़त लेनी होगी और मौला को बहर ह़ाल मन्अ़ करने का ह़क़ ह़ासिल है ।[5] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 2 मस्जिदे जामेअ़ होना एतिकाफ़ के लिये शर्त़ नहीं बल्कि मस्जिदे जमाअ़त में भी हो सकता है । मस्जिदे जमाअ़त वोह है जिस में इमाम व मुअज़्ज़िन मुक़र्रर हों, अगर्चे उस में पंजगाना जमाअ़त न होती हो और आसानी इस में है कि मुत्लक़न हर मस्जिद में एतिकाफ़ सह़ीह़ है अगर्चे वोह मस्जिदे जमाअ़त न हो, ख़ुसूसन इस ज़माने में कि बहुतेरी मस्जिदें ऐसी हैं जिन में न इमाम हैं न मुअज़्ज़िन ।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 3 सब से अफ़्ज़ल मस्जिदे ह़रम शरीफ़ में एतिकाफ़ है फिर मस्जिदे नबवी में علی صاحبها الصلوة والتسلیم फिर मस्जिदे अक़्सा[7] में फिर उस में जहां बड़ी जमाअ़त

1 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الاعتکاف، باب اعتکاف العشرالأوخر من رمضان، الحدیث: ۱۱۷۲، ص۵۹۷.
2 ..... "سنن أبي داود"، کتاب الصیام، باب المعتکف یعود المریض، الحدیث: ۲۴۷۳، ج۲، ص۴۹۲.
3 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب ما جاء في الصیام، باب في ثواب الاعتکاف، الحدیث: ۱۷۸۱، ج۲، ص۳۶۵.
4 ..... "شعب الإیمان"، باب في الاعتکاف، الحدیث، ۳۹۶۶، ج۳، ص۴۲۵.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الصوم، باب الاعتکاف، ج۳، ص۴۹۲ ـ ۴۹۴.
و "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب السابع في الاعتکاف، ج۱، ص۲۱۱.
6 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصوم، باب الاعتکاف، ج۳، ص۴۹۳.
7 ...यानी बैतुल मुक़द्दस ।

www.dawateislami.net

होती हो ।[1] (جوہرہ)

मस्अला 4 औ़रत को मस्जिद में एतिकाफ़ मक्रूह है, बल्कि वोह घर में ही एतिकाफ़ करे मगर उस जगह करे जो उस ने नमाज़ पढ़ने के लिये मुक़र्रर कर रखी है जिसे मस्जिदे बैत कहते हैं और औ़रत के लिये येह मुस्तह़ब भी है कि घर में नमाज़ पढ़ने के लिये कोई जगह मुक़र्रर कर ले और चाहिये कि उस जगह को पाक साफ़ रखे और बेहतर येह कि उस जगह को चबूतरे वग़ैरा की त़रह़ बुलन्द कर ले। बल्कि मर्द को भी चाहिये कि नवाफ़िल के लिये घर में कोई जगह मुक़र्रर कर ले कि नफ़्ल नमाज़ घर में पढ़ना अफ़्ज़ल है ।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 5 अगर औ़रत ने नमाज़ के लिये कोई जगह मुक़र्रर नहीं कर रखी है तो घर में एतिकाफ़ नहीं कर सकती, अलबत्ता अगर उस वक़्त यानी जब कि एतिकाफ़ का इरादा किया किसी जगह को नमाज़ के लिये ख़ास कर लिया तो उस जगह एतिकाफ़ कर सकती है ।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 6 ख़ुन्सा[4] मस्जिदे बैत में एतिकाफ़ नहीं कर सकता ।[5] (درمختار)

मस्अला 7 एतिकाफ़ तीन क़िस्म है :

(1) वाजिब : कि एतिकाफ़ की मन्नत मानी यानी ज़बान से कहा, महज़ दिल में इरादे से वाजिब न होगा ।

(2) सुन्नते मुअक्कदा : कि रमज़ान के पूरे अ़शरए अख़ीरा यानी आख़िर के दस दिन में एतिकाफ़ किया जाए यानी बीसवीं रमज़ान को सूरज डूबते वक़्त ब निय्यते एतिकाफ़ मस्जिद में हो और तीसवीं के ग़ुरूब के बाद या उन्तीस को चांद होने के बाद निकले । अगर बीसवीं तारीख़ को बादे नमाज़े मग़रिब निय्यते एतिकाफ़ की तो सुन्नते मुअक्कदा अदा न हुई और येह एतिकाफ़ सुन्नते किफ़ाया है कि अगर सब तर्क करें तो सब से मुत़ालबा होगा और शह्र में एक ने कर लिया तो सब बरिय्युज़्ज़िम्मा ।

(3) इन दो[2] के इलावा और जो एतिकाफ़ किया जाए वोह **मुस्तह़ब** व **सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा** है ।[6] (درمختار،عالمگیری)

मस्अला 8 एतिकाफ़े मुस्तह़ब के लिये न रोज़ा शर्त़ है, न इस के लिये कोई ख़ास वक़्त मुक़र्रर, बल्कि जब मस्जिद में एतिकाफ़ की निय्यत की, जब तक मस्जिद में है मोतकिफ़ है, चला आया एतिकाफ़ ख़त्म हो गया ।[7] (عالمگیری وغیرہ) येह बग़ैर मेह़नत सवाब मिल रहा है कि

---

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ص١٨٨.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٤٩٤. 3 ..... المرجع السابق.

4 ...हीजड़ा ।

5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٤٩٤.

6 ..... المرجع السابق، ص٤٩٥، و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١١.

7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١١، وغيره.

www.dawateislami.net

फ़क़त़ निय्यत कर लेने से एतिकाफ़ का सवाब मिलता है, इसे तो न खोना चाहिये। मस्जिद में अगर दरवाज़े पर येह इबारत लिख दी जाए कि एतिकाफ़ की निय्यत कर लो, एतिकाफ़ का सवाब पाओगे तो बेहतर है कि जो इस से ना वाक़िफ़ हैं उन्हें मालूम हो जाए और जो जानते हैं उन के लिये याद दिहानी हो।

मस्अला 9 एतिकाफ़े सुन्नत यानी रमज़ान शरीफ़ की पिछली दस तारीख़ों में जो किया जाता है, इस में रोज़ा शर्त़ है, लिहाज़ा अगर किसी मरीज़ या मुसाफ़िर ने एतिकाफ़ तो किया मगर रोज़ा न रखा तो सुन्नत अदा न हुई बल्कि नफ़्ल हुवा।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 10 मन्नत के एतिकाफ़ में भी रोज़ा शर्त़ है, यहां तक कि अगर एक महीने के एतिकाफ़ की मन्नत मानी और येह कहा कि रोज़ा न रखेगा जब भी रोज़ा रखना वाजिब है और अगर रात के एतिकाफ़ की मन्नत मानी तो येह मन्नत सह़ीह़ नहीं कि रात में रोज़ा नहीं हो सकता और अगर यूं कहा कि एक दिन रात का मुझ पर एतिकाफ़ है तो येह मन्नत सह़ीह़ है और अगर आज के एतिकाफ़ की मन्नत मानी और खाना खा चुका है तो मन्नत सह़ीह़ नहीं।[2] (درمختار،ردالمحتار) यूंही अगर ज़ुह्वए कुब्रा के बाद मन्नत मानी और रोज़ा न था तो येह मन्नत सह़ीह़ नहीं कि अब रोज़े की निय्यत नहीं कर सकता, बल्कि अगर रोज़े की निय्यत कर सकता हो मसलन ज़ुह्वए कुब्रा से क़ब्ल जब भी मन्नत सह़ीह़ नहीं कि येह रोज़ा नफ़्ल होगा और इस एतिकाफ़ में रोज़ए वाजिब दरकार।

मस्अला 11 येह ज़रूरी नहीं कि ख़ास एतिकाफ़ ही के लिये रोज़ा हो बल्कि रोज़ा होना ज़रूरी है, अगर्चे एतिकाफ़ की निय्यत से न हो मसलन इस रमज़ान के एतिकाफ़ की मन्नत मानी तो वोही रमज़ान के रोज़े उस एतिकाफ़ के लिये काफ़ी हैं और अगर रमज़ान के रोज़े तो रखे मगर एतिकाफ़ न किया तो अब एक माह के रोज़े रखे और उस के साथ एतिकाफ़ करे और अगर यूं न किया यानी रोज़े रख कर एतिकाफ़ न किया और दूसरा रमज़ान आ गया तो इस रमज़ान के रोज़े उस एतिकाफ़ के लिये काफ़ी नहीं।

यूंही अगर किसी और वाजिब के रोज़े रखे तो येह एतिकाफ़ उन रोज़ों के साथ भी अदा नहीं हो सकता, बल्कि अब उस के लिये ख़ास एतिकाफ़ की निय्यत से रोज़े रखना ज़रूरी है और अगर इस सूरत में कि रमज़ान के एतिकाफ़ की मन्नत मानी थी न रोज़े रखे, न एतिकाफ़ किया अब उन रोज़ों की क़ज़ा रख रहा है तो उन क़ज़ा रोज़ों के साथ वोह एतिकाफ़ की मन्नत भी पूरी कर सकता है।[3] (عالمگیری، درمختار،ردالمحتار)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٤٩٦.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٤٩٦.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١١.

3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٤٩٧.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١١.

www.dawateislami.net

मस्अला 12 नफ़्ली रोज़ा रखा था और उस दिन के एतिकाफ़ की मन्नत मानी तो येह मन्नत सह़ीह़ नहीं कि एतिकाफ़े वाजिब के लिये नफ़्ली रोज़ा काफ़ी नहीं और येह रोज़ा वाजिब हो नहीं सकता ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 13 एक महीने के एतिकाफ़ की मन्नत मानी तो येह मन्नत रमज़ान में पूरी नहीं कर सकता बल्कि ख़ास उस एतिकाफ़ के लिये रोज़े रखने होंगे ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 14 औ़रत ने एतिकाफ़ की मन्नत मानी तो शौहर मन्नत पूरी करने से रोक सकता है और अब बाइन होने या मौते शौहर के बाद मन्नत पूरी करे । यूंही लौंडी ग़ुलाम को उन का मालिक मन्अ़ कर सकता है, येह आज़ाद होने के बाद पूरी करें ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 15 शौहर ने औ़रत को एतिकाफ़ की इजाज़त दे दी अब रोकना चाहे तो नहीं रोक सकता और मौला ने बांदी ग़ुलाम को इजाज़त दे दी जब भी रोक सकता है अगर्चे अब रोकेगा तो गुनहगार होगा ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 16 शौहर ने एक महीने के एतिकाफ़ की इजाज़त दी और औ़रत लगातार पूरे महीने का एतिकाफ़ करना चाहती है तो शौहर को इख़्तियार है कि येह हुक्म दे कि थोड़े थोड़े कर के एक महीना पूरा कर ले और अगर किसी ख़ास महीने की इजाज़त दी है तो अब इख़्तियार न रहा ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 17 एतिकाफ़े वाजिब में मोतकिफ़ को मस्जिद से बग़ैर उ़ज़्र निकलना ह़राम है, अगर निकला तो एतिकाफ़ जाता रहा अगर्चे भूल कर निकला हो । यूंही एतिकाफ़े सुन्नत भी बग़ैर उ़ज़्र निकलने से जाता रहता है । यूंही औ़रत ने मस्जिदे बैत में एतिकाफ़े वाजिब या मस्नून किया तो बग़ैर उ़ज़्र वहां से नहीं निकल सकती, अगर वहां से निकली अगर्चे घर ही में रही एतिकाफ़ जाता रहा ।[6] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 18 मोतकिफ़ को मस्जिद से निकलने के दो उ़ज़्र हैं :

एक ह़ाजते त़ब्ई कि मस्जिद में पूरी न हो सके जैसे पाख़ाना, पेशाब, इस्तिन्जा, वुज़ू और ग़ुस्ल की ज़रूरत हो तो ग़ुस्ल, मगर ग़ुस्ल व वुज़ू में येह शर्त़ है कि मस्जिद में न हो सकें यानी कोई ऐसी चीज़ न हो जिस में वुज़ू व ग़ुस्ल का पानी ले सके इस त़रह़ कि मस्जिद में पानी की कोई बूंद न गिरे कि वुज़ू व ग़ुस्ल का पानी मस्जिद में गिराना ना जाइज़ है और लगन वग़ैरा मौजूद हो कि उस में वुज़ू इस त़रह़ कर सकता है कि कोई छींट मस्जिद में न गिरे तो वुज़ू के लिये मस्जिद से निकलना जाइज़ नहीं, निकलेगा तो एतिकाफ़ जाता रहेगा । यूंही अगर मस्जिद

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١١.
2 ..... المرجع السابق. 3 ..... المرجع السابق. 4 ..... المرجع السابق. 5 ..... المرجع السابق.
6 ..... المرجع السابق، ص٢١٢، و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠١.

www.dawateislami.net

में वुज़ू व ग़ुस्ल के लिये जगह बनी हो या हौ़ज़ हो तो बाहर जाने की अब इजाज़त नहीं।

दुवुम ह़ाजते शर्ई़ मसलन ईद या जुमुआ़ के लिये जाना या अज़ान कहने के लिये मनारे पर जाना, जब कि मनारे पर जाने के लिये बाहर ही से रास्ता हो और अगर मनारे का रास्ता अन्दर से हो तो ग़ैरे मुअज़्ज़िन भी मनारे पर जा सकता है मुअज़्ज़िन की तख़्सीस नहीं।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 19 क़ज़ाए ह़ाजत को गया तो त़हारत कर के फ़ौरन चला आए, ठहरने की इजाज़त नहीं और अगर मोतकिफ़ का मकान मस्जिद से दूर है और उस के दोस्त का मकान क़रीब तो येह ज़रूरी नहीं कि दोस्त के यहां क़ज़ाए ह़ाजत को जाए, बल्कि अपने मकान पर भी जा सकता है और अगर इस के ख़ुद दो मकान हैं एक नज़्दीक दूसरा दूर तो नज़्दीक वाले मकान में जाए कि बाज़ मशाइख़ फ़रमाते हैं दूर वाले में जाएगा तो एतिकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा।[2] (ردالمحتار،عالمگیری)

मस्अला 20 जुमुआ़ अगर क़रीब की मस्जिद में होता है तो आफ़्ताब ढलने के बाद उस वक़्त जाए कि अज़ाने सानी से पेश्तर सुन्नतें पढ़ ले और अगर दूर हो तो आफ़्ताब ढलने से पहले भी जा सकता है, मगर इस अन्दाज़ से जाए कि अज़ाने सानी के पहले सुन्नतें पढ़ सके ज़ियादा पहले न जाए।

और येह बात उस की राय पर है जब उस की समझ में आ जाए कि पहुंचने के बाद सिर्फ़ सुन्नतों का वक़्त बाक़ी रहेगा, चला जाए और फ़र्ज़ें जुमुआ़ के बाद चार या छे रक्अ़तें सुन्नतों की पढ़ कर चला आए और ज़ोह्रे एह़तियाती पढ़नी है तो एतिकाफ़ वाली मस्जिद में आ कर पढ़े और अगर पिछली सुन्नतों के बाद वापस न आया, वहीं जामेअ़ मस्जिद में ठहरा रहा, अगर्चे एक दिन रात तक वहीं रह गया या अपना एतिकाफ़ वहीं पूरा किया तो भी वोह एतिकाफ़ फ़ासिद न हुवा मगर येह मक्रूह है और येह सब उस सूरत में है कि जिस मस्जिद में एतिकाफ़ किया, वहां जुमुआ़ न होता हो।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 21 अगर ऐसी मस्जिद में एतिकाफ़ किया जहां जमाअ़त नहीं होती तो जमाअ़त के लिये निकलने की इजाज़त[4] है।[5] (ردالمحتار)

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠١.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠١.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٢.

3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٢.

4 ...सय्यिदी आला ह़ज़रत तह़रीर फ़रमाते हैं : "अगर अपने मह़ल्ले की ऐसी मस्जिद में एतिकाफ़ किया जहां जमाअ़त नहीं होती तो अब जमाअ़त के लिये निकलने की इजाज़त नहीं बल्कि अफ़्ज़ल येही है कि उसी मस्जिद में तन्हा नमाज़ पढ़े क्यूं कि येह ह़क़्क़े मस्जिद है।" (جدالممتار"،كتاب الصوم، باب الاعتكاف،ج٣،ص٢٨٨) लिहाज़ा इस पर अ़मल किया जाए।.....इल्मिय्या

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٣، ٥٠٥.

www.dawateislami.net

मस्अला 22 एतिकाफ़ के ज़माने में ह़ज या उ़मरह का एह़राम बांधा तो एतिकाफ़ पूरा कर के जाए और अगर वक़्त कम है कि एतिकाफ़ पूरा करेगा तो ह़ज जाता रहेगा तो ह़ज को चला जाए फिर सिरे से एतिकाफ़ करे।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 23 अगर वोह मस्जिद गिर गई या किसी ने मजबूर कर के वहां से निकाल दिया और फ़ौरन दूसरी मस्जिद में चला गया तो एतिकाफ़ फ़ासिद न हुवा।[2] (عالمگیری)

मस्अला 24 अगर डूबने या जलने वाले के बचाने के लिये मस्जिद से बाहर गया या गवाही देने के लिये गया या जंग में सब लोगों का बुलावा हुवा और येह भी निकला या मरीज़ की इ़यादत या नमाज़े जनाज़ा के लिये गया, अगर्चे कोई दूसरा पढ़ने वाला न हो तो इन सब सूरतों में एतिकाफ़ फ़ासिद हो गया।[3] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 25 औ़रत मस्जिद में मोतकिफ़ थी, उसे त़लाक़ दी गई तो घर चली जाए और इसी एतिकाफ़ को पूरा कर ले।[4] (عالمگیری)

मस्अला 26 अगर मन्नत मानते वक़्त येह शर्त़ कर ली कि मरीज़ की इ़यादत और नमाज़े जनाज़ा और मजलिसे इ़ल्म में ह़ाज़िर होगा तो येह शर्त़ जाइज़ है। अब अगर इन कामों के लिये जाए तो एतिकाफ़ फ़ासिद न होगा,[5] मगर ख़ाली दिल में निय्यत कर लेना काफ़ी नहीं बल्कि ज़बान से कह लेना ज़रूरी है।[6] (عالمگیری، ردالمحتار وغیرہما)

मस्अला 27 पाख़ाना पेशाब के लिये गया था, क़र्ज़ ख़्वाह ने रोक लिया एतिकाफ़ फ़ासिद हो गया।[7] (عالمگیری)

मस्अला 28 मोतकिफ़ को वत़ी करना और औ़रत का बोसा लेना या छूना या गले लगाना ह़राम है। जिमाअ़ से बहर ह़ाल एतिकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा, इन्ज़ाल हो या न हो क़स्दन हो या भूले से मस्जिद में हो या बाहर रात में हो या दिन में, जिमाअ़ के इ़लावा औरों में अगर इन्ज़ाल हो तो फ़ासिद है वरना नहीं, एह़तिलाम हो गया या ख़याल जमाने या नज़र करने से इन्ज़ाल हुवा तो एतिकाफ़ फ़ासिद न हुवा।[8] (عالمگیری وغیرہ)

---

1 ..... "ردالمحتار"، کتاب الصوم، باب الاعتکاف، ج۳، ص۵۰۳.

2 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب السابع في الاعتکاف، ج۱، ص۲۱۲.

3 ..... المرجع السابق. 4 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب السابع في الاعتکاف، ج۱، ص۲۱۲.

5 ...सुन्नत एतिकाफ़ हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से साबित शुदा त़रीक़े से ही अदा होगा और आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से एतिकाफ़ के दौरान इस क़िस्म की ह़ाजत के लिये निकलना साबित नहीं लिहाज़ा ज़ाहिर येही है कि सुन्नत एतिकाफ़ में इस त़रह़ की शर्त़ लगाएगा तो येह एतिकाफ़ नफ़्ली हो जाएगा। ("جدالممتار"، کتاب الصوم، باب الاعتکاف، ج۳، ص۲۹۵، ملخصا).....इ़ल्मिय्या

6 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب السابع في الاعتکاف، ج۱، ص۲۱۲.
و "ردالمحتار"، کتاب الصوم، باب الاعتکاف، ج۳، ص۵۰۶. وغیرهما

7 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب السابع في الاعتکاف، ج۱، ص۲۱۲.

8 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب الصوم، الباب السابع في الاعتکاف، ج۱، ص۲۱۳، وغیره.

www.dawateislami.net

मस्अला 29 मोतकिफ़ ने दिन में भूल कर खा लिया तो एतिकाफ़ फ़ासिद न हुवा, गाली गलोच या झगड़ा करने से एतिकाफ़ फ़ासिद नहीं होता मगर बे नूर व बे बरकत होता है।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 30 मोतकिफ़ निकाह़ कर सकता है और औ़रत को रज्ई त़लाक़ दी है तो रज्अ़त भी कर सकता है, मगर इन उमूर के लिये अगर मस्जिद से बाहर होगा तो एतिकाफ़ जाता रहेगा।[2] (عالمگیری،درمختار) मगर जिमाअ़ और बोसा वग़ैरा से इस को रज्अ़त ह़राम है, अगर्चे रज्अ़त हो जाएगी।

मस्अला 31 मोतकिफ़ ने ह़राम माल या नशे की चीज़ रात में खाई तो एतिकाफ़ फ़ासिद न हुवा।[3] (عالمگیری) मगर इस ह़राम का गुनाह हुवा, तौबा करे।

मस्अला 32 बेहोशी और जुनून अगर त़वील हों कि रोज़ा न हो सके तो एतिकाफ़ जाता रहा और क़ज़ा वाजिब है, अगर्चे कई साल के बाद सिह़्ह़त हो और अगर मअ़तूह़ यानी बोहरा हो गया, जब भी अच्छे होने के बाद क़ज़ा वाजिब है।[4] (عالمگیری)

मस्अला 33 मोतकिफ़ मस्जिद ही में खाए पिये सोए इन उमूर के लिये मस्जिद से बाहर होगा तो एतिकाफ़ जाता रहेगा।[5] (درمختار وغیرہ) मगर खाने पीने में येह एह़तियात़ लाज़िम है कि मस्जिद आलूदा न हो।

मस्अला 34 मोतकिफ़ के सिवा और किसी को मस्जिद में खाने पीने सोने की इजाज़त नहीं और अगर येह काम करना चाहे तो एतिकाफ़ की निय्यत कर के मस्जिद में जाए और नमाज़ पढ़े या ज़िक्रे इलाही करे फिर येह काम कर सकता है।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 35 मोतकिफ़ को अपनी या बाल बच्चों की ज़रूरत से मस्जिद में कोई चीज़ ख़रीदना या बेचना जाइज़ है, बशर्ते कि वोह चीज़ मस्जिद में न हो या हो तो थोड़ी हो कि जगह न घेरे और अगर ख़रीदो फ़रोख़्त ब क़स्दे तिजारत हो तो ना जाइज़ अगर्चे वोह चीज़ मस्जिद में न हो।[7] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 36 मोतकिफ़ अगर ब निय्यते इ़बादत सुकूत करे यानी चुप रहने को सवाब की बात समझे तो मक्रूहे तह़रीमी है और अगर चुप रहना सवाब की बात समझ कर न हो तो ह़रज

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٣، وغيره.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٣. و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٦.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٣.
4 ..... المرجع السابق. 5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٦، وغيره.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٦.
7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٦.

www.dawateislami.net

नहीं और बुरी बात से चुप रहा तो येह मक्रूह नहीं, बल्कि येह तो आला दरजे की चीज़ है क्यूं कि बुरी बात ज़बान से न निकालना वाजिब है और जिस बात में न सवाब हो न गुनाह यानी मुबाह़ बात भी मोतकिफ़ को मक्रूह है, मगर ब वक़्ते ज़रूरत और बे ज़रूरत मस्जिद में मुबाह़ कलाम नेकियों को ऐसे खाता है जैसे आग लकड़ी को ।[1] (درمختار)

मस्अला 37 मोतकिफ़ न चुप रहे, न कलाम करे तो क्या करे । येह करे कुरआने मजीद की तिलावत, ह़दीस शरीफ़ की क़िराअत और दुरूद शरीफ़ की कसरत, इल्मे दीन का दर्सो तदरीस, नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم व दीगर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के सियर व अज़्कार और औलिया व सालिह़ीन की ह़िकायत और उमूरे दीन की किताबत ।[2] (درمختار)

मस्अला 38 एक दिन के एतिकाफ़ की मन्नत मानी तो इस में रात दाख़िल नहीं । तुलूए़ फ़ज्र से पेश्तर मस्जिद में चला जाए और ग़ुरूब के बाद चला आए और अगर दो दिन या तीन दिन या ज़ियादा दिनों की मन्नत मानी या दो या तीन या ज़ियादा रातों के एतिकाफ़ की मन्नत मानी तो इन दोनों सूरतों में अगर सिर्फ़ दिन या सिर्फ़ रातें मुराद लीं तो निय्यत सह़ीह़ है, लिहाज़ा पहली सूरत में मन्नत सह़ीह़ है और सिर्फ़ दिनों में एतिकाफ़ वाजिब हुवा और इस सूरत में इख़्तियार है कि इतने दिनों का लगातार एतिकाफ़ करे या मुतफ़र्रिक़ तौ़र पर । और दूसरी सूरत में मन्नत सह़ीह़ नहीं कि एतिकाफ़ के लिये रोज़ा शर्त़ है और रात में रोज़ा हो नहीं सकता और अगर दोनों सूरतों में दिन और रात दोनों मुराद हैं । या कुछ निय्यत न की तो दोनों सूरतों में दिन और रात दोनों का एतिकाफ़ वाजिब है और अ़लल इत्तिसाल इतने दिनों में एतिकाफ़ ज़रूरी है, तफ़्रीक़ नहीं कर सकता ।

नीज़ इस सूरत में येह भी ज़रूरी है कि दिन से पहले जो रात है उस में एतिकाफ़ हो, लिहाज़ा ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले जाए एतिकाफ़ में चला जाए और जिस दिन पूरा हो ग़ुरूबे आफ़्ताब के बाद निकल आए और अगर दिन की मन्नत मानी और कहता येह है कि मैं ने दिन कह कर रात मुराद ली, तो येह निय्यत सह़ीह़ नहीं, दिन और रात दोनों का एतिकाफ़ वाजिब है ।[3] (جوہرہ، عالمگیری، درمختار)

मस्अला 39 ईद के दिन के एतिकाफ़ की मन्नत मानी तो किसी और दिन में जिस दिन रोज़ा रखना जाइज़ है, उस की क़ज़ा करे और अगर यमीन की निय्यत थी तो कफ़्फ़ारा दे और ईद ही के दिन कर लिया तो मन्नत पूरी हो गई मगर गुनहगार हुवा ।[4] (عالمگیری)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٧.
2 ..... المرجع السابق، ص٥٠٨.
3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ص١٩٠.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٣ ـ ٢١٤.
و "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥١٠.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٤.

www.dawateislami.net

मस्अला 40 किसी दिन या किसी महीने के एतिकाफ़ की मन्नत मानी तो उस से पेश्तर भी इस मन्नत को पूरा कर सकता है यानी जब कि मुअ़ल्लक़ न हो और मस्जिदे ह़रम शरीफ़ में एतिकाफ़ करने की मन्नत मानी तो दूसरी मस्जिद में भी कर सकता है।[1] (عالمگیری)

मस्अला 41 माहे गुज़श्ता के एतिकाफ़ की मन्नत मानी तो सह़ीह़ नहीं। मन्नत मान कर مَعَاذَاللہ मुरतद हो गया तो मन्नत साक़ित़ हो गई फिर मुसलमान हुवा तो उस की क़ज़ा वाजिब नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 42 एक महीने के एतिकाफ़ की मन्नत मानी और मर गया तो हर रोज़ के बदले ब क़दरे सदक़ए फ़ित्र के मिस्कीन को दिया जाए यानी जब कि वसिय्यत की हो और उस पर वाजिब है कि वसिय्यत कर जाए और वसिय्यत न की मगर वारिसों ने अपनी त़रफ़ से फ़िदया दे दिया, जब भी जाइज़ है। मरीज़ ने मन्नत मानी और मर गया तो अगर एक दिन को भी अच्छा हो गया था तो हर रोज़ के बदले सदक़ए फ़ित्र की क़दर दिया जाए और एक दिन को भी अच्छा न हुवा तो कुछ वाजिब नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 43 एक महीने के एतिकाफ़ की मन्नत मानी तो येह बात उस के इख़्तियार में है कि जिस महीने का चाहे एतिकाफ़ करे, मगर लगातार एतिकाफ़ में बैठना वाजिब है और अगर येह कहे कि मेरी मुराद एक महीने के सिर्फ़ दिन थे, रातें नहीं तो येह क़ौल नहीं माना जाएगा। दिन और रात दोनों का एतिकाफ़ वाजिब है और तीस दिन कहा था जब भी येही हुक्म है। हां, अगर मन्नत मानते वक़्त येह कहा था कि एक महीने के दिनों का एतिकाफ़ है, रातों का नहीं तो सिर्फ़ दिनों का एतिकाफ़ वाजिब हुवा और अब येह भी इख़्तियार है कि मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर तीस दिन का एतिकाफ़ कर ले और अगर येह कहा था कि एक महीने की रातों का एतिकाफ़ है दिनों का नहीं तो कुछ नहीं।[4] (جوہرہ،درمختار)

मस्अला 44 एतिकाफ़े नफ़्ल अगर छोड़ दे तो उस की क़ज़ा नहीं कि वहीं तक ख़त्म हो गया और एतिकाफ़े मस्नून कि रमज़ान की पिछली दस तारीख़ों तक के लिये बैठा था, उसे तोड़ा तो जिस दिन तोड़ा फ़क़त़ उस एक दिन की क़ज़ा करे, पूरे दस दिनों की क़ज़ा वाजिब नहीं और मन्नत का एतिकाफ़ तोड़ा तो अगर किसी मुअ़य्यन महीने की मन्नत थी तो बाक़ी दिनों की क़ज़ा करे, वरना अगर अ़लल इत्तिसाल वाजिब हुवा था तो सिरे से एतिकाफ़ करे और अ़लल इत्तिसाल वाजिब न था तो बाक़ी का एतिकाफ़ करे।[5] (ردالمحتار)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب الصوم، الباب السابع في الاعتكاف، ج١، ص٢١٤.
2 ..... المرجع السابق. 3 ..... المرجع السابق.
4 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ص١٩٠، ١٩١.
و "الدرالمختار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥١٠.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٤٩٩، ٥٠١، ٥٠٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 45 एतिकाफ़ की क़ज़ा सिर्फ़ क़स्दन तोड़ने से नहीं बल्कि अगर उ़ज़्र की वज्ह से छोड़ा मसलन बीमार हो गया या बिला इख़्तियार छूटा मसलन औ़रत को हैज़ या निफ़ास आया या जुनून व बेहोशी त़वील त़ारी हुई, इन में भी क़ज़ा वाजिब है और इन में अगर बाज़ फ़ौत हो तो कुल की क़ज़ा की ह़ाजत नहीं, बल्कि बाज़ की क़ज़ा कर दे और कुल फ़ौत हुवा तो कुल की क़ज़ा है और मन्नत में अ़लल इत्तिसाल वाजिब हुवा था तो अ़लल इत्तिसाल[1] कुल की क़ज़ा है।[2] (ردالمحتار)

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى آلَائِهٖ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى اَفْضَلِ اَنْبِيَائِهٖ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَاَوْلِيَائِهٖ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط

अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास** अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी शोहरए आफ़ाक़ किताब **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** में लिखते हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **"मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"** نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ ("المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥.)

अपने एतिकाफ़ की अ़ज़ीमुश्शान नेकी के साथ मज़ीद अच्छी अच्छी निय्यतें शामिल कर के सवाब में ख़ूब इज़ाफ़ा कीजिये :

(1) तसव्वुफ़ के इन मदनी उसूलों (A) तक़्लीले त़आ़म (यानी कम खाने) (B) तक़्लीले कलाम (यानी कम बोलने) (C) तक़्लीले मनाम (यानी कम सोने) पर कारबन्द रहूंगा। रोज़ाना पांचों नमाज़ें (2) पहली सफ़ में (3) तक्बीरे ऊला के साथ (4) बा जमाअ़त अदा करूंगा (5) हर अज़ान और (6) हर इक़ामत का जवाब दूंगा (7) हर बार ब मअ़ अव्वलो आख़िर दुरूद शरीफ़ अज़ान के बाद की दुआ़ पढ़ूंगा (8) रोज़ाना तहज्जुद (9) इश्राक़ (10) चाश्त और (11) अव्वाबीन के नवाफ़िल अदा करूंगा (12) तिलावत और (13) दुरूद शरीफ़ की कसरत करूंगा (14) रोज़ाना रात सूरतुल मुल्क पढ़ूं / सुनूंगा (15) ज़बान पर कुफ़्ले मदीना लगाऊंगा यानी फ़ुज़ूल गोई से बचूंगा और मुम्किन हुवा तो इस निय्यते ख़ैर के साथ ज़रूरत की दुन्यवी बात भी लिख कर या इशारे से करूंगा ताकि फ़ुज़ूल या बुरी बातों में न जा पड़ूं या शोरो गुल का सबब न बन जाऊं (16) मस्जिद को हर त़रह़ की बदबू से बचाऊंगा। (माख़ूज़ अज़ : **फ़ैज़ाने सुन्नत** (तख़्रीज शुदा), मत़बूआ़ **मक्तबतुल मदीना**)

---

1 ...यानी मुसल्सल बिला नाग़ा।

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الصوم، باب الاعتكاف، ج٣، ص٥٠٣.

www.dawateislami.net

हज्ज व उ़मरह के मसाइल का बयान

बहारे शरीअ़त

छठा ह़िस्सा (6)

(तस्हील व तख़्रीज शुदा)

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्तरीक़ह
ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शोबए तख़्रीज)

नाशिर
मक्तबतुल मदीना (दावते इस्लामी)

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نَحْمَدُهٗ وَ نُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ ط

ह़ज का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿ اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّ هُدًى لِّلْعٰلَمِیْنَ ۚ۝۹۶ فِیْهِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِیْمَ ۚ۬ وَ مَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَ لِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ سَبِیْلًا ؕ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ ۝۹۷ ﴾[1]

बेशक पहला घर जो लोगों के लिये बनाया गया वोह है जो मक्का में है, बरकत वाला और हिदायत तमाम जहान के लिये, इस में खुली हुई निशानियां हैं, मक़ामे इब्राहीम और जो शख़्स इस में दाख़िल हो बा अम्न है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये लोगों पर बैतुल्लाह का ह़ज है, जो शख़्स ब एतिबार रास्ते के इस की त़ाक़त रखे और जो कुफ़्र करे तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) सारे जहान से बे नियाज़ है।

और फ़रमाता है :

﴿ وَ اَتِمُّوا الْحَجَّ وَ الْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ؕ ﴾[2]

ह़ज व उ़मरह को **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये पूरा करो।

ह़दीस 1 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़ुत़्बा पढ़ा और फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम पर ह़ज फ़र्ज़ किया गया लिहाज़ा ह़ज करो।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : क्या हर साल या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ? हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने सुकूत फ़रमाया।[3] उन्हों ने तीन बार येह कलिमा कहा। इरशाद फ़रमाया : अगर मैं "हां" कह देता तो तुम पर वाजिब हो जाता और तुम से न हो सकता। फिर फ़रमाया : जब तक मैं किसी बात को बयान न करूं तुम मुझ से सुवाल न करो, अगले लोग कसरते सुवाल और फिर अम्बिया की मुख़ालफ़त से हलाक हुए, लिहाज़ा जब मैं किसी बात का हुक्म दूं तो जहां तक हो सके उसे करो और जब मैं किसी बात से मन्अ़ करूं तो उसे छोड़ दो।[4]

1 ..... پ٤، آل عمران: ٩٦ـ ٩٧. 2 .....پ٢، البقرة: ١٩٦.

3 ...यानी ख़ामोश रहे।

4 ....."صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب فرض الحج مرّة في العمر، الحديث: ١٣٣٧، ص٦٩٨.

www.dawateislami.net

ह़दीस 2 सह़ीहैन में इन्हीं से मरवी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई, कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) व रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) पर ईमान। अ़र्ज़ की गई : फिर क्या ? फ़रमाया : **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में जंग। अ़र्ज़ की गई : फिर क्या ? फ़रमाया : ह़ज्जे मबरूर। (1)

ह़दीस 3 बुख़ारी व मुस्लिम व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह इन्हीं से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिस ने ह़ज किया और रफ़्स (फ़ोह़्श कलाम) न किया और फ़िस्क़ न किया तो गुनाहों से पाक हो कर ऐसा लौटा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा।"(2)

ह़दीस 4 बुख़ारी व मुस्लिम व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह इन्हीं से रावी, "उ़मरह से उ़मरह तक उन गुनाहों का कफ़्फ़ारा है जो दरमियान में हुए और ह़ज्जे मबरूर का सवाब जन्नत ही है।"(3)

ह़दीस 5 मुस्लिम व इब्ने ख़ुज़ैमा वग़ैरहुमा अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "ह़ज उन गुनाहों को दफ़्अ़ कर देता है जो पेश्तर हुए हैं।"(4)

ह़दीस 6 व 7 इब्ने माजह उम्मुल मुअमिनीन उम्मे सलमह رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ह़ज कमज़ोरों के लिये जंग है।"(5)

और उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से इब्ने माजह ने रिवायत की, कि मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! औ़रतों पर जंग है ? फ़रमाया : "हां, इन के ज़िम्मे वोह जंग है जिस में लड़ना नहीं ह़ज व उ़मरह।"(6)

और सह़ीहैन में इन्हीं से मरवी कि फ़रमाया : "तुम्हारा जंग ह़ज है।"(7)

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الإيمان، باب من قال ان الايمان هو العمل، الحديث: ٢٦، ج١، ص٢١.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الحج، باب فضل الحج المبرور، الحديث: ١٥٢١، ج١، ص٥١٢.
و "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب فى الحج و العمرة... إلخ، الحديث: ٢، ج٢، ص١٠٣.
3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب العمرة، باب وجوب العمرة وفضلها، الحديث: ١٧٧٣، ج١، ص٥٨٦.
4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الإيمان، باب كون الاسلام يهدم ما قبله ... إلخ، الحديث: ١٢١، ص٧٤.
5 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب الحج جهاد النساء، الحديث: ٢٩٠٢، ج٣، ص٤١٤.
6 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب الحج جهاد النساء، الحديث: ٢٩٠١، ج٣، ص٤١٣.
7 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الجهاد، باب جهاد النساء، الحديث: ٢٨٧٥، ج٢، ص٢٧٤.

www.dawateislami.net

ह़दीस 8 तिरमिज़ी व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "ह़ज व उ़मरह मोह़ताजी और गुनाहों को ऐसे दूर करते हैं जैसे भट्टी लोहे और चांदी और सोने के मैल को दूर करती है और ह़ज्जे मबरूर का सवाब जन्नत ही है।"[1]

ह़दीस 9 बुख़ारी व मुस्लिम व अबू दावूद व नसाई व इब्ने माजह वग़ैरहुम इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "रमज़ान में उ़मरह मेरे साथ ह़ज के बराबर है।"[2]

ह़दीस 10 बज़्ज़ार ने अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत की, कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "ह़ाजी अपने घर वालों में से चार सौ की शफ़ाअ़त करेगा और गुनाहों से ऐसा निकल जाएगा, जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा।"[3]

ह़दीस 11 व 12 बैहक़ी अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि मैं ने अबुल क़ासिम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "जो ख़ानए काबा के क़स्द से आया और ऊंट पर सुवार हुवा तो ऊंट जो क़दम उठाता और रखता है, **अल्लाह** तआ़ला इस के बदले उस के लिये नेकी लिखता है और ख़त़ा को मिटाता और दरजा बुलन्द फ़रमाता है, यहां तक कि जब काबए मुअ़ज़्ज़मा के पास पहुंचा और त़वाफ़ किया और सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई की फिर सर मुंडाया या बाल कतरवाए तो गुनाहों से ऐसा निकल गया जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा।"[4] और इसी के मिस्ल अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी।

ह़दीस 13 इब्ने ख़ुज़ैमा व ह़ाकिम इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जो मक्के से पैदल ह़ज को जाए यहां तक कि मक्के वापस आए उस के लिये हर क़दम पर सात सो नेकियां ह़रम शरीफ़ की नेकियों के मिस्ल लिखी जाएंगी। कहा गया : ह़रम की नेकियों की क्या मिक़्दार है ? फ़रमाया : हर नेकी लाख नेकी है।[5] तो इस ह़िसाब से हर क़दम पर सात करोड़ नेकियां हुईं। وَاللّٰہُ ذُوالْفَضْلِ الْعَظِیْم

ह़दीस 14 ता 16 बज़्ज़ार ने जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत की, कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ह़ज व उ़मरह करने वाले **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के वफ़्द हैं, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने इन्हें बुलाया, येह ह़ाज़िर हुए, इन्हों ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से सुवाल किया, उस ने इन्हें

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء فی ثواب الحج و العمرة، الحديث: ٨١٠، ج٢، ص٢١٨.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب جزاء الصيد، باب حج النساء، الحديث: ١٨٦٣، ج١، ص٦١٤.
3 ..... "مسند البزار"، مسند أبي موسىٰ الاشعری رضی اللّٰه عنه، الحديث: ٣١٩٦، ج٨، ص١٦٩.
4 ..... "شعب الإيمان"، باب فی المناسك، باب فضل الحج و العمرة، الحديث: ٤١١٥، ج٣، ص٤٧٨.
5 ..... "المستدرك" للحاكم، كتاب المناسك، باب فضيلة الحج ماشيا، الحديث: ١٧٣٥، ج٢، ١١٤.

www.dawateislami.net

दिया ।''[1] इसी के मिस्ल इब्ने उ़मर व अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم से मरवी ।

ह़दीस 17 बज़्ज़ार व त़बरानी अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : ''ह़ाजी की मग़्फ़िरत हो जाती है और ह़ाजी जिस के लिये इस्तिग़्फ़ार करे उस के लिये भी ।''[2]

ह़दीस 18 अस्बहानी इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''ह़ज्जे फ़र्ज़ जल्द अदा करो कि क्या मालूम क्या पेश आए !''[3]

और अबू दावूद व दारिमी की रिवायत में यूं है : ''जिस का ह़ज का इरादा हो तो जल्दी करे ।''[4]

ह़दीस 19 त़बरानी औसत़ में अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दावूद عَلَیۡہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! जब तेरे बन्दे तेरे घर की ज़ियारत को आएं तो उन्हें तू क्या अ़त़ा फ़रमाएगा ? फ़रमाया : ''हर ज़ाइर का उस पर ह़क़ है जिस की ज़ियारत को जाए, उन का मुझ पर येह ह़क़ है कि दुन्या में उन्हें आ़फ़ियत दूंगा और जब मुझ से मिलेंगे तो उन की मग़्फ़िरत फ़रमा दूंगा ।''[5]

ह़दीस 20 त़बरानी कबीर में और बज़्ज़ार इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से रावी, कहते हैं : मैं मस्जिदे मिना में नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर था । एक अन्सारी और एक सक़फ़ी ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया, फिर कहा : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ! हम कुछ पूछने के लिये हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए हैं । इरशाद फ़रमाया : ''अगर तुम चाहो तो मैं बता दूं कि क्या पूछने ह़ाज़िर हुए हो और अगर चाहो तो मैं कुछ न कहूं, तुम्हीं सुवाल करो ।'' अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ! हमें बता दीजिये । इरशाद फ़रमाया : ''तू इस लिये ह़ाज़िर हुवा है कि घर से निकल कर बैतुल ह़राम के क़स्द से जाने को दरयाफ़्त करे और येह कि इस में तेरे लिये क्या सवाब है और त़वाफ़ के बाद दो रक्अ़तें पढ़ने को और येह कि इस में तेरे लिये क्या सवाब है और सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई को और येह कि इस में तेरे लिये क्या सवाब है और अ़रफ़े की शाम के वुक़ूफ़ को और तेरे लिये इस में क्या सवाब है और जिमार की रमी को और इस में तेरे लिये क्या सवाब है और क़ुरबानी करने को और इस में तेरे लिये क्या सवाब है और

1 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب فى الحج و العمرة... إلخ، الحديث: ٢٠، ج٢، ص١٠٧.
2 ..... "مجمع الزوائد"، باب دعاء الحجاج و العمار، الحديث: ٥٢٨٧، ج٣، ص٤٨٣.
3 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب فى الحج و العمرة... إلخ، الحديث: ٢٦، ج٢، ص١٠٩.
4 ..... "سنن أبي داود" كتاب المناسك، باب ٥، الحديث: ١٧٣٢، ج٢، ص١٩٧.
5 ..... "المعجم الأوسط" للطبراني، باب الميم، الحديث: ٦٠٣٧، ج٤، ص٢٩٧.

www.dawateislami.net

इस के साथ त़वाफ़े इफ़ाज़ा[1] को ।''

उस शख़्स ने अ़र्ज़ की : क़सम है उस ज़ात की जिस ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) को ह़क़ के साथ भेजा, इसी लिये ह़ाज़िर हुवा था कि इन बातों को हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) से दरयाफ़्त करूं । इरशाद फ़रमाया : ''जब तू बैतुल ह़राम के क़स्द से घर से निकलेगा तो ऊंट के हर क़दम रखने और हर क़दम उठाने पर तेरे लिये ह़सना लिखा जाएगा और तेरी ख़त़ा मिटा दी जाएगी और त़वाफ़ के बाद की दो रक्अ़तें ऐसी हैं जैसे औलादे इस्माईल में कोई ग़ुलाम हो उस के आज़ाद करने का सवाब और सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई सत्तर ग़ुलाम आज़ाद करने के मिस्ल है ।

और अ़रफ़े के दिन वुक़ूफ़ करने का ह़ाल येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आस्माने दुन्या की त़रफ़ ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और तुम्हारे साथ मलाएका पर मुबाहात फ़रमाता है, इरशाद फ़रमाता है : ''मेरे बन्दे दूर दूर से परागन्दा सर मेरी रह़मत के उम्मीदवार हो कर ह़ाज़िर हुए, अगर तुम्हारे गुनाह रेते की गिनती और बारिश के क़त़रों और समुन्दर के झाग बराबर हों तो मैं सब को बख़्श दूंगा, मेरे बन्दो ! वापस जाओ तुम्हारी मग़्फ़िरत हो गई और उस की जिस की तुम शफ़ाअ़त करो ।

और जमरों पर रमी करने में हर कंकरी पर एक ऐसा कबीरा मिटा दिया जाएगा जो हलाक करने वाला है और क़ुरबानी करना तेरे रब के हुज़ूर तेरे लिये ज़ख़ीरा है और सर मुंडाने में हर बाल के बदले में ह़सना लिखा जाएगा और एक गुनाह मिटाया जाएगा, इस के बाद ख़ानए काबा के त़वाफ़ का येह ह़ाल है कि तू त़वाफ़ कर रहा है और तेरे लिये कुछ गुनाह नहीं, एक फ़रिश्ता आएगा और तेरे शानों के दरमियान हाथ रख कर कहेगा कि ज़मानए आइन्दा में अ़मल कर और ज़मानए गुज़श्ता में जो कुछ था मुआ़फ़ कर दिया गया ।''[2]

ह़दीस 21 अबू याला अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो ह़ज के लिये निकला और मर गया, क़ियामत तक उस के लिये ह़ज करने वाले का सवाब लिखा जाएगा और जो उ़मरह के लिये निकला और मर गया उस के लिये क़ियामत तक उ़मरह करने वाले का सवाब लिखा जाएगा और जो जंग में गया और मर गया उस के लिये क़ियामत तक ग़ाज़ी का सवाब लिखा जाएगा ।''[3]

ह़दीस 22 त़बरानी व अबू याला व दारे क़ुत़नी व बैहक़ी उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''जो इस राह में ह़ज या

1...इस को त़वाफ़े ज़ियारत भी कहते हैं ।

2 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب فى الحج و العمرة... إلخ، الحديث: ٣٢، ج٢، ص١١٠.

3 ..... "مسند أبي يعلى"، مسند أبي هريرة رضى الله عنه، الحديث: ٦٣٢٧، ج٥، ص٤٤١.

www.dawateislami.net

उ़मरह के लिये निकला और मर गया उस की पेशी नहीं होगी, न हिसाब होगा और उस से कहा जाएगा : तू जन्नत में दाख़िल हो जा।"[1]

ह़दीस 23 त़बरानी जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह घर इस्लाम के सुतूनों में से एक सुतून है, फिर जिस ने ह़ज किया या उ़मरह वोह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के ज़मान में है अगर मर जाएगा तो **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और घर को वापस कर दे तो अज्र व ग़नीमत के साथ वापस करेगा।"[2]

ह़दीस 24 व 25 दारिमी अबी उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिसे ह़ज करने से न ह़ाजते ज़ाहिरा मानेअ़ हुई, न बादशाहे ज़ालिम, न कोई ऐसा मरज़ जो रोक दे, फिर बग़ैर ह़ज किये मर गया तो चाहे यहूदी हो कर मरे या नसरानी हो कर।"[3] इसी की मिस्ल तिरमिज़ी ने अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की।

ह़दीस 26 तिरमिज़ी व इब्ने माजह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी, एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : क्या चीज़ ह़ज को वाजिब करती है ? फ़रमाया : "तोशा और सुवारी।"[4]

ह़दीस 27 शर्ह़े सुन्नत में इन्हीं से मरवी किसी ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! ह़ाजी को कैसा होना चाहिये ? फ़रमाया : परागन्दा सर, मैला कुचैला। दूसरे ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! ह़ज का कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : "बुलन्द आवाज़ से लब्बैक कहना और क़ुरबानी करना।" किसी और ने अ़र्ज़ की, सबील क्या है ? फ़रमाया : "तोशा और सुवारी।"[5]

ह़दीस 28 अबू दावूद व इब्ने माजह उम्मुल मुअमिनीन उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रावी कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना : "जो मस्जिदे अक़्सा से मस्जिदे ह़राम तक ह़ज या उ़मरह का एह़राम बांध कर आया, उस के अगले और पिछले गुनाह सब बख़्श दिये जाएंगे या उस के लिये जन्नत वाजिब होगी।"[6]

मसाइले फ़िक़्हिय्या

ह़ज नाम है एह़राम बांध कर नवीं ज़ुल ह़िज्जा को अ़रफ़ात में ठहरने और काबए मुअ़ज़्ज़मा के त़वाफ़ का और इस के लिये एक ख़ास वक़्त मुक़र्रर है कि इस में येह अफ़्आ़ल

1 ..... "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٥٣٨٨، ج٤، ص١١١.
2 ..... "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٩٠٣٣، ج٦، ص٣٥٢.
3 ..... "سنن الدارمي"، كتاب المناسك، باب من مات ولم يحجّ، الحديث: ١٧٨٥، ج٢، ص٤٥.
4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء فى ايجاب الحج بالزاد و الراحلة، الحديث: ٨١٣، ج٢، ص٢١٩.
5 ..... "شرح السنة" للبغوي، كتاب الحج، باب وجوب الحج ...إلخ، الحديث: ١٨٤٠، ج٤، ص٩.
6 ..... "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، باب فى المواقيت، الحديث: ١٧٤١، ج٢، ص٢٠١.

www.dawateislami.net

किये जाएं तो ह़ज है। सिने 9 हिजरी में फ़र्ज़ हुवा, इस की फ़र्ज़िय्यत क़त्ई है, जो इस की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करे काफ़िर है मगर उ़म्र भर में सिर्फ़ एक बार फ़र्ज़ है।[1] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 1 दिखावे के लिये ह़ज करना और माले ह़राम से ह़ज को जाना ह़राम है। ह़ज को जाने के लिये जिस से इजाज़त लेना वाजिब है बग़ैर उस की इजाज़त के जाना मक्रूह है मसलन मां बाप अगर उस की ख़िदमत के मोह़ताज हों और मां बाप न हों तो दादा दादी का भी येही हुक्म है। येह ह़ज्जे फ़र्ज़ का हुक्म है और नफ़्ल हो तो मुत़्लक़न वालिदैन की इत़ाअ़त करे।[2] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 2 लड़का ख़ूबसूरत अम्रद हो तो जब तक दाढ़ी न निकले, बाप उसे जाने से मन्अ़ कर सकता है।[3] (درمختار)

मस्अला 3 जब ह़ज के लिये जाने पर क़ादिर हो, ह़ज फ़ौरन फ़र्ज़ हो गया यानी उसी साल में और अब ताख़ीर गुनाह है और चन्द साल तक न किया तो फ़ासिक़ है और उस की गवाही मरदूद मगर जब करेगा अदा ही है क़ज़ा नहीं।[4] (درمختار)

मस्अला 4 माल मौजूद था और ह़ज न किया फिर वोह माल तलफ़ हो गया, तो क़र्ज़ ले कर जाए अगर्चे जानता हो कि येह क़र्ज़ अदा न होगा मगर निय्यत येह हो कि **अल्लाह** तआ़ला कुदरत देगा तो अदा कर दूंगा। फिर अगर अदा न हो सका और निय्यत अदा की थी तो उम्मीद है कि मौला عَزَّوَجَلَّ उस पर मुआख़ज़ा न फ़रमाए।[5] (درمختار)

मस्अला 5 ह़ज का वक़्त शव्वाल से दसवीं ज़ुल ह़िज्जा तक[6] है कि इस से पेश्तर[7] ह़ज के अफ़्आ़ल नहीं हो सकते, सिवा एह़राम के कि एह़राम इस से पहले भी हो सकता है अगर्चे मक्रूह है।[8] (درمختار، ردالمحتار)

ह़ज वाजिब होने के शराइत़

मस्अला 6 ह़ज वाजिब होने की आठ शर्तें हैं, जब तक वोह सब न पाई जाएं ह़ज फ़र्ज़ नहीं :

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته ...إلخ، ج١، ص٢١٦.
و"الدرالمختار"معه"ردالمحتار"، كتاب الحج، ج٣، ص٥١٦-٥١٨.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥١٩.
3 ..... "الدرالمختار" كتاب الحج، ج٣، ص٥٢٠.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٥٢٠.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٥٢١.

6 ...यानी दो महीने और दस दिन तक। 7 ...पहले।

8 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٥٤٣.

www.dawateislami.net

(1) इस्लाम

लिहाज़ा अगर मुसलमान होने से पेशतर इस्तिता़अ़त थी फिर फ़क़ीर हो गया और इस्लाम लाया तो ज़मानए कुफ़्र की इस्तिता़अ़त की बिना पर इस्लाम लाने के बाद ह़ज फ़र्ज़ न होगा कि जब इस्तिता़अ़त थी इस का अह्ल न था और अब कि अह्ल हुवा इस्तिता़अ़त नहीं और मुसलमान को अगर इस्तिता़अ़त थी और ह़ज न किया था अब फ़क़ीर हो गया तो अब भी फ़र्ज़ है ।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 7 ह़ज करने के बाद مَعَاذَاللہ मुरतद हो गया[2] फिर इस्लाम लाया तो अगर इस्तिता़अ़त हो तो फिर ह़ज करना फ़र्ज़ है कि मुरतद होने से ह़ज वग़ैरा सब आमाल बातिल हो गए ।[3] (عالمگیری) यूंही अगर अस्नाए ह़ज[4] में मुरतद हो गया तो एह़राम बातिल हो गया और अगर काफ़िर ने एह़राम बांधा था, फिर इस्लाम लाया तो अगर फिर से एह़राम बांधा और ह़ज किया तो होगा वरना नहीं ।

(2) दारुल ह़र्ब में हो तो येह भी ज़रूरी है कि जानता हो कि इस्लाम के फ़राइज़ में ह़ज है ।

लिहाज़ा जिस वक़्त इस्तिता़अ़त थी येह मस्अला मालूम न था और जब मालूम हुवा उस वक़्त इस्तिता़अ़त न हो तो फ़र्ज़ न हुवा और जानने का ज़रीआ़ येह है कि दो मर्दों या एक मर्द और दो औ़रतों ने जिन का फ़ासिक़ होना ज़ाहिर न हो, उसे ख़बर दें और एक आ़दिल ने ख़बर दी, जब भी वाजिब हो गया और दारुल इस्लाम में है तो अगर्चे ह़ज फ़र्ज़ होना मालूम न हो फ़र्ज़ हो जाएगा कि दारुल इस्लाम में फ़राइज़ का इ़ल्म न होना उ़ज़्र नहीं ।[5] (عالمگیری)

(3) बुलूग़

ना बालिग़ ने ह़ज किया यानी अपने आप जब कि समझवाल[6] हो या उस के वली ने उस की त़रफ़ से एह़राम बांधा हो जब कि ना समझ हो, बहर ह़ाल वोह ह़ज नफ़्ल हुवा, हिज्जतुल इस्लाम यानी ह़ज्जे फ़र्ज़ के क़ाइम मक़ाम नहीं हो सकता ।

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥٢١.

2 ...मुरतद वोह शख़्स है कि इस्लाम के बाद किसी ऐसे अम्र का इन्कार करे जो ज़रूरिय्याते दीन से हो यानी ज़बान से कलिमए कुफ़्र बके जिस में तावीले सह़ीह़ की गुन्जाइश न हो । यूंही बाज़ अफ़्आ़ल भी ऐसे हैं जिन से काफ़िर हो जाता है मसलन बुत को सज्दा करना, मुस्ह़फ़ शरीफ़ को नजासत की जगह फेंक देना ।

नोट : तफ़्सीली मालूमात के लिये बहारे शरीअ़त हिस्सा 9, ''मुरतद का बयान'' का मुत़ालआ़ फ़रमाएं ।

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.

4 ...यानी ह़ज के दौरान ।

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٨.

6 ...समझदार ।

www.dawateislami.net

मस्अला 8 ना बालिग़ ने ह़ज का एह़राम बांधा और वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पेश्तर बालिग़ हो गया तो अगर इसी पहले एह़राम पर रह गया ह़ज नफ़्ल हुवा ह़िज्जतुल इस्लाम न हुवा और अगर सिरे से एह़राम बांध कर वुक़ूफ़े अ़रफ़ा किया तो ह़िज्जतुल इस्लाम हुवा।[1] (عالمگیری)

(4) आ़क़िल होना

मजनून पर फ़र्ज़ नहीं।

मस्अला 9 मजनून था और वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पहले जुनून जाता रहा और नया एह़राम बांध कर ह़ज किया तो येह ह़ज ह़िज्जतुल इस्लाम हो गया वरना नहीं। बोहरा भी मजनून के हुक्म में है।[2] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 10 ह़ज करने के बाद मजनून हुवा फिर अच्छा हुवा तो इस जुनून का ह़ज पर कोई असर नहीं यानी अब उसे दोबारा ह़ज करने की ज़रूरत नहीं, अगर एह़राम के वक़्त अच्छा था फिर मजनून हो गया और इसी ह़ालत में अफ़्आ़ल अदा किये फिर बरसों के बाद होश में आया तो ह़ज्जे फ़र्ज़ अदा हो गया।[3] (منسک)

(5) आज़ाद होना

बांदी ग़ुलाम पर ह़ज फ़र्ज़ नहीं अगर्चे मुदब्बर या मुकातब या उम्मे वलद[4] हों। अगर्चे उन के मालिक ने ह़ज करने की इजाज़त दे दी हो अगर्चे वोह मक्के ही में हों।[5]

मस्अला 11 ग़ुलाम ने अपने मौला के साथ ह़ज किया तो येह ह़ज्जे नफ़्ल हुवा ह़िज्जतुल इस्लाम न हुवा। आज़ाद होने के बाद अगर शराइत़ पाए जाएं तो फिर करना होगा और अगर मौला के साथ ह़ज को जाता था, रास्ते में उस ने आज़ाद कर दिया तो अगर एह़राम से पहले आज़ाद हुवा, अब एह़राम बांध कर ह़ज किया तो ह़िज्जतुल इस्लाम अदा हो गया और एह़राम बांधने के बाद आज़ाद हुवा तो ह़िज्जतुल इस्लाम न होगा, अगर्चे नया एह़राम बांध कर ह़ज

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.
و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٥٣٥.

3 ..... "لباب المناسك" للسندی و "المسلك المتقسط فی المنسك المتوسط" للقاری، (باب شرائط الحج)، ص٣٩.

4 ...**मुदब्बर :** यानी वोह ग़ुलाम जिस की निस्बत मौला ने कहा कि तू मेरे मरने के बाद आज़ाद है।
मुकातब : यानी वोह ग़ुलाम जिस का आक़ा माल की एक मिक़्दार मुक़र्रर कर के येह कह दे कि इतना अदा कर दे तो आज़ाद है और ग़ुलाम इसे क़बूल भी कर ले।
उम्मे वलद : यानी वोह लौंडी जिस के बच्चा पैदा हुवा और मौला ने इक़रार किया कि येह मेरा बच्चा है।
नोट : तफ़्सीली मालूमात के लिये देखें : बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 9, मुदब्बर, मुकातब और उम्मे वलद का बयान।

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.

www.dawateislami.net

किया हो ।[1] (عالمگیری)

(6) तन्दुरुस्त हो

कि ह़ज को जा सके, आज़ा सलामत हों, अंख्यारा हो, अपाहज और फ़ालिज वाले और जिस के पाउं कटे हों और बूढ़े पर कि सुवारी पर खुद न बैठ सकता हो, ह़ज फ़र्ज़ नहीं । यूंही अन्धे पर भी वाजिब नहीं अगर्चे हाथ पकड़ कर ले चलने वाला उसे मिले । इन सब पर येह भी वाजिब नहीं कि किसी को भेज कर अपनी त़रफ़ से ह़ज करा दें या वसिय्यत कर जाएं और अगर तक्लीफ़ उठा कर ह़ज कर लिया तो सह़ीह़ हो गया और ह़िज्जतुल इस्लाम अदा हुवा यानी इस के बाद अगर आज़ा दुरुस्त हो गए तो अब दोबारा ह़ज फ़र्ज़ न होगा वोही पहला ह़ज काफ़ी है ।[2] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 12 अगर पहले तन्दुरुस्त था और दीगर शराइत़ भी पाए जाते थे और ह़ज न किया फिर अपाहज वग़ैरा हो गया कि ह़ज नहीं कर सकता तो उस पर वोह ह़ज्जे फ़र्ज़ बाक़ी है । ख़ुद न कर सके तो ह़ज्जे बदल कराए ।[3] (عالمگیری وغیرہ)

(7) सफ़र ख़र्च का मालिक हो और सुवारी पर क़ादिर हो

ख़्वाह सुवारी उस की मिल्क हो या उस के पास इतना माल हो कि किराए पर ले सके।

मस्अला 13 किसी ने ह़ज के लिये उस को इतना माल मुबाह़ कर दिया कि ह़ज कर ले तो ह़ज फ़र्ज़ न हुवा कि इबाह़त से मिल्क नहीं होती और फ़र्ज़ होने के लिये मिल्क दरकार है, ख़्वाह मुबाह़ करने वाले का उस पर एह़सान हो जैसे ग़ैर लोग या न हो जैसे मां बाप औलाद। यूंही अगर आ़रियतन[4] सुवारी मिल जाएगी जब भी फ़र्ज़ नहीं ।[5] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 14 किसी ने ह़ज के लिये माल हिबा किया तो क़बूल करना उस पर वाजिब नहीं । देने वाला अजनबी हो या मां बाप, औलाद वग़ैरा मगर क़बूल कर लेगा तो ह़ज वाजिब हो जाएगा ।[6] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 15 सफ़र ख़र्च और सुवारी पर क़ादिर होने के येह माना हैं कि येह चीज़ें उस की ह़ाजत से फ़ाज़िल हों यानी मकान व लिबास व ख़ादिम और सुवारी का जानवर और पेशे के औज़ार और ख़ानादारी के सामान और दैन से इतना ज़ाइद हो कि सुवारी पर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जाए और वहां से सुवारी पर वापस आए और जाने से वापसी तक अ़याल का

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٨، وغيره.
3 ..... المرجع السابق.
4 ...आरिय्यतन यानी आरिज़ी तौर पर दी हुई चीज़ ।
5 ..... المرجع السابق، ص٢١٧. 6 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

नफ़क़ा और मकान की मरम्मत के लिये काफ़ी माल छोड़ जाए और जाने आने में अपने नफ़क़े और घर अहलो अ़याल के नफ़क़े में क़दरे मुतवस्सित़ का एतिबार है, न कमी हो न इसराफ़। अ़याल से मुराद वोह लोग हैं जिन का नफ़क़ा उस पर वाजिब है, येह ज़रूरी नहीं कि आने के बाद भी वहां और यहां के ख़र्च के बाद कुछ बाक़ी बचे।[1] (درمختار، عالمگیری)

मस्अला 16 सुवारी से मुराद इस क़िस्म की सुवारी है जो उ़र्फ़न और आ़दतन उस शख़्स के ह़ाल के मुवाफ़िक़ हो, मसलन अगर मुतमव्विल[2] आराम पसन्द हो तो उस के लिये शक़्दफ़[3] दरकार होगा। यूंही तोशे में उस के मुनासिब ग़िज़ाएं चाहिये, मामूली खाना मुयस्सर आना फ़र्ज़ होने के लिये काफ़ी नहीं, जब कि वोह अच्छी ग़िज़ा का आ़दी है।[4] (منسک)

मस्अला 17 जो लोग ह़ज को जाते हैं, वोह दोस्त अह़बाब के लिये तोह़फ़ा लाया करते हैं येह ज़रूरिय्यात में नहीं यानी अगर किसी के पास इतना माल है कि जो ज़रूरिय्यात बताए गए उन के लिये और आने जाने के अख़राजात के लिये काफ़ी है मगर कुछ बचेगा नहीं कि अह़बाब वग़ैरा के लिये तोह़फ़ा लाए जब भी ह़ज फ़र्ज़ है, इस की वज्ह से ह़ज न करना ह़राम है।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 18 जिस की बसरे अवक़ात तिजारत पर है और इतनी ह़ैसिय्यत हो गई कि उस में से अपने जाने आने का ख़र्च और वापसी तक बाल बच्चों की ख़ूराक निकाल ले तो इतना बाक़ी रहेगा जिस से अपनी तिजारत ब क़दर अपनी गुज़र के कर सके तो ह़ज फ़र्ज़ है वरना नहीं और अगर वोह काश्तकार है तो इन सब अख़राजात के बाद इतना बचे कि खेती के सामान हल बैल वग़ैरा के लिये काफ़ी हो तो ह़ज फ़र्ज़ है और पेशे वालों के लिये उन के पेशे के सामान के लाइक़ बचना ज़रूरी है।[6] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 19 सुवारी में येह भी शर्त़ है कि ख़ास उस के लिये हो अगर दो शख़्सों में मुश्तरक है कि बारी बारी दोनों थोड़ी थोड़ी दूर सुवार होते हैं तो येह सुवारी पर क़ुदरत नहीं और ह़ज फ़र्ज़ नहीं। यूंही अगर इतनी क़ुदरत है कि एक मन्ज़िल के लिये मसलन

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.

2 ...मालदार।

3 ...**शक़्दफ़ :** यानी दो चारपाइयां जो ऊंट के दोनों त़रफ़ लटकाते हैं, हर एक में एक शख़्स बैठता है।

4 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب شرائط الحج)، ص٤٦، ٤٧.

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥٢٨.

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٨.

www.dawateislami.net

किराए पर जानवर ले फिर एक मन्ज़िल पैदल चले وَعَلٰی هٰذَا الْقِیاس [1] तो येह सुवारी पर कुदरत नहीं।[2] (عالمگیری)

आज कल जो शक्दफ़ और शबरी का रवाज है कि एक शख़्स एक त़रफ़ सुवार होता है और दूसरा दूसरी त़रफ़ अगर यूं दो शख़्सों में मुश्तरक हो तो ह़ज फ़र्ज़ होगा कि सुवारी पर कुदरत पाई गई और पैदल चलना न पड़ा।[3] (منسک)

मस्अला 20 मक्कए मुअ़ज़्ज़मा या मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से तीन दिन से कम की राह वालों के लिये सुवारी शर्त़ नहीं, अगर पैदल चल सकते हों तो उन पर ह़ज फ़र्ज़ है अगर्चे सुवारी पर क़ादिर न हों और अगर पैदल न चल सकें तो उन के लिये भी सुवारी पर कुदरत शर्त़ है।[4] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 21 मीक़ात से बाहर का रहने वाला जब मीक़ात तक पहुंच जाए और पैदल चल सकता हो तो सुवारी उस के लिये शर्त़ नहीं, लिहाज़ा अगर फ़क़ीर हो जब भी उसे ह़ज्जे फ़र्ज़ की निय्यत करनी चाहिये नफ़्ल की निय्यत करेगा तो उस पर दोबारा ह़ज करना फ़र्ज़ होगा और मुत़्लक़ ह़ज की निय्यत की यानी फ़र्ज़ या नफ़्ल कुछ मुअ़य्यन न किया तो फ़र्ज़ अदा हो गया।[5] (منسک، ردالمحتار)

मस्अला 22 इस की ज़रूरत नहीं कि महमिल वग़ैरा आराम की सुवारियों का किराया इस के पास हो, बल्कि अगर कजावे पर बैठने का किराया पास है तो ह़ज फ़र्ज़ है। हां, अगर कजावे पर बैठ न सकता हो तो महमिल वग़ैरा के किराए से कुदरत साबित होगी।[6] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 23 मक्के और मक्के से क़रीब वालों को सुवारी की ज़रूरत हो तो ख़च्चर या गधे के किराए पर क़ादिर होने से भी सुवारी पर कुदरत हो जाएगी, अगर उस पर सुवार हो सकें ब ख़िलाफ़ दूर वालों के कि उन के लिये ऊंट का किराया ज़रूरी है कि दूर वालों के लिये ख़च्चर वग़ैरा सुवार होने और सामान लादने के लिये काफ़ी नहीं और येह फ़र्क़ हर जगह मल्ह़ूज़ रहना चाहिये।[7] (ردالمحتار)

---

1 ...और इसी पर क़ियास कर लीजिये।

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.

3 ..... "مناسك ملا علي قاري"،باب شرائط الحج،ص٤١.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.
و "ردالمحتار"، كتاب الحج، فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥٢٥.

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج،مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥٢٥.

6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج،مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥٢٥.

7 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥٢٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 24 पैदल की त़ाक़त हो तो पैदल ह़ज करना अफ़्ज़ल है। ह़दीस में है : "जो पैदल ह़ज करे, उस के लिये हर क़दम पर सात सौ[700] नेकियां हैं।"[1] (ردالمحتار)

मस्अला 25 फ़क़ीर ने पैदल ह़ज किया फिर मालदार हो गया तो उस पर दूसरा ह़ज फ़र्ज़ नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 26 इतना माल है कि उस से ह़ज कर सकता है मगर उस माल से निकाह़ करना चाहता है तो निकाह़ न करे बल्कि ह़ज करे कि ह़ज फ़र्ज़ है यानी जब कि ह़ज का ज़माना आ गया हो और अगर पहले निकाह़ में ख़र्च कर डाला और मुजर्रद रहने[3] में ख़ौफ़े मअ़्सियत था तो ह़रज नहीं।[4] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 27 रहने का मकान और ख़िदमत का ग़ुलाम और पहनने के कपड़े और बरत्ने के अस्बाब हैं तो ह़ज फ़र्ज़ नहीं यानी लाज़िम नहीं कि उन्हें बेच कर ह़ज करे और अगर मकान है मगर उस में रहता नहीं ग़ुलाम है मगर उस से ख़िदमत नहीं लेता तो बेच कर ह़ज करे और अगर उस के पास न मकान है न ग़ुलाम वग़ैरा और रुपिया है जिस से ह़ज कर सकता है मगर मकान वग़ैरा ख़रीदने का इरादा है और ख़रीदने के बाद ह़ज के लाइक़ न बचेगा तो फ़र्ज़ है कि ह़ज करे और बातों में उठाना गुनाह है यानी उस वक़्त कि उस शह़र वाले ह़ज को जा रहे हों और अगर पहले मकान वग़ैरा ख़रीदने में उठा दिया तो ह़रज नहीं।[5] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 28 कपड़े जिन्हें इस्तिमाल में नहीं लाता उन्हें बेच डाले तो ह़ज कर सकता है तो बेचे और ह़ज करे और अगर मकान बड़ा है जिस के एक ह़िस्से में रहता है बाक़ी फ़ाज़िल पड़ा है तो येह ज़रूरी नहीं कि फ़ाज़िल को बेच कर ह़ज करे।[6] (عالمگیری)

मस्अला 29 जिस मकान में रहता है अगर उसे बेच कर उस से कम हैसिय्यत का ख़रीद ले तो इतना रुपिया बचेगा कि ह़ज कर ले तो बेचना ज़रूरी नहीं मगर ऐसा करे तो अफ़्ज़ल है, लिहाज़ा मकान बेच कर ह़ज करना और किराए के मकान में गुज़र करना तो ब दरजए औला ज़रूरी नहीं।[7] (عالمگیری،درمختار)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥٢٦.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.
3 ...यानी शादी न करने।
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧. و"الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٥٢٨.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٧-٢١٨.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٨.

www.dawateislami.net

मस्अला 30 जिस के पास साल भर के ख़र्च का ग़ल्ला हो तो येह लाज़िम नहीं कि बेच कर ह़ज को जाए और इस से ज़ाइद है तो अगर ज़ाइद के बेचने में ह़ज का सामान हो सकता है तो फ़र्ज़ है वरना नहीं।[1] (منسک)

मस्अला 31 दीनी किताबें अगर अहले इ़ल्म के पास हैं जो उस के काम में रहती हैं तो उन्हें बेच कर ह़ज करना ज़रूरी नहीं और बे इ़ल्म के पास हों और इतनी हैं कि बेचे तो ह़ज कर सकेगा तो उस पर ह़ज फ़र्ज़ है। यूंही तिब और रियाज़ी वग़ैरा की किताबें अगर्चे काम में रहती हों अगर इतनी हों कि बेच कर ह़ज कर सकता है तो ह़ज फ़र्ज़ है।[2] (عالمگیری، ردالمحتار)

(8) वक़्त

यानी ह़ज के महीनों में तमाम शराइत़ पाए जाएं और अगर दूर का रहने वाला हो तो जिस वक़्त वहां के लोग जाते हों उस वक़्त शराइत़ पाए जाएं और अगर शराइत़ ऐसे वक़्त पाए गए कि अब नहीं पहुंचेगा तो फ़र्ज़ न हुवा। यूंही अगर आ़दत के मुवाफ़िक़ सफ़र करे तो नहीं पहुंचेगा और तेज़ी और रवा रवी[3] कर के जाए तो पहुंच जाएगा जब भी फ़र्ज़ नहीं और येह भी ज़रूरी है कि नमाज़ें पढ़ सके, अगर इतना वक़्त है कि नमाज़ें वक़्त में पढ़ेगा तो न पहुंचेगा और न पढ़े तो पहुंच जाएगा तो फ़र्ज़ नहीं।[4] (ردالمحتار)

वुजूबे अदा के शराइत़

यहां तक वुजूब के शराइत़ का बयान हुवा और शराइते़ अदा कि वोह पाए जाएं तो ख़ुद ह़ज को जाना ज़रूरी है और सब न पाए जाएं तो ख़ुद जाना ज़रूरी नहीं बल्कि दूसरे से ह़ज करा सकता है या वसिय्यत कर जाए मगर इस में येह भी ज़रूरी है कि ह़ज कराने के बाद आख़िरी उ़म्र तक ख़ुद क़ादिर न हो वरना ख़ुद भी करना ज़रूरी होगा। वोह शराइत़ येह हैं :

(1) रास्ते में अम्न होना यानी अगर ग़ालिब गुमाने सलामती हो तो जाना वाजिब और ग़ालिब गुमान येह हो कि डाके वग़ैरा से जान ज़ाएअ़ हो जाएगी तो जाना ज़रूरी नहीं, जाने के ज़माने में अम्न होना शर्त़ है पहले की बद अम्नी क़ाबिले लिह़ाज़ नहीं।[5] (ردالمحتار، عالمگیری)

1 ..... "لباب المناسك" للسندی، "المسلك المتقسط في المنسك المتوسط" للقاری، (باب شرائط الحج)، ص٤٥.

2 ..... "الفتاوی الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٨. و"ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥٢٨.

3 ...यानी जल्दी।

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٥٣٤.

5 ..... المرجع السابق، ص٥٣٠. و"الفتاوی الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول، ج١، ص٢١٨.

www.dawateislami.net

मस्अला 32 अगर बद अम्नी के ज़माने में इन्तिक़ाल हो गया और वुजूब की शर्तें पाई जाती थीं तो ह़ज्जे बदल की वसिय्यत ज़रूरी है और अम्न क़ाइम होने के बाद इन्तिक़ाल हुवा तो ब त़रीक़े औला वसिय्यत वाजिब है।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 33 अगर अम्न के लिये कुछ रिश्वत देना पड़े जब भी जाना वाजिब है और येह अपने फ़राइज़ अदा करने के लिये मजबूर है लिहाज़ा इस देने वाले पर मुआख़ज़ा नहीं।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 34 रास्ते में चुंगी वग़ैरा लेते हों तो येह अम्न के मुनाफ़ी नहीं और न जाने के लिये उ़ज़्र नहीं।[3] (درمختار) यूंही टीका कि आज कल ह़ुज्जाज को लगाए जाते हैं येह भी उ़ज़्र नहीं।

(2) औ़रत को मक्के तक जाने में तीन दिन या ज़ियादा का रास्ता हो तो उस के हमराह शौहर या मह़रम होना शर्त़ है, ख़्वाह वोह औ़रत जवान हो या बुढ़िया और तीन दिन से कम की राह हो तो बग़ैर मह़रम और शौहर के भी जा सकती है।[4]

मह़रम से मुराद वोह मर्द है जिस से हमेशा के लिये उस औ़रत का निकाह़ ह़राम है, ख़्वाह नसब की वज्ह से निकाह़ ह़राम हो, जैसे बाप, बेटा, भाई वग़ैरा या दूध के रिश्ते से निकाह़ की हुर्मत हो, जैसे रज़ाई भाई, बाप, बेटा वग़ैरा या सुसराली रिश्ते से हुर्मत आई, जैसे ख़ुसर, शौहर का बेटा वग़ैरा।

शौहर या मह़रम जिस के साथ सफ़र कर सकती है उस का आ़क़िल बालिग़ ग़ैरे फ़ासिक़ होना शर्त़ है। मजनून या ना बालिग़ या फ़ासिक़ के साथ नहीं जा सकती, आज़ाद या

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٥٣٠.
2 ..... "الدرالمختار" و"ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٥٣٠.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٥٣١.

4 ...येह ज़ाहिरुर्रिवायह है। मगर मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْبَارِى "المسلك المتقسط فى المنسك المتوسط" सफ़ह़ा 57 पर तह़रीर फ़रमाते हैं :

इमाम अबू ह़नीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ رَحِمَهُمَا اللهُ تَعَالٰى से औ़रत को बग़ैर शौहर या मह़रम के **एक दिन** का सफ़र करने की कराहिय्यत भी मरवी है। फ़ितना व फ़साद के ज़माने की वज्ह से इसी क़ौल (एक दिन) पर फ़तवा देना चाहिये। ("المسلك المتقسط"، ص٥٧. "ردالمحتار"، كتاب الحج، ج٣، ص٥٣٣)

आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : औ़रत को बग़ैर शौहर या मह़रम के साथ लिये सफ़र को जाना ह़राम है, इस में कुछ ह़ज की ख़ुसूसिय्यत नहीं, कहीं **एक दिन** के रास्ते पर बग़ैर शौहर या मह़रम जाएगी तो गुनाहगार होगी। (فتاوی رضویه، كتاب الحج، ج١٠ ص٦٥٧)

बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 4, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, सफ़ह़ा 101 पर है कि औ़रत को बग़ैर मह़रम के तीन दिन या ज़ियादा की राह जाना ना जाइज़ है बल्कि **एक दिन** की राह जाना भी। (عالمگیری وغیرہ) लिहाज़ा इसी पर अ़मल करना चाहिये।

www.dawateislami.net

मुसलमान होना शर्त़ नहीं, अलबत्ता मजूसी जिस के एतिक़ाद में मह़ारिम से निकाह़ जाइज़ है उस के हमराह सफ़र नहीं कर सकती। मुराहिक़ व मुराहिक़ा यानी लड़का और लड़की जो बालिग़ होने के क़रीब हों बालिग़ के हुक्म में हैं यानी मुराहिक़ के साथ जा सकती है और मुराहिक़ा को भी बग़ैर मह़रम या शौहर के सफ़र की मुमानअ़त है।[1] (جوہرہ، عالمگیری، درمختار)

मस्अला 35 औ़रत का गुलाम उस का मह़रम नहीं कि उस के साथ निकाह़ की हुरमत हमेशा के लिये नहीं कि अगर आज़ाद कर दे तो उस से निकाह़ कर सकती है।[2] (جوہرہ)

मस्अला 36 बांदियों को बग़ैर मह़रम के सफ़र जाइज़ है।[3] (جوہرہ)

मस्अला 37 अगर्चे ज़िना से भी हुरमते निकाह़ साबित होती है मसलन जिस औ़रत से مَعَاذَاللہ ज़िना किया उस की लड़की से निकाह़ नहीं कर सकता मगर उस लड़की को इस के साथ सफ़र करना जाइज़ नहीं।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 38 औ़रत बग़ैर मह़रम या शौहर के ह़ज को गई तो गुनहगार हुई, मगर ह़ज करेगी तो ह़ज हो जाएगा यानी फ़र्ज़ अदा हो जाएगा।[5] (جوہرہ)

मस्अला 39 औ़रत के न शौहर है न मह़रम तो उस पर येह वाजिब नहीं कि ह़ज के जाने के लिये निकाह़ कर ले और जब मह़रम है तो ह़ज्जे फ़र्ज़ के लिये मह़रम के साथ जाए अगर्चे शौहर इजाज़त न देता हो। नफ़्ल और मन्नत का ह़ज हो तो शौहर को मन्अ़ करने का इख़्तियार है।[6] (جوہرہ)

मस्अला 40 मह़रम के साथ जाए तो उस का नफ़्क़ा औ़रत के ज़िम्मे है, लिहाज़ा अब येह शर्त़ है कि अपने और उस के दोनों के नफ़्क़े पर क़ादिर हो।[7] (درمختار، ردالمحتار)

(3) जाने के ज़माने में औ़रत इद्दत में न हो, वोह इद्दत वफ़ात की हो या त़लाक़ की,

---

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، ص١٩٣. و"الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٥٣١.
و"الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الأول في تفسير الحج و فرضيته... إلخ، ج١، ص٢١٨-٢١٩.

2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، ص١٩٣.

3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، ص١٩٣. **هكذا في الجوهرة النيرة لكن في شرح اللباب والفتوى: على أنه يكره في زماننا.** (انظر: "ردالمحتار"، كتاب الحج، ج٣، ص٥٣٢).

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٥٣١.

5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، ص١٩٣.

6 ..... المرجع السابق.

7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٥٣٢.

www.dawateislami.net

बाइन की हो या रज्ई की ।[1]

(4) क़ैद में न हो, मगर जब किसी ह़क़ की वज्ह से क़ैद में हो और उस के अदा करने पर क़ादिर हो तो येह उ़ज़्र नहीं और बादशाह अगर ह़ज के जाने से रोकता हो तो येह उ़ज़्र है ।[2] (درمختار،ردالمحتار)

सिह्हते अदा के शराइत

सिह्हते अदा के लिये नव शर्तें हैं कि वोह न पाई जाएं तो ह़ज सह़ीह़ नहीं ।

(1) इस्लाम, काफ़िर ने ह़ज किया तो न हुवा ।

(2) एह़राम, बग़ैर एह़राम ह़ज नहीं हो सकता ।

(3) ज़मान, यानी ह़ज के लिये जो ज़माना मुक़र्रर है उस से क़ब्ल अफ़्आ़ले ह़ज नहीं हो सकते, मसलन त़वाफ़े क़ुदूम व सई कि ह़ज के महीनों से क़ब्ल नहीं हो सकते और वुक़ूफ़े अ़रफ़ा नवीं के ज़वाल से क़ब्ल या दसवीं की सुब्ह़ होने के बाद नहीं हो सकता और त़वाफ़े ज़ियारत दसवीं से क़ब्ल नहीं हो सकता ।

(4) मकान, त़वाफ़ की जगह मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ है और वुक़ूफ़ के लिये अ़रफ़ात व मुज़्दलिफ़ा, कंकरी मारने के लिये मिना, क़ुरबानी के लिये ह़रम, यानी जिस फ़ेल के लिये जो जगह मुक़र्रर है वोह वहीं होगा ।

(5) तमीज़ ।

(6) अ़क़्ल, जिस में तमीज़ न हो जैसे ना समझ बच्चा या जिस में अ़क़्ल न हो जैसे मजनून । येह ख़ुद वोह अफ़्आ़ल नहीं कर सकते जिन में निय्यत की ज़रूरत है, मसलन एह़राम या त़वाफ़, बल्कि उन की त़रफ़ से कोई और करे और जिस फ़ेल में निय्यत शर्त़ नहीं, जैसे वुक़ूफ़े अ़रफ़ा वोह येह ख़ुद कर सकते हैं ।

(7) फ़राइज़े ह़ज का बजा लाना मगर जब कि उ़ज़्र हो ।

(8) एह़राम के बाद और वुक़ूफ़ से पहले जिमाअ़ न होना अगर होगा ह़ज बात़िल हो जाएगा ।

(9) जिस साल एह़राम बांधा उसी साल ह़ज करना लिहाज़ा अगर उस साल ह़ज फ़ौत हो गया तो उ़मरह कर के एह़राम खोल दे और साले आइन्दा जदीद एह़राम से ह़ज करे और

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن حج بمال حرام، ج٣، ص٥٣٤.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في قولهم يقدم حق العبد على حق الشرع، ج٣، ص٥٢٤.

www.dawateislami.net

अगर एह़राम न खोला बल्कि उसी एह़राम से ह़ज किया तो ह़ज न हुवा।

ह़ज्जे फ़र्ज़ अदा होने के शराइत़

ह़ज्जे फ़र्ज़ अदा होने के लिये नव शर्तें हैं :

(1) इस्लाम।

(2) मरते वक़्त तक इस्लाम ही पर रहना।

(3) आ़क़िल होना।

(4) बालिग़ होना।

(5) आज़ाद होना।

(6) अगर क़ादिर हो तो ख़ुद अदा करना।

(7) नफ़्ल की निय्यत न होना।

(8) दूसरे की त़रफ़ से ह़ज करने की निय्यत न होना।

(9) फ़ासिद न करना।[1]

इन में बहुत बातों की तफ़्सील मज़्कूर हो चुकी बाज़ की आइन्दा आएगी।

ह़ज के फ़राइज़

मस्अला 41 ह़ज में येह चीज़ें फ़र्ज़ हैं :

(1) एह़राम, कि येह शर्त़ है।

(2) वुक़ूफ़े अ़रफ़ा, यानी नवीं ज़ुल ह़िज्जा के आफ़्ताब ढलने से दसवीं की सुब्ह़े सादिक़ से पेश्तर तक किसी वक़्त अ़रफ़ात में ठहरना।

(3) त़वाफ़े ज़ियारत का अक्सर ह़िस्सा : यानी चार फेरे, पिछली दोनों चीज़ें यानी वुक़ूफ़ व त़वाफ़ रुक्न हैं।

(4) निय्यत।

(5) तरतीब, यानी पहले एह़राम बांधना फिर वुक़ूफ़ फिर त़वाफ़।

(6) हर फ़र्ज़ का अपने वक़्त पर होना, यानी वुक़ूफ़ उस वक़्त होना जो मज़्कूर हुवा इस के बाद त़वाफ़, इस का वक़्त वुक़ूफ़ के बाद से आख़िर उ़म्र तक है।

1 ..... "لباب المناسك" (باب شرائط الحج) ص٦٢.

www.dawateislami.net

(7) मकान यानी वुक़ूफ़ ज़मीने अ़रफ़ात में होना सिवा बत्ने उ़रना के और त़वाफ़ का मकान मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ है।[1] (درمختار، ردالمحتار)

ह़ज के वाजिबात

ह़ज के वाजिबात येह हैं :

(1) मीक़ात से एह़राम बांधना, यानी मीक़ात से बग़ैर एह़राम न गुज़रना और अगर मीक़ात से पहले ही एह़राम बांध लिया तो जाइज़ है।

(2) सफ़ा व मर्वह के दरमियान दौड़ना, इस को सई कहते हैं।

(3) सई को सफ़ा से शुरूअ़ करना, और अगर मर्वह से शुरूअ़ की तो पहला फेरा शुमार न किया जाए, उस का इआ़दा करे।

(4) अगर उ़ज़्र न हो तो पैदल सई करना, सई का त़वाफ़े मोअ़ूतद बिही के बाद यानी कम से कम चार फेरों के बाद होना।

(5) दिन में वुक़ूफ़ किया तो इतनी देर तक वुक़ूफ़ करे कि आफ़्ताब डूब जाए ख़्वाह आफ़्ताब ढलते ही शुरूअ़ किया हो या बाद में, ग़रज़ ग़ुरूब तक वुक़ूफ़ में मश्ग़ूल रहे और अगर रात में वुक़ूफ़ किया तो इस के लिये किसी ख़ास ह़द तक वुक़ूफ़ करना वाजिब नहीं मगर वोह उस वाजिब का तारिक हुवा कि दिन में ग़ुरूब तक वुक़ूफ़ करता।

(6) वुक़ूफ़ में रात का कुछ जुज़ आ जाना।

(7) अ़रफ़ात से वापसी में इमाम की मुताबअ़त करना यानी जब तक इमाम वहां से न निकले येह भी न चले। हां, अगर इमाम ने वक़्त से ताख़ीर की तो उसे इमाम के पहले चला जाना जाइज़ है और अगर भीड़ वग़ैरा किसी ज़रूरत से इमाम के चले जाने के बाद ठहर गया साथ न गया जब भी जाइज़ है।

(8) मुज़्दलिफ़ा में ठहरना।

(9) मग़रिब व इ़शा की नमाज़ का वक़्ते इ़शा में मुज़्दलिफ़ा में आ कर पढ़ना।

(10) तीनों जम्रों पर दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं तीनों दिन कंकरियां मारना यानी दसवीं को सिर्फ़ जम्रतुल अ़क़बा पर और ग्यारहवीं बारहवीं को तीनों पर रमी करना।

(11) जम्रए अ़क़बा की रमी पहले दिन ह़ल्क़ से पहले होना।

(12) हर रोज़ की रमी का उसी दिन होना।

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في فروض الحج و واجباته، ج٣، ص٥٣٦.

www.dawateislami.net

(13) सर मुंडाना या बाल कतरवाना।

(14) और इस का अय्यामे नह्र और

(15) ह़रम शरीफ़ में होना अगर्चे मिना में न हो।

(16) क़िरान और तमत्तोअ़ वाले को क़ुरबानी करना और

(17) इस क़ुरबानी का ह़रम और अय्यामे नह्र में होना।

(18) त़वाफ़े इफ़ाज़ा का अक्सर हिस्सा अय्यामे नह्र में होना। अ़रफ़ात से वापसी के बाद जो त़वाफ़ किया जाता है उस का नाम त़वाफ़े इफ़ाज़ा है और इसे त़वाफ़े ज़ियारत भी कहते हैं। त़वाफ़े ज़ियारत के अक्सर हिस्से से जितना ज़ाइद है यानी तीन फेरे अय्यामे नह्र के ग़ैर में भी हो सकता है।

(19) त़वाफ़ ह़तीम के बाहर से होना।

(20) दहनी त़रफ़ से त़वाफ़ करना यानी काबए मुअ़ज़्ज़मा त़वाफ़ करने वाले की बाईं जानिब हो।

(21) उ़ज़्र न हो तो पाउं से चल कर त़वाफ़ करना, यहां तक कि अगर घिसटते हुए त़वाफ़ करने की मन्नत मानी जब भी त़वाफ़ में पाउं से चलना लाज़िम है और त़वाफ़े नफ़्ल अगर घिसटते हुए शुरूअ़ किया तो हो जाएगा मगर अफ़्ज़ल येह है कि चल कर त़वाफ़ करे।

(22) त़वाफ़ करने में नजासते हुक्मिय्या से पाक होना, यानी जुनुब[1] व बे वुज़ू न होना, अगर बे वुज़ू या जनाबत में त़वाफ़ किया तो इआ़दा करे।

(23) त़वाफ़ करते वक़्त सत्र छुपा होना यानी अगर एक उ़ज़्व की चौथाई या इस से ज़ियादा हिस्सा खुला रहा तो दम वाजिब होगा और चन्द जगह से खुला रहा तो जम्अ़ करेंगे, ग़रज़ नमाज़ में सत्र खुलने से जहां नमाज़ फ़ासिद होती है यहां दम वाजिब होगा।

(24) त़वाफ़ के बाद दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ना, न पढ़ी तो दम वाजिब नहीं।

(25) कंकरियां फेंकने और ज़ब्ह़ और सर मुंडाने और त़वाफ़ में तरतीब यानी पहले कंकरियां फेंके फिर ग़ैर मुफ़रिद क़ुरबानी करे फिर सर मुंडाए फिर त़वाफ़ करे।

(26) त़वाफ़े सद्र यानी मीक़ात से बाहर के रहने वालों के लिये रुख़्सत का त़वाफ़ करना। अगर ह़ज करने वाली ह़ैज़ या निफ़ास से है और त़हारत से पहले क़ाफ़िला रवाना हो जाएगा तो उस पर त़वाफ़े रुख़्सत नहीं।

---

1 ...यानी जिस पर जिमाअ़ या एह़तिलाम या शह्वत के साथ मनी ख़ारिज होने की वज्ह से ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया हो।

www.dawateislami.net

(27) वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बाद सर मुंडाने तक जिमाअ़ न होना।

(28) एह़राम के मम्नूआ़त, मसलन सिला कपड़ा पहनने और मुंह या सर छुपाने से बचना।[1]

मस्अला 42 वाजिब के तर्क से दम लाज़िम आता है ख़्वाह क़स्दन तर्क किया हो या सह्वन, ख़ता के तौ़र पर हो या निस्यान के, वोह शख़्स उस का वाजिब होना जानता हो या नहीं। हां, अगर क़स्दन करे और जानता भी है तो गुनहगार भी है मगर वाजिब के तर्क से ह़ज बातिल न होगा, अलबत्ता बाज़ वाजिब का इस हुक्म से इस्तिस्ना है कि तर्क पर दम लाज़िम नहीं, मसलन त़वाफ़ के बाद की दोनों रक्अ़तें या किसी उ़ज़्र की वज्ह से सर न मुंडाना या मग़रिब की नमाज़ का इ़शा तक मुअख़्ख़र न करना या किसी वाजिब का तर्क ऐसे उ़ज़्र से हो जिस को शर्अ़ ने मोतबर रखा हो यानी वहां इजाज़त दी हो और कफ़्फ़ारा साक़ित कर दिया हो।

ह़ज की सुन्नतें

① त़वाफ़े कुदूम यानी मीक़ात के बाहर से आने वाला मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ह़ाज़िर हो कर सब में पहला जो त़वाफ़ करे उसे त़वाफ़े कुदूम कहते हैं। त़वाफ़े कुदूम मुफ़रिद और क़ारिन के लिये सुन्नत है, मुतमत्तेअ़ के लिये नहीं।

② त़वाफ़ का ह़जरे अस्वद से शुरूअ़ करना।

③ त़वाफ़े कुदूम या त़वाफ़े फ़र्ज़ में रमल करना।

④ सफ़ा व मर्वह के दरमियान जो दो मीले अख़्ज़र हैं, उन के दरमियान दौड़ना।

⑤ इमाम का मक्के में सातवीं को और

⑥ अ़रफ़ात में नवीं को और

⑦ मिना में ग्यारहवीं को ख़ुत्बा पढ़ना।

⑧ आठवीं की फ़ज्र के बाद मक्के से रवाना होना कि मिना में पांच नमाज़ें पढ़ ली जाएं।

⑨ नवीं रात मिना में गुज़ारना।

⑩ आफ़्ताब निकलने के बाद मिना से अ़रफ़ात को रवाना होना।

⑪ वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के लिये ग़ुस्ल करना।

---

1 ..... "لباب المناسك" للسندی، (فصل فی واجباته) ص٦٨-٧٣.
و"الفتاوی الرضویة"، ج١٠ ص٧٨٩-٧٩١، وغیره.

www.dawateislami.net

⑫ अ़रफ़ात से वापसी में मुज़्दलिफ़ा में रात को रहना और

⑬ आफ़्ताब निकलने से पहले यहां से मिना को चले जाना।

⑭ दस और ग्यारह के बाद जो दोनों रातें हैं उन को मिना में गुज़ारना और अगर तेरहवीं को भी मिना में रहा तो बारहवीं के बाद की रात को भी मिना में रहे।

⑮ अब्त़ह़ यानी वादिये मुह़स्सब में उतरना, अगर्चे थोड़ी देर के लिये हो और इन के इ़लावा और भी सुन्नतें हैं, जिन का ज़िक्र अस्नाए बयान में आएगा। नीज़ ह़ज के मुस्तह़ब्बात व मक्रूहात का बयान भी मौक़अ़ मौक़अ़ से आएगा।

अब ह़रमैने त़य्यिबैन की रवानगी का क़स्द करो और आदाबे सफ़र व मुक़द्दमाते ह़ज जो लिखे जाते हैं उन पर अ़मल करो।

आदाबे सफ़र व मुक़द्दमाते ह़ज का बयान

(1) जिस का क़र्ज़ आता या अमानत पास हो अदा कर दे, जिन के माल नाह़क़ लिये हों वापस दे या मुआ़फ़ करा ले, पता न चले तो उतना माल फ़क़ीरों को दे दे।

(2) नमाज़, रोज़ा, ज़कात जितनी इ़बादात ज़िम्मे पर हों अदा करे और ताइब हो और आइन्दा गुनाह न करने का पक्का इरादा करे।

(3) जिस की बे इजाज़त सफ़र मक्रूह है जैसे मां बाप, शौहर उसे रिज़ामन्द करे, जिस का इस पर क़र्ज़ आता है उस वक़्त न दे सके तो उस से भी इजाज़त ले, फिर ह़ज्जे फ़र्ज़ किसी के इजाज़त न देने से रोक नहीं सकता, इजाज़त में कोशिश करे न मिले जब भी चला जाए।

(4) इस सफ़र से मक़्सूद सिर्फ़ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) व रसूल (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) हों, रिया व सुम्आ़ व फ़ख़्र से जुदा रहे।

(5) औ़रत के साथ जब तक शौहर या मह़रम बालिग़ क़ाबिले इ़त्मीनान न हो, जिस से निकाह़ हमेशा को ह़राम है सफ़र ह़राम है, अगर करेगी ह़ज हो जाएगा मगर हर क़दम पर गुनाह लिखा जाएगा।

(6) तोशा माले ह़लाल से ले वरना क़बूले ह़ज की उम्मीद नहीं अगर्चे फ़र्ज़ उतर जाएगा, अगर अपने माल में कुछ शुबा हो तो क़र्ज़ ले कर ह़ज को जाए और वोह क़र्ज़ अपने माल से अदा कर दे।

(7) ह़ाजत से ज़ियादा तोशा ले कि रफ़ीक़ों की मदद और फ़क़ीरों पर तसद्दुक़ करता चले, येह ह़ज्जे मबरूर की निशानी है।

(8) आ़लिम कुतुबे फ़िक़्ह ब क़दरे किफ़ायत साथ ले और बे इ़ल्म किसी आ़लिम के साथ जाए। येह भी न मिले तो कम अज़ कम येह रिसाला हमराह हो।

(9) आईना, सुरमा, कंघा, मिस्वाक साथ रखे कि सुन्नत है।

www.dawateislami.net

(10) अकेला सफ़र न करे कि मन्अ़ है। रफ़ीक़ दीनदार सालेह़ हो कि बद दीन की हमराही से अकेला बेहतर, रफ़ीक़े अजनबी कुम्बे वाले से बेहतर है।

(11) ह़दीस में है : "जब तीन आदमी सफ़र को जाएं अपने में एक को सरदार बना लें।"[1] इस में कामों का इन्तिज़ाम रहता है, सरदार उसे बनाएं जो ख़ुश ख़ुल्क़ आ़क़िल दीनदार हो, सरदार को चाहिये कि रफ़ीक़ों के आराम को अपनी आसाइश पर मुक़द्दम रखे।

(12) चलते वक़्त सब अ़ज़ीज़ों दोस्तों से मिले और अपने क़ुसूर मुआ़फ़ कराए और अब उन पर लाज़िम कि दिल से मुआ़फ़ कर दें। ह़दीस में है : "जिस के पास उस का मुसलमान भाई माज़िरत लाए वाजिब है कि क़बूल कर ले, वरना ह़ौज़े कौसर पर आना न मिलेगा।"[2]

(13) वक़्ते रुख़्सत सब से दुआ़ कराए कि बरकत पाएगा कि दूसरों की दुआ़ के क़बूल होने की ज़ियादा उम्मीद है और येह नहीं मालूम कि किस की दुआ़ मक़्बूल हो। लिहाज़ा सब से दुआ़ कराए और वोह लोग ह़ाजी या किसी को रुख़्सत करें तो वक़्ते रुख़्सत येह दुआ़ पढ़ें :

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ .[3]

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم जब किसी को रुख़्सत फ़रमाते तो येह दुआ़ पढ़ते और अगर चाहे इस पर इतना इज़ाफ़ा करे :

وَغَفَرَ ذَنْبَكَ وَيَسَّرَلَكَ الْخَيْرَ حَيْثُمَا كُنْتَ زَوَّدَكَ اللّٰهُ التَّقْوٰى وَجَنَّبَكَ الرَّدٰى .[4]

(14) उन सब के दीन, जान, माल, औलाद, तन्दुरुस्ती, आ़फ़ियत ख़ुदा को सोंपे।

(15) लिबासे सफ़र पहन कर घर में चार रक्अ़त नफ़्ल अलह़म्द व क़ुल से पढ़ कर बाहर निकले। वोह रक्अ़तें वापस आने तक उस के अहलो माल की निगह़्बानी करेंगी। नमाज़ के बाद येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ بِكَ انْتَشَرْتُ وَاِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَبِكَ اعْتَصَمْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ ثِقَتِيْ وَاَنْتَ رَجَائِيْ اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ مَا اَهَمَّنِيْ وَمَا لَا اَهْتَمُّ بِهٖ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ عَزَّ جَارُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ اَللّٰهُمَّ زَوِّدْنِي التَّقْوٰى وَاغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَ وَجِّهْنِيْ اِلَى الْخَيْرِ اَيْنَمَا تَوَجَّهْتُ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَّعْثَآءِ السَّفَرِ

1 ..... "سنن أبي داود"، كتاب الجهاد، باب في القوم يسافرون ...إلخ، الحديث: ٢٦٠٨، ج٣، ص٥١.

2 ..... "المستدرك"، كتاب البر والصلة، باب بروا آباءكم تبركم ابناؤكم، الحديث ٧٣٤٠، ج٥، ص٢١٣. و فتاوىٰ رضويه، ج١٠، ص٧٢٦.

3 ...**तर्जमा :** **अल्लाह** के सिपुर्द करता हूं तेरे दीन और तेरी अमानत को और तेरे अ़मल के ख़ातिमे को। 12

4 ...**तर्जमा :** और तेरे गुनाह को बख़्श दे और तेरे लिये ख़ैर मुयस्सर करे, तू जहां हो तक़्वा को तेरा तोशा करे और तुझे हलाकत से बचाए। 12

www.dawateislami.net

وَكَاٰبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَالْحَوْرِ بَعْدَ الْكَوْرِ وَسُوْءِ الْمَنْظَرِ فِى الْاَهْلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ .[1]

(16) घर से निकलने के पहले और बाद कुछ सदक़ा करे।

(17) जिधर सफ़र को जाए जुमेरात या हफ़्ते या पीर का दिन हो और सुब्ह़ का वक़्त मुबारक है और अहले जुमुआ़ को रोज़े जुमुआ़ क़ब्ले जुमुआ़ सफ़र अच्छा नहीं।

(18) दरवाज़े से बाहर निकलते ही येह दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَتَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ نَّزِلَّ اَوْ نُزَلَّ اَوْ نَضِلَّ اَوْ نُضَلَّ اَوْ نَظْلِمَ اَوْ نُظْلَمَ اَوْ نَجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَيْنَا اَحَدٌ .[2]

और दुरूद शरीफ़ की कसरत करे।

(19) सब से रुख़्सत के बाद अपनी मस्जिद से रुख़्सत हो, वक़्ते कराहत न हो तो इस में दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े।

(20) ज़रूरिय्याते सफ़र अपने साथ ले और समझदार और वाक़िफ़े कार से मश्वरा भी ले, पहनने के कपड़े वाफ़िर हों और मुतवस्सितुल ह़ाल शख़्स को चाहिये कि मोटे और मज़बूत कपड़े ले और बेहतर येह कि उन को रंग ले और अगर ख़याल हो कि जाड़ों का ज़माना आ जाएगा तो कुछ गर्म कपड़े भी साथ रखे और जाड़ों का मौसिम हो और ख़याल हो कि वापसी तक गर्मी आ जाएगी तो कुछ गर्मियों के कपड़े भी ले ले। बिछाने के वासिते अगर छोटा सा रूई का गद्दा भी हो तो बहुत अच्छा है कि जहाज़ में बल्कि ऊंट पर बिछाने के लिये बहुत आराम देता है बल्कि वहां पहुंच कर भी इस की ह़ाजत पड़ती है। क्यूं कि हिन्दुस्तानी आदमी उ़मूमन चारपाइयों पर सोने के आ़दी होते हैं। चटाई वग़ैरा पर सोने में तक्लीफ़ होती है और गद्दे की वज्ह से कुछ तलाफ़ी हो जाएगी और साबून भी साथ ले जाए कि अक्सर अपने हाथ से कपड़े धोने पड़ते हैं कि वहां धोबी मुयस्सर नहीं आते।

❶...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तेरी मदद से मैं निकला और तेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और तेरे साथ मैं ने एअ़्तिसाम किया और तुझी पर तवक्कुल किया, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू मेरा एतिमाद है और तू मेरी उम्मीद है। इलाही ! तू मेरी किफ़ायत कर उस चीज़ से जो मुझे फ़िक्र में डाले और उस से जिस की मैं फ़िक्र नहीं करता और उस से जिस को तू मुझ से ज़ियादा जानता है। तेरी पनाह लेने वाला बा इ़ज़्ज़त है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं।

इलाही ! तक़्वा को मेरा ज़ादे राह कर और मेरे गुनाहों को बख़्श दे और मुझे ख़ैर की त़रफ़ मुतवज्जेह कर जिधर मैं तवज्जोह करूं। इलाही ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं सफ़र की तक्लीफ़ से और वापसी की बुराई से और आराम के बाद तक्लीफ़ से और अह्ल व मालो औलाद में बुरी बात देखने से। 12

❷...**तर्जमा : अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नाम के साथ और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की मदद से और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर तवक्कुल किया मैं ने और गुनाह से फिरना और नेकी की कुव्वत नहीं मगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हम तेरी पनाह मांगते हैं इस से कि लग़्ज़िश करें या हमें कोई लग़्ज़िश दे या गुमराह हों या गुमराह किये जाएं या ज़ुल्म करें या हम पर ज़ुल्म किया जाए या जहालत करें या हम पर कोई जहालत करे। 12

www.dawateislami.net

और एक देसी कम्मल भी होना चाहिये कि येह ऊंट के सफ़र में बहुत काम देता है जहां चाहो बिछा लो बल्कि बाज़ मरतबा जहाज़ पर भी काम देता है और शक़्दफ़ पर डालने के लिये बोरी का टाट ले लिया जाए, चाक़ू और सुतली और सुवा होना भी ज़रूरी है।

और कुछ थोड़ी सी दवाएं भी रख ले कि अक्सर हुज्जाज को ज़रूरत पड़ती है, मसलन खांसी, बुख़ार, ज़ुकाम, पेचिश, बद हज़्मी कि इन से कम लोग बचते हैं। लिहाज़ा गुले बनफ़्शा, ख़त्मी, गाउ ज़बान, मुलैठी कि येह बुख़ार, ज़ुकाम, खांसी में काम देंगी, पेचिश के लिये चारों तुख़्म या कम अज़ कम अस्पग़ोल हो और बद हज़्मी के लिये आलूए बुख़ारा, नमके सुलैमानी हो और कोई चूरन भी साथ हो कि अक्सर इस की ज़रूरत पड़ती है। मसलन बादियान, पोदीना ख़ुश्क, हलैला सियाह, नमके सियाह कि इन्हीं का चूरन बना ले काफ़ी होगा, और अ़रक़े काफ़ूर व पीपरमिन्ट हो तो येह बहुत अमराज़ में काम देते हैं।

दवाएं ज़रूर हों कि इन की अक्सर ज़रूरत पड़ती है और मुयस्सर नहीं आतीं अगर तुम को ख़ुद ज़रूरत न हुई और जिस को ज़रूरत पड़ी और तुम ने दे दी वोह उस कस्मपुर्सी की ह़ालत में तुम्हारे लिये कितनी दुआ़एं देगा !

और बरतनों की क़िस्म से अपनी हैसिय्यत के मुवाफ़िक़ साथ रखे, एक देगची ऐसी जिस में कम अज़ कम दो[2] आदमियों का खाना पक जाए येह तो ज़रूरी है क्यूं कि अगर तन्हा भी है जब भी बद्दू को खाना देना होगा और अगर चन्द क़िस्म के खाने खाना चाहता हो तो उसी अन्दाज़ से पकाने के बरतन साथ हों और पियाले रिकाबियां भी उसी अन्दाज़ से हों और हर शख़्स को एक मश्कीज़ा भी साथ रखना ज़रूरी है। अव्वलन तो जहाज़ पर भी पानी लेने में आसानी होगी, दुवुम ऊंट पर बग़ैर इस के काम नहीं चल सकता क्यूं कि पानी सिर्फ़ मन्ज़िल पर मिलता है फिर दरमियान में मिलना दुश्वार है बल्कि नहीं मिलता, अगर मश्कीज़ा साथ हुवा तो उस में पानी ले कर ऊंट पर रख लोगे कि पीने के भी काम आएगा और वुज़ू व त़हारत के लिये भी, अगर तुम्हारे पास ख़ुद न हुवा तो किस से मांगोगे और शायद ही कोई दे اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰه।

और डोल रस्सी भी साथ हो क्यूं कि बाज़ मन्ज़िलों पर बाज़ वक़्त ख़ुद भरना पड़ता है और अक्सर जगह पानी बेचने वाले आ जाते हैं और जहाज़ का नल बाज़ मरतबा बन्द हो जाता है उस वक़्त अगर मीठा पानी ह़ाजत से ज़ियादा न हुवा तो वुज़ू वग़ैरा दीगर ज़रूरिय्यात में समुन्दर से पानी निकाल कर काम चला सकते हो।

कुछ थोड़े से फटे पुराने कपड़े भी साथ रखो कि जहाज़ पर इस्तिन्जा सुखाने में काम देंगे।

लोहे का चूल्हा भी साथ रखो कि जहाज़ पर इस की सख़्त ज़रूरत पड़ती है। अगर कोएले वाला चूल्हा हो तो बम्बई से ह़स्बे ज़रूरत कोयले भी ख़रीद लो और लकड़ी वाला

www.dawateislami.net

चूल्हा हो तो लकड़ी ले जाने की ह़ाजत नहीं। इस लिये कि लकड़ी जहाज़ वाले की त़रफ़ से ज़रूरत के लाइक़ मिला करती है मगर इस सूरत में कुल्हाड़ी की ह़ाजत पड़ेगी क्यूं कि जहाज़ पर मोटी मोटी लकड़ियां मिलती हैं। उन्हें चीरने की ज़रूरत पड़ेगी। और बम्बई से कुछ लींबू ज़रूर ले लो कि जहाज़ पर अक्सर मतली आती है। उस वक़्त इस से बहुत तस्कीन होती है, अगर जहाज़ पर सुवार होने से पहले मामूली तिल्यें ले ली जाए तो चक्कर कम आएगा।

और मिट्टी या पथ्थर की कोई चीज़ भी हो कि अगर तयम्मुम करना पड़े तो काम दे कि जहाज़ में किस चीज़ पर तयम्मुम करोगे और कुछ न हो तो मिट्टी का कोई बरतन ही हो जिस पर रोग़न न किया हो कि वोह और काम में भी आएगा और उस पर तयम्मुम भी हो सकेगा। बाज़ हुज्जाज कपड़े पर जिस पर ग़ुबार का नाम भी नहीं होता तयम्मुम कर लिया करते हैं न येह तयम्मुम हुवा न इस तयम्मुम से नमाज़ जाइज़।

एक उगाल दान होना चाहिये कि जहाज़ में अगर क़ै की ज़रूरत महसूस हो तो काम देगा वरना कहां क़ै करेंगे और इस के इलावा थूकने के लिये भी काम देगा। इस के लिये बम्बई में ख़ास इसी मत़लब के उगाल दान टीन के मिलते हैं वहां से ख़रीद ले और एक पेशाब का बरतन भी हो इस की ज़रूरत बाज़ मरतबा जहाज़ पर भी पड़ती है। मसलन चक्कर आता है पाख़ाना तक जाना दुश्वार है येह होगा तो जहां है वहीं पर्दा कर के फ़रागत कर सकेगा और ऊंट पर शब में बाज़ मरतबा उतरने में ख़त़रा होता है येह होगा तो इस काम के लिये उतरने की ह़ाजत न होगी इस के लिये बम्बई में टीन का बरतन जो ख़ास इसी काम के लिये होता है ख़रीद ले। चाय भी थोड़ी साथ हो तो आराम देगी कि जहाज़ पर इस की ज़रूरत महसूस होती है। समुन्दर की मरत़ूब हवा के असर को दफ़्अ़ करती है नीज़ बद्दू बहुत शौक़ से पीते हैं, अगर तुम उन्हें चाय पिलाओगे तो तुम से बहुत ख़ुश रहेंगे और आराम पहुंचाएंगे। इस की पियालियां तामचीनी की ज़ियादा मुनासिब हैं कि टूटने का अन्देशा नहीं बल्कि खाने पीने के बरतन भी इसी के हों तो बेहतर है।

थोड़ी मोमबत्तियां भी हों कि जहाज़ पर रात में पाख़ाना पेशाब को जाने में आराम देंगी। पानी रखने के लिये टीन के पीपे होने चाहिये कि जहाज़ पर काम देंगे और मन्ज़िल पर भी। अचार चटनी अगर साथ हों तो निहायत बेहतर कि इन की भी ज़रूरत पड़ती है।

अस्बाब रखने के लिये एक चीड़ का बड़ा सन्दूक़ होना चाहिये और इस में एक येह भी फ़ाएदा है कि बाज़ मरतबा जहाज़ में मुसाफ़िरों की कसरत होती है और जगह नहीं मिलती अगर येह होगा तो तीसरे दरजे के मुसाफ़िर को बैठने बल्कि थोड़ी तक्लीफ़ के साथ इस पर लैटे रहने की जगह मिल जाएगी। अपने सन्दूक़ और बोरी और दीगर अस्बाब पर नाम लिख लो कि अगर दूसरे के सामान में मिल जाएं तो तलाश करने में आसानी होगी।

www.dawateislami.net

एह़राम के कपड़े यानी तहबन्द और चादर यहीं से या बम्बई से ले ले क्यूं कि एह़राम जहाज़ ही पर बांधना होगा और बेहतर येह कि दो जोड़े हों कि अगर मैला हुवा तो बदल सकेंगे। मस्तूरात साथ हों तो उन के एह़राम की ह़ालत में मुंह छुपाने को खजूर के पंखे जो ख़ास इसी काम के लिये बनते हैं बम्बई से ख़रीद ले कि एह़राम में औ़रतों को किसी ऐसी चीज़ से मुंह छुपाना जो चेहरे से चिपटी हो ह़राम है। कफ़न भी साथ हो कि मौत का वक़्त मालूम नहीं या इतना तो होगा कि वोह कपड़ा उस ज़मीने पाक पर पहुंच जाएगा और उसे ज़मज़म में ग़ोता दे लोगे और गर्मी का मौसिम हो तो पंखा भी साथ हो।

इस के बयान करने की ह़ाजत नहीं कि खाने के लिये क्या ले जाए क्यूं कि इस में हर शख़्स की मुख़्तलिफ़ ह़ालत है और लोगों को मालूम है कि हमें किन चीज़ों की ज़रूरत होगी और हम किस त़रह़ बसर कर सकते हैं फिर भी इस के मुतअ़ल्लिक़ बाज़ ख़ास बातें अ़र्ज़ कर देता हूं: आटा ज़ियादा न ले क्यूं कि समुन्दर की हवा से बहुत जल्द ख़राब हो जाता है और इस में सूंडियां पड़ जाती हैं सिर्फ़ इतना ले कि जहाज़ पर काम दे दे या कुछ ज़ाइद बल्कि गेहूं ले ले कि इस को जद्दा या मक्कए मुअ़ज़्ज़मा या मदीनए त़य्यिबा में जहां चाहे पिसवा सकता है और चावल ज़रूर साथ ले कि अक्सर खिचड़ी पकानी पड़ती है और आलू भी हों कि मुतवातिर दाल दिक़्क़त से खाई जाती है और इस्तिता़अ़त हो तो बकरे, मुर्ग़ियां, अन्डे साथ रख ले।

जहाज़ पर बाज़ मरतबा गोश्त मिल जाता है मगर इस में ख़याल कर ले कि किसी काफ़िर या मुरतद का ज़ब्ह़ किया हुवा तो नहीं।[1] मसाले पिसे हुए हों और पियाज़ लह्सन भी हों, बड़ियां भी हों तो बेहतर है, मदीनए त़य्यिबा के रास्ते में कई मन्ज़िलें ऐसी आती हैं जहां दाल नहीं गलती, इस के मुतअ़ल्लिक़ भी कुछ इन्तिज़ाम कर ले, नीज़ मदीनए त़य्यिबा जाने के लिये मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से भुने हुए चने ले ले या यहीं से लेता जाए कि बाज़ मरतबा इतना मौक़अ़ नहीं मिलता कि दूसरे वक़्त के लिये खाना पकाया जाए ऐसे वक़्त काम देंगे। घी ह़स्बे हैसिय्यत ज़ियादा ले कि बद्दूओं को ज़ियादा घी देना पड़ता है और ज़ियादा घी से वोह ख़ुश भी होते हैं। मसूर की दाल ज़रूर ले कि जल्द गलती है और बाज़ दफ़्आ़ ऐसा ही मौक़अ़ होता है कि जल्द खाना तय्यार हो जाए।

1 ...फ़तावा आ़लमगीरी में है: मुरतद का ज़बीह़ा मुर्दार है अगर्चे بِسْمِ اللّٰہ पढ़ कर ज़ब्ह़ करे। (عالمگیری، ج۵، ص۲۵۵) और अगर मुसलमान का ज़ब्ह़ कर्दा गोश्त ज़ब्ह़ से ले कर खाने तक एक लम्ह़े के लिये भी मुसलमान की नज़र से ओझल हो कर अगर मुरतद या ग़ैर किताबी काफ़िर के क़ब्ज़े में गया तो उस का खाना भी ना जाइज़ है। चुनान्चे, आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं: अगर वक़्ते ज़ब्ह़ से वक़्ते ख़रीदारी तक वोह गोश्त मुसलमान की निगरानी में रहे, बीच में किसी वक़्त मुसलमान की निगाह से ग़ाइब न हो और यूं इत्मीनाने काफ़ी ह़ासिल हो कि येह मुसलमान का ज़बीह़ा है तो उस का ख़रीदना, जाइज़ और खाना ह़लाल होगा। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 20 स. 282)

www.dawateislami.net

(21) ख़ुशी ख़ुशी घर से जाए और ज़िक्रे इलाही ब कसरत करे और हर वक़्त ख़ौफ़े ख़ुदा दिल में रखे, ग़ज़ब से बचे, लोगों की बात बरदाश्त करे, इत्मीनानो वक़ार को हाथ से न दे, बेकार बातों में न पड़े।

(22) घर से निकले तो येह ख़याल करे जैसे दुन्या से जा रहा है। चलते वक़्त येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِکَ مِنْ وَّعْثَآءِ السَّفَرِ وَکَاٰبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَسُوْءِ الْمَنْظَرِ فِی الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ .

वापसी तक माल व अहलो अ़याल महफ़ूज़ रहेंगे।

(23) इसी वक़्त आयतुल कुर्सी और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاس से قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ तक تَبَّتْ के सिवा पांच सूरतें सब मअ़ بِسْمِ اللّٰه पढ़े फिर आख़िर में एक बार بِسْمِ اللّٰه शरीफ़ पढ़ ले, रास्ते भर आराम से रहेगा।

(24) नीज़ उस वक़्त [1] ﴿اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ اِلٰى مَعَادٍ﴾ एक बार पढ़ ले, बिल ख़ैर वापस आएगा।

(25) रेल वग़ैरा जिस सुवारी पर सुवार हो, بِسْمِ اللّٰه तीन बार कहे फिर اَللّٰهُ اَكْبَر और اَلْحَمْدُ لِلّٰه और سُبْحَانَ اللّٰه हर एक तीन तीन बार, لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ एक बार फिर कहे :

﴿سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ ۙ(۱۳) وَ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ(۱۴)﴾ [2]

उस के शर से बचे।

(26) जब दरिया में सुवार हो येह कहे :

﴿بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴾﴿وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ جَمِیْعًا قَبْضَتُهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِیّٰتٌۢ بِیَمِیْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا یُشْرِكُوْنَ(۶۷)﴾ [3]

डूबने से महफ़ूज़ रहेगा।

---

1 .....پ۲۰، القصص: ۸۵.

तर्जमा : बेशक जिस ने तुझ पर कुरआन फ़र्ज़ किया तुझे वापसी की जगह की त़रफ़ वापस करने वाला है। 12

2 .....پ۲۵، الزخرف: ۱۳-۱۴.

तर्जमा : पाक है वोह जिस ने हमारे लिये इसे मुसख़्ख़र किया और हम इस को फ़रमां बरदार नहीं बना सकते थे और हम अपने रब की त़रफ़ लौटने वाले हैं। 12

3 ...इस दुआ़ में पहली आयत सूरए हूद (आयत : 41) की है, जब कि दूसरी आयत सूरए ज़ुमर (आयत : 67) की है।

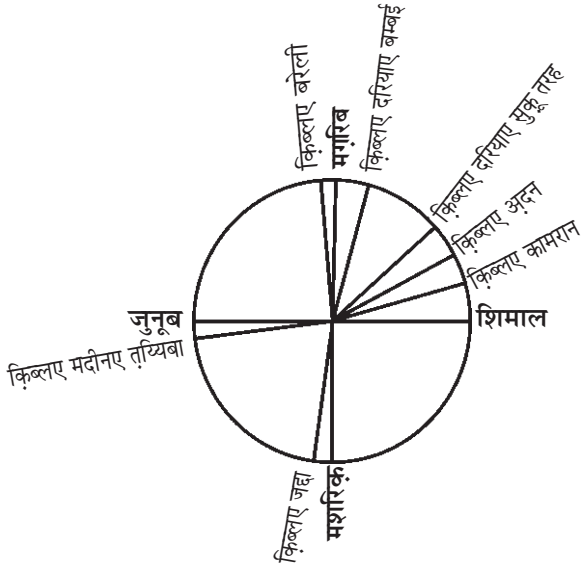
तर्जमा : अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के नाम की मदद से इस का चलना और ठहरना है बेशक मेरा रब बख़्शने वाला रह़म करने वाला है। और उन्हों ने **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की क़द्र जैसी चाहिये न की और ज़मीन पूरी क़ियामत के दिन उस की मुट्ठी में है और आस्मान उस के हाथ में लिपटे हुए हैं, पाक और बरतर है उस से जिसे उस का शरीक बताते हैं। 12

www.dawateislami.net

(27) जहाज़ पर सुवार होने में कोशिश करे कि पहले सुवार हो जाए क्यूं कि जो पहले पहुंच गया अच्छी और कुशादा जगह ले सकता है और जो जगह येह लेगा फिर उस को कोई हटा न सकेगा और उतरने में जल्दी न करे कि इस में बाज़ मरतबा कोई सामान रह जाता है।

(28) तीसरे दरजे में सफ़र करने वाला जहाज़ पर बिछाने को चटाई ज़रूर ले ले वरना बिस्तर अक्सर ख़राब हो जाता है। चन्द हमराही हों तो बाज़ नीचे के कमरे में जगह ले और बाज़ ऊपर के, कि अगर गर्मी मालूम हुई तो नीचे वाले ऊपर के दरजे में आ कर बैठ सकेंगे और सर्दी मालूम हुई तो येह उन के पास चले जाएंगे।

(29) जब बम्बई से रवाना होंगे क़िब्ले की सम्त बदलती रहेगी इस के लिये एक नक़्शा दिया जाता है, इस से सम्ते क़िब्ला मालूम कर सकोगे। कुत़्बनुमा पास रखा जाए, जिधर वोह कुत़्ब बताए उसी त़रफ़ इस दायरे का ख़त्ते शिमाल कर दिया जाए फिर जिस सम्त को क़िब्ला लिखा है उस त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ें।



(30) जद्दा में जहाज़ कनारे पर नहीं खड़ा होता, जैसे बम्बई में गोदी बनी है वहां नहीं है बल्कि वहां कश्तियों पर सुवार हो कर कनारे पहुंचते हैं, येह बात ज़रूर ख़याल में रखे कि जिस कश्ती में अपना सामान हो उसी में ख़ुद भी बैठे अगर ऐसा न किया बल्कि सामान किसी में उतरा और अपने आप दूसरी पर बैठा तो सामान ज़ाएअ़ हो जाने का ख़ौफ़ है या कम अज़ कम तलाश करने में दिक़्क़त होगी, कश्ती वाले बत़ौरे इन्आ़म कुछ मांगते हैं उन्हें दे दिया जाए।

(31) अब यहां से सामान की हिफ़ाज़त में पूरी कोशिश करे, हर काम में निहायत चुस्ती व होशियारी रखे। कश्ती से उतरने के बाद चुंगीख़ाने में जिसे जुमरुक कहते हैं सामान की तफ़्तीश

www.dawateislami.net

होती है, उस में फ़क़त़ येह देखते हैं कि कोई चीज़ तिजारत की ग़रज़ से तो नहीं लाया है। अगर तिजारती सामान पाएंगे उस की चुंगी लेंगे और तिजारती सामान न हो तो चाहे कितनी ही खाने पीने और दीगर ज़रूरत की चीज़ें हों उन से कुछ तअ़र्रुज़[1] न करेंगे।

(32) मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में जितने मुअ़ल्लिम हैं उन सब के जद्दा में वकील रहते हैं जब तुम कश्ती से उतरोगे फाटक पर हुकूमत का आदमी होगा, कश्ती का किराया जो मुक़र्रर है वुसूल कर लेगा और वोह तुम से पूछेगा मुअ़ल्लिम कौन है? जिस मुअ़ल्लिम का नाम लोगे उस का वकील तुम्हें अपने साथ लेगा और वोह तुम्हारे सामान को उठवा कर अपने यहां या किसी किराए के मकान में ले जाएगा, उस वक़्त तुम्हें चाहिये कि अपने सामान के साथ ख़ुद जाओ और अगर तुम कई शख़्स हो और सामान ज़ियादा है तो बाज़ यहां सामान की निगरानी करें बाज़ सामान की गाड़ी के साथ जाएं। इस लिये कि बाज़ मरतबा सामान गाड़ी से गिर जाता है और गाड़ी वाले ख़याल भी नहीं करते इस में उन का क्या नुक़्सान है! कोई ज़रूरत की चीज़ गिर गई तो तुम्हीं को तक्लीफ़ होगी।

(33) जद्दा में पानी अक्सर अच्छा नहीं मिलता कुछ ख़फ़ीफ़ खारी होता है, पानी ख़रीदो तो चख लिया करो।

(34) मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के लिये ऊंट का किराया करना उसी वकील का काम है और इस ज़माने में हुकूमत की त़रफ़ से किराया मुक़र्रर हो जाता है जिस से कमी बेशी नहीं होती। शक़्दफ़, शबरी जिस की तुम्हें ख़्वाहिश हो उस के मुवाफ़िक़ वकील ऊंट किराया कर देगा और किराया पेशगी अदा करना होगा और उसी ऊंट के किराए में दरिया के कनारे से मकान तक अस्बाब लाने की मज़दूरी और मकान का किराया और वकील का मेह़नताना सब कुछ जोड़ लिया जाता है तुम्हें किसी चीज़ के देने की ज़रूरत नहीं। हां, अगर तुम पैदल जाना चाहोगे तो येह तमाम मसारिफ़ तुम से वकील वुसूल करेगा।

(35) शबरी की पूरी क़ीमत ले ली जाती है। अब वोह तुम्हारी हो गई मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पहुंच कर जो चाहो करो अगर वोह मज़बूत़ है तो मदीनए त़य्यिबा के सफ़र में भी काम देगी। शक़्दफ़ का किराया लिया जाता है कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पहुंच कर अब तुम्हें उस से सरोकार नहीं। हां, अगर तुम चाहो तो जद्दा में शक़्दफ़ ख़रीद भी सकते हो जो पूरे सफ़र में तुम्हें काम देगा फिर जद्दा पहुंच कर थोड़े दामों पर फ़रोख़्त भी हो सकता है। शक़्दफ़ में ज़ियादा आराम है कि आदमी सो भी सकता है और शबरी में बैठा रहना पड़ता है मगर इस में सामान ज़ियादा रखा जा सकता है और शक़्दफ़ में बहुत कम।

(36) अगर अस्बाब ज़ियादा हो तो मक्कए मुअ़ज़्ज़मा तक इस के लिये अलग ऊंट कर लो और जो चीज़ें ज़रूरत से ज़ियादा हों चाहो तो यहीं जद्दा ही में वकील के सिपुर्द कर

[1]...येह उस ज़माने में था अब इस ज़मानए हुकूमते नज्दिया में ऐसा नहीं।

www.dawateislami.net

दो जब तुम आओगे वकील वोह चीज़ तुम्हारे ह़वाले कर देगा और उस का किराया मसलन फ़ी बोरी या फ़ी सन्दूक़ आठ आने या कमो बेश के ह़िसाब से ले लेगा अगर्चे तुम्हारी वापसी चार पांच महीने के बाद हो।

(37) अगर जहाज़ का टिकट वापसी का है तो उसे ब एह़तियात़ रखो और उस का नम्बर भी लिख लो कि शायद टिकट ज़ाएअ़ हो जाए तो नम्बर से काम चल जाएगा अगर्चे दिक़्क़त होगी और तुम को इत्मीनान हो तो टिकट वकील के पास रख सकते हो।

(38) किराए के ऊंट वग़ैरा पर जो कुछ बार करो उस के मालिक को दिखा लो और इस से ज़ियादा बे उस की इजाज़त के कुछ न रखो।

(39) जानवर के साथ नर्मी करो, त़ाक़त से ज़ियादा काम न लो, बे सबब न मारो, न कभी मुंह पर मारो, ह़त्तल वस्अ़ उस पर न सोओ कि सोते का बोझ ज़ियादा होता है, किसी से बात वग़ैरा करने को कुछ देर ठहरना हो तो उतर लो अगर मुम्किन हो।

(40) सुब्ह़ो शाम उतर कर कुछ दूर पियादा चल लेने में दीनी व दुन्यवी बहुत फ़ाएदे हैं।

(41) बद्दूओं और सब अ़रबियों से बहुत नर्मी के साथ पेश आए, अगर वोह सख़्ती करें अदब से तह़म्मुल करे। इस पर शफ़ाअ़त नसीब होने का वादा फ़रमाया है। ख़ुसूसन अहले ह़रमैन, ख़ुसूसन अहले मदीना, अहले अ़रब के अफ़्आ़ल पर एतिराज़ न करे, न दिल में कदूरत लाए, इस में दोनों जहां की सआ़दत है।

اے کہ حمّال عیب خویشتنید طعنہ بر عیب دیگراں مکنید[1]

(42) जो अ़रबी नहीं जानता उसे बाज़ तुन्द ख़ू जम्माल वग़ैरहुम गालियां बल्कि मुग़ल्लज़ात तक देते हैं ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो तो शुनीदा को महज़ न शुनीदा[2] कर दिया जाए और क़ल्ब पर भी मैल न लाया जाए। यूंही अ़वामे अहले मक्का कि सख़्त ख़ू व तुन्द मिज़ाज हैं उन की सख़्ती पर नर्मी लाज़िम है।

(43) जम्माल को यहां के जैसे किराए वाले न समझे बल्कि अपना मख़्दूम जाने और खाने पीने में उन से बुख़्ल न करे कि वोह ऐसों ही से नाराज़ होते हैं और थोड़ी बात में बहुत ख़ुश हो जाते हैं और उम्मीद से ज़ियादा काम आते हैं।

(44) क़बूले ह़ज के लिये तीन शर्तें हैं :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ ۙ وَلَا جِدَالَ فِی الْحَجِّ ؕ ﴾[3]

---

1 ...यानी जो शख़्स अपना ऐ़ब उठाए है, वोह दूसरों के ऐ़ब पर त़ाना न दे।

2 ...यानी सुनी को अनसुनी।

3 .....پ۲، البقرة: ۱۹۷.

www.dawateislami.net

ह़ज में न फ़ोह़श बात हो, न हमारी ना फ़रमानी, न किसी से झगड़ा लड़ाई।

तो इन बातों से निहायत ही दूर रहना चाहिये, जब ग़ुस्सा आए या झगड़ा हो या किसी मअ़ूसियत का ख़याल हो फ़ौरन सर झुका कर क़ल्ब की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इस आयत की तिलावत करे और दो एक बार लाह़ौल शरीफ़ पढ़े, येह बात जाती रहेगी। येही नहीं कि इसी की त़रफ़ से इब्तिदा हो या इस के रुफ़क़ा[1] ही के साथ जिदाल बल्कि बाज़ अवक़ात इम्तिह़ानन राह चलतों को पेश कर दिया जाता है कि बे सबब उलझते बल्कि सब्बो शत्म व लान व त़ान को तय्यार होते हैं, इसे हर वक़्त होशियार रहना चाहिये, मबादा[2] एक दो कलिमे में सारी मेह़नत और रुपिया बरबाद हो जाए।

(45) कमज़ोर और औ़रतों को ऊंट पर चढ़ने के लिये एक सीढ़ी जद्दा में ले ली जाए तो चढ़ने उतरने में आसानी होगी। जद्दा से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा दो दिन का रास्ता है सिर्फ़ एक मन्ज़िल रास्ते में पड़ती है जिस को बह़रा कहते हैं, अब जब यहां से रवाना हो तो इन तमाम बातों पर लिह़ाज़ रखो जो लिखी जा चुकीं और जो आइन्दा बयान होंगी।

(46) ऊंट पर उ़मूमन दो शख़्स सुवार होते हैं। शक़्दफ़ और शबरी में दोनों त़रफ़ बोझ बराबर रहना ज़रूरी है अगर एक जानिब का आदमी हलका हो तो उधर अस्बाब रख कर वज़्न बराबर कर लें। यूं भी वज़्न बराबर न हो तो हलका आदमी अपने शक़्दफ़ या शबरी में कनारए बैरूनी से क़रीब हो जाए और भारी आदमी ऊंट की पीठ से नज़्दीक हो जाए।

(47) बाज़ मरतबा किसी जानिब का पल्ला झुक जाता है इस का ख़याल रखो जब ऐसा हो तो फ़ौरन इस त़रह़ बैठ जाओ कि दुरुस्त हो जाए। क्यूं कि इस की वज्ह से ऊंट को भी तक्लीफ़ होती है और शबरी हो तो गिरने का क़वी अन्देशा है। इस के दुरुस्त करने को ऊंट वाला मीज़ान मीज़ान कह कर तुम्हें मुतनब्बेह करेगा। तुम्हें चाहिये कि फ़ौरन दुरुस्त कर लो वरना ऊंट वाला नाराज़ होगा।

(48) राह में कहीं चढ़ाई आती है कहीं उतार, जब चढ़ाई हो ख़ूब आगे ऊंट की गरदन के क़रीब दोनों आदमी हो जाएं और जब उतार हो ख़ूब पीछे दुम के नज़्दीक हो जाएं। जब राह हमवार आए फिर बीच में हो जाएं येह नशेबो फ़राज़ कभी आदमी के सोते में आते हैं या उसे इस त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं होता, उस वक़्त जम्माल जगाता और मुतनब्बेह करता है अव्वल अव्वल या गुद्दाम गुद्दाम कहे तो आगे को सरक कर बैठ जाओ और अगर वरा वरा कहे तो पीछे हट जाओ, और बाज़ बद्दू एकआध लफ़्ज़ हिन्दी सीखे हुए फ़ीशू फ़ीशू कहते हैं यानी पीछे पीछे और कभी ग़लती से आगे कहना होता है और फ़ीशू कहते हैं। देख कर सह़ीह़ बात पर फ़ौरन अ़मल किया जाए और इस जगाने पर नाराज़ न होना चाहिये कि ऐसा न हो तो مَعَاذَاللہ गिर जाने का एह़तिमाल है।

1...रफ़ीक़ की जम्अ़। साथी। दोस्त। 2...यानी ऐसा न हो। ख़ुदा न करे।

www.dawateislami.net

(49) जब मन्ज़िल पर पहुंचो तो उतरने में ताख़ीर मत करो कि देर करने में ऊंट वाले नाराज़ होते और परेशान करते हैं और रवानगी के वक़्त बिल्कुल तय्यार रहो । तमाम ज़रूरिय्यात से पहले ही फ़ारिग़ हो लो ।

(50) उतरने और चढ़ने के वक़्त ख़ुसूसिय्यत के साथ बहुत होशियारी और देखभाल की ज़रूरत है कि इन दो वक़्तों में सामान के ज़ाएअ़ होने और छूट जाने का अन्देशा होता है और इस वक़्त बाज़ दफ़्आ़ चोर भी आ जाते हैं जिन को वहां की ज़बान में ह़रामी कहते हैं ।

(51) मन्ज़िलों पर सौदा बेचने वाले और पानी ले कर ब कसरत बद्दू आ जाते हैं उन से भी एह़तियात़ रखो कि बाज़ उन में के मौक़अ़ पा कर कोई चीज़ उठा ले जाते हैं ।

(52) जिस मन्ज़िल में उतरे, वहां येह दुआ़ पढ़ ले :

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ اَللّٰهُمَّ اَعْطِنَا خَيْرَ هٰذَا الْمَنْزِلِ وَ خَيْرَ مَا فِيْهِ وَاكْفِنَا شَرَّ هٰذَا الْمَنْزِلِ وَشَرَّ مَا فِيْهِ اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْنِيْ مَنْزِلًا مُّبَارَكًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ط[1]

हर नुक़्सान से बचेगा और बेहतर येह है कि वहां दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े ।

(53) मन्ज़िल में रास्ते से बच कर उतरे कि वहां सांप वग़ैरा मूज़ियों का गुज़र होता है ।

(54) जब मन्ज़िल से कूच करे, दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर रवाना हो । ह़दीस में है : "रोज़े क़ियामत वोह मन्ज़िल उस के ह़क़ में इस अम्र की गवाही देगी ।"[2]

नीज़ अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जब किसी मन्ज़िल में उतरते, दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर वहां से रुख़्सत होते ।"[3]

(55) रास्ते पर पेशाब वग़ैरा बाइ़से लानत है ।

(56) मन्ज़िल में मुतफ़र्रिक़ हो कर न उतरें बल्कि एक जगह रहें ।

(57) अक्सर रात को क़ाफ़िला चलता रहता है इस ह़ालत में अगर सोओ तो ग़ाफ़िल हो कर न सोओ, बल्कि बेहतर येह है कि दोनों आदमियों में जो एक ऊंट पर सुवार हैं बारी बारी से एक सोए एक जागता रहे कि ऐसे वक़्त कि दोनों ग़ाफ़िल सो जाएं बाज़ मरतबा चोरी हो जाती है । शबरी के नीचे से चोर बोरी काट ले जाते हैं शक़्दफ़ भी बग़ल की जानिब से चाक कर के माल निकाल ले जाते हैं । ख़ुलासा येह कि हर मौक़अ़ और हर मह़ल पर होशियारी रखो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर एतिमाद, फिर انشاء اللہ العزیز الجلیل निहायत अम्नो अमान के साथ रहोगे ।

---

1 ...**तर्जमा : अल्लाह** के कलिमाते ताम्मा की पनाह मांगता हूं उस के शर से जिसे उस ने पैदा किया, इलाही ! तू हम को इस मन्ज़िल की ख़ैर अ़त़ा कर और उस की ख़ैर जो कुछ इस में है और इस के शर से और जो कुछ इस में है उस के शर से हमें बचा । इलाही ! तू हम को बरकत वाली मन्ज़िल में उतार और तू बेहतर उतारने वाला है । 12

2 ..... 3 ....."المستدرك"، كتاب المناسك، كان لاينزل منزلا إلاودعه بركعتين ، الحديث: ١٦٧٧، ج٢، ص٩٢.

www.dawateislami.net

(58) रास्ते में क़ज़ाए हाजत के लिये दूर न जाओ कि ख़तरे से ख़ाली नहीं और एक छत्री अपने साथ ज़रूर रखो अगर्चे सर्दी का ज़माना हो कि क़ज़ाए हाजत के वक़्त इस से फ़िल जुम्ला पर्दा हो जाएगा और बेहतर येह कि तीन चार लकड़ियां जिन के नीचे लोहा लगा हो और एक मोटी बड़ी चादर साथ रखो कि मन्ज़िल पर लकड़ियां गाड़ कर चादर से घेर दोगे तो निहायत पर्दे के साथ रफ़्ए ज़रूरत कर सकोगे और औरतें साथ हों तो ऐसा इन्तिज़ाम ज़रूरी है कि ख़ौफ़ की वज्ह से वोह दूर न जा सकेंगी और नज़्दीक में सख़्त बे पर्दगी होगी।

(59) मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से जब मदीनए त़य्यिबा के लिये ऊंट किराया करें तो एक मुअ़ल्लिम के जितने हुज्जाज हैं वोह सब मुत्तफ़िक़ हो कर येह शर्त़ कर लें कि नमाज़ के अवक़ात में क़ाफ़िला ठहराना होगा, इस सूरत में नमाज़ जमाअ़त के साथ ब आसानी अदा कर सकेंगे कि जब येह शर्त़ होगी तो ऊंट वालों को वक़्ते नमाज़ में क़ाफ़िला रोकना पड़ेगा और अगर किसी वज्ह से न रोक सकेंगे तो चन्द बद्दू हुज्जाज की हिफ़ाज़त करेंगे कि येह ब इत़्मीनान नमाज़ अदा कर लें फिर वोह ऊंट तक पहुंचा देंगे।

और अगर शर्त़ न की तो सिर्फ़ मग़रिब के लिये क़ाफ़िला रोकेंगे बाक़ी नमाज़ों के लिये नहीं और इस सूरत में येह करे कि नमाज़ पढ़ने के वक़्त ऊंट से कुछ आगे निकल जाए और नमाज़ अदा कर के फिर शामिल हो जाए और क़ाफ़िले से दूर न हो कि अक्सर ख़त़रा होता है और बाज़ मरतबा ऐसा भी करना पड़ता है कि सुन्नत या फ़र्ज़ पढ़ने तक क़ाफ़िला सब आगे निकल गया तो बाक़ी के लिये फिर आगे बढ़ जाए वरना क़ाफ़िले से ज़ियादा फ़ासिला हो जाएगा और येह भी याद रखना चाहिये कि फ़र्ज़ व वित्र और सुब्ह़ की सुन्नत सुवारी पर जाइज़ नहीं। इन को उतर कर पढ़े बाक़ी सुन्नतें या नफ़्ल ऊंट की पीठ पर भी पढ़ सकते हैं।

तम्बीह : ख़बरदार ! ख़बरदार ! नमाज़ हरगिज़ न तर्क करना कि येह हमेशा बहुत बड़ा गुनाह है और इस ह़ालत में और सख़्त तर कि जिन के दरबार में जाते हो रास्ते में उन्हीं की ना फ़रमानी करते चलो तो बताओ कि तुम ने उन को राज़ी किया या नाराज़। मैं ने ख़ुद बहुत से हुज्जाज को देखा है कि नमाज़ की त़रफ़ बिल्कुल इल्तिफ़ात नहीं करते, थोड़ी तक्लीफ़ पर नमाज़ छोड़ देते हैं ह़ालां कि शर्ए मुत़ह्हर ने जब तक आदमी होश में है नमाज़ साक़ित़ नहीं की।

(60) सफ़रे मदीनए त़य्यिबा में बाज़ मरतबा क़ाफ़िला न ठहरने के बाइस ब मजबूरी ज़ोह्र व अ़स्र मिला कर पढ़नी होती है इस के लिये लाज़िम है कि ज़ोह्र के फ़र्ज़ों से फ़ारिग़ होने से पहले इरादा कर ले कि इसी वक़्त अ़स्र पढ़ूंगा और फ़र्ज़े ज़ोह्र के बाद फ़ौरन अ़स्र की नमाज़ पढ़े यहां तक कि बीच में ज़ोह्र की सुन्नतें भी न हों इसी त़रह़ मग़रिब के बाद इ़शा भी

www.dawateislami.net

इन्हीं शर्तों से जाइज़ है और अगर ऐसा मौक़अ़ हो कि अ़स्र के वक़्त ज़ोह्र या इ़शा के वक़्त मग़रिब पढ़नी हो तो सिर्फ़ इतनी शर्त है कि ज़ोह्र व मग़रिब के वक़्त में वक़्त निकलने से पहले इरादा कर ले कि इन को अ़स्र व इ़शा के साथ पढ़ूंगा।

(61) जब वोह बस्ती नज़र पड़े जिस में ठहरना या जाना चाहता है, येह कहे :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَا اَظْلَلْنَ وَرَبَّ الْاَرَضِيْنَ السَّبْعِ وَمَا اَقْلَلْنَ وَ رَبَّ الشَّيٰطِيْنِ وَمَا اَضْلَلْنَ وَرَبَّ الْاَرْيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَالُکَ خَيْرَ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ اَهْلِهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَ نَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَشَرِّ اَهْلِهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا.[1]

या सिर्फ़ पिछली दुआ़ पढ़े, हर बला से महफ़ूज़ रहेगा।

(62) जिस शह्र में जाए वहां के सुन्नी आ़लिमों और बा शर्अ़ फ़क़ीरों के पास अदब से ह़ाज़िर हो, मज़ारात की ज़ियारत करे, फ़ुज़ूल सैर व तमाशे में वक़्त न खोए।

(63) जिस आ़लिम की ख़िदमत में जाए वोह मकान में हो तो आवाज़ न दे, बाहर आने का इन्तिज़ार करे, उस के हुज़ूर बे ज़रूरत कलाम न करे, बे इजाज़त लिये मस्अला न पूछे, उस की कोई बात अपनी नज़र में ख़िलाफ़े शर्अ़ मालूम हो तो एतिराज़ न करे और दिल में नेक गुमान रखे मगर येह सुन्नी आ़लिम के लिये है, बद मज़्हब के साए से भागे।

(64) ज़िक्रे ख़ुदा से दिल बहलाए कि फ़रिश्ता साथ रहेगा, न कि शेअ़र व लग़्वियात से कि शैत़ान साथ होगा।

(65) रात को ज़ियादा चले कि सफ़र जल्द त़ै होता है।

(66) हर सफ़र ख़ुसूसन सफ़रे ह़ज में अपने और अपने अ़ज़ीज़ों, दोस्तों के लिये दुआ़ से ग़ाफ़िल न रहे कि मुसाफ़िर की दुआ़ क़बूल है।

(67) जब किसी मुश्किल में मदद की ज़रूरत हो, तीन बार कहे :

يَا عِبَادَ اللّٰهِ اَعِيْنُوْنِیْ[2] ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नेक बन्दो ! मेरी मदद करो।

ग़ैब से मदद होगी येह ह़ुक्म ह़दीस में है।

---

1 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! सातों आस्मानों के रब और उन के जिन को आस्मानों ने साया किया और सातों ज़मीनों के रब और उन के जिन को ज़मीनों ने उठाया और शैत़ानों के रब और उन के जिन को उन्हों ने गुमराह किया और हवाओं के रब और उन के जिन को हवाओं ने उड़ाया। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हम तुझ से इस बस्ती की और बस्ती वालों की और जो कुछ इस में है उन की भलाई का सुवाल करते और इस बस्ती के और बस्ती वालों के शर से और जो कुछ इस में है उस के शर से तेरी पनाह मांगते हैं। 12

2 ..... انظر: "مجمع الزوائد"، کتاب الاذکار، الحدیث: ۱۷۱۰۳، ۱۷۱۰٤ ص۱۸۸، ج۱۰.

www.dawateislami.net

(68) जब सुवारी का जानवर भाग जाए और पकड़ न सको येही पढ़ो फ़ौरन खड़ा हो जाएगा।

(69) जब जानवर शोख़ी करे येह दुआ़ पढ़े :

﴿ اَفَغَیْرَ دِیْنِ اللّٰهِ یَبْغُوْنَ وَ لَهٗۤ اَسْلَمَ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ طَوْعًا وَّ كَرْهًا وَّ اِلَیْهِ یُرْجَعُوْنَ ۝۸۳ ﴾[1]

(70) یَا صَمَدُ 134 बार रोज़ पढ़े, भूक प्यास से बचेगा।

(71) अगर दुश्मन या रहज़न का डर हो لِاِیْلٰفِ पढ़े, हर बला से अमान है।

(72) जब रात की तारीकी परेशान करने वाली आए, येह दुआ़ पढ़े :

یَا اَرْضُ! رَبِّیْ وَرَبُّکِ اللّٰهُ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّکِ وَشَرِّ مَا فِیْکِ وَشَرِّ مَا خَلَقَ فِیکِ وَشَرِّ مَا دَبَّ عَلَیْکِ وَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّ اَسَدٍ وَّ اَسْوَدَ وَمِنَ الْحَیَّةِ وَالْعَقْرَبِ وَمِنْ سَاکِنِ الْبَلَدِ وَمِنْ وَّالِدٍ وَّمَاوَلَدَ.[2]

(73) जब कहीं दुश्मनों से ख़ौफ़ हो, येह पढ़ ले :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُکَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُ بِکَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ.[3]

(74) जब ग़म व परेशानी लाहिक़ हो, येह दुआ़ पढ़े :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْعَظِیْمُ الْحَلِیْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ

---

1 .....پ۳، آل عمران:۸۳.

तर्जमा : क्या **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के दीन के सिवा कुछ और तलाश करते हैं और उसी के फ़रमां बरदार हैं, ख़ुशी और नाख़ुशी से वोह जो आस्मानों और ज़मीन में हैं और उसी की त़रफ़ तुम को लौटना है। 12

2 ...**तर्जमा :** ऐ ज़मीन मेरा और तेरा परवरदिगार **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) है। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की पनाह मांगता हूं तेरे शर से और उस के शर से जो तुझ में पैदा की और जो तुझ पर चली और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की पनाह शेर और काले सांप और बिच्छू और इस शह्र के बसने वाले से और शैत़ान और उस की औलाद से। 12

3 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तुझ को उन के सीनों के मुक़ाबिल करता हूं और उन की बुराइयों से तेरी पनाह मांगता हूं। 12

www.dawateislami.net

وَالْاَرْضِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ .[1]

और ऐसे वक़्त حَسْبُنَا اللّٰهُ وَ نِعْمَ الْوَكِيْلُ और لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ط की कसरत करे।

(75) अगर कोई चीज़ गुम हो जाए तो येह कहे :

يَا جَامِعَ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ o اِجْمَعْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ ضَالَّتِيْ .[2]

इन्शाअल्लाह तआ़ला मिल जाएगी।

(76) हर बुलन्दी पर चढ़ते اَللّٰهُ اَكْبَر कहे और ढाल में उतरते سُبْحٰنَ اللّٰه

(77) सोते वक़्त एक बार आयतुल कुर्सी हमेशा पढ़े कि चोर और शैत़ान से अमान है।

(78) नमाज़ें दोनों सरकारों में वक़्त शुरूअ़ होते ही होती हैं, मअ़न शुरूअ़ वक़्त पर फ़ौरन अज़ान और थोड़ी देर बाद तक्बीर व जमाअ़त हो जाती है, जो शख़्स कुछ फ़ासिले पर ठहरा हो इतनी गुन्जाइश नहीं पाता कि अज़ान सुन कर वुज़ू करे फिर ह़ाज़िर हो कर जमाअ़त या पहली रक्अ़त मिल सके और वहां की बड़ी बरकत येही त़वाफ़ व ज़ियारत और नमाज़ों की तक्बीरे अव्वल है। लिहाज़ा अवक़ात पहचान रखें, अज़ान से पहले वुज़ू तय्यार रहे, अज़ान सुनते ही फ़ौरन चल दें तो तक्बीरे अव्वल मिलेगी और अगर सफ़े अव्वल चाहें, जिस का सवाब बे निहायत है जब तो अज़ान से पहले ह़ाज़िर हो जाना लाज़िम है।

(79) वापसी में भी वोही त़रीक़े मल्हूज़ रखे, जो यहां तक बयान हुए।

(80) मकान पर आने की तारीख़ व वक़्त से पेश्तर इत्तिलाअ़ दे दे, बे इत्तिलाअ़ हरगिज़ न जाए ख़ुसूसन रात में।

(81) लोगों को चाहिये कि ह़ाजी का इस्तिक़्बाल करें और उस के घर पहुंचने से क़ब्ल दुआ़ कराएं कि ह़ाजी जब तक अपने घर में क़दम नहीं रखता उस की दुआ़ क़बूल है।

(82) सब से पहले अपनी मस्जिद में आ कर दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े।

(83) दो रक्अ़त घर में आ कर पढ़े फिर सब से ब कुशादा पेशानी मिले।

---

1 ...**तर्जमा :** **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं जो अ़ज़मत वाला ह़िल्म वाला है। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं जो बड़े अ़र्श का मालिक है। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं जो आस्मानों और ज़मीन का मालिक है और बुज़ुर्ग अ़र्श का मालिक है। 12

2 ...**तर्जमा :** ऐ लोगों को उस दिन जम्अ़ करने वाले जिस में शक नहीं, बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता, मेरे और मेरी गुमी चीज़ के दरमियान जम्अ़ कर दे। 12

www.dawateislami.net

(84) अ़ज़ीज़ों दोस्तों के लिये कुछ न कुछ तोह़फ़ा ज़रूर लाए और ह़ाजी का तोह़फ़ा तबर्रुकाते ह़रमैन शरीफ़ैन से ज़ियादा क्या है और दूसरा तोह़फ़ा दुआ़ का कि मकान में पहुंचने से पहले इस्तिक़्बाल करने वालों और सब मुसलमानों के लिये करे।[1]

मीक़ात का बयान

मीक़ात उस जगह को कहते हैं कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के जाने वाले को बग़ैर एह़राम वहां से आगे जाना जाइज़ नहीं अगर्चे तिजारत वग़ैरा किसी और ग़रज़ से जाता हो।[2]

(عامۂ کتب)

मस्अला 1 मीक़ात पांच हैं :

(1) ज़ुल ह़ुलैफ़ा : येह मदीनए त़य्यिबा की मीक़ात है। इस ज़माने में इस जगह का नाम अबयारे अ़ली है। हिन्दुस्तानी या और मुल्क वाले ह़ज से पहले अगर मदीनए त़य्यिबा को जाएं और वहां से फिर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को तो वोह भी ज़ुल ह़ुलैफ़ा से एह़राम बांधें।

(2) ज़ाते इ़र्क़ : येह इ़राक़ वालों की मीक़ात है।

(3) जुह़्फ़ा : येह शामियों की मीक़ात है मगर जुह़्फ़ा अब बिल्कुल मादूम सा हो गया है वहां आबादी न रही, सिर्फ़ बाज़ निशान पाए जाते हैं इस के जानने वाले अब कम होंगे, लिहाज़ा अहले शाम राबिग़ से एह़राम बांधते हैं कि जुह़्फ़ा राबिग़ के क़रीब है।

(4) क़र्न : येह नज्द[3] वालों की मीक़ात है, येह जगह त़ाइफ़ के क़रीब है।

(5) यलम्लम : अहले यमन के लिये।

मस्अला 2 येह मीक़ातें उन के लिये भी हैं जिन का ज़िक्र हुवा और इन के इ़लावा जो शख़्स जिस मीक़ात से गुज़रे उस के लिये वोही मीक़ात है और अगर मीक़ात से न गुज़रा तो जब मीक़ात के महाज़ी आए उस वक़्त एह़राम बांध ले, मसलन हिन्दियों की मीक़ात कोहे यलम्लम की महाज़ात है और महाज़ात में आना उसे ख़ुद मालूम न हो तो किसी जानने वाले से पूछ कर मालूम करे और अगर कोई ऐसा न मिले जिस से दरयाफ़्त करे तो तह़र्री करे अगर किसी त़रह़ महाज़ात का इ़ल्म न हो तो मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जब दो मन्ज़िल

1 ..... انظر:"الفتاوى الرضوية"، ج٩ص٧٢٦-٧٣١، وغيره.

2 ....."الهداية"، كتاب الحج، ج١، ص١٣٣-١٣٤، وغيره.

3 ...यानी मौजूदा रियाज़।

www.dawateislami.net

बाक़ी रहे एह़राम बांध ले ।[1] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 3 जो शख़्स दो मीक़ातों से गुज़रा, मसलन शामी कि मदीनए मुनव्वरह की राह से जुल हुलैफ़ा आया और वहां से जुह़्फ़ा को तो अफ़्ज़ल येह है कि पहली मीक़ात पर एह़राम बांधे और दूसरी पर बांधा जब भी ह़रज नहीं । यूंही अगर मीक़ात से न गुज़रा और महाज़ात में दो मीक़ातें पड़ती हैं तो जिस मीक़ात की महाज़ात पहले हो, वहां एह़राम बांधना अफ़्ज़ल है ।[2] (درمختار، عالمگیری)

मस्अला 4 मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जाने का इरादा न हो बल्कि मीक़ात के अन्दर किसी और जगह मसलन जद्दा जाना चाहता है तो उसे एह़राम की ज़रूरत नहीं फिर वहां से अगर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जाना चाहे तो बग़ैर एह़राम जा सकता है, लिहाज़ा जो शख़्स ह़रम में बग़ैर एह़राम जाना चाहता है वोह येह ह़ीला कर सकता है बशर्ते कि वाक़ेई उस का इरादा पहले मसलन जद्दा जाने का हो । नीज़ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा ह़ज और उ़मरह के इरादे से न जाता हो, मसलन तिजारत के लिये जद्दा जाता है और वहां से फ़ारिग़ हो कर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जाने का इरादा है और अगर पहले ही से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा का इरादा है तो अब बग़ैर एह़राम नहीं जा सकता । जो शख़्स दूसरे की त़रफ़ से ह़ज्जे बदल को जाता हो उसे येह ह़ीला जाइज़ नहीं ।[3] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 5 मीक़ात से पेश्तर एह़राम बांधने में ह़रज नहीं बल्कि बेहतर है बशर्ते कि ह़ज के महीनों में हो और शव्वाल से पहले हो तो मन्अ़ है ।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 6 जो लोग मीक़ात के अन्दर के रहने वाले हैं मगर ह़रम से बाहर हैं उन के एह़राम की जगह ह़िल यानी बैरूने ह़रम है, ह़रम से बाहर जहां चाहें एह़राम बांधें और बेहतर येह कि घर से एह़राम बांधें और येह लोग अगर ह़ज या उ़मरह का इरादा न रखते हों तो बग़ैर एह़राम मक्कए मुअ़ज़्ज़मा जा सकते हैं ।[5] (عامۂ کتب)

मस्अला 7 ह़रम के रहने वाले ह़ज का एह़राम ह़रम से बांधें और बेहतर येह कि मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में एह़राम बांधें और उ़मरह का बैरूने ह़रम से और बेहतर येह कि तन्ईम से हो ।[6] (درمختار وغیرہ)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني في المواقيت، ج١، ص٢٢١.
و"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في المواقيت، ج٣، ص٥٤٨ـ٥٥١.

2 ..... "الفتاوى الهندية" المرجع السابق. و"الدرالمختار كتاب الحج، مطلب في المواقيت، ج٣، ص٥٥٠.

3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في المواقيت، ج٣، ص٥٥٢.

4 ..... المرجع السابق. 5 ....."الهداية"، كتاب الحج، ج١، ص١٣٤، وغيره.

6 ..... "الدرالمختار كتاب الحج، مطلب في المواقيت، ج٣، ص٥٥٤، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 8 मक्के वाले अगर किसी काम से बैरूने ह़रम जाएं तो उन्हें वापसी के लिये एह़राम की ह़ाजत नहीं और मीक़ात से बाहर जाएं तो अब बग़ैर एह़राम वापस आना उन्हें जाइज़ नहीं ।[1] (عالمگیری، ردالمحتار)

एह़राम का बयान

﴿اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِیْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَ لَا فُسُوْقَ ۙ وَ لَا جِدَالَ فِی الْحَجِّ ؕ وَ مَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَیْرٍ یَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَ تَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَیْرَ الزَّادِ التَّقْوٰی ۫ وَ اتَّقُوْنِ یٰۤاُولِی الْاَلْبَابِ۱۹۷﴾[2]

ह़ज के चन्द महीने मालूम हैं, जिस ने इन में ह़ज (अपने ऊपर) लाज़िम किया (एह़राम बांधा) तो न फ़ोह़्श है, न फ़िस्क़, न झगड़ना ह़ज में और जो कुछ भलाई करो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उसे जानता है और तोशा लो, बेशक सब से अच्छा तोशा तक़्वा है और मुझी से डरो, ऐ अ़क़्ल वालो !

और फ़रमाता है :

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِیْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا یُتْلٰى عَلَیْكُمْ غَیْرَ مُحِلِّی الصَّیْدِ وَ اَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ یَحْكُمُ مَا یُرِیْدُ۱ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآىٕرَ اللّٰهِ وَ لَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَ لَا الْهَدْیَ وَ لَا الْقَلَآىٕدَ وَ لَاۤ آٰمِّیْنَ الْبَیْتَ الْحَرَامَ یَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رِضْوَانًا ؕ وَ اِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ﴾[3]

ऐ ईमान वालो ! उ़क़ूद पूरे करो, तुम्हारे लिये चौपाए जानवर ह़लाल किये गए, सिवा उन के जिन का तुम पर बयान होगा मगर ह़ालते एह़राम में शिकार का क़स्द न करो, बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) जो चाहता है हुक्म फ़रमाता है। ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के शआ़इर और माहे ह़राम और ह़रम की क़ुरबानी और जिन जानवरों के गलों में हार डाले गए (क़ुरबानी की अ़लामत के लिये) उन की बे हुर्मती न करो और न उन लोगों की जो ख़ानए काबा का क़स्द अपने रब के फ़ज़्ल और रिज़ा त़लब करने के लिये करते हैं और जब एह़राम खोलो, उस वक़्त शिकार कर सकते हो ।

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني في المواقيت، ج١، ص٢٢١.
و"ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في المواقيت، ج٣، ص٥٥٤.

2 .....پ٢، البقرة: ١٩٧.

3 .....پ٦، المآئدة: ١-٢.

www.dawateislami.net

ह़दीस 1 सह़ीहैन में उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से मरवी, मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم को एह़राम के लिये एह़राम से पहले और एह़राम खोलने के लिये त़वाफ़ से पहले ख़ुश्बू लगाती जिस में मुश्क थी, उस की चमक हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) की मांग में एह़राम की ह़ालत में गोया मैं अब देख रही हूं।[1]

ह़दीस 2 अबू दावूद ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने एह़राम बांधने के लिये ग़ुस्ल फ़रमाया।[2]

ह़दीस 3 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से मरवी, कहते हैं : हम हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) के साथ ह़ज को निकले, अपनी आवाज़ ह़ज के साथ ख़ूब बुलन्द करते।[3]

ह़दीस 4 तिरमिज़ी व इब्ने माजह व बैहक़ी सह्ल बिन सअ़ूद رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मुसलमान लब्बैक कहता है तो दह्ने बाएं जो पथ्थर या दरख़्त या ढेला ख़त्मे ज़मीन तक है लब्बैक कहता है।"[4]

ह़दीस 5 व 6 इब्ने माजह व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान व ह़ाकिम ज़ैद बिन ख़ालिद जुहन्नी से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिब्रील ने आ कर मुझ से येह कहा कि अपने अस्ह़ाब को हुक्म फ़रमा दीजिये कि लब्बैक में अपनी आवाज़ें बुलन्द करें कि येह ह़ज का शिआ़र है।"[5] इसी के मिस्ल साइब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से मरवी।

ह़दीस 7 त़बरानी औसत़ में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से रावी कि लब्बैक कहने वाला जब लब्बैक कहता है तो उसे बिशारत दी जाती है, अ़र्ज़ की गई : जन्नत की बिशारत दी जाती है ? फ़रमाया : हां।[6]

ह़दीस 8 इमाम अह़मद व इब्ने माजह जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह और त़बरानी व बैहक़ी आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "मोह़रिम जब आफ़्ताब डूबने तक लब्बैक कहता है तो आफ़्ताब डूबने के साथ उस के गुनाह ग़ाइब हो

---

1 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الحج، باب استحباب الطیب،قبیل الاحرام فی البدن...إلخ، الحدیث: ۳۳ ـ (۱۱۸۹)، ص٤٥ـ (۱۱۹۰)، (۱۱۹۱)، ص٦٠٧،٦٠٩.

2 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء فی الإغتسال عند الاحرام، الحدیث: ۸۳۱، ج۲، ص۲۲۸.

3 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الحج، باب جوازالتمتع فی الحج والقران، الحدیث: ۱۲٤۷، ص٦٥٤.

4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء فی فضل التلبیة و النحر، الحدیث: ۸۲۹، ج۲، ص۲۲٦.

5 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب رفع الصوت بالتلبیة، الحدیث: ۲۹۲۳، ج۳، ص٤۲۳.

6 ..... "المعجم الأوسط"، باب المیم، الحدیث: ۷۷۷۹، ج٥، ص٤١٠.

www.dawateislami.net

जाते हैं और ऐसा हो जाता है जैसा उस दिन कि पैदा हुवा।"[1]

ह़दीस 9 तिरमिज़ी व इब्ने माजह व इब्ने ख़ुज़ैमा अमीरुल मुअमिनीन सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि किसी ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से सुवाल किया कि ह़ज के अफ़्ज़ल आमाल क्या हैं? फ़रमाया: "बुलन्द आवाज़ से लब्बैक कहना और क़ुरबानी करना।"[2]

ह़दीस 10 इमाम शाफ़ेई ख़ुज़ैमा बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जब लब्बैक से फ़ारिग़ होते तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से उस की रिज़ा और जन्नत का सुवाल करते और दोज़ख़ से पनाह मांगते।[3]

ह़दीस 11 अबू दावूद व इब्ने माजह उम्मुल मुअमिनीन उम्मे सलमह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रावी, कहती हैं: मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि "जो मस्जिदे अक़्सा से मस्जिदुल ह़राम तक ह़ज या उ़मरह का एह़राम बांध कर आया उस के अगले और पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे या उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई।"[4]

एह़राम के अह़काम

(1) येह तो पहले मालूम हो चुका है कि हिन्दियों के लिये मीक़ात (जहां से एह़राम बांधने का हुक्म है) कोहे यलम्लम की महाज़ात है। येह जगह कामरान से निकल कर समुन्दर में आती है, जब जद्दा दो तीन मन्ज़िल रह जाता है जहाज़ वाले इत्तिलाअ़ दे देते हैं: पहले से एह़राम का सामान तय्यार रखें।

(2) जब वोह जगह क़रीब आए, मिस्वाक करें और वुज़ू करें और ख़ूब मल कर नहाएं, न नहा सकें तो सिर्फ़ वुज़ू करें यहां तक कि ह़ैज़ो निफ़ास वाली और बच्चे भी नहाएं और बा त़हारत एह़राम बांधें यहां तक कि अगर ग़ुस्ल किया फिर बे वुज़ू हो गया और एह़राम बांध कर वुज़ू किया तो फ़ज़ीलत का सवाब नहीं और पानी ज़रर करे तो इस की जगह तयम्मुम नहीं। हां, अगर नमाज़े एह़राम के लिये तयम्मुम करे तो हो सकता है।

(3) मर्द चाहें तो सर मुंडा लें कि एह़राम में बालों की ह़िफ़ाज़त से नजात मिलेगी वरना कंघा कर के ख़ुश्बूदार तेल डालें।

(4) ग़ुस्ल से पहले नाख़ुन कतरें, ख़त़ बनवाएं, मूए बग़ल व ज़ेरे नाफ़ दूर करें बल्कि पीछे के भी कि ढेला लेते वक़्त बालों के टूटने उखड़ने का क़िस्सा न रहे।

1 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب الظلال للمحرم، الحديث: ٢٩٢٥، ج٣، ص٤٢٤.
2 ..... "جامع الترمذي"، ابواب الحج، باب ماجاء فی فضل التلبية و النحر، الحديث: ٨٢٨، ج٢، ص٢٢٦.
3 ..... "المسند" للإمام الشافعي، كتاب المناسك، ص١٢٣.
4 ..... "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، باب فی المواقيت، الحديث: ١٧٤١، ج٢، ص٢٠١.

www.dawateislami.net

(5) बदन और कपड़ों पर ख़ुश्बू लगाएं कि सुन्नत है, अगर ख़ुश्बू ऐसी है कि उस का जिर्म[1] बाक़ी रहेगा जैसे मुश्क वग़ैरा तो कपड़ों में न लगाएं।

(6) मर्द सिले कपड़े और मोज़े उतार दें एक चादर नई या धुली ओढ़ें और ऐसा ही एक तहबन्द बांधें येह कपड़े सफ़ेद और नए बेहतर हैं और अगर एक ही कपड़ा पहना जिस से सारा सत्र छुप गया जब भी जाइज़ है। बाज़ अ़वाम येह करते हैं कि इसी वक़्त से चादर दाह्नी बग़ल के नीचे कर के दोनों पल्लू बाएं मूंढे पर डाल देते हैं येह ख़िलाफ़े सुन्नत है, बल्कि सुन्नत येह है कि इस त़रह़ चादर ओढ़ना त़वाफ़ के वक़्त है और त़वाफ़ के इ़लावा बाक़ी वक़्तों में आ़दत के मुवाफ़िक़ चादर ओढ़ी जाए यानी दोनों मूंढे और पीठ और सीना सब छुपा रहे।

(7) जब वोह जगह आए और वक़्ते मक्रूह न हो तो दो रक्अ़त ब निय्यते एह़राम पढ़ें, पहली में फ़ातिह़ा के बाद قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ दूसरी में قُلْ هُوَاللّٰهُ पढ़े।

(8) ह़ज तीन त़रह़ का होता है एक येह कि निरा ह़ज करे, इसे इफ़्राद कहते हैं और ह़ाजी को मुफ़रिद। इस में बादे सलाम यूं कहें :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ الْحَجَّ فَیَسِّرْهُ لِیْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّیْ نَوَیْتُ الْحَجَّ وَاَحْرَمْتُ بِهٖ مُخْلِصًا لِّلّٰهِ تَعَالٰی .[2]

दूसरा येह कि यहां से निरे उ़मरह की निय्यत करे, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ह़ज का एह़राम बांधे इसे तमत्तोअ़ कहते हैं और ह़ाजी को मुतमत्तेअ़। इस में यहां बादे सलाम यूं कहे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ الْعُمْرَةَ فَیَسِّرْهَا لِیْ وَتَقَبَّلْهَا مِنِّیْ نَوَیْتُ الْعُمْرَةَ وَاَحْرَمْتُ بِهَا مُخْلِصًا لِّلّٰهِ تَعَالٰی .

तीसरा येह कि ह़ज व उ़मरह दोनों की यहीं से निय्यत करे और येह सब से अफ़्ज़ल है, इसे क़िरान कहते हैं और ह़ाजी को क़ारिन। इस में बादे सलाम यूं कहे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ الْعُمْرَةَ وَالْحَجَّ فَیَسِّرْهُمَا لِیْ وَتَقَبَّلْهُمَا مِنِّیْ نَوَیْتُ الْعُمْرَةَ وَالْحَجَّ وَاَحْرَمْتُ بِهِمَا مُخْلِصًا لِّلّٰهِ تَعَالٰی .

और तीनों सूरतों में इस निय्यत के बाद लब्बैक ब आवाज़ कहे, लब्बैक येह है :

---

1 ...जिर्म : यानी तह।

2 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं ह़ज का इरादा करता हूं इसे तू मेरे लिये मुयस्सर कर और इसे मुझ से क़बूल कर, मैं ने ह़ज की निय्यत की और ख़ास **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये मैं ने एह़राम बांधा (बाद वाली दोनों निय्यतों का भी तर्जमा येही है। इतना फ़र्क़ है कि ह़ज की जगह दूसरी में उ़मरह है और तीसरी में ह़ज्जो उ़मरह दोनों) **12**।

www.dawateislami.net

لَبَّیْکَ ط اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ ط لَبَّیْکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ ط اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَکَ وَالْمُلْکَ ط لَا شَرِیْکَ لَکَ ط[1]

जहां जहां वक़्फ़ की अ़लामतें बनी हैं वहां वक़्फ़ करे। लब्बैक तीन बार कहे और दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर दुआ़ मांगे। एक दुआ़ यहां पर येह मन्क़ूल है :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ رِضَاکَ وَالْجَنَّةَ وَاَعُوْذُ بِکَ مِنْ غَضَبِکَ وَالنَّارِ .[2]

और येह दुआ़ भी बुज़ुर्गों से मन्क़ूल है :

اَللّٰھُمَّ اَحْرَمَ لَکَ شَعْرِیْ وَبَشَرِیْ وَعَظْمِیْ وَدَمِیْ مِنَ النِّسَآءِ وَالطِّیْبِ وَکُلِّ شَیْءٍ حَرَّمْتَهٗ عَلَی الْمُحْرِمِ اَبْتَغِیْ بِذَالِکَ وَجْھَکَ الْکَرِیْمَ لَبَّیْکَ وَسَعْدَیْکَ وَالْخَیْرُ کُلُّهٗ بِیَدَیْکَ وَالرَّغْبَاءُ اِلَیْکَ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ لَبَّیْکَ ذَاالنَّعْمَآءِ وَالْفَضْلِ الْحَسَنِ لَبَّیْکَ مَرْغُوْبًا وَّمَرْھُوْبًا اِلَیْکَ لَبَّیْکَ اِلٰهَ الْخَلْقِ لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ حَقًّا حَقًّا تَعَبُّدًا وَّرِقًّا لَبَّیْکَ عَدَدَ التُّرَابِ وَالْحَصٰی لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ ذَاالْمَعَارِجِ لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ مِنْ عَبْدٍ اَبَقَ اِلَیْکَ . لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ فَرَّاجَ الْکُرُوْبِ لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ اَنَا عَبْدُکَ لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ غَفَّارَ الذُّنُوْبِ لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی اَدَآءِ فَرْضِ الْحَجِّ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّیْ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الَّذِیْنَ اسْتَجَابُوْا لَکَ وَاٰمَنُوْا بِوَعْدِکَ وَاتَّبَعُوْا اَمْرَکَ وَاجْعَلْنِیْ مِنْ وَّفْدِکَ الَّذِیْنَ رَضِیْتَ عَنْھُمْ وَاَرْضَیْتَھُمْ وَقَبِلْتَھُمْ .[3]

और लब्बैक की कसरत करें, जब शुरूअ़ करें तीन बार कहें।

---

1 ...**तर्जमा :** मैं तेरे पास ह़ाज़िर हुवा, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा, तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा, तेरा कोई शरीक नहीं मैं तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा बेशक तारीफ़ और नेमत और मुल्क तेरे ही लिये है तेरा कोई शरीक नहीं है। 12

2 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तेरी रिज़ा और जन्नत का साइल हूं और तेरे ग़ज़ब और जहन्नम से तेरी ही पनाह मांगता हूं। 12

3 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तेरे लिये एह़राम बांधा, मेरे बाल और बुशरा ने और मेरी हड्डी और मेरे ख़ून ने औ़रतों और ख़ुश्बू से और हर उस चीज़ से जिस को तू ने मोह़रिम पर ह़राम किया इस से मैं तेरे वज्हे करीम का त़ालिब हूं, मैं तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा और कुल ख़ैर तेरे हाथ में है और रग़बत व अ़मले सालेह़ तेरी त़रफ़ है, मैं तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा ऐ नेमत और अच्छे फ़ज़्ल वाले ! मैं तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा तेरी त़रफ़ रग़बत करता हुवा और डरता हुवा, तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा ऐ मख़्लूक़ के माबूद ! बार बार ह़ाज़िर हूं ह़क़ समझ कर इ़बादत और बन्दगी जान कर ख़ाक और कंकरियों की गिनती के मुवाफ़िक़। लब्बैक ! बार बार ह़ाज़िर हूं ऐ बुलन्दियों वाले ! बार बार ह़ाज़िरी है भागे हुए गुलाम की तेरे हुज़ूर। लब्बैक ! लब्बैक ! ऐ सख़्तियों को दूर करने वाले ! लब्बैक ! लब्बैक ! मैं तेरा बन्दा हूं। लब्बैक ! लब्बैक ! ऐ गुनाहों के बख़्शने वाले ! लब्बैक ! ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! ह़ज्जे फ़र्ज़ के अदा करने पर मेरी मदद कर और इस को मेरी त़रफ़ से क़बूल कर और मुझ को उन लोगों में कर जिन्हों ने तेरी बात क़बूल की और तेरे वादे पर ईमान लाए और तेरे अम्र का इत्तिबाअ़ किया और मुझ को अपने उस वफ़्द में कर दे जिन से तू राज़ी है और जिन को तू ने राज़ी किया और जिन को तू ने मक़्बूल बनाया। 12

www.dawateislami.net

मस्अला 1 लब्बैक के अल्फ़ाज़ जो मज़्कूर हुए इन में कमी न की जाए, ज़ियादा कर सकते हैं बल्कि बेहतर है मगर ज़ियादती आख़िर में हो दरमियान में न हो।[1] (جوہرہ)

मस्अला 2 जो शख़्स बुलन्द आवाज़ से लब्बैक कह रहा है तो उस को इस ह़ालत में सलाम न किया जाए कि मक्रूह है और अगर कर लिया तो ख़त्म कर के जवाब दे। हां, अगर जानता हो कि ख़त्म करने के बाद जवाब का मौक़अ़ न मिलेगा तो उस वक़्त जवाब दे सकता है।[2] (منسک)

मस्अला 3 एह़राम के लिये एक मरतबा ज़बान से लब्बैक कहना ज़रूरी है और अगर इस की जगह سُبْحَانَ اللّٰہ, या اَلْحَمْدُ لِلّٰہ, لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ या कोई और ज़िक्रे इलाही किया और एह़राम की निय्यत की तो एह़राम हो गया मगर सुन्नत लब्बैक कहना है।[3] (عالمگیری وغیرہ) गूंगा हो तो उसे चाहिये कि होंट को जुम्बिश दे।

मस्अला 4 एह़राम के लिये निय्यत शर्त़ है अगर बग़ैर निय्यत लब्बैक कहा एह़राम न हुवा। यूंही तन्हा निय्यत भी काफ़ी नहीं, जब तक लब्बैक या इस के क़ाइम मक़ाम कोई और चीज़ न हो।[4] (عالمگیری)

मस्अला 5 एह़राम के वक़्त लब्बैक कहे तो इस के साथ ही निय्यत भी हो येह बारहा मालूम हो चुका है कि निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं। दिल में इरादा न हो तो एह़राम ही न हुवा और बेहतर येह कि ज़बान से भी कहे, मसलन क़िरान में لَبَّیْکَ بِالْعُمْرَۃِ وَالْحَجِّ और तमत्तोअ़ में لَبَّیْکَ بِالْعُمْرَۃِ और इफ़राद में لَبَّیْکَ بِالْحَجِّ कहे।[5] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 6 दूसरे की त़रफ़ से ह़ज को गया तो उस की त़रफ़ से ह़ज करने की निय्यत करे और बेहतर येह कि लब्बैक में यूं कहे لَبَّیْکَ عَنْ فُلَان यानी फ़ुलां की जगह उस का नाम ले और अगर नाम न लिया मगर दिल में इरादा है जब भी ह़रज नहीं।[6] (منسک)

मस्अला 7 सोने वाले या मरीज़ या बेहोश की त़रफ़ से किसी और ने एह़राम बांधा तो वोह मोह़रिम हो गया जिस की त़रफ़ से एह़राम बांधा गया, मोह़रिम के अह़काम उस पर जारी

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، ص١٩٥.
2 ..... "لباب المناسك" و"المسلك المتقسط فى المنسك المتوسط"، (باب الاحرام)، ص١٠٢.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث في الاحرام، ج١، ص٢٢٢، وغيره.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث في الاحرام، ج١، ص٢٢٢.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، فصل في الاحرام، ج٣، ص٥٦٠.
6 ..... "المسلك المتقسط"، (باب الاحرام)، ص١٠١.

www.dawateislami.net

होंगे, किसी मम्नूअ़ का इरतिकाब किया तो कफ़्फ़ारा वग़ैरा उसी पर लाज़िम आएगा, इस पर नहीं जिस ने उस की त़रफ़ से एह़राम बांध दिया और एह़राम बांधने वाला ख़ुद भी मोह़रिम है और जुर्म किया तो एक ही जज़ा वाजिब होगी दो नहीं कि इस का एक ही एह़राम है। मरीज़ और सोने वाले की त़रफ़ से एह़राम बांधने में येह ज़रूरी है कि एह़राम बांधने का उन्हों ने हुक्म दिया हो और बेहोशी में इस की ज़रूरत नहीं।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 8 तमाम अफ़्आ़ले ह़ज अदा करने तक बेहोश रहा और एह़राम के वक़्त होश में था और अपने आप एह़राम बांधा था तो इस के साथ वाले तमाम मक़ामात में ले जाएं और अगर एह़राम के वक़्त भी बेहोश था उन्हीं लोगों ने एह़राम बांध दिया था तो ले जाना बेहतर है, ज़रूरी नहीं।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 9 एह़राम के बाद मजनून हुवा तो ह़ज सह़ीह़ है और जुर्म करेगा तो जज़ा लाज़िम।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 10 ना समझ बच्चे ने ख़ुद एह़राम बांधा या अफ़्आ़ले ह़ज अदा किये तो ह़ज न हुवा बल्कि उस का वली उस की त़रफ़ से बजा लाए मगर त़वाफ़ के बाद की दो रक्अ़तें कि बच्चे की त़रफ़ से वली न पढ़ेगा, इस के साथ बाप और भाई दोनों हों तो बाप अरकान अदा करे समझवाल बच्चा ख़ुद अफ़्आ़ले ह़ज अदा करे, रमी वग़ैरा बाज़ बातें छोड़ दीं तो इन पर कफ़्फ़ारा वग़ैरा लाज़िम नहीं। यूंही ना समझ बच्चे की त़रफ़ से उस के वली ने एह़राम बांधा और बच्चे ने कोई मम्नूअ़ काम किया तो बाप पर भी कुछ लाज़िम नहीं।[4]

(عالمگیری،ردالمحتار،منسک)

मस्अला 11 बच्चे की त़रफ़ से एह़राम बांधा तो उस के सिले हुए कपड़े उतार लेने चाहिये, चादर और तहबन्द पहनाएं और उन तमाम बातों से बचाएं जो मोह़रिम के लिये ना जाइज़ हैं और ह़ज को फ़ासिद कर दिया तो क़ज़ा वाजिब नहीं अगर्चे वोह बच्चा समझवाल हो।[5] (عالمگیری)

मस्अला 12 लब्बैक कहते वक़्त निय्यत क़िरान की है तो क़िरान है और इफ़्राद की है तो

1 ..... "ردالمحتار"، ، كتاب الحج،مطلب في مضاعفة الصلاة بمكة ج٣، ص٦٢٦.
2 ..... "الدرالمختار"، و "ردالمحتار"، كتاب الحج،مطلب في مضاعفة الصلاة بمكة ج٣، ص٦٢٦.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج،مطلب في مضاعفة الصلاة بمكة ج٣، ص٦٢٨.
4 ..... المرجع السابق.و"الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، فصل في المتفرقات، ج١، ص٢٣٦.
و"المسلك المتقسط" ، (باب الاحرام ،فصل في احرام الصبى)، ص١١٢.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، فصل في المتفرقات، ج١، ص٢٣٦.

www.dawateislami.net

इफ़्राद, अगर्चे ज़बान से न कहा हो। ह़ज के इरादे से गया और एह़राम के वक़्त निय्यत ह़ाज़िर न रही तो ह़ज है और अगर निय्यत कुछ न थी तो जब तक त़वाफ़ न किया हो उसे इख़्तियार है ह़ज का एह़राम क़रार दे या उ़मरह का और त़वाफ़ का एक फेरा भी कर चुका तो येह इह़राम उ़मरह का हो गया। यूंही त़वाफ़ से पहले जिमाअ़ किया या रोक दिया गया (जिस को इह़सार कहते हैं) तो उ़मरह क़रार दिया जाए यानी क़ज़ा में उ़मरह करना काफ़ी है।[1] (عالمگیری)

मस्अला 13 जिस ने ह़िज्जतुल इस्लाम न किया हो और ह़ज का एह़राम बांधा, फ़र्ज़ व नफ़्ल की निय्यत न की तो ह़िज्जतुल इस्लाम अदा हो गया।[2] (عالمگیری)

मस्अला 14 दो ह़ज का एह़राम बांधा तो दो ह़ज वाजिब हो गए और दो उ़मरह का तो दो उ़मरह। एह़राम बांधा और ह़ज या उ़मरह किसी ख़ास को मुअ़य्यन न किया फिर ह़ज का एह़राम बांधा तो पहला उ़मरह है और दूसरा उ़मरह का बांधा तो पहला ह़ज है और अगर दूसरे एह़राम में भी कुछ निय्यत न की तो क़िरान है।[3] (عالمگیری)

मस्अला 15 लब्बैक में ह़ज कहा और निय्यत उ़मरह की है या उ़मरह कहा और निय्यत ह़ज की है, तो जो निय्यत है वोह है, लफ़्ज़ का एतिबार नहीं और लब्बैक में ह़ज कहा और निय्यत दोनों की है तो क़िरान है।[4] (عالمگیری)

मस्अला 16 एह़राम बांधा और याद नहीं कि किस का बांधा था तो दोनों वाजिब हैं यानी क़िरान के अफ़्आ़ल बजा लाए कि पहले उ़मरह करे फिर ह़ज मगर क़िरान की क़ुरबानी इस के ज़िम्मे नहीं। अगर दो चीज़ों का एह़राम बांधा और याद नहीं कि दोनों ह़ज हैं या उ़मरह या ह़ज व उ़मरह तो क़िरान है और क़ुरबानी वाजिब। ह़ज का एह़राम बांधा और येह निय्यत नहीं कि किस साल करेगा तो इस साल का मुराद लिया जाएगा।[5] (عالمگیری)

मस्अला 17 मन्नत व नफ़्ल या फ़र्ज़ व नफ़्ल का एह़राम बांधा तो नफ़्ल है।[6] (عالمگیری)

मस्अला 18 अगर येह निय्यत की, कि फ़ुलां ने जिस का एह़राम बांधा उसी चीज़ का मेरा एह़राम है और बाद में मालूम हो गया कि उस ने किस चीज़ का एह़राम बांधा है तो उस का भी वोही है और मालूम न हुवा तो त़वाफ़ के पहले फेरे से पेश्तर जो चाहे मुअ़य्यन कर ले और त़वाफ़ का एक फेरा कर लिया तो उ़मरह का हो गया। यूंही त़वाफ़ से पहले जिमाअ़ किया

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث في الاحرام، ومما يتصل بذالك مسائل، ج١، ص٢٢٣.
2 ..... المرجع السابق. 3 .....المرجع السابق. 4 .....المرجع السابق.
5 .....المرجع السابق. 6 .....المرجع السابق.

www.dawateislami.net

या रोक दिया गया या वुक़ूफ़े अ़रफ़े का वक़्त न मिला तो उ़मरह का है।[1] (منسک)

मस्अला 19 ह़ज्जे बदल या मन्नत या नफ़्ल की निय्यत की तो जो निय्यत की वोही है अगर्चे उस ने अब तक ह़ज्जे फ़र्ज़ न किया हो और अगर एक ही ह़ज में फ़र्ज़ व नफ़्ल दोनों की निय्यत की तो फ़र्ज़ अदा होगा और अगर येह गुमान कर के एह़राम बांधा कि येह ह़ज मुझ पर लाज़िम है यानी फ़र्ज़ है या मन्नत, बाद को ज़ाहिर हुवा कि लाज़िम न था तो उस ह़ज को पूरा करना ज़रूरी हो गया। फ़ासिद करेगा तो क़ज़ा लाज़िम होगी, ब ख़िलाफ़ नमाज़ कि फ़र्ज़ समझ कर शुरूअ़ की थी बाद को मालूम हुवा कि फ़र्ज़ पढ़ चुका है तो पूरी करना ज़रूरी नहीं फ़ासिद करेगा तो क़ज़ा नहीं।[2] (منسک)

मस्अला 20 लब्बैक कहने के इ़लावा एक दूसरी सूरत भी एह़राम की है अगर्चे लब्बैक न कहना बुरा है कि तर्के सुन्नत है वोह येह कि बदना (यानी ऊंट या गाय) के गले में हार डाल कर ह़ज या उ़मरह या दोनों या दोनों में एक ग़ैरे मुअ़य्यन के इरादे से हांकता हुवा ले चला तो मोह़रिम हो गया अगर्चे लब्बैक न कहे, ख़्वाह वोह बदना नफ़्ल का हो या नज़्र का या शिकार का बदला या कुछ और। अगर दूसरे के हाथ बदना भेजा फिर ख़ुद गया तो जब तक रास्ते में उसे पा न ले मोह़रिम न होगा, लिहाज़ा अगर मीक़ात तक न पाया तो लब्बैक के साथ एह़राम बांधना ज़रूरी है। हां, अगर तमत्तोअ़ या क़िरान का जानवर है तो पा लेना शर्त नहीं मगर इस में येह ज़रूरी है कि ह़ज के महीनों में तमत्तोअ़ या क़िरान का बदना भेजा हो और इन्हीं महीनों में ख़ुद भी चला हो पेशतर से भेजना काम न देगा और अगर बकरी को हार पहना कर भेजा या ले चला या ऊंट गाय को हार न पहनाया बल्कि निशानी के लिये कोहान चीर दिया या झूल ओढ़ा दिया तो मोह़रिम न हुवा।[3] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 21 चन्द शख़्स बदना में शरीक हैं, उसे लिये जाते हैं सब के हुक्म से एक ने उसे हार पहनाया, सब मोह़रिम हो गए और बग़ैर उन के हुक्म के इस ने पहनाया तो येह मोह़रिम हुवा वोह न हुए।[4] (عالمگیری)

मस्अला 22 हार पहनाने के माना येह हैं कि ऊन या बाल की रस्सी में कोई चीज़ बांध कर उस के गले में लटका दें कि लोगों को मालूम हो जाए कि ह़रम शरीफ़ में क़ुरबानी के लिये है ताकि उस से कोई तअ़र्रुज़ न करे और रास्ते में थक गया और ज़ब्ह़ कर दिया तो उसे मालदार शख़्स न खाए।[5] (ردالمحتار)

1 ..... "المسلك المتقسط"، (باب الاحرام)، ص١٠٧. 2 ..... المرجع السابق.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث في الاحرام، ومما يتصل بذالك مسائل، ج١، ص٢٢٢.
و"الدرالمختار"، كتاب الحج، فصل في الاحرام، ج٣، ص٥٦٤_٥٦٦.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث في الاحرام، ومما يتصل بذالك مسائل، ج١، ص٢٢٢.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيما يصير به محرما، ج٣، ص٥٦٤.

www.dawateislami.net

मस्अला 23 इस सूरत में भी सुन्नत येही है कि बदना को हार पहनाने से पेश्तर लब्बैक कहे ।[1] (منسک)

वोह बातें जो एह़राम में ह़राम हैं

⑨ येह एह़राम था इस के होते ही येह काम ह़राम हो गए :

(1) औ़रत से सोह़बत ।

(2) बोसा । (3) मसास । (4) गले लगाना । (5) उस की अन्दामे निहानी पर निगाह जब कि येह चारों बातें ब शह्वत हों ।

(6) औ़रतों के सामने इस काम का नाम लेना ।

(7) फ़ोह़्श । (8) गुनाह हमेशा ह़राम थे अब और सख़्त ह़राम हो गए ।

(9) किसी से दुन्यवी लड़ाई झगड़ा ।

(10) जंगल का शिकार । (11) उस की त़रफ़ शिकार करने को इशारा करना ।

(12) या किसी त़रह़ बताना । (13) बन्दूक़ या बारूद या उस के ज़ब्ह़ करने को छुरी देना । (14) उस के अन्डे तोड़ना । (15) पर उखेड़ना । (16) पाउं या बाज़ू तोड़ना ।

(17) उस का दूध दोहना । (18) उस का गोश्त । या (19) अन्डे पकाना, भूनना ।

(20) बेचना । (21) ख़रीदना । (22) खाना ।

(23) अपना या दूसरे का नाख़ुन कतरना या दूसरे से अपना कतरवाना ।

(24) सर से पाउं तक कहीं से कोई बाल किसी त़रह़ जुदा करना ।

(25) मुंह, या (26) सर किसी कपड़े वग़ैरा से छुपाना ।

(27) बस्ता या कपड़े की बुक़्ची या गठरी सर पर रखना ।

(28) इमामा बांधना ।

(29) बुर्क़अ़ (30) दस्ताने पहनना ।

(31) मोज़े या जुराबें वग़ैरा जो वस्ते क़दम को छुपाए (जहां अ़रबी जूते का तस्मा होता है) पहनना अगर जूतियां न हों तो मोज़े काट कर पहनें कि वोह तस्मे की जगह न छुपे ।

(32) सिला कपड़ा पहनना ।

(33) ख़ुश्बू बालों, या (34) बदन, या (35) कपड़ों में लगाना ।

1 ..... "المسلك المتقسط" للقاری، (باب الاحرام)، ص ۱۰۵ .

www.dawateislami.net

(36) मलागीरी या कुसुम, केसर ग़रज़ किसी ख़ुश्बू के रंगे कपड़े पहनना जब कि अभी ख़ुश्बू दे रहे हों।

(37) ख़ालिस ख़ुश्बू मुश्क, अ़म्बर, ज़ाफ़रान, जावत्री, लोंग, इलायची, दारचीनी, ज़न्जबील वग़ैरा खाना।

(38) ऐसी ख़ुश्बू का आंचल में बांधना जिस में फ़िलह़ाल महक हो जैसे मुश्क, अ़म्बर, ज़ाफ़रान।

(39) सर या दाढ़ी को ख़त्मी या किसी ख़ुश्बूदार या ऐसी चीज़ से धोना जिस से जूएं मर जाएं।

(40) वस्मा या मेहंदी का ख़िज़ाब लगाना।

(41) गोंद वग़ैरा से बाल जमाना।

(42) ज़ैतून या (43) तिल का तेल अगर्चे बे ख़ुश्बू हो बालों या बदन में लगाना।

(44) किसी का सर मुंडना अगर्चे उस का एह़राम न हो।

(45) जूं मारना। (46) फेंकना। (47) किसी को इस के मारने का इशारा करना। (48) कपड़ा इस के मारने को धोना या (49) धूप में डालना। (50) बालों में पारा वग़ैरा इस के मारने को लगाना ग़रज़ जूं के हलाक पर किसी त़रह़ बाइ़स होना।[1]

एह़राम के मक्रूहात

⑩ एह़राम में येह बातें मक्रूह हैं :

(1) बदन का मैल छुड़ाना।

(2) बाल या बदन खली या साबून वग़ैरा बे ख़ुश्बू की चीज़ से धोना।

(3) कंघी करना। (4) इस त़रह़ खुजाना कि बाल टूटने या जूं के गिरने का अन्देशा हो।

(5) अंगरखा कुरता चुग़ा पहनने की त़रह़ कन्धों पर डालना।

(6) ख़ुश्बू की धूनी दिया हुवा कपड़ा कि अभी ख़ुश्बू दे रहा हो पहनना ओढ़ना।

(7) क़स्दन ख़ुश्बू सूंघना अगर्चे ख़ुश्बूदार फल या पत्ता हो जैसे लींबू, नारंगी, पोदीना, इत्रदाना।

(8) इत्र फ़रोश की दुकान पर इस ग़रज़ से बैठना कि ख़ुश्बू से दिमाग़ मुअ़त्त़र होगा।

(9) सर, या (10) मुंह पर पट्टी बांधना।

1 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج ١٠، ص ٧٣٢، وغيره.

www.dawateislami.net

(11) ग़िलाफ़े काबए मुअ़ज़्ज़मा के अन्दर इस त़रह़ दाख़िल होना कि ग़िलाफ़ शरीफ़ सर या मुंह से लगे।

(12) नाक वग़ैरा मुंह का कोई ह़िस्सा कपड़े से छुपाना।

(13) कोई ऐसी चीज़ खाना पीना जिस में ख़ुश्बू पड़ी हो और न वोह पकाई गई हो न बू ज़ाइल हो गई हो।

(14) बे सिला कपड़ा रफ़ू किया हुवा या पैवन्द लगा हुवा पहनना।

(15) तक्ये पर मुंह रख कर औंधा लैटना।

(16) महक्ती ख़ुश्बू हाथ से छूना जब कि हाथ में लग न जाए वरना ह़राम है।

(17) बाज़ू या गले पर तावीज़ बांधना अगर्चे बे सिले कपड़े में लपेट कर।

(18) बिला उ़ज़्र बदन पर पट्टी बांधना।

(19) सिंगार करना।

(20) चादर ओढ़ कर उस के आंचलों में गिरह दे लेना जैसे गांती बांधते हैं इस त़रह़ या किसी और त़रह़ पर जब कि सर खुला हो वरना ह़राम है।

(21) यूंही तहबन्द के दोनों कनारों में गिरह देना।

(22) तहबन्द बांध कर कमरबन्द या रस्सी से कसना।[1]

येह बातें एह़राम में जाइज़ हैं

⑪ **येह बातें एह़राम में जाइज़ हैं :**

(1) अंगरखा कुरता चुग़ा लैट कर ऊपर से इस त़रह़ डाल लेना कि सर और मुंह न छुपे।

(2) इन चीज़ों या पाजामे का तहबन्द बांध लेना।

(3) चादर के आंचलों को तहबन्द में घुरस्ना।

(4) हिम्यानी, या (5) पट्टी, या (6) हथियार बांधना।

(7) बे मैल छुड़ाए ह़म्माम करना।

(8) पानी में ग़ोता लगाना।

1 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج١٠، ص٧٣٣، وغيره.

www.dawateislami.net

(9) कपड़े धोना जब कि जूं मारने की ग़रज़ से न हो।

(10) मिस्वाक करना।

(11) किसी चीज़ के साए में बैठना।

(12) छत्री लगाना।

(13) अंगूठी पहनना।

(14) बे ख़ुश्बू का सुरमा लगाना।

(15) दाढ़ उखाड़ना।

(16) टूटे हुए नाख़ुन को जुदा कर देना।

(17) दुम्बल या फुन्सी तोड़ देना।

(18) ख़तना करना।

(19) फ़स्द।

(20) बग़ैर बाल मूंडे पछने कराना।

(21) आंख में जो बाल निकले उसे जुदा करना।

(22) सर या बदन इस त़रह़ आहिस्ता खुजाना कि बाल न टूटे।

(23) एह़राम से पहले जो ख़ुश्बू लगाई उस का लगा रहना।

(24) पालतू जानवर ऊंट, गाय, बकरी, मुर्ग़ी वग़ैरा ज़ब्ह़ करना। (25) पकाना। (26) खाना। (27) उस का दूध दोहना। (28) उस के अन्डे तोड़ना भूनना खाना।

(29) जिस जानवर को ग़ैर मोह़रिम ने शिकार किया और किसी मोह़रिम ने उस के शिकार या ज़ब्ह़ में किसी त़रह़ की मदद न की हो उस का खाना बशर्ते कि वोह जानवर न ह़रम का हो न ह़रम में ज़ब्ह़ किया गया हो।

(30) खाने के लिये मछली का शिकार करना।

(31) दवा के लिये किसी दरियाई जानवर का मारना, दवा या ग़िज़ा के लिये न हो निरी तफ़रीह़ के लिये हो जिस त़रह़ लोगों में राइज है तो शिकार दरिया का हो या जंगल का ख़ुद ही ह़राम है और एह़राम में सख़्त तर ह़राम।

www.dawateislami.net

(32) बैरूने ह़रम की घास उखाड़ना, या

(33) दरख़्त काटना।

(34) चील, (35) कव्वा, (36) चूहा, (37) गिरगिट, (38) छिपकली, (39) सांप, (40) बिच्छू, (41) खटमल, (42) मच्छर, (43) पिस्सू, (44) मख्खी वग़ैरा ख़बीस व मूज़ी जानवरों का मारना अगर्चे ह़रम में हो।

(45) मुंह और सर के सिवा किसी और जगह ज़ख़्म पर पट्टी बांधना।

(46) सर, या (47) गाल के नीचे तक्या रखना।

(48) सर, या (49) नाक पर अपना या दूसरे का हाथ रखना।

(50) कान कपड़े से छुपाना।

(51) ठोड़ी से नीचे दाढ़ी पर कपड़ा आना।

(52) सर पर सीनी या बोरी उठाना।

(53) जिस खाने के पकने में मुश्क वग़ैरा पड़े हों अगर्चे ख़ुश्बू दें, या

(54) बे पकाए जिस में कोई ख़ुश्बू डाली और वोह बू नहीं देती उस का खाना पीना।

(55) घी या चर्बी या कड़वा तेल या नारियल या बादाम कद्दू, काहू का तेल कि बसाया न हो बालों या बदन में लगाना।

(56) ख़ुश्बू के रंगे कपड़े पहनना जब कि उन की ख़ुश्बू जाती रही हो मगर कुसुम, केसर का रंग मर्द को वैसे ही ह़राम है।

(57) दीन के लिये झगड़ना बल्कि ह़स्बे ह़ाजत फ़र्ज़ो वाजिब है।

(58) जूता पहनना जो पाउं के उस जोड़ को न छुपाए।

(59) बे सिले कपड़े में लपेट कर तावीज़ गले में डालना।

(60) आईना देखना।

(61) ऐसी ख़ुश्बू का छूना जिस में फ़िलह़ाल महक नहीं जैसे अगर, लोबान, सन्दल, या (62) उस का आंचल में बांधना।

(63) निकाह़ करना।[1]

1 ..... "الفتاوى الرضوية"، ص٧٣٤، وغيره.

www.dawateislami.net

एह़राम में मर्द व औ़रत के फ़र्क़

⑫ इन मसाइले मज़्कूरा में मर्द औ़रत बराबर हैं, मगर औ़रत को चन्द बातें जाइज़ हैं :

सर छुपाना बल्कि ना महरम के सामने और नमाज़ में फ़र्ज़ है तो सर पर बिस्तर बुक़्चा उठाना ब दरजए औला। यूंही गोंद वग़ैरा से बाल जमाना, सर वग़ैरा पर पट्टी ख़्वाह बाज़ू या गले पर तावीज़ बांधना अगर्चे सी कर, ग़िलाफ़े काबा के अन्दर यूं दाख़िल होना कि सर पर रहे, मुंह पर न आए। दस्ताने, मोज़े, सिले कपड़े पहनना, औ़रत इतनी आवाज़ से लब्बैक न कहे कि ना महरम सुने। हां, इतनी आवाज़ हर पढ़ने में हमेशा सब को ज़रूरी है कि अपने कान तक आवाज़ आए।

तम्बीह : एह़राम में मुंह छुपाना औ़रत को भी ह़राम है, ना महरम के आगे कोई पंखा वग़ैरा मुंह से बचा हुवा सामने रखे।

⑬ जो बातें एह़राम में ना जाइज़ हैं वोह अगर किसी उ़ज़्र से या भूल कर हों तो गुनाह नहीं मगर उन पर जो जुर्माना मुक़र्रर है हर त़रह़ देना आएगा अगर्चे बे क़स्द हों या सह्वन या जबरन या सोते में।

⑭ त़वाफ़े क़ुदूम के सिवा वक़्ते एह़राम से रमिये जम्रा तक जिस का ज़िक्र आएगा अक्सर अवक़ात लब्बैक की बे शुमार कसरत रखे, उठते बैठते, चलते फिरते, वुज़ू बे वुज़ू हर ह़ाल में ख़ुसूसन चढ़ाई पर चढ़ते उतरते, दो क़ाफ़िलों के मिलते, सुब्ह़ शाम, पिछली रात, पांचों नमाज़ों के बाद, ग़रज़ येह कि हर ह़ालत के बदलने पर मर्द ब आवाज़ कहें मगर न इतनी बुलन्द कि अपने आप या दूसरे को तक्लीफ़ हो और औ़रतें पस्त आवाज़ से मगर न इतनी पस्त कि ख़ुद भी न सुनें।

दाख़िली ह़रमे मोह़तरम व मक्कए मुकर्रमा व मस्जिदुल ह़राम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِیْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۱۲۶﴾ وَاِذْ یَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَیْتِ وَاِسْمٰعِیْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۱۲۷﴾ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَیْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّیَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَیْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۲۸﴾ ﴾ (1)

(1) .....پ١، البقرة: ١٢٦ـ ١٢٨.

www.dawateislami.net

और जब इब्राहीम ने कहा : ऐ परवरदिगार ! इस शह्र को अम्न वाला कर दे और इस के अह्ल में से जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और पिछले दिन पर ईमान लाए उन्हें फलों से रोज़ी दे । फ़रमाया : और जिस ने कुफ़्र किया उसे भी कुछ बरत्ने को दूंगा, फिर उसे आग के अ़ज़ाब की त़रफ़ मुज़्त़र करूंगा और बुरा ठिकाना है वोह । और जब इब्राहीम व इस्माईल ख़ानए काबा की बुन्यादें बुलन्द करते हुए कहते थे : ऐ परवरदिगार ! तू हम से (इस काम को) क़बूल फ़रमा, बेशक तू ही है सुनने वाला, जानने वाला और हमें तू अपना फ़रमां बरदार बना और हमारी ज़ुर्रिय्यत से एक गिरौह को अपना फ़रमां बरदार बना और हमारे इ़बादत के त़रीक़े हम को दिखा और हम पर रुजूअ़ फ़रमा बेशक तू ही बड़ा तौबा क़बूल फ़रमाने वाला, रह़्म करने वाला है।

और फ़रमाता है :

﴿ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا یُّجْبٰۤى اِلَیْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَیْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ(۵۷) ﴾[1]

क्या हम ने उन को अम्न वाले ह़रम में क़ुदरत न दी कि वहां हर क़िस्म के फल लाए जाते हैं जो हमारी जानिब से रिज़्क़ हैं मगर बहुत से लोग नहीं जानते ।

और फ़रमाता है :

﴿ اِنَّمَاۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِیْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَیْءٍ وَّ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ(۹۱) ﴾[2]

मुझे तो येही हुक्म हुवा कि इस शह्र के परवरदिगार की इ़बादत करूं, जिस ने इसे ह़रम किया और उसी के लिये हर शै है और मुझे हुक्म हुवा कि मैं मुसलमानों में से रहूं ।

ह़दीस 1 व 2 सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़त्ह़े मक्का के दिन येह इरशाद फ़रमाया : "इस शह्र को **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने ह़रम (बुज़ुर्ग) कर दिया है जिस दिन आस्मानो ज़मीन को पैदा किया तो वोह रोज़े क़ियामत तक के लिये **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के किये से ह़रम है, मुझ से पहले किसी के लिये इस में क़िताल ह़लाल न हुवा और मेरे लिये सिर्फ़ थोड़े से वक़्त में ह़लाल हुवा, अब फिर वोह क़ियामत तक के लिये ह़राम है, न यहां का कांटे वाला दरख़्त काटा जाए न इस का शिकार भगाया जाए और न यहां का पड़ा हुवा माल कोई उठाए मगर जो एलान करना चाहता हो (उसे उठाना, जाइज़ है) और न यहां की तर घास काटी जाए।" ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! मगर इज़्ख़िर (एक क़िस्म की घास है कि उस के काटने की इजाज़त दीजिये) कि येह लोहारों और घर के बनाने में काम आती है । हुज़ूर

[1] ....پ۲۰، القصص: ۵۷. [2] ....پ۲۰، النمل: ۹۱.

www.dawateislami.net

(صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने इस की इजाज़त दे दी।[1] इसी की मिस्ल अबू शुरैह़ अ़दवी رَضِیَ اللهُ عَنْه से मरवी।

ह़दीस 3 इब्ने माजह अ़याश बिन अबी रबीआ़ मख़्ज़ूमी رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह उम्मत हमेशा ख़ैर के साथ रहेगी जब तक इस ह़ुर्मत की पूरी ताज़ीम करती रहेगी और जब लोग इसे ज़ाएअ़ कर देंगे हलाक हो जाएंगे।"[2]

ह़दीस 4 त़बरानी औसत़ में जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : काबे के लिये ज़बान और होंट हैं, उस ने शिकायत की, कि ऐ रब ! मेरे पास आने वाले और मेरी ज़ियारत करने वाले कम हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वह़ी की, कि "मैं ख़ुशूअ़ करने वाले, सज्दा करने वाले आदमियों को पैदा करूंगा जो तेरी त़रफ़ ऐसे माइल होंगे जैसे कबूतरी अपने अन्डे की त़रफ़ माइल होती है।"[3]

ह़दीस 5 सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में इब्ने उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मक्का में तशरीफ़ लाते तो ज़ी तुवा में रात गुज़ारते, जब सुब्ह़ होती ग़ुस्ल करते और नमाज़ पढ़ते और दिन में दाख़िले मक्का होते और जब मक्का से तशरीफ़ ले जाते तो सुब्ह़ तक ज़ी तुवा में क़ियाम फ़रमाते।[4]

दाख़िली ह़रम के अह़काम

① जब ह़रमे मक्का के मुत्तसिल पहुंचे सर झुकाए आंखें शर्मे गुनाह से नीची किये ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ से दाख़िल हो और हो सके तो पियादा नंगे पाउं और लब्बैक व दुआ़ की कसरत रखे और बेहतर येह कि दिन में नहा कर दाख़िल हो, ह़ैज़ो निफ़ास वाली औ़रत को भी नहाना मुस्तह़ब है।

② मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के गिर्दा गिर्द कई कोस तक ह़रम का जंगल है, हर त़रफ़ इस की ह़दें बनी हुई हैं, इन ह़दों के अन्दर तर घास उखेड़ना, ख़ुदरौ पेड़ काटना, वहां के वह़शी जानवर को तक्लीफ़ देना ह़राम है। यहां तक कि अगर सख़्त धूप हो और एक ही पेड़ है उस के साए में हिरन बैठा है तो जाइज़ नहीं कि अपने बैठने के लिये उसे उठाए और अगर वह़शी जानवर बैरूने ह़रम का उस के हाथ में था उसे लिये हुए ह़रम में दाख़िल हुवा अब वोह जानवर

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب تحريم مكة وتحريم صيدها ...إلخ، الحديث: ١٣٥٣، ص٧٠٦.
2 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب فضل مكة، الحديث: ٣١١٠، ج٣، ص٥١٩.
3 ..... "المعجم الأوسط"، باب الميم، الحديث: ٦٠٦٦، ج٤، ص٣٠٥.
4 ..... "مشكاة المصابيح"، كتاب المناسك، باب دخول مكة ...إلخ، الحديث: ٢٥٦١، ج٢، ص٨٦.

www.dawateislami.net

ह़रम का हो गया, फ़र्ज़ है कि फ़ौरन फ़ौरन छोड़ दे। मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में जंगली कबूतर[1] ब कसरत हैं, हर मकान में रहते हैं, ख़बरदार हरगिज़ हरगिज़ न उड़ाए, न डराए, न कोई ईज़ा पहुंचाए बाज़ इधर उधर के लोग जो मक्के में बसे कबूतरों का अदब नहीं करते उन की रेस न करे मगर बुरा उन्हें भी न कहे कि जब वहां के जानवर का अदब है तो मुसलमान इन्सान का क्या कहना ! येह बातें जो ह़रम के मुतअ़ल्लिक़ बयान की गईं एह़राम के साथ ख़ास नहीं एह़राम हो या न हो बहर ह़ाल येह बातें ह़राम हैं।

③ जब मक्कए मुअ़ज़्ज़मा नज़र पड़े ठहर कर येह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ لِّیْ بِهَا قَرَارًا وَّارْزُقْنِیْ فِیْهَا رِزْقًا حَلَالًا .[2]

और दुरूद शरीफ़ की कसरत करे और अफ़्ज़ल येह है कि नहा कर दाख़िल हो और मदफ़ूनीने जन्नतुल मअ़ला के लिये फ़ातिह़ा पढ़े और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल होते वक़्त येह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ وَاَنَا عَبْدُکَ وَالْبَلَدُ بَلَدُکَ جِئْتُکَ هَارِبًا مِّنْکَ اِلَیْکَ لِاُؤَدِّیَ فَرَآئِضَکَ وَاَطْلُبَ رَحْمَتَکَ وَاَلْتَمِسَ رِضْوَانَکَ اَسْأَلُکَ مَسْئَالَةَ الْمُضْطَرِّیْنَ اِلَیْکَ الْخَآئِفِیْنَ عُقُوْبَتَکَ اَسْأَلُکَ اَنْ تُقَبِّلَنِیَ الْیَوْمَ بِعَفْوِکَ وَتُدْخِلَنِیْ فِیْ رَحْمَتِکَ وَتَتَجَاوَزَ عَنِّیْ بِمَغْفِرَتِکَ وَتُعِیْنَنِیْ عَلٰی اَدَآءِ فَرَائِضِکَ اَللّٰهُمَّ نَجِّنِیْ مِنْ عَذَابِکَ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ وَاَدْخِلْنِیْ فِیْهَا وَاَعِذْنِیْ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط[3]

④ जब मदआ़ में पहुंचे येह वोह जगह है जहां से काबए मुअ़ज़्ज़मा नज़र आता था जब कि दरमियान में इ़मारतें ह़ाइल न थीं, येह अ़ज़ीम इजाबतो क़बूल का वक़्त है यहां ठहरे और सिदक़े दिल से अपने और तमाम अ़ज़ीज़ों, दोस्तों, मुसलमानों के लिये मग़्फ़िरत व आ़फ़ियत मांगे और जन्नते बिला ह़िसाब की दुआ़ करे और दुरूद शरीफ़ की कसरत इस मौक़अ़ पर निहायत अहम है। इस मक़ाम पर तीन बार اَللّٰهُ اَکْبَر और तीन मरतबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे और येह पढ़े :

---

1 ...**तर्जमा :** कहा जाता है कि येह कबूतर उस मुबारक जोड़े की नस्ल से हैं जिस ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की हिजरत के वक़्त ग़ारे सौर में अन्डे दिये थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस ख़िदमत के सिले में इन को अपने ह़रमे पाक में जगह बख़्शी। 12

2 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू मुझे इस में बर क़रार रख और मुझे इस में ह़लाल रोज़ी दे। 12

3 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हूं और येह शह़र तेरा शह़र है मैं तेरे पास तेरे अ़ज़ाब से भाग कर ह़ाज़िर हुवा कि तेरे फ़राइज़ को अदा करूं और तेरी रह़मत को त़लब करूं और तेरी रिज़ा को तलाश करूं, मैं तुझ से इस त़रह़ सुवाल करता हूं जैसे मुज़्त़र और तेरे अ़ज़ाब से डरने वाले सुवाल करते हैं, मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि आज तू अपने अ़फ़्व के साथ मुझ को क़बूल कर और अपनी रह़मत में मुझे दाख़िल कर और अपनी मग़्फ़िरत के साथ मुझ से दरगुज़र फ़रमा और फ़राइज़ की अदा पर मेरी इआ़नत कर। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मुझ को अपने अ़ज़ाब से नजात दे और मेरे लिये अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दे और उस में मुझे दाख़िल कर और शैत़ान मरदूद से मुझे पनाह में रख। 12

www.dawateislami.net

رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ط اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ مِنْ خَیْرِ مَا سَئَالَکَ مِنْهُ نَبِیُّکَ مُحَمَّدٌ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَاَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ مَا اسْتَعَاذَکَ مِنْهُ نَبِیُّکَ مُحَمَّدٌ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ ط[1]

और येह दुआ भी पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِیْمَانًا ۢ بِکَ وَتَصْدِیْقًا ۢ بِکِتَابِکَ وَوَفَاءً ۢ بِعَهْدِکَ وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِیِّکَ سَیِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ صَلِّ عَلَیْهِ وَسَلِّمِ اَللّٰهُمَّ زِدْ بَیْتَکَ هٰذَا تَعْظِیْمًا وَّ تَشْرِیْفًا وَّمَهَابَةً وَّزِدْ مِنْ تَعْظِیْمِهٖ وَتَشْرِیْفِهٖ مَنْ حَجَّهٗ وَاعْتَمَرَهٗ تَعْظِیْمًا وَّتَشْرِیْفًا وَّمَهَابَةً ط[2]

और येह दुआए जामेअ़ कम अज़ कम तीन बार इस जगह पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ هٰذَا بَیْتُکَ وَاَنَا عَبْدُکَ اَسْاَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ فِی الدِّیْنِ وَالدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَلِعَبِیْدِکَ اَمْجَدَ عَلِیْ اَللّٰهُمَّ انْصُرْهُ نَصْرًا[3] عَزِیْزًا. اٰمِیْنَ .[4]

मस्अला 1 जब मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में पहुंच जाए तो सब से पहले मस्जिदुल ह़राम में जाए। खाने पीने, कपड़े बदलने, मकान किराया लेने वग़ैरा दूसरे कामों में मश्ग़ूल न हो। हां, अगर उ़ज़्र हो मसलन सामान को छोड़ता है तो ज़ाएअ़ होने का अन्देशा है तो महफ़ूज़ जगह रखवाने या और किसी ज़रूरी काम में मश्ग़ूल हुवा तो ह़रज नहीं और अगर चन्द शख़्स हों तो बाज़ अस्बाब उतरवाने में मश्ग़ूल हों और बाज़ मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ को चले जाएं।[5] (منسک)

⑤ ज़िक्रे ख़ुदा व रसूल और अपने और तमाम मुसलमानों के लिये दुआए फ़लाह़े दारैन करता हुवा और लब्बैक कहता हुवा बाबुस्सलाम तक पहुंचे और उस आस्तानए पाक को

---

1 ...**तर्जमा :** ऐ रब ! तू दुन्या में हमें भलाई दे और आख़िरत में भलाई दे और जहन्नम के अ़ज़ाब से हमें बचा, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं उस ख़ैर में से सुवाल करता हूं जिस का तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने तुझ से सुवाल किया और तेरी पनाह मांगता हूं उन चीज़ों के शर से जिन से तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने पनाह मांगी। 12

2 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तुझ पर ईमान लाया और तेरी किताब की तस्दीक़ की और तेरे अ़ह्द को पूरा किया और तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ किया, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू अपने इस घर की ताज़ीमो शराफ़त व हैबत ज़ियादा कर और इस की ताज़ीमो तशरीफ़ से उस शख़्स की अ़ज़मतो शराफ़त व हैबत ज़ियादा कर जिस ने इस का ह़ज व उ़मरह किया। 12

3 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! येह तेरा घर है और मैं तेरा बन्दा हूं अ़फ़्वो आ़फ़ियत का सुवाल तुझ से करता हूं, दीनो दुन्या व आख़िरत में मेरे लिये और मेरे वालिदैन और तमाम मोमिनीनो मोमिनात के लिये और तेरे ह़क़ीर बन्दे अमजद अ़ली के लिये, इलाही ! तू इस की क़वी मदद कर। आमीन। 12

4 ...(और अब जब कि **शदरुश्शरीअ़ह** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی विसाल फ़रमा चुके, यूं दुआ करे : (اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ مَغْفِرَةً

5 ..... "المسلك المتقسط"، (باب دخول مكة)، ص ١٢٧.

www.dawateislami.net

बोसा दे कर पहले दाह़ना पाउं रख कर दाख़िल हो और येह कहे :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَ بِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَ سُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اَزْوَاجِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ .[1]

येह दुआ ख़ूब याद रखे, जब कभी मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ या और किसी मस्जिद में दाख़िल हो, इसी त़रह़ दाख़िल हो और येह दुआ पढ़ लिया करे और उस वक़्त ख़ुसूसिय्यत के साथ इस दुआ के साथ इतना और मिला ले :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ وَاِلَيْكَ يَرْجِعُ السَّلَامُ حَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَاَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ . اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا حَرَمُكَ وَمَوْضِعُ اَمْنِكَ فَحَرِّمْ لَحْمِيْ وَبَشَرِيْ وَدَمِيْ وَمُخِّيْ وَعِظَامِيْ عَلَى النَّارِ .[2]

और जब किसी मस्जिद से बाहर आए पहले बायां क़दम बाहर रखे और वोही दुआ पढ़े मगर अख़ीर में رَحْمَتِكَ की जगह فَضْلِكَ कहे और इतना और बढ़ाए :

وَسَهِّلْ لِّيْ اَبْوَابَ رِزْقِكَ .[3] इस की बरकात दीनो दुन्या में बे शुमार हैं । وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

⑥ जब काबए मुअ़ज़्ज़मा नज़र पड़े तीन बार لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر कहे और दुरूद शरीफ़ और येह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ زِدْ بَيْتَكَ هٰذَا تَعْظِيْمًا وَّتَشْرِيْفًا وَّ تَكْرِيْمًا وَّ بِرًّا وَّ مَهَابَةً اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ بِلَا حِسَابٍ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ اَنْ تَغْفِرَلِيْ وَتَرْحَمَنِيْ وَتُقِيْلَ عَثْرَتِيْ وَتَضَعَ وِزْرِيْ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ عَبْدُكَ وَزَائِرُكَ وَعَلٰى كُلِّ مَزُوْرٍ حَقٌّ وَّاَنْتَ خَيْرُ مَزُوْرٍ فَاَسْاَلُكَ اَنْ تَرْحَمَنِيْ

---

1 ...**तर्जमा :** मैं ख़ुदाए अ़ज़ीम की पनाह मांगता हूं और उस के वज्हे करीम की और क़दीम सल्त़नत की मरदूद शैत़ान से, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नाम की मदद से सब ख़ूबियां **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये और रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) पर सलाम, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! दुरूद भेज हमारे आक़ा मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) और उन की आल और बीबियों पर । इलाही ! मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे लिये अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दे । 12

2 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू सलाम है और तुझी से सलामती है और तेरी ही त़रफ़ सलामती लौटती है, ऐ हमारे रब ! हम को सलामती के साथ ज़िन्दा रख दारुस्सलाम (जन्नत) में दाख़िल कर, ऐ हमारे रब ! तू बरकत वाला और बुलन्द है । ऐ जलालो बुजुर्गी वाले, इलाही ! येह तेरा ह़रम है और तेरी अम्न की जगह है मेरे गोश्त और पोस्त और ख़ून और मग़्ज़ और हड्डियों को जहन्नम पर ह़राम कर दे । 12

3 ...**तर्जमा :** और मेरे लिये अपने रिज़्क़ के दरवाज़े आसान कर दे । 12

www.dawateislami.net

وَتَفُكَّ رَقَبَتِیْ مِنَ النَّارِ .[1]

त़वाफ़ व सइ्ये सफ़ा व मर्वह व उ़मरह का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿وَ اِذْ جَعَلْنَا الْبَیْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَ اَمْنًا ؕ وَ اتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ وَ عَهِدْنَاۤ اِلٰۤى اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ اَنْ طَهِّرَا بَیْتِیَ لِلطَّآىٕفِیْنَ وَ الْعٰكِفِیْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ۝۱۲۵﴾[2]

और याद करो जब कि हम ने काबे को लोगों का मर्जअ़ और अम्न किया और मक़ामे इब्राहीम से नमाज़ पढ़ने की जगह बनाओ और हम ने इब्राहीम व इस्माईल की त़रफ़ अ़ह्द किया कि मेरे घर को त़वाफ़ करने वालों और एतिकाफ़ करने वालों और रुकूअ़ सुजूद करने वालों के लिये पाक करो ।

और फ़रमाता है :

﴿وَ اِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِیْمَ مَكَانَ الْبَیْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِیْ شَیْــٴًـا وَّ طَهِّرْ بَیْتِیَ لِلطَّآىٕفِیْنَ وَ الْقَآىٕمِیْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ۝۲۶ وَ اَذِّنْ فِی النَّاسِ بِالْحَجِّ یَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّ عَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ یَّاْتِیْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِیْقٍ ۝۲۷ لِّیَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَ یَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ فِیْۤ اَیَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِیْمَةِ الْاَنْعَامِ ۚ فَكُلُوْا مِنْهَا وَ اَطْعِمُوا الْبَآىِٕسَ الْفَقِیْرَ ۝۲۸ ثُمَّ لْیَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَ لْیُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَ لْیَطَّوَّفُوْا بِالْبَیْتِ الْعَتِیْقِ ۝۲۹ ذٰلِكَ ۬ؕ وَ مَنْ یُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللّٰهِ فَهُوَ خَیْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ﴾[3]

और जब कि हम ने इब्राहीम को पनाह दी ख़ानए काबा की जगह में यूं कि मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न कर और मेरे घर को त़वाफ़ करने वालों और क़ियाम करने वालों और रुकूअ़ सज्दा करने वालों के लिये पाक कर और लोगों में ह़ज का एलान कर दे लोग तेरे पास पैदल आएंगे और लाग़र ऊंटनियों पर कि हर राहे बईद से आएंगी ताकि अपने नफ़्अ़ की जगह में ह़ाज़िर हों और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नाम को याद करें मालूम दिनों में इस पर कि उन्हें

1...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू अपने घर की अ़ज़मतो शराफ़तो बुज़ुर्गी व निकोई व हैबत ज़ियादा कर, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हम को जन्नत में बिला ह़िसाब दाख़िल कर । इलाही ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि मेरी मग़्फ़िरत कर दे और मुझ पर रह़्म कर और मेरी लग़्ज़िश दूर कर और अपनी रह़मत से मेरे गुनाह दफ़्अ़ कर, ऐ सब मेह़रबानों से ज़ियादा मेह़रबान । इलाही ! मैं तेरा बन्दा और तेरा ज़ाइर हूं और जिस की ज़ियारत की जाए उस पर ह़क़ होता है और तू सब से बेहतर ज़ियारत किया हुवा है, मैं येह सुवाल करता हूं कि मुझ पर रह़्म कर और मेरी गरदन जहन्नम से आज़ाद कर । 12

2 .....پ۱، البقرة: ۱۲۵. 3 .....پ۱۷، الحج: ۲۶-۳۰.

www.dawateislami.net

चौपाए जानवर अ़त़ा किये तो उन में से खाओ और ना उम्मीद फ़क़ीर को खिलाओ फिर अपने मैल कुचैल उतारें और अपनी मन्नतें पूरी करें और इस आज़ाद घर (काबे) का त़वाफ़ करें बात येह है और जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हुरुमात की ताज़ीम करे तो येह उस के लिये उस के रब के नज़्दीक बेहतर है।

और फ़रमाता है :

﴿اِنَّ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآىِٕرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَیْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِ اَنْ یَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَ مَنْ تَطَوَّعَ خَیْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِیْمٌ ۝۱۵۸﴾[1]

बेशक सफ़ा व मर्वह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की निशानियों से हैं जिस ने काबे का ह़ज या उ़मरह किया उस पर इस में गुनाह नहीं कि इन दोनों का त़वाफ़ करे और जिस ने ज़ियादा ख़ैर किया तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) बदला देने वाला, इ़ल्म वाला है।

ह़दीस 1 सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से मरवी, फ़रमाती हैं कि जब नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ह़ज के लिये मक्के में तशरीफ़ लाए, सब कामों से पहले वुज़ू कर के बैतुल्लाह का त़वाफ़ किया।[2]

ह़दीस 2 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़जरे अस्वद से ह़जरे अस्वद तक तीन फेरों में रमल किया और चार फेरे चल कर किये[3] और एक रिवायत में है फिर सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई फ़रमाई।[4]

ह़दीस 3 सह़ीह़ मुस्लिम में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जब मक्के में तशरीफ़ लाए तो ह़जरे अस्वद के पास आ कर उसे बोसा दिया फिर दह़ने हाथ को चले और तीन फेरों में रमल किया।[5]

ह़दीस 4 सह़ीह़ मुस्लिम में अबुत्तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, कहते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को बैतुल्लाह का त़वाफ़ करते देखा और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) के दस्ते मुबारक में छड़ी थी उस छड़ी को ह़जरे अस्वद से लगा कर बोसा देते।[6]

1 .....پ۲، البقرة: ۱۵۸.
2 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الحج، باب من طاف بالبيت ...إلخ، الحديث: ۱٦۱٤، ج۱، ص٥٤۱.
3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب استحباب الرمل فى الطواف ...إلخ، الحديث: ۱۲٦۲، ص٦٥٩.
4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب استحباب الرمل فى الطواف ...إلخ، الحديث: ۱۲٦۱، ص٦٥٨.
5 ..... "مشكاة المصابيح" كتاب المناسك، باب دخول مكة ...إلخ، الحديث: ۲٥٦٦، ج۲، ص۸٦.
6 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب جواز الطواف على بعير وغيره ...إلخ، الحديث: ۱۲۷٥، ص٦٦۳.

www.dawateislami.net

ह़दीस 5 अबू दावूद ने अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मक्के में दाख़िल हुए तो ह़जरे अस्वद की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए, उसे बोसा दिया फिर त़वाफ़ किया फिर सफ़ा के पास आए और उस पर चढ़े यहां तक कि बैतुल्लाह नज़र आने लगा फिर हाथ उठा कर ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहे, जब तक ख़ुदा ने चाहा और दुआ़ की।[1]

ह़दीस 6 इमाम अह़मद ने उ़बैद बिन उ़मैर से रिवायत की, कहते हैं : मैं ने इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से पूछा क्या वज्ह है कि आप ह़जरे अस्वद व रुक्ने यमानी को बोसा देते हैं ? जवाब दिया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि इन को बोसा देना ख़त़ाओं को गिरा देता है और मैं ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) को फ़रमाते सुना : "जिस ने सात फेरे त़वाफ़ किया इस त़रह़ कि इस के आदाब को मल्ह़ूज़ रखा और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी तो येह गरदन आज़ाद करने की मिस्ल है और मैं ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) को फ़रमाते सुना कि त़वाफ़ में हर क़दम कि उठाता और रखता है इस पर दस नेकियां लिखी जाती हैं और दस गुनाह मिटाए जाते हैं और दस दरजे बुलन्द किये जाते हैं।"[2] इसी के क़रीब क़रीब तिरमिज़ी व ह़ाकिम व इब्ने ख़ुज़ैमा वग़ैरहुम ने भी रिवायत की।

ह़दीस 7 त़बरानी कबीर में मुह़म्मद बिन मुन्कदिर से रावी, वोह अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो बैतुल्लाह का सात फेरे त़वाफ़ करे और उस में कोई लग़्व बात न करे तो ऐसा है जैसे गरदन आज़ाद की।"[3]

ह़दीस 8 अस्बहानी अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी, कहते हैं : जिस ने कामिल वुज़ू किया फिर ह़जरे अस्वद के पास बोसा देने को आया वोह रह़मत में दाख़िल हुवा, फिर जब बोसा दिया और येह पढ़ा

بِسْمِ اللّٰہِ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ اَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ

उसे रह़मत ने ढांक लिया फिर जब बैतुल्लाह का त़वाफ़ किया तो हर क़दम के बदले सत्तर हज़ार नेकियां लिखी जाएंगी और सत्तर हज़ार गुनाह मिटा दिये जाएंगे और सत्तर हज़ार दरजे बुलन्द किये जाएंगे और अपने घर वालों में सत्तर की शफ़ाअ़त करेगा फिर जब मक़ामे इब्राहीम पर आया और वहां दो रक्अ़त नमाज़ ईमान की वज्ह से और त़लबे सवाब के लिये पढ़ी तो उस के लिये औलादे इस्माईल में से चार ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब लिखा जाएगा और गुनाहों से ऐसा निकल जाएगा जैसे आज अपनी मां से पैदा हुवा।[4]

1 ..... "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، باب فی رفع اليد إذا رأى البيت، الحديث: ١٨٧٢، ج٢، ص٢٥٥.
2 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، الحديث: ٤٤٦٢، ج٢، ص٢٠٢.
3 ..... "المعجم الكبير"، الحديث: ٨٤٥، ج٢٠، ص٣٦٠.
4 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب فی الطواف ...إلخ، الحديث: ١١، ج٢، ص١٢٤.

www.dawateislami.net

ह़दीस 9 बैहक़ी इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "बैतुल ह़राम के ह़ज करने वालों पर हर रोज़ **अल्लाह** तआ़ला एक सो बीस रह़मत नाज़िल फ़रमाता है, साठ त़वाफ़ करने वालों के लिये और चालीस नमाज़ पढ़ने वालों के लिये और बीस नज़र करने वालों के लिये।"(1)

ह़दीस 10 इब्ने माजह अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "रुक्ने यमानी पर सत्तर फ़रिश्ते मुवक्कल हैं, जो येह दुआ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَۃَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّ فِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ .

वोह फ़रिश्ते आमीन कहते हैं और जो सात फेरे त़वाफ़ करे और येह पढ़ता रहे : سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ उस के दस गुनाह मिटा दिये जाएंगे और दस नेकियां लिखी जाएंगी और दस दरजे बुलन्द किये जाएंगे और जिस ने त़वाफ़ में येही कलाम पढ़े वोह रह़मत में अपने पाउं से चल रहा है जैसे कोई पानी में पाउं से चलता है।"(2)

ह़दीस 11 तिरमिज़ी ने इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने पचास मरतबा त़वाफ़ किया, गुनाहों से ऐसा निकल गया जैसे आज अपनी मां से पैदा हुवा।"(3)

ह़दीस 12 तिरमिज़ी व नसाई व दारिमी इन्हीं से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बैतुल्लाह के गिर्द त़वाफ़ नमाज़ की मिस्ल है, फ़र्क़ येह कि तुम इस में कलाम करते हो तो जो कलाम करे ख़ैर के सिवा हरगिज़ कोई बात न कहे।"(4)

ह़दीस 13 इमाम अह़मद व तिरमिज़ी इन्हीं से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "ह़जरे अस्वद जब जन्नत से नाज़िल हुवा, दूध से ज़ियादा सफ़ेद था, बनी आदम की ख़त़ाओं ने इसे सियाह कर दिया।"(5)

ह़दीस 14 तिरमिज़ी इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी, कहते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि "ह़जरे अस्वद व मक़ामे इब्राहीम जन्नत के याक़ूत हैं, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने इन के नूर को मिटा दिया और अगर न मिटाता तो जो कुछ मशरिक़ो मग़रिब के दरमियान है सब को रोशन कर देते।"(6)

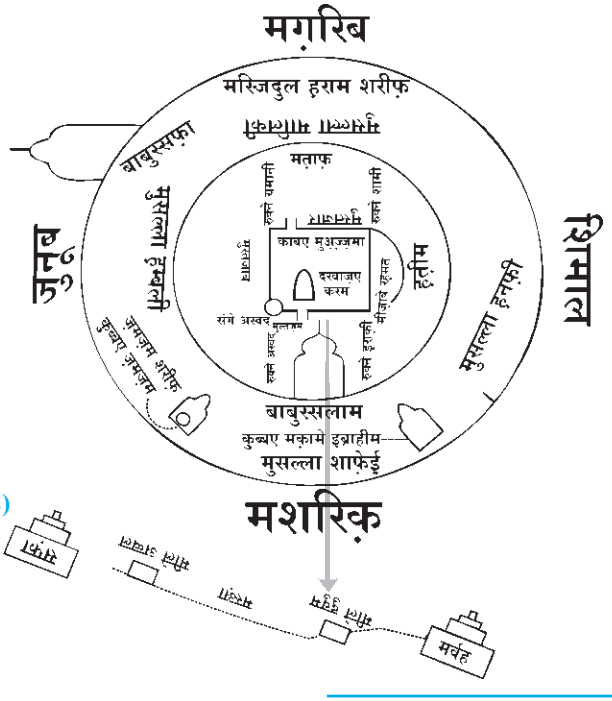
1 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في الطواف ...إلخ، الحديث:٦، ج٢، ص١٢٣.
2 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب فضل الطواف، الحديث: ٢٩٥٧، ج٣، ص٤٣٩.
3 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في فضل الطواف، الحديث: ٨٦٧، ج٢، ص٢٤٤.
4 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في الكلام في الطواف، الحديث: ٩٦٢، ج٢، ص٢٨٦.
5 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في فضل الحجر الاسود و الركن و المقام، الحديث: ٨٧٨، ج٢، ص٢٤٨.
6 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في فضل الحجر الاسود و الركن و المقام، الحديث: ٨٧٩، ج٢، ص٢٤٨.

www.dawateislami.net

ह़दीस 15 तिरमिज़ी व इब्ने माजह व दारिमी इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**वल्लाह** ! ह़जरे अस्वद को क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला इस त़रह़ उठाएगा कि उस की आंखें होंगी जिन से देखेगा और ज़बान होगी जिस से कलाम करेगा, जिस ने ह़क़ के साथ इसे बोसा दिया है उस के लिये शहादत देगा ।"(1)

बयाने अह़काम

मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में दाख़िल होने तक के अह़काम मालूम हो चुके अब कि मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में दाख़िल हुवा अगर जमाअ़त क़ाइम हो या नमाज़े फ़र्ज़ या वित्र या नमाज़े जनाज़ा या सुन्नते मुअक्कदा के फ़ौत का ख़ौफ़ हो तो पहले उन को अदा करे, वरना सब कामों से पहले त़वाफ़ में मश्ग़ूल हो । काबा शम्अ़ है और तू परवाना, देखता नहीं कि परवाना शम्अ़ के गिर्द किस त़रह़ क़ुरबान होता है ! तू भी इस शम्अ़ पर क़ुरबान होने के लिये मुस्तइ़द हो जा । पहले इस मक़ामे करीम का नक़्शा देखिये कि जो बात कही जाए अच्छी त़रह़ ज़ेह़न में आ जाए ।



(2)

1 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء فی الحجر الاسود، الحدیث: ۹۶۳، ج۲، ص۲۸۶.

2 ...बहारे शरीअ़त के नुस्ख़ों में इस मक़ाम पर सफ़ा, मर्वह का नक़्शा जुनूब की त़रफ़ बना हुवा था जो कि किताबत की ग़लत़ी है अस्ल में येह नक़्शा मशरिक़ की त़रफ़ है लिहाज़ा हम ने यहां पर नक़्शा दुरुस्त कर दिया है ।.....**इल्मिय्या**

www.dawateislami.net

मस्जिदुल ह़राम एक गोल वसीअ़ इह़ाता है, जिस के कनारे कनारे ब कसरत दालान और आने जाने के दरवाज़े हैं और बीच में मत़ाफ़ (त़वाफ़ करने की जगह)।

मत़ाफ़ एक गोल दायरा है जिस में संगे मरमर बिछा है, इस के बीच में **काबए मुअ़ज़्ज़मा** है। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने में मस्जिदुल ह़राम इसी क़दर थी। इसी की ह़द पर **बाबुस्सलाम** शर्क़ी क़दीम दरवाज़ा वाक़ेअ़ है।

रुक्न मकान का गोशा जहां इस की दो दीवारें मिलती हैं, जिसे ज़ाविया कहते हैं। इस त़रह़ ا-ب-ج दोनों दीवारें मक़ाम ج पर मिली हैं येह रुक्न व ज़ाविया है।

काबए मुअ़ज़्ज़मा के चार रुक्न हैं :

रुक्ने अस्वद जुनूब व शर्क़[1] के गोशे में इसी में ज़मीन से ऊंचा संगे अस्वद शरीफ़ नस्ब है।

रुक्ने इराक़ी शर्क़ व शिमाल के गोशे में। दरवाज़ए काबा इन्हीं दो रुक्नों के बीच की शर्क़ी दीवार में ज़मीन से बहुत बुलन्द है।

मुल्तज़म इसी शर्क़ी दीवार का वोह टुकड़ा जो रुक्ने अस्वद से दरवाज़ए काबा तक है।

रुक्ने शामी उत्तर[2] और पश्चिम[3] के गोशे में।

मीज़ाबे रह़मत सोने का परनाला कि रुक्ने इराक़ी व शामी की बीच की शिमाली दीवार पर छत में नस्ब है।

ह़तीम भी इसी शिमाली दीवार की त़रफ़ है। येह ज़मीन[4] काबए मुअ़ज़्ज़मा ही की थी। ज़मानए जाहिलिय्यत में जब क़ुरैश ने काबा अज़ सरे नौ तामीर किया, कमिये ख़र्च के बाइ़स इतनी ज़मीन काबए मुअ़ज़्ज़मा से बाहर छोड़ दी। इस के गिर्दा गिर्द एक क़ौसी अन्दाज़ की छोटी सी दीवार खींच दी और दोनों त़रफ़ आमदो रफ़्त का दरवाज़ा है और येह मुसलमानों की ख़ुश नसीबी है, इस में दाख़िल होना काबए मुअ़ज़्ज़मा ही में दाख़िल होना है जो بِحَمْدِاللهِ تَعَالٰى बे तकल्लुफ़ नसीब होता है।

रुक्ने यमानी पश्चिम और दख्खन[5] के गोशे में।

मुस्तजार रुक्ने यमानी व शामी के बीच की ग़र्बी दीवार का वोह टुकड़ा जो मुल्तज़म के मुक़ाबिल है।

मुस्तजाब रुक्ने यमानी व रुक्ने अस्वद के बीच में जो दीवारे जुनूबी है, यहां सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दुआ पर आमीन कहने के लिये मुक़र्रर हैं इस लिये इस का नाम मुस्तजाब रखा गया।

1...जुनूब और मशरिक़। 2...शिमाल।

3...मग़रिब। वोह सम्त जिधर सूरज डूबता है।

4...जुनूबन शिमालन छे हाथ काबे की ज़मीन है और बाज़ कहते हैं सात हाथ और बाज़ का ख़याल है कि सारा ह़तीम। 12 5...जुनूब की सम्त।

www.dawateislami.net

मक़ामे इब्राहीम दरवाज़ए काबा के सामने एक कुब्बे में वोह पथ्थर है जिस पर खड़े हो कर सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने काबा बनाया था, उन के क़दमे पाक का इस पर निशान[1] हो गया जो अब तक मौजूद है और जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ **अल्लाह** की खुली निशानियां फ़रमाया।

ज़मज़म शरीफ़ का कुब्बा मक़ामे इब्राहीम से जुनूब को मस्जिद शरीफ़ ही में वाक़ेअ़ है और इस कुब्बे के अन्दर ज़मज़म का कूंवां है।

बाबुस्सफ़ा मस्जिद शरीफ़ के जुनूबी दरवाज़ों में एक दरवाज़ा है जिस से निकल कर सामने कोहे सफ़ा है।

सफ़ा काबए मुअ़ज़्ज़मा से जुनूब को है यहां ज़मानए क़दीम में एक पहाड़ी थी कि ज़मीन में छुप गई है। अब वहां क़िब्ला रुख़ एक दालान सा बना है और चढ़ने की सीढ़ियां।

मर्वह दूसरी पहाड़ी सफ़ा से पूरब को थी यहां भी अब क़िब्ला रुख़ दालान सा है और सीढ़ियां, सफ़ा से मर्वह तक जो फ़ासिला है अब यहां बाज़ार है। सफ़ा से चलते हुए दहने हाथ को दुकानें और बाएं हाथ को इह़ात़ए मस्जिदुल ह़राम है।

मीलैने अख़ज़रैन इस फ़ासिले के वस्त़ में जो सफ़ा से मर्वह तक है दीवारे ह़रम शरीफ़ में दो सब्ज़ मील नस्ब हैं जैसे मील के शुरूअ़ में पथ्थर लगा होता है।

मस्आ़ वोह फ़ासिला कि इन दोनों मीलों के बीच में है। येह सब सूरतें रिसाले में बार बार देख कर ख़ूब ज़ेहन नशीन कर लीजिये कि वहां पहुंच कर पूछने की ह़ाजत न हो। ना वाक़िफ़ आदमी अन्धे की त़रह़ काम करता है और जो समझ लिया वोह अंख्यिारा है, अब अपने रब عَزَّوَجَلَّ का नामे पाक ले कर त़वाफ़ कीजिये।

त़वाफ़ का त़रीक़ा और दुआ़एं

(1) जब ह़जरे अस्वद के क़रीब पहुंचे तो येह दुआ़ पढ़े :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ صَدَقَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.[2]

1...हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के क़दमे पाक के निशान में बे क़द्रे, बे अदब लोग कलाम करते हैं, येह मोजिज़ए इब्राहीमी हज़ारों बरस से महफ़ूज़ है इस से भी इन्कार कर दें। 12

2...**अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं, वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं, उस ने अपना वादा सच्चा किया और अपने बन्दे की मदद की और तन्हा उसी ने कुफ़्फ़ार की जमाअ़तों को शिकस्त दी, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं, वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये मुल्क है और उसी के लिये ह़म्द है और वोह हर शै पर क़ादिर है। 12

www.dawateislami.net

(2) शुरूए त़वाफ़ से पहले मर्द **इज़्त़िबाअ़** कर ले यानी चादर को दह्नी बग़ल के नीचे से निकाले कि दह्ना मूंढा खुला रहे और दोनों कनारे बाएं मूंढे पर डाल दे।

(3) अब काबे की त़रफ़ मुंह कर के ह़जरे अस्वद की दह्नी त़रफ़ रुक्ने यमानी की जानिब संगे अस्वद के क़रीब यूं खड़ा हो कि तमाम पथ्थर अपने दह्ने हाथ को रहे फिर त़वाफ़ की निय्यत करे।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ طَوَافَ بَیْتِکَ الْمُحَرَّمِ فَیَسِّرْہُ لِیْ وَتَقَبَّلْہُ مِنِّیْ. [1]

(4) इस निय्यत के बाद काबे को मुंह किये अपनी दह्नी जानिब चलो, जब संगे अस्वद के मुक़ाबिल हो (और येह बात अदना ह़रकत में ह़ासिल हो जाएगी) कानों तक हाथ इस त़रह़ उठाओ कि हथेलियां ह़जरे अस्वद की त़रफ़ रहें और कहो بِسْمِ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَالصَّلَاۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ ط और निय्यत के वक़्त हाथ न उठाओ जैसे बाज़ मुत़व्विफ़ करते हैं कि येह बिद्अ़त है।

(5) मुयस्सर हो सके तो ह़जरे अस्वद पर दोनों हथेलियां और उन के बीच में मुंह रख कर यूं बोसा दो कि आवाज़ न पैदा हो, तीन बार ऐसा ही करो येह नसीब हो तो कमाले सआ़दत है। यक़ीनन तुम्हारे मह़बूब व मौला मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इसे बोसा दिया और रूए अक़्दस इस पर रखा। ज़हे ख़ुश नसीबी कि तुम्हारा मुंह वहां तक पहुंचे और हुजूम के सबब न हो सके तो न औरों को ईज़ा दो, न आप दबो कुचलो बल्कि इस के इ़वज़ हाथ से छू कर उसे चूम लो और हाथ न पहुंचे तो लकड़ी से छू कर उसे चूम लो और येह भी न हो सके तो हाथों से उस की त़रफ़ इशारा कर के उन्हें बोसा दे लो, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के मुंह रखने की जगह पर निगाहें पड़ रही हैं येही क्या कम है और ह़जर को बोसा देने या हाथ या लकड़ी से छू कर चूम लेने या इशारा कर के हाथों को बोसा देने को **इस्तिलाम** कहते हैं। इस्तिलाम के वक़्त येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَطَھِّرْلِیْ قَلْبِیْ وَاشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ وَیَسِّرْلِیْ اَمْرِیْ وَعَافِنِیْ فِیْمَنْ عَافَیْتَ. [2]

ह़दीस में है : "रोज़े क़ियामत येह पथ्थर उठाया जाएगा, इस की आंखें होंगी जिन से देखेगा, ज़बान होगी जिस से कलाम करेगा, जिस ने ह़क़ के साथ इस का बोसा दिया और इस्तिलाम किया उस के लिये गवाही देगा।"

(6) اَللّٰھُمَّ اِیْمَانًا بِکَ وَتَصْدِیْقًا بِکِتَابِکَ وَوَفَاءً بِعَھْدِکَ وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّۃِ نَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ صَلَّی

---

1 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तेरे इ़ज़्ज़त वाले घर का त़वाफ़ करना चाहता हूं इस को तू मेरे लिये आसान कर और इस को मुझ से क़बूल कर। 12

2 ...इलाही ! तू मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे दिल को पाक कर और मेरे सीने को खोल दे और मेरे काम को आसान कर और मुझे आ़फ़ियत दे उन लोगों में जिन को तू ने आ़फ़ियत दी। 12

www.dawateislami.net

اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْکَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَکَفَرْتُ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ .[1]

कहते हुए दरवाज़ए काबा की त़रफ़ बढ़ो, जब ह़जरे मुबारक के सामने से गुज़र जाओ सीधे हो लो। ख़ानए काबा को अपने बाएं हाथ पर ले कर यूं चलो कि किसी को ईज़ा न दो।

(7) पहले तीन फेरों में मर्द **रमल** करता चले यानी जल्द जल्द छोटे क़दम रखता, शाने हिलाता जैसे क़वी व बहादुर लोग चलते हैं, न कूदता न दौड़ता, जहां ज़ियादा हुजूम हो जाए और रमल में अपनी या दूसरे की ईज़ा हो तो उतनी देर रमल तर्क करे मगर रमल की ख़ातिर रुके नहीं बल्कि त़वाफ़ में मश्ग़ूल रहे फिर जब मौक़अ़ मिल जाए तो जितनी देर तक के लिये मिले रमल के साथ त़वाफ़ करे।

(8) त़वाफ़ में जिस क़दर ख़ानए काबा से नज़्दीक हो बेहतर है मगर न इतना कि पुश्तए दीवार पर जिस्म लगे या कपड़ा और नज़्दीकी में कस्रते हुजूम के सबब रमल न हो सके तो दूरी बेहतर है।

(9) जब मुल्तज़म के सामने आए येह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ هٰذَا الْبَیْتُ بَیْتُکَ وَالْحَرَمُ حَرَمُکَ وَالْاَمْنُ اَمْنُکَ وَهٰذَا مَقَامُ الْعَائِذِ بِکَ مِنَ النَّارِ فَاَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ اَللّٰهُمَّ قَنِّعْنِیْ بِمَا رَزَقْتَنِیْ وَبَارِکْ لِیْ فِیْهِ وَاخْلُفْ عَلٰی کُلِّ غَائِبَةٍ بِخَیْرٍ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْئٍ قَدِیْرٌ .[2]

और जब रुक्ने इ़राक़ी के सामने आए तो येह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنَ الشَّکِّ وَالشِّرْکِ وَالشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوْءِ الْاَخْلَاقِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ .[3]

1...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तुझ पर ईमान लाते हुए और तेरी किताब की तस्दीक़ करते हुए और तेरे अ़हद को पूरा करते हुए और तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ करते हुए मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं, जो अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और गवाही देता हूं कि मुह़म्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर मैं ईमान लाया और बुत और शैत़ान से मैं ने इन्कार किया। 12

2...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! येह घर तेरा घर है और ह़रम तेरा ह़रम है और अम्न तेरी ही अम्न है और जहन्नम से तेरी पनाह मांगने वाले की येह जगह है तो मुझ को जहन्नम से पनाह दे। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! जो तू ने मुझ को दिया मुझे उस पर क़ानेअ़ कर दे और मेरे लिये उस में बरकत दे और हर ग़ाइब पर ख़ैर के साथ तू ख़लीफ़ा हो जा। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं, जो अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और उसी के लिये मुल्क है, उसी के लिये ह़म्द है और वोह हर शै पर क़ादिर है। 12

3...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं शक और शिर्क और इख़्तिलाफ़ व निफ़ाक़ से और माल व अह्लो औलाद में वापस हो कर बुरी बात देखने से। 12

www.dawateislami.net

और जब मीज़ाबे रह़मत के सामने आए तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِیْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِکَ یَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّکَ وَلَا بَاقِیَ اِلَّا وَجْهُکَ وَاسْقِنِیْ مِنْ حَوْضِ نَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم شَرْبَةً هَنِیْئَةً لَّا اَظْمَأُ بَعْدَهَا اَبَدًا[1]

और जब रुक्ने शामी के सामने आए तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّسَعْیًا مَّشْکُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا وَّتِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ یَا عَالِمَ مَا فِی الصُّدُوْرِ اَخْرِجْنِیْ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ.[2]

(10) जब रुक्ने यमानी के पास आओ तो उसे दोनों हाथ या दह्ने से तबर्रुकन छूओ, न सिर्फ़ बाएं से और चाहो तो उसे बोसा भी दो और न हो सके तो यहां लकड़ी से छूना या इशारा कर के हाथ चूमना नहीं और येह दुआ़ पढ़ो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ فِی الدِّیْنِ وَالدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ. और रुक्ने शामी या इ़राक़ी को छूना या बोसा देना कुछ नहीं।

(11) जब इस से बढ़ो तो येह मुस्तजाब है जहां सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दुआ़ पर आमीन कहेंगे वोही दुआ़एं जामेअ़ पढ़ो, या

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ. या अपने और सब अह़बाब व मुस्लिमीन और इस ह़क़ीर ज़लील की निय्यत से सिर्फ़ दुरूद शरीफ़ पढ़े कि येह काफ़ी व वाफ़ी है। दुआ़एं याद न हों तो वोह इख़्तियार करे कि मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के सच्चे वादे से तमाम दुआ़ओं से बेहतर व अफ़्ज़ल है यानी यहां और तमाम मवाक़ेअ़ में अपने लिये दुआ़ के बदले हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم पर दुरूद भेजे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ऐसा करेगा तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तेरे सब काम बना देगा और तेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा।''[3]

(12) त़वाफ़ में दुआ़ या दुरूद शरीफ़ पढ़ने के लिये रुको नहीं, बल्कि चलते में पढ़ो।

(13) दुआ़ व दुरूद चिल्ला चिल्ला कर न पढ़ो जैसे मुत़व्विफ़ पढ़ाया करते हैं बल्कि आहिस्ता पढ़ो इस क़दर कि अपने कान तक आवाज़ आए।

(14) अब जो चारों त़रफ़ घूम कर ह़जरे अस्वद के पास पहुंचा, येह एक फेरा हुवा और इस वक़्त भी ह़जरे अस्वद को बोसा दे या वोही त़रीक़े बरते बल्कि हर फेरे के ख़त्म पर

---

1 ...इलाही ! तू मुझ को अपने अ़र्श के साए में रख, जिस दिन तेरे साए के सिवा कोई साया नहीं और तेरी ज़ात के सिवा कोई बाक़ी नहीं और अपने नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم के ह़ौज़ से मुझे ख़ुश गवार पानी पिला कि इस के बाद कभी प्यास न लगे। 12

2 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू इस को ह़ज्जे मबरूर कर और सई मश्कूर कर और गुनाह को बख़्श दे और इस को वोह तिजारत कर दे जो हलाक न हो, ऐ सीनों की बातें जानने वाले मुझ को तारीकियों से नूर की त़रफ़ निकाल। 12

3 ..... "جامع الترمذی"، ابواب صفة القیامة، ۲۳۔باب، الحدیث: ۲٤٦٥، ج٤، ص۲۰۷.

www.dawateislami.net

येह करे। यूंही सात फेरे करे मगर बाक़ी फेरों में निय्यत करना नहीं कि निय्यत तो शुरूअ़ में हो चुकी और रमल सिर्फ़ अगले तीन फेरों में है, बाक़ी चार में आहिस्ता बग़ैर शाने हिलाए मामूली चाल चले।

(15) जब सातों फेरे पूरे हो जाएं आख़िर में फिर ह़जरे अस्वद को बोसा दे या वोही त़रीक़े हाथ या लकड़ी के बरते इस त़वाफ़ को त़वाफ़े कुदूम कहते हैं यानी ह़ाज़िरिये दरबार का मुजरा। येह बाहर वालों के लिये मस्नून है यानी उन के लिये जो मीक़ात के बाहर से आए हैं, मक्के वालों या मीक़ात के अन्दर के रहने वालों के लिये येह त़वाफ़ नहीं। हां, अगर मक्के वाला मीक़ात से बाहर गया तो उसे भी त़वाफ़े कुदूम मस्नून है।

त़वाफ़ के मसाइल

मस्अला 1 त़वाफ़ में निय्यत फ़र्ज़ है, बग़ैर निय्यत त़वाफ़ नहीं मगर येह शर्त़ नहीं कि किसी मुअ़य्यन त़वाफ़ की निय्यत करे बल्कि हर त़वाफ़ मुत़्लक़ निय्यते त़वाफ़ से अदा हो जाता है बल्कि जिस त़वाफ़ को किसी वक़्त में मुअ़य्यन कर दिया गया है, अगर उस वक़्त किसी दूसरे त़वाफ़ की निय्यत से किया तो येह दूसरा न होगा बल्कि वोह होगा जो मुअ़य्यन है। मसलन उ़मरह का एह़राम बांध कर बाहर से आया और त़वाफ़ किया तो येह उ़मरह का त़वाफ़ है अगर्चे निय्यत में येह न हो। यूंही ह़ज का एह़राम बांध कर बाहर वाला आया और त़वाफ़ किया तो त़वाफ़े कुदूम है या क़िरान का एह़राम बांध कर आया और दो त़वाफ़ किये तो पहला उ़मरह का है, दूसरा त़वाफ़े कुदूम या दसवीं तारीख़ को त़वाफ़ किया तो त़वाफ़े ज़ियारत है, अगर्चे इन सब में निय्यत किसी और की हो।[1] (منسک)

मस्अला 2 येह त़रीक़ा त़वाफ़ का जो मज़्कूर हुवा अगर किसी ने इस के ख़िलाफ़ त़वाफ़ किया मसलन बाईं त़रफ़ से शुरूअ़ किया कि काबए मुअ़ज़्ज़मा त़वाफ़ करने में सीधे हाथ को रहा या काबए मुअ़ज़्ज़मा को मुंह या पीठ कर के आड़ा आड़ा त़वाफ़ किया या ह़जरे अस्वद से शुरूअ़ न किया तो जब तक मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में है उस त़वाफ़ का इआ़दा करे और अगर इआ़दा न किया और वहां से चला आया तो दम वाजिब है। यूंही ह़तीम के अन्दर से त़वाफ़ करना ना जाइज़ है लिहाज़ा इस का भी इआ़दा करे। चाहिये तो येह कि पूरे ही त़वाफ़ का इआ़दा करे और अगर सिर्फ़ ह़तीम का सात बार त़वाफ़ कर लिया कि रुक्ने इ़राक़ी से रुक्ने शामी तक ह़तीम के बाहर बाहर गया और वापस आया, यूंही सात बार कर लिया तो भी काफ़ी है और इस सूरत में अफ़्ज़ल येह है कि ह़तीम के बाहर बाहर वापस आए और अन्दर से वापस हुवा जब भी जाइज़ है।[2] (درمختار، ردالمحتار)

1 ..... "المسلك المتقسط فی المنسك المتوسط"، (انواع الاطوفة و احكامها)، ص ١٤٥.
2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في دخول مكة، ج٣، ص٥٧٩.

www.dawateislami.net

मस्अला 3 त़वाफ़ सात फेरों पर ख़त्म हो गया, अब अगर आठवां फेरा जान बूझ कर क़स्दन शुरूअ़ कर दिया तो येह एक जदीद त़वाफ़ शुरूअ़ हुवा, इसे भी अब सात फेरे कर के ख़त्म करे। यूंही अगर महज़ वह्म व वस्वसे की बिना पर आठवां फेरा शुरूअ़ किया कि शायद अभी छे ही हुए हों जब भी उसे सात फेरे कर के ख़त्म करे। हां, अगर उस आठवें को सातवां गुमान किया बाद में मालूम हुवा कि सात हो चुके हैं तो उसी पर ख़त्म कर दे सात पूरे करने की ज़रूरत नहीं।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 4 त़वाफ़ के फेरों में शक वाक़ेअ़ हुवा कि कितने हुए तो अगर त़वाफ़ फ़र्ज़ या वाजिब है तो अब से सात फेरे करे और अगर किसी एक आ़दिल शख़्स ने बता दिया कि इतने फेरे हुए तो उस के क़ौल पर अ़मल कर लेना बेहतर है और दो आ़दिल ने बताया तो उन के कहे पर ज़रूर अ़मल करे और अगर त़वाफ़ फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है तो ग़ालिब गुमान पर अ़मल करे।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 5 त़वाफ़े काबए मुअ़ज़्ज़मा मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ के अन्दर होगा अगर मस्जिद के बाहर से त़वाफ़ किया न हुवा।[3] (درمختار)

मस्अला 6 जो ऐसा बीमार है कि ख़ुद त़वाफ़ नहीं कर सकता और सो रहा है उस के हमराहियों ने त़वाफ़ कराया, अगर सोने से पहले हुक्म दिया था तो सह़ीह़ है, वरना नहीं।[4] (عالمگیری)

मस्अला 7 मरीज़ ने अपने साथियों से कहा, मज़दूर ला कर मुझे त़वाफ़ करा दो फिर सो गया, अगर फ़ौरन मज़दूर ला कर त़वाफ़ करा दिया तो हो गया और अगर दूसरे काम में लग गए, देर में मज़दूर लाए और सोते में त़वाफ़ कराया तो न हुवा मगर मज़दूरी बहर ह़ाल लाज़िम है।[5] (عالمگیری)

मस्अला 8 मरीज़ को त़वाफ़ कराया और अपने त़वाफ़ की भी निय्यत है तो दोनों के त़वाफ़ हो गए अगर्चे दोनों के दो क़िस्म के त़वाफ़ हों।[6] (عالمگیری)

मस्अला 9 त़वाफ़ करते करते नमाज़े जनाज़ा या नमाज़े फ़र्ज़ या नया वुज़ू करने के लिये चला गया तो वापस आ कर उसी पहले त़वाफ़ पर बिना करे यानी जितने फेरे रह गए हों उन्हें कर ले त़वाफ़ पूरा हो जाएगा, सिरे से शुरूअ़ करने की ज़रूरत नहीं और सिरे से किया

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف القدوم، ج٣، ص٥٨١.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف القدوم، ج٣، ص٥٨٢.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، مطلب في طواف القدوم، ج٣، ص٥٨٢.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، فصل في المتفرقات، ج١، ص٢٣٦.
5 ..... المرجع السابق. 6 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

जब भी ह़रज नहीं और इस सूरत में उस पहले को पूरा करना ज़रूरी नहीं और बिना की सूरत में जहां से छोड़ा था, वहीं से शुरूअ़ करे, ह़जरे अस्वद से शुरूअ़ करने की ज़रूरत नहीं। येह सब उस वक़्त है जब कि पहले चार फेरे से कम किये थे और अगर चार फेरे या ज़ियादा किये थे तो बिना ही करे।[1] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 10 त़वाफ़ कर रहा था कि जमाअ़त क़ाइम हुई और जानता है कि फेरा पूरा करेगा तो रक्अ़त जाती रहेगी या जनाज़ा आ गया है इन्तिज़ार न होगा तो वहीं से छोड़ कर नमाज़ में शरीक हो जाए और बिला ज़रूरत छोड़ कर चला जाना मक्रूह है मगर त़वाफ़ बात़िल न होगा यानी आ कर पूरा कर ले।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 11 माज़ूर त़वाफ़ कर रहा है, चार फेरों के बाद वक़्ते नमाज़ जाता रहा तो अब उसे हुक्म है कि वुज़ू कर के त़वाफ़ करे क्यूं कि वक़्ते नमाज़ ख़ारिज होने से माज़ूर का वुज़ू जाता रहता है और बग़ैर वुज़ू त़वाफ़ ह़राम, अब वुज़ू करने के बाद जो बाक़ी है पूरा करे और चार फेरों से पहले वक़्त ख़त्म हो गया जब भी वुज़ू कर के बाक़ी को पूरा करे और इस सूरत में अफ़्ज़ल येह है कि सिरे से करे।[3] (منسک)

मस्अला 12 रमल सिर्फ़ तीन पहले फेरों में सुन्नत है, सातों में करना मक्रूह लिहाज़ा अगर पहले में न किया तो सिर्फ़ दूसरे और तीसरे में करे और पहले तीन में न किया तो बाक़ी चार में न करे, अगर भीड़ की वज्ह से रमल का मौक़अ़ न मिले तो रमल की ख़ात़िर न रुके, बिला रमल त़वाफ़ कर ले और जहां जहां मौक़अ़ हाथ आए उतनी दूर रमल कर ले और अगर अभी शुरूअ़ नहीं किया है और जानता है कि भीड़ की वज्ह से रमल न कर सकेगा और येह भी मालूम है कि ठहरने से मौक़अ़ मिल जाएगा तो इन्तिज़ार करे।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 13 रमल उस त़वाफ़ में सुन्नत है जिस के बाद सई हो, लिहाज़ा अगर त़वाफ़े कुदूम के बाद की सई त़वाफ़े ज़ियारत तक मुअख़्ख़र करे तो त़वाफ़े कुदूम में रमल नहीं।[5] (عالمگیری)

मस्अला 14 त़वाफ़ के सातों फेरों में इज़्त़िबाअ़ सुन्नत है और त़वाफ़ के बाद इज़्त़िबाअ़ न करे, यहां तक कि त़वाफ़ के बाद की नमाज़ में अगर इज़्त़िबाअ़ किया तो मक्रूह है और इज़्त़िबाअ़ सिर्फ़ उसी त़वाफ़ में है जिस के बाद सई हो और अगर त़वाफ़ के बाद सई न हो

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف القدوم، ج٣، ص٥٨٢.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف القدوم، ج٣، ص٥٨٢.
3 ..... "المسلك المتقسط"، (انواع الاطوفة و احكامها، فصل فى مسائل شتى)، ص١٦٧.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف القدوم، ج٣، ص٥٨٣.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٦.

www.dawateislami.net

तो इज़्तिबाअ़ भी नहीं ।[1] (منسک)

मैं ने बाज़ मुत़व्विफ़ को देखा कि हुज्जाज को वक़्ते एह़राम से हिदायत करते हैं कि इज़्तिबाअ़ किये रहें, यहां तक कि नमाज़े एह़राम में इज़्तिबाअ़ किये हुए थे ह़ालां कि नमाज़ में मूंढा खुला रहना मक्रूह है ।

मस्अला 15 त़वाफ़ की ह़ालत में ख़ुसूसिय्यत के साथ ऐसी बातों से परहेज़ रखे जिन्हें शर्‌अ़ मुत़ह्हर पसन्द नहीं करती । अम्रद और औ़रतों की त़रफ़ बुरी निगाह न करे, किसी में अगर कुछ ऐ़ब हो या वोह ख़राब ह़ालत में हो तो नज़रे ह़क़ारत से उसे न देखे बल्कि उसे भी नज़रे ह़क़ारत से न देखे जो अपनी नादानी के सबब अरकान ठीक अदा नहीं करता बल्कि ऐसे को निहायत नर्मी के साथ समझा दे ।

नमाज़े त़वाफ़

(16) त़वाफ़ के बाद **मक़ामे इब्राहीम** में आ कर आयए करीमा ﴿وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ﴾[2] पढ़ कर दो रक्अ़त त़वाफ़ पढ़े और येह नमाज़ वाजिब है, पहली में قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ दूसरी में قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़े बशर्ते कि वक़्ते कराहत मसलन तुलूए़ सुब्ह से बुलन्दिये आफ़्ताब तक या दोपहर या नमाज़े अ़स्र के बाद गुरूब तक न हो, वरना वक़्ते कराहत निकल जाने पर पढ़े । ह़दीस में है : "जो मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रक्अ़तें पढ़े उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे और क़ियामत के दिन अम्न वालों में मह़शूर होगा ।"[3] येह रक्अ़तें पढ़ कर दुआ़ मांगे । यहां ह़दीस में एक दुआ़ इरशाद हुई, जिस के फ़ाएदों की अ़ज़मत इस का लिखना ही चाहती है ।

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّیْ وَعَلَانِيَتِیْ فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِیْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِیْ فَاَعْطِنِیْ سُؤْلِیْ وَتَعْلَمُ مَا فِیْ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ اِيْمَانًا يُّبَاشِرُ قَلْبِیْ وَيَقِيْنًا صَادِقًا حَتّٰى اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَا يُصِيْبُنِیْ اِلَّا مَا كَتَبْتَ لِیْ وَرِضًى مِّنَ الْمَعِيْشَةِ بِمَا قَسَمْتَ لِیْ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ[4]

---

1 ..... المسلك المتقسط"، (فصل فی صفة الشروع فی الطواف)، ص۱۲۹.

2 ..... **तर्जमा :** और मक़ामे इब्राहीम से नमाज़ की जगह बनाओ । پ۱، البقرة: ۱۲۵

3 ..... "الشفاء"، الباب الرابع فی حكم الصلاة عليه، فصل فيما يلزم من دخل مسجد النبی صلى الله عليه وسلم، الجزء۲، ص۹۳.

4 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू मेरे पोशीदा और ज़ाहिर को जानता है, तू मेरी माज़िरत को क़बूल कर और तू मेरी ह़ाजत को जानता है, मेरा सुवाल मुझ को अ़त़ा कर और जो कुछ मेरे नफ़्स में है तू उसे जानता है तो मेरे गुनाहों को बख़्श दे । ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तुझ से उस ईमान का सुवाल करता हूं जो मेरे क़ल्ब में सरायत कर जाए और यक़ीने सादिक़ मांगता हूं ताकि मैं जान लूं कि मुझे वोही पहुंचेगा जो तू ने मेरे लिये लिखा है और जो कुछ तू ने मेरी क़िस्मत में किया है उस पर राज़ी रहूं, ऐ सब मेहरबानों से ज़ियादा मेहरबान ! 12

www.dawateislami.net

ह़दीस में है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "जो येह दुआ करेगा मैं उस की ख़त़ा बख़्श दूंगा, ग़म दूर करूंगा, मोह़ताजी उस से निकाल लूंगा, हर ताजिर से बढ़ कर उस की तिजारत रखूंगा, दुन्या नाचार व मजबूर हो कर उस के पास आएगी अगर्चे वोह उसे न चाहे।"[1] इस मक़ाम पर बाज़ और दुआएं मज़्कूर हैं मसलन :

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا بَلَدُكَ الْحَرَامُ وَ مَسْجِدُكَ الْحَرَامُ وَبَيْتُكَ الْحَرَامُ وَ اَنَا عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ اَمَتِكَ اَتَيْتُكَ بِذُنُوْبٍ كَثِيْرَةٍ وَّخَطَايَا جُمَّةٍ وَّ اَعْمَالٍ سَيِّئَةٍ وَّهٰذَا مَقَامُ الْعَائِذِبِكَ مِنَ النَّارِ اَللّٰهُمَّ عَافِنَا وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ[2]

मस्अला 16 अगर भीड़ की वज्ह से मक़ामे इब्राहीम में नमाज़ न पढ़ सके तो मस्जिद शरीफ़ में किसी और जगह पढ़ ले और मस्जिदुल ह़राम के इ़लावा कहीं और पढ़ी जब भी हो जाएगी।[3] (عالمگیری)

मस्अला 17 मक़ामे इब्राहीम के बाद इस नमाज़ के लिये सब से अफ़्ज़ल काबए मुअ़ज़्ज़मा के अन्दर पढ़ना है फिर ह़तीम में मीज़ाबे रह़मत के नीचे, इस के बाद ह़तीम में किसी और जगह फिर काबए मुअ़ज़्ज़मा से क़रीब तर जगह में फिर मस्जिदुल ह़राम में किसी और जगह फिर ह़रमे मक्का के अन्दर जहां भी हो।[4] (لباب)

मस्अला 18 सुन्नत येह है कि वक़्ते कराहत न हो तो त़वाफ़ के बाद फ़ौरन नमाज़ पढ़े, बीच में फ़ासिला न हो और अगर न पढ़ी तो उ़म्र भर में जब पढ़ेगा, अदा ही है क़ज़ा नहीं मगर बुरा किया कि सुन्नत फ़ौत हुई।[5] (منسک)

मस्अला 19 फ़र्ज़ नमाज़ इन रक्अ़तों की क़ाइम मक़ाम नहीं हो सकती।[6] (عالمگیری)

मुल्तज़म से लिपटना

(17) नमाज़ व दुआ से फ़ारिग़ हो कर **मुल्तज़म** के पास जाए और क़रीबे ह़जर उस से लिपटे और अपना सीना और पेट और कभी दहना रुख़्सारा और कभी बायां और कभी

1 ..... "المسلك المتقسط"، ص١٣٨. "تاريخ دمشق"لابن عساكر، ج٧، ص٤٣١. "الفتاوى الرضوية"، ج١٠، ص٧٤١.

2 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! येह तेरा इ़ज़्ज़त वाला शह्र है और तेरी इ़ज़्ज़त वाली मस्जिद है और तेरा इ़ज़्ज़त वाला घर है और मैं तेरा बन्दा हूं और तेरे बन्दे और तेरी बांदी का बेटा हूं बहुत से गुनाहों और बड़ी ख़त़ाओं और बुरे आमाल के साथ तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा हूं और जहन्नम से तेरी पनाह मांगने वाले की येह जगह है। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू हमें आ़फ़ियत दे और हम से मुआ़फ़ कर और हम को बख़्श दे, बेशक तू बड़ा बख़्शने वाला मेह्रबान है। 12

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس، في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٦.

4 ..... "لباب المناسك" للسندى، ص١٥٦.

5 ..... "المسلك المتقسط"، (فصل في ركعتي الطواف)، ص١٥٥.

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٦.

www.dawateislami.net

रुख़्सारा उस पर रखे और दोनों हाथ सर से ऊंचे कर के दीवार पर फैलाए या दाहना हाथ दरवाज़ए काबा और बायां हजरे अस्वद की त़रफ़ फैलाए, यहां की दुआ़ येह है :

يَا وَاجِدُ يَا مَاجِدُ لَا تُزِلْ عَنِّيْ نِعْمَةً اَنْعَمْتَهَا عَلَيَّ (1)

ह़दीस में फ़रमाया : ''जब मैं चाहता हूं जिब्रील को देखता हूं कि मुल्तज़म से लिपटे हुए येह दुआ़ कर रहे हैं।''(2)

निहायत ख़ुज़ूओ ख़ुशूअ़ व आ़जिज़ी व इन्किसार के साथ दुआ़ करे और दुरूद शरीफ़ भी पढ़े और इस मक़ाम की एक दुआ़ येह भी है :

اِلٰهِيْ وَقَفْتُ بِبَابِكَ وَالْتَزَمْتُ بِاَعْتَابِكَ اَرْجُوْ رَحْمَتَكَ وَاَخْشٰى عِقَابَكَ اَللّٰهُمَّ حَرِّمْ شَعْرِيْ وَجَسَدِيْ عَلَى النَّارِ اَللّٰهُمَّ كَمَا صُنْتَ وَجْهِيْ عَنِ السُّجُوْدِ لِغَيْرِكَ فَصُنْ وَجْهِيْ عَنْ مَسْأَلَةِ غَيْرِكَ اَللّٰهُمَّ يَا رَبَّ الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ اَعْتِقْ رِقَابَنَا وَرِقَابَ اٰبَآئِنَا وَاُمَّهَاتِنَا مِنَ النَّارِ

يَا كَرِيْمُ يَا غَفَّارُ يَا عَزِيْزُ يَا جَبَّارُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ اَعْتِقْ رِقَابَنَا مِنَ النَّارِ وَاَعِذْنَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ وَاكْفِنَا كُلَّ سُوْٓءٍ وَّقَنِّعْنَا بِمَا رَزَقْتَنَا وَبَارِكْ لَنَا فِيْمَا اَعْطَيْتَنَا اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مِنْ اَكْرَمِ وَفْدِكَ عَلَيْكَ اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى نِعَمَائِكَ وَاَفْضَلُ صَلَاتِكَ عَلٰى سَيِّدِ اَنْبِيَآئِكَ وَجَمِيْعِ رُسُلِكَ وَاَصْفِيَآئِكَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَاَوْلِيَآئِكَ (3)

1...ऐ कुदरत वाले ! ऐ बुज़ुर्ग ! तू ने मुझे जो नेमत दी, उस को मुझ से ज़ाइल न कर। 12

2.....''الفتاوى الرضوية''، ج١٠، ص٧٤٢.

3...इलाही ! मैं तेरे दरवाज़े पर खड़ा हूं और तेरे आस्ताने से चिपटा हूं तेरी रह़मत का उम्मीद वार और तेरे अ़ज़ाब से डरने वाला, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मेरे बाल और जिस्म को जहन्नम पर ह़राम कर दे, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! जिस त़रह़ तू ने मेरे चेहरे को अपने ग़ैर के लिये सज्दा करने से मह़फ़ूज़ रखा इसी त़रह़ इस से मह़फ़ूज़ रख कि तेरे ग़ैर से सुवाल करूं, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! ऐ इस आज़ाद घर के मालिक ! तू हमारी गरदनों को और हमारे बाप, दादा और हमारी माओं की गरदनों को जहन्नम से आज़ाद कर दे।

ऐ करीम ! ऐ बख़्शने वाले ! ऐ ग़ालिब ! ऐ जब्बार ! ऐ रब ! तू हम से क़बूल कर, बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है और हमारी तौबा क़बूल कर बेशक तू तौबा क़बूल करने वाला मेह्रबान है। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! ऐ इस आज़ाद घर के मालिक ! हमारी गरदनों को जहन्नम से आज़ाद कर और शैत़ान मरदूद से हम को पनाह दे और हर बुराई से हमारी किफ़ायत कर और जो कुछ तू ने दिया उस पर क़ानेअ़ कर और जो दिया उस में बरकत दे और अपने इ़ज़्ज़त वाले वफ़्द में हम को कर दे, इलाही ! तेरे ही लिये ह़म्द है तेरी नेमतों पर और अफ़्ज़ल दुरूद अम्बिया के सरदार पर और तेरे तमाम रसूलों और बरगुज़ीदा लोगों पर और उन की आल व अस्ह़ाब और तेरे औलिया पर। 12

www.dawateislami.net

मस्अला 20 मुल्तज़म के पास नमाज़े त़वाफ़ के बाद आना उस त़वाफ़ में है जिस के बाद सई है और जिस के बाद सई न हो उस में नमाज़ से पहले मुल्तज़म से लिपटे फिर मक़ामे इब्राहीम के पास जा कर दो[2] रक्अ़त नमाज़ पढ़े।[1] (منسک)

ज़मज़म की ह़ाज़िरी

(18) फिर **ज़मज़म** पर आओ और हो सके तो ख़ुद एक डोल खींचो, वरना भरने वालों से ले लो और काबे को मुंह कर के तीन सांसों में पेट भर कर जितना पिया जाए खड़े हो कर पियो, हर बार بِسْمِ اللّٰہ से शुरूअ़ करो और اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ पर ख़त्म और हर बार काबए मुअ़ज़्ज़मा की त़रफ़ निगाह उठा कर देख लो, बाक़ी बदन पर डाल लो या मुंह और सर और बदन पर इस से मस्ह़ कर लो और पीते वक़्त दुआ़ करो कि क़बूल है। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "ज़मज़म जिस मुराद से पिया जाए उसी के लिये है।"[2] उस वक़्त की दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّعَمَلاً مُّتَقَبَّلاً وَّشِفَآءً مِّنْ کُلِّ دَآءٍ[3]

या वोही दुआ़ए जामेअ़ पढ़ो और ह़ाज़िरिये मक्कए मुअ़ज़्ज़मा तक तो बारहा पीना नसीब होगा, कभी क़ियामत की प्यास से बचने को पियो, कभी अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ी को, कभी मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم बढ़ने को, कभी वुस्अ़ते रिज़्क़, कभी शिफ़ाए अमराज़, कभी ह़ुसूले इ़ल्म वग़ैरहा ख़ास ख़ास मुरादों के लिये पियो।

(19) वहां जब पियो पेट भर कर पियो। ह़दीस में है : "हम में और मुनाफ़िक़ों में येह फ़र्क़ है कि वोह ज़मज़म कोख भर नहीं पीते।"[4]

(20) चाहे ज़मज़म के अन्दर नज़र भी करो कि ब ह़ुक्मे ह़दीस दाफ़ेए़ निफ़ाक़ है।[5]

सफ़ा व मर्वह की सई

(21) अब अगर कोई उ़ज़्र थकान वग़ैरा का न हो तो अभी, वरना आराम ले कर सफ़ा मर्वह में **सई** के लिये फिर ह़जरे अस्वद के पास आओ और इसी त़रह़ तक्बीर वग़ैरा कह कर चूमो और न हो सके तो उस की त़रफ़ मुंह कर के اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ और दुरूद पढ़ते

1 ..... "المسلك المتقسط"، (فصل في صفة الشروع في الطواف)، ص۱۳۸.

2 ..... "سنن ابن ماجه"، كتاب المناسك، باب الشرب من زم زم، الحديث: ۳۰۶۲، ج۳، ص۴۹۰.

3 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तुझ से इ़ल्मे नाफ़ेअ़ और कुशादा रिज़्क़ और अ़मले मक़्बूल और हर बीमारी से शिफ़ा का सुवाल करता हूं। 12

4 ..... "سنن ابن ماجه"، كتاب المناسك، باب الشرب من زمزم، الحديث: ۳۰۶۱، ج۳، ص۴۸۹.

5 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج۱۰، ص۷۴۲.

www.dawateislami.net

हुए फ़ौरन **बाबे सफ़ा** से जानिबे सफ़ा रवाना हो, दरवाज़ए मस्जिद से बायां पाउं पहले निकालो और दहना पहले जूते में डालो और येह अदब हर मस्जिद से आते हुए हमेशा मल्हूज़ रखो और वोही दुआ़ पढ़ो जो मस्जिद से निकलते वक़्त पढ़ने के लिये मज़्कूर हो चुकी है।

मस्अला 21 बग़ैर उ़ज़्र इस वक़्त सई न करना मक्रूह है कि ख़िलाफ़े सुन्नत है।

मस्अला 22 जब त़वाफ़ के बाद सई करनी हो तो वापस आ कर ह़जरे अस्वद का इस्तिलाम कर के सई को जाए और सई न करनी हो तो इस्तिलाम की ज़रूरत नहीं।[1] (عالمگیری)

मस्अला 23 सई के लिये बाबे सफ़ा से जाना मुस्तह़ब है और येही आसान भी है और अगर किसी दूसरे दरवाज़े से जाएगा जब भी सई अदा हो जाएगी।

(22) ज़िक्रो दुरूद में मश्ग़ूल सफ़ा की सीढ़ियों पर इतना चढ़ो कि काबए मुअ़ज़्ज़मा नज़र आए और येह बात यहां पहली ही सीढ़ी पर चढ़ने से ह़ासिल है यानी अगर मकान और दीवारें दरमियान में न होतीं तो काबए मुअ़ज़्ज़मा यहां से नज़र आता, इस से ऊपर चढ़ने की ह़ाजत नहीं बल्कि मज़्हबे अहले सुन्नत व जमाअ़त के ख़िलाफ़ और बद मज़्हबों और जाहिलों का फ़ेल है कि बिल्कुल ऊपर की सीढ़ी तक चढ़ जाते हैं और सीढ़ी पर चढ़ने से पहले येह पढ़ो :

اَبْدَاُ بِمَا بَدَاَ اللّٰهُ بِهٖ ﴿اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآىِٕرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَیْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْهِ اَنْ یَّطَّوَّفَ بِهِمَا ؕ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَیْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِیْمٌ ۝﴾[2]

फिर काबए मुअ़ज़्ज़मा की त़रफ़ मुंह कर के दोनों हाथ मूंढों तक दुआ़ की त़रह़ फैले हुए उठाओ और उतनी देर तक ठहरो जितनी देर में मुफ़स्सल की कोई सूरत या सूरए बक़रह की पच्चीस आयतों की तिलावत की जाए और तस्बीह़ व तहलील व तक्बीर व दुरूद पढ़ो और अपने लिये और अपने दोस्तों और दीगर मुसलमानों के लिये दुआ़ करो कि यहां दुआ़ क़बूल होती है, यहां भी दुआ़ए जामेअ़ पढ़ो और येह पढ़ो :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَا هَدٰنَا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَا اَوْلَانَا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَا اَلْهَمَنَا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدٰنَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِیَ لَوْ لَا اَنْ هَدٰنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَهُوَ حَیٌّ لَّا یَمُوْتُ بِیَدِهِ الْخَیْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ صَدَقَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَاَعَزَّ جُنْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا نَعْبُدُ اِلَّا اِیَّاهُ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ.

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس، في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٦.

2 ...मैं उस से शुरूअ़ करता हूं जिस को **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने पहले ज़िक्र किया। "बेशक सफ़ा व मर्वह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की निशानियों से हैं जिस ने ह़ज या उ़मरह किया उस पर इन के त़वाफ़ में गुनाह नहीं और जो शख़्स नेक काम करे तो बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) बदला देने वाला, जानने वाला है।" 12

www.dawateislami.net

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ط يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ اَللّٰهُمَّ كَمَا هَدَيْتَنِيْ لِلْاِسْلَامِ اَسْأَلُكَ اَنْ لَّا تَنْزِعَهٗ مِنِّيْ حَتّٰى تَوَفَّانِيْ وَاَنَا مُسْلِمٌ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ .

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ عَلٰى سُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَوَفَّنِيْ عَلٰى مِلَّتِهٖ وَاَعِذْنِيْ مِنْ مُّضِلَّاتِ الْفِتَنِ ط اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مِمَّنْ يُّحِبُّكَ وَيُحِبُّ رَسُوْلَكَ وَاَنْبِيَآئَكَ وَمَلٰئِكَتَكَ وَعِبَادَكَ الصّٰلِحِيْنَ اَللّٰهُمَّ يَسِّرْلِيَ الْيُسْرٰى وَجَنِّبْنِيَ الْعُسْرٰى اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ عَلٰى سُنَّةِ رَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَتَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ وَاغْفِرْلِيْ خَطِيْٓئَتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ اِيْمَانًا كَامِلًا وَّقَلْبًا خَاشِعًا وَّنَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّيَقِيْنًا صَادِقًا وَّدِيْنًا قَيِّمًا وَّنَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ مِنْ كُلِّ بَلِيَّةٍ وَّنَسْئَلُكَ تَمَامَ الْعَافِيَةِ وَنَسْئَلُكَ دَوَامَ الْعَافِيَةِ وَنَسْئَلُكَ الشُّكْرَ عَلَى الْعَافِيَةِ وَنَسْئَلُكَ الْغِنٰى عَنِ النَّاسِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ عَدَدَ خَلْقِكَ وَرِضَا نَفْسِكَ وَزِنَةَ عَرْشِكَ وَمِدَادَ كَلِمَاتِكَ كُلَّمَا ذَكَرَكَ الذَّاكِرُوْنَ وَغَفَلَ عَنْ ذِكْرِكَ الْغَافِلُوْنَ[1]

---

1 ...हम्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये कि उस ने हम को हिदायत की, हम्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये कि उस ने हम को दिया, हम्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये कि उस ने हम को इल्हाम किया, हम्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये जिस ने हम को इस की हिदायत की और अगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हिदायत न करता तो हम हिदायत न पाते। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं, जो अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये मुल्क है और उसी के लिये हम्द है, वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह खुद ज़िन्दा है मरता नहीं, उसी के हाथ में ख़ैर है और वोह हर शै पर क़ादिर है। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं जो अकेला है, उस ने अपना वादा सच्चा किया अपने बन्दे की मदद की और अपने लश्कर को ग़ालिब किया और काफ़िरों की जमाअ़तों को तन्हा उस ने शिकस्त दी। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं हम उसी की इबादत करते हैं, उसी के लिये दीन को ख़ालिस करते हुए अगर्चे काफ़िर बुरा मानें।

अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की पाकी है शाम व सुब्ह और उसी के लिये हम्द है आस्मानों और ज़मीन में और तीसरे पहर को और ज़ोहर के वक़्त, वोह ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है और ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है और इसी त़रह तुम निकाले जाओगे, इलाही ! तू ने जिस त़रह मुझे इस्लाम की त़रफ़ हिदायत की, तुझ से सुवाल करता हूं कि इसे मुझ से जुदा न करना यहां तक कि मुझे इस्लाम पर मौत दे, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये पाकी है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये हम्द है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) बहुत बड़ा है, और गुनाह से फिरना और नेकी की ताक़त नहीं मगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की मदद से जो बरतरो बुज़ुर्ग है। इलाही ! तू मुझ को अपने नबी मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सुन्नत पर ज़िन्दा रख और इन की मिल्लत पर वफ़ात दे और फ़ितने की गुमराहियों से बचा, इलाही ! तू मुझ को उन लोगों में कर जो तुझ से महब्बत रखते हैं और तेरे रसूल व अम्बिया व मलाएका और नेक बन्दों से महब्बत रखते हैं। इलाही ! मेरे लिये आसानी मुयस्सर कर और मुझे सख़्ती से बचा, इलाही ! अपने रसूल मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की सुन्नत पर मुझ को ज़िन्दा रख और मुसलमान मार और नेकों के साथ मिला और जन्नतुन्नईम का वारिस कर और क़ियामत के दिन मेरी ख़त़ा बख़्श दे। इलाही ! तुझ से ईमाने कामिल और क़ल्बे ख़ाशेअ़ का हम सुवाल करते हैं और हम तुझ से इल्मे नाफ़ेअ़ और यक़ीने सादिक़ और दीने मुस्तक़ीम का सुवाल करते हैं =

www.dawateislami.net

दुआ़ में हथेलियां आस्मान की त़रफ़ हों, न इस त़रह़ जैसा बाज़ जाहिल हथेलियां काबए मुअ़ज़्ज़मा की त़रफ़ करते हैं और अक्सर मुत़व्विफ़ हाथ कानों तक उठाते हैं फिर छोड़ देते हैं, यूंही तीन बार करते हैं येह भी ग़लत़ त़रीक़ा है बल्कि एक बार दुआ़ के लिये हाथ उठाए और जब तक दुआ़ मांगे उठाए रहे, जब ख़त्म हो जाए हाथ छोड़ दे फिर सई की निय्यत करे, इस की निय्यत यूं है : اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ السَّعْیَ بَیْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَۃِ فَیَسِّرْہُ لِیْ وَتَقَبَّلْہُ مِنِّیْ

(23) फिर सफ़ा से उतर कर मर्वह को चले ज़िक्रो दुरूद बराबर जारी रखे, जब पहला **मील** आए (और येह सफ़ा से थोड़े ही फ़ासिले पर है कि बाएं हाथ को सब्ज़ रंग का मील मस्जिद शरीफ़ की दीवार से मुत्तसिल है) यहां से मर्द दौड़ना शुरूअ़ करें (मगर न ह़द से ज़ाइद, न किसी को ईज़ा देते) यहां तक कि दूसरे **सब्ज़ मील** से निकल जाएं। यहां की दुआ़ येह है :

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ ط وَتَعْلَمُ مَا لَا نَعْلَمُ اِنَّکَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَکْرَمُ ط اَللّٰھُمَّ اجْعَلْہُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّسَعْیًا مَّشْکُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ یَا مُجِیْبَ الدَّعْوَاتِ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ وَتُبْ عَلَیْنَا اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ ط رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ [1]

(24) दूसरे मील से निकल कर आहिस्ता हो लो और येह दुआ़ बार बार पढ़ते हुए لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَھُوَ حَیٌّ لَّا یَمُوْتُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ . मर्वह तक पहुंचो यहां पहली सीढ़ी पर चढ़ने बल्कि इस के क़रीब ज़मीन पर खड़े होने से मर्वह पर चढ़ना हो गया लिहाज़ा बिल्कुल दीवार से मुत्तसिल न हो जाए कि येह जाहिलों का त़रीक़ा है यहां भी अगर्चे इमारतें बन जाने से काबा नज़र नहीं आता मगर काबे की त़रफ़ मुंह कर के जैसा सफ़ा पर किया था तस्बीह़ो तक्बीर व ह़म्दो सना व दुरूदो दुआ़ यहां भी करो येह एक फेरा हुवा।

= और हर बला से अ़फ़्वो आ़फ़ियत का सुवाल करते हैं और पूरी आ़फ़ियत और आ़फ़ियत की हमेशगी और आ़फ़ियत पर शुक्र का सुवाल करते हैं और आदमियों से बे नियाज़ी का सुवाल करते हैं। इलाही ! तू दुरूदो सलाम व बरकत नाज़िल कर हमारे सरदार मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और इन की आलो अस्ह़ाब पर ब क़दर शुमार तेरी मख़्लूक़ और तेरी रिज़ा और हम वज़्न तेरे अ़र्श के और ब क़दर दराज़ी तेरे कलिमात के जब तक ज़िक्र करने वाले तेरा ज़िक्र करते रहें और जब तक ग़ाफ़िल तेरे ज़िक्र से ग़ाफ़िल रहें। 12

[1]...ऐ परवरदिगार ! बख़्श और रह़म कर और दरगुज़र कर उस से जिसे तू जानता है और तू उसे जानता है जिसे हम नहीं जानते, बेशक तू इ़ज़्ज़तो करम वाला है। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू इसे ह़ज्जे मबरूर कर और सई मश्कूर कर और गुनाह बख़्श, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मुझ को और मेरे वालिदैन और जमीअ़ मोमिनीन व मोमिनात को बख़्श दे, ऐ दुआ़ओं के क़बूल करने वाले ! ऐ रब ! तू हम से क़बूल कर, बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है और हमारी तौबा क़बूल कर, बेशक तू तौबा क़बूल करने वाला मेह़रबान है। ऐ रब ! तू हम को दुन्या में भलाई दे और आख़िरत में भलाई दे और हम को अ़ज़ाबे जहन्नम से बचा। 12

www.dawateislami.net

(25) फिर यहां से सफ़ा को ज़िक्रो दुरूद और दुआ़एं पढ़ते हुए जाओ, जब सब्ज़ मील के पास पहुंचो उसी त़रह़ दौड़ो और दोनों मीलों से गुज़र कर आहिस्ता हो लो फिर आओ फिर जाओ यहां तक कि सातवां फेरा मर्वह पर ख़त्म हो और हर फेरे में उसी त़रह़ करो इस का नाम सई है। दोनों मीलों के दरमियान अगर दौड़ कर न चला या सफ़ा से मर्वह तक दौड़ कर गया तो बुरा किया कि सुन्नत तर्क हुई, मगर दम या सदक़ा वाजिब नहीं और सई में इ़ज़्ज़िबाअ़ नहीं। अगर हुजूम की वज्ह से मीलैन के दरमियान दौड़ने से आ़जिज़ है तो कुछ ठहर जाए कि भीड़ कम हो जाए और दौड़ने का मौक़अ़ मिल जाए और अगर कुछ ठहरने से हुजूम कम न होगा तो दौड़ने वालों की त़रह़ चले और अगर किसी उ़ज़्र की वज्ह से जानवर पर सुवार हो कर सई करता है तो इस दरमियान में जानवर को तेज़ चलाए मगर इस का ख़याल रहे कि किसी को ईज़ा न हो कि येह ह़राम है।

मस्अला 24 अगर मर्वह से सई शुरूअ़ की तो पहला फेरा कि मर्वह से सफ़ा को हुवा शुमार न किया जाएगा, अब कि सफ़ा से मर्वह को जाएगा येह पहला फेरा हुवा।[1] (درمختار، عالمگیری)

मस्अला 25 जो शख़्स एह़राम से पहले बेहोश हो गया है और उस के साथियों ने उस की त़रफ़ से एह़राम बांधा है तो उस की त़रफ़ से उस के साथी नियाबतन सई कर सकते हैं।[2] (منسک)

मस्अला 26 सई के लिये शर्त़ येह है कि पूरे त़वाफ़ या त़वाफ़ के अक्सर ह़िस्से के बाद हो, लिहाज़ा अगर त़वाफ़ से पहले या त़वाफ़ के तीन फेरे के बाद सई की तो न हुई और सई के क़ब्ल एह़राम होना भी शर्त़ है, ख़्वाह ह़ज का एह़राम हो या उ़मरह का, एह़राम से क़ब्ल सई नहीं हो सकती और ह़ज की सई अगर वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के क़ब्ल करे तो वक़्ते सई में भी एह़राम होना शर्त़ है और वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बाद हो तो सुन्नत येह है कि एह़राम खोल चुका हो और उ़मरह की सई में एह़राम वाजिब है यानी अगर त़वाफ़ के बाद सर मुंडा लिया फिर सई की तो सई हो गई मगर चूंकि वाजिब तर्क हुवा लिहाज़ा दम वाजिब है।[3] (لباب)

मस्अला 27 सई के लिये त़हारत शर्त़ नहीं, ह़ैज़ वाली औ़रत और जुनुब भी सई कर सकता है।[4] (عالمگیری)

मस्अला 28 सई में पैदल चलना वाजिब है जब कि उ़ज़्र न हो, लिहाज़ा अगर सुवारी या डोली वग़ैरा पर सई की या पाउं से न चला बल्कि घिसटता हुवा गया तो ह़ालते उ़ज़्र में मुआ़फ़ है और बग़ैर उ़ज़्र ऐसा किया तो दम वाजिब है।[5] (لباب)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٧.
2 ..... "المسلك المتقسط"، (باب سعي بين صفا و المروة، فصل في شرائط صحه السعي)، ص١٧٤.
3 ..... "لباب المناسك"، ص١٧٤. 4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٧.
5 ..... "لباب المناسك"، (باب سعي بين صفا و المروة، فصل في واجباته)، ص١٧٨.

www.dawateislami.net

मस्अला 29 सई में सत्रे औ़रत सुन्नत है यानी अगर्चे सत्र का छुपाना फ़र्ज़ है मगर इस हालत में फ़र्ज़ के इलावा सुन्नत भी है कि अगर सत्र खुला रहा तो इस की वज्ह से कफ़्फ़ारा वाजिब नहीं मगर एक गुनाह फ़र्ज़ के तर्क का हुवा, दूसरा तर्के सुन्नत का।[1] (منسک)

एक ज़रूरी नसीहत

बाज़ औ़रतों को मैं ने ख़ुद देखा है कि निहायत बेबाकी से सई करती हैं कि उन की कलाइयां और गला खुला रहता है और येह ख़याल नहीं कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में मअ़ूसियत करना निहायत सख़्त बात है कि यहां जिस त़रह़ एक नेकी लाख के बराबर है यूंही एक गुनाह लाख गुनाह के बराबर बल्कि यहां तो यहां काबए मुअ़ज़्ज़मा के सामने भी वोह इसी हालत से रहती हैं बल्कि इसी हालत में त़वाफ़ करते देखा, हालां कि त़वाफ़ में सत्र का छुपाना इलावा उसी फ़र्ज़े दाइमी के वाजिब भी है तो एक फ़र्ज़ दूसरे वाजिब के तर्क से दो गुनाह किये।

वोह भी कहां बैतुल्लाह के सामने और ख़ास त़वाफ़ की हालत में बल्कि बाज़ औ़रतें त़वाफ़ करने में ख़ुसूसन ह़जरे अस्वद को बोसा देने में मर्दों में घुस जाती हैं और उन का बदन मर्दों के बदन से मस होता रहता है मगर उन को इस की कुछ परवा नहीं हालां कि त़वाफ़ या बोसए ह़जरे अस्वद वग़ैरहुमा सवाब के लिये किया जाता है मगर वोह औ़रतें सवाब के बदले गुनाह मोल लेती हैं लिहाज़ा इन उमूर की त़रफ़ हुज्जाज को ख़ुसूसिय्यत के साथ तवज्जोह करनी चाहिये और उन के साथ जो औ़रतें हों उन्हें ब ताकीद ऐसी ह़रकात से मन्अ़ करना चाहिये।

मस्अला 30 मुस्तह़ब येह है कि बा वुज़ू सई करे और कपड़ा भी पाक हो और बदन भी हर क़िस्म की नजासत से पाक हो और सई शुरूअ़ करते वक़्त निय्यत कर ले।

मस्अला 31 मक्रूह वक़्त न हो तो सई के बाद दो रक्अ़त नमाज़ मस्जिद शरीफ़ में जा कर पढ़ना बेहतर है।[2] (درمختار)

इमाम अह़मद व इब्ने माजह व इब्ने ह़ब्बान, मुत्त़लिब बिन अबी वदाआ़ से रावी, कहते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को देखा कि जब सई से फ़ारिग़ हुए तो ह़जर के सामने तशरीफ़ ला कर ह़ाशियए मत़ाफ़ में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी।[3]

मस्अला 32 सई के सातों फेरे पै दर पै करे, अगर मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर किये तो इआ़दा करे और अब से सात फेरे करे कि पै दर पै न होने से सुन्नत तर्क हो गई। हां, अगर सई करते में जमाअ़त क़ाइम हुई या जनाज़ा आया तो सई छोड़ कर नमाज़ में मश्ग़ूल हो, बादे नमाज़ जहां से छोड़ी थी वहीं से पूरी कर ले।[4] (عالمگیری)

1 ..... "المسلك المتقسط"، (باب سعي بين صفا و المروة، فصل في سننه)، ص١٧٩.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٥٨٩. 3 ..... "المسند" للإمام احمد، الحديث: ٢٧٣١٣، ج١٠، ٣٥٤.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 33 सई़ की हालत में फ़ुज़ूल व बेकार बातें सख़्त नाज़ेबा हैं कि येह तो वैसे भी न चाहिये न कि इस वक़्त कि इबादत में मश्ग़ूल हो, **वाज़ेह़** हो कि उ़मरह सिर्फ़ इन्हीं अफ़्आ़ले त़वाफ़ व सई़ का नाम है। क़िरान व तमत्तोअ़ वाले के लिये येही उ़मरह हो गया और इफ़राद वाले के लिये येह त़वाफ़ **त़वाफ़े कुदूम** यानी हाज़िरिये दरबार का मुजरा।

मस्अला 34 ह़ज करने वाला मक्के में जाने से पहले अ़रफ़ात में पहुंचा तो त़वाफ़े कुदूम साक़ित़ हो गया मगर बुरा किया कि सुन्नत फ़ौत हुई और दम वग़ैरा वाजिब नहीं।[1] (جوہرہ، ردالمحتار)

(26) **क़ारिन** यानी जिस ने क़िरान किया है इस के बाद त़वाफ़े कुदूम की निय्यत से एक त़वाफ़ व सई़ और बजा लाए।

(27) **क़ारिन** और **मुफ़रिद** यानी जिस ने सिर्फ़ ह़ज का एह़राम बांधा था, लब्बैक कहते हुए मक्के में ठहरें। उन की लब्बैक दसवीं तारीख़ रमिये जम्रा के वक़्त ख़त्म होगी और उसी वक़्त एह़राम से निकलेंगे जिस का ज़िक्र اِنْ شَآءَ اللہ تَعَالٰی आता है मगर **मुतमत्तेअ़** यानी जिस ने तमत्तोअ़ किया है वोह और **मोअ़्तमिर** यानी निरा उ़मरह करने वाला शुरूए़ त़वाफ़े काबए मुअ़ज़्ज़मा से संगे अस्वद शरीफ़ का पहला बोसा लेते ही लब्बैक छोड़ दें और त़वाफ़ व सइ़ये मज़्कूर के बाद ह़ल्क़ करें यानी सारा सर मुंडा दें या तक़्सीर यानी बाल कतरवाएं और एह़राम से बाहर आएं।

सर मुंडाना या बाल क़तरवाना

औ़रतों को बाल मुंडाना ह़राम है, वोह सिर्फ़ एक पोरे बराबर बाल कतरवा लें और मर्दों को इख़्तियार है कि ह़ल्क़ करें या तक़्सीर और बेहतर ह़ल्क़ है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़िज्जतुल वदाअ़ में ह़ल्क़ कराया।[2] और सर मुंडाने वालों के लिये दुआ़ए रह़मत तीन बार फ़रमाई और कतरवाने वालों के लिये एक बार[3] और अगर मुतमत्तेअ़ मिना की क़ुरबानी के लिये जानवर साथ ले गया है तो उ़मरह के बाद एह़राम खोलना उसे जाइज़ नहीं, बल्कि क़ारिन की त़रह़ एह़राम में रहे और लब्बैक कहा करे यहां तक कि दसवीं की रमी के साथ लब्बैक छोड़े फिर क़ुरबानी के बाद ह़ल्क़ या तक़्सीर कर के एह़राम से बाहर हो। फिर मुतमत्तेअ़ चाहे तो आठवीं ज़ुल ह़िज्जा तक बे एह़राम रहे, मगर अफ़्ज़ल येह है कि जल्द ह़ज का एह़राम बांध ले, अगर येह ख़याल न हो कि दिन ज़ियादा हैं एह़राम की क़ैदें न निभेंगी।

(28) **तम्बीह :** त़वाफ़े कुदूम में इज़्तिबाअ़ व रमल और इस के बाद सफ़ा, मर्वह में सई़ ज़रूरी नहीं मगर अब न करेगा तो त़वाफ़े ज़ियारत में कि ह़ज का त़वाफ़ फ़र्ज़ है, जिस का ज़िक्र

1 ..... "الجوهرة النيرة"، الجزء الاول، كتاب الحج، ص٢٠٩. و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٥.

2 ..... "صحيح البخارى"، كتاب المغازى، باب حجة الوداع، الحديث: ٤٤١٠، ج٣، ص١٤٢.

3 ..... "صحيح البخارى"، كتاب الحج، باب الحلق والتقصير عند الاحلال، الحديث: ١٧٢٨، ج١، ص٥٧٤.

www.dawateislami.net

اِنْ شَآءَاللّٰه आता है येह सब काम करने होंगे और उस वक़्त हुजूम बहुत होता है, अ़जब नहीं कि त़वाफ़ में रमल और मस्आ़ में दौड़ना न हो सके और उस वक़्त हो चुका तो इस त़वाफ़ में इन चीज़ों की ह़ाजत न होगी लिहाज़ा हम ने इन को मुत्लक़न तरकीब में दाख़िल कर दिया।

(29) मुफ़रिद व क़ारिन तो ह़ज के रमल व सई से त़वाफ़े क़ुदूम में फ़ारिग़ हो लिये मगर मुतमत्तेअ़ ने जो त़वाफ़ व सई किये वोह उ़मरह के थे, ह़ज के रमल व सई उस से अदा न हुए और उस पर त़वाफ़े क़ुदूम है नहीं, कि क़ारिन की त़रह़ इस में येह उमूर कर के फ़राग़त पा ले लिहाज़ा अगर वोह भी पहले से फ़ारिग़ हो लेना चाहे तो जब ह़ज का एह़राम बांधे उस के बाद एक नफ़्ल त़वाफ़ में रमल व सई कर ले अब उसे भी त़वाफ़े ज़ियारत में इन उमूर की ह़ाजत न होगी।

अय्यामे इक़ामत में क्या करें

(30) अब येह सब ह़ुज्जाज (क़ारिन, मुतमत्तेअ़, मुफ़रिद कोई हो) कि मिना के जाने के लिये मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में आठवीं तारीख़ का इन्तिज़ार कर रहे हैं, अय्यामे इक़ामत में जिस क़दर हो सके निरा त़वाफ़ बग़ैर इज़्तिबाअ़ व रमल व सई करते रहें कि बाहर वालों के लिये येह सब से बेहतर इ़बादत है और हर सात फेरों पर मक़ामे इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ें।

(31) ज़ियादा एह़तियात़ येह है कि औ़रतों को त़वाफ़ के लिये शब के दस ग्यारह बजे जब हुजूम कम हो ले जाएं। यूंही सफ़ा व मर्वह के दरमियान सई के लिये भी।

(32) औ़रतें नमाज़ फ़रोद गाह[1] ही में पढ़ें। नमाज़ों के लिये जो दोनों मस्जिदे करीम में ह़ाज़िर होती हैं जहालत है कि मक़्सूद सवाब है और ख़ुद हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "औ़रत को मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से ज़ियादा सवाब घर में पढ़ना है।"[2] हां, औ़रतें मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में रोज़ाना एक बार रात में त़वाफ़ कर लिया करें और मदीनए त़य्यिबा में सुब्ह़ो शाम सलातो सलाम के लिये ह़ाज़िर होती रहें।

(33) अब या मिना से वापसी के बाद जब कभी रात व दिन में जितनी बार काबए मुअ़ज़्ज़मा पर नज़र पड़े لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ तीन बार कहें और नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم पर दुरूद भेजें और दुआ करें कि वक़्ते क़बूल है।

त़वाफ़ में येह बातें ह़राम हैं

(34) त़वाफ़ अगर्चे नफ़्ल हो इस में येह बातें ह़राम हैं :

1 ....यानी क़ियामगाह 2 ....

www.dawateislami.net

(1) बे वुज़ू त़वाफ़ करना।

(2) कोई उ़ज़्व जो सत्र में दाख़िल है उस का चहारुम खुला होना मसलन रान या आज़ाद औ़रत का कान या कलाई।

(3) बे मजबूरी सुवारी पर या किसी की गोद में या कन्धों पर त़वाफ़ करना।

(4) बिला उ़ज़्र बैठ कर सरक्ना या घुटनों चलना।

(5) काबे को दह्ने हाथ पर ले कर उलटा त़वाफ़ करना।

(6) त़वाफ़ में ह़तीम के अन्दर हो कर गुज़रना।

(7) सात फेरों से कम करना।[1]

त़वाफ़ में येह 15 बातें मक्रूह हैं

(35) येह बातें त़वाफ़ में मक्रूह हैं :

(1) फ़ुज़ूल बात करना।

(2) बेचना।

(3) ख़रीदना।

(4) ह़म्दो नात व मन्क़बत के सिवा कोई शेअ़र पढ़ना।

(5) ज़िक्र या दुआ़ या तिलावत या कोई कलाम बुलन्द आवाज़ से करना।

(6) नापाक कपड़े में त़वाफ़ करना।

(7) रमल, या (8) इज़्त़िबाअ़, या (9) बोसए संगे अस्वद जहां जहां इन का हुक्म है तर्क करना।

(10) त़वाफ़ के फेरों में ज़ियादा फ़स्ल देना यानी कुछ फेरे कर लिये फिर देर तक ठहर गए या और किसी काम में लग गए बाक़ी फेरे बाद को किये मगर वुज़ू जाता रहे तो कर आए या जमाअ़त क़ाइम हुई और उस ने अभी नमाज़ न पढ़ी तो शरीक हो जाए बल्कि जनाज़े की नमाज़ में भी त़वाफ़ छोड़ कर मिल सकता है बाक़ी जहां से छोड़ा था आ कर पूरा कर ले। यूंही पेशाब पाख़ाना की ज़रूरत हो तो चला जाए, वुज़ू कर के बाक़ी पूरा करे।

(11) एक त़वाफ़ के बाद जब तक उस की रक्अ़तें न पढ़ ले दूसरा त़वाफ़ शुरूअ़ कर देना मगर जब कि कराहते नमाज़ का वक़्त हो जैसे सुब्हे सादिक़ से बुलन्दिये आफ़्ताब तक या

1 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج ١٠، ص ٧٤٤، وغيره.

www.dawateislami.net

नमाज़े अ़स्र पढ़ने के बाद से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक कि इस में मुतअ़द्दद त़वाफ़ बे फ़स्ले नमाज़ जाइज़ हैं। वक़्ते कराहत निकल जाए तो हर त़वाफ़ के लिये दो रक्अ़त अदा करे और अगर भूल कर एक त़वाफ़ के बाद बग़ैर नमाज़ पढ़े दूसरा त़वाफ़ शुरूअ़ कर दिया तो अगर अभी एक फेरा पूरा न किया हो तो छोड़ कर नमाज़ पढ़े और पूरा फेरा कर लिया है तो उस त़वाफ़ को पूरा कर के नमाज़ पढ़े।

(12) ख़ुत़्बए इमाम के वक़्त त़वाफ़ करना।

(13) जमाअ़ते फ़र्ज़ के वक़्त करना। हां, अगर ख़ुद पहली जमाअ़त में पढ़ चुका है तो बाक़ी जमाअ़तों के वक़्त त़वाफ़ करने में ह़रज नहीं और नमाज़ियों के सामने गुज़र भी सकता है कि त़वाफ़ भी नमाज़ ही की मिस्ल है।

(14) त़वाफ़ में कुछ खाना।

(15) पेशाब पाख़ाना या रीह़ के तक़ाज़े में त़वाफ़ करना।[1]

येह बातें त़वाफ़ व सई़ दोनों में जाइज़ हैं

(36) येह बातें त़वाफ़ व सई़ दोनों में मुबाह़ हैं :

(1) सलाम करना।

(2) जवाब देना।

(3) ह़ाजत के लिये कलाम करना।

(4) फ़तवा पूछना।

(5) फ़तवा देना।

(6) पानी पीना।

(7) ह़म्दो नात व मन्क़बत के अश्आ़र आहिस्ता पढ़ना और सई़ में खाना भी खा सकता है।[2]

सई़ में येह बातें मक्रूह हैं

(37) सई़ में येह बातें मक्रूह हैं :

1 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج ١٠، ص ٧٤٤، وغيره.

2 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج ١٠، ص ٧٤٥، وغيره.

www.dawateislami.net

(1) बे ह़ाजत इस के फेरों में ज़ियादा फ़ासिला देना मगर जमाअ़त क़ाइम हो तो चला जाए। यूंही शिर्कते जनाज़ा या क़ज़ाए ह़ाजत या तज्दीदे वुज़ू को जाना अगर्चे सई में वुज़ू ज़रूरी नहीं।

(2) (3) ख़रीदो फ़रोख़्त।

(4) फ़ुज़ूल कलाम।

(5) (6) सफ़ा या मर्वह पर न चढ़ना।

(7) मर्द का मस्आ़ में बिला उ़ज़्र न दौड़ना।

(8) त़वाफ़ के बाद बहुत ताख़ीर कर के सई करना।

(9) सत्रे औ़रत न होना।

(10) परेशान नज़री यानी इधर उधर फ़ुज़ूल देखना सई में भी मक्रूह है और त़वाफ़ में और ज़ियादा मक्रूह।[1]

त़वाफ़ व सई के मसाइल में मर्द व औ़रत के फ़र्क़

(38) त़वाफ़ व सई के सब मसाइल में औ़रतें भी शरीक हैं मगर (1) इज़्तिबाअ़, (2) रमल, (3) मस्आ़ में दौड़ना, येह तीनों बातें औ़रतों के लिये नहीं। (4) मुज़ाह़मत के साथ बोसए संगे अस्वद या (5) रुक्ने यमानी को छूना या (6) काबे से क़रीब होना या (7) ज़मज़म के अन्दर नज़र करना या (8) ख़ुद पानी भरने की कोशिश करना, येह बातें अगर यूं हो सकें कि ना महरम से बदन न छूए तो ख़ैर, वरना अलग थलग रहना इन के लिये सब से बेहतर है।[2]

मिना की रवानगी और अ़रफ़ा का वुक़ूफ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ ثُمَّ اَفِیْضُوْا مِنْ حَیْثُ اَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴾[3]

फिर तुम भी वहां से लौटो जहां से और लोग वापस हुए (यानी अ़रफ़ात से) और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से मग़्फ़िरत मांगो, बेशक **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) बख़्शने वाला, रह़्म फ़रमाने वाला है।

1 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج ١٠، ص ٧٤٥، وغيره.

2 ..... "الفتاوى الرضوية"، ج ١٠، ص ٧٤٥، وغيره. 3 .....پ٢، البقرة: ١٩٩.

www.dawateislami.net

ह़दीस 1 सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से मरवी कि क़ुरैश और जो लोग उन के त़रीक़े पर थे मुज़्दलिफ़ा में वुक़ूफ़ करते और तमाम अ़रब अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ करते । जब इस्लाम आया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم को हुक्म फ़रमाया कि "अ़रफ़ात में जा कर वुक़ूफ़ करें फिर वहां से वापस हों।"(1)

ह़दीस 2 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से ह़िज्जतुल वदाअ़ शरीफ़ की ह़दीस मरवी, इसी में है कि यौमुत्तरविया (आठवीं ज़ुल ह़िज्जा) को लोग मिना को रवाना हुए और ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने मिना में ज़ोह़र व अ़स्र व मग़रिब व इ़शा व फ़ज्र की नमाज़ें पढ़ीं फिर थोड़ा तवक़्क़ुफ़ किया यहां तक कि आफ़्ताब तुलूअ़ हुवा ।

और हुक्म फ़रमाया कि निमरह(2) में एक क़ुब्बा नस्ब किया जाए, इस के बाद ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) यहां से रवाना हुए और क़ुरैश का येह गुमान था कि मुज़्दलिफ़ा में वुक़ूफ़ फ़रमाएंगे जैसा कि जाहिलिय्यत में क़ुरैश किया करते थे मगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم मुज़्दलिफ़ा से आगे चले गए यहां तक कि अ़रफ़ा में पहुंचे यहां निमरह में क़ुब्बा नस्ब हो चुका था, उस में तशरीफ़ फ़रमा हुए यहां तक कि जब आफ़्ताब ढल गया सुवारी तय्यार की गई फिर बत्ने वादी में तशरीफ़ लाए और ख़ुत्बा पढ़ा फिर बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने अज़ानो इक़ामत कही, ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ने नमाज़े ज़ोह़र पढ़ी फिर इक़ामत हुई और अ़स्र की नमाज़ पढ़ी और दोनों नमाज़ों के दरमियान कुछ न पढ़ा फिर मौक़िफ़ में तशरीफ़ लाए और वुक़ूफ़ किया यहां तक कि आफ़्ताब ग़ुरूब हो गया ।(3)

ह़दीस 3 सह़ीह़ मुस्लिम में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मैं ने यहां वुक़ूफ़ किया और पूरा अ़रफ़ात जाए वुक़ूफ़ है और मैं ने इस जगह वुक़ूफ़ किया और पूरा मुज़्दलिफ़ा वुक़ूफ़ की जगह है ।"(4)

ह़दीस 4 मुस्लिम व नसाई व इब्ने माजह व रज़ीन उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से रावी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अ़रफ़ा से ज़ियादा किसी दिन में **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों को जहन्नम से आज़ाद नहीं करता फिर इन के साथ मलाएका पर मुबाहात फ़रमाता है ।"(5)

ह़दीस 5 तिरमिज़ी में ब रिवायते अ़म्र बिन शुऐ़ब अ़न अबीह अ़न जद्दिही मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अ़रफ़े की सब से बेहतर दुआ और वोह जो मैं

1 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الحج، باب فی الوقوف ...إلخ، الحدیث: ۱۲۱۹، ص٦٣٨.

2 ...अ़रफ़ात में एक मक़ाम है । 12

3 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الحج، باب حجة النبي صلی اللّٰہ علیه وسلم، الحدیث: ۱٤۷-(۱۲۱۸)، ص٦٣٤.

4 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الحج، باب ماجاء ان عرفة کلها موقف، الحدیث: ۱٤۹-(۱۲۱۸)، ص٦٣٨.

5 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الحج، باب فضل یوم عرفة، الحدیث: ۱۳٤۸، ص۷۰۳.

www.dawateislami.net

ने और मुझ से क़ब्ल अम्बिया ने की येह है :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ [1]

हदीस 6 इमाम मालिक मुरसलन त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अ़रफ़ा से ज़ियादा किसी दिन में शैत़ान को ज़ियादा सग़ीर व ज़लीलो ह़क़ीर और ग़ैज़ में भरा हुवा नहीं देखा गया और इस की वज्ह येह है कि इस दिन में रह़मत का नुज़ूल और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का बन्दों के बड़े बड़े गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाना शैत़ान देखता है।"[2]

हदीस 7 इब्ने माजह व बैहक़ी अ़ब्बास बिन मिरदास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने अ़रफ़े की शाम को अपनी उम्मत के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़ मांगी और वोह दुआ़ मक़्बूल हुई, फ़रमाया : "मैं ने इन्हें बख़्श दिया सिवा ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद के कि मज़्लूम के लिये ज़ालिम से मुआख़ज़ा करूंगा।" ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने अ़र्ज़ की : ऐ रब ! अगर तू चाहे तो मज़्लूम को जन्नत अ़त़ा कर दे और ज़ालिम की मग़्फ़िरत फ़रमा दे। उस दिन येह दुआ़ मक़्बूल न हुई फिर मुज़्दलिफ़ा में सुब्ह़ के वक़्त ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ने इसी दुआ़ का इआ़दा किया उस वक़्त येह दुआ़ मक़्बूल हुई, इस पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तबस्सुम फ़रमाया।

सिद्दीक़ व फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने अ़र्ज़ की : हमारे मां बाप ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) पर क़ुरबान ! इस वक़्त तबस्सुम फ़रमाने का क्या सबब है ? इरशाद फ़रमाया कि "दुश्मने ख़ुदा इब्लीस को जब येह मालूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी दुआ़ क़बूल की और मेरी उम्मत की बख़्शिश फ़रमाई तो अपने सर पर ख़ाक उड़ाने लगा और वावेला करने लगा, उस की येह घबराहट देख कर मुझे हंसी आई।"[3]

हदीस 8 अबू याला व बज़्ज़ार व इब्ने ख़ुज़ैमा व इब्ने ह़ब्बान जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ज़ुल ह़िज्जा के दस दिनों से कोई दिन **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नज़्दीक अफ़्ज़ल नहीं। एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! येह अफ़्ज़ल हैं या इतने दिनों में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में जिहाद करना ? इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह में इस तादाद में जिहाद करने से भी येह अफ़्ज़ल हैं और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नज़्दीक अ़रफ़े से ज़ियादा कोई दिन अफ़्ज़ल नहीं।

अ़रफ़े के दिन **अल्लाह** तबारक व तआ़ला आस्माने दुन्या की त़रफ़ ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और ज़मीन वालों के साथ आस्मान वालों पर मुबाहात करता, उन से फ़रमाता है :

1 ..... "جامع الترمذي"، كتاب الدعوات، باب فی دعاء يوم عرفة، الحديث: ٣٥٩٦، ج٥، ص٣٣٨.
2 ..... "الموطأ" للإمام مالك، كتاب الحج، باب جامع الحج، الحديث: ٩٨٢، ج١، ص٣٨٦.
3 ..... "سنن ابن ماجه"، أبواب المناسك، باب الدعا بعرفة، الحديث: ٣٠١٣، ج٣، ص٤٦٦.

www.dawateislami.net

"मेरे बन्दों को देखो कि परागन्दा सर, गर्द आलूदा धूप खाते हुए दूर दूर से मेरी रह़मत के उम्मीद वार ह़ाज़िर हुए तो अ़रफ़े से ज़ियादा जहन्नम से आज़ाद होने वाले किसी दिन में देखे न गए।"(1) और बैहक़ी की रिवायत में येह भी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मलाएका से फ़रमाता है : "मैं तुम को गवाह करता हूं कि मैं ने इन्हें बख़्श दिया। फ़रिश्ते कहते हैं : इन में फ़ुलां व फ़ुलां ह़राम काम करने वाले हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मैं ने सब को बख़्श दिया।"(2)

ह़दीस 9 इमाम अह़मद व त़बरानी अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि एक शख़्स ने अ़रफ़े के दिन औरतों की त़रफ़ नज़र की, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "आज वोह दिन है कि जो शख़्स कान और आंख और ज़बान को क़ाबू में रखे उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी।"(3)

ह़दीस 10 बैहक़ी जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो मुसलमान अ़रफ़े के दिन पिछले पहर को मौक़िफ़ में वुक़ूफ़ करे फिर सौ100 बार कहे : لَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰـہُ وَحْـدَہٗ لَا شَـرِیْکَ لَـہٗ لَـہُ الْمُلْکُ وَلَـہُ الْـحَـمْـدُ یُـحْیِیْ وَ یُمِیْتُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ और सौ100 बार قُلْ ھُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ पढ़े और फिर सौ100 बार येह दुरूद पढ़े :

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ وَعَلَیْنَا مَعَھُمْ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "ऐ मेरे फ़रिश्तो ! मेरे उस बन्दे को क्या सवाब दिया जाए जिस ने मेरी तस्बीह़ो तह़्लील की और तक्बीरो ताज़ीम की, मुझे पहचाना और मेरी सना की और मेरे नबी पर दुरूद भेजा। ऐ मेरे फ़रिश्तो ! गवाह रहो कि मैं ने उसे बख़्श दिया और उस की शफ़ाअ़त ख़ुद उस के ह़क़ में क़बूल की और अगर मेरा येह बन्दा मुझ से सुवाल करे तो उस की शफ़ाअ़त जो यहां हैं सब के ह़क़ में क़बूल करूं।"(4)

ह़दीस 11 बैहक़ी अबू सुलैमान दारानी से रावी कि अमीरुल मुअमिनीन मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہ से वुक़ूफ़ के बारे में सुवाल हुवा कि इस पहाड़ में क्यूं मुक़र्रर हुवा, ह़रम में क्यूं न हुवा ? फ़रमाया : काबा बैतुल्लाह है और ह़रम उस का दरवाज़ा तो जब लोग उस की ज़ियारत के क़स्द से आए दरवाज़े पर खड़े किये गए कि तज़र्रोअ़ करें। अ़र्ज़ की : या अमीरल मुअमिनीन ! फिर वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा का क्या सबब है ? फ़रमाया कि जब उन्हें आने की इजाज़त मिली तो अब इस दूसरी डेवढ़ी पर रोके गए फिर जब तज़र्रोअ़ ज़ियादा हुवा तो हुक्म हुवा कि मिना में क़ुरबानी करें फिर जब अपने मैल कुचैल उतार चुके और क़ुरबानियां कर चुके और गुनाहों से पाक हो चुके तो अब बा त़हारत ज़ियारत की उन्हें इजाज़त मिली।

1 ..... "مسند أبي يعلى"، الحديث: ٢٠٨٦، ج٢، ص٢٩٩. 2 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في الوقوف بعرفة ...إلخ، الحديث: ١، ج٢، ص١٢٨.
3 ..... "شعب الإيمان"، باب في المناسك، فضل الوقوف بعرفات ...إلخ، الحديث: ٤٠٧١، ج٣، ص٤٦١.
4 ..... "شعب الإيمان"، باب في المناسك، فضل الوقوف بعرفات ...إلخ، الحديث: ٤٠٧٤، ج٣، ص٤٦٣.

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की गई : या अमीरल मुअमिनीन ! अय्यामे तश्रीक़ में रोज़े क्यूं ह़राम हैं ? फ़रमाया कि वोह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़व्वार व मेहमान हैं और मेहमान को बग़ैर इजाज़ते मेज़बान रोज़ा रखना जाइज़ नहीं । अ़र्ज़ की गई : या अमीरल मुअमिनीन ! ग़िलाफ़े काबा से लिपटना किस लिये है ? फ़रमाया : इस की मिसाल येह है कि किसी ने दूसरे का गुनाह किया है वोह उस के कपड़ों से लिपटता और आ़जिज़ी करता है कि येह उसे बख़्श दे ।[1] जब वुक़ूफ़ के सवाब से आगाह हुए तो अब गुनाहों से पाक साफ़ होने का वक़्त क़रीब आया, इस के लिये तय्यार हो जाओ और हिदायात पर अ़मल करो ।

(1) **सातवीं तारीख़ :** मस्जिदे ह़राम में बादे ज़ोह्र इमाम ख़ुत़्बा पढ़ेगा उसे सुनो, उस ख़ुत़्बे में मिना जाने और अ़रफ़ात में नमाज़ और वुक़ूफ़ और वहां से वापस होने के मसाइल बयान किये जाएंगे ।

(2) यौमुत्तरविया में कि आठवीं तारीख़ का नाम है जिस ने एह़राम न बांधा हो बांध ले और एक नफ़्ल त़वाफ़ में रमल व सई कर ले जैसा कि ऊपर गुज़रा और एह़राम के मुतअ़ल्लिक़ जो आदाब पेश्तर बयान किये गए, मसलन ग़ुस्ल करना, ख़ुश्बू लगाना वोह यहां भी मल्हूज़ रखे और नहा धो कर मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ में आए और त़वाफ़ करे, इस के बाद त़वाफ़ की नमाज़ ब दस्तूर अदा करे, फिर दो रक्अ़त सुन्नते एह़राम की निय्यत से पढ़े, इस के बाद ह़ज की निय्यत करे और लब्बैक कहे ।

(3) जब आफ़्ताब निकल आए मिना को चलो । अगर आफ़्ताब निकलने के पहले ही चला गया जब भी जाइज़ है मगर बाद में बेहतर है और ज़वाल के बाद भी जा सकता है मगर ज़ोह्र की नमाज़ मिना में पढ़े और हो सके तो पियादा जाओ कि जब तक मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पलट कर आओगे हर क़दम पर सात करोड़ नेकियां लिखी जाएंगी, येह नेकियां तख़्मीनन अठत्तर खरब चालीस अरब[7840000000000] आती हैं और **अल्लाह** का फ़ज़्ल इस नबी के सदक़े में इस उम्मत पर बे शुमार है । جل وعلا وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم والحمد للہ رب العلمین

(4) रास्ते भर लब्बैक व दुआ़ व दुरूद व सना की कसरत करो ।

(5) जब मिना नज़र आए येह दुआ़ पढ़ो :

اَللّٰهُمَّ هٰذِیْ مِنًی فَامْنُنْ عَلَیَّ بِمَا مَنَنْتَ بِهٖ عَلٰی اَوْلِیَآئِکَ [2]

(6) यहां रात को ठहरो । आज ज़ोह्र से नवीं की सुब्ह़ तक पांच नमाज़ें यहीं मस्जिदे ख़ैफ़ में पढ़ो, आज कल बाज़ मुत़व्विफ़ों ने येह निकाली है कि आठवीं को मिना में नहीं ठहरते सीधे अ़रफ़ात पहुंचते हैं, उन की न माने और इस सुन्नते अ़ज़ीमा को हरगिज़ न छोड़े । क़ाफ़िले

1 ..... "شعب الإیمان"، باب فی المناسك، فضل الوقوف بعرفات ...إلخ، الحدیث: ٤٠٨٤، ج٣، ص٤٦٨.
و"الترغیب و الترهیب"، کتاب الحج، الترغیب فی الوقوف بعرفة ...إلخ، الحدیث: ١٦، ج٢، ص١٣٣.

2 ...इलाही ! येह मिना है मुझ पर तू वोह एह़सान कर जो अपने औलिया पर तू ने किया । 12

www.dawateislami.net

के इसरार से उन को भी मजबूर होना पड़ेगा। शबे अ़रफ़ा मिना में ज़िक्रो इबादत से जाग कर सुब्ह़ करो। सोने के बहुत दिन पड़े हैं और न हो तो कम अज़ कम इशा व सुब्ह़ जमाअ़ते ऊला से पढ़ो कि शब बेदारी का सवाब मिलेगा और बा वुज़ू सोओ कि रूह़ अ़र्श तक बुलन्द होगी। अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से बैहक़ी व त़बरानी वग़ैरहुमा ने रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो शख़्स अ़रफ़े की रात में येह दुआ़एं हज़ार मरतबा पढ़े तो जो कुछ **अल्लाह** तआ़ला से मांगेगा पाएगा जब कि गुनाह या क़त़्ए़ रेह़्म का सुवाल न करे।"

سُبْحَانَ الَّذِیْ فِی السَّمَآءِ عَرْشُهٗ سُبْحَنَ الَّذِیْ فِی الْاَرْضِ مَوْطِئُهٗ سُبْحَنَ الَّذِیْ فِی الْبَحْرِ سَبِیْلُهٗ سُبْحَنَ الَّذِیْ فِی النَّار سُلْطَانُهٗ سُبْحَنَ الَّذِیْ فِی الْجَنَّةِ رَحْمَتُهٗ سُبْحَنَ الَّذِیْ فِی الْقَبْرِ قَضَاؤُهٗ سُبْحَنَ الَّذِیْ فِی الْهَوَاءِ رُوْحُهٗ سُبْحَنَ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمَآءَ سُبْحَنَ الَّذِیْ وَضَعَ الْاَرْضَ سُبْحَنَ الَّذِیْ لَا مَلْجَاَ وَلَا مَنْجَاَ مِنْهُ اِلَّا اِلَیْهِ (1)

(8) **सुब्ह़ :** मुस्तह़ब वक़्त नमाज़ पढ़ कर लब्बैक व ज़िक्रो दुरूद शरीफ़ में मश्ग़ूल रहो यहां तक कि आफ़्ताब कोहे सबीर पर कि मस्जिदे ख़ैफ़ शरीफ़ के सामने है चमके। अब अ़रफ़ात को चलो, दिल को ख़याले ग़ैर से पाक करने में कोशिश करो कि आज वोह दिन है कि कुछ का ह़ज क़बूल करेंगे और कुछ को उन के सदक़े में बख़्श देंगे। मह़रूम वोह जो आज मह़रूम रहा, वस्वसे आएं तो उन से लड़ाई न बांधो कि यूं भी दुश्मन का मत़लब ह़ासिल है वोह तो येही चाहता है कि तुम और ख़याल में लग जाओ, लड़ाई बांधी जब भी तो और ख़याल में पड़े बल्कि वस्वसों की त़रफ़ ध्यान ही न करो, येह समझ लो कि कोई और वुजूद है जो ऐसे ख़यालात ला रहा है, मुझे अपने रब से काम है, यूं اِنْ شَآءَ اللّٰہ تَعَالٰی वोह मरदूद नाकाम वापस जाएगा।

मस्अला 1 अगर अ़रफ़े की रात मक्के में गुज़ारी और नवीं को फ़ज्र पढ़ कर मिना होता हुवा अ़रफ़ात में पहुंचा तो ह़ज हो जाएगा मगर बुरा किया कि सुन्नत को तर्क किया। यूंही अगर रात को मिना में रहा मगर सुब्ह़े सादिक़ होने से पहले या नमाज़े फ़ज्र से पहले या आफ़्ताब निकलने से पहले अ़रफ़ात को चला गया तो बुरा किया और अगर आठवीं को जुमुआ़ का दिन है जब भी ज़वाल से पहले मिना को जा सकता है कि इस पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं और जुमुआ़ का ख़याल हो तो मिना में भी जुमुआ़ हो सकता है, जब कि अमीरे मक्का वहां हो या उस के हुक्म से क़ाइम किया जाए।

(1) ..... "المسلك المتقسط"، (فصل في الرواح من منى الى عرفات)، ص ۱۹۰.

तर्जमा : पाक है वोह जिस का अ़र्श बुलन्दी में है, पाक है वोह जिस की ह़ुकूमत ज़मीन में है, पाक है वोह कि दरिया में उस का रास्ता है, पाक है वोह कि आग में उसी की सल्त़नत है, पाक है वोह कि जन्नत में उस की रह़मत है, पाक है वोह कि क़ब्र में उस का हुक्म है, पाक है वोह कि हवा में जो रूह़ें हैं उसी की मिल्क हैं, पाक है वोह जिस ने आस्मान को बुलन्द किया, पाक है वोह जिस ने ज़मीन को पस्त किया, पाक है वोह कि उस के अ़ज़ाब से पनाह व नजात की कोई जगह नहीं, मगर उसी की त़रफ़। 12

www.dawateislami.net

(9) रास्ते भर ज़िक्रो दुरूद में बसर करो, बे ज़रूरत कुछ बात न करो, लब्बैक की बे शुमार बार बार कसरत करते चलो और मिना से निकल कर येह दुआ पढ़ो :

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ تَوَجَّهْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَلِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ اَرَدْتُّ فَاجْعَلْ ذَنْۢبِيْ مَغْفُوْرًا وَّحَجِّيْ مَبْرُوْرًا وَّارْحَمْنِيْ وَلَا تُخَيِّبْنِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْ سَفَرِيْ وَاقْضِ بِعَرَفَاتٍ حَاجَتِيْ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا اَقْرَبَ غَدْوَةٍ غَدَوْتُهَا مِنْ رِّضْوَانِكَ وَاَبْعَدَ هَا مِنْ سَخَطِكَ، اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ غَدَوْتُ وَعَلَيْكَ اعْتَمَدْتُّ وَوَجْهَكَ اَرَدْتُّ فَاجْعَلْنِيْ مِمَّنْ تُبَاهِيْ بِهِ الْيَوْمَ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِّنِّيْ وَاَفْضَلُ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ الدَّآئِمَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ (1)

(10) जब निगाह जबले रह़मत पर पड़े इन उमूर में और ज़ियादा कोशिश करो कि اِنْ شَآءَ الله تَعَالٰى वक़्ते क़बूल है।

(11) अ़रफ़ात में उस पहाड़ के पास या जहां जगह मिले शारेए़ आ़म से बच कर उतरो।

(12) आज के हुजूम में कि लाखों आदमी, हज़ारों डेरे ख़ैमे होते हैं। अपने डेरे से जा कर वापसी में उस का मिलना दुश्वार होता है, इस लिये पहचान का निशान उस पर क़ाइम कर दो कि दूर से नज़र आए।

(13) मस्तूरात साथ हों तो उन के बुर्क़अ़ पर भी कोई कपड़ा ख़ास अ़लामत चमकते रंग का लगा दो कि दूर से देख कर तमीज़ कर सको और दिल मुशव्वश न रहे।

(14) दोपहर तक ज़ियादा वक़्त **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हुज़ूर ज़ारी और ख़ालिस निय्यत से ह़स्बे त़ाक़त सदक़ा व ख़ैरात व ज़िक्र व लब्बैक व दुरूद व दुआ व इस्तिग़फ़ार व कलिमए तौह़ीद में मश्ग़ूल रहे। ह़दीस में है, नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "सब में बेहतर वोह चीज़ जो आज के दिन मैं ने और मुझ से पहले अम्बिया ने कही येह है :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۖ يُحْيِيْ وَ يُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ ۖ بِيَدِهِ الْخَيْرُ ۖ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (2)

---

(1)...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तेरी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और तुझ पर मैं ने तवक्कुल किया और तेरे वज्हे करीम का इरादा किया, मेरे गुनाह बख़्श और मेरे ह़ज को मबरूर कर और मुझ पर रह़म कर और मुझे टोटे में न डाल और मेरे लिये मेरे सफ़र में बरकत दे और अ़रफ़ात में मेरी ह़ाजत पूरी कर, बेशक तू हर शै पर क़ादिर है। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मेरा चलना अपनी ख़ुशनूदी से क़रीब कर और अपनी नाख़ुशी से दूर कर। इलाही ! मैं तेरी त़रफ़ चला और तुझी पर एतिमाद किया और तेरी ज़ात का इरादा किया तो मुझ को उन में से कर जिन के साथ क़ियामत के दिन तू मुबाहात करेगा, जो मुझ से बेहतर व अफ़्ज़ल हैं। इलाही ! मैं तुझ से अ़फ़्वो आ़फ़ियत का सुवाल करता हूं और उस आ़फ़ियत का जो दुन्या व आख़िरत में हमेशा रहने वाली है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) दुरूद भेजे बेहतरीन मख़्लूक़ मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और उन की आल व अस्ह़ाब सब पर। 12

(2)...."لباب المناسك" للسندی، (باب الوقوف بعرفات و أحكامه)، ص ۱۹۱.

www.dawateislami.net

और चाहे तो इस के साथ येह भी कहे :

لَا نَعْبُدُ اِلَّا اِيَّاهُ وَلَا نَعْرِفُ رَبًّا سِوَاهُ ط اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا اَللّٰهُمَّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ وَيَسِّرْلِيْ اَمْرِيْ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَسَاوِسِ الصَّدْرِ وَتَشْتِيْتِ الْاَمْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا يَلِجُ فِي الَّيْلِ وَشَرِّ مَا يَلِجُ فِي النَّهَارِ وَشَرِّ مَا تَهُبُّ بِهِ الرِّيْحُ وَشَرِّ بَوَائِقِ الدَّهْرِ اَللّٰهُمَّ هٰذَا مَقَامُ الْمُسْتَجِيْرِ الْعَآئِذِ مِنَ النَّارِ اَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ بِعَفْوِكَ وَاَدْخِلْنِي الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِذْ هَدَيْتَنِي الْاِسْلَامَ فَلَا تَنْزَعْهُ عَنِّيْ حَتّٰى تَقْبِضَنِيْ وَاَنَا عَلَيْهِ (1)

(15) दोपहर से पहले खाने पीने वग़ैरा ज़रूरिय्यात से फ़ारिग़ हो ले कि दिल किसी त़रफ़ लगा न रहे। आज के दिन जैसे ह़ाजी को रोज़ा मुनासिब नहीं कि दुआ़ में ज़ोफ़ होगा। यूंही पेटभर खाना सख़्त ज़ह्र और ग़फ़्लतो कसल का बाइ़स है, तीन रोटी की भूक वाला एक ही खाए। नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने तो हमेशा के लिये येही हुक्म दिया है और ख़ुद दुन्या से तशरीफ़ ले गए और जव की रोटी कभी पेटभर न खाई, ह़ालां कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के हुक्म से तमाम जहां इख़्तियार में था और है। अन्वारो बरकात लेना चाहो तो न सिर्फ़ आज बल्कि ह़रमैने शरीफ़ैन में जब तक ह़ाज़िर रहो तिहाई पेट से ज़ियादा हरगिज़ न खाओ। मानोगे तो इस का फ़ाएदा और न मानोगे तो इस का नुक़्सान आंखों देख लोगे। हफ़्ते भर इस पर अ़मल कर तो देखो अगली ह़ालत से फ़र्क़ न पाओ जभी कहना, जी बचे तो खाने पीने के बहुत से दिन हैं यहां तो नूर व ज़ौक़ के लिये जगह ख़ाली रखो।

اندروں از طعام خالی دار تادرو نورِ معرفت بینی

"भरा बरतन दोबारा क्या भरेगा।"

---

(1)....उस के सिवा हम किसी की इबादत नहीं करते और उस के सिवा किसी को रब नहीं जानते, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू मेरे दिल में नूर कर और मेरे कान और निगाह में नूर कर, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मेरे सीने को खोल दे और मेरे अम्र को आसान कर और तेरी पनाह मांगता हूं सीने के वस्वसों और काम की परागन्दगी और अ़ज़ाबे क़ब्र से, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं उस के शर से जो रात में दाख़िल होती है और दिन में दाख़िल होती है और उस के शर से जिस के साथ हवा चलती है और शर से आफ़ाते ज़माना के। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! येह अम्न के त़ालिब और जहन्नम से पनाह मांगने वाले के खड़े होने की जगह है, अपने अ़फ़्व के साथ मुझ को जहन्नम से बचा और अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल कर, ऐ सब मेह़रबानों से ज़ियादा मेह़रबान। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! जब तू ने इस्लाम की त़रफ़ मुझे हिदायत की तो इस को मुझ से जुदा न करना यहां तक कि मुझे इसी इस्लाम पर वफ़ात देना। 12

www.dawateislami.net

(16) जब दोपहर क़रीब आए नहाओ कि सुन्नते मुअक्कदा है और न हो सके तो सिर्फ़ वुज़ू।

अ़रफ़ात में ज़ोह्र व अ़स्र की नमाज़

(17) दोपहर ढलते ही बल्कि इस से पहले कि इमाम के क़रीब जगह मिले **मस्जिदे निमरह** जाओ। सुन्नतें पढ़ कर ख़ुत्बा सुन कर इमाम के साथ ज़ोह्र पढ़ो इस के बाद बे तवक़्क़ुफ़ अ़स्र की तक्बीर होगी मअ़न जमाअ़त से अ़स्र पढ़ो, बीच में सलामो कलाम तो क्या मअ़ूना, सुन्नतें भी न पढ़ो और बादे अ़स्र भी नफ़्ल नहीं, येह ज़ोह्र व अ़स्र मिला कर पढ़ना जभी जाइज़ है कि नमाज़ या तो सुल्तान पढ़ाए या वोह जो ह़ज में उस का नाइब हो कर आता है जिस ने ज़ोह्र अकेले या अपनी ख़ास जमाअ़त से पढ़ी उसे वक़्त से पहले अ़स्र पढ़ना जाइज़ नहीं और जिस ह़िक्मत के लिये शर्अ़ ने यहां ज़ोह्र के साथ अ़स्र मिलाने का हुक्म फ़रमाया है यानी ग़ुरूबे आफ़्ताब तक दुआ़ के लिये वक़्त ख़ाली मिलना वोह जाती रहेगी।

मस्अला 1 मिला कर दोनों नमाज़ें जो यहां एक वक़्त में पढ़ने का हुक्म है इस में पूरी जमाअ़त मिलना शर्त़ नहीं बल्कि मसलन ज़ोह्र के आख़िर में शरीक हुवा और सलाम के बाद जब अपनी पूरी करने लगा, इतने में इमाम अ़स्र की नमाज़ ख़त्म करने के क़रीब हुवा येह सलाम के बाद अ़स्र की जमाअ़त में शामिल हुवा जब भी हो गई।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 2 मिला कर पढ़ने में येह भी शर्त़ है कि दोनों नमाज़ों में बा एह़राम हो, अगर ज़ोह्र पढ़ने के बाद एह़राम बांधा तो अ़स्र मिला कर नहीं पढ़ सकता। नीज़ येह शर्त़ है कि वोह एह़राम ह़ज का हो अगर ज़ोह्र में उ़मरह का था अ़स्र में ह़ज का हुवा जब भी नहीं मिला सकता।[2] (درمختار، عالمگیری)

अ़रफ़े का वुक़ूफ़

(18) ख़याल करो जब शर्अ़ को येह वक़्त दुआ़ के लिये फ़ारिग़ करने का इस क़दर एहतिमाम है कि अ़स्र को ज़ोह्र के साथ मिला कर पढ़ने का हुक्म दिया तो इस वक़्त और काम में मश्ग़ूली किस क़दर बेहूदा है! बाज़ अह़मक़ों को देखा है कि इमाम तो नमाज़ में है या नमाज़ पढ़ कर मौक़िफ़ को गया और वोह खाने, पीने, हुक़्क़े, चाय उड़ाने में हैं। ख़बरदार! ऐसा न करो। इमाम के साथ नमाज़ पढ़ते ही फ़ौरन **मौक़िफ़** (यानी वोह जगह कि नमाज़ के बाद से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक वहां खड़े हो कर ज़िक्रो दुआ़ का हुक्म है उस जगह को) रवाना

1 ..... "ردالمحتار" كتاب الحج، مطلب في شروط الجمع، ج٣، ص٥٩٤.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٥٩٥ و"الفتاوى الهندية" كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٨.

www.dawateislami.net

हो जाओ और मुम्किन हो तो ऊंट पर कि सुन्नत भी है और हुजूम में दबने कुचलने से मुहाफ़ज़त भी।

(19) बाज़ मुत़व्विफ़ उस मज्मअ़ में जाने से मन्अ़ करते और त़रह़ त़रह़ डराते हैं उन की न सुनो कि वोह ख़ास नुज़ूले रह़मते आ़म की जगह है। हां, औ़रतें और कमज़ोर मर्द यहीं से खड़े हुए दुआ़ में शामिल हों कि बत्ने उ़रना[1] के सिवा येह सारा मैदान मौक़िफ़ है और येह लोग भी येही तसव्वुर करें कि हम उस मज्मअ़ में ह़ाज़िर हैं, अपनी डेढ़ ईंट की अलग न समझें। उस मज्मअ़ में यक़ीनन ब कसरत औलिया बल्कि इल्यास व ख़िज़्र عَلَيْهِمَا السَّلَام दो नबी भी मौजूद हैं, येह तसव्वुर करें कि अन्वारो बरकात जो मज्मअ़ में उन पर उतर रहे हैं उन का सदक़ा हम भिकारियों को भी पहुंचता है। यूं अलग हो कर भी शामिल रहेंगे और जिस से हो सके तो वहां की ह़ाज़िरी छोड़ने की चीज़ नहीं।

(20) अफ़्ज़ल येह है कि इमाम से नज़्दीक जबले रह़मत के क़रीब जहां सियाह पथ्थर का फ़र्श है, रू ब क़िब्ला इमाम के पीछे खड़ा हो जब कि इन फ़ज़ाइल के हुसूल में दिक़्क़त या किसी को अज़िय्यत न हो वरना जहां और जिस त़रह़ हो सके वुक़ूफ़ करे, इमाम की दह्नी जानिब और बाईं रू ब रू से अफ़्ज़ल है। येह वुक़ूफ़ ही ह़ज की जान और उस का बड़ा रुक्न है, वुक़ूफ़ के लिये खड़ा रहना अफ़्ज़ल है शर्त़ या वाजिब नहीं, बैठा रहा जब भी वुक़ूफ़ हो गया वुक़ूफ़ में निय्यत और रू ब क़िब्ला होना अफ़्ज़ल है।

वुक़ूफ़ की सुन्नतें

वुक़ूफ़ में येह उमूर सुन्नत हैं :

① ग़ुस्ल।
② दोनों ख़ुत़्बों की ह़ाज़िरी।
③ दोनों नमाज़ें मिला कर पढ़ना।
④ बे रोज़ा होना।
⑤ बा वुज़ू होना।
⑥ नमाज़ों के बाद फ़ौरन वुक़ूफ़ करना।

(21) बाज़ जाहिल येह करते हैं कि पहाड़ पर चढ़ जाते और वहां खड़े हो कर रूमाल हिलाते रहते हैं इस से बचो और उन की त़रफ़ भी बुरा ख़याल न करो, येह वक़्त औरों के ऐ़ब देखने का नहीं, अपने ऐ़बों पर शर्मसारी और गिर्या व ज़ारी का है।

---

1 ...बत्ने उ़रना अ़रफ़ात में ह़रम के नालों में से एक नाला है मस्जिदे निमरह के पश्चिम की त़रफ़ यानी काबए मुअ़ज़्ज़मा की त़रफ़, वहां वुक़ूफ़ ना जाइज़ है। 12

www.dawateislami.net

वुक़ूफ़ के आदाब

(22) अब वोह कि यहां हैं और वोह कि डेरों में हैं सब हमातन सिद्क़े दिल से अपने करीम मेह्रबान रब की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाएं और मैदाने क़ियामत में ह़िसाबे आमाल के लिये उस के हुज़ूर ह़ाज़िरी का तसव्वुर करें। निहायत ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ लरज़ते कांपते डरते उम्मीद करते आंखें बन्द किये गरदन झुकाए, दस्ते दुआ़ आस्मान की त़रफ़ सर से ऊंचा फैलाए तक्बीरो तह्लील व तस्बीह़ व लब्बैक व ह़म्द व ज़िक्रो दुआ़ व तौबा व इस्तिग़फ़ार में डूब जाए, कोशिश करे कि एक क़त़रा आंसूओं का टपके कि दलीले इजाबत व सआ़दत है, वरना रोने का सा मुंह बनाए कि अच्छों की सूरत भी अच्छी। अस्नाए दुआ़ व ज़िक्र में लब्बैक की बार बार तक्रार करे।

आज के दिन दुआ़एं बहुत मन्क़ूल हैं और दुआ़ए जामेअ़ कि ऊपर गुज़री काफ़ी है, चन्द बार उसे कह लो और सब से बेहतर येह कि सारा वक़्त दुरूद व जिक्र व तिलावते क़ुरआन में गुज़ार दो कि ब वादए ह़दीस दुआ़ वालों से ज़ियादा पाओगे। नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का दामन पकड़ो, ग़ौसे आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه से तवस्सुल करो, अपने गुनाह और उस की क़ह्हारी याद कर के बेद की त़रह़ लरज़ो और यक़ीन जानो कि उस की मार से उसी के पास पनाह है। उस से भाग कर कहीं नहीं जा सकते उस के दर के सिवा कहीं ठिकाना नहीं लिहाज़ा उन शफ़ीओं का दामन पकड़े, उस के अ़ज़ाब से उसी की पनाह मांगो और इसी ह़ालत में रहो कि कभी उस के ग़ज़ब की याद से जी कांपा जाता है और कभी उस की रह़मते आ़म की उम्मीद से मुरझाया दिल निहाल हो जाता है।

यूंही तज़र्रोओ़ ज़ारी में रहो यहां तक कि आफ़्ताब डूब जाए और रात का एक लत़ीफ़ जुज़ आ जाए, इस से पहले कूच मन्अ़ है। बाज़ जल्दबाज़ दिन ही से चल देते हैं, उन का साथ न दो। गुरूब तक ठहरने की ज़रूरत न होती तो अ़स्र को ज़ोह्र से मिला कर क्यूं पढ़ने का हुक्म होता और क्या मालूम कि रह़मते इलाही किस वक़्त तवज्जोह फ़रमाए, अगर तुम्हारे चल देने के बाद उतरी तो مَعَاذَاللہ कैसा ख़सारा है और अगर गुरूब से पहले हुदूदे अ़रफ़ात से निकल गए जब तो पूरा जुर्म है। बाज़ मुत़व्विफ़ यहां यूं डराते हैं कि रात में ख़त़रा है, येह दो एक के लिये ठीक है और जब सारा क़ाफ़िला ठहरेगा तो اِنْ شَآءَ الله تَعَالٰى कुछ अन्देशा नहीं। इस मक़ाम पर पढ़ने के लिये बाज़ दुआ़एं लिखी जाती हैं : اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ तीन बार फिर **कलिमए तौह़ीद**, इस के बाद [1] اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ بِالْهُدٰى وَنَقِّنِیْ وَاعْصِمْنِیْ بِالتُّقٰوى وَاغْفِرْلِیْ فِی الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى तीन बार

---

1 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मुझ को हिदायत के साथ रहनुमाई कर और पाक कर और परहेज़गारी के साथ गुनाह से महफ़ूज़ रख और दुन्या व आख़िरत में मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा। 12

www.dawateislami.net

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا اَللّٰهُمَّ لَکَ الْحَمْدُ کَالَّذِیْ نَقُوْلُ وَخَیْرًا مِّمَّا نَقُوْلُ اَللّٰهُمَّ لَکَ صَلَاتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ وَاِلَیْکَ مَاٰبِیْ وَلَکَ رَبِّ تُرَاثِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَ وَسْوَسَةِ الصَّدْرِ وَشِتَاتِ الْاَمْرِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ مِنْ خَیْرِ مَا تَجِیْ بِهِ الرِّیْحُ وَنَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ مَا تَجِیْ بِهِ الرِّیْحُ اَللّٰهُمَّ اهْدِنَا بِالْهُدٰی وَزَیِّنَّا بِالتَّقْوٰی وَاغْفِرْلَنَا فِی الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰی اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ رِزْقًا طَیِّبًا مُّبَارَکًا.

اَللّٰهُمَّ اِنَّکَ اَمَرْتَ بِالدُّعَآءِ وَقَضَیْتَ عَلٰی نَفْسِکَ بِالْاِجَابَةِ وَاِنَّکَ لَا تُخْلِفُ الْمِیْعَادَ وَلَا تَنْکُثُ عَهْدَکَ اَللّٰهُمَّ مَااَحْبَبْتَ مِنْ خَیْرٍ فَحَبِّبْهُ اِلَیْنَا وَ یَسِّرْهُ لَنَا وَمَا کَرِهْتَ مِنْ شَرٍّ فَکَرِّهْهُ اِلَیْنَا وَجَنِّبْنَاهُ وَلَا تَنْزِعْ مِنَّا الْاِسْلَامَ بَعْدَ اِذْ هَدَیْتَنَا اَللّٰهُمَّ اِنَّکَ تَرٰی مَکَانِیْ وَتَسْمَعُ کَلَامِیْ وَتَعْلَمُ سِرِّیْ وَعَلَانِیَتِیْ وَلَا یَخْفٰی عَلَیْکَ شَیْءٌ مِّنْ اَمْرِیْ اَنَا الْبَآئِسُ الْفَقِیْرُ الْمُسْتَغِیْثُ الْمُسْتَجِیْرُ الْوَجِلُ الْمُشْفِقُ الْمُقِرُّ الْمُعْتَرِفُ بِذَنْبِهٖ اَسْاَلُکَ مَسْاَلَةَ الْمِسْکِیْنِ وَاَبْتَهِلُ اِلَیْکَ اِبْتِهَالَ الْمُذْنِبِ الذَّلِیْلِ وَ اَدْعُوْکَ دُعَآءَ الْخَائِفِ الْمُضْطَرِّ دُعَاءَ مَنْ خَضَعَتْ لَکَ رَقَبَتُهٗ وَفَاضَتْ لَکَ عَیْنَاهُ وَنَحِلَ لَکَ جَسَدُهٗ وَ رَغِمَ اَنْفُهٗ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْنِیْ بِدُعَائِکَ رَبِّیْ شَقِیًّا وَّکُنْ بِیْ رَءُوْفًا رَّحِیْمًا یَا خَیْرَ الْمَسْئُوْلِیْنَ وَ خَیْرَ الْمُعْطِیْنَ [1]

और बैहक़ी की रिवायत जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से ऊपर मज़्कूर हो चुकी उस में जो दुआएं हैं उन्हें भी

1...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! इस को हज्जे मबरूर कर और गुनाह बख़्श दे, इलाही ! तेरे लिये हम्द है जैसी हम कहते हैं और उस से बेहतर जिस को हम कहें, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मेरी नमाज़ व इबादत और मेरा जीना और मरना तेरे ही लिये है और तेरी तरफ़ मेरी वापसी है और ऐ परवरदिगार ! तू ही मेरा वारिस है, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं अज़ाबे क़ब्र और सीने के वस्वसे और काम की परागन्दगी से, इलाही ! मैं सुवाल करता हूं उस चीज़ की ख़ैर का जिस को हवा लाती है और उस चीज़ के शर से पनाह मांगता हूं जिसे हवा लाती है, इलाही ! हिदायत की तरफ़ हम को रहनुमाई कर और तक़्वा से हम को मुज़य्यन कर और आख़िरत व दुन्या में हम को बख़्श दे, इलाही ! मैं रिज़्क़े पाकीज़ा व मुबारक का तुझ से सुवाल करता हूं।

इलाही ! तू ने दुआ करने का हुक्म दिया और क़बूल करने का ज़िम्मा तू ने ख़ुद लिया और बेशक तू वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता और अपने अ़हद को नहीं तोड़ता, इलाही ! जो अच्छी बातें तुझे महबूब हैं उन्हें हमारी महबूब कर दे और हमारे लिये मुयस्सर कर और जो बुरी बातें तुझे ना पसन्द हैं उन्हें हमारी ना पसन्द कर और हम को उन से बचा और इस्लाम की तरफ़ तूने हम को हिदायत फ़रमाई तू उस को हम से जुदा न कर, इलाही ! तू मेरे मकान को देखता है और मेरा कलाम सुनता है और मेरे पोशीदा व ज़ाहिर को जानता है मेरे काम में से कोई शै तुझ पर मख़्फ़ी नहीं, मैं ना मुराद मोहताज फ़रियाद करने वाला, पनाह चाहने वाला, ख़ौफ़नाक डरने वाला अपने गुनाह का मुक़िर व मोतरिफ़ हूं, मिस्कीन की तरह तुझ से सुवाल करता हूं और गुनहगार ज़लील की तरह तुझ से आजिज़ी करता हूं और डरने वाले मुज़्तर की तरह तुझ से दुआ करता हूं, उस की मिस्ल दुआ जिस की गरदन तेरे लिये झुक गई और आंखें जारी और बदन लाग़र और नाक ख़ाक में मिली है, ऐ परवरदिगार ! तू अपनी दुआ से मुझे बद बख़्त न कर और मुझ पर बहुत मेहरबान और मेहरबान हो जा, ऐ बेहतर सुवाल किये गए और ऐ बेहतर देने वाले ! 12

www.dawateislami.net

पढ़ें यानी قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ सौ[100] बार, لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ सौ बार और اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ सो बार

इब्ने अबी शैबा वग़ैरा अमीरुल मुअमिनीन मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهٗ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मेरी और अम्बिया की दुआ अ़रफ़े के दिन येह है :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا وَّفِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا .

اَللّٰهُمَّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ وَ يَسِّرْ لِيْ اَمْرِيْ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَّسَاوِسِ الصَّدْرِ وَ تَشْتِيْتِ الْاَمْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا يَلِجُ فِي اللَّيْلِ وَ شَرِّ مَا يَلِجُ فِي النَّهَارِ وَ شَرِّ مَا تَهُبُّ بِهِ الرِّيْحُ وَ شَرِّ بَوَآئِقِ الدَّهْرِ [1]

इस मक़ाम पर पढ़ने की बहुत दुआएं किताबों में मज़्कूर हैं मगर इतनी ही में किफ़ायत है और दुरूद शरीफ़ व तिलावते क़ुरआने मजीद सब दुआओं से ज़ियादा मुफ़ीद ।

(23) एक अदब वाजिबुल हिफ़्ज़ इस रोज़ का येह है कि **अल्लाह** तआ़ला के सच्चे वादों पर भरोसा कर के यक़ीन करे कि आज मैं गुनाहों से ऐसा पाक हो गया जैसा जिस दिन मां के पेट से पैदा हुवा था, अब कोशिश करूं कि आइन्दा गुनाह न हों और जो दाग़ **अल्लाह** तआ़ला ने महज़ अपनी रह़मत से मेरी पेशानी से धोया है फिर न लगे ।

वुक़ूफ़ के मक्रूहात

(24) यहां येह बातें मक्रूह हैं :

1. ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले वुक़ूफ़ छोड़ कर रवानगी जब कि ग़ुरूब तक हुदूदे अ़रफ़ात से बाहर न हो जाए वरना ह़राम है ।

---

1 ..... " المسلك المتقسط"، (باب الوقوف بعرفات و أحكامه)، ص ٢٠١.

"المصنف" لابن ابی شیبة، کتاب الحج، ما یقال عشیة عرفة ...إلخ، ج٤، ص٤٧٣.

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मेरा सीना खोल दे और मेरा काम आसान कर और मैं तेरी पनाह मांगता हूं सीने के वस्वसों और काम की परागन्दगी और अ़ज़ाबे क़ब्र से, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं उस की बुराई से जो रात में दाख़िल होती है और उस की बुराई से जो दिन में दाख़िल होती है और उस की बुराई से जिसे हवा उड़ा लाती है और आफ़ाते दह्र की बुराई से । 12

www.dawateislami.net

2. नमाज़े अ़स्र व ज़ोह्र मिलाने के बाद मौक़िफ़ को जाने में देर।
3. उस वक़्त से ग़ुरूब तक खाने पीने, या
4. तवज्जोह ब ख़ुदा के सिवा किसी काम में मश्ग़ूल होना।
5. कोई दुन्यवी बात करना।
6. ग़ुरूब पर यक़ीन हो जाने के बाद रवानगी में देर करना।
7. मग़रिब या इ़शा अ़रफ़ात में पढ़ना।[1]

तम्बीह : मौक़िफ़ में छत्री लगाने या किसी त़रह़ साया चाहने से ह़त्तल मक़्दूर बचो। हां, जो मजबूर है माज़ूर है।

ज़रूरी नसीह़त

तम्बीहे ज़रूरी ज़रूरी अशद ज़रूरी..... बद निगाही हमेशा ह़राम है न कि एह़राम में, न कि मौक़िफ़ या मस्जिदुल ह़राम में, न कि काबए मुअ़ज़्ज़मा के सामने, न कि त़वाफ़े बैतुल ह़राम में। येह तुम्हारे बहुत इम्तिह़ान का मौक़अ़ है, औ़रतों को हुक्म दिया गया है कि यहां मुंह न छुपाओ और तुम्हें हुक्म दिया गया है कि उन की त़रफ़ निगाह न करो, यक़ीन जानो कि येह बड़े ग़ैरत वाले बादशाह की बांदियां हैं और उस वक़्त तुम और वोह ख़ास दरबार में ह़ाज़िर हो। बिला तश्बीह शेर का बच्चा उस की बग़ल में हो उस वक़्त कौन उस की त़रफ़ निगाह उठा सकता है तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) वाहिदे क़ह्हार की कनीज़ें कि उस के ख़ास दरबार में ह़ाज़िर हैं उन पर बद निगाही किस क़दर सख़्त होगी [2] ﴿وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى﴾

हां हां होशियार ! ईमान बचाए हुए क़ल्बो निगाह संभाले हुए, ह़रम वोह जगह है जहां गुनाह के इरादे पर पकड़ा जाता और एक गुनाह लाख गुनाह के बराबर ठहरता है, इलाही ख़ैर की तौफ़ीक़ दे। आमीन।

वुक़ूफ़ के मसाइल

मस्अला 1 वुक़ूफ़ का वक़्त नवीं ज़ुल ह़िज्जा के आफ़्ताब ढलने से दसवीं की तुलूए़ फ़ज्र तक है। इस वक़्त के इ़लावा किसी और वक़्त वुक़ूफ़ किया तो ह़ज न मिला मगर एक सूरत में, वोह येह कि ज़ुल ह़िज्जा का हिलाल दिखाई न दिया, ज़ी क़ादा के तीस दिन पूरे कर के ज़ुल ह़िज्जा का महीना शुरूअ़ किया और इस ह़िसाब से आज नवीं है, बाद को साबित हुवा कि उन्तीस का चांद हुवा तो इस ह़िसाब से दसवीं होगी और वुक़ूफ़ दसवीं तारीख़ को हुवा

1 .....”الفتاوی الرضویة“، ج۱۰، ص۷۴۹، وغیره.
2 .....پ۱۴، النحل: ۶۰.

www.dawateislami.net

मगर ज़रूरतन येह जाइज़ माना जाएगा और अगर धोका हुवा कि आठवीं को नवीं समझ कर वुक़ूफ़ किया फिर मालूम हुवा तो येह वुक़ूफ़ सह़ीह़ न हुवा ।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 2 अगर गवाहों ने रात के वक़्त गवाही दी कि नवीं तारीख़ आज थी और येह दसवीं रात है तो अगर उस रात में सब लोगों या अक्सर के साथ इमाम वुक़ूफ़ कर सकता है तो वुक़ूफ़ लाज़िम है, वुक़ूफ़ न करें तो ह़ज फ़ौत हो जाएगा और अगर इतना वक़्त बाक़ी न हो कि अक्सर लोगों के साथ इमाम वुक़ूफ़ करे अगर्चे ख़ुद इमाम और जो थोड़े लोग जल्दी कर के जाएं तो सुब्ह़ से पेश्तर वहां पहुंच जाएंगे मगर जो लोग पैदल हैं और जिन के साथ बाल बच्चे हैं और जिन के पास अस्बाब ज़ियादा है उन को वुक़ूफ़ न मिलेगा तो इस शहादत के मुवाफ़िक़ अ़मल न करे बल्कि दूसरे दिन बादे ज़वाल तमाम ह़ुज्जाज के साथ वुक़ूफ़ करे ।[2] (منسک)

मस्अला 3 जिन लोगों ने ज़ुल ह़िज्जा के चांद की गवाही दी और उन की गवाही क़बूल न हुई वोह लोग अगर इमाम से एक दिन पहले वुक़ूफ़ करेंगे तो उन का ह़ज न होगा बल्कि उन पर भी ज़रूरी है कि उसी दिन वुक़ूफ़ करें, जिस दिन इमाम वुक़ूफ़ करे अगर्चे उन के ह़िसाब से अब दसवीं तारीख़ है ।[3] (منسک)

मस्अला 4 थोड़ी देर ठहरने से भी वुक़ूफ़ हो जाता है ख़्वाह उसे मालूम हो कि येह अ़रफ़ात है या मालूम न हो, बा वुज़ू हो या बे वुज़ू, जुनुब हो या ह़ैज़ो निफ़ास वाली औ़रत, सोता हो या बेदार हो, होश में हो या जुनून व बेहोशी में यहां तक कि अ़रफ़ात से हो कर जो गुज़र गया उसे ह़ज मिल गया यानी अब उस का ह़ज फ़ासिद न होगा जब कि येह सब एह़राम से हों । बेहोशी में एह़राम की सूरत येह है कि पहले होश में था और उसी वक़्त एह़राम बांध लिया था और अगर एह़राम बांधने से पहले बेहोश हो गया और उस के साथियों में से किसी ने या किसी और ने उस की त़रफ़ से एह़राम बांध दिया अगर्चे इस एह़राम बांधने वाले ने ख़ुद अपनी त़रफ़ से भी एह़राम बांधा हो कि इस का एह़राम उस के एह़राम के मुनाफ़ी नहीं तो इस सूरत में भी वोह मोह़रिम हो गया, दूसरे के एह़राम बांधने का येह मत़लब नहीं कि उस के कपड़े उतार कर तहबन्द बांध दे बल्कि येह कि उस की त़रफ़ से निय्यत करे और लब्बैक कहे ।[4] (عالمگیری، جوہرہ)

मस्अला 5 जिस का ह़ज फ़ौत हो गया यानी उसे वुक़ूफ़ न मिला तो अब ह़ज के बाक़ी अफ़्आ़ल साक़ित़ हो गए और उस का एह़राम उ़मरह की त़रफ़ मुन्तक़िल हो गया लिहाज़ा

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٩،وغيره.

2 ..... "لباب المناسك"و"المسلك المتقسط "، (باب الوقوف بعرفات و أحكامه، فصل في اشتباه يوم عرفة)، ص٢١٢ .

3 ..... "لباب المناسك"، (باب الوقوف بعرفات و أحكامه، فصل في اشتباه يوم عرفة)، ص٢١٢ .

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٩ والجوهرة النيرة كتاب الحج، الجزء الأول، ص٢٠٩.

www.dawateislami.net

उ़मरह कर के एह़राम खोल डाले और आइन्दा साल क़ज़ा करे ।[1] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 6 आफ़्ताब डूबने से पहले इज़्दिह़ाम के ख़ौफ़ से हुदूदे अ़रफ़ात से बाहर हो गया उस पर दम वाजिब है, फिर अगर आफ़्ताब डूबने से पहले वापस आया और ठहरा रहा यहां तक कि आफ़्ताब ग़ुरूब हो गया तो दम मुआ़फ़ हो गया और अगर डूबने के बाद वापस आया तो साक़ित् न हुवा और अगर सुवारी पर था और जानवर उसे ले कर भाग गया जब भी दम वाजिब है । यूंही अगर उस का ऊंट भाग गया येह उस के पीछे चल दिया ।[2] (منسک)

मस्अला 7 मोह़रिम ने नमाज़े इ़शा नहीं पढ़ी है और वक़्त सिर्फ़ इतना बाक़ी है कि चार रक्अ़त पढ़े मगर पढ़ता है तो वुक़ूफ़े अ़रफ़ा जाता रहेगा तो नमाज़ छोड़े और अ़रफ़ात को जाए ।[3] (جوہرہ) और बेहतर येह कि चलते में पढ़ ले बाद को इआ़दा करे ।[4] (منسک)

मुज़्दलिफ़ा की रवानगी और इस का वुक़ूफ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿فَاِذَاۤ اَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ۪ وَ اذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ۚ وَ اِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ۝۱۹۸﴾[5]

जब अ़रफ़ात से तुम वापस हो तो मश्अ़रे ह़राम (मुज़्दलिफ़ा) के नज़्दीक, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का ज़िक्र करो और उस को याद करो जैसे उस ने तुम्हें बताया और बेशक इस से पहले तुम गुमराहों से थे ।

ह़दीस 1 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि ह़िज्जतुल वदाअ़ में नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم अ़रफ़ात से मुज़्दलिफ़ा में तशरीफ़ लाए यहां मग़रिब व इ़शा की नमाज़ पढ़ी फिर लैटे यहां तक कि फ़ज्र तुलूअ़ हुई, जब सुब्ह़ हो गई उस वक़्त अज़ानो इक़ामत के साथ नमाज़े फ़ज्र पढ़ी, फिर क़स्वा पर सुवार हो कर मश्अ़रे ह़राम में आए और क़िब्ले की जानिब मुंह कर के दुआ़ व तक्बीर व तह्लील व तौह़ीद में मश्ग़ूल रहे और वुक़ूफ़ किया यहां तक कि ख़ूब उजाला हो गया और तुलूए़ आफ़्ताब से क़ब्ल यहां से रवाना हुए ।[6]

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٢٩.

2 ..... "لباب المناسك"، (باب الوقوف بعرفات و أحكامه، فصل في الدفع قبل الغروب)، ص٢١٠.

3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، الجزء الأول، ص٢٠٩.

4 .....

5 ..... پ٢، البقرة: ١٩٨.

6 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب حجة النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ١٢١٨، ص٦٣٤.

www.dawateislami.net

ह़दीस 2 बैहक़ी मुह़म्मद बिन क़ैस बिन मख़रमा से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ख़ुत्बा पढ़ा और फ़रमाया कि "अहले जाहिलिय्यत अ़रफ़ात से उस वक़्त रवाना होते थे जब आफ़्ताब मुंह के सामने होता गुरूब से पहले और मुज़्दलिफ़ा से बादे तुलूए़ आफ़्ताब रवाना होते जब आफ़्ताब चेहरे के सामने होता और हम अ़रफ़ात से न जाएंगे जब तक आफ़्ताब डूब न जाए और मुज़्दलिफ़ा से तुलूअ़ के क़ब्ल रवाना होंगे हमारा त़रीक़ा बुत परस्तों और मुश्रिकों के त़रीक़े के ख़िलाफ़ है।"[1]

(1) जब गुरूबे आफ़्ताब का यक़ीन हो जाए फ़ौरन मुज़्दलिफ़ा को चलो और इमाम के साथ जाना अफ़्ज़ल है मगर वोह देर करे तो उस का इन्तिज़ार न करो।

(2) रास्ते भर ज़िक्रो दुरूद व दुआ़ व लब्बैक व ज़ारी व बुका में मसरूफ़ रहो। इस वक़्त की बाज़ दुआ़एं येह हैं :

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَفَضْتُ وَ فِيْ رَحْمَتِكَ رَغِبْتُ وَمِنْ سَخَطِكَ رَهِبْتُ وَمِنْ عَذَابِكَ اَشْفَقْتُ فَاقْبَلْ نُسُكِيْ وَاَعْظِمْ اَجْرِيْ وَ تَقَبَّلْ تَوْبَتِيْ وَارْحَمْ تَضَرُّعِيْ وَاسْتَجِبْ دُعَائِيْ وَاَعْطِنِيْ سُؤْلِيْ اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ هٰذَا اٰخِرَ عَهْدِنَا مِنْ هٰذَا الْمَوْقِفِ الشَّرِيْفِ الْعَظِيْمِ وَا رْزُقْنَا الْعَوْدَ اِلَيْهِ مَرَّاتٍ كَثِيْرَةً بِلُطْفِكَ الْعَمِيْمِ[2]

(3) रास्ते में जहां गुन्जाइश पाओ और अपनी या दूसरे की ईज़ा का एह़तिमाल न हो उतनी देर उतनी दूर तेज़ चलो, पैदल हो ख़्वाह सुवार।

(4) जब मुज़्दलिफ़ा नज़र आए बशर्ते क़ुदरत पैदल हो लेना बेहतर है और नहा कर दाख़िल होना अफ़्ज़ल, मुज़्दलिफ़ा में दाख़िल होते वक़्त येह दुआ़ पढ़ो :

اَللّٰهُمَّ هٰذَا جَمْعٌ اَسْاَلُكَ اَنْ تَرْزُقَنِيْ جَوَامِعَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ رَبَّ الْمَشْعَرِالْحَرَامِ وَرَبَّ الرُّكْنِ وَالْمَقَامِ وَرَبَّ الْبَلَدِ الْحَرَامِ وَرَبَّ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَسْاَلُكَ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ اَنْ تَغْفِرَلِيْ ذُنُوْبِيْ وَتَرْحَمَنِيْ وَتَجْمَعَ عَلَى الْهُدٰى اَمْرِيْ وَتَجْعَلَ التَّقْوٰى زَادِيْ وَذُخْرِيْ وَالْاٰخِرَةَ مَاٰبِيْ وَهَبْ لِيْ رِضَاكَ غِنِّيْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ يَامَنْ بِيَدِهِ الْخَيْرُ كُلُّهٗ اَعْطِنِي الْخَيْرَ كُلَّهٗ وَاصْرِفْ عَنِّي الشَّرَّ كُلَّهٗ اَللّٰهُمَّ

---

1 ..... "معرفة السنن والآثار"، كتاب المناسك، باب الاختيار في الدفع من المزدلفة، الحديث: ٣٠٤٥، ج٤، ص١١٧.

2 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तेरी त़रफ़ वापस हुवा और तेरी रह़मत में रग़बत की और तेरी नाख़ुशी से डरा और तेरे अ़ज़ाब से ख़ौफ़ किया तो मेरी इबादत क़बूल कर और मेरा अज्र अ़ज़ीम कर और मेरी तौबा क़बूल कर और मेरी आ़जिज़ी पर रह़म कर और मुझे मेरा सुवाल अ़त़ा कर। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! इस शरीफ़ बुज़ुर्ग जगह में मेरी येह ह़ाज़िरी आख़िरी ह़ाज़िरी न कर और तू अपनी मेहरबानी से यहां बहुत मरतबा आना नसीब कर। 12

www.dawateislami.net

حَرِّمْ لَحْمِیْ وَعَظْمِیْ وَشَحْمِیْ وَشَعْرِیْ وَسَائِرَ جَوَارِحِیْ عَلَی النَّارِ یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ ط[1]

मुज़्दलिफ़ा में मग़रिब व इ़शा की नमाज़

(5) वहां पहुंच कर ह़त्तल इम्कान जबले **कुज़ह़** के पास रास्ते से बच कर उतरो वरना जहां जगह मिले।

(6) ग़ालिबन वहां पहुंचते पहुंचते शफ़क़ डूब जाएगी मग़रिब का वक़्त निकल जाएगा। ऊंट खोलने, अस्बाब उतारने से पहले इमाम के साथ मग़रिब व इ़शा पढ़ो और अगर वक़्त मग़रिब का बाक़ी भी रहे जब भी अभी मग़रिब हरगिज़ न पढ़ो, न अ़रफ़ात में पढ़ो न राह में कि इस दिन यहां नमाज़े मग़रिब वक़्ते मग़रिब में पढ़ना गुनाह है और अगर पढ़ लोगे इ़शा के वक़्त फिर पढ़नी होगी। ग़रज़ यहां पहुंच कर मग़रिब वक़्ते इ़शा में ब निय्यते अदा, न ब निय्यते क़ज़ा ह़त्तल इम्कान इमाम के साथ पढ़ो। मग़रिब का सलाम फेरते ही मअ़न इ़शा की जमाअ़त होगी इ़शा के फ़र्ज़ पढ़ लो इस के बाद मग़रिब व इ़शा की सुन्नतें और वित्र पढ़ो और अगर इमाम के साथ जमाअ़त न मिल सके तो अपनी जमाअ़त कर लो और न हो सके तो तन्हा पढ़ो।

मस्अला 1 येह मग़रिब वक़्ते इ़शा में पढ़नी उसी के लिये ख़ास है जो मुज़्दलिफ़ा को आए और अगर अ़रफ़ात ही में रात को रह गया या मुज़्दलिफ़ा के सिवा दूसरे रास्ते से वापस हुवा तो उसे मग़रिब की नमाज़ अपने वक़्त में पढ़नी ज़रूरी है।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 2 अगर मुज़्दलिफ़ा के आने वाले ने मग़रिब की नमाज़ रास्ते में पढ़ी या मुज़्दलिफ़ा पहुंच कर इ़शा का वक़्त आने से पहले पढ़ ली तो उसे हुक्म येह है कि इआ़दा करे मगर न किया और फ़ज्र तुलूअ़ हो गई तो वोह नमाज़ अब सह़ीह़ हो गई।[3] (درمختار)

मस्अला 3 अगर मुज़्दलिफ़ा में मग़रिब से पहले इ़शा पढ़ी तो मग़रिब पढ़ कर इ़शा का इआ़दा करे और अगर तुलूए़ फ़ज्र तक इआ़दा न किया तो अब सह़ीह़ हो गई ख़्वाह वोह शख़्स साहिबे तरतीब हो या न हो।[4] (درمختار،طحطاوی)

---

1 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ)! येह जम्अ़ (मुज़्दलिफ़ा) है मैं तुझ से तमाम ख़ैर के मज्मूए़ का सुवाल करता हूं, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ)! मश्अ़रे ह़राम के रब और रुक्न व मक़ाम के रब और इ़ज़्ज़त वाले शह़र और इ़ज़्ज़त वाली मस्जिद के रब! मैं तुझ से ब वसीला तेरे वज्हे करीम के नूर के सुवाल करता हूं कि तू मेरे गुनाह बख़्श दे और मुझ पर रह़म कर और हिदायत पर मेरे काम को जम्अ़ कर दे और तक़्वा को मेरा तोशा और ज़ख़ीरा कर और आख़िरत मेरा मर्जअ़ कर और दुन्या और आख़िरत में तू मुझ से राज़ी रह। ऐ वोह ज़ात जिस के हाथ में तमाम भलाई है! मुझ को हर क़िस्म की ख़ैर अ़त़ा कर और हर क़िस्म की बुराई से बचा, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ)! मेरे गोश्त और हड्डी और चरबी और बाल और तमाम आज़ा को जहन्नम पर ह़राम कर दे, ऐ सब मेहरबानों से ज़ियादा मेहरबान! 12

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في الرفع من عرفات، ج٣، ص٦٠١.

3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٦٠١.

4 ..... المرجع السابق، ص٦٠٢. "حاشية الطحطاوی علی الدرالمختار"، كتاب الحج، ج١، ص٥٠٤.

www.dawateislami.net

मस्अला 4 अगर रास्ते में इतनी देर हो गई कि तुलूए़ फ़ज्र का अन्देशा है तो अब रास्ते ही में दोनों नमाज़ें पढ़ ले, मुज़्दलिफ़ा पहुंचने का इन्तिज़ार न करे।[1] (درمختار)

मस्अला 5 अ़रफ़ात में ज़ोह्र व अ़स्र के लिये एक अज़ान और दो इक़ामतें हैं और मुज़्दलिफ़ा में मग़रिब व इ़शा के लिये एक अज़ान और एक इक़ामत।[2] (درمختار)

मस्अला 6 दोनों नमाज़ों के दरमियान में सुन्नत व नवाफ़िल न पढ़े। मग़रिब की सुन्नतें भी बादे इ़शा पढ़े अगर दरमियान में सुन्नतें पढ़ीं या कोई और काम किया तो एक इक़ामत और कही जाए यानी इ़शा के लिये।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 7 तुलूए़ फ़ज्र के बाद मुज़्दलिफ़ा में आया तो सुन्नत तर्क हुई मगर दम वग़ैरा उस पर वाजिब नहीं।[4] (عالمگیری)

(7) नमाज़ों के बाद बाक़ी रात ज़िक्र व लब्बैक व दुरूद व दुआ़ व ज़ारी में गुज़ारो कि येह बहुत अफ़्ज़ल जगह और बहुत अफ़्ज़ल रात है। बाज़ उ़लमा ने इस रात को शबे क़द्र से भी अफ़्ज़ल कहा। ज़िन्दगी है तो सोने को और बहुत रातें मिलेंगी और यहां येह रात ख़ुदा जाने दोबारा किसे मिले और न हो सके तो बा त़हारत सो रहो कि फ़ुज़ूल बातों से सोना बेहतर और इतने पहले उठ बैठो कि सुब्ह़ चमकने से पहले ज़रूरिय्यात व त़हारत से फ़ारिग़ हो लो, आज **नमाज़े सुब्ह़** बहुत अंधेरे से पढ़ी जाएगी, कोशिश करो कि जमाअ़ते इमाम बल्कि पहली तक्बीर फ़ौत न हो कि इ़शा व सुब्ह़ जमाअ़त से पढ़ने वाला भी पूरी शब बेदारी का सवाब पाता है।

(8) अब दरबारे आज़म की दूसरी ह़ाज़िरी का वक़्त आया, हां हां करम के दरवाज़े खोले गए हैं, कल अ़रफ़ात में हुक़ूक़ुल्लाह मुआ़फ़ हुए थे यहां हुक़ूक़ुल इ़बाद मुआ़फ़ फ़रमाने का वादा है।

मुज़्दलिफ़ा का वुक़ूफ़

मश्अ़रुल ह़राम में यानी ख़ास पहाड़ी पर और न मिले तो उस के दामन में और येह भी न हो सके तो वादिये मुह़स्सिर[5] के सिवा जहां गुन्जाइश पाओ **वुक़ूफ़** करो और तमाम बातें कि वुक़ूफ़े अ़रफ़ात में मज़्कूर हुईं मल्हूज़ रखो यानी लब्बैक की कसरत करो और ज़िक्रो दुरूद व दुआ़ में मश्ग़ूल रहो यहां के लिये बाज़ दुआ़एं येह हैं :

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٦٠٢.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في الرفع من عرفات، ج٣، ص٦٠٠.

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في الرفع من عرفات، ج٣، ص٦٠٠.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣١.

5 ...कि इस में वुक़ूफ़ जाइज़ नहीं। 12

www.dawateislami.net

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ خَطِیْئَتِیْ وَجَهْلِیْ وَاِسْرَافِیْ فِیْ اَمْرِیْ وَمَآ اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ جِدِّیْ وَهَزْلِیْ وَخَطَأِیْ وَعَمْدِیْ وَكُلُّ ذٰلِكَ عِنْدِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَالْكُفْرِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَضَلَعِ الدَّیْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ وَاَسْأَلُكَ اَنْ تَقْضِیَ عَنِّیَ الْمَغْرَمَ وَاَنْ تَعْفُوَ عَنِّیْ مَظَالِمَ الْعِبَادِ وَاَنْ تُرْضِیَ عَنِّیَ الْخُصُوْمَ وَالْغُرَمَآءَ وَاَصْحَابَ الْحُقُوْقِ اَللّٰهُمَّ اَعْطِ نَفْسِیْ تَقْوٰهَا وَزَكِّهَا اَنْتَ خَیْرُ مَنْ زَكّٰهَا اَنْتَ وَلِیُّهَا وَمَوْلٰهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّیْنِ وَمِنْ غَلَبَةِ الْعَدُوِّ وَمِنْ بَوَارٍ لَّآئِمٍ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِیْحِ الدَّجَّالِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ الَّذِیْنَ اِذَا اَحْسَنُوا اسْتَبْشَرُوْا وَاِذَا اَسَاؤُا اسْتَغْفَرُوْا.

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مِنْ عِبَادِكَ الصَّالِحِیْنَ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِیْنَ الْوَفْدِ الْمُتَقَبَّلِیْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ فِیْ هٰذَا الْجَمْعِ اَنْ تَجْمَعَ لِیْ جَوَامِعَ الْخَیْرِ كُلِّهٖ وَاَنْ تُصْلِحَ لِیْ شَانِیْ كُلَّهٗ وَاَنْ تَصْرِفَ عَنِّیَ السُّوْءَ كُلَّهٗ فَاِنَّهٗ لَا یَفْعَلُ ذٰلِكَ غَیْرُكَ وَلَا یَجُوْدُ بِهٖ اِلَّا اَنْتَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَنْ یَّمْشِیْ عَلٰی بَطْنِهٖ وَمِنْ شَرِّ مَنْ یَّمْشِیْ عَلٰی رِجْلَیْنِ وَمِنْ شَرِّ مَنْ یَّمْشِیْ عَلٰی اَرْبَعٍ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ اَخْشٰكَ كَاَنِّیْ اَرٰكَ اَبَدًا حَتّٰی اَلْقٰكَ وَاَسْعِدْنِیْ بِتَقْوٰكَ وَلَا تَشْقِنِیْ بِمَعْصِیَّتِكَ وَخِرْلِیْ مِنْ قَضَآئِكَ وَبَارِكْ لِیْ فِیْ قَدَرِكَ حَتّٰی لَا اُحِبَّ تَعْجِیْلَ مَا اَخَّرْتَ وَلَا تَاْخِیْرَ مَا عَجَّلْتَ وَاجْعَلْ غِنَایَ فِیْ نَفْسِیْ وَمَتِّعْنِیْ بِسَمْعِیْ وَبَصَرِیْ وَاجْعَلْهُمَا الْوَارِثَ مِنِّیْ وَانْصُرْنِیْ عَلٰی مَنْ ظَلَمَنِیْ وَاَرِنِیْ فِیْهِ ثَارِیْ وَاَقِرَّ بِذٰلِكَ عَیْنِیْ (1)

---

(1)...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मेरी ख़ता और जहल और ज़ियादती और जिस को तू मुझ से ज़ियादा जानता है सब को बख़्श दे, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मेरे तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दे कोशिश से जिस को मैं ने किया या बिला कोशिश और ख़ता से किया या क़स्द से और येह सब मैं ने किये, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तेरी पनाह मांगता हूं मोहताजी और कुफ़्र और आजिज़ी व सुस्ती से और तेरी पनाह ग़म व हुज़्न से और तेरी पनाह बुज़दिली व बुख़्ल और दैन की गिरानी और मर्दों के ग़लबे से और सुवाल करता हूं कि मुझ से तावान अदा कर दे और हुक़ूक़ुल इबाद मुझ से मुआ़फ़ कर और ख़ुसूम व ग़ुरमा और हक़दारों को राज़ी कर दे, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मेरे नफ़्स को तक़्वा दे और इस को पाक कर तू बेहतर पाक करने वाला है तू इस का वली व मौला है, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तेरी पनाह ग़लबए दैन और ग़लबए दुश्मन से और उस हलाकत से जो मलामत में डालने वाली है और मसीह दज्जाल के फ़ितने से।

ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मुझे उन लोगों में कर जो नेकी कर के ख़ुश होते हैं और बुराई कर के इस्तिग़फ़ार करते हैं। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हम को अपने नेक बन्दों में कर जिन की पेशानियां और हाथ पाउं चमकते हैं जो मक़्बूल वफ़्द हैं, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! इस मुज़्दलिफ़ा में मेरे लिये हर ख़ैर को जम्अ़ कर दे और मेरी हर हालत को दुरुस्त कर दे और हर बुराई को मुझ से फेर दे कि तेरे सिवा कोई नहीं कर सकता और तेरे सिवा कोई नहीं दे सकता =

www.dawateislami.net

मस्अला 8 वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा का वक़्त तुलूए़ फ़ज्र से उजाला होने तक है इस दरमियान में वुक़ूफ़ न किया तो फ़ौत हो गया और अगर इस वक़्त में यहां से हो कर गुज़र गया तो वुक़ूफ़ हो गया और वुक़ूफ़े अ़रफ़ात में जो बातें थीं वोह यहां भी हैं।[1] (عالمگیری)

मस्अला 9 तुलूए़ फ़ज्र से पहले जो यहां से चला गया उस पर दम वाजिब है मगर जब बीमार हो या औ़रत कमज़ोर कि इज़्दिह़ाम में ज़रर का अन्देशा है इस वज्ह से पहले चला गया तो उस पर कुछ नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 10 नमाज़ से क़ब्ल मगर तुलूए़ फ़ज्र के बाद यहां से चला गया या तुलूए़ आफ़्ताब के बाद गया तो बुरा किया मगर उस पर दम वग़ैरा वाजिब नहीं।[3] (عالمگیری)

मिना के आमाल और ह़ज के बक़िय्या अफ़्आल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ فَاِذَا قَضَیْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ النَّاسِ مَنْ یَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا وَ مَا لَهٗ فِی الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَ مِنْهُمْ مَّنْ یَّقُوْلُ رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ نَصِیْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ؕ وَ اللّٰهُ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ۝ وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ فِیْۤ اَیَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِیْ یَوْمَیْنِ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَیْهِ ۚ وَ مَنْ تَاَخَّرَ فَلَاۤ اِثْمَ عَلَیْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰی ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ اعْلَمُوْۤا اَنَّكُمْ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ ﴾[4]

= ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तेरी पनाह उस के शर से जो पेट पर चलता है और दो[2] पाउं और चार[4] पाउं पर चलने वाले के शर से, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू मुझ को ऐसा कर दे कि हमेशा तुझ से डरता रहूं गोया तुझ को देखता हूं यहां तक कि तुझ से मिलूं और तक़्वा के साथ मुझ को बहरामन्द कर और गुनाह कर के बद बख़्त न बनूं और अपनी क़ज़ा मेरे लिये बेहतर कर और जो तू ने मुक़द्दर किया है उस में बरकत दे, यहां तक कि जो तू ने मुअख़्ख़र किया है उस की जल्दी को पसन्द न करूं और जो तू ने जल्द कर दिया उस की ताख़ीर को दोस्त न रखूं और मेरी तवंगरी मेरे नफ़्स में कर और कान, आंख से मुझ को मुतमत्तेअ़ कर और उन को मेरा वारिस कर और जो मुझ पर जुल्म करे उन पर मुझे फ़त्ह़मन्द कर और उस में मेरा बदला दिखा दे और उस से मेरी आंख ठन्डी कर। 12

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣٠.

2 ..... المرجع السابق، ص٢٣١.

3 ..... المرجع السابق.

4 ..... پ٢، البقرة: ٢٠٠-٢٠٣.

www.dawateislami.net

फिर जब ह़ज के काम पूरे कर चुको तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का ज़िक्र करो जैसे अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे बल्कि इस से ज़ियादा और बाज़ आदमी यूं कहते हैं कि ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में दे और आख़िरत में उस के लिये कुछ हिस्सा नहीं और बाज़ कहते हैं कि ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और आख़िरत में भलाई दे और हम को दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा । येह लोग वोह हैं कि इन की कमाई से इन का हिस्सा है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) जल्द हिसाब करने वाला है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की याद करो गिने हुए दिनों में तो जो जल्दी कर के दो दिन में चला जाए उस पर कुछ गुनाह नहीं और जो रह जाए तो उस पर कुछ गुनाह नहीं परहेज़गार के लिये और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से डरो और जान लो कि तुम को उसी की त़रफ़ उठना है ।

ह़दीस 1 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मुज़्दलिफ़ा से रवाना हुए यहां तक कि बत्ने मुह़स्सिर में पहुंचे और यहां जानवर को तेज़ कर दिया फिर वहां से बीच वाले रास्ते से चले जो जम्रए कुब्रा को गया है जब उस जम्रे के पास पहुंचे तो उस पर सात कंकरियां मारीं, हर कंकरी पर तक्बीर कहते और बत्ने वादी से रमी की फिर मन्ह़र में आ कर तिरसठ[63] ऊंट अपने दस्ते मुबारक से नह़र फ़रमाए फिर अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को दे दिया बक़िय्या को उन्हों ने नह़र किया और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने अपनी क़ुरबानी में उन्हें शरीक कर लिया । फिर हुक्म फ़रमाया कि "हर ऊंट में से एक एक टुकड़ा हांडी में डाल कर पकाया जाए ।" दोनों साह़िबों ने उस गोश्त में से खाया और शोरबा पिया । फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم सुवार हो कर बैतुल्लाह की त़रफ़ रवाना हुए और ज़ोह्र की नमाज़ मक्के में पढ़ी ।[1]

ह़दीस 2 तिरमिज़ी शरीफ़ में इन्हीं से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم मुज़्दलिफ़ा से सुकून के साथ रवाना हुए और लोगों को हुक्म फ़रमाया कि इत्मीनान के साथ चलें और वादिये मुह़स्सिर में सुवारी को तेज़ कर दिया और लोगों से फ़रमाया कि छोटी छोटी कंकरियों से रमी करें और येह फ़रमाया कि शायद इस साल के बाद अब मैं तुम्हें न देखूंगा ।[2]

ह़दीस 3 सह़ीहैन में इन्हीं से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने यौमुन्नह़र (दसवीं तारीख़) में चाश्त के वक़्त रमी की और इस के बाद के दिनों में आफ़्ताब ढलने के बाद ।[3]

ह़दीस 4 सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में है कि अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जम्रए कुब्रा के पास पहुंचे तो काबए मुअ़ज़्ज़मा को बाईं जानिब किया और मिना को दह्नी त़रफ़ और

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب حجة النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ١٢١٨، ص٦٣٤.

2 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الحج، باب ماجاء في الافاضة من عرفات، الحديث: ٨٨٧، ج٢، ص٢٥٣.

3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب بيان وقت استحباب الرمي، الحديث: ٣١٤-(١٢٩٩)، ص٦٧٦.

www.dawateislami.net

सात कंकरियां मारीं, हर कंकरी पर तक्बीर कही फिर फ़रमाया कि "इसी त़रह़ उन्हों ने रमी की जिन पर सूरए बक़रह नाज़िल हुई।"(1)

ह़दीस 5 इमाम मालिक नाफ़ेअ़ से रावी कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا दोनों पहले जम्रों के पास देर तक ठहरते तक्बीर व तस्बीह़ व ह़म्द व दुआ़ करते और जम्रए अ़क़बा के पास न ठहरते।(2)

ह़दीस 6 त़बरानी इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से सुवाल किया कि रमिये जिमार में क्या सवाब है? इरशाद फ़रमाया : "तू अपने रब के नज़्दीक इस का सवाब उस वक़्त पाएगा कि तुझे इस की ज़ियादा ह़ाजत होगी।"(3)

ह़दीस 7 इब्ने ख़ुज़ैमा व ह़ाकिम इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام मनासिक में आए, जम्रए अ़क़बा के पास शैत़ान सामने आया, उसे सात कंकरियां मारीं यहां तक कि ज़मीन में धंस गया फिर जम्रए सानिया के पास आया फिर उसे सात कंकरियां मारीं यहां तक कि ज़मीन में धंस गया, फिर तीसरे जम्रे के पास आया तो उसे सात कंकरियां मारीं यहां तक कि ज़मीन में धंस गया।" इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि तुम शैत़ान को रज्म करते और मिल्लते इब्राहीम का इत्तिबाअ़ करते हो।(4)

ह़दीस 8 बज़्ज़ार इन्हीं से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जम्रों की रमी करना तेरे लिये क़ियामत के दिन नूर होगा।"(5)

ह़दीस 9 त़बरानी व ह़ाकिम अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, कहते हैं, हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! येह जम्रों पर जो कंकरियां हर साल मारी जाती हैं, हमारा गुमान है कि कम हो जाती हैं। फ़रमाया कि "जो क़बूल होती हैं उठा ली जाती हैं, ऐसा न होता तो पहाड़ों की मिस्ल तुम देखते।"(6)

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب الحج، باب رمى الجمار بسبع حصيات، الحديث: ١٧٤٨، ١٧٥٠، ج١، ص٥٧٨، ٥٧٩.

2 ..... "الموطأ" للإمام مالك، كتاب الحج، باب رمى الجمار، الحديث: ٩٤٧ ج١، ص٣٧٢.

3 ..... "المعجم الأوسط"، باب العين، الحديث: ٤١٤٧، ج٣، ص١٥٠.

4 ..... "المستدرك" للحاكم، كتاب المناسك، باب رمى الجمار و مقدار الحصى، الحديث: ١٧٥٦، ج٢، ص١٢٢.

5 ..... "الترغيب و الترهيب"، كتاب الحج، الترغيب في رمى الجمار ...إلخ، الحديث: ٣، ج٢، ص١٣٤.

6 ..... "المعجم الأوسط"، باب الالف، الحديث: ١٧٥٠، ج١، ص٤٧٤.

www.dawateislami.net

ह़दीस 10 ता 12 सह़ीह़ मुस्लिम में उम्मुल हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने ह़िज्जतुल वदाअ़ में सर मुंडाने वालों के लिये तीन बार दुआ़ की और कतरवाने वालों के लिये एक बार ।[1] इस के मिस्ल अबू हुरैरा व मालिक बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से मरवी ।

ह़दीस 13 इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "बाल मुंडाने में हर बाल के बदले एक नेकी है और एक गुनाह मिटाया जाता है ।"[2]

ह़दीस 14 उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "सर मुंडाने में जो बाल ज़मीन पर गिरेगा, वोह तेरे लिये क़ियामत के दिन नूर होगा ।"[3]

(1) जब **तुलूए़ आफ़्ताब** में दो रक्अ़त पढ़ने का वक़्त बाक़ी रह जाए, इमाम के साथ मिना को चलो और यहां से सात छोटी छोटी कंकरियां खजूर की गुठली बराबर की पाक जगह से उठा कर तीन बार धो लो, किसी पथ्थर को तोड़ कर कंकरियां न बनाओ और येह भी हो सकता है कि तीनों दिन जम्रों पर मारने के लिये यहीं से कंकरियां ले लो या सब किसी और जगह से लो मगर न नजिस जगह की हों, न मस्जिद की, न जम्रे के पास की ।

(2) रास्ते में फिर ब दस्तूर ज़िक्र करो, दुआ़ व दुरूद व कस्रते लब्बैक में मश्ग़ूल रहो और येह दुआ़ पढ़ो :

اَللّٰھُمَّ اِلَیۡکَ اَفَضۡتُ وَمِنۡ عَذَابِکَ اَشۡفَقۡتُ وَاِلَیۡکَ رَجَعۡتُ وَمِنۡکَ رَھِبۡتُ فَاقۡبَلۡ نُسُکِیۡ وَعَظِّمۡ اَجۡرِیۡ وَارۡحَمۡ تَضَرُّعِیۡ وَاقۡبَلۡ تَوۡبَتِیۡ وَاسۡتَجِبۡ دُعَآئِیۡ[4]

(3) जब **वादिये मुह़स्सिर**[5] पहुंचो पांच सौ पेंतालीस हाथ बहुत जल्द तेज़ी के साथ चल कर निकल जाओ मगर न वोह तेज़ी जिस से किसी को ईज़ा हो और इस अ़र्से में येह दुआ़ पढ़ते जाओ :

---

1 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الحج، باب تفضیل الحلق علی التقصیر ...إلخ، الحدیث: ۱۳۰۳، ص٦٧٧.

2 ..... "الترغیب و الترھیب"، کتاب الحج، الترغیب فی حلق الرأس بمنی، الحدیث: ۳، ج۲، ص۱۳۵.

3 ..... "الترغیب و الترھیب"، کتاب الحج، الترغیب فی حلق الرأس بمنی، الحدیث: ۳، ج۲، ص۱۳۵.

4 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तेरी त़रफ़ वापस हुवा और तेरे अ़ज़ाब से डरा और तेरी त़रफ़ रुजूअ़ की और तुझ से ख़ौफ़ किया तो मेरी इबादत क़बूल कर और मेरा अज्र ज़ियादा कर और मेरी आ़जिज़ी पर रह़म कर और मेरी तौबा क़बूल कर और मेरी दुआ़ मुस्तजाब कर । 12

5 ...येह मिना व मुज़्दलिफ़ा के बीच में एक नाला है दोनों की ह़ुदूद से ख़ारिज मुज़्दलिफ़ा से मिना को जाते हुए बाएं हाथ को जो पहाड़ पड़ता है उस की चोटी से शुरूअ़ हो कर 545 हाथ तक है यहां अस्ह़ाबे फ़ील आ कर ठहरे और उन पर अ़ज़ाबे अबाबील उतरा था लिहाज़ा इस जगह से जल्द गुज़रना और अ़ज़ाबे इलाही से पनाह मांगना चाहिये ।

www.dawateislami.net

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذَالِكَ [1]

(4) जब मिना नज़र आए वोही दुआ़ पढ़ो जो मक्के से आते मिना को देख कर पढ़ी थी।

जम्रतुल अ़क़्बा की रमी

(5) जब मिना पहुंचो सब कामों से पहले **जम्रतुल अ़क़बा**[2] को जाओ जो इधर से पिछला जम्रा है और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से पहला, नाले के वस्त में सुवारी पर जम्रे से कम अज़ कम पांच हाथ हटे हुए यूं खड़े हो कि मिना दहने हाथ पर और काबा बाएं हाथ को और जम्रे की त़रफ़ मुंह हो सात कंकरियां जुदा जुदा चुटकी में ले कर सीधा हाथ ख़ूब उठा कर कि बग़ल की रंगत ज़ाहिर हो हर एक पर

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ رَغْمًا لِّلشَّيْطٰنِ رِضًا لِّلرَّحْمٰنِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّسَعْيًا مَّشْكُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا [3]

कह कर मारो।[4] बेहतर येह है की कंकरियां जम्रे तक पहुंचें वरना तीन हाथ के फ़ासिले तक गिरें। इस से ज़ियादा फ़ासिले पर गिरी तो वोह कंकरी शुमार में न आएगी, पहली कंकरी से लब्बैक मौक़ूफ़ कर दो, اَللّٰهُ اَكْبَر के बदले سُبْحٰنَ اللّٰه या لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहा जब भी ह़रज नहीं।

(6) जब सात पूरी हो जाएं वहां न ठहरो, फ़ौरन ज़िक्रो दुआ़ करते पलट आओ।

रमी के मसाइल

मस्अला 1 सात से कम जाइज़ नहीं, अगर सिर्फ़ तीन मारीं या बिल्कुल नहीं तो दम लाज़िम होगा और अगर चार मारीं तो बाक़ी हर कंकरी के बदले सदक़ा दे।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 2 कंकरी मारने में पै दर पै होना शर्त नहीं मगर वक़्फ़ा ख़िलाफ़े सुन्नत है।[6] (ردالمحتار)

---

1 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ)! अपने ग़ज़ब से हमें क़त्ल न कर और अपने अ़ज़ाब से हमें हलाक न कर और इस से पहले हम को आ़फ़ियत दे। 12

2 ...मिना और मक्के के बीच में तीन जगह सुतून बने हैं उन को जम्रा कहते हैं पहला जो मिना से क़रीब है, **जम्रए ऊला** कहलाता है और बीच का **जम्रए वुस्ता** और अख़ीर का कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से क़रीब है **जम्रतुल अ़क़बा**। 12

3 ...**अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नाम से, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) बहुत बड़ा है, शैत़ान के ज़लील करने के लिये, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रिज़ा के लिये, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ)! इस को ह़ज्जे मबरूर कर और सई मश्कूर कर और गुनाह बख़्श दे। 12

4 ...या सिर्फ़ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कह कर मारो। 12 मिन्ह

5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في رمي الجمرة العقبى، ج٣، ص٦٠٨.

6 ...."ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في رمي الجمرة العقبى، ج٣، ص٦٠٨.

www.dawateislami.net

मस्अला 3 सब कंकरियां एक साथ फेंकीं तो येह सातों एक के क़ाइम मक़ाम हुईं ।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 4 कंकरियां ज़मीन की जिन्स से हों और ऐसी चीज़ की जिस से तयम्मुम जाइज़ है कंकर, पथ्थर, मिट्टी यहां तक कि अगर ख़ाक फेंकी जब भी रमी हो गई मगर एक कंकरी फेंकने के क़ाइम मक़ाम हुई । मोती, अ़म्बर मुश्क वग़ैरहा से रमी जाइज़ नहीं । यूंही जवाहिर और सोने चांदी से भी रमी नहीं हो सकती कि येह तो निछावर हुई मारना न हुवा, मेंगनी से भी रमी जाइज़ नहीं ।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 5 जम्रे के पास से कंकरियां उठाना मक्रूह है कि वहां वोही कंकरियां रहती हैं जो मक़्बूल नहीं होतीं और मरदूद हो जाती हैं और जो मक़्बूल हो जाती हैं उठा ली जाती हैं ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 6 अगर मालूम हो कि कंकरियां नजिस हैं तो उन से रमी करना मक्रूह है और मालूम न हो तो नहीं मगर धो लेना मुस्तह़ब है ।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 7 इस रमी का वक़्त आज की फ़ज्र से ग्यारहवीं की फ़ज्र तक है मगर मस्नून येह है कि तुलूए़ आफ़्ताब से ज़वाल तक हो और ज़वाल से ग़ुरूब तक मुबाह़ और ग़ुरूब से फ़ज्र तक मक्रूह । यूंही दसवीं की फ़ज्र से तुलूए़ आफ़्ताब तक मक्रूह और अगर किसी उ़ज़्र के सबब हो मसलन चरवाहों ने रात में रमी की तो कराहत नहीं ।[5] (درمختار،ردالمحتار)

ह़ज की क़ुरबानी

(7) अब रमी से फ़ारिग़ हो कर **क़ुरबानी** में मश्ग़ूल हो, येह क़ुरबानी वोह नहीं जो बक़र ईद में हुवा करती है कि वोह तो मुसाफ़िर पर अस्लन नहीं और मुक़ीम मालदार पर वाजिब है अगर्चे ह़ज में हो बल्कि येह ह़ज का शुक्राना है । क़ारिन और मुतमत्तेअ़ पर वाजिब अगर्चे फ़क़ीर हो और मुफ़रिद के लिये मुस्तह़ब अगर्चे ग़नी हो । जानवर की उ़म्र व आज़ा में वोही शर्तें हैं जो ईद की क़ुरबानी में ।

---

1 ..... المرجع السابق، ص٦٠٧.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في رمي الجمرة العقبىٰ، ج٣، ص٦٠٨.

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في رمي الجمرة العقبىٰ، ج٣، ص٦٠٩.

4 ..... المرجع السابق، ص٦١٠.

5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في رمي الجمرة العقبىٰ، ج٣، ص٦١٠.

www.dawateislami.net

मस्अला 1 मोह़ताजे महूज जिस की मिल्क में न क़ुरबानी के लाइक़ कोई जानवर हो, न उस के पास इतना नक़्द या अस्बाब कि उसे बेच कर ले सके, वोह अगर क़िरान या तमत्तोअ़ की निय्यत करेगा तो उस पर क़ुरबानी के बदले दस रोज़े वाजिब होंगे तीन तो ह़ज के महीनों में यानी यकुम शव्वाल से नवीं ज़ुल ह़िज्जा तक एह़राम बांधने के बाद, इस बीच में जब चाहे रख ले। एक साथ ख़्वाह जुदा जुदा और बेहतर येह है कि 7,8,9 को रखे और बाक़ी सात तेरहवीं ज़ुल ह़िज्जा के बाद जब चाहे रखे और बेहतर येह कि घर पहुंच कर हों।

(8) ज़ब्ह़ करना आता हो तो ख़ुद ज़ब्ह़ करे कि सुन्नत है, वरना ज़ब्ह़ के वक़्त ह़ाज़िर रहे।

(9) रू ब क़िब्ला जानवर को लिटा कर और ख़ुद भी क़िब्ला को मुंह कर के येह पढ़ो :

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۚ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ لَا شَرِیْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ[1]

इस के बाद بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहते हुए निहायत तेज़ छुरी से बहुत जल्द ज़ब्ह़ कर दो कि चारों रगें कट जाएं, ज़ियादा हाथ न बढ़ाओ कि बे सबब की तक्लीफ़ है।

(10) बेहतर येह है कि ज़ब्ह़ के वक़्त जानवर के दोनों हाथ, एक पाउं बांध लो ज़ब्ह़ कर के खोल दो।

(11) ऊंट हो तो उसे खड़ा कर के सीने में गले की इन्तिहा पर तक्बीर कह कर नेज़ा मारो कि सुन्नत यूंही है इसे नह़र कहते हैं और इस का ज़ब्ह़ करना मक्रूह मगर ह़लाल ज़ब्ह़ से भी हो जाएगा, अगर ज़ब्ह़ करे तो गले पर एक ही जगह उसे भी ज़ब्ह़ करे। जाहिलों में जो मश्हूर है कि ऊंट तीन जगह ज़ब्ह़ होता है ग़लत़ व ख़िलाफ़े सुन्नत है और मुफ़्त की अज़िय्यत व मक्रूह है।

(12) जानवर जो ज़ब्ह़ किया जाए जब तक सर्द न हो ले उस की खाल न खींचो, न आज़ा काटो कि ईज़ा है।

(13) येह क़ुरबानी कर के अपने और तमाम मुसलमानों के ह़ज व क़ुरबानी क़बूल होने की दुआ मांगो।

---

[1] ..... انظر: "سنن أبي داود"، كتاب الضحايا، باب ما يستحب من الضحايا، الحديث: ٢٧٩٥، ج٣، ص١٢٦.

तर्जमा : "मैं ने अपनी ज़ात को उस की त़रफ़ मुतवज्जेह किया, जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, मैं बात़िल से ह़क़ की त़रफ़ माइल हूं और मैं मुश्रिकों से नहीं।"

"बेशक मेरी नमाज़ व क़ुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये है, जो तमाम जहान का रब है, उस का कोई शरीक नहीं और मुझे इसी का हुक्म हुवा और मैं मुसलमानों में हूं।" 12

www.dawateislami.net

ह़ल्क़ व तक़्सीर

(14) क़ुरबानी के बाद क़िब्ला मुंह बैठ कर मर्द **ह़ल्क़** करें यानी तमाम सर मुंडाएं कि अफ़्ज़ल है या बाल कतरवाएं कि रुख़्सत है। औ़रतों को बाल मुंडाना ह़राम है, एक पोरा बराबर बाल कतरवा दें। मुफ़रिद अगर क़ुरबानी करे तो उस के लिये मुस्तह़ब येह है कि क़ुरबानी के बाद ह़ल्क़ करे और अगर ह़ल्क़ के बाद क़ुरबानी की जब भी ह़रज नहीं और तमत्तोअ़ व क़िरान वाले पर क़ुरबानी के बाद ह़ल्क़ करना वाजिब है यानी अगर क़ुरबानी से पहले सर मूंडाएगा तो दम वाजिब होगा।

मस्अला 1 कतरवाएं तो सर में जितने बाल हैं उन में के चहारुम बालों में से कतरवाना ज़रूरी है, लिहाज़ा एक पोरे से ज़ियादा कतरवाएं कि बाल छोटे बड़े होते हैं मुम्किन है कि चहारुम बालों में सब एक एक पूरा न तरशें।

मस्अला 2 सर मूंडाने या बाल कतरवाने का वक़्त अय्यामे नह़र है यानी 10,11,12 और अफ़्ज़ल पहला दिन यानी दसवीं ज़ुल ह़िज्जा।[1] (عالمگیری)

मस्अला 3 जब एह़राम से बाहर होने का वक़्त आ गया तो अब मोह़रिम अपना या दूसरे का सर मुंड सकता है, अगर्चे येह दूसरा भी मोह़रिम हो।[2] (منسک)

मस्अला 4 जिस के सर पर बाल न हों उसे उस्तरा फिरवाना वाजिब है और अगर बाल हैं मगर सर में फुड़ियां हैं जिन की वज्ह से मुंडा नहीं सकता और बाल इतने बड़े भी नहीं कि कतरवाए तो इस उ़ज़्र के सबब उस से मुंडाना और कतरवाना साक़ित़ हो गया। उसे भी मुंडाने वालों, कतरवाने वालों की त़रह़ सब चीज़ें ह़लाल हो गईं मगर बेहतर येह है कि अय्यामे नह़र के ख़त्म होने तक ब दस्तूर रहे।[3] (عالمگیری)

मस्अला 5 अगर वहां से किसी गाउं वग़ैरा में ऐसी जगह चला गया कि न ह़जाम मिलता है, न उस्तरा या क़ैंची पास है कि मुंडा ले या कतरवाए तो येह कोई उ़ज़्र नहीं, मुंडाना या कतरवाना ज़रूरी है।[4] (عالمگیری)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس، في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣١.

2 ..... "لباب المناسك"، (باب مناسك منى، فصل في الحلق و التقصير)، ص٢٣٠.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ص٢٣١.

4 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

और येह भी ज़रूर है कि ह़रम से बाहर मुंडाना या कतरवाना न हो बल्कि ह़रम के अन्दर हो कि उस के लिये येह जगह मख़्सूस है, ह़रम से बाहर करेगा तो दम लाज़िम आएगा ।[1] (منسک)

मस्अला 6 इस मौक़अ़ पर सर मुंडाने के बाद मूंछें तरश्वाना, मूए ज़ेरे नाफ़ दूर करना मुस्तह़ब है और दाढ़ी के बाल न ले और लिये तो दम वग़ैरा वाजिब नहीं ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 7 अगर न मुंडाए न कतरवाए तो कोई चीज़ जो एह़राम में ह़राम थी ह़लाल न हुई अगर्चे त़वाफ़ भी कर चुका हो ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 8 अगर बारहवीं तक ह़ल्क़ व क़स्र न किया तो दम लाज़िम आएगा कि इस के लिये येह वक़्त मुक़र्रर है ।[4] (ردالمحتار)

(15) ह़ल्क़ हो या तक़्सीर दह्नी त़रफ़[5] से शुरूअ़ करो और उस वक़्त اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ط وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ कहते जाओ और फ़ारिग़ होने के बाद भी कहो और ह़ल्क़ या तक़्सीर के वक़्त येह दुआ़ पढ़ो :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى مَا هَدَانَا وَاَنْعَمَ عَلَيْنَا وَقَضٰى عَنَّا نُسُكَنَا اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ نَاصِيَتِيْ بِيَدِكَ فَاجْعَلْ لِّيْ بِكُلِّ شَعْرَةٍ نُوْرًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ وَامْحُ عَنِّيْ بِهَا سَيِّئَةً وَّارْفَعْ لِيْ بِهَا دَرَجَةً فِي الْجَنَّةِ الْعَالِيَةِ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِيْ فِيْ نَفْسِيْ وَتَقَبَّلْ مِنِّيْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَ لِلْمُحَلِّقِيْنَ وَالْمُقَصِّرِيْنَ يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ. اٰمِيْنَ ط[6]

और सब मुसलमानों की बख़्शिश की दुआ़ करो ।

मस्अला 9 अगर मुंडाने या कतरवाने के सिवा किसी और त़रह़ से बाल दूर करें मसलन चूना हरताल वग़ैरा से जब भी जाइज़ है ।[7] (درمختار)

---

1 ..... "لباب المناسك"، (باب مناسك منى، فصل فى الحلق و التقصير)، ص ٢٣٠.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ص ٢٣٢.

3 ..... المرجع السابق .

4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في طواف الزيارة، ج٣، ص٦١٦.

5 ...यानी मुंडाने वाले की दह्नी जानिब, येही ह़दीस से साबित और इमामे आज़म ने भी ऐसा ही किया लिहाज़ा बाज़ किताबों में जो ह़जाम की दह्नी जानिब से शुरूअ़ करने को बताया सह़ीह़ नहीं । 12 मिन्ह

6 ...ह़म्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये इस पर कि उस ने हमें हिदायत की और इन्आ़म किया और हमारी इबादत पूरी करा दी, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! येह मेरी चोटी तेरे हाथ में है मेरे लिये हर बाल के बदले में क़ियामत के दिन नूर कर और इस की वज्ह से मेरा गुनाह मिटा दे और जन्नत में दरजा बुलन्द कर, इलाही ! मेरे लिये मेरे नफ़्स में बरकत कर और मुझ से क़बूल कर, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मुझ को और सर मुंडाने वालों और बाल कतरवाने वालों को बख़्श दे, ऐ बड़ी मग़्फ़िरत वाले ! आमीन । 12

7 ..... "الدرالمختار" ، كتاب الحج، مطلب في رمي جمرة العقبة، ج٣، ص٦١٢.

www.dawateislami.net

(16) बाल दफ़्न कर दें और हमेशा बदन से जो चीज़ बाल, नाख़ुन, खाल जुदा हों दफ़्न कर दिया करें।

(17) यहां ह़ल्क़ या तक़्सीर से पहले नाख़ुन न कतरवाओ, न ख़त़ बनवाओ, वरना दम लाज़िम आएगा।

(18) अब औ़रत से सोह़बत करने, ब शह्वत उसे हाथ लगाने, बोसा लेने, शर्मगाह देखने के सिवा जो कुछ एह़राम ने ह़राम किया था सब ह़लाल हो गया।

त़वाफ़े फ़र्ज़

(19) अफ़्ज़ल येह है कि आज **दसवीं** ही तारीख़ **फ़र्ज़ त़वाफ़** के लिये जिसे त़वाफ़े ज़ियारत व त़वाफ़े इफ़ाज़ा कहते हैं, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में जाओ ब दस्तूरे मज़्कूर पैदल बा वुज़ू व सत्रे औ़रत त़वाफ़ करो मगर इस त़वाफ़ में इज़्तिबाअ़ नहीं।

मस्अला 1 येह त़वाफ़ ह़ज का दूसरा रुक्न है इस के सात फेरे किये जाएंगे, जिन में चार फेरे फ़र्ज़ हैं कि बग़ैर इन के त़वाफ़ होगा ही नहीं और न ह़ज होगा और पूरे सात करना वाजिब तो अगर चार फेरों के बाद जिमाअ़ किया तो ह़ज हो गया मगर दम वाजिब होगा कि वाजिब तर्क हुवा।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 2 इस त़वाफ़ के सह़ीह़ होने के लिये येह शर्त़ है कि पेशतर एह़राम बंधा हो और वुक़ूफ़ कर चुका हो और ख़ुद करे और अगर किसी और ने इसे कन्धे पर उठा कर त़वाफ़ किया तो इस का त़वाफ़ न हुवा मगर जब कि येह मजबूर हो ख़ुद न कर सकता हो मसलन बेहोश है।[2] (جوہرہ، ردالمحتار)

मस्अला 3 बेहोश को पीठ पर लाद कर या किसी और चीज़ पर उठा कर त़वाफ़ कराया और इस में अपने त़वाफ़ की भी निय्यत कर ली तो दोनों के त़वाफ़ हो गए अगर्चे दोनों के दो क़िस्म के त़वाफ़ हों।

मस्अला 4 इस त़वाफ़ का वक़्त दसवीं की तुलूए़ फ़ज्र से है, इस से क़ब्ल नहीं हो सकता।[3] (جوہرہ)

मस्अला 5 इस में बल्कि मुत़्लक़ हर त़वाफ़ में निय्यत शर्त़ है, अगर निय्यत न हो त़वाफ़ न हुवा मसलन दुश्मन या दरिन्दे से भाग कर फेरे किये त़वाफ़ न हुवा ब ख़िलाफ़ वुक़ूफ़े

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية أداء الحج، ج ١، ص ٢٣٢، وغيره.

2 ..... "رد المحتار"، كتاب الحج، مطلب: في طواف الزيارة، ج ٣، ص ٦١٤.

3 ..... "الجوهرة النيرة" كتاب الحج، ص ٢٠٥.

www.dawateislami.net

अ़रफ़ा कि वोह बग़ैर निय्यत भी हो जाता है मगर येह निय्यत शर्त़ नहीं कि येह त़वाफ़े ज़ियारत है ।[1] (جوہرہ)

मस्अला 6 ईदे अज़्हा की नमाज़ वहां नहीं पढ़ी जाएगी ।[2] (ردالمحتار)

(20) **क़ारिन व मुफ़रिद** त़वाफ़े कुदूम में और **मुतमत्तेअ़** बादे एह़रामे ह़ज किसी त़वाफ़े नफ़्ल में ह़ज के रमल व सई दोनों या सिर्फ़ सई कर चुके हों तो इस त़वाफ़ में रमल व सई कुछ न करें और ① अगर इस में रमल व सई कुछ न किया हो या ② सिर्फ़ रमल किया हो या ③ जिस त़वाफ़ में किये थे वोह उ़मरह का था जैसे क़ारिन व मुतमत्तेअ़ का पहला त़वाफ़ या ④ वोह त़वाफ़ बे त़हारत किया था या ⑤ शव्वाल से पेश्तर के त़वाफ़ में किये थे तो इन पांचों सूरतों में रमल व सई दोनों इस त़वाफ़े फ़र्ज़ में करें ।

(21) कमज़ोर और औ़रतें अगर भीड़ के सबब दसवीं को न जाएं तो इस के बाद ग्यारहवीं को अफ़्ज़ल है और इस दिन येह बड़ा नफ़्अ़ है कि मत़ाफ़ ख़ाली मिलता है गिनती के बीस तीस आदमी होते हैं । औ़रतों को भी ब इत्मीनाने तमाम हर फेरे में संगे अस्वद का बोसा मिलता है ।

(22) जो ग्यारहवीं को न जाए बारहवीं को कर ले इस के बाद बिला उ़ज़्र ताख़ीर गुनाह है, जुर्माने में एक क़ुरबानी करनी होगी । हां, मसलन औ़रत को ह़ैज़ या निफ़ास आ गया तो इन के ख़त्म के बाद त़वाफ़ करे मगर ह़ैज़ या निफ़ास से अगर ऐसे वक़्त पाक हुई कि नहा धो कर बारहवीं तारीख़ में आफ़्ताब डूबने से पहले चार फेरे कर सकती है तो करना वाजिब है, न करेगी गुनहगार होगी । यूंही अगर इतना वक़्त उसे मिला था कि त़वाफ़ कर लेती और न किया अब ह़ैज़ या निफ़ास आ गया तो गुनहगार हुई ।[3] (ردالمحتار)

(23) बहर ह़ाल बादे त़वाफ़ दो रक्अ़त ब दस्तूर पढ़ें, इस त़वाफ़ के बाद औ़रतें भी ह़लाल हो जाएंगी और ह़ज पूरा हो गया कि इस का दूसरा रुक्न येह त़वाफ़ था ।

मस्अला 7 अगर येह त़वाफ़ न किया तो औ़रतें ह़लाल न होंगी अगर्चे बरसों गुज़र जाएं ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 8 बे वुज़ू या जनाबत में त़वाफ़ किया तो एह़राम से बाहर हो गया, यहां तक कि इस के बाद जिमाअ़ करने से ह़ज फ़ासिद न होगा और अगर उलटा त़वाफ़ किया यानी काबे की बाईं जानिब से तो औ़रतें ह़लाल हो गईं मगर जब तक मक्के में है इस त़वाफ़ का इआ़दा करे और अगर नजिस कपड़ा पहन कर त़वाफ़ किया तो मक्रूह हुवा और ब क़दरे

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، ص٢٠٥. 2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فی طواف الزيارة، ج٣، ص٦١٧.

3 ..... "رد المحتار"، كتاب الحج، مطلب فی طواف الزيارة، ج٣، ص٦١٦.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣٢.

www.dawateislami.net

मानेए नमाज़ सत्र खुला रहा तो हो जाएगा मगर दम लाज़िम है।[1] (عالمگیری، جوہرہ)

(24) दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं की रातें मिना ही में बसर करना सुन्नत है, न मुज़्दलिफ़ा में न मक्के में न राह में, लिहाज़ा जो शख़्स दस या ग्यारह को त़वाफ़ के लिये गया वापस आ कर रात मिना ही में गुज़ारे।

मस्अला 9 अगर अपने आप मिना में रहा और अस्बाब वग़ैरा मक्के को भेज दिया या मक्के ही में छोड़ कर अ़रफ़ात को गया तो अगर ज़ाएअ़ होने का अन्देशा नहीं है तो कराहत है वरना नहीं।[2] (درمختار)

बाक़ी दिनों की रमी

(25) **ग्यारहवीं तारीख़** बाद नमाज़े ज़ोहर इमाम का ख़ुत्बा सुन कर फिर **रमी** को चलो, इन अय्याम में रमी **जम्रए ऊला** से शुरूअ़ करो जो मस्जिदे ख़ैफ़ से क़रीब है, इस की रमी को राहे मक्का की त़रफ़ से आ कर चढ़ाई पर चढ़ो कि येह जगह निस्बते जम्रतुल अ़क़बा के बुलन्द है। यहां रू ब क़िब्ला सात कंकरियां बत़ौरे मज़्कूर मार कर जम्रे से कुछ आगे बढ़ जाओ और क़िब्ला रू दुआ़ में यूं हाथ उठाओ कि हथेलियां क़िब्ला को रहें। हुज़ूरे क़ल्ब से ह़म्द व दुरूद व दुआ़ व इस्तिग़फ़ार में कम से कम बीस आयतें पढ़ने की क़दर मश्ग़ूल रहो, वरना पौन पारह या सूरए बक़रह की मिक़्दार तक।

(26) फिर **जम्रए वुस्त़ा** पर जा कर ऐसा ही करो (27) फिर **जम्रतुल अ़क़बा** पर मगर यहां रमी कर के न ठहरो मआ़न पलट आओ, पलटते में दुआ़ करो।

(28) बि ऐनिही इसी त़रह़ **बारहवीं तारीख़** बादे ज़वाल तीनों जम्रे की रमी करो, बाज़ लोग दोपहर से पहले आज रमी कर के मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को चल देते हैं। येह हमारे अस्ल मज़्हब के ख़िलाफ़ और एक ज़ईफ़ रिवायत है तुम इस पर अ़मल न करो।

(29) बारहवीं की रमी कर के ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले पहले इख़्तियार है कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को रवाना हो जाओ मगर बादे ग़ुरूब चला जाना मायूब। अब एक दिन और ठहरना और तेरहवीं को ब दस्तूर दोपहर ढले रमी कर के मक्का जाना होगा और येही अफ़्ज़ल है, मगर आ़म लोग बारहवीं को चले जाते हैं तो एक रात दिन यहां और क़ियाम में क़लील जमाअ़त को दिक़्क़त है और अगर तेरहवीं की सुब्ह़ हो गई तो अब बग़ैर रमी किये जाना जाइज़ नहीं, जाएगा तो दम वाजिब होगा। दसवीं की रमी का वक़्त ऊपर मज़्कूर हुवा।

ग्यारहवीं बारहवीं का वक़्त आफ़्ताब ढलने[3] से सुब्ह़ तक है मगर रात में यानी आफ़्ताब डूबने के बाद मक्रूह है और तेरहवीं की रमी का वक़्त सुब्ह़ से आफ़्ताब डूबने तक

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس، ج١، ص٢٣٢. و"الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، ص٢٠٦ 2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٦٢١.
3 ...यानी ज़ोहर का वक़्त शुरूअ़ होने।

www.dawateislami.net

है मगर सुब्ह़ से आफ़्ताब ढलने तक मक्रूह वक़्त है, इस के बाद ग़ुरूबे आफ़्ताब तक मस्नून। लिहाज़ा अगर पहली तीन तारीख़ों 10,11,12 की रमी दिन में न की हो तो रात में कर ले फिर अगर बग़ैर उ़ज़्र है तो कराहत है, वरना कुछ नहीं और अगर रात में भी न की तो क़ज़ा हो गई, अब दूसरे दिन इस की क़ज़ा दे और इस के ज़िम्मे कफ़्फ़ारा वाजिब और इस क़ज़ा का भी वक़्त तेरहवीं के आफ़्ताब डूबने तक है, अगर तेरहवीं को आफ़्ताब डूब गया और रमी न की तो अब रमी नहीं हो सकती और दम वाजिब।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 1 अगर बिल्कुल रमी न की जब भी एक ही दम वाजिब होगा।[2] (منسک)

मस्अला 2 कंकरियां चारों दिन के वासिते़ ली थीं यानी सत्तर और बारहवीं की रमी कर के मक्के जाना चाहता है तो अगर और को ज़रूरत हो उसे दे दे, वरना किसी पाक जगह डाल दे। जम्रों पर बची हुई कंकरियां फेंकना मक्रूह है और दफ़्न करने की भी ह़ाजत नहीं।[3] (منسک)

मस्अला 3 रमी पैदल भी जाइज़ है और सुवार हो कर भी मगर अफ़्ज़ल येह है कि पहले और दूसरे जम्रों पर पैदल रमी करे और तीसरे की सुवारी पर।[4] (درمختاروغیرہ)

मस्अला 4 अगर कंकरी किसी शख़्स की पीठ या किसी और चीज़ पर पड़ी और हल्की रह गई तो उस के बदले की दूसरी मारे और अगर गिर पड़ी और वहां गिरी जहां उस की जगह है यानी जम्रे से तीन हाथ के फ़ासिले के अन्दर तो जाइज़ हो गई।[5] (عالمگیری)

मस्अला 5 अगर कंकरी किसी शख़्स पर पड़ी और उस पर से जम्रे को लगी तो अगर मालूम हो कि उस के दफ़्अ़ करने से जम्रे पर पहुंची तो उस के बदले की दूसरी कंकरी मारे और मालूम न हो जब भी एह़तियात़ येही है की दूसरी मारे। यूंही अगर शक हो कि कंकरी अपनी जगह पर पहुंची या नहीं तो इआ़दा कर ले।[6] (منسک)

मस्अला 6 तरतीब के ख़िलाफ़ रमी की तो बेहतर येह है कि इआ़दा कर ले और अगर पहले जम्रे की रमी न की और दूसरे तीसरे की की तो पहले पर मार कर फिर दूसरे और तीसरे पर मार लेना बेहतर है और अगर तीन तीन कंकरियां मारी हैं तो पहले पर चार और मारे और

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في رمي الجمرات الثلاث، ج٣، ص٦١٩.

2 ..... "لباب المناسك"، (باب رمي الجمار و أحكامه ، فصل رمي اليوم الرابع)، ص٢٤٤.

3 ..... "لباب المناسك" و"المسلك المتقسط"، (باب رمي الجمار و أحكامه ، فصل رمي اليوم الرابع)، ص٢٤٤.

4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، ج٣، ص٦٢٠، وغيره.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس فى كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣٤.

6 ..... "لباب المناسك"، (باب رمي الجمار و أحكامه ، فصل فى الرمي و شرائطه و واجباته)، ص٢٤٥.

www.dawateislami.net

दूसरे तीसरे पर सात सात और अगर चार चार मारी हैं तो हर एक पर तीन तीन और मारे और बेहतर येह है कि सिरे से रमी करे और अगर यूं किया कि एक एक कंकरी तीनों पर मार आया फिर एक एक, यूंही सात बार में सात सात कंकरियां पूरी कीं तो पहले जम्रे की रमी हो गई और दूसरे पर तीन और मारे और तीसरे पर छे तो रमी पूरी होगी।[1] (عالمگیری)

मस्अला 7 जो शख़्स मरीज़ हो कि जम्रे तक सुवारी पर भी न जा सकता हो, वोह दूसरे को हुक्म कर दे कि उस की त़रफ़ से रमी करे और उस को चाहिये कि पहले अपनी त़रफ़ से सात कंकरियां मारने के बाद मरीज़ की त़रफ़ से रमी करे यानी जब कि ख़ुद रमी न कर चुका हो और अगर यूं किया कि एक कंकरी अपनी त़रफ़ से मारी फिर एक मरीज़ की त़रफ़ से, यूंही सात बार किया तो मक्रूह है और मरीज़ के बग़ैर हुक्म रमी कर दी तो जाइज़ न हुई और अगर मरीज़ में इतनी त़ाक़त नहीं कि रमी करे तो बेहतर येह कि उस का साथी उस के हाथ पर कंकरी रख कर रमी कराए। यूंही बेहोश या मज्नून या ना समझ की त़रफ़ से उस के साथ वाले रमी कर दें और बेहतर येह कि उन के हाथ पर कंकरी रख कर रमी कराएं।[2] (منسک)

मस्अला 8 गिन कर इक्कीस[21] कंकरियां ले गया और रमी करने के बाद देखता है कि चार बची हैं और येह याद नहीं कि कौन से जम्रे पर कमी की तो पहले पर येह चार कंकरियां मारे और दोनों पिछलों पर सात सात और अगर तीन बची हैं तो हर एक पर एक एक और अगर एक या दो हों जब भी हर जम्रे पर एक एक।[3] (فتح القدیر)

(30) रमी से पहले ह़ल्क़ जाइज़ नहीं।

(31) ग्यारहवीं बारहवीं की रमी दोपहर से पहले अस्लन सह़ीह़ नहीं।

रमी में बारह चीज़ें मक्रूह हैं

(32) रमी में येह चीज़ें मक्रूह हैं :

① दसवीं की रमी ग़ुरूबे आफ़्ताब के बाद करना।

② तेरहवीं की रमी दोपहर से पहले करना।

③ रमी में बड़ा पथ्थर मारना।

④ बड़े पथ्थर को तोड़ कर कंकरियां बनाना।

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣٤.

2 ..... "لباب المناسك" و"المسلك المتقسط"، (باب رمي الجمار و أحكامه)، ص٢٤٧.

3 ..... "فتح القدير"، كتاب الحج، باب الاحرام، ج٢، ص٣٩١.

www.dawateislami.net

⑤ मस्जिद की कंकरियां मारना।

⑥ जम्रे के नीचे जो कंकरियां पड़ी हैं उठा कर मारना कि येह मरदूद कंकरियां हैं, जो क़बूल होती हैं उठा ली जाती हैं कि क़ियामत के दिन नेकियों के पल्ले में रखी जाएंगी, वरना जम्रों के गिर्द पहाड़ हो जाते।

⑦ नापाक कंकरियां मारना।

⑧ सात से ज़ियादा मारना।

⑨ रमी के लिये जो जिहत मज़्कूर हुई उस के ख़िलाफ़ करना।[1]

⑩ जम्रे से पांच हाथ से कम फ़ासिले पर खड़ा होना ज़ियादा का मुज़ायक़ा नहीं।

⑪ जम्रों में ख़िलाफ़े तरतीब करना।

⑫ मारने के बदले कंकरी जम्रे के पास डाल देना।

मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को रवानगी

(33) अख़ीर दिन यानी बारहवीं ख़्वाह तेरहवीं को जब मिना से रुख़्सत हो कर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा चलो वादिये मुह़स्सब[2] में कि जन्नतुल मअ़ला के क़रीब है, सुवारी से उतर लो या बे उतरे कुछ देर ठहर कर दुआ़ करो और अफ़्ज़ल येह है कि इ़शा तक नमाज़ें यहीं पढ़ो, एक नींद ले कर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हो।

उ़मरह

(34) अब तेरहवीं के बाद जब तक मक्के में ठहरो अपने और अपने पीर, उस्ताद, मां बाप, ख़ुसूसन हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और उन के अस्ह़ाब व अहले बैत व हुज़ूर ग़ौसे आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْهُم की त़रफ़ से जितने हो सकें **उ़मे** करते रहो। **तन्ईम** को कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से शिमाल यानी मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ तीन मील फ़ासिले पर है, जाओ वहां से उ़मरह का एह़राम जिस त़रह़ ऊपर बयान हुवा बांध कर आओ और त़वाफ़ व सई ह़स्बे दस्तूर कर के ह़ल्क़ या तक़्सीर कर लो उ़मरह हो गया। जो ह़ल्क़ कर चुका और मसलन उसी

---

1 ...शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत**, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "रफ़ीकुल ह़रमैन" में तह़रीर फ़रमाते हैं : "लिहाज़ा बड़े शैत़ान को मारते वक़्त काबा शरीफ़ उलटे हाथ की त़रफ़ और **मिना** सीधे हाथ की त़रफ़ होना चाहिये बाक़ी दोनों जम्रों को मारते वक़्त आप का मुंह क़िब्ला की जानिब होना चाहिये।"

2 ...जन्नतुल मअ़ला कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा का क़ब्रिस्तान है उस के पास एक पहाड़ है और दूसरा पहाड़ उस पहाड़ के सामने मक्के को जाते हुए दह़ने हाथ पर नाले के पेट से जुदा है इन दोनों पहाड़ों के बीच का नाला वादिये मुह़स्सब है जन्नतुल मअ़ला मुह़स्सब में दाख़िल नहीं। 12 आला ह़ज़रत قدس سره

www.dawateislami.net

दिन दूसरा उ़मरह लाया, वोह सर पर उस्तरा फिरवा ले काफ़ी है। यूंही वोह जिस के सर पर कुदरती बाल न हों।

(35) मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में कम से कम एक ख़त्मे कुरआने मजीद से महरूम न रहे।

मक़ामाते मुतबर्रका की ज़ियारत

(36) जन्नतुल मअ़ला हाज़िर हो कर उम्मुल मुअमिनीन ख़दीजतुल कुब्रा व दीगर मदफ़ूनीन की ज़ियारत करे।

(37) मकाने विलादते अक़्दस हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم व मकाने ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا व मकाने विलादते ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه व जबले सौर व ग़ारे ह़िरा व मस्जिदुल जिन्न व मस्जिदे जबले अबी कुबैस वग़ैरहा मकानाते मुतबर्रका की भी ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो।

(38) ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब की ज़ियारत करें और अबू त़ालिब की क़ब्र पर न जाएं। यूंही जद्दा में जो लोगों ने ह़ज़रते उम्मुना ह़व्वा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا का मज़ार कई सौ हाथ का बना रखा है वहां भी न जाएं कि बे अस्ल है।

(39) उ़लमा की ख़िदमत से बरकत ह़ासिल करो।

काबए मुअ़ज़्ज़मा की दाख़िली

(40) **काबए मुअ़ज़्ज़मा की दाख़िली** कमाले सआ़दत है अगर जाइज़ त़ौर पर नसीब हो। मुह़र्रम में आ़म दाख़िली होती है मगर सख़्त कश्मकश रहती है। कमज़ोर मर्द का तो काम ही नहीं, न औ़रतों को ऐसे हुजूम में जुर्अत की इजाज़त, ज़बरदस्त मर्द अगर आप ईज़ा से बच भी गया तो औरों को धक्के दे कर ईज़ा देगा और येह जाइज़ नहीं, न इस त़रह़ की ह़ाज़िरी में कुछ ज़ौक़ मिले और ख़ास दाख़िली बे लेनदेन मुयस्सर नहीं और इस पर लेना भी ह़राम और देना भी ह़राम। **ह़राम के ज़रीए एक मुस्तह़ब मिला भी तो वोह भी ह़राम हो गया,** इन मफ़ासिद से नजात न मिले तो ह़त़ीम की ह़ाज़िरी ग़नीमत जाने, ऊपर गुज़रा कि वोह भी काबे ही की ज़मीन है।

और अगर शायद बन पड़े यूं कि ख़ुद्दामे काबा से साफ़ ठहर जाए कि दाख़िली के इ़वज़ कुछ न देंगे, इस के बाद या क़ब्ल चाहे हज़ारों रुपिये दे दे तो कमाले अदब ज़ाहिरो बात़िन की रिआ़यत से आंखें नीची किये गरदन झुकाए, गुनाहों पर शर्माते, जलाले रब्बुल इ़ज़्ज़त से लरज़ते कांपते बिस्मिल्लाह कह कर पहले सीधा पाउं बढ़ा कर दाख़िल हो और सामने की दीवार तक इतना बढ़े कि तीन हाथ का फ़ासिला रहे। वहां दो रक्अ़त नफ़्ल ग़ैर वक़्ते मक्रूह

www.dawateislami.net

में पढ़े कि नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने इस जगह नमाज़ पढ़ी है फिर दीवार पर रुख़्सारा और मुंह रख कर ह़म्द व दुरूद व दुआ़ में कोशिश करे। यूंही निगाह नीची किये चारों गोशों पर जाए और दुआ़ करे और सुतूनों से चिमटे और फिर इस दौलत के मिलने और ह़ज्जो ज़ियारत के क़बूल की दुआ़ करे और यूंही आंखें नीची किये वापस आए, ऊपर या इधर उधर हरगिज़ न देखे और बड़े फ़ज़्ल की उम्मीद करो कि वोह फ़रमाता है : [1] ﴿وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا﴾ "जो इस घर में दाख़िल हुवा वोह अमान में है।" وَالْحَمْدُ لِلّٰه

ह़रमैने शरीफ़ैन के तबर्रुकात

(41) बची हुई बत्ती वग़ैरा जो यहां या मदीनए त़य्यिबा में ख़ुद्दाम देते हैं, हरगिज़ न ले बल्कि अपने पास से बत्ती वहां रोशन कर के बाक़ी उठा ले।

मस्अला 1 ग़िलाफ़े काबए मुअ़ज़्ज़मा जो साल भर बाद बदला जाता है और जो उतारा गया फुक़रा पर तक़्सीम कर दिया जाता है, उस को उन फुक़रा से ख़रीद सकते हैं और जो ग़िलाफ़ चढ़ा हुवा है उस में से लेना जाइज़ नहीं बल्कि अगर कोई टुकड़ा जुदा हो कर गिर पड़े तो उसे भी न ले और ले तो किसी फ़क़ीर को दे दे।

मस्अला 2 काबए मुअ़ज़्ज़मा में ख़ुश्बू लगी हो उसे भी लेना जाइज़ नहीं और ली तो वापस कर दे और ख़्वाहिश हो तो अपने पास से ख़ुश्बू ले जा कर मस कर लाए।

त़वाफ़े रुख़्सत

(42) जब इरादा रुख़्सत का हो **त़वाफ़े वदाअ़** बे रमल व सई व इज़्त़िबाअ़ बजा लाए कि बाहर वालों पर वाजिब है। हां, वक़्ते रुख़्सत औ़रत ह़ैज़ या निफ़ास से हो तो उस पर नहीं, जिस ने सिर्फ़ उ़मरह किया है उस पर येह त़वाफ़ वाजिब नहीं फिर बादे त़वाफ़ ब दस्तूर दो रक्अ़त मक़ामे इब्राहीम में पढ़े।

मस्अला 1 सफ़र का इरादा था, त़वाफ़े रुख़्सत कर लिया मगर किसी वज्ह से ठहर गया, अगर इक़ामत की निय्यत न की तो वोही त़वाफ़ काफ़ी है मगर मुस्तह़ब येह है कि फिर त़वाफ़ करे कि पिछला काम त़वाफ़ रहे।[2] (عالمگیری وغیرہ)

1 .....پ٤، آل عمران: ٩٧.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس في كيفية اداء الحج، ج١، ص٢٣٤، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 2 मक्का वाले और मीक़ात के अन्दर रहने वाले पर त़वाफ़े रुख़्सत वाजिब नहीं ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 3 बाहर वाले ने मक्के में या मक्के के आस पास मीक़ात के अन्दर किसी जगह रहने का इरादा किया यानी येह कि अब यहीं रहेगा तो अगर बारहवीं तारीख़ तक येह निय्यत कर ली तो अब उस पर येह त़वाफ़ वाजिब नहीं और इस के बाद निय्यत की तो वाजिब हो गया और पहली सूरत में अगर अपने इरादे को तोड़ दिया और वहां से रुख़्सत हुवा तो उस वक़्त भी वाजिब न होगा ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 4 त़वाफ़े रुख़्सत में नफ़्से त़वाफ़ की निय्यत ज़रूरी है, वाजिब व रुख़्सत निय्यत में होने की ह़ाजत नहीं, यहां तक कि अगर ब निय्यते नफ़्ल किया वाजिब अदा हो गया ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 5 हैज़ वाली मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से जाने के क़ब्ल पाक हो गई तो उस पर येह त़वाफ़ वाजिब है और अगर जाने के बाद पाक हुई तो उसे येह ज़रूरी नहीं कि वापस आए और वापस आई तो त़वाफ़ वाजिब हो गया जब कि मीक़ात से बाहर न हुई थी और अगर जाने से पहले हैज़ ख़त्म हो गया मगर न ग़ुस्ल किया था, न नमाज़ का एक वक़्त गुज़रा था तो उस पर भी वापस आना वाजिब नहीं ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 6 जो बग़ैर त़वाफ़े रुख़्सत के चला गया तो जब तक मीक़ात से बाहर न हुवा वापस आए और मीक़ात से बाहर होने के बाद याद आया तो वापस होना ज़रूरी नहीं बल्कि दम दे दे और अगर वापस हो तो उ़मरह का एह़राम बांध कर वापस हो और उ़मरह से फ़ारिग़ हो कर त़वाफ़े रुख़्सत बजा लाए और इस सूरत में दम वाजिब न होगा ।[5] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 7 त़वाफ़े रुख़्सत के तीन फेरे छोड़ गया तो हर फेरे के बदले सदक़ा दे ।[6] (عالمگیری)

(43) त़वाफ़े रुख़्सत के बाद ज़मज़म पर आ कर उसी त़रह़ पानी पिये, बदन पर डाले ।

(44) फिर दरवाज़ए काबा के सामने खड़ा हो कर आस्तानए पाक को बोसा दे और क़बूले ह़ज्जो ज़ियारत और बार बार ह़ाज़िरी की दुआ मांगे और वोही दुआए जामेअ़ पढ़े या येह पढ़े :

اَلسَّآئِلُ بِبَابِکَ یَسْأَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ وَمَعْرُوْفِکَ وَیَرْجُوْ رَحْمَتَکَ[7]

1 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب المناسك، الباب الخامس في کیفیة اداء الحج، ج۱، ص۲۳٤.
2 ..... المرجع السابق. 3 ..... "ردالمحتار"، کتاب الحج، مطلب في طواف الصدر، ج۳، ص۶۲۲.
4 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب المناسك، الباب الخامس في کیفیة اداء الحج، ج۱، ص۲۳۵.
5 ..... المرجع السابق.و"ردالمحتار"، کتاب الحج، مطلب في طواف الصدر، ج۳، ص۶۲۲.
6 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب المناسك، الباب الثامن في الجنایات، الفصل الخامس، ج۱، ص۲٤۶.

7 ...तेरे दरवाज़े पर साइल तेरे फ़ज़्लो एह़सान का सुवाल करता है और तेरी रह़मत का उम्मीदवार है । 12

www.dawateislami.net

(45) फिर मुल्तज़म पर आ कर ग़िलाफ़े काबा थाम कर उसी त़रह़ चिमटो, ज़िक्रो दुरूद व दुआ़ की कसरत करो। उस वक़्त येह दुआ़ पढ़ो :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدَانَا لِهٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِیَ لَوْ لَا اَنْ هَدَانَا اللّٰهُ اَللّٰهُمَّ فَكَمَا هَدَیْتَنَا لِهٰذَا فَتَقَبَّلْهُ مِنَّا وَلَا تَجْعَلْ هٰذَا آخِرَ الْعَهْدِ مِنْ بَیْتِكَ الْحَرَامِ وَارْزُقْنِی الْعَوْدَ اِلَیْهِ حَتّٰی تَرْضٰی بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَصَلَّی اللّٰهُ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِیْنَ ط۔ (1)

(46) फिर ह़जरे पाक को बोसा दो और जो आंसू रखते हो गिराओ और येह पढ़ो :

یَا یَمِیْنَ اللّٰهِ فِیْ اَرْضِهٖ اِنِّیْ اُشْهِدُكَ وَكَفٰی بِاللّٰهِ شَهِیْدًا اَنِّیْ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَاَنَا اُوَدِّعُكَ هٰذِهِ الشَّهَادَةَ لِتَشْهَدَ لِیْ بِهَا عِنْدَ اللّٰهِ تَعَالٰی فِیْ یَوْمِ الْقِیٰمَةِ یَوْمَ الْفَزَعِ الْاَكْبَرِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُشْهِدُكَ عَلٰی ذَالِكَ وَاُشْهِدُ مَلٰٓئِكَتَكَ الْكِرَامَ وَصَلَّی اللّٰهُ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِیْنَ ط۔ (2)

(47) फिर उलटे पाउं काबे की त़रफ़ मुंह कर के या सीधे चलने में फिर फिर कर काबे को ह़सरत से देखते, उस की जुदाई पर रोते या रोने का मुंह बनाते मस्जिदे करीम के दरवाज़े से बायां पाउं पहले बढ़ा कर निकलो और दुआ़ए मज़्कूर पढ़ो और इस के लिये बेहतर बाबुल ह़ज़ूरह है।

(48) ह़ैज़ो निफ़ास वाली औ़रत दरवाज़ए मस्जिद पर खड़ी हो कर ब निगाहे ह़सरत देखे और दुआ़ करती पलटे।

(49) फिर ब क़दरे क़ुदरत फ़ुक़राए मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पर तसद्दुक़ कर के मुतवज्जेह सरकारे आज़मे मदीनए त़य्यिबा हो وباللہ التوفیق

❶...ह़म्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये जिस ने हमें हिदायत की, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) हम को हिदायत न करता तो हम हिदायत न पाते, इलाही ! जिस त़रह़ हमें तू ने इस की हिदायत की है तो क़बूल फ़रमा और बैतुल ह़राम में येह हमारी आख़िरी ह़ाज़िरी न कर और इस की त़रफ़ फिर लौटना हमें नसीब करना ताकि तू अपनी रह़मत के सबब राज़ी हो जा।

ऐ सब मेह़रबानों से ज़ियादा मेह़रबान और ह़म्द है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये जो रब है तमाम जहान का और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) दुरूद भेजे हमारे सरदार मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) और इन की आलो अस्ह़ाब सब पर। 12

❷...ऐ ज़मीन में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के यमीन ! मैं तुझे गवाह करता हूं और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की गवाही काफ़ी है कि मैं इस की गवाही देता हूं कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई माबूद नहीं और मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के रसूल हैं।

और मैं तेरे पास इस शहादत को अमानत रखता हूं कि तू **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नज़्दीक क़ियामत के दिन जिस दिन बड़ी घबराहट होगी तू मेरे लिये इस की शहादत देगा, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तुझ को और तेरे मलाएका को इस पर गवाह करता हूं, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) दुरूद भेजे हमारे सरदार मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) और इन की आलो अस्ह़ाब सब पर। 12

www.dawateislami.net

क़िरान का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ﴾[1]

और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये ह़ज व उ़मरह को पूरा करो।

ह़दीस 1 अबू दावूद व नसाई व इब्ने माजह सुब्बी बिन मअ़बद तग़लबी से रावी, कहते हैं : मैं ने ह़ज्जो उ़मरह का एक साथ एह़राम बांधा, अमीरुल मुअमिनीन उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : तू ने अपने नबी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की पैरवी की।[2]

ह़दीस 2 सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम में अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी, कहते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को सुना, ह़ज व उ़मरह दोनों को लब्बैक में ज़िक्र फ़रमाते हैं।[3]

ह़दीस 3 इमाम अह़मद ने अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ज व उ़मरह को जम्अ़ फ़रमाया।[4]

मस्अला 1 क़िरान के येह माना हैं कि ह़ज व उ़मरह दोनों का एह़राम एक साथ बांधे या पहले उ़मरह का एह़राम बांधा था और अभी त़वाफ़ के चार फेरे न किये थे कि ह़ज को शामिल कर लिया या पहले ह़ज का एह़राम बांधा था इस के साथ उ़मरह भी शामिल कर लिया, ख़्वाह त़वाफ़े क़ुदूम से पहले उ़मरह शामिल किया या बाद में। त़वाफ़े क़ुदूम से पहले इसाअ़त है कि ख़िलाफ़े सुन्नत है मगर दम वाजिब नहीं और त़वाफ़े क़ुदूम के बाद शामिल किया तो वाजिब है कि उ़मरह तोड़ दे और दम दे और उ़मरह की क़ज़ा करे और उ़मरह न तोड़ा जब भी दम देना वाजिब है।[5] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 2 क़िरान के लिये शर्त़ येह है कि उ़मरह के त़वाफ़ का अक्सर ह़िस्सा वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पहले हो, लिहाज़ा जिस ने त़वाफ़ के चार फेरों से पहले वुक़ूफ़ किया उस का क़िरान बात़िल हो गया।[6] (فتح القدیر)

---

1 .....پ۲، البقرہ: ۱۹۶.
2 ..... "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، باب فی الاقران، الحديث: ۱۷۹۸، ج۲، ص۲۲۷.
3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب فی الافراد و القران، الحديث: ۱۲۳۲، ص٦٤٧.
4 ..... "المسند" للإمام أحمد بن حنبل، حديث أبي طلحة، الحديث: ١٦٣٤٦، ج٥، ص٥٠٨.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب القران، ج۳، ص٦٣٣. 6 ..... "فتح القدير"

www.dawateislami.net

मस्अला 3 सब से अफ़्ज़ल क़िरान है फिर तमत्तोअ़ फिर इफ़राद।[1] (ردالمحتار وغیرہ) क़िरान के एह़राम का त़रीक़ा एह़राम के बयान में मज़्कूर हुवा।

मस्अला 4 क़िरान का एह़राम मीक़ात से पहले भी हो सकता है और शव्वाल से पहले भी मगर इस के अफ़्आ़ल ह़ज के महीनों में किये जाएं, शव्वाल से पहले अफ़्आ़ल नहीं कर सकते।[2] (درمختار)

मस्अला 5 क़िरान में वाजिब है कि पहले सात फेरे त़वाफ़ करे और इन में पहले तीन फेरों में रमल सुन्नत है फिर सई करे, अब क़िरान का एक जुज़् यानी उ़मरह पूरा हो गया मगर अभी ह़ल्क़ नहीं कर सकता और किया भी तो एह़राम से बाहर न होगा और इस के जुर्माने में दो दम लाज़िम हैं। उ़मरह पूरा करने के बाद त़वाफ़े कुदूम करे और चाहे तो अभी सई भी कर ले, वरना त़वाफ़े इफ़ाज़ा के बाद सई करे। अगर अभी सई करे तो त़वाफ़े कुदूम के तीन पहले फेरों में भी रमल करे और दोनों त़वाफ़ों में इज़्त़िबाअ़ भी करे।[3] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 6 एक साथ दो त़वाफ़ किये फिर दो सई जब भी जाइज़ है मगर ख़िलाफ़े सुन्नत है और दम लाज़िम नहीं, ख़्वाह पहला त़वाफ़ उ़मरह की निय्यत से और दूसरा कुदूम की निय्यत से हो या दोनों में से किसी में तअ़य्युन न की या इस के सिवा किसी और त़रह़ की निय्यत की। बहर ह़ाल पहला उ़मरह का होगा और दूसरा त़वाफ़े कुदूम।[4] (درمختار، منسک)

मस्अला 7 पहले त़वाफ़ में अगर त़वाफ़े ह़ज की निय्यत की, जब भी उ़मरह ही का त़वाफ़ है।[5] (جوہرہ) उ़मरह से फ़ारिग़ हो कर ब दस्तूर मोह़रिम रहे और तमाम अफ़्आ़ल बजा लाए, दसवीं को ह़ल्क़ के बाद फिर त़वाफ़े इफ़ाज़ा के बाद जैसे ह़ज करने वाले के लिये चीज़ें ह़लाल होती हैं इस के लिये भी ह़लाल होंगी।

मस्अला 8 क़ारिन पर दसवीं की रमी के बाद कुरबानी वाजिब है और येह कुरबानी किसी जुर्माने में नहीं बल्कि इस का शुक्रिय्या है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे दो इ़बादतों की तौफ़ीक़ बख़्शी। क़ारिन के लिये अफ़्ज़ल येह है कि अपने साथ कुरबानी का जानवर ले जाए।[6] (عالمگیری، درمختار وغیرہ)

---

1 ..... "ردالمحتار"، کتاب الحج، باب القران، ج۳، ص۶۳۱، وغیرہ.
2 ..... "الدرالمختار"، کتاب الحج، باب القران، ج۳، ص۶۳۴.
3 ..... "الدرالمختار"، کتاب الحج، باب القران، ج۳، ص۶۳۵، وغیرہ.
4 ..... المرجع السابق. و"لباب المناسك" و"المسلك المتقسط"، (باب القران، فصل فی اداء القران)، ص۲۶۲.
5 ..... "الجوهرة النيرة"، کتاب الحج، باب القران، ، ص ۲۱۰.
6 ..... الفتاوی الهندية"، کتاب المناسك، الباب السابع فی القران والتمتع، ج۱، ص۲۳۸. و"الدرالمختار"، کتاب الحج، باب القران، ج۳، ص۶۳۶، وغیرهما.

www.dawateislami.net

मस्अला 9 इस क़ुरबानी के लिये येह ज़रूरी है कि ह़रम में हो, बैरूने ह़रम नहीं हो सकती और सुन्नत येह कि मिना में हो और इस का वक़्त दसवीं ज़ुल ह़िज्जा की फ़ज्र तुलूअ़ होने से बारहवीं के ग़ुरूबे आफ़्ताब तक है मगर येह ज़रूरी है कि रमी के बाद हो, रमी से पहले करेगा तो दम लाज़िम आएगा और अगर बारहवीं तक न की तो साक़ित़ न होगी बल्कि जब तक ज़िन्दा है क़ुरबानी इस के ज़िम्मे है।[1] (منسک)

मस्अला 10 अगर क़ुरबानी पर क़ादिर था और अभी क़ुरबानी न की थी कि इन्तिक़ाल हो गया तो इस की वसिय्यत कर जाना वाजिब है और अगर वसिय्यत न की मगर वारिसों ने ख़ुद कर दी जब भी सह़ीह़ है।[2] (منسک)

मस्अला 11 क़ारिन को अगर क़ुरबानी मुयस्सर न आए कि इस के पास ज़रूरत से ज़ियादा माल नहीं, न इतना अस्बाब कि उसे बेच कर जानवर ख़रीदे तो दस रोज़े रखे। इन में तीन तो वहीं यानी यकुम शव्वाल से ज़ुल ह़िज्जा की नवीं तक एह़राम बांधने के बाद रखे, ख़्वाह सात, आठ, नव को रखे या इस के पहले और बेहतर येह है कि नवीं से पहले ख़त्म कर दे और येह भी इख़्तियार है कि मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर रखे, तीनों का पै दर पै रखना ज़रूरी नहीं और सात रोज़े ह़ज का ज़माना गुज़रने के बाद यानी तेरहवीं के बाद रखे, तेरहवीं को या इस के पहले नहीं हो सकते। इन सात रोज़ों में इख़्तियार है कि वहीं रखे या मकान वापस आ कर और बेहतर मकान पर वापस हो कर रखना है और इन दसों रोज़ों में रात से निय्यत ज़रूरी है।[3]

(عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 12 अगर पहले के तीन रोज़े नवीं तक नहीं रखे तो अब रोज़े काफ़ी नहीं बल्कि दम वाजिब होगा, दम दे कर एह़राम से बाहर हो जाए और अगर दम देने पर क़ादिर नहीं तो सर मुंडा कर या बाल कतरवा कर एह़राम से जुदा हो जाए और दो दम वाजिब हैं।[4]

(درمختار)

1 ..... "لباب المناسك" و"المسلك المتقسط"، (باب القران، فصل في هدى القارن و المتمتع)، ص٢٦٣.
2 ..... "لباب المناسك" و"المسلك المتقسط"، (باب القران، فصل في هدى القارن و المتمتع)، ص٢٦٣.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع في قران و المتمتع، ج١، ص٢٣٩.
و"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص٦٣٦.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص٦٣٨.

www.dawateislami.net

मस्अला 13 क़ादिर न होने की वज्ह से रोज़े रख लिये फिर ह़ल्क़ से पहले दसवीं को जानवर मिल गया, तो अब वोह रोज़े काफ़ी नहीं लिहाज़ा क़ुरबानी करे और ह़ल्क़ के बाद जानवर पर क़ुदरत हुई तो वोह रोज़े काफ़ी हैं, ख़्वाह क़ुरबानी के दिनों में क़ुदरत पाई गई या बाद में। यूंही अगर क़ुरबानी के दिनों में सर न मुंडाया तो अगर्चे ह़ल्क़ से पहले जानवर पर क़ादिर हो वोह रोज़े काफ़ी हैं।[1] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 14 क़ारिन ने त़वाफ़े उ़मरह के तीन फेरे करने के बाद वुक़ूफ़े अ़रफ़ा किया तो वोह त़वाफ़ जाता रहा और चार फेरे के बाद वुक़ूफ़ किया तो बात़िल न हुवा अगर्चे त़वाफ़े क़ुदूम या नफ़्ल की निय्यत से किये, लिहाज़ा यौमुन्नह़र में त़वाफ़े ज़ियारत से पहले इस की तक्मील करे और पहली सूरत में चूंकि उस ने उ़मरह तोड़ डाला, लिहाज़ा एक दम वाजिब हुवा और वोह क़ुरबानी कि शुक्र के लिये वाजिब थी साक़ित़ हो गई और अब क़ारिन न रहा और अय्यामे तश्रीक़ के बाद इस उ़मरह की क़ज़ा दे।[2] (درمختار)

तमत्तोअ़ का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ اِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ اِذَا رَجَعْتُمْ ؕ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ لَّمْ يَكُنْ اَهْلُهٗ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴾[3]

जिस ने उ़मरह से ह़ज की त़रफ़ तमत्तोअ़ किया, उस पर क़ुरबानी है जैसी मुयस्सर आए फिर जिसे क़ुरबानी की क़ुदरत न हो तो तीन रोज़े ह़ज के दिनों में रखे और सात[7] वापसी के बाद, येह दस पूरे हैं। येह उस के लिये है जो मक्के का रहने वाला न हो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से डरो और जान लो कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का अ़ज़ाब सख़्त है।

तमत्तोअ़ उसे कहते हैं कि ह़ज के महीने में उ़मरह करे फिर उसी साल ह़ज का एह़राम बांधे या पूरा उ़मरह न किया, सिर्फ़ चार फेरे किये फिर ह़ज का एह़राम बांधा।

मस्अला 1 तमत्तोअ़ के लिये येह शर्त़ नहीं कि मीक़ात से एह़राम बांधे इस से पहले भी हो सकता है बल्कि अगर मीक़ात के बाद एह़राम बांधा जब भी तमत्तोअ़ है, अगर्चे बिला एह़राम मीक़ात से गुज़रना गुनाह और दम लाज़िम या फिर मीक़ात को वापस जाए। यूंही तमत्तोअ़ के लिये येह शर्त़ नहीं कि उ़मरह का एह़राम ह़ज के महीने में बांधा जाए बल्कि शव्वाल से पेश्तर भी एह़राम बांध सकते हैं, अलबत्ता येह ज़रूरी है कि उ़मरह के तमाम

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص٦٣٨.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب القران، ج٣، ص٦٣٩. 3 .....پ٢، البقرة: ١٩٦.

www.dawateislami.net

अफ़्आ़ल या अक्सर त़वाफ़ ह़ज के महीने में हो, मसलन तीन फेरे त़वाफ़ के रमज़ान में किये फिर शव्वाल में बाक़ी चार फेरे कर लिये फिर उसी साल ह़ज कर लिया तो येह भी तमत्तोअ़ है और अगर रमज़ान में चार फेरे कर लिये थे और शव्वाल में तीन बाक़ी तो येह तमत्तोअ़ नहीं और येह भी शर्त़ नहीं कि जिस साल एह़राम बांधा उसी साल तमत्तोअ़ कर ले मसलन इस रमज़ान में एह़राम बांधा और एह़राम पर क़ाइम रहा, दूसरे साल उ़मरह फिर ह़ज किया तो तमत्तोअ़ हो गया।[1] (عالمگیری، ردالمحتار)

तमत्तोअ़ के शराइत़

तमत्तोअ़ की दस शर्तें हैं :

① ह़ज के महीने में पूरा त़वाफ़ करना या अक्सर ह़िस्सा यानी चार फेरे।

② उ़मरह का एह़राम ह़ज के एह़राम से मुक़द्दम होना।

③ ह़ज के एह़राम से पहले उ़मरह का पूरा त़वाफ़ या अक्सर ह़िस्सा कर लिया हो।

④ उ़मरह फ़ासिद न किया हो।

⑤ ह़ज फ़ासिद न किया हो।

⑥ इल्मामे सह़ीह़ न किया हो। इल्मामे सह़ीह़ के येह माना हैं कि उ़मरह के बाद एह़राम खोल कर अपने वत़न को वापस जाए और वत़न से मुराद वोह जगह है जहां वोह रहता है पैदाइश का मक़ाम अगर्चे दूसरी जगह हो, लिहाज़ा अगर उ़मरह करने के बाद वत़न गया फिर वापस आ कर ह़ज किया तो तमत्तोअ़ न हुवा और अगर उ़मरह करने से पेश्तर गया या उ़मरह कर के बग़ैर ह़ल्क़ किये यानी एह़राम ही में वत़न गया फिर वापस आ कर उसी साल ह़ज किया तो तमत्तोअ़ है। यूंही अगर उ़मरह कर के एह़राम खोल दिया फिर ह़ज का एह़राम बांध कर वत़न गया तो येह भी इल्मामे सह़ीह़ नहीं, लिहाज़ा अगर वापस आ कर ह़ज करेगा तो तमत्तोअ़ होगा।

⑦ ह़ज्जो उ़मरह दोनों एक ही साल में हों।

⑧ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में हमेशा के लिये ठहरने का इरादा न हो, लिहाज़ा अगर उ़मरह के बाद पक्का इरादा कर लिया कि यहीं रहेगा तो तमत्तोअ़ नहीं और दो एक महीने का हो तो है।

⑨ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ह़ज का महीना आ जाए तो बे एह़राम के न हो, न ऐसा हो कि एह़राम है मगर चार फेरे त़वाफ़ के इस महीने से पहले कर चुका है। हां, अगर मीक़ात से बाहर वापस जाए फिर उ़मरह का एह़राम बांध कर आए तो तमत्तोअ़ हो सकता है।

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص٦٤٠.
و"الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع فى القران والتمتع، ج١، ص٢٤٠.

www.dawateislami.net

⑩ मीक़ात से बाहर का रहने वाला हो। मक्के का रहने वाला तमत्तोअ़ नहीं कर सकता।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 2 तमत्तोअ़ की दो सूरतें हैं : एक येह कि अपने साथ क़ुरबानी का जानवर लाया, दूसरी येह कि न लाए। जो जानवर न लाया वोह मीक़ात से उ़मरह का एह़राम बांधे, मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में आ कर त़वाफ़ व सई करे और सर मुंडाए अब उ़मरह से फ़ारिग़ हो गया और त़वाफ़ शुरूअ़ करते ही यानी संगे अस्वद को बोसा देते वक़्त लब्बैक ख़त्म कर दे, अब मक्के में बग़ैर एह़राम रहे। आठवीं ज़ुल ह़िज्जा को मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ से ह़ज का एह़राम बांधे और ह़ज के तमाम अफ़्आ़ल बजा लाए मगर इस के लिये त़वाफ़े क़ुदूम नहीं और त़वाफ़े ज़ियारत में या ह़ज का एह़राम बांधने के बाद किसी त़वाफ़े नफ़्ल में रमल करे और इस के बाद सई करे और अगर ह़ज का एह़राम बांधने के बाद त़वाफ़े क़ुदूम कर लिया है (अगर्चे इस के लिये येह त़वाफ़ मस्नून न था) और इस के बाद सई कर ली है तो अब त़वाफ़े ज़ियारत में रमल नहीं, ख़्वाह त़वाफ़े क़ुदूम में रमल किया हो या नहीं और त़वाफ़े ज़ियारत के बाद अब सई भी नहीं, उ़मरह से फ़ारिग़ हो कर ह़ल्क़ भी ज़रूरी नहीं। उसे येह भी इख़्तियार है कि सर न मुंडाए ब दस्तूर मोह़रिम रहे।

यूंही मक्कए मुअ़ज़्ज़मा ही में रहना उसे ज़रूरी नहीं, चाहे वहां रहे या वत़न के सिवा कहीं और मगर जहां रहे वहां वाले जहां से एह़राम बांधते हैं येह भी वहीं से एह़राम बांधे, अगर मक्कए मुकर्रमा में है तो यहां वालों की त़रह़ एह़राम बांधे और अगर ह़रम से बाहर और मीक़ात के अन्दर है तो ह़िल में एह़राम बांधे और मीक़ात से भी बाहर हो गया तो मीक़ात से बांधे। येह उस सूरत में है जब कि किसी और ग़रज़ से ह़रम या मीक़ात से बाहर जाना हो और अगर एह़राम बांधने के लिये ह़रम से बाहर गया तो उस पर दम वाजिब है मगर जब कि वुक़ूफ़ से पहले मक्के में आ गया तो साक़ित़ हो गया और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में रहा तो ह़रम में एह़राम बांधे और बेहतर येह है कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में हो और इस से बेहतर येह कि मस्जिदे ह़रम में हो और सब से बेहतर येह कि ह़त़ीम शरीफ़ में हो। यूंही आठवीं को एह़राम बांधना ज़रूर नहीं, नवीं को भी हो सकता है और आठवीं से पहले भी बल्कि येह अफ़्ज़ल है। तमत्तोअ़ करने वाले पर वाजिब है कि दसवीं तारीख़ को शुक्राने में क़ुरबानी करे, इस के बाद सर मुंडाए। अगर क़ुरबानी की इस्तित़ाअ़त न हो तो उसी त़रह़ रोज़े रखे जो क़िरान वाले के लिये हैं।[2] (جوہرہ، عالمگیری، درمختار)

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص٦٤٠، ٦٤٣.

2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب التمتع، ص٢١٢ـ ٢١٣.
و"الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع في القران و التمتع، ج١، ص٢٣٨ـ٢٣٩.

www.dawateislami.net

मस्अला 3 अगर अपने साथ जानवर ले जाए तो एह़राम बांध कर ले चले और खींच कर ले जाने से हांकना अफ़्ज़ल है। हां, अगर पीछे से हांकने से नहीं चलता तो आगे से खींचे और उस के गले में हार डाल दे कि लोग समझें येह ह़रम में क़ुरबानी को जाता है, और हार डालना झूल डालने से बेहतर है और येह भी हो सकता है कि उस जानवर के कोहान में दह्नी या बाईं जानिब ख़फ़ीफ़ सा शिगाफ़ कर दे कि गोश्त तक न पहुंचे, अब मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में पहुंच कर उ़मरह करे और उ़मरह से फ़ारिग़ हो कर भी मोह़रिम रहे जब तक क़ुरबानी न कर ले। उसे सर मुंडाना जाइज़ नहीं जब तक क़ुरबानी न कर ले वरना दम लाज़िम आएगा फिर वोह तमाम अफ़्आ़ल करे जो उस के लिये बताए गए कि जानवर न लाया था और दसवीं तारीख़ को रमी कर के सर मुंडाए अब दोनों एह़राम से एक साथ फ़ारिग़ हो गया।[1] (درمختار)

मस्अला 4 जो जानवर लाया और जो न लाया दोनों में फ़र्क़ येह है कि अगर जानवर न लाया और उ़मरह के बाद एह़राम खोल डाला अब ह़ज का एह़राम बांधा और कोई जिनायत वाक़ेअ़ हुई तो जुर्माना मिस्ल मुफ़रिद के है और वोह एह़राम बाक़ी था तो जुर्माना क़ारिन की मिस्ल है और जानवर लाया है तो बहर ह़ाल क़ारिन की मिस्ल है।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 5 मीक़ात के अन्दर वालों के लिये क़िरान व तमत्तोअ़ नहीं, अगर करें तो दम दें।[3] (درمختار)

मस्अला 6 जो जानवर लाया है उसे रोज़ा रखना काफ़ी न होगा अगर्चे नादार हो।[4] (درمختار)

मस्अला 7 जानवर नहीं ले गया और उ़मरह कर के घर चला आया तो येह इल्मामे सह़ीह़ है इस का तमत्तोअ़ जाता रहा, अब ह़ज करेगा तो मुफ़रिद है और जानवर ले गया है और उ़मरह कर के घर वापस आया फिर मोह़रिम रहा और ह़ज को गया तो येह इल्मामे सह़ीह़ नहीं, लिहाज़ा इस का तमत्तोअ़ बाक़ी है। यूंही अगर घर न आया उ़मरह कर के कहीं और चला गया तो तमत्तोअ़ न गया।[5] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 8 तमत्तोअ़ करने वाले ने ह़ज या उ़मरह फ़ासिद कर दिया तो इस की क़ज़ा दे और जुर्माने में दम और तमत्तोअ़ की क़ुरबानी उस के ज़िम्मे नहीं कि तमत्तोअ़ रहा ही नहीं।[6] (درمختار)

मस्अला 9 तमत्तोअ़ के लिये येह ज़रूरी नहीं कि ह़ज व उ़मरह दोनों एक ही की त़रफ़ से

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص٦٤٥.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص٦٤٥.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص٦٤٦.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص٦٤٨.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص٦٤٨، وغيره.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب التمتع، ج٣، ص٦٥٠.

www.dawateislami.net

हों बल्कि येह हो सकता है कि एक अपनी त़रफ़ से हो और दूसरा किसी और की जानिब से या एक शख़्स ने उसे ह़ज का हुक्म दिया और दूसरे ने उ़मरह का और दोनों ने तमत्तोअ़ की इजाज़त दे दी तो कर सकता है मगर क़ुरबानी ख़ुद उस के ज़िम्मे है और अगर नादार है तो रोज़े रखे ।[1] (منسک)

मस्अला 10 ह़ज के महीने में उ़मरह किया मगर उसे फ़ासिद कर दिया फिर घर वापस गया फिर आ कर उ़मरह की क़ज़ा की और उसी साल ह़ज किया तो येह तमत्तोअ़ हो गया और अगर मक्के ही में रह गया या मक्के से चला गया मगर मीक़ात के अन्दर रहा या मीक़ात से भी बाहर हो गया मगर घर न गया और आ कर उ़मरह की क़ज़ा की और उसी साल ह़ज भी किया तो इन सब सूरतों में तमत्तोअ़ न हुवा ।[2] (جوہرہ)

जुर्म और उन के कफ़्फ़ारे का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًۢا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝﴾[3]

ऐ ईमान वालो ! एह़राम की ह़ालत में शिकार न करो और जो तुम में से क़स्दन जानवर को क़त्ल करेगा तो बदला दे मिस्ल उस जानवर के जो क़त्ल हुवा, तुम में के दो आ़दिल जो हुक्म करें वोह बदला क़ुरबानी होगी जो काबे को जाए या कफ़्फ़ारा मिस्कीन का खाना या इस के बराबर रोज़े ताकि अपने किये का वबाल चखे । **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने उसे मुआ़फ़ फ़रमा दिया जो पेश्तर हो चुका और जो फिर करेगा तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उस से बदला लेगा और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ग़ालिब बदला लेने वाला है । दरिया का शिकार और उस का खाना तुम्हारे लिये ह़लाल किया गया, तुम्हारे और मुसाफ़िरों के बरत्ने के लिये और ख़ुश्की का शिकार तुम पर ह़राम है, जब तक तुम मोह़रिम हो और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से डरो जिस की त़रफ़ तुम उठाए जाओगे ।

और फ़रमाता है :

﴿فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ بِهٖۤ اَذًى مِّنْ رَّاْسِهٖ فَفِدْيَةٌ مِّنْ صِيَامٍ اَوْ صَدَقَةٍ اَوْ نُسُكٍ ۚ﴾[4]

1 ..... "المسلك المتقسط"، (باب التمتع، فصل ولا يشترط الصحة التمتع إحرام العمرة من الميقات)، ص٢٨٦.
2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب التمتع، ص٢١٦.
3 ..... پ٧، المائدہ: ٩٥-٩٦.
4 ..... پ٢، البقرہ: ١٩٦.

www.dawateislami.net

जो तुम में से बीमार हो या उस के सर में तक्लीफ़ हो (और सर मुंडा ले) तो फ़िदया दे रोज़े या सदक़ा या क़ुरबानी।

सहीहैन वग़ैरहुमा में कअ़ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी, कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم उन के पास तशरीफ़ लाए और येह मोह़रिम थे और हांडी के नीचे आग जला रहे थे और जूएं उन के चेहरे पर गिर रही थीं, इरशाद फ़रमाया : क्या येह कीड़े तुम्हें तक्लीफ़ दे रहे हैं ? अ़र्ज़ की : हां। फ़रमाया : "सर मुंडा डालो और तीन साअ़ खाना छे मिस्कीनों को दे दो या तीन रोज़े रखो या क़ुरबानी करो।"[1]

तम्बीह : मोह़रिम अगर बिल क़स्द बिला उ़ज़्र जुर्म करे तो कफ़्फ़ारा भी वाजिब है और गुनहगार भी हुवा, लिहाज़ा इस सूरत में तौबा वाजिब कि मह्ज़ कफ़्फ़ारे से पाक न होगा जब तक तौबा न करे और अगर ना दानिस्ता या उ़ज़्र से है तो कफ़्फ़ारा काफ़ी है। जुर्म में कफ़्फ़ारा बहर ह़ाल लाज़िम है, याद से हो या भूलचूक से, उस का जुर्म होना जानता हो या मालूम न हो, ख़ुशी से हो या मजबूरन, सोते में या बेदारी में, नशे या बेहोशी में या होश में, उस ने अपने आप किया हो या दूसरे ने उस के हुक्म से किया।

तम्बीह : इस बयान में जहां दम कहेंगे इस से मुराद एक बकरी या भेड़ होगी और बदना ऊंट या गाय येह सब जानवर उन्हीं शराइत़ के हों जो क़ुरबानी में हैं और सदक़े से मुराद अंग्रेज़ी रुपये से एक सो पछत्तर रुपिये आठ आना भर गेहूं कि सौ[100] रुपये के सेर से पौने दो सेर अठन्नी भर ऊपर हुए या इस के दूने जव या खजूर या इन की क़ीमत।

मस्अला 1 जहां दम का हुक्म है वोह जुर्म अगर बीमारी या सख़्त गर्मी या शदीद सर्दी या ज़ख़्म या फोड़े या जूओं की सख़्त ईज़ा के बाइ़स होगा तो इसे जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी कहते हैं। इस में इख़्तियार होगा कि दम के बदले छे मिस्कीनों को एक एक सदक़ा दे दे या दोनों वक़्त पेट भर खिलाए या तीन रोज़े रख ले, अगर छे सदक़े एक मिस्कीन को दे दिये या तीन या सात मसाकीन पर तक़्सीम कर दिये तो कफ़्फ़ारा अदा न होगा बल्कि शर्त़ येह है कि छे मिस्कीनों को दे और अफ़्ज़ल येह है कि ह़रम के मसाकीन हों और अगर उस में सदक़े का हुक्म है और ब मजबूरी किया तो इख़्तियार होगा कि सदक़े के बदले एक रोज़ा रख ले। कफ़्फ़ारा इस लिये है कि भूलचूक से या सोते में या मजबूरी से जुर्म हों तो कफ़्फ़ारे से पाक हो जाएं, न इस लिये कि जान बूझ कर बिला उ़ज़्र जुर्म करो और कहो कि कफ़्फ़ारा दे देंगे, देना तो जब भी आएगा मगर क़स्दन हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त सख़्त तर है।

मस्अला 2 जहां एक दम या सदक़ा है, क़ारिन पर दो हैं।[2] (عامۂ کتب)

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب جواز حلق الرأس ...إلخ، الحديث: ٨٣-(١٢٠١)، ص٦١٨.

2 ..... "الهداية"، كتاب الحج، باب الجنايات، فصل في جزاء الصيد، ج١، ص١٧١.

www.dawateislami.net

मस्अला 3 कफ़्फ़ारे की कुरबानी या क़ारिन व मुतमत्तेअ़ के शुक्राने की ग़ैरे ह़रम में नहीं हो सकती। ग़ैरे ह़रम में की तो अदा न हुई : हां, जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी में अगर उस का गोश्त छे मिस्कीनों पर तसद्दुक़ किया और हर मिस्कीन को एक सदक़े की क़ीमत का पहुंचा तो अदा हो गया।[1] (عالمگیری)

मस्अला 4 शुक्राने की कुरबानी से आप खाए, ग़नी को खिलाए, मसाकीन को दे और कफ़्फ़ारे की सिर्फ़ मोह़ताजों का ह़क़ है।

मस्अला 5 अगर कफ़्फ़ारे के रोज़े रखे तो इस में शर्त़ येह है कि रात से यानी सुब्हे सादिक़ से पहले निय्यत कर ले और येह भी निय्यत कि फुलां कफ़्फ़ारे का रोज़ा है, मुत्लक़ रोज़े की निय्यत या नफ़्ल या कोई और निय्यत की तो कफ़्फ़ारा अदा न हुवा और पै दर पै होना या ह़रम में या एह़राम में रखना ज़रूरी नहीं।[2] (منسک) अब अह़काम सुनिये :

(1) ख़ुश्बू और तेल लगाना

मस्अला 6 ख़ुश्बू अगर बहुत सी लगाई जिसे देख कर लोग "बहुत" बताएं अगर्चे उ़ज़्व के थोड़े ह़िस्से पर या किसी बड़े उ़ज़्व जैसे सर, मुंह, रान, पिंडली को पूरा सान दिया अगर्चे ख़ुश्बू थोड़ी है तो इन दोनों सूरतों में दम है और अगर थोड़ी सी ख़ुश्बू उ़ज़्व के थोड़े से ह़िस्से में लगाई तो सदक़ा है।[3] (عالمگیری)

मस्अला 7 कपड़े या बिछोने पर ख़ुश्बू मली तो ख़ुद ख़ुश्बू की मिक़्दार देखी जाएगी, ज़ियादा है तो दम और कम है तो सदक़ा।[4] (عالمگیری)

मस्अला 8 ख़ुश्बू सूंघी फल हो या फूल जैसे लींबू, नारंगी, गुलाब, चमेली, बेले, जूही वग़ैरा के फूल तो कुछ कफ़्फ़ारा नहीं अगर्चे मोह़रिम को ख़ुश्बू सूंघना मक्रूह है।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 9 एह़राम से पहले बदन पर ख़ुश्बू लगाई थी, एह़राम के बाद फैल कर और आज़ा को लगी तो कफ़्फ़ारा नहीं।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 10 मोह़रिम ने दूसरे के बदन पर ख़ुश्बू लगाई मगर इस त़रह़ कि उस के हाथ

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج١، ص٢٤٤.
2 ..... "المسلك المتقسط"،(باب في جزاء الجنايات و كفاراتها، فصل في احكام الصيام في باب الاحرام)، ص٤٠١-٤٠٣.
3 ..... "الفتاوى الهندية" كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤٠-٢٤١.
4 ..... "الفتاوى الهندية" كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤١.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٣.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٣.

www.dawateislami.net

वग़ैरा किसी उ़ज़्व में ख़ुश्बू न लगी या उस को सिला हुवा कपड़ा पहनाया तो कुछ कफ़्फ़ारा नहीं मगर जब कि मोह़रिम को ख़ुश्बू लगाई या सिला हुवा कपड़ा पहनाया तो गुनहगार हुवा और जिस को लगाई या पहनाया उस पर कफ़्फ़ारा वाजिब है।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 11 थोड़ी सी ख़ुश्बू बदन के मुतफ़र्रिक़ हिस्सों में लगाई अगर जम्अ़ करने से पूरे बड़े उ़ज़्व की मिक़्दार को पहुंच जाए तो दम है वरना सदक़ा और ज़ियादा ख़ुश्बू मुतफ़र्रिक़ जगह लगाई तो बहर ह़ाल दम है।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 12 एक जल्से में कितने ही आज़ा पर ख़ुश्बू लगाए बल्कि सारे बदन पर भी लगाए तो एक ही जुर्म है और एक कफ़्फ़ारा वाजिब और कई जल्सों में लगाई तो हर बार के लिये अलग अलग कफ़्फ़ारा है, ख़्वाह पहली बार का कफ़्फ़ारा दे कर दूसरी बार लगाई या अभी किसी का कफ़्फ़ारा न दिया हो।[3] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 13 किसी शै में ख़ुश्बू लगी थी उसे छुवा, अगर उस से ख़ुश्बू छूट कर बड़े उ़ज़्वे कामिल की क़दर बदन को लगी तो दम दे और कम हो तो सदक़ा और कुछ नहीं तो कुछ नहीं मसलन संगे अस्वद शरीफ़ पर ख़ुश्बू मली जाती है अगर ब ह़ालते एह़राम बोसा लेते में बहुत सी लगी तो दम दे और थोड़ी सी तो सदक़ा।[4] (عالمگیری)

मस्अला 14 ख़ुश्बूदार सुरमा एक या दो बार लगाया तो सदक़ा दे, इस से ज़ियादा में दम और जिस सुरमे में ख़ुश्बू न हो उस के इस्तिमाल में ह़रज नहीं, जब कि ब ज़रूरत हो और बिला ज़रूरत मक्रूह।[5] (مسک،عالمگیری)

मस्अला 15 अगर ख़ालिस ख़ुश्बू जैसे मुश्क, ज़ाफ़रान, लोंग, इलायची, दारचीनी इतनी खाई कि मुंह के अक्सर हिस्से में लग गई तो दम है वरना सदक़ा।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 16 खाने में पकते वक़्त ख़ुश्बू पड़ी या फ़ना हो गई तो कुछ नहीं, वरना अगर ख़ुश्बू के अज्ज़ा ज़ियादा हों तो वोह ख़ालिस ख़ुश्बू के ह़ुक्म में है और खाना ज़ियादा हो तो कफ़्फ़ारा कुछ नहीं मगर ख़ुश्बू आती हो तो मक्रूह है।[7] (عالمگیری، درمختار،ردالمحتار)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٣، وغيره.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٤.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٤.
4 ..... "الفتاوى الهندية" كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤١.
5 ..... المرجع السابق . و"لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل فى الكحل المطيب)، ص٣١٤.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٤.
7 ..... "الفتاوى الهندية" كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤١.
و"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 17 पीने की चीज़ में ख़ुश्बू मिलाई, अगर ख़ुश्बू ग़ालिब है या तीन बार या ज़ियादा पिया तो दम है, वरना सदक़ा।[1] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 18 तम्बाकू खाने वाले इस का ख़याल रखें कि एह़राम में ख़ुश्बूदार तम्बाकू न खाएं कि पत्तियों में तो वैसे ही कच्ची ख़ुश्बू मिलाई जाती है और क़िवाम में भी अक्सर पकाने के बाद मुश्क वग़ैरा मिलाते हैं।

मस्अला 19 ख़मीरा तम्बाकू न पीना बेहतर है कि इस में ख़ुश्बू होती है मगर पिया तो कफ़्फ़ारा नहीं।

मस्अला 20 अगर ऐसी जगह गया जहां ख़ुश्बू सुलग रही है और उस के कपड़े भी बस गए तो कुछ नहीं और सुलगा कर उस ने ख़ुद बसाए तो क़लील में सदक़ा और कसीर में दम और न बसे तो कुछ नहीं और अगर एह़राम से पहले बसाया था और एह़राम में पहना तो मक्रूह है मगर कफ़्फ़ारा नहीं।[2] (عالمگیری، منسک)

मस्अला 21 सर पर मेहंदी का पतला ख़िज़ाब किया कि बाल न छुपे तो एक दम और गाढ़ी थोपी कि बाल छुप गए और चार पहर गुज़रे तो मर्द पर दो दम और चार पहर से कम में एक दम और एक सदक़ा और औ़रत पर बहर ह़ाल एक दम, चौथाई सर छुपने का भी येही हुक्म है और चौथाई से कम में सदक़ा है और सर पर वस्मा पतला पतला लगाया तो कुछ नहीं और गाढ़ा हो तो मर्द को कफ़्फ़ारा देना होगा।[3] (جوہرہ، عالمگیری)

मस्अला 22 दाढ़ी में मेहंदी लगाई जब भी दम वाजिब है, पूरी हथेली या तल्वे में लगाई तो दम दे, मर्द हो या औ़रत और चारों हाथ पाउं में एक ही जल्से में लगाई जब भी एक ही दम है, वरना हर जल्से पर एक दम और हाथ पाउं के किसी हिस्से में लगाई तो सदक़ा।[4]

(جوہرہ، ردالمحتار وغیرہما)

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٤، وغيره.

2 ..... "الفتاوى الهندية" كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤١.
و "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في تطييب الثوب...إلخ)، ص٣٢١.

3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات، ص٢١٧.
و"الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤١.

4 ....."ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٤، وغيرهما.

www.dawateislami.net

मस्अला 23 ख़त्मी से सर या दाढ़ी धोई तो दम है।[1] (عالمگیری)

मस्अला 24 इत्र फ़रोश की दुकान पर ख़ुश्बू सूंघने के लिये बैठा तो कराहत है वरना ह़रज नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 25 चादर या तहबन्द के कनारे में मुश्क, अ़म्बर, ज़ाफ़रान बांधा अगर ज़ियादा है और चार पहर गुज़रे तो दम है और कम है तो सदक़ा।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 26 ख़ुश्बू इस्तिमाल करने में ब क़स्द या बिला क़स्द होना, याद कर के या भूले से होना, मजबूरन या ख़ुशी से होना, मर्द व औ़रत दोनों के लिये सब का यक्सां हुक्म है।[4] (عالمگیری)

मस्अला 27 ख़ुश्बू लगाना जब जुर्म क़रार पाया तो बदन या कपड़े से दूर करना वाजिब है और कफ़्फ़ारा देने के बाद ज़ाइल न किया तो फिर दम वग़ैरा वाजिब होगा।[5] (عالمگیری)

मस्अला 28 ख़ुश्बू लगाने से बहर ह़ाल कफ़्फ़ारा वाजिब है, अगर्चे फ़ौरन ज़ाइल कर दी हो और अगर कोई ग़ैर मोह़रिम मिले तो उस से धुलवाए और अगर सिर्फ़ पानी बहाने से धुल जाए तो यूंही करे।[6] (منسک)

मस्अला 29 रोग़ने चमेली वग़ैरा ख़ुश्बूदार तेल लगाने का वोही हुक्म है जो ख़ुश्बू इस्तिमाल करने में था।[7] (عالمگیری)

मस्अला 30 तिल और ज़ैतून का तेल ख़ुश्बू के हुक्म में है अगर्चे इन में ख़ुश्बू न हो, अलबत्ता इन के खाने और नाक में चढ़ाने और ज़ख़्म पर लगाने और कान में टपकाने से सदक़ा वाजिब नहीं।[8] (ردالمحتار)

मस्अला 31 मुश्क, अ़म्बर, ज़ाफ़रान वग़ैरा जो ख़ुद ही ख़ुश्बू हैं, इन के इस्तिमाल से मुत्लक़न कफ़्फ़ारा लाज़िम है अगर्चे दवाअन इस्तिमाल किया हो, येह उस सूरत में है जब कि इन को ख़ालिस इस्तिमाल करें और अगर दूसरी चीज़ जो ख़ुश्बूदार न हो, उस के साथ मिला

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤١.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤٢.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٤.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤١.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤١-٢٤٢.
6 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (كتاب الحج، باب الجنايات، فصل لا يشترط بقاء الطيب)، ص٣١٩.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤٠.
8 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٥.

www.dawateislami.net

कर इस्तिमाल किया तो ग़ालिब का एतिबार है और दूसरी चीज़ में मिला कर पका लिया हो तो कुछ नहीं ।[1] (درمختار)

मस्अला 32 ज़ख़्म का इलाज ऐसी दवा से किया जिस में ख़ुश्बू है फिर दूसरा ज़ख़्म हुवा, उस का इलाज पहले के साथ किया तो जब तक पहला अच्छा न हो इस दूसरे की वज्ह से कफ़्फ़ारा नहीं और पहले के अच्छे होने के बाद भी दूसरे में वोह ख़ुश्बूदार दवा लगाई तो दो कफ़्फ़ारे वाजिब हैं ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 33 कुसुम या ज़ाफ़रान का रंगा हुवा कपड़ा चार पहर पहना तो दम दे और इस से कम तो सदक़ा, अगर्चे फ़ौरन उतार डाला ।[3] (منسک،عالمگیری)

(2) सिले कपड़े पहनना

मस्अला 1 मोहरिम ने सिला कपड़ा चार पहर[4] कामिल पहना तो दम वाजिब है और इस से कम तो सदक़ा अगर्चे थोड़ी देर पहना और लगातार कई दिन तक पहने रहा जब भी एक ही दम वाजिब है, जब कि येह लगातार पहनना एक त़रह़ का हो यानी उ़ज़्र से या बिला उ़ज़्र और अगर मसलन एक दिन बिला उ़ज़्र था, दूसरे दिन ब उ़ज़्र या बिल अ़क्स तो दो कफ़्फ़ारे वाजिब होंगे ।[5] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 2 अगर दिन में पहना रात में गर्मी के सबब उतार डाला या रात में सर्दी की वज्ह से पहना दिन में उतार डाला, बाज़ आने की निय्यत से न उतारा तो एक कफ़्फ़ारा है और तौबा की निय्यत से उतारा तो हर बार में नया कफ़्फ़ारा वाजिब होगा । यूंही किसी एक दिन कुरता पहना था और उतार डाला फिर पाजामा पहना उसे भी उतार कर टोपी पहनी तो येह सब एक ही पहनना है और अगर एक दिन एक पहना दूसरे दिन दूसरा तो दो कफ़्फ़ारे वाजिब हैं ।[6] (عالمگیری،درمختار)

---

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٦.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤١.
3 ..... "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في تطيب الثوب اذا كان الطيب في ثوبه شبراً في شبر)، ص٣٢٠.

4 ...चार पहर से मुराद एक दिन या एक रात की मिक़्दार है, मसलन तुलूए़ आफ़्ताब से ग़ुरूबे आफ़्ताब या ग़ुरूबे आफ़्ताब से तुलूए़ आफ़्ताब या दोपहर से आधी रात या आधी रात से दोपहर तक।
(حاشيه "انور البشارة". "الفتاوى الرضوية"، ج١٠، ص٧٥٧).

5 ....."الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢، وغيره.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢.
و"الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 3 बीमारी के सबब पहना तो जब तक वोह बीमारी रहेगी एक ही जुर्म है और बीमारी यक़ीनन जाती रही और न उतारा तो येह दूसरा जुर्मे इख़्तियारी है और अगर वोह बीमारी यक़ीनन जाती रही मगर दूसरी बीमारी मअ़न शुरूअ़ हो गई और उस में भी पहनने की ज़रूरत है जब भी येह दूसरा जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी है।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 4 बारी के साथ बुख़ार आता है और जिस दिन बुख़ार आया कपड़े पहन लिये, दूसरे दिन उतार डाले तीसरे दिन फिर पहने, तो जब तक येह बुख़ार आए एक ही जुर्म है।[2] (منسک)

मस्अला 5 अगर सिला कपड़ा पहना और उस का कफ़्फ़ारा अदा कर दिया मगर उतारा नहीं, दूसरे दिन भी पहने ही रहा तो अब दूसरा कफ़्फ़ारा वाजिब है। यूंही अगर एह़राम बांधते वक़्त सिला हुवा कपड़ा न उतारा तो येह जुर्म है।[3] (عالمگیری،درمختار)

मस्अला 6 बीमारी वग़ैरा के सबब अगर सर से पाउं तक सब कपड़े पहनने की ज़रूरत हुई तो एक ही जुर्मे ग़ैर इख़्तियारी है और बिला उ़ज़्र सब कपड़े पहने तो एक जुर्मे इख़्तियारी है यानी चार पहर पहने तो दोनों सूरतों में दम है और इस से कम में सदक़ा और अगर ज़रूरत एक कपड़े की थी उस ने दो पहने तो अगर इसी मौज़ए़ ज़रूरत पर दूसरा भी पहना तो एक कफ़्फ़ारा है और गुनहगार हुवा। मसलन एक कुरते की ज़रूरत थी, दो पहन लिये या टोपी की ज़रूरत थी इ़मामा भी बांध लिया और अगर दूसरा कपड़ा इस जगह के सिवा दूसरी जगह पहना मसलन ज़रूरत सिर्फ़ इ़मामे की है उस ने कुरता भी पहन लिया तो दो जुर्म हैं, इ़मामे का ग़ैर इख़्तियारी और कुरते का इख़्तियारी। ख़ुलासा येह कि मौज़ए़ ज़रूरत में ज़ियादती की तो एक जुर्म है और मौज़ए़ ज़रूरत के इ़लावा और जगह भी पहना तो दो।[4] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 7 बग़ैर ज़रूरत सब कपड़े एक साथ पहन लिये तो एक जुर्म है, दो जुर्म उस वक़्त हैं कि एक ब ज़रूरत हो दूसरा बे ज़रूरत।[5] (منسک)

मस्अला 8 दुश्मन की वज्ह से कपड़े पहने, हथियार बांधे और वोह भागा इस ने उतार डाले वोह फिर आ गया, इस ने फिर पहने तो येह एक ही जुर्म है। यूंही दिन में दुश्मन से लड़ना पड़ता है येह दिन में हथियार बांध लेता है रात में उतार डालता है तो येह हर रोज़ का

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٨.
2 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط في المنسك المتوسط"، (باب الجنايات)، ص٣٠٣.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢.
و "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٨.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الأول، ج١، ص٢٤٢-٢٤٣، وغيره.
5 ..... "لباب المناسك"، (باب الجنايات)، ص ٣٠٢-٣٠٣.

www.dawateislami.net

बांधना एक ही जुर्म है जब तक उ़ज़्र बाक़ी है।[1] (عالمگیری)

मस्अला 9 मोहरिम ने दूसरे मोहरिम को सिला हुवा या ख़ुश्बूदार कपड़ा पहनाया तो उस पहनाने वाले पर कुछ नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 10 मर्द या औ़रत ने मुंह की टिकली सारी या चहारुम छुपाई या मर्द ने पूरा या चहारुम सर छुपाया तो चार पहर या ज़ियादा लगातार छुपाने में दम है और कम में सदक़ा और चहारुम से कम को चार पहर तक छुपाया तो सदक़ा है और चार पहर से कम में कफ़्फ़ारा नहीं मगर गुनाह है।[3] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 11 मोहरिम ने सर पर कपड़े की गठरी रखी तो कफ़्फ़ारा है और ग़ल्ले की गठरी या तख़्ता या लगन वग़ैरा कोई बरतन रख लिया तो नहीं और अगर सर पर मिट्टी थोप ली तो कफ़्फ़ारा है।[4] (عالمگیری، منسک)

मस्अला 12 सिला हुवा कपड़ा पहनने में येह शर्त नहीं कि क़स्दन पहने बल्कि भूल कर हो या नादानी में बहर ह़ाल वोही ह़ुक्म है। यूंही सर और मुंह छुपाने में, यहां तक कि मोहरिम ने सोते में सर या मुंह छुपा लिया तो कफ़्फ़ारा वाजिब है।[5] (عالمگیری)

मस्अला 13 कान और गुद्दी के छुपाने में ह़रज नहीं। यूंही नाक पर ख़ाली हाथ रखने में और अगर हाथ में कपड़ा है और कपड़े समेत नाक पर हाथ रखा तो कफ़्फ़ारा नहीं मगर मक्रूह व गुनाह है।[6] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 14 पहनने का मत़लब येह है कि वोह कपड़ा इस त़रह़ पहने जैसे आ़दतन पहना जाता है, वरना अगर कुरते का तहबन्द बांध लिया या पाजामे को तहबन्द की त़रह़ लपेटा पाउं पाइंचे में न डाले तो कुछ नहीं। यूंही अंगरखा फैला कर दोनों शानों पर रख लिया, आस्तीनों में हाथ न डाले तो कफ़्फ़ारा नहीं मगर मक्रूह है और मूंढों पर सिले कपड़े डाल लिये तो कुछ नहीं।[7] (درمختار، ردالمحتار، عالمگیری)

मस्अला 15 जूते न हों तो मोज़े को वहां से काट कर पहने जहां अ़रबी जूते का तस्मा

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٣.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢، وغيره.
4 ..... المرجع السابق. و"لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات)، ص٣٠٨.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢.
6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٩.
7 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٦.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثاني، ج١، ص٢٤٢.

www.dawateislami.net

होता है और बग़ैर काटे हुए पहन लिया तो पूरे चार पहर पहनने में दम है और इस से कम में सदक़ा और जूते मौजूद हों तो मोज़े काट कर पहनना जाइज़ नहीं कि माल को ज़ाएअ़ करना है फिर भी अगर ऐसा किया तो कफ़्फ़ारा नहीं।[1] (منسک)

यहां से येह भी मालूम हुवा कि एह़राम में अंग्रेज़ी जूते पहनना जाइज़ नहीं कि वोह उस जोड़ को छुपाते हैं, पहनेगा तो कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा।

(3) बाल दूर करना

मस्अला 1 सर या दाढ़ी के चहारुम बाल या ज़ियादा किसी त़रह़ दूर किये तो दम है और कम में सदक़ा और अगर चंदला है या दाढ़ी में कम बाल हैं, तो अगर चौथाई की मिक़्दार हैं तो कुल में दम वरना सदक़ा। चन्द जगह से थोड़े थोड़े बाल लिये तो सब का मज्मूआ़ अगर चहारुम को पहुंचता है तो दम है वरना सदक़ा।[2] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 2 पूरी गरदन या पूरी एक बग़ल में दम है और कम में सदक़ा अगर्चे निस्फ़ या ज़ियादा हो। येही हुक्म ज़ेरे नाफ़ का है। दोनों बग़लें पूरी मुंडाए, जब भी एक ही दम है।[3]

(درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 3 पूरा सर चन्द जल्सों में मुंडाया, तो एक ही दम वाजिब है मगर जब कि पहले कुछ हिस्सा मुंडा कर उस का कफ़्फ़ारा अदा कर दिया फिर दूसरे जल्से में मुंडाया तो अब नया कफ़्फ़ारा देना होगा। यूंही दोनों बग़लें दो जल्सों में मुंडाईं तो एक ही कफ़्फ़ारा है।[4]

(درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 4 सर मुंडाया और दम दे दिया फिर उसी जल्से में दाढ़ी मुंडाई तो अब दूसरा दम दे।[5] (عالمگیری)

मस्अला 5 सर और दाढ़ी और बग़लें और सारे बदन के बाल एक ही जल्से में मुंडाए तो एक ही कफ़्फ़ारा है और अगर एक एक उ़ज़्व के एक एक जल्से में तो इतने ही कफ़्फ़ारे।[6]

(عالمگیری)

1 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في لبس الخفين)، ص٣٠٩-٣١٠.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٩.
3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٩.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٩-٦٦١.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج١، ص٢٤٣.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج١، ص٢٤٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 6 सर और दाढ़ी और गरदन और बग़ल और ज़ेरे नाफ़ के सिवा बाक़ी आज़ा के मुंडाने में सिर्फ़ सदक़ा है।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 7 मूंछ अगर्चे पूरी मुंडाए या कतरवाए सदक़ा है।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 8 रोटी पकाने में कुछ बाल जल गए तो सदक़ा है, वुज़ू करने या खुजाने या कंघा करने में बाल गिरे, इस पर भी पूरा सदक़ा है और बाज़ ने कहा दो तीन बाल तक हर बाल के लिये एक मुट्ठी नाज या एक टुकड़ा रोटी या एक छूहारा।[3] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 9 अपने आप बे हाथ लगाए बाल गिर जाए या बीमारी से तमाम बाल गिर पड़ें तो कुछ नहीं।[4] (منسک)

मस्अला 10 मोहरिम ने दूसरे मोहरिम का सर मूंडा इस पर भी सदक़ा है, ख़्वाह उस ने उसे हुक्म दिया हो या नहीं, ख़ुशी से मूंडाया हो या मजबूर हो कर और ग़ैर मोहरिम का मूंडा तो कुछ ख़ैरात कर दे।[5] (عالمگیری)

मस्अला 11 ग़ैर मोहरिम ने मोहरिम का सर मूंडा उस के हुक्म से या बिला हुक्म तो मोहरिम पर कफ़्फ़ारा है और मूंडने वाले पर सदक़ा और वोह मोहरिम उस मूंडने वाले से अपने कफ़्फ़ारे का तावान नहीं ले सकता और अगर मोहरिम ने ग़ैर की मूंछें लीं या नाख़ुन तराशे तो मसाकीन को कुछ सदक़ा खिला दे।[6] (عالمگیری)

मस्अला 12 मूंडना, कतरना, मोचने से लेना या किसी चीज़ से बाल उड़ाना, सब का एक हुक्म है।[7] (ردالمحتار وغیرہ)

मस्अला 13 औ़रत पूरे या चहारुम सर के बाल एक पोरे बराबर कतरे तो दम दे और कम में सदक़ा।[8] (منسک)

---

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٠.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ص٦٦٩.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج١، ص٢٤٣. و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ص ٦٧٠.
4 ..... "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في سقوط الشعر)،ص٣٢٨.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج١، ص٢٤٣.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج١، ص٢٤٣.
7 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٠، وغيره.
8 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في حكم التقصير)، ص٣٢٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 14 बाल मूंडा कर पछने लिये तो दम है वरना सदक़ा ।[1] (درمختار)

मस्अला 15 आंख में बाल निकल आए तो उन के उखाड़ने में सदक़ा नहीं ।[2] (منسک)

(4) नाख़ुन क़तरना

मस्अला 1 एक हाथ एक पाउं के पांचों नाख़ुन कतरे या बीसों एक साथ तो एक दम है और अगर किसी हाथ या पाउं के पूरे पांच न कतरे तो हर नाख़ुन पर एक सदक़ा, यहां तक कि अगर चारों हाथ पाउं के चार चार कतरे तो सोलह सदक़े दे मगर येह कि सदक़ों की क़ीमत एक दम के बराबर हो जाए तो कुछ कम कर ले या दम दे और अगर एक हाथ या पाउं के पांचों एक जल्से में और दूसरे के पांचों दूसरे जल्से में कतरे तो दो दम लाज़िम हैं और चारों हाथ पाउं के चार जल्सों में तो चार दम ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 2 कोई नाख़ुन टूट गया कि बढ़ने के क़ाबिल न रहा, उस का बक़िय्या उस ने काट लिया तो कुछ नहीं ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 3 एक ही जल्से में एक हाथ के पांचों नाख़ुन तराशे और चहारुम सर मुंडाया और किसी उ़ज़्व पर ख़ुश्बू लगाई तो हर एक पर एक एक दम यानी तीन दम वाजिब हैं ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 4 मोहरिम ने दूसरे के नाख़ुन तराशे तो वोही हुक्म है जो दूसरे के बाल मूंडने का है ।[6] (منسک)

मस्अला 5 चाक़ू और नाख़ुनगीर से तराश्ना और दांत से खुटक्ना सब का एक हुक्म है ।

(5) बोसो कनार वग़ैरा

मस्अला 1 मुबाशरते फ़ाहिशा और शह्वत के साथ बोसो कनार और बदन मस करने में दम है, अगर्चे इन्ज़ाल न हो और बिला शह्वत में कुछ नहीं । येह अफ़्आल औ़रत के साथ

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٥٩.
2 ..... "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في سقوط الشعر)، ص٣٢٨.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الثالث، ج١، ص٢٤٤.
4 ..... المرجع السابق. 5 ..... المرجع السابق.
6 ..... "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في قلم الاظفار)، ص٣٣٢.

www.dawateislami.net

हों या अम्रद के साथ दोनों का एक हुक्म है ।[1] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 2 मर्द के इन अफ़्आ़ल से औ़रत को लज़्ज़त आए तो वोह भी दम दे ।[2] (جوہرہ)

मस्अला 3 अन्दामे निहानी पर निगाह करने से कुछ नहीं अगर्चे इन्ज़ाल हो जाए अगर्चे बार बार निगाह की हो । यूंही ख़याल जमाने से ।[3] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 4 जलक़[4] से इन्ज़ाल हो जाए तो दम है वरना मक्रूह और एह़तिलाम से कुछ नहीं ।[5] (عالمگیری)

(6) जिमाअ़

मस्अला 1 वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पहले जिमाअ़ किया तो ह़ज फ़ासिद हो गया । उसे ह़ज की त़रह़ पूरा कर के दम दे और साले आइन्दा ही में उस की क़ज़ा कर ले । औ़रत भी एह़रामे ह़ज में थी तो उस पर भी येही लाज़िम है और अगर इस बला में फिर पड़ जाने का ख़ौफ़ हो तो मुनासिब है कि क़ज़ा के एह़राम से ख़त्म तक दोनों ऐसे जुदा रहें कि एक दूसरे को न देखे ।[6] (عالمگیری)

मस्अला 2 वुक़ूफ़ के बाद जिमाअ़ से ह़ज तो न जाएगा मगर ह़ल्क़ व त़वाफ़ से पहले किया तो बदना दे और ह़ल्क़ के बाद तो दम और बेहतर अब भी बदना है और दोनों के बाद किया तो कुछ नहीं । त़वाफ़ से मुराद अक्सर है यानी चार फेरे ।[7] (عالمگیری)

मस्अला 3 क़स्दन जिमाअ़ हो या भूले से या सोते में या इक्राह के साथ सब का एक हुक्म है ।[8] (عالمگیری)

मस्अला 4 वुक़ूफ़ से पहले औ़रत से ऐसे बच्चे ने वत़ी की जिस का मिस्ल जिमाअ़ करता है या मजनून ने तो ह़ज फ़ासिद हो जाएगा । यूंही मर्द ने मुश्तहात लड़की या मज्नूना से वत़ी की ह़ज फ़ासिद हो गया मगर बच्चे और मजनून पर न दम वाजिब है, न क़ज़ा ।[9] (درمختار،ردالمحتار)

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٧.
2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات فى الحج، ص، ٢٢٠.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الرابع، ج١، ص٢٤٤.
4 ...यानी मुश्त ज़नी ।
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الرابع، ج١، ص٢٤٤.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الرابع، ج١، ص٢٤٤.
7 ..... المرجع السابق ص٢٤٥.
8 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الرابع، ج١، ص٢٤٤.
9 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"،كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٢.

www.dawateislami.net

मस्अला 5 वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पहले चन्द बार जिमाअ़ किया अगर एक ही मजलिस में है तो एक दम वाजिब है और दो मुख़्तलिफ़ मजलिसों में तो दो दम और अगर दूसरी बार एह़राम तोड़ने के क़स्द से जिमाअ़ किया तो बहर ह़ाल एक ही दम वाजिब है, चाहे एक ही मजलिस में हो या मुतअ़द्दद में ।[1] (عالمگیری)

मस्अला 6 वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बाद सर मुंडाने से पहले चन्द बार जिमाअ़ किया अगर एक मजलिस में है तो एक बदना और दो मजलिसों में है तो एक बदना और एक दम और अगर दूसरी बार एह़राम तोड़ने के इरादे से जिमाअ़ किया तो इस बार कुछ नहीं ।[2]

(عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 7 जानवर या मुर्दा या बहुत छोटी लड़की से जिमाअ़ किया तो ह़ज फ़ासिद न होगा, इन्ज़ाल हो या नहीं मगर इन्ज़ाल हुवा तो दम लाज़िम ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 8 औ़रत ने जानवर से वती़ कराई या किसी आदमी या जानवर का कटा हुवा आला अन्दर रख लिया ह़ज फ़ासिद हो गया ।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 9 उ़मरह में चार फेरे से क़ब्ल जिमाअ़ किया उ़मरह जाता रहा, दम दे और उ़मरह की क़ज़ा और चार फेरों के बाद किया तो दम दे उ़मरह सह़ीह़ है ।[5] (درمختار)

मस्अला 10 उ़मरह करने वाले ने चन्द बार मुतअ़द्दद मजलिस में जिमाअ़ किया तो हर बार दम वाजिब और त़वाफ़ व सई के बाद ह़ल्क़ से पहले किया जब भी दम वाजिब है और ह़ल्क़ के बाद तो कुछ नहीं ।[6] (عالمگیری)

मस्अला 11 क़िरान वाले ने उ़मरह के त़वाफ़ से पहले जिमाअ़ किया तो ह़ज्जो उ़मरह दोनों फ़ासिद मगर दोनों के तमाम अफ़्आ़ल बजा लाए और दो दम दे और साले आइन्दा ह़ज्जो उ़मरह करे और अगर उ़मरह का त़वाफ़ कर चुका है और वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पहले जिमाअ़ किया तो उ़मरह फ़ासिद न हुवा, ह़ज फ़ासिद हो गया दो दम दे और साले आइन्दा ह़ज की क़ज़ा

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الرابع، ج١، ص٢٤٥.
2 ..... المرجع السابق.و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٥.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٢.
4 ..... "الدر المختار" و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٣.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٦.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الرابع، ج١، ص٢٤٥.

www.dawateislami.net

दे और अगर वुक़ूफ़ के बाद किया तो न ह़ज फ़ासिद हुवा, न उ़मरह, एक बदना और एक दम दे और इन के इ़लावा क़िरान की क़ुरबानी ।[1] (منسک)

मस्अला 12 जिमाअ़ से एह़राम नहीं जाता वोह ब दस्तूर मोह़रिम है और जो चीज़ें मोह़रिम के लिये ना जाइज़ हैं वोह अब भी ना जाइज़ हैं और वोही सब अह़काम हैं ।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 13 ह़ज फ़ासिद होने के बाद दूसरे ह़ज का एह़राम इसी साल बांधा तो दूसरा नहीं है बल्कि वोही है जिसे उस ने फ़ासिद कर दिया, इस तरकीब से साले आइन्दा की क़ज़ा से नहीं बच सकता ।[3] (ردالمحتار)

(7) त़वाफ़ में ग़लतियां

मस्अला 1 त़वाफ़े फ़र्ज़ कुल या अक्सर यानी चार फेरे जनाबत या ह़ैज़ो निफ़ास में किया तो बदना है और बे वुज़ू किया तो दम और पहली सूरत में त़हारत के साथ इआ़दा वाजिब, अगर मक्के से चला गया हो तो वापस आ कर इआ़दा करे अगर्चे मीक़ात से भी आगे बढ़ गया हो मगर बारहवीं तारीख़ तक अगर कामिल त़ौर पर इआ़दा कर लिया तो जुर्माना साक़ित़ और **बारहवीं के बाद किया तो दम लाज़िम, बदना साक़ित़** । लिहाज़ा अगर त़वाफ़े फ़र्ज़ बारहवीं के बाद किया है तो दम[4] साक़ित़ न होगा कि बारहवीं तो गुज़र गई और अगर त़वाफ़े फ़र्ज़ बे वुज़ू किया था तो इआ़दा मुस्तह़ब फिर इआ़दा से दम साक़ित़ हो गया अगर्चे बारहवीं के बाद किया हो ।[5] (جوہرہ،عالمگیری)

मस्अला 2 चार फेरे से कम बे त़हारत किया तो हर फेरे के बदले एक सदक़ा और जनाबत में किया तो दम फिर अगर बारहवीं तक इआ़दा कर लिया तो दम साक़ित़ और बारहवीं के बाद इआ़दा किया तो हर फेरे के बदले एक सदक़ा ।[6] (عالمگیری)

1 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات)، ص٣٣٨.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٣. 3 ..... المرجع السابق.

4 ...बहारे शरीअ़त के नुस्ख़ों में इस जगह "दम" के बजाए "बदना" लिखा है, जो किताबत की ग़लती है क्यूं कि "**त़वाफ़े फ़र्ज़ बारहवीं के बाद किया तो बदना साक़ित़ हो जाएगा**", ऐसा ही फ़तावा आ़लमगीरी में है, इसी वज्ह से हम ने लफ़्ज़ "दम" कर दिया है । लिहाज़ा जिन के पास बहारे शरीअ़त के दीगर नुस्ख़े हैं उन को चाहिये कि लफ़्ज़ "बदना" को क़लम ज़द कर के उस जगह पर लफ़्ज़ "दम" लिख लें ।

5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات في الحج، ص ٢٢١.
و"الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١،ص٢٤٥.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٦.

www.dawateislami.net

मस्अला 3 त़वाफ़े फ़र्ज़ कुल या अक्सर बिला उ़ज़्र चल कर न किया बल्कि सुवारी पर या गोद में या घिसट कर या बे सत्र किया मसलन औ़रत की चहारुम कलाई या चहारुम सर के बाल खुले थे या उल्टा त़वाफ़ किया या ह़त़ीम के अन्दर से त़वाफ़ में गुज़रा या बारहवीं के बाद किया तो इन सब सूरतों में दम दे और सह़ीह़ त़ौर पर इआ़दा कर लिया तो दम साक़ित़ और बग़ैर इआ़दा किये चला आया तो बकरी या उस की क़ीमत भेज दे कि ह़रम में ज़ब्ह़ कर दी जाए, वापस आने की ज़रूरत नहीं।[1] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 4 जनाबत में त़वाफ़ कर के घर चला गया तो फिर से नया एह़राम बांध कर वापस आए और वापस न आया बल्कि बदना भेज दिया तो भी काफ़ी है मगर अफ़्ज़ल वापस आना है और बे वुज़ू किया था तो वापस आना भी जाइज़ है और बेहतर येह कि वहीं से बकरी या क़ीमत भेज दे।[2] (عالمگیری)

मस्अला 5 त़वाफ़े फ़र्ज़ चार फेरे कर के चला गया यानी तीन या दो या एक फेरा बाक़ी है तो दम वाजिब, अगर ख़ुद न आया भेज दिया तो काफ़ी है।[3] (عالمگیری)

मस्अला 6 फ़र्ज़ के सिवा कोई और त़वाफ़ कुल या अक्सर जनाबत में किया तो दम दे और बे वुज़ू किया तो सदक़ा और तीन फेरे या इस से कम जनाबत में किये तो हर फेरे के बदले एक सदक़ा फिर अगर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में है तो सब सूरतों में इआ़दा कर ले, कफ़्फ़ारा साक़ित़ हो जाएगा।[4] (عالمگیری)

मस्अला 7 त़वाफ़े रुख़्सत कुल या अक्सर तर्क किया तो दम लाज़िम और चार फेरों से कम छोड़ा तो हर फेरे के बदले में एक सदक़ा और त़वाफ़े क़ुदूम तर्क किया तो कफ़्फ़ारा नहीं मगर बुरा किया और त़वाफ़े उ़मरह का एक फेरा भी तर्क करेगा तो दम लाज़िम होगा और बिल्कुल न किया या अक्सर तर्क किया तो कफ़्फ़ारा नहीं बल्कि उस का अदा करना लाज़िम है।[5] (منسک)

मस्अला 8 क़ारिन ने त़वाफ़े क़ुदूम व त़वाफ़े उ़मरह दोनों बे वुज़ू किये तो दसवीं से पहले त़वाफ़े उ़मरह का इआ़दा करे और अगर इआ़दा न किया यहां तक कि दसवीं तारीख़ की फ़ज्र तुलूअ़ हो गई तो दम वाजिब और त़वाफ़े फ़र्ज़ में रमल व सई कर ले।[6] (منسک)

---

1 ..... ""الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٧.
و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٢.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص ٢٤٥، ٢٤٦.

3 ..... المرجع السابق. 4 .....المرجع السابق.

5 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في الجناية في طواف الصدر)، ص٣٥٠_٣٥٣.

6 ..... المرجع السابق، ص٣٥٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 9 नजिस कपड़ों में त़वाफ़ मक्रूह है कफ़्फ़ारा नहीं ।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 10 त़वाफ़े फ़र्ज़ जनाबत में किया था और बारहवीं तक इस का इआ़दा भी न किया, अब तेरहवीं को त़वाफ़े रुख़्सत बा त़हारत किया तो येह त़वाफ़े रुख़्सत त़वाफ़े फ़र्ज़ के क़ाइम मक़ाम हो जाएगा और त़वाफ़े रुख़्सत के छोड़ने और त़वाफ़े फ़र्ज़ में देर करने की वज्ह से इस पर दो दम लाज़िम और अगर बारहवीं को त़वाफ़े रुख़्सत किया है तो येह त़वाफ़े फ़र्ज़ के क़ाइम मक़ाम होगा और चूंकि त़वाफ़े रुख़्सत न किया, लिहाज़ा एक दम लाज़िम और अगर त़वाफ़े रुख़्सत दोबारा कर लिया तो येह दम भी साक़ित़ हो गया और अगर त़वाफ़े फ़र्ज़ बे वुज़ू किया था और येह बा वुज़ू तो एक दम और अगर त़वाफ़े फ़र्ज़ बे वुज़ू किया था और त़वाफ़े रुख़्सत जनाबत में तो दो दम ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 11 त़वाफ़े फ़र्ज़ के तीन फेरे किये और त़वाफ़े रुख़्सत पूरा किया तो इस में के चार फेरे उस में महसूब हो जाएंगे और दो[2] दम लाज़िम, एक त़वाफ़े फ़र्ज़ में देर करने, दूसरा त़वाफ़े रुख़्सत के चार फेरे छोड़ने का । और अगर हर एक के तीन तीन फेरे किये तो कुल फ़र्ज़ में शुमार होंगे और दो[2] दम वाजिब ।[3] (عالمگیری) इस मस्अले में फ़ुरूए़ कसीरा हैं ब ख़ौफ़े तत़्वील ज़िक्र न किये ।

(8) सई में ग़लतियां

मस्अला 1 सई के चार फेरे या ज़ियादा बिला उ़ज़्र छोड़ दिये या सुवारी पर किये तो दम दे और ह़ज हो गया और चार से कम में हर फेरे के बदले सदक़ा और इआ़दा कर लिया तो दम व सदक़ा साक़ित़ और उ़ज़्र के सबब ऐसा हुवा तो मुआ़फ़ है । येही हर वाजिब का हुक्म है कि उ़ज़्रे सह़ीह़ से तर्क कर सकता है ।[4] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 2 त़वाफ़ से पहले सई की और इआ़दा न किया तो दम दे ।[5] (درمختار)

मस्अला 3 जनाबत में या बे वुज़ू त़वाफ़ कर के सई की तो सई के इआ़दे की ह़ाजत नहीं ।[6] (درمختار)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٦، وغيره.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٦.
3 ..... المرجع السابق.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٧. و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٥.
5 ..... "الدرالمختار" كتاب الحج، باب فى السعى بين الصفا والمروة، ج٣، ص٥٨٧.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦١.

www.dawateislami.net

मस्अला 4 सई में एह़राम या ज़मानए ह़ज शर्त़ नहीं, न की हो तो जब चाहे कर ले अदा हो जाएगी।[1] (جوہرہ)

(9) वुक़ूफ़े अ़रफ़ा में ग़लती

मस्अला 1 जो शख़्स ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले अ़रफ़ात से चला गया दम दे फिर अगर ग़ुरूब से पहले वापस आया तो साक़ित़ हो गया और ग़ुरूब के बाद वापस हुवा तो नहीं और अ़रफ़ात से चला आना ख़्वाह ब इख़्तियार हो या बिला इख़्तियार हो मसलन ऊंट पर सुवार था वोह उसे ले भागा दोनों सूरतों में दम है।[2] (عالمگیری، جوہرہ)

(10) वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा

मस्अला 1 दसवीं की सुब्ह़ को मुज़्दलिफ़ा में बिला उ़ज़्र वुक़ूफ़ न किया तो दम दे। हां, कमज़ोर या औ़रत ब ख़ौफ़े इज़्दिह़ाम वुक़ूफ़ तर्क करे तो जुर्माना नहीं।[3] (جوہرہ)

(11) रमी की ग़लतियां

मस्अला 1 किसी दिन भी रमी नहीं की या एक दिन की बिल्कुल या अक्सर तर्क कर दी मसलन दसवीं को तीन कंकरियां तक मारीं या ग्यारहवीं वग़ैरा को दस कंकरियां तक या किसी दिन की बिल्कुल या अक्सर रमी दूसरे दिन की तो इन सब सूरतों में दम है और अगर किसी दिन की निस्फ़ से कम छोड़ी मसलन दसवीं को चार कंकरियां मारीं, तीन छोड़ दीं या और दिनों की ग्यारह मारीं दस छोड़ दीं या दूसरे दिन की तो हर कंकरी पर एक सदक़ा दे और अगर सदक़ों की क़ीमत दम के बराबर हो जाए तो कुछ कम कर दे।[4] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

---

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات فی الحج، ص٢٢٢.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٧.
و"الجوهرة النيرة"، ، كتاب الحج، باب الجنايات فی الحج، ص٢٢٢.

3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات فی الحج، ص٢٢٣.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثامن في الجنايات، الفصل الخامس، ج١، ص٢٤٧.
و "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٦.

www.dawateislami.net

(12) कुरबानी और ह़ल्क़ में ग़लती

मस्अला 1 ह़रम में ह़ल्क़ न किया, हुदूदे ह़रम से बाहर किया या बारहवीं के बाद किया या रमी से पहले किया या क़ारिन व मुतमत्तेअ़ ने कुरबानी से पहले किया या इन दोनों ने रमी से पहले कुरबानी की तो इन सब सूरतों में दम है।[1] (درمختاروغیرہ)

मस्अला 2 उ़मरह का ह़ल्क़ भी ह़रम ही में होना ज़रूरी है, इस का ह़ल्क़ भी ह़रम से बाहर हुवा तो दम है मगर इस में वक़्त की शर्त़ नहीं।[2] (درمختار)

मस्अला 3 ह़ज करने वाले ने बारहवीं के बाद ह़रम से बाहर सर मुंडाया तो दो दम हैं, एक ह़रम से बाहर ह़ल्क़ करने का दूसरा बारहवीं के बाद होने का।[3] (ردالمحتار)

(13) शिकार करना

मस्अला 1 ख़ुश्की का वह़शी जानवर शिकार करना या उस की त़रफ़ शिकार करने को इशारा करना या और किसी त़रह़ बताना, येह सब काम ह़राम हैं और सब में कफ़्फ़ारा वाजिब अगर्चे उस के खाने में मुज़्त़र हो। यानी भूक से मरा जाता हो और कफ़्फ़ारा उस की क़ीमत है यानी दो आ़दिल वहां के ह़िसाबों जो क़ीमत बता दें वोह देनी होगी और अगर वहां उस की कोई क़ीमत न हो तो वहां से क़रीब जगह में जो क़ीमत हो वोह है और अगर एक ही आ़दिल ने बता दिया जब भी काफ़ी है।[4] (درمختاروغیرہ)

मस्अला 2 पानी के जानवर को शिकार करना जाइज़ है, पानी के जानवर से मुराद वोह जानवर है जो पानी में पैदा हुवा हो अगर्चे ख़ुश्की में भी कभी कभी रहता हो और ख़ुश्की का जानवर वोह है जिस की पैदाइश ख़ुश्की की हो अगर्चे पानी में रहता हो।[5] (منسک)

मस्अला 3 शिकार की क़ीमत में इख़्तियार है कि उस से भेड़ बकरी वग़ैरा अगर ख़रीद सकता है तो ख़रीद कर ह़रम में ज़ब्ह़ कर के फ़ुक़रा को तक़्सीम कर दे या उस का ग़ल्ला ख़रीद कर मसाकीन पर सदक़ा कर दे, इतना इतना कि हर मिस्कीन को सदक़ए फ़ित्र की क़दर पहुंचे और येह भी हो सकता है कि उस क़ीमत के ग़ल्ले में जितने सदक़े हो सकते हों हर सदक़े के बदले एक रोज़ा रखे और अगर कुछ ग़ल्ला बच जाए जो पूरा सदक़ा नहीं तो इख़्तियार है वोह

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٦، وغيره.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٦.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٦٦.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٦، وغيره.
5 ..... "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في ترك الواجبات بعذر)، ص٣٦٠.

www.dawateislami.net

किसी मिस्कीन को दे दे या इस की इ़वज़ एक रोज़ा रखे और अगर पूरी क़ीमत एक सदक़े के लाइक़ भी नहीं तो भी इख़्तियार है कि इतने का ग़ल्ला ख़रीद कर एक मिस्कीन को दे दे या उस के बदले एक रोज़ा रखे।[1] (درمختار، عالمگیری وغیرہما)

मस्अला 4 कफ़्फ़ारे का जानवर ह़रम के बाहर ज़ब्ह़ किया तो कफ़्फ़ारा अदा न हुवा और अगर उस में से ख़ुद भी खा लिया तो इतने का तावान दे और अगर उस कफ़्फ़ारे के गोश्त को एक मिस्कीन पर तसद्दुक़ किया जब भी जाइज़ है। यूंही तावान की क़ीमत भी एक मिस्कीन को दे सकता है और अगर जानवर को बाहर ज़ब्ह़ किया और उस का गोश्त हर मिस्कीन को एक एक सदक़े की क़ीमत का दिया और वोह सब गोश्त इतनी क़ीमत का है जितनी क़ीमत का ग़ल्ला ख़रीदा जाता तो अदा हो गया।[2] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 5 कफ़्फ़ारे का जानवर चोरी गया या ज़िन्दा जानवर ही तसद्दुक़ कर दिया तो ना काफ़ी है और अगर ज़ब्ह़ कर दिया और गोश्त चोरी गया तो अदा हो गया।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 6 क़ीमत का ग़ल्ला तसद्दुक़ करने की सूरत में हर मिस्कीन को सदक़े की मिक़्दार देना ज़रूरी है कमो बेश देगा तो अदा न होगा। कम कम दिया तो कुल नफ़्ल सदक़ा है और ज़ियादा ज़ियादा दिया तो एक सदक़े से जितना ज़ियादा दिया नफ़्ल है। येह इस सूरत में है कि एक ही दिन में दिया हो और अगर कई दिन में दिया और हर रोज़ पूरा सदक़ा तो यूं एक मिस्कीन को कई सदक़े दे सकता है और येह भी हो सकता है कि हर मिस्कीन को एक एक सदक़े की क़ीमत दे दे।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 7 मोह़रिम ने जंगल के जानवर को ज़ब्ह़ किया तो ह़लाल न हुवा बल्कि मुर्दार है ज़ब्ह़ करने के बाद उसे खा भी लिया तो अगर कफ़्फ़ारा देने के बाद खाया तो अब फिर खाने का कफ़्फ़ारा दे और अगर नहीं दिया था तो एक ही कफ़्फ़ारा काफ़ी है।[5] (جوہرہ)

मस्अला 8 जितनी क़ीमत उस शिकार की तज्वीज़ हुई उस का जानवर ख़रीद कर ज़ब्ह़ किया और क़ीमत में से बच रहा तो बक़िय्या का ग़ल्ला ख़रीद कर तसद्दुक़ करे या हर सदक़े के बदले एक रोज़ा रखे या कुछ रोज़े रखे कुछ सदक़ा दे सब जाइज़ है। यूंही अगर वोह क़ीमत दो जानवरों के ख़रीदने के लाइक़ है तो चाहे दो[2] जानवर ज़ब्ह़ करे या एक ज़ब्ह़ और एक के

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨١.
و"الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٤٨، وغيرهما.
2 ..... "الفتاوى الهندية"،المرجع السابق ص٢٤٨و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨١.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨١.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨١_٦٨٣.
5 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات في الحج، ص٢٢٨.

www.dawateislami.net

बदले का सदक़ा दे या रोज़े रखे हर त़रह़ इख़्तियार है।[1] (عالمگیری)

मस्अला 9 एह़राम वाले ने ह़रम का जानवर शिकार किया तो इस का भी येही हुक्म है, ह़रम की वज्ह से दोहरा कफ़्फ़ारा वाजिब न होगा और अगर बग़ैर एह़राम के ह़रम में शिकार किया तो इस का भी वोही कफ़्फ़ारा है जो मोह़रिम के लिये है मगर इस में रोज़ा काफ़ी नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 10 जंगल के जानवर से मुराद वोह है जो ख़ुश्की में पैदा होता है अगर्चे पानी में रहता हो। लिहाज़ा मुर्ग़ाबी और वह़शी बत़ के शिकार करने का भी येही हुक्म है और पानी का जानवर वोह है जिस की पैदाइश पानी में होती है अगर्चे कभी कभी ख़ुश्की में रहता हो। घरेलू जानवर जैसे गाय, भैंस, बकरी अगर जंगल में रहने के सबब इन्सान से वह़शत करें तो वह़शी नहीं और वह़शी जानवर किसी ने पाल लिया तो अब भी जंगल ही का जानवर शुमार किया जाएगा, अगर पलाउ हिरन शिकार किया तो इस का भी वोही हुक्म है। जंगल का जानवर अगर किसी की मिल्क में हो जाए मसलन पकड़ लाया या पकड़ने वाले से मोल लिया तो उस के शिकार करने का भी वोही हुक्म है।[3] (عالمگیری، جوہرہ، ردالمحتار)

मस्अला 11 ह़राम और ह़लाल जानवर दोनों के शिकार का एक हुक्म है मगर ह़राम जानवर के क़त्ल करने में कफ़्फ़ारा एक बकरी से ज़ियादा नहीं है अगर्चे उस जानवर की क़ीमत एक बकरी से बहुत ज़ाइद की हो मसलन हाथी को क़त्ल किया तो सिर्फ़ एक बकरी कफ़्फ़ारे में वाजिब है।[4] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 12 सिखाया हुवा जानवर क़त्ल किया तो कफ़्फ़ारे में वोही क़ीमत वाजिब है जो बे सिखाए की है, अलबत्ता अगर वोह किसी की मिल्क है तो कफ़्फ़ारे के इलावा उस के मालिक को सिखाए हुए की क़ीमत दे।[5] (درمختار)

मस्अला 13 कफ़्फ़ारा लाज़िम आने के लिये क़स्दन क़त्ल करना शर्त़ नहीं, भूलचूक से क़त्ल हुवा जब भी कफ़्फ़ारा है।[6] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 14 जानवर को ज़ख़्मी कर दिया मगर मरा नहीं या उस के बाल या पर नोचे या कोई उ़ज़्व काट डाला तो इस की वज्ह से जो कुछ उस जानवर में कमी हुई वोह कफ़्फ़ारा है

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٤٨. 2 ..... المرجع السابق.

3 ..... المرجع السابق ص٢٤٧. و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٦.

4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨١.

5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨١.

6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٨، وغيره.

www.dawateislami.net

और अगर ज़ख़्म की वज्ह से मर गया तो पूरी क़ीमत वाजिब।[1] (عامۂ کتب)

मस्अला 15 ज़ख़्म खा कर भाग गया और मालूम है कि मर गया या मालूम नहीं कि मर गया या ज़िन्दा है तो क़ीमत वाजिब है और अगर मालूम है कि मर गया मगर उस ज़ख़्म के सबब से नहीं बल्कि किसी और सबब से तो ज़ख़्म की जज़ा दे और बिल्कुल अच्छा हो गया, जब भी कफ़्फ़ारा साक़ित न होगा।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 16 जानवर को ज़ख़्मी किया फिर उसे क़त्ल कर डाला तो ज़ख़्म व क़त्ल दोनों का कफ़्फ़ारा दे।[3] (عالمگیری)

मस्अला 17 जानवर जाल में फंसा हुवा था या किसी दरिन्दे ने उसे पकड़ा था उस ने छुड़ाना चाहा, तो अगर मर भी जाए जब भी कुछ नहीं।[4] (درمختار)

मस्अला 18 परिन्द के पर नोच डाले कि उड़ न सके या चौपाए के हाथ पाउं काट डाले कि भाग न सके तो पूरे जानवर की क़ीमत वाजिब है और अन्डा तोड़ा या भूना तो उस की क़ीमत दे मगर जब कि गन्दा हो तो कुछ वाजिब नहीं अगर्चे उस का छिल्का क़ीमती हो जैसे शुतुरमुर्ग़ का अन्डा कि लोग उसे ख़रीद कर बतौ़रे नुमाइश रखते हैं अगर्चे गन्दा हो। अन्डा तोड़ा उस में से बच्चा मरा हुवा निकला तो बच्चे की क़ीमत दे और जंगल के जानवर का दूध दोहा तो दूध की और बाल कतरे तो बालों की क़ीमत दे।[5] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 19 परिन्द के पर नोच डाले या चौपाए के हाथ पाउं काट डाले फिर कफ़्फ़ारा देने से पहले उसे क़त्ल कर डाला तो एक ही कफ़्फ़ारा है और कफ़्फ़ारा अदा करने के बाद क़त्ल किया तो दो कफ़्फ़ारे, एक ज़ख़्म वग़ैरा का दूसरा क़त्ल का और अगर ज़ख़्मी किया फिर वोह जानवर ज़ख़्म के सबब मर गया तो एक ही कफ़्फ़ारा है ख़्वाह मरने से पहले दिया हो या बाद।[6] (منسک، عالمگیری)

मस्अला 20 जंगल के जानवर का अन्डा भूना या दूध दोहा और कफ़्फ़ारा अदा कर दिया तो अब उस का खाना ह़राम नहीं और बेचना भी जाइज़ मगर मक्रूह है और जानवर का कफ़्फ़ारा दिया और खाया तो फिर कफ़्फ़ारा दे और दूसरे मोह़रिम ने खा लिया तो उस पर

1 ..... "تنویر الابصار" و "الدرالمختار"، کتاب الحج، باب الجنایات، ج۳، ص۶۸۳.
2 ..... "ردالمحتار"، کتاب الحج، باب الجنایات، ج۳، ص۶۸۳.
3 ..... "الفتاوی الهندیة"، کتاب المناسك، الباب التاسع في الصید، ج۱، ص۲۴۸.
4 ..... "الدرالمختار"، کتاب الحج، باب الجنایات، ج۳، ص۶۸۴.
5 ..... "الدرالمختار"، کتاب الحج، باب الجنایات، ج۳، ص۶۸۴، وغیره.
6 ..... ""المسلك المتقسط"، (باب الجنایات، فصل في الجرح)، ص۳۶۲.
و"الفتاوی الهندیة"، کتاب المناسك، الباب التاسع فی الصید، ج۱، ص۲۴۸.

www.dawateislami.net

कफ़्फ़ारा नहीं अगर्चे खाना ह़राम था कि वोह मुर्दार है ।[1] (جوہرہ،ردالمحتار)

मस्अला 21 जंगल के जानवर का अन्डा उठा लाया और मुर्ग़ी के नीचे रख दिया अगर गन्दा हो गया तो उस की क़ीमत दे और उस से बच्चा निकला और बड़ा हो कर उड़ गया तो कुछ नहीं और अगर अन्डे पर से जानवर को उड़ा दिया और अन्डा गन्दा हो गया तो कफ़्फ़ारा वाजिब ।[2] (منسک)

मस्अला 22 हिरनी को मारा उस के पेट में बच्चा था, वोह मरा हुवा गिरा तो उस बच्चे की क़ीमत कफ़्फ़ारा दे और हिरनी बाद को मर गई तो उस की क़ीमत भी और अगर न मरी तो इस की वज्ह से जितना उस में नुक़्सान आया वोह कफ़्फ़ारे में दे और अगर बच्चा नहीं गिरा मगर हिरनी मर गई तो ह़ालते ह़म्ल में जो उस की क़ीमत थी वोह दे ।[3] (جوہرہ)

मस्अला 23 कव्वा, चील, भेड़िया, बिच्छू, सांप, चूहा, घूंस, छचूंदर, कट्खना कुत्ता, पिस्सू, मच्छर, किल्ली, कछवा, केकड़ा, पतंगा, काटने वाली च्यूंटी, मख्खी, छिपकली, बुर और तमाम ह़श्रातुल अर्द़ बिज्जू, लोमड़ी, गीदड़ जब कि येह दरिन्दे ह़म्ला करें या जो दरिन्दे ऐसे हों जिन की आ़दत अक्सर इब्तिदाअन ह़म्ला करने की होती है जैसे शेर, चीता, तेंदवा, इन सब के मारने में कुछ नहीं । यूंही पानी के तमाम जानवरों के क़त्ल में कफ़्फ़ारा नहीं ।[4]

(عالمگیری،درمختار،ردالمحتار وغیرہا)

मस्अला 24 हिरन और बकरी से बच्चा पैदा हुवा तो उस के क़त्ल में कुछ नहीं, हिरनी और बकरे से है तो कफ़्फ़ारा वाजिब ।[5] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 25 ग़ैर मोह़रिम ने शिकार किया तो मोह़रिम उसे खा सकता है अगर्चे उस ने इसी के लिये किया हो, जब कि इस मोह़रिम ने न उसे बताया, न हुक्म किया, न किसी त़रह़ इस काम में इआ़नत की हो और येह शर्त़ भी है कि ह़रम से बाहर उसे ज़ब्ह़ किया हो ।[6] (درمختار)

मस्अला 26 बताने वाले, इशारा करने वाले पर कफ़्फ़ारा उस वक़्त लाज़िम है कि ① जिसे बताया वोह इस की बात झूटी न जाने और ② बे इस के बताए वोह जानता भी न

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات فی الحج ص٢٢٦ .
و "ردالمحتار"، كتاب الجنايات، ج٣، ص٦٨٨.
2 ..... "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل فی حكم البيض)، ص٣٦٦.
3 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات فی الحج ص٢٢٦ .
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٩-٦٩١.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٢.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٩٢.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٩٢.

www.dawateislami.net

हो और ③ इस के बताने पर फ़ौरन उस ने मार भी डाला हो और ④ वोह जानवर वहां से भाग न गया और ⑤ येह बताने वाला जानवर के मारे जाने तक एह़राम में हो। अगर इन पांचों शर्तों में एक न पाई जाए तो कफ़्फ़ारा नहीं रहा गुनाह वोह बहर ह़ाल है।[1] (درمختار، جوہرہ)

मस्अला 27 एक मोह़रिम ने किसी को शिकार का पता दिया मगर उस ने न उसे सच्चा जाना न झूटा फिर दूसरे ने ख़बर दी, अब उस ने जुस्तजू की और जानवर को मारा तो दोनों बताने वालों पर कफ़्फ़ारा है और अगर पहले को झूटा समझा तो सिर्फ़ दूसरे पर है।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 28 मोह़रिम ने शिकार का हुक्म दिया तो कफ़्फ़ारा बहर ह़ाल लाज़िम अगर्चे जानवर ख़ुद मारने वाले के इ़ल्म में है।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 29 एक मोह़रिम ने दूसरे मोह़रिम को शिकार करने का हुक्म दिया और दूसरे ने ख़ुद न किया बल्कि उस ने तीसरे मोह़रिम को हुक्म दिया, अब तीसरे ने शिकार किया तो पहले पर कफ़्फ़ारा नहीं और दूसरे और तीसरे पर लाज़िम और अगर पहले ने दूसरे से कहा कि तू फ़ुलां को शिकार का हुक्म दे और उस ने हुक्म दिया तो तीनों पर जुर्माना लाज़िम।[4] (منسک)

मस्अला 30 ग़ैर मोह़रिम ने मोह़रिम को शिकार बताया या हुक्म किया तो गुनहगार हुवा तौबा करे, उस ग़ैर मोह़रिम पर कफ़्फ़ारा नहीं।[5] (منسک)

मस्अला 31 मोह़रिम ने जिसे बताया वोह मोह़रिम हो या न हो बहर ह़ाल बताने वाले पर कफ़्फ़ारा लाज़िम।[6] (ردالمحتار)

मस्अला 32 कई शख़्सों ने मिल कर शिकार किया तो सब पर पूरा पूरा कफ़्फ़ारा है।[7] (عالمگیری)

मस्अला 33 टिड्डी भी ख़ुश्की का जानवर है, उसे मारे तो कफ़्फ़ारा दे और एक ख़जूर काफ़ी है।[8] (جوہرہ)

---

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات فى الحج ص٢٢٤. و"الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٧.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٧. 3 ..... المرجع السابق.
4 ..... "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في الدلالة والاشارة ونحو ذلك)، ص٣٦٩.
5 ..... "لباب المناسك"، (باب الجنايات، فصل في الدلالة والاشارة ونحو ذلك)، ص٣٦٩.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٧٧.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٤٩.
8 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات فى الحج ص٢٢٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 34 मोहरिम ने जंगल का जानवर ख़रीदा या बेचा तो बैअ़ बातिल है फिर बाएअ़ व मुश्तरी दोनों मोहरिम हैं और जानवर हलाक हुवा तो दोनों पर कफ़्फ़ारा है। येह हुक्म उस वक़्त है कि एहराम की हालत में पकड़ा और एहराम ही में बेचा और अगर पकड़ने के वक़्त मोहरिम न था और बेचने के वक़्त है तो बैअ़ फ़ासिद है और अगर पकड़ने के वक़्त मोहरिम था और बेचने के वक़्त नहीं है तो बैअ़ जाइज़।[1] (جوہرہ)

मस्अला 35 ग़ैर मोहरिम ने ग़ैर मोहरिम के हाथ जंगल का जानवर बेचा और मुश्तरी ने अभी क़ब्ज़ा न किया था कि दोनों में से एक ने एहराम बांध लिया तो अब वोह बैअ़ बातिल हो गई।[2] (جوہرہ)

मस्अला 36 एहराम बांधा और उस के हाथ में जंगल का जानवर है तो हुक्म है कि छोड़ दे और न छोड़ा यहां तक कि मर गया तो ज़मान दे मगर छोड़ने से उस की मिल्क से नहीं निकलता जब कि एहराम से पहले पकड़ा था और येह भी शर्त है कि बैरूने हरम पकड़ा हो फ़लिहाज़ा अगर उसे किसी ने पकड़ लिया तो मालिक उस से ले सकता है। जब कि एहराम से निकल चुका हो और अगर किसी और ने उस के हाथ से छुड़ा दिया तो येह तावान दे और अगर जानवर उस के घर है तो कुछ मुज़ायक़ा नहीं या पास ही है मगर पिंजरे में है तो जब तक हरम से बाहर है छोड़ना ज़रूरी नहीं। लिहाज़ा अगर मर गया तो कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं।[3] (جوہرہ، عالمگیری)

मस्अला 37 मोहरिम ने जानवर पकड़ा तो उस की मिल्क न हुवा, हुक्म है कि छोड़ दे अगर्चे पिंजरे में हो या घर पर हो और उसे कोई पकड़ ले तो एहराम के बाद उस से नहीं ले सकता और अगर किसी दूसरे ने छोड़ दिया तो उस से तावान नहीं ले सकता और दूसरे मोहरिम ने मार डाला तो दोनों पर कफ़्फ़ारा है मगर पकड़ने वाले ने जो कफ़्फ़ारा दिया है, वोह मारने वाले से वुसूल कर सकता है।[4] (جوہرہ، عالمگیری)

मस्अला 38 मोहरिम ने जंगल का जानवर पकड़ा तो उस पर लाज़िम है कि जंगल में या ऐसी जगह छोड़ दे जहां वोह पनाह ले सके, अगर शहर में ला कर छोड़ा जहां उस के पकड़ने का अन्देशा है तो जुर्माने से बरी न होगा।[5] (منسک)

मस्अला 39 किसी ने ऐसी जगह शिकार देखा कि मारने के लिये तीर कमान, गुलेल, बन्दूक़ वग़ैरहा की ज़रूरत है और मोहरिम ने येह चीज़ें उसे दीं तो उस पर पूरा कफ़्फ़ारा

1 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الجنايات فى الحج ص٢٢٩. 2 ..... المرجع السابق.
3 ..... المرجع السابق. و "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٠، ٢٥١.
4 ..... المرجع السابق.
5 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في أخذ الصيد و ارساله)، ص٣٦٨.

www.dawateislami.net

लाज़िम और शिकार ज़ब्ह़ करना है उस के पास ज़ब्ह़ करने की चीज़ नहीं, मोह़रिम ने छुरी दी तो कफ़्फ़ारा है और अगर उस के पास ज़ब्ह़ करने की चीज़ है और मोह़रिम ने छुरी दी तो कफ़्फ़ारा नहीं मगर कराहत है।[1] (عالمگیری)

मस्अला 40 मोह़रिम ने जानवर पर अपना कुत्ता या बाज़ सिखाया हुवा छोड़ा, उस ने शिकार को मार डाला तो कफ़्फ़ारा वाजिब है और अगर एह़राम की वज्ह से तामीले हुक्मे शर्अ़ के लिये बाज़ छोड़ दिया, उस ने जानवर को मार डाला या सुखाने के लिये जाल फैलाया, उस में जानवर फंस कर मर गया या कूंवां खोदा था उस में गिर कर मरा तो इन सूरतों में कफ़्फ़ारा नहीं।[2] (عالمگیری)

(14) ह़रम के जानवर को ईज़ा देना

मस्अला 1 ह़रम के जानवर को शिकार करना या उसे किसी त़रह़ ईज़ा देना सब को ह़राम है। मोह़रिम और ग़ैर मोह़रिम दोनों इस हुक्म में यक्सां हैं। ग़ैर मोह़रिम ने ह़रम के जंगल का जानवर ज़ब्ह़ किया तो उस की क़ीमत वाजिब है और उस क़ीमत के बदले रोज़ा नहीं रख सकता और मोह़रिम है तो रोज़ा भी रख सकता है।[3] (درمختار)

मस्अला 2 मोह़रिम ने अगर ह़रम का जानवर मारा तो एक ही कफ़्फ़ारा वाजिब होगा दो नहीं और अगर वोह जानवर किसी का मम्लूक था तो मालिक को उस की क़ीमत भी दे। फिर अगर सिखाया हुवा हो मसलन तूती तो मालिक को वोह क़ीमत दे जो सीखे हुए की है और कफ़्फ़ारे में बे सिखाए हुए की क़ीमत।[4] (منسک)

मस्अला 3 जो ह़रम में दाख़िल हुवा और उस के पास कोई वह़शी जानवर हो अगर्चे पिंजरे में तो हुक्म है कि उसे छोड़ दे, फिर अगर वोह शिकारी जानवर बाज़, शिक्रा, बहरी वग़ैरहा है और उस ने इस हुक्मे शर्अ़ की तामील के लिये उसे छोड़ा, उस ने शिकार किया तो उस के ज़िम्मे तावान नहीं और शिकार पर छोड़ा तो तावान है।[5] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 4 एक शख़्स दूसरे का वह़शी जानवर ग़स्ब कर के ह़रम में लाया तो वाजिब है कि छोड़ दे और मालिक को क़ीमत दे और न छोड़ा बल्कि मालिक को वापस दिया तो तावान दे। ग़स्ब के बाद एह़राम बांधा जब भी येही हुक्म है।[6] (ردالمحتار وغیرہ)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٠.
2 ..... المرجع السابق ص٢٥١. 3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٩٣.
4 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات، فصل في صيد الحرم)، ص٣٧٤.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٩٣، وغيره.
6 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٩٤.

www.dawateislami.net

मस्अला 5 दो ग़ैर मोह़रिम ने ह़रम के जानवर को एक ज़र्ब में मार डाला तो दोनों आधी आधी क़ीमत दें। यूंही अगर बहुत से लोगों ने मारा तो सब पर वोह क़ीमत तक़्सीम हो जाएगी और अगर उन में कोई मोह़रिम भी है तो इलावा इस के जो उस के ह़िस्से में पड़ा पूरी क़ीमत भी कफ़्फ़ारे में दे और एक ने पहले ज़र्ब लगाई फिर दूसरे ने तो हर एक की ज़र्ब से उस की क़ीमत में जो कमी हुई वोह दे। फिर बाक़ी क़ीमत दोनों पर तक़्सीम हो जाएगी उस बक़िय्या का निस्फ़ निस्फ़ दोनों दें।[1] (عالمگیری،منسک)

मस्अला 6 एक ने ह़रम का जानवर पकड़ा, दूसरे ने मार डाला तो दोनों पूरी पूरी क़ीमत दें और पकड़ने वाले को इख़्तियार है कि दूसरे से तावान वुसूल कर ले।[2] (عالمگیری)

मस्अला 7 चन्द शख़्स मोह़रिम मक्के के किसी मकान में ठहरे, उस मकान में कबूतर रहते थे। सब ने एक से कहा, दरवाज़ा बन्द कर दे, उस ने दरवाज़ा बन्द कर दिया और सब मिना को चले गए, वापस आए तो कबूतर प्यास से मरे हुए मिले तो सब पूरा पूरा कफ़्फ़ारा दें।[3] (عالمگیری)

मस्अला 8 जानवर का कुछ ह़िस्सा ह़रम में हो और कुछ बाहर तो अगर खड़ा हो और उस के सब पाउं ह़रम में हों या एक ही पाउं तो वोह ह़रम का जानवर है, उस को मारना ह़राम है अगर्चे सर ह़रम से बाहर है और अगर सिर्फ़ सर ह़रम में हैं और पाउं सब के सब बाहर तो क़त्ल पर जुर्माना लाज़िम नहीं और अगर लैटा सोया है और कोई ह़िस्सा भी ह़रम में है तो उसे मारना ह़राम।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 9 जानवर ह़रम से बाहर था, उस ने तीर छोड़ा वोह जानवर भागा और तीर उसे उस वक़्त लगा कि ह़रम में पहुंच गया था तो जुर्माना लाज़िम और अगर तीर लगने के बाद भाग कर ह़रम में गया और वहीं मर गया तो नहीं मगर उस का खाना ह़लाल नहीं।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 10 जानवर ह़रम में नहीं मगर येह शिकार करने वाला ह़रम में है और ह़रम ही से तीर छोड़ा तो जुर्माना वाजिब।[6] (عالمگیری)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية" كتاب المناسك، الباب التاسع فى الصيد، ج١، ص٢٤٩. و"لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات)، ص٣٦٤.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٠.

3 ..... المرجع السابق. 4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٧.

5 ..... المرجع السابق، ص٦٨٨.

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥١.

www.dawateislami.net

मस्अला 11 जानवर और शिकारी दोनों ह़रम से बाहर हैं मगर तीर ह़रम से होता हुवा गुज़रा तो इस में भी बाज़ उ़लमा तावान वाजिब करते हैं। दुर्रे मुख़्तार में येही लिखा मगर बह़रुर्राइक़ व लुबाब में तसरीह़ है कि इस में तावान नहीं और अ़ल्लामा शामी ने फ़रमाया : कलामे उ़लमा से येही साबित। कुत्ता या बाज़ वग़ैरा छोड़ा और ह़रम से होता हुवा गुज़रा, इस का भी येही हुक्म है।[1]

मस्अला 12 जानवर ह़रम से बाहर था उस पर कुत्ता छोड़ा, कुत्ते ने ह़रम में जा कर पकड़ा तो उस पर तावान नहीं मगर शिकार न खाया जाए।[2] (عالمگیری)

मस्अला 13 घोड़े वग़ैरा किसी जानवर पर सुवार जा रहा था या उसे हांकता या खींचता लिये जा रहा था, उस के हाथ पाउं से कोई जानवर दब कर मर गया या उस ने किसी जानवर को दांत से काटा और मर गया तो तावान दे।[3] (عالمگیری)

मस्अला 14 भेड़िये पर कुत्ता छोड़ा, उस ने जा कर शिकार पकड़ा या भेड़िया पकड़ने के लिये जाल ताना, उस में शिकार फंस गया तो दोनों सूरतों में तावान कुछ नहीं।[4] (عالمگیری)

मस्अला 15 जानवर को भगाया वोह कूंएं में गिर पड़ा या फिसल कर गिरा और मर गया या किसी चीज़ की ठोकर लगी वोह मर गया तो तावान दे।[5] (عالمگیری)

मस्अला 16 ह़रम का जानवर पकड़ लाया और उसे बैरूने ह़रम छोड़ दिया, अब किसी ने मार डाला तो पकड़ने वाले पर कफ़्फ़ारा लाज़िम है और अगर किसी ने न भी मारा तो जब तक अम्न के साथ ह़रम की ज़मीन में पहुंच जाना मालूम न हो, कफ़्फ़ारे से बरी न होगा।[6] (منسک)

मस्अला 17 जानवर ह़रम से बाहर था और उस का बहुत छोटा बच्चा ह़रम के अन्दर, ग़ैर मोह़रिम ने उस जानवर को मारा तो इस का कफ़्फ़ारा नहीं मगर बच्चा भूक से मर जाएगा तो बच्चे का कफ़्फ़ारा देना होगा।[7] (منسک)

मस्अला 18 हिरनी को ह़रम से निकाला वोह बच्चे जनी फिर वोह मर गई और बच्चे भी तो सब का तावान दे और अगर तावान देने के बाद जनी तो बच्चों का तावान लाज़िम

1 ..... انظر:"الدر المختار" و"رد المحتار"، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٧. و "البحر الرائق"، كتاب الحج، باب الجنايات، فصل ان قتل محرم صيداً، ج٣، ص٦٩. و "لباب المناسك" ، (باب الجنايات، فصل في صيد الحرم)، ص٣٧٦.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥١.
3 ..... المرجع السابق، ص٢٥٢. 4 ..... المرجع السابق. 5 ..... المرجع السابق.
6 ..... "لباب المناسك" ، (باب الجنايات، فصل في أخذ الصيد و ارساله)، ص٣٦٨.
7 ..... "لباب المناسك" ، (باب الجنايات، فصل في صيد الحرم)، ص٣٧٧.

www.dawateislami.net

नहीं ।[1] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 19 परिन्द दरख़्त पर बैठा हुवा है और वोह दरख़्त ह़रम से बाहर है मगर जिस शाख़ पर बैठा है वोह ह़रम में है तो उसे मारना ह़राम है ।[2] (درمختار وغیرہ)

(15) ह़रम के पेड़ वग़ैरा काटना

मस्अला 1 ह़रम के दरख़्त चार क़िस्म हैं : ① किसी ने उसे बोया है और वोह ऐसा दरख़्त है जिसे लोग बोया करते हैं । ② बोया है मगर उस क़िस्म का नहीं जिसे लोग बोया करते हैं । ③ किसी ने उसे बोया नहीं मगर उस क़िस्म से है जिसे लोग बोया करते हैं । ④ बोया नहीं, न उस क़िस्म से है जिसे लोग बोते हैं ।

पहली तीन क़िस्मों के काटने वग़ैरा में कुछ नहीं यानी इस पर जुर्माना नहीं । रहा येह कि वोह अगर किसी की मिल्क है तो मालिक तावान लेगा, चौथी क़िस्म में जुर्माना देना पड़ेगा और किसी की मिल्क है तो मालिक तावान भी लेगा और जुर्माना उसी वक़्त है कि तर हो और टूटा या उखड़ा हुवा न हो । जुर्माना येह है कि उस की क़ीमत का ग़ल्ला ले कर मसाकीन पर तसद्दुक़ करे, हर मिस्कीन को एक सदक़ा और अगर क़ीमत का ग़ल्ला पूरे सदक़े से कम है तो एक ही मिस्कीन को दे और इस के लिये ह़रम के मसाकीन होना ज़रूरी नहीं और येह भी हो सकता है कि क़ीमत ही तसद्दुक़ कर दे और येह भी हो सकता है कि इस क़ीमत का जानवर ख़रीद कर ह़रम में ज़ब्ह़ कर दे रोज़ा रखना काफ़ी नहीं ।[3] (عالمگیری، درمختار وغیرہما)

मस्अला 2 दरख़्त उखेड़ा और उस की क़ीमत भी दे दी, जब भी उस से किसी क़िस्म का नफ़्अ़ लेना जाइज़ नहीं और अगर बेच डाला तो बैअ़ हो जाएगी मगर उस की क़ीमत तसद्दुक़ कर दे ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 3 जो दरख़्त सूख गया उसे उखाड़ सकता है और उस से नफ़्अ़ भी उठा सकता है ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 4 दरख़्त उखाड़ा और तावान भी अदा कर दिया फिर उसे वहीं लगा दिया

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٧٠٤، وغيره.
2 ..... المرجع السابق ص٦٨٦.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٢_٢٥٣.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٣.
5 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

और वोह जम गया फिर उसी को उखाड़ा तो अब तावान नहीं।[1] (عالمگیری)

मस्अला 5 दरख़्त के पत्ते तोड़े अगर उस से दरख़्त को नुक़्सान न पहुंचा तो कुछ नहीं। यूंही जो दरख़्त फलता है उसे भी काटने में तावान नहीं जब कि मालिक से इजाज़त ले ली हो उसे क़ीमत दे दे।[2] (درمختار)

मस्अला 6 चन्द शख़्सों ने मिल कर दरख़्त काटा तो एक ही तावान है जो सब पर तक़्सीम हो जाएगा, ख़्वाह सब मोहरिम हों या ग़ैर मोहरिम या बाज़ मोहरिम बाज़ ग़ैर मोहरिम।[3] (عالمگیری)

मस्अला 7 हरम के पीलू या किसी दरख़्त की मिस्वाक बनाना जाइज़ नहीं।[4] (عالمگیری)

मस्अला 8 जिस दरख़्त की जड़ हरम से बाहर है और शाख़ें हरम में वोह हरम का दरख़्त नहीं और अगर तने का बाज़ हिस्सा हरम में है और बाज़ बाहर तो वोह हरम का है।[5] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 9 अपने या जानवर के चलने में या ख़ैमा नस्ब करने में कुछ दरख़्त जाते रहे तो कुछ नहीं।[6] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 10 ज़रूरत की वज्ह से फ़तवा इस पर है कि वहां की घास जानवरों को चराना जाइज़ है। बाक़ी काटना, उखाड़ना, इस का वोही हुक्म है जो दरख़्त का है। सिवा इज़्ख़िर और सूखी घास के कि इन से हर तरह़ इन्तिफ़ाअ़ जाइज़ है। खुम्बी के तोड़ने, उखाड़ने में कुछ मुज़ायक़ा नहीं।[7] (درمختار، ردالمحتار)

(16) जूं मारना

मस्अला 1 अपनी जूं अपने बदन या कपड़ों में मारी या फेंक दी तो एक में रोटी का

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٣.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٥.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب التاسع في الصيد، ج١، ص٢٥٣.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع عشر في النذر بالحج، ج١، ص٢٦٤.
5 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٦، وغيره.
6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٦.
7 ..... المرجع السابق، ص٦٨٨.

www.dawateislami.net

टुकड़ा और दो या तीन हों तो एक मुट्ठी अनाज और इस से ज़ियादा में सदक़ा ।[1] (درمختار)

मस्अला 2 जूएं मरने को सर या कपड़ा धोया या धूप में डाला, जब भी येही कफ़्फ़ारे हैं जो मारने में थे ।[2] (درمختار)

मस्अला 3 दूसरे ने उस के कहने या इशारा करने से उस की जूं मारी, जब भी उस पर कफ़्फ़ारा है अगर्चे दूसरा एह़राम में न हो ।[3] (درمختار)

मस्अला 4 ज़मीन वग़ैरा पर गिरी हुई जूं या दूसरे के बदन या कपड़ों की मारने में इस पर कुछ नहीं अगर्चे वोह दूसरा भी एह़राम में हो ।[4] (بحر)

मस्अला 5 कपड़ा भीग गया था सुखाने के लिये धूप में रखा, उस से जूएं मर गईं मगर येह मक़्सूद न था तो कुछ ह़रज नहीं ।[5] (منسک متوسط)

मस्अला 6 ह़रम की ख़ाक या कंकरी लाने में ह़रज नहीं ।[6] (عالمگیری)

(17) बग़ैर एह़राम मीक़ात से गुज़रना

मस्अला 1 मीक़ात के बाहर से जो शख़्स आया और बग़ैर एह़राम मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को गया तो अगर्चे न ह़ज का इरादा हो, न उ़मरह का मगर ह़ज या उ़मरह वाजिब हो गया फिर अगर मीक़ात को वापस न गया, यहीं एह़राम बांध लिया तो दम वाजिब है और मीक़ात को वापस जा कर एह़राम बांध कर आया तो दम साक़ित़ और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल होने से जो उस पर ह़ज या उ़मरह वाजिब हुवा था उस का एह़राम बांधा और अदा किया तो बरिय्युज़्ज़िम्मा हो गया । यूंही अगर ह़िज्जतुल इस्लाम या नफ़्ल या मन्नत का उ़मरह या ह़ज जो उस पर था, उस का एह़राम बांधा और उसी साल अदा किया जब भी बरिय्युज़्ज़िम्मा हो गया और अगर उस साल अदा न किया तो उस से बरिय्युज़्ज़िम्मा न हुवा, जो मक्के में जाने से वाजिब हुवा था ।[7] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٦٨٩. 2 ..... المرجع السابق. 3 ..... المرجع السابق.
4 ..... "البحر الرائق"، كتاب الحج، باب الجنايات، فصل ان قتل محرم صيداً، ج٣، ص٦١.
5 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الجنايات ،فصل في قتل القمل)، ص ٣٧٨.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع عشر فى النذر بالحج، ج١، ص٢٦٤.
7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب العاشر في مجاوزة الميقات بغير احرام، ج١، ص٢٥٣.
و"الدرالمختار" و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، مطلب لايجب الضمان بكسر آلات اللهو، ج٣، ص٧١١.

www.dawateislami.net

मस्अला 2 चन्द बार बग़ैर एह़राम मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को गया, पिछली बार मीक़ात को वापस आ कर ह़ज या उ़मरह का एह़राम बांध कर अदा किया तो सिर्फ़ इस बार जो ह़ज या उ़मरह वाजिब हुवा था, उस से बरिय्युज़्ज़िम्मा हुवा, पहलों से नहीं।[1] (عالمگیری)

मस्अला 3 ह़ज या उ़मरह का इरादा है और बग़ैर एह़राम मीक़ात से आगे बढ़ा तो अगर येह अन्देशा है कि मीक़ात को वापस जाएगा तो ह़ज फ़ौत हो जाएगा तो वापस न हो, वहीं से एह़राम बांध ले और दम दे और अगर येह अन्देशा न हो तो वापस आए। फिर अगर मीक़ात को बग़ैर एह़राम आया तो दम साक़ित़। यूंही अगर एह़राम बांध कर आया और लब्बैक कह चुका है तो दम साक़ित़ और नहीं कहा तो नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 4 मीक़ात से बग़ैर एह़राम गया फिर उ़मरह का एह़राम बांधा और उ़मरह को फ़ासिद कर दिया, फिर मीक़ात से एह़राम बांध कर उ़मरह की क़ज़ा की तो मीक़ात से बे एह़राम गुज़रने का दम साक़ित़ हो गया।[3] (درمختار)

मस्अला 5 मुतमत्तेअ़ ने ह़रम के बाहर से ह़ज का एह़राम बांधा, उसे हुक्म है कि जब तक वुक़ूफ़े अ़रफ़ा न किया और ह़ज फ़ौत होने का अन्देशा न हो तो ह़रम को वापस आए अगर वापस न आया तो दम वाजिब है और अगर वापस हुवा और लब्बैक कह चुका है तो दम साक़ित़ है, नहीं तो नहीं और बाहर जा कर एह़राम नहीं बांधा था और वापस आया और यहां से एह़राम बांधा तो कुछ नहीं। मक्के में जिस ने इक़ामत कर ली है उस का भी येही हुक्म है और अगर मक्के वाला किसी काम से ह़रम से बाहर गया था और वहीं से ह़ज का एह़राम बांध कर वुक़ूफ़ कर लिया तो कुछ नहीं और अगर उ़मरह का एह़राम ह़रम में बांधा तो दम लाज़िम आया।[4] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 6 ना बालिग़ बग़ैर एह़राम मीक़ात से गुज़रा फिर बालिग़ हो गया और वहीं से एह़राम बांध लिया तो दम लाज़िम नहीं और ग़ुलाम अगर बग़ैर एह़राम गुज़रा फिर उस के आक़ा ने एह़राम की इजाज़त दे दी और उस ने एह़राम बांध लिया तो दम लाज़िम है जब आज़ाद हो अदा करे।[5] (عالمگیری)

मस्अला 7 मीक़ात से बग़ैर एह़राम गुज़रा फिर उ़मरह का एह़राम बांधा इस के बाद ह़ज का या क़िरान किया तो दम लाज़िम है और अगर पहले ह़ज का बांधा फिर ह़रम में उ़मरह का

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب العاشر في مجاوزة الميقات بغير احرام، ج١، ص٢٥٣، ٢٥٤.
2 ..... المرجع السابق ص٢٥٣. 3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٧١٣.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب العاشر في مجاوزة الميقات بغير احرام، ج١، ص٢٥٤. و"ردالمحتار"،
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب العاشر في مجاوزة الميقات بغير احرام، ج١، ص٢٥٣.

www.dawateislami.net

तो दो दम ।[1] (عالمگیری)

(18) एह़राम होते हुए दूसरा एह़राम बांधना

मस्अला 1 जो शख़्स मीक़ात के अन्दर रहता है उस ने ह़ज के महीनों में उ़मरह का त़वाफ़ एक फेरा भी कर लिया, इस के बाद ह़ज का एह़राम बांधा तो उसे तोड़ दे और दम वाजिब है । इस साल उ़मरह कर ले, साले आइन्दा ह़ज और अगर उ़मरह तोड़ कर ह़ज किया तो उ़मरह साक़ित़ हो गया और दम दे और दोनों कर लिये तो हो गए मगर गुनहगार हुवा और दम वाजिब ।[2] (درمختار)

मस्अला 2 ह़ज का एह़राम बांधा फिर अ़रफ़े के दिन या रात में दूसरे ह़ज का एह़राम बांधा तो उसे तोड़ दे और दम दे और ह़ज्जो उ़मरह उस पर वाजिब और अगर दसवीं को दूसरे ह़ज का एह़राम बांधा और ह़ल्क़ कर चुका है तो ब दस्तूर एह़राम में रहे और दूसरे को साले आइन्दा में पूरा करे और दम वाजिब नहीं और ह़ल्क़ नहीं किया है तो दम वाजिब ।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 3 उ़मरह के तमाम अफ़्आ़ल कर चुका था सिर्फ़ ह़ल्क़ बाक़ी था कि दूसरे उ़मरह का एह़राम बांधा तो दम वाजिब है और गुनहगार हुवा ।[4] (درمختار)

मस्अला 4 बाहर के रहने वाले ने पहले ह़ज का एह़राम बांधा और त़वाफ़े कुदूम से पेश्तर उ़मरह का एह़राम बांध लिया तो क़ारिन हो गया मगर इसाअत हुई और शुक्राने की कुरबानी करे और उ़मरह के अक्सर त़वाफ़ यानी चार फेरे से पहले वुक़ूफ़ कर लिया तो उ़मरह बात़िल हो गया ।[5] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 5 त़वाफ़े कुदूम का एक फेरा भी कर लिया तो उ़मरह का एह़राम बांधना जाइज़ नहीं फिर भी अगर बांध लिया तो बेहतर येह है कि उ़मरह तोड़ दे और क़ज़ा करे और दम दे और अगर नहीं तोड़ा और दोनों कर लिये तो दम दे ।[6] (درمختار)

मस्अला 6 दसवीं से तेरहवीं तक ह़ज करने वाले को उ़मरह का एह़राम बांधना मम्नूअ़ है, अगर बांधा तो तोड़ दे और उस की क़ज़ा करे और दम दे और कर लिया तो हो गया मगर दम वाजिब है ।[7] (درمختار)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب العاشر في مجاوزة الميقات بغير احرام، ج١، ص٢٥٣.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٧١٣.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، مطلب لايجب الضمان بكسر آلات اللّهو، ج٣، ص٧١٥.
4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٧١٦.
5 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الجنايات، مطلب لايجب الضمان... إلخ، ج٣، ص٧١٧.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الجنايات، ج٣، ص٧١٧. 7 .....المرجع السابق ص٧١٨.

www.dawateislami.net

मुह़सर का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ فَاِنْ اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَیْسَرَ مِنَ الْهَدْیِ ۚ وَ لَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى یَبْلُغَ الْهَدْیُ مَحِلَّهٗ ؕ ﴾[1]

अगर ह़ज व उ़मरह से तुम रोक दिये जाओ तो जो क़ुरबानी मुयस्सर आए करो और अपने सर न मुंडाओ, जब तक क़ुरबानी अपनी जगह (ह़रम) में न पहुंच जाए।

और फ़रमाता है :

﴿ اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ یَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِیْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ِۨ الْعَاكِفُ فِیْهِ وَ الْبَادِ ؕ وَ مَنْ یُّرِدْ فِیْهِ بِاِلْحَادٍۭ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴾[2]

बेशक वोह जिन्हों ने कुफ़्र किया और रोकते हैं **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की राह से और मस्जिदे ह़राम से, जिस को हम ने सब लोगों के लिये मुक़र्रर किया, उस में वहां के रहने वाले और बाहर वाले बराबर ह़क़ रखते हैं और जो इस में नाह़क़ ज़ियादती का इरादा करे, हम उसे दर्दनाक अ़ज़ाब चखाएंगे।

अह़ादीस

ह़दीस 1 सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी कि हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के साथ चले, कुफ़्फ़ारे क़ुरैश काबा तक जाने से मानेअ़ हुए, नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने क़ुरबानियां कीं और सर मुंडाया और सह़ाबा ने बाल कतरवाए।[3] नीज़ बुख़ारी में मिस्वर बिन मख़रमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ह़ल्क़ से पहले क़ुरबानी की और सह़ाबा को भी इसी का हुक्म फ़रमाया।[4]

ह़दीस 2 अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह व दारिमी ह़ज्जाज बिन अ़म्र अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस की हड्डी टूट

1 ..... پ٢، البقرة: ١٩٦. 2 ..... پ١٧، الحج: ٢٥.
3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب المغازي، باب غزوة الحديبية، الحديث: ٤١٨٥، ج٣، ص٧٥.
4 ..... "صحيح البخاري"، أبواب المحصر و جزاء الصيد، باب النحر قبل الحلق فى الحصر، الحديث: ١٨١١، ج١، ص٥٩٧.

www.dawateislami.net

जाए या लंगड़ा हो जाए तो एह़राम खोल सकता है और साले आइन्दा उस को ह़ज करना होगा।"[1] और अबू दावूद की एक रिवायत में है : या बीमार हो जाए।[2]

मस्अला 1 जिस ने ह़ज या उ़मरह का एह़राम बांधा मगर किसी वज्ह से पूरा न कर सका, उसे मुह़सर कहते हैं। जिन वुजूह से ह़ज या उ़मरह न कर सके वोह येह हैं : ① दुश्मन। ② दरिन्दा। ③ मरज़ कि सफ़र करने और सुवार होने में उस के ज़ियादा होने का गुमाने ग़ालिब है। ④ हाथ पाउं टूट जाना। ⑤ क़ैद। ⑥ औ़रत के मह़रम या शौहर जिस के साथ जा रही थी उस का इन्तिक़ाल हो जाना। ⑦ इ़द्दत। ⑧ मसारिफ़ या सुवारी का हलाक हो जाना। ⑨ शौहर ह़ज्जे नफ़्ल में औ़रत को और मौला लौंडी ग़ुलाम को मन्अ़ कर दे।

मस्अला 2 मसारिफ़ चोरी गए या सुवारी का जानवर हलाक हो गया, तो अगर पैदल नहीं चल सकता तो मुह़सर है वरना नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 3 सूरते मज़्कूरा में फ़िलह़ाल तो पैदल चल सकता है मगर आइन्दा मजबूर हो जाएगा, उसे एह़राम खोल देना जाइज़ है।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 4 औ़रत का शौहर या मह़रम मर गया और वहां से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा मसाफ़ते सफ़र यानी तीन दिन की राह से कम है तो मुह़सर नहीं और तीन दिन या ज़ियादा की राह है तो अगर वहां ठहरने की जगह है तो मुह़सर है वरना नहीं।[5] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 5 औ़रत ने बग़ैर शौहर या मह़रम के एह़राम बांधा तो वोह भी मुह़सर है कि उसे बग़ैर इन के सफ़र ह़राम है।[6] (عالمگیری)

मस्अला 6 औ़रत ने ह़ज्जे नफ़्ल का एह़राम बग़ैर इजाज़ते शौहर बांधा तो शौहर मन्अ़ कर सकता है, लिहाज़ा अगर मन्अ़ कर दे तो मुह़सर है अगर्चे उस के साथ मह़रम भी हो और ह़ज्जे फ़र्ज़ को मन्अ़ नहीं कर सकता, अलबत्ता अगर वक़्त से बहुत पहले एह़राम बांधा तो

1 ..... "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، باب الاحصار، الحديث: ١٨٦٢، ج٢، ص٢٥١.
2 ..... "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، باب الاحصار، الحديث: ١٨٦٣، ج٢، ص٢٥٢.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٢٥٥.
4 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٥.
5 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٥.
و "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٢٥٥.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٢٥٥.

www.dawateislami.net

शौहर खुलवा सकता है।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 7 मौला ने ग़ुलाम को इजाज़त दे दी फिर भी मन्अ़ करने का इख़्तियार है अगर्चे बग़ैर ज़रूरत मन्अ़ करना मक्रूह है और लौंडी को मौला ने इजाज़त दे दी तो उस के शौहर को रोकने का ह़क़ ह़ासिल नहीं है।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 8 औ़रत ने एह़राम बांधा इस के बाद शौहर ने त़लाक़ दे दी, तो मुह़सरा है अगर्चे मह़रम भी हमराह मौजूद हो।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 9 मुह़सर को येह इजाज़त है कि ह़रम को क़ुरबानी भेज दे, जब क़ुरबानी हो जाएगी उस का एह़राम खुल जाएगा या क़ीमत भेज दे कि वहां जानवर ख़रीद कर ज़ब्ह़ कर दिया जाए बग़ैर इस के एह़राम नहीं खुल सकता, जब तक मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पहुंच कर त़वाफ़ व सई व ह़ल्क़ न कर ले, रोज़ा रखने या सदक़ा देने से काम न चलेगा अगर्चे क़ुरबानी की इस्तित़ाअ़त न हो। एह़राम बांधते वक़्त अगर शर्त़ लगाई है कि किसी वज्ह से वहां तक न पहुंच सकूं तो एह़राम खोल दूंगा, जब भी येही ह़ुक्म है इस शर्त़ का कुछ असर नहीं।[4]

(عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 10 येह ज़रूरी अम्र है कि जिस के हाथ क़ुरबानी भेजे उस से ठहरा ले कि फ़ुलां दिन फ़ुलां वक़्त क़ुरबानी ज़ब्ह़ हो और वोह वक़्त गुज़रने के बाद एह़राम से बाहर होगा फिर अगर उसी वक़्त क़ुरबानी हुई जो ठहरा था या उस से पेश्तर फ़बिहा और अगर बाद में हुई और उसे अब मालूम हुवा तो ज़ब्ह़ से पहले चूंकि एह़राम से बाहर हुवा लिहाज़ा दम दे। मुह़सर को एह़राम से बाहर आने के लिये ह़ल्क़ शर्त़ नहीं मगर बेहतर है।[5] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 11 मुह़सर अगर मुफ़रिद हो यानी सिर्फ़ ह़ज या सिर्फ़ उ़मरह का एह़राम बांधा है तो एक क़ुरबानी भेजे और दो भेजीं तो पहली ही के ज़ब्ह़ से एह़राम खुल गया और क़ारिन हो तो दो भेजे एक से काम न चलेगा।[6] (درمختار وغیرہ)

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٦.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٦.
3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٦.
4 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٦.
و"الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٢٥٥.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٢٥٥.
6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٦، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 12 इस कुरबानी के लिये ह़रम शर्त़ है बैरूने ह़रम नहीं हो सकती । दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं तारीख़ों की शर्त़ नहीं, पहले और बाद को भी हो सकती है ।[1] (درمختار)

मस्अला 13 क़ारिन ने अपने ख़याल से दो[2] कुरबानियों के दाम भेजे और वहां इन दामों की एक ही मिली और ज़ब्ह़ कर दी तो येह ना काफ़ी है ।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 14 क़ारिन ने दो कुरबानियां भेजीं और येह मुअ़य्यन न किया कि येह ह़ज की है और येह उ़मरह की तो भी कुछ मुज़ायक़ा नहीं मगर बेहतर येह है कि मुअ़य्यन कर दे कि येह ह़ज की है और येह उ़मरह की ।[3] (عالمگیری)

मस्अला 15 क़ारिन ने उ़मरह का त़वाफ़ किया और वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पेश्तर मुह़सर हुवा तो एक कुरबानी भेजे और ह़ज के बदले एक ह़ज और एक उ़मरह करे दूसरा उ़मरह उस पर नहीं ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 16 अगर एह़राम में ह़ज या उ़मरह किसी की निय्यत नहीं थी तो एक जानवर भेजना काफ़ी है और एक उ़मरह करना होगा और अगर निय्यत थी मगर येह याद नहीं कि काहे की निय्यत थी तो एक जानवर भेज दे और एक ह़ज और एक उ़मरह करे और अगर दो ह़ज का एह़राम बांधा तो दो दम दे कर एह़राम खोले और दो उ़मरह का एह़राम बांधा और अदा करने के लिये मक्कए मुअ़ज़्ज़मा को चला मगर न जा सका तो एक दम दे और चला न था कि मुह़सर हो गया तो दो दम दे और उस को दो उ़मरह करने होंगे ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 17 औ़रत ने ह़ज्जे नफ़्ल का एह़राम बांधा था अगर्चे शौहर की इजाज़त से फिर शौहर ने एह़राम खुलवा दिया, तो उस का एह़राम खुलने के लिये कुरबानी का ज़ब्ह़ हो जाना ज़रूरी नहीं बल्कि हर ऐसा काम जो एह़राम में मन्अ़ था उस के करने से एह़राम से बाहर हो गई मगर उस पर भी कुरबानी या उस की क़ीमत भेजना ज़रूरी है और अगर ह़ज का एह़राम था तो एक ह़ज और एक उ़मरह क़ज़ा करना होगा और अगर शौहर या मह़रम के मर जाने से मुह़सरा हुई या ह़ज्जे फ़र्ज़ का एह़राम था और बग़ैर मह़रम जा रही थी शौहर ने मन्अ़ कर दिया तो इस में बग़ैर कुरबानी ज़ब्ह़ हुए एह़राम से बाहर नहीं हो सकती ।[6] (منسک)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٧.
2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٧.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٢٥٥.
4 ..... المرجع السابق. 5 ..... المرجع السابق، ص٢٥٥-٢٥٦.
6 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الاحصار)، ص٤٢٢-٤٢٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 18 मुह़्सर ने क़ुरबानी नहीं भेजी वैसे ही घर को चला आया और एह़राम बांधे हुए रह गया तो येह भी जाइज़ है।[1] (درمختار)

मस्अला 19 वोह मानेअ़ जिस की वज्ह से रुकना हुवा था जाता रहा और वक़्त इतना है कि ह़ज और क़ुरबानी दोनों पा लेगा, तो जाना फ़र्ज़ है अब अगर गया और ह़ज पा लिया फ़बिहा, वरना उ़मरह कर के एह़राम से बाहर हो जाए और क़ुरबानी का जानवर जो भेजा था मिल गया तो जो चाहे करे।[2] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 20 मानेअ़ जाता रहा और उसी साल ह़ज किया तो क़ज़ा की निय्यत न करे और अब मुफ़रिद पर उ़मरह भी वाजिब नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 21 वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बाद इह़सार नहीं हो सकता और अगर मक्के ही में है मगर त़वाफ़ और वुक़ूफ़े अ़रफ़ा दोनों पर क़ादिर न हो तो मुह़्सर है और दोनों में से एक पर क़ादिर है तो नहीं।[4] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 22 मुह़्सर क़ुरबानी भेज कर जब एह़राम से बाहर हो गया अब उस की क़ज़ा करना चाहता है तो अगर सिर्फ़ ह़ज का एह़राम था तो एक ह़ज और एक उ़मरह करे और क़िरान था तो एक ह़ज दो उ़मरह और येह इख़्तियार है कि क़ज़ा में क़िरान करे, फिर एक उ़मरह या तीनों अलग अलग करे और अगर एह़राम उ़मरह का था तो सिर्फ़ एक उ़मरह करना होगा।[5]

(عالمگیری وغیرہ)

ह़ज फ़ौत होने का बयान

ह़दीस 1 अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई व इब्ने माजह व दारिमी अ़ब्दुर्रह़मान बिन यअ़मर दैली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, कहते हैं मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि : "ह़ज अ़रफ़ा है, जिस ने मुज़्दलिफ़ा की रात में तुलूए़ फ़ज्र से क़ब्ल वुक़ूफ़े अ़रफ़ा पा लिया उस ने ह़ज पा लिया।"[6]

---

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٧.
2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الاحصار، ج٤، ص٨، وغيره.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٢٥٦.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٢٥٦، وغيره.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثاني عشر في الاحصار، ج١، ص٢٥٥، وغيره.
6 ..... "سنن النسائي"، كتاب مناسك الحج، باب فرض الوقوف بعرفة، الحديث: ٣٠١٩، ص٢٢٨٢.

www.dawateislami.net

ह़दीस 2 दारे कुत़्नी ने इब्ने उ़मर व इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस का वुक़ूफ़े अ़रफ़ा रात तक में फ़ौत हो गया, उस का ह़ज फ़ौत हो गया तो अब उसे चाहिये कि उ़मरह कर के एह़राम खोल डाले और साले आइन्दा ह़ज करे ।"[1]

मसाइले फ़िक़्ह़िय्या

मस्अला 1 जिस का ह़ज फ़ौत हो गया यानी वुक़ूफ़े अ़रफ़ा उसे न मिला तो त़वाफ़ व सई कर के सर मुंडा कर या बाल कतरवा कर एह़राम से बाहर हो जाए और साले आइन्दा ह़ज करे और उस पर दम वाजिब नहीं ।[2] (جوہرہ)

मस्अला 2 क़ारिन का ह़ज फ़ौत हो गया तो उ़मरह के लिये सई व त़वाफ़ करे फिर एक और त़वाफ़ व सई कर के ह़ल्क़ करे और दमे क़िरान जाता रहा और पिछला त़वाफ़ जिसे कर के एह़राम से बाहर होगा उसे शुरूअ़ करते ही लब्बैक मौक़ूफ़ कर दे और साले आइन्दा ह़ज की क़ज़ा करे, उ़मरह की क़ज़ा नहीं क्यूं कि उ़मरह कर चुका ।[3] (منسک، عالمگیری)

मस्अला 3 तमत्तोअ़ वाला क़ुरबानी का जानवर लाया था और तमत्तोअ़ बात़िल हो गया तो जानवर को जो चाहे करे ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 4 उ़मरह फ़ौत नहीं हो सकता कि इस का वक़्त उ़म्र भर है और जिस का ह़ज फ़ौत हो गया उस पर त़वाफ़े सद्र नहीं ।[5] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 5 जिस का ह़ज फ़ौत हुवा उस ने त़वाफ़ व सई कर के एह़राम न खोला और उसी एह़राम से साले आइन्दा ह़ज किया तो येह ह़ज सह़ीह़ न हुवा ।[6] (منسک)

ह़ज्जे बदल का बयान

ह़दीस 1 दारे कुत़्नी इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

1 ..... "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث: ٢٤٩٦، ج٢، ص٣٠٥.
2 ..... "الجوهرة النيرة"، كتاب الحج، باب الفوات، ص٢٣٢.
3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث عشر في فوات الحج، ج١، ٢٥٦.
و"لباب المناسك"، (باب الفوات)، ص٤٣٠.
4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث عشر في فوات الحج، ج١، ٢٥٦.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الثالث عشر في فوات الحج، ج١، ٢٥٦.
6 ..... "لباب المناسك"، (باب الفوات)، ص٤٣١.

www.dawateislami.net

ने फ़रमाया : ''जो अपने वालिदैन की त़रफ़ से ह़ज करे या उन की त़रफ़ से तावान अदा करे, रोज़े क़ियामत अबरार के साथ उठाया जाएगा।''(1)

ह़दीस 2 नीज़ जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : ''जो अपने मां बाप की त़रफ़ से ह़ज करे तो उन का ह़ज पूरा कर दिया जाएगा और उस के लिये दस ह़ज का सवाब है।''(2)

ह़दीस 3 नीज़ ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जब कोई अपने वालिदैन की त़रफ़ से ह़ज करेगा तो मक़्बूल होगा और उन की रूहें ख़ुश होंगी और येह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नज़्दीक नेकोकार लिखा जाएगा।''(3)

ह़दीस 4 अबू ह़फ़्स कबीर अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से सुवाल किया कि हम अपने मुर्दों की त़रफ़ से सदक़ा करते और उन की त़रफ़ से ह़ज करते और उन के लिये दुआ़ करते हैं, आया येह उन को पहुंचता है? फ़रमाया : ''हां, बेशक उन को पहुंचता है और बेशक वोह इस से ख़ुश होते हैं जैसे तुम्हारे पास त़बक़ में कोई चीज़ हदिय्या की जाए तो तुम ख़ुश होते हो।''(4)

ह़दीस 5 सह़ीहैन में इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि एक औ़रत ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! मेरे बाप पर ह़ज फ़र्ज़ है और वोह बहुत बूढ़े हैं कि सुवारी पर बैठ नहीं सकते, क्या मैं उन की त़रफ़ से ह़ज करूं? फ़रमाया : ''हां।''(5)

ह़दीस 6 अबू दावूद व तिरमिज़ी व नसाई अबी रज़ीन उ़क़ैली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी, येह नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! मेरे बाप बहुत बूढ़े हैं, ह़ज्जो उ़मरह नहीं कर सकते और हौदज पर भी नहीं बैठ सकते। फ़रमाया : ''अपने बाप की त़रफ़ से ह़ज्जो उ़मरह करो।''(6)

1 ..... "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث: ٢٥٨٥، ج٢، ص٣٢٨.
2 ..... "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث: ٢٥٨٧، ج٢، ص٣٢٩.
3 ..... "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث: ٢٥٨٤، ج٢، ص٣٢٨.
4 ..... "المسلك المتقسط" للقاري، (باب الحج عن الغير)، ص٤٣٣.
"ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فيمن أخذ في عبادته شيئًا من الدنيا، ج٤، ص١٥.
5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب الحج عن العاجز لزمانة ...إلخ، ١٣٣٤، ١٣٣٥، ص٦٩٦، ٦٩٧.
6 ..... "جامع الترمذي"، أبواب الحج، ٨٧ـباب، الحديث: ٩٣١، ج٢، ص٢٧٢.

www.dawateislami.net

मस्अला 1 इबादत तीन क़िस्म है : ① बदनी । ② माली । ③ मुरक्कब ।

इबादते बदनी में नियाबत नहीं हो सकती यानी एक की त़रफ़ से दूसरा अदा नहीं कर सकता । जैसे नमाज़, रोज़ा ।

माली में नियाबत बहर ह़ाल जारी हो सकती है जैसे ज़कात व सदक़ा ।

मुरक्कब में अगर आ़जिज़ हो तो दूसरा उस की त़रफ़ से कर सकता है वरना नहीं जैसे ह़ज ।

रहा सवाब पहुंचाना कि जो कुछ इबादत की उस का सवाब फ़ुलां को पहुंचे, इस में किसी इबादत की तख़्सीस नहीं, हर इबादत का सवाब दूसरे को पहुंचा सकता है । नमाज़, रोज़ा, ज़कात, सदक़ा, ह़ज, तिलावते क़ुरआन, ज़िक्र, ज़ियारते क़ुबूर, फ़र्ज़ व नफ़्ल सब का सवाब ज़िन्दा या मुर्दे को पहुंचा सकता है और येह न समझना चाहिये कि "फ़र्ज़ का पहुंचा दिया तो अपने पास क्या रह गया !" कि सवाब पहुंचाने से अपने पास से कुछ न गया, लिहाज़ा फ़र्ज़ का सवाब पहुंचाने से फिर वोह फ़र्ज़ औ़द न करेगा कि येह तो अदा कर चुका, इस के ज़िम्मे से साक़ित़ हो चुका वरना सवाब किस शै का पहुंचाता है ।[1] (درمختار، ردالمحتار، عالمگیری)

इस से बख़ूबी मालूम हो गया कि फ़ातिह़ए मुरव्वजा जाइज़ है कि वोह ईसाले सवाब है और ईसाले सवाब जाइज़ बल्कि मह़मूद, अलबत्ता किसी मुआ़वज़े पर ईसाले सवाब करना मसलन बाज़ लोग कुछ ले कर क़ुरआने मजीद का सवाब पहुंचाते हैं येह ना जाइज़ है कि पहले जो पढ़ चुका है उस का मुआ़वज़ा लिया, तो येह बैअ़ हुई और बैअ़ क़त़्अ़न बात़िल व ह़राम और अगर अब जो पढ़ेगा उस का सवाब पहुंचाएगा तो येह इजारा हुवा और त़ाअ़त पर इजारा बात़िल सिवा उन तीन चीज़ों के जिन का बयान आएगा ।[2] (ردالمحتار)

ह़ज्जे बदल के शराइत़

मस्अला 1 ह़ज्जे बदल के लिये चन्द शर्तें हैं :

① जो ह़ज्जे बदल कराता हो उस पर ह़ज फ़र्ज़ हो यानी अगर फ़र्ज़ न था और ह़ज्जे बदल कराया तो ह़ज्जे फ़र्ज़ अदा न हुवा, लिहाज़ा अगर बाद में ह़ज उस पर फ़र्ज़ हुवा तो येह ह़ज उस के लिये काफ़ी न होगा बल्कि अगर आ़जिज़ हो तो फिर ह़ज कराए और क़ादिर हो तो ख़ुद करे ।

② जिस की त़रफ़ से ह़ज किया जाए वोह आ़जिज़ हो यानी वोह ख़ुद ह़ज न कर सकता हो, अगर इस क़ाबिल हो कि ख़ुद कर सकता है तो उस की त़रफ़ से नहीं हो सकता अगर्चे बाद में आ़जिज़ हो गया, लिहाज़ा उस वक़्त अगर आ़जिज़ न था फिर आ़जिज़ हो गया तो अब दोबारा ह़ज कराए ।

---

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب في اهداء ثواب الاعمال للغير، ج٤، ص١٢-١٧.
و"الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير ج١، ٢٥٧.

2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، مطلب فى اهداء ثواب الاعمال، ج٤، ص١٣.

www.dawateislami.net

③ वक़्ते ह़ज से मौत तक उ़ज़्र बराबर बाक़ी रहे, अगर दरमियान में इस क़ाबिल हो गया कि ख़ुद ह़ज करे तो पहले जो ह़ज किया जा चुका है वोह ना काफ़ी है। हां अगर वोह कोई ऐसा उ़ज़्र था जिस के जाने की उम्मीद ही न थी और इत्तिफ़ाक़न जाता रहा तो वोह पहला ह़ज जो उस की त़रफ़ से किया गया काफ़ी है मसलन वोह नाबीना है और ह़ज कराने के बाद अंख्यारा हो गया तो अब दोबारा ह़ज कराने की ज़रूरत न रही।

④ जिस की त़रफ़ से किया जाए उस ने हुक्म दिया हो, बग़ैर उस के हुक्म के नहीं हो सकता। हां वारिस ने मूरिस की त़रफ़ से किया तो इस में हुक्म की ज़रूरत नहीं।

⑤ मसारिफ़ उस के माल से हों जिस की त़रफ़ से ह़ज किया जाए, लिहाज़ा अगर मामूर ने अपना माल सर्फ़ किया ह़ज्जे बदल न हुवा यानी जब कि तबर्रुअ़न ऐसा किया हो और अगर कुल या अक्सर अपना माल सर्फ़ किया और जो कुछ उस ने दिया इतना है कि ख़र्च उस में से वुसूल कर लेगा तो हो गया और इतना नहीं कि जो कुछ अपना ख़र्च किया है वुसूल कर ले तो अगर ज़ियादा हिस्सा उस का है जिस ने हुक्म दिया है तो हो गया, वरना नहीं।

मस्अला 2 अपना और उस का माल एक में मिला दिया और जितना उस ने दिया था उतना या उस में से ज़ियादा हिस्से की बराबर ख़र्च किया तो ह़ज्जे बदल हो गया और इस मिलाने की वज्ह से उस पर तावान लाज़िम न आएगा बल्कि अपने साथियों के माल के साथ भी मिला सकता है।[1] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 3 वसिय्यत की थी कि मेरे माल से ह़ज करा दिया जाए और वारिस ने अपने माल से तबर्रुअ़न कराया तो ह़ज्जे बदल न हुवा और अगर अपने माल से ह़ज किया यूं कि जो ख़र्च होगा तर्के में से ले लेगा तो हो गया और लेने का इरादा न हो तो नहीं और अजनबी ने ह़ज्जे बदल अपने माल से करा दिया तो न हुवा अगर्चे वापस लेने का इरादा हो अगर्चे वोह ख़ुद उसी को ह़ज्जे बदल करने के लिये कह गया हो और अगर यूं वसिय्यत की, कि मेरी त़रफ़ से ह़ज्जे बदल करा दिया जाए और येह न कहा कि मेरे माल से और वारिस ने अपने माल से ह़ज करा दिया अगर्चे लेने का इरादा भी न हो, हो गया।[2] (ردالمحتار)

मस्अला 4 मय्यित की त़रफ़ से ह़ज करने के लिये माल दिया और वोह काफ़ी था मगर उस ने अपना माल भी कुछ ख़र्च किया है तो जो ख़र्च हुवा वुसूल कर ले और अगर नाकाफ़ी था मगर अक्सर मय्यित के माल से सर्फ़ हुवा तो मय्यित की त़रफ़ से हो गया, वरना नहीं।[3] (عالمگیری)

⑥ जिस को हुक्म दिया वोही करे, दूसरे से उस ने ह़ज कराया तो न हुवा।

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٧. و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، مطلب في الاستئجار على الحج، ج٤، ص٢٣. 2 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، ج٤، ص٢٨.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 5 मय्यित ने वसिय्यत की थी कि मेरी त़रफ़ से फुलां शख़्स ह़ज करे और वोह मर गया या उस ने इन्कार कर दिया, अब दूसरे से ह़ज करा लिया गया तो जाइज़ है।[1] (ردالمحتار)

⑦ सुवारी पर ह़ज को जाए पैदल ह़ज किया तो न हुवा, लिहाज़ा सुवारी में जो कुछ सर्फ़ हुवा देना पड़ेगा। हां अगर ख़र्च में कमी पड़ी तो पैदल भी हो जाएगा। सुवारी से मुराद येह है कि अक्सर रास्ता सुवारी पर क़त़्अ़ किया हो।

⑧ उस के वत़न से ह़ज को जाए।

⑨ मीक़ात से ह़ज का एह़राम बांधे अगर उस ने इस का हुक्म किया हो।

⑩ उस की निय्यत से ह़ज करे और अफ़्ज़ल येह है कि ज़बान से भी لَبَّیْکَ عَنْ فُلَان[2] कह ले और अगर उस का नाम भूल गया है तो येह निय्यत कर ले कि जिस ने मुझे भेजा है उस की त़रफ़ से करता हूं और इन के इ़लावा और भी शराइत़ हैं जो ज़िम्नन मज़्कूर होंगी। येह शर्तें जो मज़्कूर हुईं ह़ज्जे फ़र्ज़ में हैं, ह़ज्जे नफ़्ल हो तो इन में से कोई शर्त नहीं।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 6 एह़राम बांधते वक़्त येह निय्यत न थी कि किस की त़रफ़ से ह़ज करता हूं तो जब तक ह़ज के अफ़्आ़ल शुरूअ़ न किये इख़्तियार है कि निय्यत कर ले।[4] (ردالمحتار)

मस्अला 7 जिस को भेजे उस से यूं न कहे कि मैं ने तुझे अपनी त़रफ़ से ह़ज करने के लिये अजीर बनाया या नौकर रखा कि इ़बादत पर इजारा कैसा, बल्कि यूं कहे कि मैं ने अपनी त़रफ़ से तुझे ह़ज के लिये हुक्म दिया और अगर इजारे का लफ़्ज़ कहा जब भी ह़ज हो जाएगा मगर उजरत कुछ न मिलेगी सिर्फ़ मसारिफ़ मिलेंगे।[5] (ردالمحتار)

मस्अला 8 ह़ज्जे बदल की सब शर्तें जब पाई जाएं तो जिस की त़रफ़ से किया गया उस का फ़र्ज़ अदा हुवा और येह ह़ज करने वाला भी सवाब पाएगा मगर इस ह़ज से उस का ह़िज्जतुल इस्लाम अदा न होगा।[6] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 9 बेहतर येह है कि ह़ज्जे बदल के लिये ऐसा शख़्स भेजा जाए जो ख़ुद ह़िज्जतुल इस्लाम (ह़ज्जे फ़र्ज़) अदा कर चुका हो और अगर ऐसे को भेजा जिस ने ख़ुद नहीं

---

1 ..... "ردالمحتار"، کتاب الحج، باب الحج عن الغیر، مطلب في الفرق بین العبادة والقربة والطاعة، ج٤، ص١٩.

2 ...फुलां की जगह जिस के नाम पर ह़ज करना चाहता है उस का नाम ले मसलन لبیک عَنْ عَبْدِ اللّٰه ।

3 ..... "ردالمحتار"، کتاب الحج، مطلب شروط الحج عن الغیر عشرون، ج٤، ص٢٠.

4 ..... "ردالمحتار"، کتاب الحج، باب الحج عن الغیر، مطلب في الفرق بین العبادة والقربة والطاعة، ج٤، ص١٨.

5 ..... "ردالمحتار"، کتاب الحج، باب الحج عن الغیر، مطلب في الاستئجار علی الحج، ج٤، ص٢٢.

6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، کتاب الحج، باب الحج عن الغیر، مطلب في الاستئجار علی الحج، ج٤، ص٢٤.

www.dawateislami.net

किया है जब भी ह़ज्जे बदल हो जाएगा।[1] (عالمگیری) और अगर ख़ुद उस पर ह़ज फ़र्ज़ हो और अदा न किया हो तो उसे भेजना मक्रूहे तह़रीमी है।[2] (منسک)

मस्अला 10 अफ़्ज़ल येह है कि ऐसे शख़्स को भेजें जो ह़ज के त़रीक़े और उस के अफ़्आ़ल से आगाह हो और बेहतर येह है कि आज़ाद मर्द हो और अगर आज़ाद औ़रत या ग़ुलाम या बांदी या मुराहिक़ यानी क़रीबुल बुलूग़ बच्चे से ह़ज कराया जब भी अदा हो जाएगा।[3] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 11 मज्नून या काफ़िर (मसलन वहाबिये ज़माना वग़ैरा) को भेजा तो अदा न हुवा कि येह इस के अह्ल ही नहीं।[4] (درمختار)

मस्अला 12 दो शख़्सों ने एक ही को ह़ज्जे बदल के लिये भेजा, इस ने एक ह़ज में दोनों की त़रफ़ से लब्बैक कहा तो दोनों में किसी की त़रफ़ से न हुवा बल्कि इस ह़ज करने वाले का हुवा और दोनों को तावान दे और अब अगर चाहे कि दोनों में से एक के लिये कर दे तो येह भी नहीं कर सकता और अगर एक की त़रफ़ से लब्बैक कहा मगर येह मुअ़य्यन न किया कि किस की त़रफ़ से तो अगर यूंही मुब्हम रखा जब भी किसी का न हुवा और अगर बाद में यानी अफ़्आ़ले ह़ज अदा करने से पहले मुअ़य्यन कर दिया तो जिस के लिये किया उस का हो गया और अगर एह़राम बांधते वक़्त कुछ न कहा कि किस की त़रफ़ से है न मुअ़य्यन न मुब्हम जब भी येही दोनों सूरतें हैं।[5] (عالمگیری)

मस्अला 13 मां बाप दोनों की त़रफ़ से ह़ज किया तो उसे इख़्तियार है कि उस ह़ज को बाप के लिये कर दे या मां के लिये और उस का ह़ज्जे फ़र्ज़ अदा होगा यानी जब कि उन दोनों ने उसे हुक्म न किया और अगर ह़ज का हुक्म दिया हो तो इस में भी वोही अह़काम हैं जो ऊपर मज़्कूर हुए और अगर बग़ैर कहे अपने आप दो शख़्सों की त़रफ़ से ह़ज्जे नफ़्ल का एह़राम बांधा तो इख़्तियार है जिस के लिये चाहे कर दे मगर इस से उस का फ़र्ज़ अदा न होगा जब कि वोह अजनबी है। यूंही सवाब पहुंचाने का भी इख़्तियार है बल्कि सवाब तो दोनों को पहुंचा सकता है।[6] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 14 ह़ज फ़र्ज़ होने के बाद मज्नून हो गया तो उस की त़रफ़ से ह़ज्जे बदल कराया जा सकता है।[7] (ردالمحتار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٢٥٧.

2 ..... "المسلك المتقسط" للقاري، (باب الحج عن الغير)، ص٤٥٣. 3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٢٥، وغيره.

4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٢٦. 5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٧.

6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر فى الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٧.
و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب العمل على القياس دون الاستحسان هنا، ج٤، ص٣١.

7 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب شروط الحج عن الغير عشرون، ج٤، ص٢١.

www.dawateislami.net

मस्अला 15 सिर्फ़ ह़ज या सिर्फ़ उ़मरह को कहा था उस ने दोनों का एह़राम बांधा, ख़्वाह दोनों उसी की त़रफ़ से किये या एक उस की त़रफ़ से, दूसरा अपनी या किसी और की त़रफ़ से बहर ह़ाल उस का ह़ज अदा न हुवा, तावान देना आएगा।[1] (عالمگیری)

मस्अला 16 ह़ज के लिये कहा था उस ने उ़मरह का एह़राम बांधा, फिर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से ह़ज का जब भी उस की मुख़ालफ़त हुई लिहाज़ा तावान दे।[2] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 17 ह़ज के लिये कहा था उस ने ह़ज करने के बाद उ़मरह किया या उ़मरह के लिये कहा था उस ने उ़मरह कर के ह़ज किया, तो इस में मुख़ालफ़त न हुई उस का ह़ज या उ़मरह अदा हो गया। मगर अपने ह़ज या उ़मरह के लिये जो ख़र्च किया ख़ुद इस के ज़िम्मे है, भेजने वाले पर नहीं और अगर उल्टा किया यानी जो उस ने कहा उसे बाद में किया तो मुख़ालफ़त हो गई, उस का ह़ज या उ़मरह अदा न हुवा, तावान दे।[3] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 18 एक शख़्स ने उस से ह़ज को कहा दूसरे ने उ़मरह को मगर उन दोनों ने जम्अ़ करने का हुक्म न दिया था, इस ने दोनों को जम्अ़ कर दिया तो दोनों का माल वापस दे और अगर येह कह दिया था कि जम्अ़ कर लेना तो जाइज़ हो गया।[4] (عالمگیری)

मस्अला 19 अफ़्ज़ल येह है कि जिसे ह़ज्जे बदल के लिये भेजा जाए वोह ह़ज कर के वापस आए और जाने आने के मसारिफ़ भेजने वाले पर हैं और अगर वहीं रह गया जब भी जाइज़ है।[5] (عالمگیری)

मस्अला 20 ह़ज के बाद क़ाफ़िले के इन्तिज़ार में जितने दिन ठहरना पड़े, उन दिनों के मसारिफ़ भेजने वाले के ज़िम्मे हैं और इस से ज़ाइद ठहरना हो तो ख़ुद उस के ज़िम्मे, मगर जब वहां से चला तो वापसी के मसारिफ़ भेजने वाले पर हैं, और अगर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में बिल्कुल रहने का इरादा कर लिया तो अब वापसी के अख़राजात भी भेजने वाले पर नहीं।[6] (عالمگیری)

मस्अला 21 जिस को भेजा वोह अपने किसी काम में मश्ग़ूल हो गया और ह़ज फ़ौत हो गया तो तावान लाज़िम है, फिर अगर साले आइन्दा उस ने अपने माल से ह़ज कर दिया तो काफ़ी हो गया और अगर वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पहले जिमाअ़ किया जब भी येही हुक्म है और उसे अपने माल से साले आइन्दा ह़ज्जो उ़मरह करना होगा और अगर वुक़ूफ़ के बाद जिमाअ़ किया तो ह़ज हो गया और उस पर अपने माल से दम देना लाज़िम और अगर ग़ैर

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٨.

2 ..... المرجع السابق. و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، مطلب العمل على القياس... إلخ، ج٤، ص٣٦.

3 ..... المرجع السابق. 4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٨.

5 ..... المرجع السابق. 6 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

इख़्तियारी आफ़त में मुब्तला हो गया तो जो कुछ पहले ख़र्च हो चुका है, उस का तावान नहीं मगर वापसी में अब अपना माल ख़र्च करे।[1] (درمختار، عالمگیری)

मस्अला 22 नज़्दीक रास्ता छोड़ कर दूर की राह से गया कि ख़र्च ज़ियादा हुवा अगर उस राह से हाजी जाया करते हैं तो इस का उसे इख़्तियार है।[2] (عالمگیری)

मस्अला 23 मरज़ या दुश्मन की वज्ह से हज न कर सका या और किसी त़रह़ पर मुह़्सर हुवा तो इस की वज्ह से जो दम लाज़िम आया, वोह उस के ज़िम्मे है जिस की त़रफ़ से गया और बाक़ी हर क़िस्म के दम इस के ज़िम्मे हैं। मसलन सिला हुवा कपड़ा पहना या ख़ुश्बू लगाई या बग़ैर एह़राम मीक़ात से आगे बढ़ा या शिकार किया या भेजने वाले की इजाज़त से क़िरान व तमत्तोअ़ किया।[3] (درمختار)

मस्अला 24 जिस पर ह़ज फ़र्ज़ हो या क़ज़ा या मन्नत का ह़ज उस के ज़िम्मे हो और मौत का वक़्त क़रीब आ गया तो वाजिब है कि वसिय्यत कर जाए।[4] (منسک)

मस्अला 25 जिस पर ह़ज फ़र्ज़ है और न अदा किया न वसिय्यत की तो बिल इज्माअ़ गुनहगार है, अगर वारिस उस की त़रफ़ से ह़ज्जे बदल कराना चाहे तो करा सकता है। اِنْ شَآءَ اللّٰہ تَعَالٰی उम्मीद है कि अदा हो जाए और अगर वसिय्यत कर गया तो तिहाई माल से कराया जाए अगर्चे उस ने वसिय्यत में तिहाई की क़ैद न लगाई। मसलन येह कह मरा कि मेरी त़रफ़ से ह़ज्जे बदल कराया जाए।[5] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 26 तिहाई माल की मिक़्दार इतनी है कि वत़न से ह़ज के मसारिफ़ के लिये काफ़ी है तो वत़न ही से आदमी भेजा जाए, वरना बैरूने मीक़ात जहां से भी उस तिहाई से भेजा जा सके। यूंही अगर वसिय्यत में कोई रक़म मुअ़य्यन कर दी हो तो उस रक़म में अगर वहां से भेजा जा सकता है तो भेजा जाए वरना जहां से हो सके और अगर वोह तिहाई या वोह रक़मे मुअ़य्यन बैरूने मीक़ात कहीं से भी काफ़ी नहीं तो वसिय्यत बात़िल।[6] (عالمگیری، درمختار، ردالمحتار)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٨ و"الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٣٦.
2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٨.
3 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٣٦-٣٧.
4 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الحج عن الغير)، ص٤٣٤.
5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٨.
6 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الرابع عشر في الحج عن الغير، ج١، ص٢٥٩.
و"الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب العمل على القياس... إلخ، ج٤، ص٣٧.

www.dawateislami.net

मस्अला 27 कोई शख़्स ह़ज को चला और रास्ते में या मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पहले उस का इन्तिक़ाल हो गया तो अगर उसी साल उस पर ह़ज फ़र्ज़ हुवा था तो वसिय्यत वाजिब नहीं और अगर वुक़ूफ़ के बाद इन्तिक़ाल हुवा तो ह़ज हो गया, फिर अगर त़वाफ़े फ़र्ज़ बाक़ी है और वसिय्यत कर गया कि उस का ह़ज पूरा कर दिया जाए तो उस की त़रफ़ से बदना की क़ुरबानी कर दी जाए।[1] (ردالمحتار)

मस्अला 28 रास्ते में इन्तिक़ाल हुवा और ह़ज्जे बदल की वसिय्यत कर गया तो अगर कोई रक़म या जगह मुअ़य्यन कर दी है तो उस के कहने के मुवाफ़िक़ किया जाए, अगर्चे उस के माल की तिहाई इतनी थी कि उस के वत़न से भेजा जा सकता और उस ने ग़ैरे वत़न से भेजने की वसिय्यत की या वोह रक़म इतनी बताई कि उस में वत़न से नहीं जाया जा सकता तो गुनहगार हुवा और मुअ़य्यन न की तो वत़न से भेजा जाए।[2] (درمختار،ردالمحتار)

मस्अला 29 वसी ने यानी जिस को कह गया कि तू मेरी त़रफ़ से ह़ज करा देना, ग़ैर जगह से भेजा और तिहाई इतनी थी कि वत़न से भेजा जा सकता है तो येह ह़ज मय्यित की त़रफ़ से न हुवा बल्कि वसी की त़रफ़ से हुवा, लिहाज़ा मय्यित की त़रफ़ से येह शख़्स दोबारा अपने माल से ह़ज कराए मगर जब कि वोह जगह जहां से भेजा है वत़न से क़रीब हो कि वहां जा कर रात के आने से पहले वापस आ सकता हो तो हो जाएगा।[3] (عالمگیری،ردالمحتار)

मस्अला 30 माल इस क़ाबिल नहीं कि वत़न से भेजा जाए तो जहां से हो सके भेजें, फिर अगर ह़ज के बाद कुछ बच रहा जिस से मालूम हुवा कि और इधर से भेजा जा सकता था तो वसी पर इस का तावान है, लिहाज़ा दोबारा ह़ज्जे बदल वहां से कराए जहां से हो सकता था मगर जब कि बहुत थोड़ी मिक़्दार बची मसलन तोशा वग़ैरा।[4] (عالمگیری)

मस्अला 31 अगर उस के लिये वत़न न हो तो जहां इन्तिक़ाल हुवा वहां से ह़ज को भेजा जाए और अगर मुतअ़द्दद वत़न हों तो उन में जो जगह मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से ज़ियादा क़रीब हो वहां से।[5] (عالمگیری)

मस्अला 32 अगर येह कह गया कि तिहाई माल से एक ह़ज करा देना तो एक ह़ज करा दें और चन्द ह़ज की वसिय्यत की और एक से ज़ियादा नहीं हो सकता तो एक ह़ज करा दें इस के बाद जो बचे वारिस ले लें और अगर येह वसिय्यत की, कि मेरे माल की

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب في حج الضرورة، ج٤، ص٢٧.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب في حج الضرورة، ج٤، ص٢٧.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٢٥٩.

و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب العمل على القياس دون الاستحسان هنا، ج٤، ص٢٧.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٢٥٩. 5 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

तिहाई से ह़ज कराया जाए या कई ह़ज कराए जाएं और कई हो सकते हैं तो जितने हो सकते हैं कराए जाएं, अब अगर कुछ बच रहा जिस से वत़न से नहीं भेजा जा सकता तो जहां से हो सके और कई ह़ज की सूरत में इख़्तियार है कि सब एक ही साल में हों या कई साल में और बेहतर अव्वल है। यूंही अगर यूं वसिय्यत की, कि मेरे माल की तिहाई से हर साल एक ह़ज कराया जाए तो इस में भी इख़्तियार है कि सब एक साथ हों या हर साल एक और अगर यूं कहा कि मेरे माल में हज़ार रुपये से ह़ज कराया जाए तो इस में जितने ह़ज हो सकें करा दिये जाएं।[1] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 33 अगर वसी से येह कहा कि किसी को माल दे कर मेरी त़रफ़ से ह़ज करा देना तो वसी ख़ुद उस की त़रफ़ से ह़ज्जे बदल नहीं कर सकता और अगर येह कहा कि मेरी त़रफ़ से ह़ज्जे बदल करा दिया जाए तो वसी ख़ुद भी कर सकता है और अगर वसी वारिस भी है या वसी ने वारिस को माल दे दिया कि वोह वारिस ह़ज्जे बदल करे तो अब बाक़ी वरसा अगर बालिग़ हों और उन की इजाज़त से हो तो हो सकता है, वरना नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 34 ह़ज की वसिय्यत की थी उस के इन्तिक़ाल के बाद ह़ज के मसारिफ़ निकालने के बाद वरसा ने माल तक़्सीम कर लिया, फिर वोह माल जो ह़ज के लिये निकाला था ज़ाएअ़ हो गया तो अब जो बाक़ी है उस की तिहाई से ह़ज का ख़र्च निकालें फिर अगर तलफ़ हो जाए तो बक़िय्या की तिहाई से وَعَلٰی هٰذَا الْقِیاس यहां तक कि माल ख़त्म हो जाए और वोह माल वसी के पास से ज़ाएअ़ हुवा हो या उस के पास से जिस को ह़ज के लिये भेजना चाहते हैं दोनों का एक हुक्म है।[3] (منسک)

मस्अला 35 जिसे ह़ज करने को भेजा वुक़ूफ़े अ़रफ़ा से पेश्तर उस का इन्तिक़ाल हो गया या माल चोरी गया फिर जो माल बाक़ी रह गया उस की तिहाई से दोबारा वत़न से ह़ज करने के लिये किसी को भेजा जाए और अगर इतने में वत़न से नहीं भेजा जा सकता तो जहां से हो सके और अगर दूसरा शख़्स भी मर गया या फिर माल चोरी हो गया तो अब जो कुछ माल है, उस की तिहाई से भेजा जाए और यके बाद दीगरे यूंही करते रहें, यहां तक कि माल की तिहाई इस क़ाबिल न रही कि उस से ह़ज हो सके तो वसिय्यत बात़िल हो गई और अगर वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बाद मरा तो वसिय्यत पूरी हो गई।[4] (درمختار وغیرہ)

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٢٥٩.
و"ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب العمل على القياس دون الاستحسان هنا، ج٤، ص٢٧.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٢٥٩.

3 ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب الحج عن الغير)، ص٤٥٤_٤٥٥.

4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٣٧، وغيره.

www.dawateislami.net

मस्अला 36 जिसे भेजा था वोह वुक़ूफ़ कर के बग़ैर त़वाफ़ किये वापस आया तो मय्यित का ह़ज हो गया मगर उसे औ़रत के पास जाना ह़लाल नहीं, उसे हुक्म है कि अपने ख़र्च से वापस जाए और जो अफ़्आ़ल बाक़ी हैं अदा करे।[1] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 37 वसी ने किसी को इस साल ह़ज्जे बदल के लिये मुक़र्रर किया और ख़र्च भी दे दिया मगर वोह इस साल न गया, साले आइन्दा जा कर अदा किया तो हो गया उस पर तावान नहीं।[2] (عالمگیری)

मस्अला 38 जिसे भेजा वोह मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में जा कर बीमार हो गया और सारा माल ख़र्च हो गया तो वसी के ज़िम्मे वापसी के लिये ख़र्च भेजना लाज़िम नहीं।[3] (عالمگیری)

मस्अला 39 जिसे ह़ज के लिये मुक़र्रर किया वोह बीमार हो गया तो उसे येह इख़्तियार नहीं कि दूसरे को भेज दे। हां, अगर भेजने वाले ने उसे इजाज़त दे दी हो तो दूसरे को भेज सकता है। लिहाज़ा भेजते वक़्त चाहिये कि येह इजाज़त दे दी जाए।[4] (عالمگیری، درمختار)

मस्अला 40 अगर उस से येह कह दिया कि ख़र्च ख़त्म हो जाए तो क़र्ज़ ले लेना और उस का अदा करना मेरे ज़िम्मे है तो जाइज़ है।[5] (عالمگیری)

मस्अला 41 एह़राम के बाद रास्ते में माल चोरी गया, उस ने अपने पास से ख़र्च कर के ह़ज किया और वापस आया तो बग़ैर हुक्मे क़ाज़ी भेजने वाले से वुसूल नहीं कर सकता।[6] (عالمگیری)

मस्अला 42 येह वसिय्यत की, कि फ़ुलां शख़्स मेरी त़रफ़ से ह़ज करे और वोह शख़्स मर गया तो किसी और को भेज दें मगर जब कि ह़स्र कर दिया हो कि वोही करे दूसरा नहीं तो मजबूरी है।[7] (عالمگیری)

मस्अला 43 एक शख़्स ने अपनी त़रफ़ से ह़ज्जे बदल के लिये ख़र्च दे कर भेजा, बाद इस के उस का इन्तिक़ाल हो गया और ह़ज की वसिय्यत न की तो वारिस उस शख़्स से माल वापस ले सकते हैं अगर्चे एह़राम बांध चुका हो।[8] (درمختار)

---

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٢٦٠.

2 ..... المرجع السابق. 3 ..... المرجع السابق.

4 ..... المرجع السابق. و"الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٢٦.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٢٦٠.

6 ..... المرجع السابق. 7 ..... المرجع السابق.

8 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٤٠.

www.dawateislami.net

मस्अला 44 मसारिफ़े ह़ज से मुराद वोह चीज़ हैं जिन की सफ़रे ह़ज में ज़रूरत पड़ती है। मसलन खाना पानी, रास्ते में पहनने के कपड़े, एह़राम के कपड़े, सुवारी का किराया, मकान का किराया, मश्कीज़ा, खाने पीने के बरतन, जलाने और सर में डालने का तेल, कपड़े धोने के लिये साबून, पहरा देने वाले की उजरत, ह़जामत की बनवाई ग़रज़ जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है उन के अख़राजाते मुतवस्सित़ कि न फ़ुज़ूल ख़र्ची हो, न बहुत कमी और उस को येह इख़्तियार नहीं कि इस माल में से ख़ैरात करे या खाना फ़क़ीरों को दे दे या खाते वक़्त दूसरों को भी खिलाए। हां अगर भेजने वाले ने इन उमूर की इजाज़त दे दी हो तो कर सकता है।[1] (لباب)

मस्अला 45 जिस को भेजा है अगर वोह अपना काम अपने आप किया करता था और अब ख़ादिम से काम लिया तो इस का ख़र्च ख़ुद उस के ज़िम्मे है और अगर ख़ुद नहीं करता था तो भेजने वाले के ज़िम्मे।[2] (عالمگیری)

मस्अला 46 ह़ज से वापसी के बाद जो कुछ बचा वापस कर दे, उसे रख लेना जाइज़ नहीं अगर्चे वोह कितनी ही थोड़ी सी चीज़ हो, यहां तक कि तोशे में से जो कुछ बचा वोह और कपड़े और बरतन ग़रज़ तमाम सामान वापस कर दे बल्कि अगर शर्त़ कर ली हो कि जो बचेगा वापस न करूंगा जब भी कि येह शर्त़ बात़िल है मगर दो[2] सूरतों में : **अव्वल**[1] येह कि भेजने वाला उसे वकील कर दे कि जो बचे उसे अपने को तू हिबा कर देना और क़ब्ज़ा कर लेना, **दुवुम**[2] येह कि अगर क़रीब ब मर्ग हो तो उसे वसिय्यत कर दे कि जो बचे उस की मैं ने तुझे वसिय्यत की और अगर यूं वसिय्यत की, कि वसी से कह दिया कि जो बचे वोह उस के लिये है जो भेजा जाए या तू जिसे चाहे दे दे तो येह वसिय्यत बात़िल है वारिस का ह़क़ हो जाएगा और वापस करना पड़ेगा।[3] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 47 येह वसिय्यत की, कि एक हज़ार फ़ुलां को दिया जाए और एक हज़ार मिस्कीनों को और एक हज़ार से ह़ज कराया जाए और तर्के की तिहाई कुल दो हज़ार है तो दो हज़ार में बराबर बराबर के तीन ह़िस्से किये जाएं। एक ह़िस्सा तो उसे दें जिस के लिये कहा और ह़ज व मसाकीन के दोनों ह़िस्से मिला कर जितने से ह़ज हो सके ह़ज कराया जाए और जो बचे मिस्कीनों को दिया जाए।[4] (عالمگیری وغیرہ)

मस्अला 48 ज़कात व ह़ज और किसी को देने की वसिय्यत की तो तिहाई के तीन ह़िस्से करें और ज़कात व ह़ज में जिसे उस ने पहले कहा उसे पहले करें। उस से जो बचे दूसरे में सर्फ़

1 ..... "لباب المناسك"، (باب الحج عن الغير، فصل في النفقة)، ص٤٥٦_٤٥٧.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٢٦٠.

3 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير مطلب العمل على القياس... إلخ، ج٤، ص٣٨.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب الخامس عشر في الوصية بالحج، ج١، ص٢٦٠، وغيره.

www.dawateislami.net

करें, फ़र्ज़ और मन्नत की वसिय्यत की तो फ़र्ज़ मुक़द्दम है और नफ़्ल व नज़्र में नज़्र मुक़द्दम है और सब फ़र्ज़ या नफ़्ल या वाजिब हैं तो मुक़द्दम वोह है जिसे उस ने पहले कहा।[1]

(ردالمحتار)

हदी का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآىِٕرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۝ لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَاۤ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ﴾[2]

और जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की निशानियों की ताज़ीम करे तो येह दिलों की परहेज़गारी से है, तुम्हारे लिये चौपायों में एक मुक़र्रर मीआ़द तक फ़ाएदे हैं फिर उन का पहुंचना है इस आज़ाद घर तक। और हर उम्मत के लिये हम ने एक क़ुरबानी मुक़र्रर की, कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का नाम ज़िक्र करें, उन बे ज़बान चौपायों पर जो उस ने उन्हें दिये।

और फ़रमाता है :

﴿وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآىِٕرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝ لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ۝﴾[3]

और क़ुरबानी के ऊंट, गाय हम ने तुम्हारे लिये **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की निशानियों से किये, तुम्हारे लिये इन में भलाई है तो उन पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का नाम लो, एक पाउं बंधे, तीन पाउं से खड़े फिर जब उन की करवटें गिर जाएं तो उन में से ख़ुद खाओ और क़नाअ़त करने वाले और भीक मांगने वाले को खिलाओ। यूंही हम ने उन को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया कि तुम एहसान मानो, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को हरगिज़ न उन के गोश्त पहुंचते हैं, न उन के ख़ून। हां, उस तक तुम्हारी परहेज़गारी पहुंचती है। यूंही उन को तुम्हारे क़ाबू में कर दिया कि तुम **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की बड़ाई बोलो इस पर कि उस ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई और ख़ुश ख़बरी पहुंचा दो नेकी करने वालों को।

1 ..... "رد المحتار"، كتاب الحج، باب الحج عن الغير، ج٤، ص٤١. 2 .....پ١٧، الحج: ٣٢-٣٤. 3 .....پ١٧، الحج: ٣٦-٣٧.

www.dawateislami.net

अहादीस

हदीस 1 सहीहैन में उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से मरवी, कहती हैं : मैं ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم की क़ुरबानियों के हार अपने हाथ से बनाए फिर हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ने उन के गलों में डाले और उन के कोहान चीरे और ह़रम को रवाना कीं।(1)

हदीस 2 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने दसवीं ज़ुल ह़िज्जा को आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की त़रफ़ से एक गाय ज़ब्ह़ फ़रमाई। और दूसरी रिवायत में है कि अज़्वाजे मुत़ह्हरात की त़रफ़ से ह़ज में गाय ज़ब्ह़ की।(2)

हदीस 3 सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से मरवी, कहते हैं : मैं ने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि "जब तू मजबूर हो जाए तो हदी पर मारूफ़ के साथ सुवार हो, जब तक दूसरी सुवारी न मिले।"(3)

हदीस 4 सह़ीह़ मुस्लिम में इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से मरवी, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने सोलह ऊंट एक शख़्स के साथ ह़रम को भेजे। उन्हों ने अ़र्ज़ की : इन में से अगर कोई थक जाए तो क्या करूं ? फ़रमाया : "उसे नह़र कर देना और ख़ून से उस के पाउं रंग देना और पहलू पर उस का छापा लगा देना और उस में से तुम और तुम्हारे साथियों में से कोई न खाए।"(4)

हदीस 5 सह़ीहैन में अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से मरवी, कहते हैं : मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने अपनी क़ुरबानी के जानवरों पर मामूर फ़रमाया और मुझे ह़ुक्म फ़रमाया कि "गोश्त और खालें और झोल तसद्दुक़ कर दूं और क़स्साब को इस में से कुछ न दूं। फ़रमाया कि हम उसे अपने पास से देंगे।"(5)

हदीस 6 अबू दावूद अ़ब्दुल्लाह बिन क़रत़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रावी, कि पांच या छे ऊंट हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) की ख़िदमत में क़ुरबानी के लिये पेश किये गए, वोह सब हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) से क़रीब होने लगे कि किस से शुरूअ़ फ़रमाएं (यानी हर एक की येह

1 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الحج، باب استحباب بحث الهدی إلی الحرم ...إلخ، الحدیث: ۳۶۲-(۱۳۲۱)، ص٦٨٦.

2 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الحج، باب جواز الاشتراك فی الهدی ...إلخ، الحدیث: ۳۵٦-(۱۳۱۹)،۳۵۷(۱۳۱۹)، ص٦٨٤،٦٨٥.

3 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الحج، باب جواز رکوب البدنة ...إلخ، الحدیث: ۱۳۲٤، ص٦٨٨.

4 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الحج، باب مایفعل بالهدی إذا عطب فی الطریق، الحدیث: ۱۳۲٥، ص٦٨٨.

5 ..... "صحیح مسلم"، کتاب الحج، باب الصدقة بلحوم الهدی ...إلخ، الحدیث: ۱۳۱۷، ص٦٨٣.

www.dawateislami.net

ख़्वाहिश थी कि पहले मुझे ज़ब्ह़ फ़रमाएं या इस लिये कि पहले जिसे चाहें ज़ब्ह़ फ़रमाएं) फिर जब उन की करवटें ज़मीन से लग गईं तो फ़रमाया : "जो चाहे टुकड़ा ले ले।"[1]

मस्अला 1 हदी उस जानवर को कहते हैं जो क़ुरबानी के लिये ह़रम को ले जाया जाए। येह तीन क़िस्म के जानवर हैं : ① बकरी : इस में भेड़ और दुम्बा भी दाख़िल है। ② गाय भैंस भी इसी में शुमार है। ③ ऊंट : हदी का अदना दरजा बकरी है तो अगर किसी ने ह़रम को क़ुरबानी भेजने की मन्नत मानी और मुअ़य्यन न की तो बकरी काफ़ी है।[2] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 2 क़ुरबानी की निय्यत से भेजा या ले गया जब तो ज़ाहिर है कि क़ुरबानी है और अगर बदना के गले में हार डाल कर हांका जब भी हदी है अगर्चे निय्यत न हो। इस लिये कि इस त़रह़ क़ुरबानी ही को ले जाते हैं।[3] (ردالمحتار)

मस्अला 3 क़ुरबानी के जानवर में जो शर्तें हैं वोह हदी के जानवर में भी हैं मसलन ऊंट पांच साल का, गाय दो[2] साल की, बकरी एक साल की मगर भेड़ दुम्बा छे[6] महीने का अगर साल भर वाली की मिस्ल हो तो हो सकता है और ऊंट गाय में यहां भी सात आदमी की शिर्कत हो सकती है।[4] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 4 ऊंट, गाय के गले में हार डाल देना मस्नून है और बकरी के गले में हार डालना सुन्नत नहीं मगर सिर्फ़ शुक्राना यानी तमत्तोअ़ व क़िरान और नफ़्ल और मन्नत की क़ुरबानी में सुन्नत है, इह़्सार और जुर्माने के दम में न डालें।[5] (عالمگیری)

मस्अला 5 हदी अगर क़िरान या तमत्तोअ़ का हो तो उस में से कुछ खा लेना बेहतर है। यूंही अगर नफ़्ल हो और ह़रम को पहुंच गया हो और अगर ह़रम को न पहुंचा तो ख़ुद नहीं खा सकता, फ़ुक़रा का ह़क़ है और इन तीन के इलावा नहीं खा सकता और जिसे ख़ुद खा सकता है, मालदारों को भी खिला सकता है, नहीं तो नहीं और जिस को खा नहीं सकता उस की खाल वग़ैरा से भी नफ़्अ़ नहीं ले सकता।[6] (درمختار)

मस्अला 6 तमत्तोअ़ व क़िरान की क़ुरबानी दसवीं से पहले नहीं हो सकती और दसवीं के बाद की तो हो जाएगी मगर दम लाज़िम है कि ताख़ीर जाइज़ नहीं और इन दो[2] के इलावा के लिये कोई दिन मुअ़य्यन नहीं और बेहतर दसवीं है। ह़रम में होना सब में

1 ..... "سنن أبي داود"، كتاب المناسك، ١٨ـ باب، الحديث: ١٧٦٥، ج٢، ص٢١١.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٤١، وغيره.

3 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٤٢.

4 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٤٢، وغيره.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السادس عشر في الهدى، ج١، ص٢٦١.

6 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٤٥.

www.dawateislami.net

ज़रूरी है, मिना की ख़ुसूसिय्यत नहीं। हां, दसवीं को हो तो मिना में होना सुन्नत है और दसवीं के बाद मक्के में। मन्नत के बदना का ह़रम में ज़ब्ह़ होना शर्त़ नहीं जब कि मन्नत में ह़रम की शर्त़ न लगाई।[1] (درمختار، ردالمحتار، عالمگیری)

मस्अला 7 हदी का गोश्त ह़रम के मसाकीन को देना बेहतर है, उस की नकील और झोल को ख़ैरात कर दें और क़स्साब को उस के गोश्त में से कुछ न दें। हां, अगर उसे बत़ौरे तसद्दुक़ दें तो ह़रज नहीं।[2] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 8 हदी के जानवर पर बिला ज़रूरत सुवार नहीं हो सकता न उस पर सामान लाद सकता है अगर्चे नफ़्ल हो और ज़रूरत के वक़्त सुवार हुवा या सामान लादा और इस की वज्ह से उस में कुछ नुक़्सान आया तो इतना मोह़्ताजों पर तसद्दुक़ करे।[3] (عالمگیری)

मस्अला 9 अगर वोह दूध वाला जानवर है तो दूध न दोहे और थन पर ठन्डा पानी छिड़क दिया करे कि दूध मौक़ूफ़ हो जाए और अगर ज़ब्ह़ में वक़्फ़ा हो और न दोहने से ज़रर होगा तो दोह कर दूध ख़ैरात कर दे और अगर ख़ुद खा लिया या ग़नी को दे दिया या ज़ाएअ़ कर दिया तो इतना ही दूध या उस की क़ीमत मसाकीन पर तसद्दुक़ करे।[4] (عالمگیری، ردالمحتار)

मस्अला 10 अगर वोह बच्चा जनी तो बच्चे को तसद्दुक़ कर दे या उसे भी उस के साथ ज़ब्ह़ कर दे और अगर बच्चे को बेच डाला या हलाक कर दिया तो क़ीमत को तसद्दुक़ करे और उस क़ीमत से क़ुरबानी का जानवर ख़रीद लिया तो बेहतर है।[5] (عالمگیری)

मस्अला 11 ग़लती से उस ने दूसरे के जानवर को ज़ब्ह़ कर दिया और दूसरे ने उस के जानवर को तो दोनों की क़ुरबानियां हो गईं।[6] (منسک)

मस्अला 12 अगर जानवर ह़रम को ले जा रहा था रास्ते में मरने लगा तो उसे वहीं ज़ब्ह़ कर डाले और ख़ून से उस का हार रंग दे और कोहान पर छापा लगा दे ताकि उसे मालदार लोग न खाएं, फ़ुक़रा ही खाएं फिर अगर वोह नफ़्ल था तो उस के बदले का दूसरा जानवर ले जाना ज़रूरी नहीं और अगर वाजिब था तो उस के बदले का दूसरा ले जाना वाजिब है और अगर उस में कोई ऐसा ऐ़ब आ गया कि क़ुरबानी के क़ाबिल न रहा तो उसे जो चाहे करे और उस

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٤٧.
و"الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السادس عشر في الهدى، ج١، ص٢٦١.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٤٧، وغيره.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السادس عشر في الهدى، ج١، ص٢٦١.

4 ..... المرجع السابق. و "ردالمحتار" كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٤٨.

5 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السادس عشر في الهدى، ج١، ص٢٦١.

6 ..... "لباب المناسك"، (باب الهدايا)، ص٤٧٤.

www.dawateislami.net

के बदले दूसरा ले जाए जब कि वाजिब हो ।[1] (درمختار وغیرہ)

मस्अला 13 जानवर ह़रम को पहुंच गया और वहां मरने लगा तो उसे ज़ब्ह़ कर के मसाकीन पर तसद्दुक़ करे और ख़ुद न खाए अगर्चे नफ़्ल हो और अगर उस में थोड़ा सा नुक़्सान पैदा हुवा है कि अभी क़ुरबानी के क़ाबिल है तो क़ुरबानी करे और ख़ुद भी खा सकता है ।[2] (عالمگیری)

मस्अला 14 जानवर चोरी गया उस के बदले का दूसरा ख़रीदा और उसे हार डाल कर ले चला फिर वोह मिल गया तो बेहतर येह है कि दोनों की क़ुरबानी कर दे और अगर पहले की क़ुरबानी की और दूसरे को बेच डाला तो येह भी हो सकता है और अगर पिछले को ज़ब्ह़ किया और पहले को बेच डाला तो अगर वोह उस की क़ीमत में बराबर था या ज़ियादा तो काफ़ी है और कम है तो जितनी कमी हुई सदक़ा कर दे ।[3] (عالمگیری)

ह़ज की मन्नत का बयान

ह़ज की मन्नत मानी तो ह़ज करना वाजिब हो गया, कफ़्फ़ारा देने से बरिय्युज़्ज़िम्मा न होगा । ख़्वाह यूं कहा कि **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के लिये मुझ पर ह़ज है या किसी काम के होने पर ह़ज को मश्रूत़ किया और वोह हो गया ।[4] (عالمگیری)

मस्अला 1 एह़राम बांधने या काबए मुअ़ज़्ज़मा या मक्कए मुकर्रमा जाने की मन्नत मानी तो ह़ज या उ़मरह उस पर वाजिब है और एक को मुअ़य्यन कर लेना उस के ज़िम्मे है ।[5] (عالمگیری)

मस्अला 2 पैदल ह़ज करने की मन्नत मानी तो वाजिब है कि घर से त़वाफ़े फ़र्ज़ तक पैदल ही रहे और पूरा सफ़र या अक्सर सुवारी पर किया तो दम दे और अगर अक्सर पैदल रहा और कुछ सुवारी पर तो उसी ह़िसाब से बकरी की क़ीमत का जितना ह़िस्सा उस के मुक़ाबिल आए ख़ैरात करे । पैदल उ़मरह की मन्नत मानी तो सर मुंडाने तक पैदल रहे ।[6] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 3 एक साल में जितने ह़ज की मन्नत मानी सब वाजिब हो गए ।[7] (عالمگیری)

1 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٤٩، وغيره.

2 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السادس عشر في الهدى، ج١، ص٢٦١. 3 ..... المرجع السابق.

4 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع عشر في النذر بالحج، ج١، ص٢٦٢. 5 ..... المرجع السابق.

6 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٥٢.

7 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع عشر في النذر بالحج، ج١، ص٢٦٣.

www.dawateislami.net

मस्अला 4 लौंडी गुलाम मोहरिम को ख़रीदना जाइज़ है और मुश्तरी को इख़्तियार है कि एह़राम तुड़वा दे अगर्चे उन्हों ने अपने पहले मौला की इजाज़त से एह़राम बांधे हों और एह़राम तोड़ने के लिये फ़क़त़ येह कह देना काफ़ी नहीं कि एह़राम तोड़ दिया बल्कि कोई ऐसा काम करना ज़रूरी है जो एह़राम में मन्अ़ था मसलन बाल या नाख़ुन तरश्वाना या ख़ुश्बू लगाना। इस की ज़रूरत नहीं कि ह़ज के अफ़्आ़ल बजा ला कर एह़राम तोड़े और क़ुरबानी भेजना भी ज़रूरी नहीं मगर आज़ादी के बाद क़ुरबानी और ह़ज्जो उ़मरह वाजिब है अगर ह़ज का एह़राम था और उ़मरह अगर उ़मरह का एह़राम था।[1] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 5 अफ़्ज़ल येह है कि उस ख़रीदी हुई लौंडी का एह़राम जिमाअ़ के इ़लावा किसी और चीज़ से खुलवा दे और जिमाअ़ से भी एह़राम खुल जाएगा मगर जब कि उसे येह मालूम न हो कि एह़राम से है और जिमाअ़ कर लिया तो ह़ज फ़ासिद हो जाएगा।[2] (درمختار، ردالمحتار)

मस्अला 6 अगर मौला ने एह़राम खुलवा दिया फिर उस ने बांधा फिर खुलवा दिया, अगर चन्द बार इसी त़रह़ हुवा फिर उसी साल एह़राम बांध कर ह़ज कर लिया तो काफ़ी हो गया और अगर साले आइन्दा में ह़ज किया तो हर बार एह़राम खोलने का एक एक उ़मरह करे।[3] (عالمگیری)

मस्अला 7 एह़राम की ह़ालत में निकाह़ हो सकता है किसी एह़राम वाली औ़रत से निकाह़ किया तो अगर नफ़्ल का एह़राम है खुलवा सकता है और फ़र्ज़ का है तो दो सूरतें हैं : अगर औ़रत का मह़रम साथ में है तो नहीं खुलवा सकता और मह़रम साथ में न हो तो फ़र्ज़ का एह़राम भी खुलवा सकता है और अगर उस का मोह़रिमा होना मालूम न हो और जिमाअ़ कर लिया तो ह़ज फ़ासिद हो गया।[4] (عالمگیری)

मस्अला 8 मुसाफ़िर ख़ाना बनाना, ह़ज्जे नफ़्ल से अफ़्ज़ल है और ह़ज्जे नफ़्ल सदक़े से अफ़्ज़ल यानी जब कि उस की ज़ियादा ह़ाजत न हो वरना ह़ाजत के वक़्त सदक़ा ह़ज से अफ़्ज़ल है।

अ़ल्लामा शामी ने निहायत नफ़ीस ह़िकायत इस बयान में नक़्ल फ़रमाई कि एक साह़िब हज़ार अशरफ़ियां ले कर ह़ज को जा रहे थे, एक सय्यिदानी तशरीफ़ लाईं और अपनी ज़रूरत ज़ाहिर फ़रमाई। उन्हों ने सब अशरफ़ियां नज़्र कर दीं और वापस आए, जब वहां के लोग ह़ज से वापस हुए तो हर ह़ाजी उन से कहने लगा, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तुम्हारा ह़ज क़बूल फ़रमाए। उन्हें तअ़ज्जुब हुवा कि क्या मुआ़मला है, मैं तो ह़ज को गया नहीं, येह लोग ऐसा क्यूं कहते हैं ? ख़्वाब में ज़ियारते अक़्दस से मुशर्रफ़ हुए, इरशाद फ़रमाया : क्या तुझे लोगों की बात से तअ़ज्जुब हुवा ? अ़र्ज़ की : हां, या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) ! फ़रमाया कि "तू ने जो मेरी

1 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٥٢.

2 ..... "الدرالمختار" و "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، ج٤، ص٥٣.

3 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، الباب السابع عشر في النذر بالحج، ج١، ص٢٦٤. 4 ..... المرجع السابق.

www.dawateislami.net

अहले बैत की ख़िदमत की, उस के इ़वज़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरी सूरत का एक फ़रिश्ता पैदा फ़रमाया, जिस ने तेरी त़रफ़ से ह़ज किया और क़ियामत तक ह़ज करता रहेगा।"[1]

मस्अला 9 ह़ज तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा है यानी फ़राइज़ की ताख़ीर का जो गुनाह इस के ज़िम्मे है वोह اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی महू हो जाएगा, वापस आ कर अदा करने में फिर देर की तो फिर येह नया गुनाह हुवा।[2] (درمختار)

मस्अला 10 वुक़ूफ़े अ़रफ़ा जुमुआ़ के दिन हो तो इस में बहुत सवाब है कि येह दो ईदों का इज्तिमाअ़ है और इसी को लोग ह़ज्जे अक्बर कहते हैं।

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا زِيَارَةَ حَرَمِكَ وَحَرَمِ حَبِيْبِكَ بِجَاهِهٖ عِنْدَكَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَابْنِهٖ وَحِزْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط

फ़ज़ाइले मदीनए त़य्यिबा

ह़दीस 1 सह़ीह़ मुस्लिम व तिरमिज़ी में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मदीने की तक्लीफ़ व शिद्दत पर मेरी उम्मत में से जो कोई सब्र करे, क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ होउंगा।"[3]

मदीनए त़य्यिबा की इक़ामत

ह़दीस 2 व 3 नीज़ मुस्लिम में सअ़्द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने फ़रमाया : "मदीना लोगों के लिये बेहतर है अगर जानते, मदीने को जो शख़्स बतौ़रे एराज़ छोड़ेगा, **अल्लाह** तआ़ला इस के बदले में उसे लाएगा जो इस से बेहतर होगा और मदीने की तक्लीफ़ व मशक़्क़त पर जो साबित क़दम रहेगा रोज़े क़ियामत मैं उस का शफ़ीअ़ या शहीद होउंगा।"[4]

और एक रिवायत में है : "जो शख़्स अहले मदीना के साथ बुराई का इरादा करेगा, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उसे आग में इस त़रह़ पिघलाएगा जैसे सीसा या इस त़रह़ जैसे नमक पानी में घुल जाता है।"[5] इसी की मिस्ल बज़्ज़ार ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत की।

ह़दीस 4 सह़ीहैन में सुफ़्यान बिन अबी ज़ुहैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, कहते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि "यमन फ़त्ह़ होगा, उस वक़्त कुछ लोग

1 ..... "ردالمحتار"، كتاب الحج، باب الهدى، مطلب في تفصيل الحج على الصدقة، ج٤، ص٥٤.

2 ..... "الدرالمختار"، كتاب الحج، باب الهدى، مطلب في تكفير الحج الكبائر، ج٤، ص٥٦.

3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب الترغيب فى سكنى المدينة ...إلخ، الحديث: ١٣٧٨، ص٧١٦.

4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب فى فضل المدينة ...إلخ، الحديث: ١٣٦٣، ص٧٠٩.

5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب فى فضل المدينة ...إلخ، الحديث: ٤٦٠-(١٣٦٣)، ص٧١٠.

www.dawateislami.net

दौड़ते हुए आएंगे और अपने घर वालों को और उन को जो उन की इत़ाअ़त में हैं ले जाएंगे हालां कि मदीना उन के लिये बेहतर है अगर जानते। और शाम फ़त्ह़ होगा कुछ लोग दौड़ते आएंगे अपने घर वालों और फ़रमां बरदारों को ले जाएंगे हालां कि मदीना उन के लिये बेहतर है अगर जानते। और इराक़ फ़त्ह़ होगा कुछ लोग जल्दी करते आएंगे और अपने घर वालों और फ़रमां बरदारों को ले जाएंगे हालां कि मदीना उन के लिये बेहतर है अगर जानते।''(1)

ह़दीस 5 त़बरानी कबीर में अबी उसैद साइ़दी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रावी, कहते हैं : हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के हमराह ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की क़ब्र पर ह़ाज़िर थे (उन के कफ़न के लिये सिर्फ़ एक कमली थी) जब लोग उसे खींच कर उन का मुंह छुपाते क़दम खुल जाते और क़दम पर डालते तो चेहरा खुल जाता। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''इस कमली से मुंह छुपा दो और पाउं पर येह घास डाल दो।'' फिर हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने सरे अक़्दस उठाया, सह़ाबा को रोता पाया। इरशाद फ़रमाया : ''लोगों पर एक ज़माना आएगा कि सरसब्ज़ मुल्क की त़रफ़ चले जाएंगे, वहां खाना और लिबास और सुवारी उन्हें मिलेगी फिर वहां से अपने घर वालों को लिख भेजेंगे कि हमारे पास चले आओ कि तुम ह़िजाज़ की ख़ुश्क ज़मीन पर पड़े हो हालां कि मदीना उन के लिये बेहतर है अगर जानते।''(2)

ह़दीस 6 ता 8 तिरमिज़ी व इब्ने माजह व इब्ने ह़ब्बान व बैहक़ी इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जिस से हो सके कि मदीने में मरे तो मदीने ही में मरे कि जो शख़्स मदीने में मरेगा, मैं उस की शफ़ाअ़त फ़रमाऊंगा।''(3) और इसी की मिस्ल सुमैता और सुबैआ़ अस्लमिया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी।

मदीनए त़य्यिबा की बरकत

ह़दीस 9 सह़ीह़ मुस्लिम वग़ैरा में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी कि लोग जब शुरूअ़ शुरूअ़ फल देखते, उसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर लाते, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) उसे ले कर येह कहते : इलाही ! तू हमारे लिये हमारी खजूरों में बरकत दे और हमारे लिये हमारे मदीने में बरकत कर और हमारे साअ़ व मुद में बरकत कर, या **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! बेशक इब्राहीम तेरे बन्दे और तेरे ख़लील और तेरे नबी हैं और बेशक मैं तेरा बन्दा और तेरा नबी हूं। उन्हों ने मक्के के लिये तुझ से दुआ़ की और मैं मदीने के लिये

1 ..... "صحيح البخاري"، كتاب فضائل المدينة، باب من رغب عن المدينة، الحديث: ١٨٧٥، ج١، ص٦١٨.

2 ..... "المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ٥٨٧، ج١٩، ص٢٦٥.

3 ..... "جامع الترمذي"، أبواب المناقب، باب ماجاء في فضل المدينة، الحديث: ٣٩٤٣، ج٥، ص٤٨٣.

www.dawateislami.net

तुझ से दुआ़ करता हूं, उसी की मिस्ल जिस की दुआ़ मक्के के लिये उन्हों ने की और उतनी ही और (यानी मदीने की बरकतें मक्के से दो चन्द हों)। फिर जो छोटा बच्चा सामने होता उसे बुला कर वोह खजूर अ़त़ा फ़रमा देते।[1]

ह़दीस 10 ता 13 सह़ीह़ मुस्लिम में उम्मुल मुअमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "या **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! तू मदीने को हमारा मह़बूब बना दे जैसे हम को मक्का मह़बूब है बल्कि उस से ज़ियादा और इस की आबो हवा को हमारे लिये दुरुस्त फ़रमा दे और इस के साअ़ व मुद में बरकत अ़त़ा फ़रमा और यहां के बुख़ार को मुन्तक़िल कर के जुह़्फ़ा में भेज दे।"[2] (येह दुआ़ उस वक़्त की थी, जब हिजरत कर के मदीने में तशरीफ़ लाए और यहां की आबो हवा सह़ाबए किराम को ना मुवाफ़िक़ हुई कि पेश्तर यहां वबाई बीमारियां ब कसरत होतीं) येह मज़मून कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم) ने मदीनए त़य्यिबा के वासिते दुआ़ की, कि मक्के से दो चन्द यहां बरकतें हों।[3] मौला अ़ली व अबू सईद व अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم से मरवी।

अहले मदीना के साथ बुराई करने के नताइज

ह़दीस 14 सह़ीह़ बुख़ारी व मुस्लिम में सअ़्द رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जो शख़्स अहले मदीना के साथ फ़रेब करेगा, ऐसा घुल जाएगा जैसे नमक पानी में घुलता है।"[4]

ह़दीस 15 इब्ने ह़ब्बान अपनी सह़ीह़ में जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो अहले मदीना को डराएगा, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उसे ख़ौफ़ में डालेगा।"[5]

ह़दीस 16 व 17 त़बरानी उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**या अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! जो अहले मदीना पर ज़ुल्म करे और इन्हें डराए तू उसे ख़ौफ़ में मुब्तला कर और उस पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और फ़रिश्तों और तमाम आदमियों की लानत और उस का न फ़र्ज़ क़बूल किया जाए, न नफ़्ल।"[6] इसी की मिस्ल नसाई व त़बरानी ने साइब बिन ख़ल्लाद رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रिवायत की।

1 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب فضل المدينة ...إلخ، الحديث: ١٣٧٣، ص٧١٣.

2 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب الترغيب فى سكنى المدينة ...إلخ، الحديث: ١٣٧٦، ص٧١٥.

3 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب الترغيب فى سكنى المدينة ...إلخ، الحديث: ١٣٧٤، ص٧١٣.

4 ..... "صحيح البخاري"، كتاب فضائل المدينة، باب اثم من كاد اهل المدينة، الحديث: ١٨٧٧، ج١، ص٦١٨.

5 ..... "الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان"، كتاب الحج، باب فضل المدينة، الحديث: ٣٧٣٠، ج٦، ص٢٠.

6 ..... "المعجم الأوسط" للطبراني، الحديث: ٣٥٨٩، ج٢، ص٣٧٩.

www.dawateislami.net

ह़दीस 18 त़बरानी कबीर में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो अहले मदीना को ईज़ा देगा, **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उसे ईज़ा देगा और उस पर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) और फ़रिश्तों और तमाम आदमियों की लानत और उस का न फ़र्ज़ क़बूल किया जाए, न नफ़्ल।''(1)

ह़दीस 19 सह़ीह़ैन में अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मुझे एक ऐसी बस्ती की त़रफ़ (हिजरत) का हुक्म हुवा जो तमाम बस्तियों को खा जाएगी (सब पर ग़ालिब आएगी) लोग उसे यसरिब(2) कहते हैं और वोह मदीना है, लोगों को इस त़रह़ पाको साफ़ करेगी जैसे भट्टी लोहे के मैल को।''(3)

ह़दीस 20 सह़ीह़ैन में इन्हीं से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मदीने के रास्तों पर फ़रिश्ते (पहरा देते) हैं, इस में न दज्जाल आए, न त़ाऊन।''(4)

ह़दीस 21 सह़ीह़ैन में अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मक्के व मदीने के सिवा कोई शह्र ऐसा नहीं कि वहां दज्जाल न आए, मदीने का कोई रास्ता ऐसा नहीं जिस पर मलाएका परा बांध कर पहरा न देते हों, दज्जाल (क़रीबे मदीना) शोर ज़मीन में आ कर उतरेगा, उस वक़्त मदीने में तीन ज़ल्ज़ले होंगे जिन से हर काफ़िर व मुनाफ़िक़ यहां से निकल कर दज्जाल के पास चला जाएगा।''(5)

ह़ाज़िरिये सरकारे आज़म मदीनए त़य्यिबा हुज़ूर ह़बीबे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

﴿ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝ ﴾(6)

1 ..... "مجمع الزوائد"، كتاب الحج، باب فيمن اخاف اهل المدينة ...إلخ، الحديث: ٥٨٢٦، ج٣، ص٦٥٩.

2 ....हिजरत से पेश्तर लोग यसरिब कहते थे मगर इस नाम से पुकारना जाइज़ नहीं कि ह़दीस में इस की मुमानअ़त आई, बाज़ शाइ़र अपने अश्आ़र में मदीनए त़य्यिबा को यसरिब लिखा करते हैं उन्हें इस से एह़तिराज़ लाज़िम और ऐसे शेअ़र को पढ़ें तो इस लफ़्ज़ की जगह त़यबा पढ़ें कि येह नाम हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ने रखा है, बल्कि सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में है कि **अल्लाह** तआ़ला ने मदीने का नाम त़ाबह रखा है। 12 मिन्ह़ ظفر رب

3 ..... "صحيح البخاري"، كتاب فضائل المدينة، باب فضل المدينة ...إلخ، الحديث: ١٨٧١، ج١، ص٦١٧.

4 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الحج، باب صيانة المدينة من دخول الطاعون ...إلخ، الحديث: ١٣٧٩، ص٧١٦.

5 ..... "صحيح مسلم"، كتاب الفتن ...إلخ، باب قصة الجساسة، الحديث: ٢٩٤٣، ص١٥٧٧.

6 ..... پ٥، النساء: ٦٤.

www.dawateislami.net

अगर लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म करें और तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हो कर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से मग़्फ़िरत त़लब करें और रसूल भी उन के लिये इस्तिग़्फ़ार करें तो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को तौबा क़बूल करने वाला, रह़्म करने वाला पाएंगे।

ह़दीस 1 दारे क़ुत़्नी व बैहक़ी वग़ैरहुमा अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मेरी क़ब्र की ज़ियारत करे, उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब।"(1)

ह़दीस 2 त़बरानी कबीर में इन्हीं से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मेरी ज़ियारत को आए सिवा मेरी ज़ियारत के और किसी ह़ाजत के लिये न आया तो मुझ पर ह़क़ है कि क़ियामत के दिन उस का शफ़ीअ़ बनूं।"(2)

ह़दीस 3 दारे क़ुत़्नी व त़बरानी इन्हीं से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने ह़ज किया और बाद मेरी वफ़ात के मेरी क़ब्र की ज़ियारत की तो ऐसा है जैसे मेरी ह़यात में ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा।"(3)

ह़दीस 4 बैहक़ी ने ह़ातिब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने मेरी वफ़ात के बाद मेरी ज़ियारत की तो गोया उस ने मेरी ज़िन्दगी में ज़ियारत की और जो ह़रमैन में मरेगा, क़ियामत के दिन अम्न वालों में उठेगा।"(4)

ह़दीस 5 बैहक़ी उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को मैं ने फ़रमाते सुना : "जो शख़्स मेरी ज़ियारत करेगा, क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ या शहीद होउंगा और जो ह़रमैन में मरेगा, **अल्लाह** तआ़ला उसे क़ियामत के दिन अम्न वालों में उठाएगा।"(5)

ह़दीस 6 इब्ने अ़दी कामिल में इन्हीं से रावी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस ने ह़ज किया और मेरी ज़ियारत न की, उस ने मुझ पर जफ़ा की।"(6)

(1) ज़ियारते अक़्दस क़रीब ब वाजिब है। बहुत लोग दोस्त बन कर त़रह़ त़रह़ डराते हैं : राह में ख़त़रा है, वहां बीमारी है, येह है, वोह है। ख़बरदार ! किसी की न सुनो और

1 ..... "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث: ٢٦٦٩، ج٢، ص٣٥١.

2 ..... "المعجم الكبير" للطبراني، باب العين، الحديث: ١٣١٤٩، ج١٢، ص٢٢٥.

3 ..... "سنن الدار قطني"، كتاب الحج، باب المواقيت، الحديث: ٢٦٦٧، ج٢، ص٣٥١.

4 ..... "شعب الإيمان"، باب في المناسك، فضل الحج و العمرة، الحديث: ٤١٥١، ج٣، ص٤٨٨.

5 ..... "السنن الكبرى" للبيهقي، كتاب الحج، باب زيارة قبر النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ١٠٢٧٣، ج٥، ص٤٠٣.

6 ..... "الكامل في ضعفاء الرجال"، الحديث: ١٩٥٦، ج٨، ص٢٤٨، عن ابن عمر رضي الله عنهما.

www.dawateislami.net

हरगिज़ महरूमी का दाग़ ले कर न पलटो। जान एक दिन ज़रूर जानी है, इस से क्या बेहतर कि उन की राह में जाए और तजरिबा है कि जो उन का दामन थाम लेता है, उसे अपने साए में ब आराम ले जाते हैं, कील का खटका नहीं होता।

हम को तो अपने साए में आराम ही से लाए हीले बहाने वालों को येह राह डर की है

وَالْحَمْدُ لِلّٰه (2) हाज़िरी में ख़ालिस ज़ियारते अक़्दस की निय्यत करो, यहां तक कि इमाम इब्नुल हुमाम फ़रमाते हैं : इस बार मस्जिद शरीफ़ की निय्यत भी शरीक न करे।[1]

(3) ह़ज अगर फ़र्ज़ है तो ह़ज कर के मदीनए त़य्यिबा ह़ाज़िर हो। हां, अगर मदीनए त़य्यिबा रास्ते में हो तो बग़ैर ज़ियारत ह़ज को जाना सख़्त महरूमी व क़सावते क़ल्बी है और इस ह़ाज़िरी को क़बूले ह़ज व सआ़दते दीनी व दुन्यवी के लिये ज़रीआ़ व वसीला क़रार दे और ह़ज नफ़्ल हो तो इख़्तियार है कि पहले ह़ज से पाक साफ़ हो कर महबूब के दरबार में ह़ाज़िर हो या सरकार में पहले ह़ाज़िरी दे कर ह़ज की मक़्बूलिय्यत व नूरानिय्यत के लिये वसीला करे। ग़रज़ जो पहले इख़्तियार करे उसे इख़्तियार है मगर निय्यते ख़ैर दरकार है कि اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَلِكُلِّ امْرِئٍ مَّانَوٰى [2] आमाल का मदार निय्यत पर है और हर एक के लिये वोह है, जो उस ने निय्यत की।

(4) रास्ते भर दुरूद व ज़िक्र शरीफ़ में डूब जाओ और जिस क़दर मदीनए त़य्यिबा क़रीब आता जाए, शौक़ो ज़ौक़ ज़ियादा होता जाए।

(5) जब **ह़रमे मदीना** आए बेहतर येह कि पियादा हो लो। रोते, सर झुकाए, आंखें नीची किये, दुरूद शरीफ़ की और कसरत करो और हो सके तो नंगे पाउं चलो बल्कि

جائے سرست اینکه تو پامی نهی پائے نه بینی که کجا می نهی

ह़रम की ज़मीं और क़दम रख के चलना अरे सर का मौक़अ़ है ओ जाने वाले

जब **कुब्बए अन्वर** पर निगाह पड़े, दुरूदो सलाम की ख़ूब कसरत करो।

(6) जब **शहरे अक़्दस** तक पहुंचो, जलाल व जमाले महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के तसव्वुर में ग़र्क़ हो जाओ और दरवाज़ए शहर में दाख़िल होते वक़्त पहले दहना क़दम रखो और पढ़ो :

---

1 ..... "فتح القدير"، كتاب الحج، مسائل منثورة، ج٣، ص٩٤.

2 ..... "صحيح البخارى"، [كتاب بدء الوحى] الحديث: ١، ج١، ص٥.

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ ، اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ وَارْزُقْنِیْ مِنْ زِیَارَةِ رَسُوْلِکَ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَا رَزَقْتَ اَوْلِیَآئَکَ وَاَهْلَ طَاعَتِکَ وَانْقِذْنِیْ مِنَ النَّارِ وَاغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ یَا خَیْرَ مَسْئُوْلٍ . (1)

(7) ह़ाज़िरिये मस्जिद से पहले तमाम ज़रूरिय्यात से जिन का लगाव दिल बटने का बाइ़स हो, निहायत जल्द फ़ारिग़ हो इन के सिवा किसी बेकार बात में मश्ग़ूल न हो, मअ़न वुज़ू व मिस्वाक करो और ग़ुस्ल बेहतर, सफ़ेद पाकीज़ा कपड़े पहनो और नए बेहतर, सुरमा और ख़ुश्बू लगाओ और मुश्क अफ़्ज़ल ।

(8) अब फ़ौरन **आस्तानए अक़्दस** की त़रफ़ निहायत ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ से मुतवज्जेह हो, रोना न आए तो रोने का मुंह बनाओ और दिल को बज़ोर रोने पर लाओ और अपनी संगदिली से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की त़रफ़ इल्तिजा करो ।

(9) जब दरे **मस्जिद** पर ह़ाज़िर हो, सलातो सलाम अ़र्ज़ कर के थोड़ा ठहरो जैसे सरकार से ह़ाज़िरी की इजाज़त मांगते हो, बिस्मिल्लाह कह कर सीधा पाउं पहले रख कर हमातन अदब हो कर दाख़िल हो ।

(10) इस वक़्त जो अदबो ताज़ीम फ़र्ज़ है हर मुसलमान का दिल जानता है । आंख, कान, ज़बान, हाथ, पाउं, दिल सब ख़याले ग़ैर से पाक करो, **मस्जिदे अक़्दस** के नक़्शो निगार न देखो ।

(11) अगर कोई ऐसा सामने आए जिस से सलाम कलाम ज़रूर हो तो जहां तक बने कतरा जाओ, वरना ज़रूरत से ज़ियादा न बढ़ो फिर भी दिल सरकार ही की त़रफ़ हो ।

(12) हरगिज़ हरगिज़ मस्जिदे अक़्दस में कोई ह़र्फ़ चिल्ला कर न निकले ।

(13) **यक़ीन जानो** कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم सच्ची ह़क़ीक़ी दुन्यावी जिस्मानी ह़यात से वैसे ही ज़िन्दा हैं जैसे वफ़ात शरीफ़ से पहले थे, उन की और तमाम अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मौत सिर्फ़ वादए ख़ुदा की तस्दीक़ को एक आन के लिये थी, उन का इन्तिक़ाल सिर्फ़ नज़रे अ़वाम से छुप जाना है। इमाम मुह़म्मद इब्ने ह़ाज मक्की मदख़ल और इमाम अह़मद क़स्त़लानी मवाहिबे लदुन्निय्या में और अइम्मए दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن फ़रमाते हैं :

(1)...**अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के नाम से मैं शुरूअ़ करता हूं जो **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने चाहा, नेकी की ताक़त नहीं मगर **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से, ऐ रब ! सच्चाई के साथ मुझ को दाख़िल कर और सच्चाई के साथ बाहर ले जा । इलाही ! तू अपनी रह़मत के दरवाज़े मेरे लिये खोल दे और अपने रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुझे वोह नसीब कर जो अपने औलिया और फ़रमां बरदार बन्दों के लिये तू ने नसीब किया और मुझे जहन्नम से नजात दे और मुझ को बख़्श दे और मुझ पर रह़म फ़रमा, ऐ बेहतर सुवाल किये गए । 12

www.dawateislami.net

لَا فَرْقَ بَيْنَ مَوْتِهٖ وَحَيَاتِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ مُشَاهِدَتِهٖ لِاُمَّتِهٖ وَمَعْرِفَتِهٖ بِاَحْوَالِهِمْ وَنِيَاتِهِمْ وَعَزَائِمِهِمْ وَخَوَاطِرِهِمْ وَذٰلِكَ عِنْدَهٗ جَلِيٌّ لَا خِفَاءَ بِهٖ . (1)

तर्जमा : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ह़यात व वफ़ात में इस बात में कुछ फ़र्क़ नहीं कि वोह अपनी उम्मत को देख रहे हैं और उन की ह़ालतों, उन की निय्यतों, उन के इरादों, उन के दिलों के ख़यालों को पहचानते हैं और येह सब हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) पर ऐसा रोशन है जिस में अस्लन पोशीदगी नहीं ।

इमाम رَحْمَةُ اللّٰهِ तिल्मीज़े इमामे मुह़क़्क़िक़ इब्नुल हुमाम "मन्सके मुतवस्सित़" और अ़ली क़ारी मक्की इस की शर्ह़ "मस्लके मुतक़स्सित़" में फ़रमाते हैं :

وَاَنَّهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَالِمٌ بِحُضُوْرِكَ وَقِيَامِكَ وَسَلَامِكَ اَيْ بَلْ بِجَمِيْعِ اَفْعَالِكَ وَاَحْوَالِكَ وَارْتِحَالِكَ وَمَقَامِكَ . (2)

तर्जमा : बेशक रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तेरी ह़ाज़िरी और तेरे खड़े होने और तेरे सलाम बल्कि तेरे तमाम अफ़्आ़लो अह़वाल व कूच व मक़ाम से आगाह हैं ।

(14) अब अगर जमाअ़त क़ाइम हो शरीक हो जाओ कि इस में तह़िय्यतुल मस्जिद भी अदा हो जाएगी, वरना अगर ग़लबए शौक़ मोहलत दे और वक़्ते कराहत न हो तो दो रक्अ़त तह़िय्यतुल मस्जिद व शुक्राना ह़ाज़िरिये दरबारे अक़्दस सिर्फ़ قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और قُلْ هُوَ اللّٰهُ से बहुत हल्की मगर रिआ़यते सुन्नत के साथ, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के नमाज़ पढ़ने की जगह जहां अब वस्ते मस्जिदे करीम में मेह़राब बनी है और वहां न मिले तो जहां तक हो सके उस के नज़्दीक अदा करो फिर सज्दए शुक्र में गिरो और दुआ़ करो कि इलाही ! अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का अदब और उन का और अपना क़बूल नसीब कर, आमीन ।

(15) अब कमाले अदब में डूबे हुए गरदन झुकाए, आंखें नीची किये, लरज़ते, कांपते, गुनाहों की नदामत से पसीना पसीना होते हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के अ़फ़्वो करम की उम्मीद रखते, हुज़ूरे वाला की पाईंती यानी मशरिक़ की त़रफ़ से मुवाजहए आ़लिया में ह़ाज़िर हो कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मज़ारे अन्वर में रू ब क़िब्ला जल्वा फ़रमा हैं, इस सम्त से ह़ाज़िर होगे तो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की निगाहे बेकस पनाह तुम्हारी त़रफ़ होगी और येह बात तुम्हारे लिये दोनों जहां में काफ़ी है, وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

(1) ..... "المدخل" لابن الحاج، فصل فی زیارة القبور، ج۱، ص۱۸۷.

(2) ..... "لباب المناسك" و "المسلك المتقسط"، (باب زیارة سید المرسلین صلی الله تعالی علیه وسلم)، ص۵۰۸.

www.dawateislami.net

(16) अब कमाले अदबो हैबत व ख़ौफ़ो उम्मीद के साथ **ज़ेरे क़िन्दील** उस **चांदी की कील** के सामने जो हुजरए मुत़ह्हरा की जुनूबी दीवार में चेहरए अन्वर के मुक़ाबिल लगी है, कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले से क़िब्ले को पीठ और मज़ारे अन्वर को मुंह कर के नमाज़ की त़रह़ हाथ बांधे खड़े हो।

लुबाब व शर्ह़े लुबाब व इख़्तियार शर्ह़े मुख़्तार व फ़तावा आ़लमगीरी वग़ैरहा मोअ़्तमद किताबों में इस अदब की तसरीह़ फ़रमाई कि [1] يَقِفُ كَمَا يَقِفُ فِي الصَّلٰوةِ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के सामने ऐसा खड़ा हो जैसा नमाज़ में खड़ा होता है। येह इ़बारत आ़लमगीरी व इख़्तियार की है।

और लुबाब में फ़रमाया : [2] وَاضِعًا يَمِيْنَهٗ عَلٰى شِمَالِهٖ. दस्त बस्ता दह़ना हाथ बाएं पर रख कर खड़ा हो।

(17) ख़बरदार ! जाली शरीफ़ को बोसा देने या हाथ लगाने से बचो कि ख़िलाफ़े अदब है, बल्कि चार हाथ फ़ासिले से ज़ियादा क़रीब न जाओ। येह उन की रह़मत क्या कम है कि तुम को अपने हुज़ूर बुलाया, अपने मुवाजहए अक़्दस में जगह बख़्शी, उन की निगाहे करीम अगर्चे हर गजह तुम्हारी त़रफ़ थी, अब ख़ुसूसिय्यत और इस दरजए क़ुर्ब के साथ है وَالْحَمْدُ لِلّٰه

(18) اَلْحَمْدُلِلّٰه अब दिल की त़रह़ तुम्हारा मुंह भी उस पाक जाली की त़रफ़ हो गया, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूबे अ़ज़ीमुश्शान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की आराम गाह है, निहायत अदब व वक़ार के साथ ब आवाज़े ह़ज़ीं व सौते दर्दआगीन व दिले शर्मनाक व जिगरे चाक चाक, मोअ़्तदिल आवाज़ से, न बुलन्द व सख़्त (कि उन के हुज़ूर आवाज़ बुलन्द करने से अ़मल अकारत हो जाते हैं), न निहायत नर्मो पस्त (कि सुन्नत के ख़िलाफ़ है अगर्चे वोह तुम्हारे दिलों के ख़त़रों तक से आगाह हैं जैसा कि अभी तसरीह़ाते अइम्मा से गुज़रा), **मुजरा व तस्लीम** बजा लाओ और अ़र्ज़ करो :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللّٰهِ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيْعَ الْمُذْنِبِيْنَ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ وَاُمَّتِكَ اَجْمَعِيْنَ ط [3]

(19) जहां तक मुम्किन हो और ज़बान यारी दे और मलाल व कसल न हो सलातो सलाम की कसरत करो, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) से अपने और अपने मां बाप, पीर, उस्ताद, औलाद, अ़ज़ीज़ों, दोस्तों और सब मुसलमानों के लिये शफ़ाअ़त मांगो, बार बार अ़र्ज़ करो :

1 ..... "الفتاوى الهندية"، كتاب المناسك، خاتمه فى زيارة قبر النبى صلى الله تعالى عليه وسلم، ج١، ص٢٦٥.

2 ..... "لباب المناسك" للسندى، (باب زيارة سيد المرسلين صلى الله عليه وسلم)، ص٥٠٨. 3 ..... المرجع السابق.

ऐ नबी ! आप पर सलाम और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रह़मत और बरकतें, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के रसूल ! आप पर सलाम। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की तमाम मख़्लूक़ से बेहतर ! आप पर सलाम। ऐ गुनहगारों की शफ़ाअ़त करने वाले ! आप पर सलाम। आप पर और आप की आलो अस्ह़ाब पर और आप की तमाम उम्मत पर सलाम। 12

www.dawateislami.net

اَسْأَلُکَ الشَّفَاعَةَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ [1]

(20) फिर अगर किसी ने अ़र्ज़े सलाम की वसिय्यत की बजा लाओ। शर्अ़न इस का हुक्म है और येह फ़क़ीरे ज़लील उन मुसलमानों को जो इस रिसाले को देखें, वसिय्यत करता है कि जब उन्हें हाज़िरिये बारगाह नसीब हो, फ़क़ीर की ज़िन्दगी में या बाद कम अज़ कम तीन बार मुवाजहए अक़्दस में ज़रूर येह अल्फ़ाज़ अ़र्ज़ कर के इस ना लाइक़ नंगे ख़लाइक़ पर एह़सान फ़रमाएं। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) उन को दोनों जहान में जज़ाए ख़ैर बख़्शे आमीन।

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ وَعَلٰی اٰلِکَ وَذَوِیْکَ فِیْ کُلِّ اٰنٍ وَّلَحْظَةٍ عَدَدَ کُلِّ ذَرَّةٍ ذَرَّةٍ اَلْفَ اَلْفَ مَرَّةٍ مِنْ عُبَیْدِکَ اَمْجَدْ عَلِیْ یَسْئَلُکَ الشَّفَاعَةَ فَاشْفَعْ لَہٗ وَلِلْمُسْلِمِیْنَ [2]

(21) फिर अपने दह्ने हाथ यानी मशरिक़ की त़रफ़ हाथ भर हट कर **ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के चेहरए नूरानी के सामने खड़े हो कर अ़र्ज़ करो :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا خَلِیْفَةَ رَسُوْلِ اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا وَزِیْرَ رَسُوْلِ اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا صَاحِبَ رَسُوْلِ اللّٰہِ فِی الْغَارِ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ وَ بَرَکَاتُہٗ [3]

(22) फिर उतना ही और हट कर **ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के रू ब रू खड़े हो कर अ़र्ज़ करो :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا مُتَمِّمَ الْاَرْبَعِیْنَ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا عِزَّ الْاِسْلَامِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ [4]

(23) फिर बालिश्त भर मग़रिब की त़रफ़ पलटो और सिद्दीक़ व फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के दरमियान खड़े हो कर अ़र्ज़ करो :

---

1 ...या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! मैं हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) से शफ़ाअ़त मांगता हूं। 12

2 ...या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم) ! हुज़ूर और हुज़ूर की आल और सब अ़लाक़े वालों पर हर आन और हर लह़ज़ा में हर हर ज़र्रे की गिनती पर दस दस लाख दुरूदो सलाम हुज़ूर के ह़क़ीर ग़ुलाम अमजद अ़ली की त़रफ़ से, वोह हुज़ूर से शफ़ाअ़त मांगता है, हुज़ूर उस की और तमाम मुसलमानों की शफ़ाअ़त फ़रमाएं। 12

3 ....."لباب المناسك" للسندی، (باب زیارة سید المرسلین، صلی اللہ تعالی علیہ وسلم)، ص ۵۱۰.

ऐ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ! आप पर सलाम ! ऐ रसूलुल्लाह के वज़ीर ! आप पर सलाम, ऐ ग़ारे सौर में रसूलुल्लाह के रफ़ीक़ ! आप पर सलाम और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रह़मत और बरकतें। 12

4 ....."لباب المناسك" للسندی، (باب زیارة سید المرسلین، صلی اللہ تعالی علیہ وسلم)، ص ۵۱۱، وغیرہ.

ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! आप पर सलाम, ऐ चालीस का अ़दद पूरा करने वाले ! आप पर सलाम, ऐ इस्लाम और मुस्लिमीन की इ़ज़्ज़त ! आप पर सलाम और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रह़मत और बरकतें। 12

www.dawateislami.net

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا خَلِيْفَتَىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ ط عَلَيْكُمَا يَا وَزِيْرَىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا ضَجِيْعَىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ط اَسْأَلُكُمَا الشَّفَاعَةَ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ط صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلَيْكُمَا وَبَارَكَ وَسَلَّم [1]

(24) येह सब ह़ाज़िरियां महल्ले इजाबत हैं, दुआ़ में कोशिश करो। दुआ़ए जामेअ़ करो और दुरूद पर क़नाअ़त बेहतर और चाहो तो येह दुआ़ पढ़ो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُشْهِدُكَ وَاُشْهِدُ رَسُوْلَكَ وَاَبَابَكْرٍ وَّعُمَرَ وَاُشْهِدُ الْمَلٰئِكَةَ النَّازِلِيْنَ عَلٰى هٰذِهِ الرَّوْضَةِ الْكَرِيْمَةِ الْعَاكِفِيْنَ عَلَيْهَا اَنِّیْ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ مُقِرٌّ بِجَنَايَتِیْ وَمَعْصِيَّتِیْ فَاغْفِرْلِیْ وَامْنُنْ عَلَیَّ بِالَّذِیْ مَنَنْتَ عَلٰى اَوْلِيَآئِكَ فَاِنَّكَ الْمَنَّانُ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ [2]

(25) फिर मिम्बरे अत़हर के क़रीब दुआ़ मांगो।

(26) फिर जन्नत की क्यारी में (यानी जो जगह मिम्बर व हुजरए मुनव्वरह के दरमियान है, इसे ह़दीस में जन्नत की क्यारी फ़रमाया) आ कर दो रक्अ़त नफ़्ल ग़ैर वक़्ते मक्रूह में पढ़ कर दुआ़ करो।

(27) यूंही मस्जिद शरीफ़ के हर सुतून के पास नमाज़ पढ़ो, दुआ़ मांगो कि महल्ले बरकात हैं ख़ुसूसन बाज़ में ख़ास ख़ुसूसिय्यत।

(28) जब तक मदीनए त़य्यिबा की ह़ाज़िरी नसीब हो, एक सांस बेकार न जाने दो, ज़रूरिय्यात के सिवा अक्सर वक़्त मस्जिद शरीफ़ में बा त़हारत ह़ाज़िर रहो, नमाज़ व तिलावत व दुरूद में वक़्त गुज़ारो, दुन्या की बात किसी मस्जिद में न चाहिये न कि यहां।

(29) हमेशा हर मस्जिद में जाते वक़्त एतिकाफ़[3] की निय्यत कर लो, यहां तुम्हारी

---

1 ...ऐ रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के पहलू में आराम करने वाले ! आप दोनों पर सलाम और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की रह़मत और बरकतें, आप दोनों ह़ज़रात से सुवाल करता हूं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के हुज़ूर हमारी सिफ़ारिश कीजिये, **अल्लाह** तआ़ला इन पर और आप दोनों पर दुरूद व बरकत व सलाम नाज़िल फ़रमाए। 12

2 ...**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं तुझ को और तेरे रसूल और अबू बक्र व उ़मर को और तेरे फ़रिश्तों को जो इस रौज़े पर नाज़िल और मोतकिफ़ हैं, इन सब को गवाह करता हूं कि मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तू तन्हा है तेरा कोई शरीक नहीं और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم तेरे बन्दे और रसूल हैं, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मैं अपने गुनाह व मआ़सियत का इक़्रार करता हूं। तू मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा और मुझ पर वोह एह़सान कर जो तू ने अपने औलिया पर किया। बेशक तू एह़सान करने वाला, बख़्शने वाला मेहरबान है। 12

3 ...एतिकाफ़ के माना हैं मस्जिद में बिल क़स्द निय्यत कर के ठहरना इस लिये कि ज़िक्रे इलाही करूंगा। 12

www.dawateislami.net

याद दिहानी ही को दरवाज़े से बढ़ते ही कतबा मिलेगा[1] نَوَيْتُ سُنَّتَ الْاِعْتِكَافِ

(30) मदीनए त़य्यिबा में रोज़ा नसीब हो ख़ुसूसन गर्मी में तो क्या कहना कि इस पर वादए शफ़ाअ़त है।

(31) यहां हर नेकी एक की पचास हज़ार लिखी जाती है, लिहाज़ा इ़बादत में ज़ियादा कोशिश करो, खाने पीने की कमी ज़रूर करो और जहां तक हो सके तसद्दुक़ करो ख़ुसूसन यहां वालों पर ख़ुसूसन इस ज़माने में कि अक्सर ज़रूरत मन्द हैं।

(32) क़ुरआने मजीद का कम से कम एक ख़त्म यहां और ह़तीमे काबए मुअ़ज़्ज़मा में कर लो।

(33) रौज़ए अन्वर पर नज़र इबादत है जैसे काबए मुअ़ज़्ज़मा या क़ुरआने मजीद का देखना तो अदब के साथ इस की कसरत करो और दुरूदो सलाम अ़र्ज़ करो।

(34) पंजगाना या कम अज़ कम सुब्ह, शाम मुवाजहा शरीफ़ में अ़र्ज़े सलाम के लिये ह़ाज़िर हो।

(35) शह्र में ख़्वाह शह्र से बाहर जहां कहीं गुम्बदे मुबारक पर नज़र पड़े, फ़ौरन दस्त बस्ता उधर मुंह कर के सलातो सलाम अ़र्ज़ करो, बे इस के हरगिज़ न गुज़रो कि ख़िलाफ़े अदब है।

(36) तर्के जमाअ़त बिला उ़ज़्र हर जगह गुनाह है और कई बार हो तो सख़्त ह़राम व गुनाहे कबीरा और यहां तो गुनाह के इलावा कैसी सख़्त महरूमी है, وَالْعِيَاذُ بِاللّٰهِ تَعَالٰى सह़ीह़ ह़दीस में है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जिसे मेरी मस्जिद में चालीस नमाज़ें फ़ौत न हों उस के लिये दोज़ख़ व निफ़ाक़ से आज़ादियां लिखी जाएं।"[2]

(37) ह़त्तल वस्अ़ कोशिश करो कि मस्जिदे अव्वल यानी हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के ज़माने में जितनी थी उस में नमाज़ पढ़ो और इस की मिक़्दार सौ हाथ तूल व सौ हाथ अ़र्ज़ है अगर्चे बाद में कुछ इज़ाफ़ा हुवा है, इस में नमाज़ पढ़ना भी मस्जिदे नबवी ही में पढ़ना है।

(38) क़ब्रे करीम को हरगिज़ पीठ न करो और ह़त्तल इम्कान नमाज़ में भी ऐसी जगह न खड़े हो कि पीठ करनी पड़े।

(39) रौज़ए अन्वर का न त़वाफ़ करो, न सज्दा, न इतना झुकना कि रुकूअ़ के बराबर हो। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की ताज़ीम उन की इत़ाअ़त में है।

अहले बक़ीअ़ की ज़ियारत

(40) बक़ीअ़ की ज़ियारत सुन्नत है, रौज़ए अक़्दस की ज़ियारत कर के वहां जाए

1 ...मैं ने सुन्नत एतिकाफ़ की निय्यत की। 12

2 ..... "المسند" للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك، الحديث: ١٢٥٨٤، ج٤، ص٣١١.

www.dawateislami.net

ख़ुसूसन जुमुआ़ के दिन। इस क़ब्रिस्तान में क़रीब दस[10] हज़ार सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم मदफ़ून हैं और ताबेईन व तब्अ़ ताबेईन व औलिया व उ़लमा व सुलह़ा वग़ैरहुम की गिनती नहीं। यहां जब ह़ाज़िर हो पहले तमाम मदफ़ूनीने मुस्लिमीन की ज़ियारत का क़स्द करे और येह पढ़े :

اَلسَّلَامُ عَلَيۡكُمۡ دَارَ قَوۡمٍ مُّؤۡمِنِيۡنَ اَنۡتُمۡ لَنَا سَلَفٌ وَّ اِنَّا اِنۡشَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى بِكُمۡ لَاحِقُوۡنَ اَللّٰهُمَّ اغۡفِرۡ لِاَهۡلِ الۡبَقِيۡعِ بَقِيۡعِ الۡغَرۡقَدِ اَللّٰهُمَّ اغۡفِرۡلَنَا وَلَهُمۡ [1]

और अगर कुछ और पढ़ना चाहे तो येह पढ़े :

رَبَّنَا اغۡفِرۡلَنَا وَلِوَالِدَيۡنَا وَلِاُسۡتَاذِيۡنَا وَلِاِخۡوَانِنَاوَلِاَخَوَاتِنَا وَلِاَوۡلَادِنَا وَلِاَحۡفَادِنَا وَلِاَصۡحَابِنَا وَلِاَحۡبَابِنَا وَلِمَنۡ لَّهٗ حَقٌّ عَلَيۡنَا وَلِمَنۡ اَوۡصَانَا وَلِلۡمُؤۡمِنِيۡنَ وَالۡمُؤۡمِنَاتِ وَالۡمُسۡلِمِيۡنَ وَالۡمُسۡلِمَاتِ [2]

और दुरूद शरीफ़ व सूरए फ़ातिह़ा व आयतुल कुर्सी व قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ वग़ैरा जो कुछ हो सके पढ़ कर सवाब उस का नज़्र करे, इस के बाद बक़ीअ़ शरीफ़ में जो मज़ारात मारूफ़ व मश्हूर हैं उन की ज़ियारत करे। तमाम अहले बक़ीअ़ में अफ़्ज़ल अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ हैं, उन के मज़ार पर ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ करे :

اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا اَمِيۡرَ الۡمُؤۡمِنِيۡنَ اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا ثَالِثَ الۡخُلَفَآءِ الرَّاشِدِيۡنَ اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا صَاحِبَ الۡهِجۡرَتَيۡنِ اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا مُجَهِّزَ جَيۡشِ الۡعُسۡرَةِ بِالنَّقۡدِ وَالۡعَيۡنِ جَزَاكَ اللّٰهُ عَنۡ رَّسُوۡلِهٖ وَعَنۡ سَائِرِ الۡمُسۡلِمِيۡنَ وَرَضِيَ اللّٰهُ عَنۡكَ وَعَنِ الصَّحَابَةِ اَجۡمَعِيۡنَ [3]

क़ुब्बए[2] ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम इब्ने सरदारे दो आ़लम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم और इसी क़ुब्बए शरीफ़ में इन ह़ज़राते किराम के भी मज़ाराते त़य्यिबा हैं, ह़ज़रते रुक़य्या (हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم की साह़िबज़ादी) ह़ज़रते उ़स्मान बिन मज़्ऊन (येह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم के रज़ाई भाई हैं) अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ व सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास (येह दोनों ह़ज़रात अ़शरए मुबश्शरा से हैं) अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द (निहायत जलीलुल क़द्र सह़ाबी ख़ुलफ़ाए अर्बआ़ के बाद सब से अफ़्क़ह) ख़ुनैस बिन ह़ुज़ाफ़ा सहमी व अस्अ़द बिन ज़ुरारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم اَجۡمَعِیۡن। इन ह़ज़रात की ख़िदमत में सलाम अ़र्ज़ करे।

---

1 ...तुम पर सलाम ऐ क़ौमे मोमिनीन के घर वालो ! तुम हमारे पेश्वा हो और हम اِنۡ شَآءَ اللّٰہ تَعَالٰی तुम से मिलने वाले हैं, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! बक़ीअ़ वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हम को और इन्हें बख़्श दे। 12

2 ...ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! हम को और हमारे वालिदैन को और उस्तादों और भाइयों और बहनों और हमारी औलाद और पोतों और साथियों और दोस्तों को और उस को जिस का हम पर ह़क़ है और जिस ने हमें वसिय्यत की और तमाम मोमिनीन व मोमिनात व मुस्लिमीन व मुस्लिमात को बख़्श दे। 12

3 .....”المسلك المتقسط“، (باب زيارة سيد المرسلين صلى الله تعالى عليه وسلم)، ص ٥٢٠، وغيره.

ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! आप पर सलाम और ऐ ख़ुलफ़ाए राशिदीन में तीसरे ख़लीफ़ा ! आप पर सलाम। ऐ दो हिजरत करने वाले ! आप पर सलाम। ऐ ग़ज़्वए तबूक की नक़्द व जिन्स से तय्यारी करने वाले ! आप पर सलाम। **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) आप को अपने रसूल और तमाम मुसलमानों की त़रफ़ से बदला दे, आप से और तमाम सह़ाबा से **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) राज़ी हो। 12

www.dawateislami.net

कुब्बए[3] ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ, इसी कुब्बे में ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा व सरे मुबारक सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन व इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन व इमाम मुह़म्मद बाक़िर व इमाम जाफ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم के मज़ाराते त़य्यिबात हैं, उन पर सलाम अ़र्ज़ करे।

कुब्बए[4] अज़्वाजे मुत़ह्हरात, ह़ज़रते उम्मुल मुअमिनीन ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का मज़ार मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में और मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का सरफ़ में है। बक़िय्या तमाम अज़्वाजे मुकर्रमात इसी कुब्बे में हैं।

कुब्बए[5] ह़ज़रते अ़क़ील बिन अबी त़ालिब, इस में सुफ़्यान बिन ह़ारिस बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब व अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़रे त़य्यार भी हैं और[6] इस के क़रीब एक कुब्बा है जिस में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की तीन औलादें हैं। कुब्बए[7] सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की फूफी, कुब्बए[8] इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ। कुब्बए[9] नाफ़ेअ़ मौला इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا।

इन ह़ज़रात की ज़ियारत से फ़ारिग़ हो कर मालिक बिन सिनान व अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا व इस्माईल बिन जाफ़रे सादिक़ व मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم व सय्यिदुश्शुहदा अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो।

बक़ीअ़ की ज़ियारत किस से शुरूअ़ हो, इस में इख़्तिलाफ़ है बाज़ उ़लमा फ़रमाते हैं कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से इब्तिदा करे कि येह सब में अफ़्ज़ल हैं और बाज़ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते इब्राहीम इब्ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से शुरूअ़ करे और बाज़ फ़रमाते हैं कि कुब्बए सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से इब्तिदा हो और कुब्बए सफ़िय्या पर ख़त्म कि सब से पहले वोही मिलता है, तो बग़ैर सलाम अ़र्ज़ किये वहां से आगे न बढ़े और येही आसान भी है।[(1)]

क़ुबा शरीफ़ की ज़ियारत

(41) कुबा शरीफ़ की ज़ियारत करे और मस्जिद शरीफ़ में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े। तिरमिज़ी में मरवी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि :

''मस्जिदे कुबा में नमाज़, उ़मरह की मानिन्द है।''[(2)] और अह़ादीसे सह़ीह़ा से साबित कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم हर हफ़्ते को कुबा तशरीफ़ ले जाते कभी सुवार, कभी पैदल। इस मक़ाम की बुज़ुर्गी में और भी अह़ादीस हैं।

1 ..... "المسلك المتقسط"، (باب زيارة سيد المرسلين صلى الله تعالى عليه وسلم)، ص ٥٢١.

2 ..... "جامع الترمذي"، ابواب الصلاة، باب ماجاء في الصلاة في مسجد قباء، الحديث: ٣٢٤، ج ١، ص ٣٤٨.

www.dawateislami.net

उहुद की ज़ियारत

(42) शुहदाए उहुद शरीफ़ की ज़ियारत करे । ह़दीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हर साल के शुरूअ़ में क़ुबूरे शुहदाए उहुद पर आते और येह फ़रमाते : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ"[1] और कोहे उहुद की भी ज़ियारत करे कि सह़ीह़ ह़दीस में फ़रमाया : "कोहे उहुद हमें मह़बूब रखता है और हम उसे मह़बूब रखते हैं ।"[2] और एक रिवायत में है कि "जब तुम ह़ाज़िर हो तो उस के दरख़्त से कुछ खाओ अगर्चे बबूल हो ।"[3]

बेहतर येह है कि पंजशम्बा[4] के दिन सुब्ह़ के वक़्त जाए और सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुश्शुहदा ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه के मज़ार पर ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ करे और अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श व मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا पर सलाम अ़र्ज़ करे कि एक रिवायत में है येह दोनों ह़ज़रात यहीं मदफ़ून हैं ।[5]

सय्यिदुश्शुहदा की पाईं जानिब और सह़ने मस्जिद में जो क़ब्र है, येह दोनों शुहदाए उहुद में नहीं हैं ।

(43) मदीनए त़य्यिबा के वोह कूंएं जो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) की त़रफ़ मन्सूब हैं यानी किसी से वुज़ू फ़रमाया और किसी का पानी पिया और किसी में लुआ़बे दहन डाला । अगर कोई जानने बताने वाला मिले तो उन की भी ज़ियारत करे और उन से वुज़ू करे और पानी पिये ।

(44) अगर चाहो तो मस्जिदे नबवी में ह़ाज़िर रहो । सय्यिदी इब्ने अबी जमरा قُدِّسَ سِرُّه जब ह़ाज़िरे हुज़ूर हुए, आठों पहर बराबर हुज़ूरी में खड़े रहते एक दिन बक़ीअ़ वग़ैरा ज़ियारात का ख़याल आया फिर फ़रमाया : येह है **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का दरवाज़ा भीक मांगने वालों के लिये खुला हुवा, इसे छोड़ कर कहां जाऊं !

سر ایں جا، سجدہ ایں جا بندگی ایں جا، قرار ایں جا

(45) वक़्ते रुख़्सत मुवाजहए अन्वर में ह़ाज़िर हो और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) से बार बार इस नेमत की अ़त़ा का सुवाल करो और तमाम आदाब कि काबए मुअ़ज़्ज़मा से रुख़्सत में गुज़रे मल्हूज़ रखो और सच्चे दिल से दुआ़ करो कि इलाही ! ईमान व सुन्नत पर मदीनए

1 ....."المسلك المتقسط فى المنسك المتوسط"، (باب زيارة سيد المرسلين صلى الله تعالى عليه وسلم)، ص٥٢٥.

2 ....."صحيح البخارى"، كتاب الجهاد، باب فضل الخدمة فى الغزو، الحديث:٢٨٨٩، ج٢، ص٢٧٨.

3 ....."المعجم الاوسط" للطبرانى، الحديث:١٩٠٥، ج١، ص٥١٦.

4 ....जुमेरात

5 ....."لباب المناسك" و" المسلك المتقسط "، (باب زيارة سيد المرسلين صلى الله تعالى عليه وسلم)، ص٥٢٥.

www.dawateislami.net

त़य्यिबा में मरना और बक़ीए़ पाक में दफ़्न होना नसीब कर।

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنَا اٰمِیْنَ اٰمِیْنَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَابْنِہٖ وحِزْبِہٖ اَجْمَعِیْنَ اٰمِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ .

تـــــــــــــــمـــــــــــــــت

इस किताब की तस्नीफ़ शबे बस्तम माहे फ़ाख़िर रबीउ़ल आख़िर 1337 सि. हि. को ख़त्म हुई और थोड़े दिनों बाद इमामे अहले सुन्नत **आला ह़ज़रत** क़िब्ला قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی को सुना भी दी थी। फ़क़ीर जब ह़रमैने त़य्यिबैन रवाना हुवा इस रिसाले को अपने साथ रखा था और बम्बई के एक हफ़्ता क़ियाम में मुबय्यज़ा किया[1] मगर इस की त़ब्अ़ में मवानेअ़ पेश आते गए, जिन की वज्ह से बहुत ताख़ीर हुई। ख़ुदा का शुक्र है कि अब त़ब्अ़ हो गया। मौला तआ़ला मुसलमानों को इस से नफ़्अ़ पहुंचाए और उन साहिबों से निहायत इज्ज़ के साथ इल्तिजा है कि इस फ़क़ीर के लिये ईमान पर सबात और ह़ुस्ने ख़ातिमा की दुआ़ फ़रमाएं।

आला ह़ज़रत क़िब्ला قُدِّسَ سِرُّہُ الْعَزِیْز का रिसाला **''अन्वरुल बशारह''** पूरा इस में शामिल कर दिया है यानी मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर मज़ामीन बल्कि इबारतें दाख़िले रिसाला हैं कि **अव्वलन :** तबर्रुक मक़्सूद है। **दुवुम :** उन अल्फ़ाज़ में जो ख़ूबियां हैं फ़क़ीर से ना मुम्किन थीं लिहाज़ा इबारत भी न बदली।

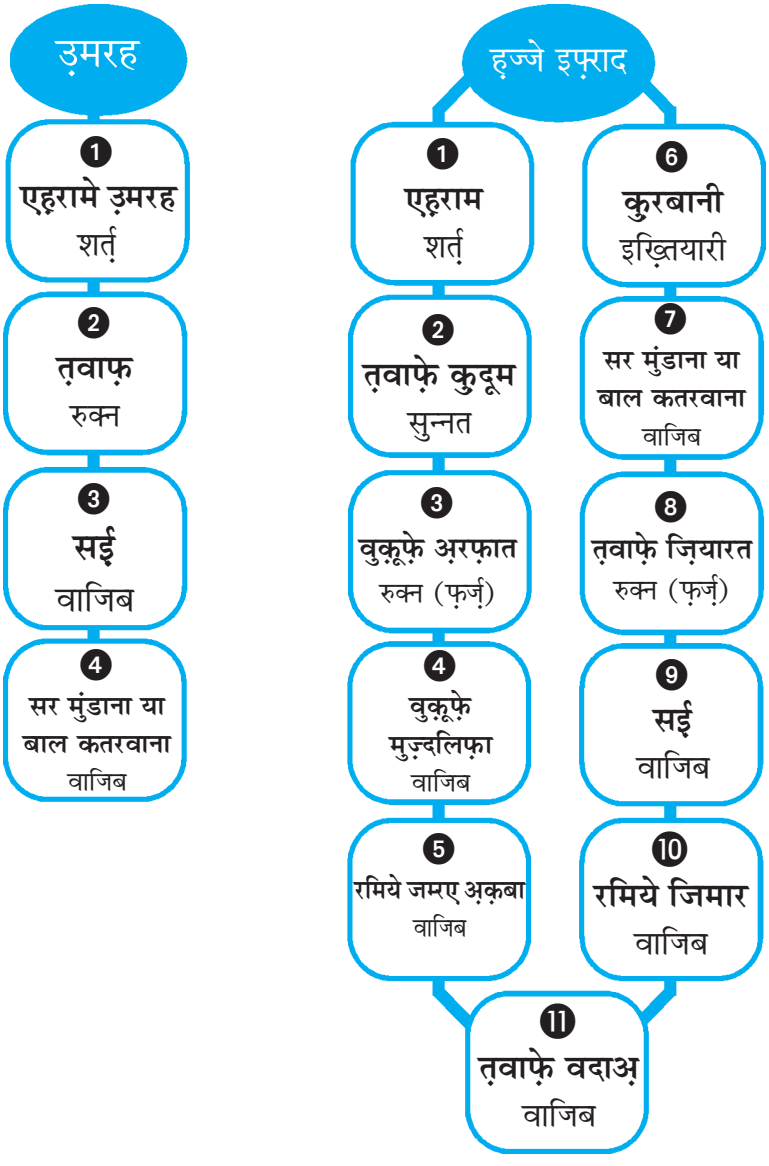
फ़क़ीर अबुल उ़ला
मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी عُفِیَ عَنْہُ
25 **रमज़ानुल मुबारक** 1341 **सि. हि.**

1 ....यानी छपने के लिये तय्यार किया।

www.dawateislami.net

ह़ज्जो उ़मरह के आमाल का नक़्शा एक नज़र में

जैल के नक़्शे से उ़मरह, ह़ज्जे इफ़्राद, क़िरान और तमत्तोअ़ के मनासिक मालूम किये जा सकते हैं, येह वज़ाह़त भी कर दी गई है कि इन में से शर्त़, रुक्न, वाजिब, सुन्नत और इख़्तियारी कौन कौन से मनासिक हैं।



www.dawateislami.net



www.dawateislami.net

हिन्दुस्तान से आने वाले उ़मूमन ह़ज्जे तमत्तोअ़ ही किया करते हैं। ज़ैल के नक़्शे में निहायत इख़्तिसार से इस का त़रीक़ा (जब कि क़ुरबानी का जानवर साथ न हो) घर से रवाना हो कर इख़्तितामे ह़ज तक पेशे ख़िदमत है।

1. घर से रवानगी
2. मीक़ात से पहले उ़मरह की निय्यत से एह़राम बांधना
3. काबे शरीफ़ का त़वाफ़ करना और मक़ामे इब्राहीम पर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ना और आबे ज़मज़म पीना
4. सई करना और इस के बाद ह़ल्क़ या क़स्र कराना और एह़राम खोलना
5. 8 ज़िल ह़िज्जा को दोबारा एह़राम बांध कर मिना जाने की तय्यारी करना और मिना में जा कर ज़ोह्र अ़स्र मग़रिब और इ़शा की नमाज़ अदा करना
6. 9 ज़िल ह़िज्जा को मक़ामे अ़रफ़ात में ज़ोह्र व अ़स्र की नमाज़ें पढ़ना। वुक़ूफ़े अ़रफ़ात करना
7. 9 ज़िल ह़िज्जा को सूरज ग़ुरूब होने के बाद अ़रफ़ात से मुज़्दलिफ़ा पहुंच कर नमाज़े मग़रिब व इ़शा मिला कर पढ़ना। रात मुज़्दलिफ़ में क़ियाम और तुलूए आफ़्ताब से कुछ पहले तक मुज़्दलिफ़ा में वुक़ूफ़ करना
8. 10 ज़िल ह़िज्जा को मुज़्दलिफ़ा से मिना में आना और जम्रतुल अ़क़बा पर कंकरियां मारना। क़ुरबानी करना और ह़ल्क़ या क़स्र करना
9. 10 ज़िल ह़िज्जा को ह़ल्क़ या क़स्र के बाद मक्कए मुकर्रमा में जा कर त़वाफ़े ज़ियारत करना और फिर वापस मिना में आना
10. 11, 12, 13 ज़िल ह़िज्जा को मिना में क़ियाम करना। और इन तीनों दिनों में जमरात पर कंकरियां मार कर मक्कए मुकर्रमा रवाना होना
11. 14 ज़िल ह़िज्जा या जब रुख़्सत का इरादा हो त़वाफ़े वदाअ़ करना
12. सफ़रे मदीनए त़य्यिबा ख़ास ब क़स्दे ज़ियारते शरीफ़ा

आला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن तह़रीर फ़रमाते हैं : उ़लमा मुख़्तलिफ़ हैं कि पहले ह़ज करे या ज़ियारत। "लुबाब" में है : ह़ज्जे नफ़्ल में मुख़्तार है और फ़र्ज़ हो तो पहले ह़ज मगर मदीनए त़य्यिबा राह में आए तो तक़्दीमे ज़ियारत लाज़िम اھ। यानी बे ज़ियारत गुज़र जाना गुस्ताख़ी और फ़क़ीर को अ़ल्लामा सुबुकी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का येह इरशाद बहुत भाया कि : पहले ह़ज करे ताकि पाक की ज़ियारत पाक हो कर मिले। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 10 स. 798)

www.dawateislami.net

मआख़िज़ो मराजेअ़

नम्बरशुमार	नाम किताब	मुसन्निफ़ / मुअल्लिफ़	मतबूआत
1	قرآن مجید	کلامِ الٰہی	مکتبۃ المدینہ
2	کنز الإیمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ

کتب التفسیر

1	جامع البیان فی تأویل القرآن	امام ابوجعفر محمد بن جریر طبری متوفی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
2	معالم التنزیل (تفسیر البغوی)	امام ابو محمد الحسین بن مسعود فراء بغوی متوفی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۴ھ
3	مفاتیح الغیب (التفسیر الکبیر)	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
4	الجامع لأحکام القرآن (تفسیر القرطبی)	ابو عبداللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
5	مدارك التنزیل وحقائق التأویل	امام عبداللہ بن احمد بن محمود نسفی متوفی ۷۱۰ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
6	تفسیر الخازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی متوفی ۷۴۱ھ	
7	تفسیر القرآن العظیم (تفسیر ابن کثیر)	عماد الدین إسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی متوفی ۷۷۴ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
8	أنوار التنزیل وأسرار التأویل	ناصر الدین عبداللہ ابو عمر بن محمد شیرازی بیضاوی متوفی ۷۹۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
9	تفسیر الجلالین	امام جلال الدین محلی متوفی ۸۶۳ھ وامام جلال الدین سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	
10	الدر المنثور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	
11	الإتقان في علوم القرآن	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۳ھ
12	حاشیۃ شیخ زادہ علی البیضاوی	محیی الدین محمد بن مصلح الدین مصطفیٰ قوجوی حنفی متوفی ۹۵۱ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
13	تفسیر روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسوی متوفی ۱۱۳۷ھ	
14	تفسیر أبی السعود	علامہ ابو السعود محمد بن مصطفیٰ عمادی متوفی ۹۸۲ھ	دار الفکر، بیروت
15	التفسیرات الأحمدیۃ فی بیان الآیات الشرعیۃ	شیخ احمد بن ابی سعید المعروف بملّا جیون جونپوری متوفی ۱۱۳۰ھ	
16	الفتوحات الإلٰہیۃ (حاشیۃ الجمل علی الجلالین)	علامہ شیخ سلیمان جمل متوفی ۱۲۰۴ھ	
17	حاشیۃ الصاوی علی الجلالین	احمد بن محمد صاوی مالکی خلوتی متوفی ۱۲۴۱ھ	
18	روح المعانی	ابو الفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی متوفی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۰ھ
19	غرائب القرآن و رغائب الفرقان	علامہ نظام الدین حسن بن محمد نیشاپوری، متوفی ۷۲۸ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
20	تفسیر مظہری (مترجَم)	مؤلف علامہ قاضی ثناء اللہ پانی پتی متوفی ۱۸۱۰ھ مترجم: ادارہ ضیاء المصنفین	

www.dawateislami.net

21	تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	

كتب الحديث

1	الموطا	امام مالک بن انس اصبحی متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
2	المسند	امام محمد بن ادریس شافعی، متوفی ۲۰۴ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
3	المصنف	امام ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
4	المصنف فی الأحادیث والآثار	حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی عبسی متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
5	المسند	امام احمد بن محمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
6	سنن الدارمي	امام عبد اللہ بن عبد الرحمٰن، متوفی ۲۵۵ھ	دار الکتب العربی بیروت
7	نصب الراية	علامہ جمال الدین ابو محمد عبد اللہ بن یوسف متوفی ۲۵۵ھ	
8	صحيح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
9	صحيح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن حجاج قشیری متوفی ۲۶۱ھ	دار المغنی، عرب شریف ۱۴۱۹ھ
10	سنن ابن ماجه	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
11	سنن أبی داود	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۱ھ
12	مراسيل أبي داود	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دہلی الہند
13	سنن الدار قطني	امام علی بن عمر دار قطنی، متوفی ۲۸۵ھ	
14	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۴ھ
15	نوادر الأصول	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ بن سورہ ترمذی متوفی ۲۷۹ھ	دار صادر، بیروت
16	السنة	امام ابو بکر احمد بن عمرو متوفی ۲۸۷ھ	دار ابن حزم ۱۴۲۴ھ
17	البحر الزخار المعروف بمسند البزار	امام ابو بکر احمد عمرو بن عبد الخالق بزار متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم، المدینۃ المنورۃ ۱۴۲۴ھ
18	سنن النسائی	امام ابو عبد الرحمٰن احمد بن شعیب نسائی متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۶ھ
19	عمل اليوم والليلة	امام ابو عبد الرحمٰن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
20	مسند أبی يعلى	شیخ الاسلام ابو یعلی احمد بن علی بن مثنی موصلی متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
21	صحيح ابن خزيمة	امام محمد بن اسحاق بن خزیمہ، متوفی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی، بیروت
22	شرح معاني الآثار	امام احمد بن محمد طحاوی، متوفی ۳۲۱ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
23	المسند الشاشی	ہیثم بن کلیب شاشی متوفی ۳۳۵ھ	بیروت
24	الإحسان بترتيب صحيح ابن حبان	علامہ امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی، متوفی ۷۳۹ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
25	المعجم الكبير	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ

www.dawateislami.net

26	المعجم الأوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	داراحیاءالتراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ
27	المعجم الصغير	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
28	الكامل في ضعفاء الرجال	امام ابواحمد عبداللہ بن عدی جرجانی، متوفی ۳۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
29	المستدرك على الصحيحين	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم نیشاپوری متوفی ۴۰۵ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
30	حلية الأولياء	حافظ ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی شافعی متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
31	شعب الإيمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
32	البعث والنشور	امام ابوبکر احمد بن الحسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	مؤسسۃ الکتب الثقافیہ، بیروت
33	السنن الكبرى	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ
34	إثبات عذاب القبر	امام ابوبکر احمد بن الحسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	بیروت
35	السنن الصغرى	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دارالمعرفہ، بیروت
36	معرفة السنن والآثار	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
37	تاريخ بغداد	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
38	الفردوس بمأثور الخطاب	حافظ ابوشجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
39	شرح السنة	امام ابومحمد حسین بن مسعود بغوی متوفی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ
40	الترغيب والترهيب	امام زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی منذری متوفی ۶۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
41	شرح النووي على المسلم	امام محی الدین ابوزکریا یحیٰی بن شرف نووی متوفی ۶۷۶ھ	
42	مشكاة المصابيح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
43	سنن الدارمي	حافظ عبداللہ بن عبدالرحمٰن دارمی متوفی ۷۹۷ھ	
44	مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابی بکر ہیثمی متوفی ۸۰۷ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
45	فتح الباري	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
46	عمدة القاري	امام بدرالدین ابومحمد محمود بن احمد عینی متوفی ۸۵۵ھ	
47	الجامع الصغير	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۵ھ
48	إرشاد الساري	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی متوفی ۹۲۳ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۲۱ھ
49	كنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
50	التيسير	علامہ عبدالرؤف مناوی، متوفی ۱۰۰۳ھ	دارالحدیث، مصر
51	مرقاة المفاتيح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
52	فيض القدير	علامہ محمد عبدالرءُوف مناوی متوفی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
53	أشعة اللمعات	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	

www.dawateislami.net

54	كشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی متوفی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
55	حاشية سنن النسائی	علامہ وصی احمد محدّث سورتی متوفی ۱۳۳۴ھ	
56	مرآة المناجيح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	
57	نزهة القاری شرح صحيح البخاری	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی متوفی ۱۴۲۰ھ	

كتب العقائد

1	الفقه الأكبر	امام اعظم ابوحنیفہ نعمان بن ثابت متوفی ۱۵۰ھ	
2	تمهيد أبي شكور	ابوشکور سالمی حنفی معاصر سید علی ہجویری علیہما الرحمہ	
3	العقائد النسفية	نجم الدین عمر بن محمد نسفی متوفی ۵۳۷ھ	
4	شرح المواقف	قاضی عضد الدین عبد الرحمٰن ایجی متوفی ۷۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
5	شفاء السقام	امام تقی الدین علی بن عبد الکافی سبکی متوفی ۷۵۶ھ	
6	شرح المقاصد	علامہ مسعود بن عمر سعد الدین تفتازانی متوفی ۷۹۳ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
7	شرح العقائد النسفية	علامہ مسعود بن عمر سعد الدین تفتازانی متوفی ۷۹۳ھ	
8	المسايرة	کمال الدین محمد بن عبد الواحد المعروف بابن ہمام متوفی ۹۰۶ھ	مطبعة السعادة بمصر
9	المسامرة شرح المسايرة	کمال الدین محمد بن محمد المعروف بابن ابی شریف متوفی ۹۰۶ھ	مطبعة السعادة بمصر
10	حاشية عصام الدين على شرح العقائد	عصام الدین ابراہیم بن محمد متوفی ۹۴۳ھ	
11	اليواقيت والجواهر	عبد الوہاب بن احمد بن علی بن احمد شعرانی متوفی ۹۷۳ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
12	الصواعق المحرقة	حافظ احمد بن حجر مکی ہیتمی متوفی ۹۷۴ھ	
13	منح الروض الأزهر	شیخ علی بن سلطان المعروف بملا علی قاری متوفی ۱۰۱۴ھ	
14	شرح الفقه الأكبر	شیخ علی بن سلطان المعروف بملا علی قاری متوفی ۱۰۱۴ھ	
15	تكميل الإيمان	حضرت شیخ عبد الحق محدث دہلوی متوفی ۱۰۵۲ھ	
16	حاشية ولی الدين على حاشية مولانا عصام الدين على شرح العقائد	علامہ ولی الدین متوفی ۱۱۱۹ھ	
17	تحفه اثنا عشريه	شاہ عبد العزیز بن شاہ ولی اللہ محدث دہلوی متوفی ۱۲۳۹ھ	
18	النبراس	علامہ محمد عبد العزیز فرہاری متوفی ۱۲۳۹ھ	
19	شفاعتِ مصطفی ترجمہ تحقیق الفتوی فی ابطال الطغوی	مصنف: امام حکمت وکلام علامہ محمد فضل حق خیر آبادی متوفی ۱۲۷۸ھ مترجم: علامہ محمد عبد الحکیم شرف قادری متوفی ۱۴۲۸ھ	
20	المعتقد المنتقد	علامہ فضل الرسول بدایونی متوفی ۱۲۸۹ھ	

www.dawateislami.net

21	المعتمد المستند	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
22	مطلع القمرين فی إبانة سبقة العمرين	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
23	تجلی اليقين	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
24	الأمن والعلی لناعتی المصطفی بدافع البلاء	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
25	أنوار المنان فی توحيد القرآن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
26	خالص الاعتقاد	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
27	إنباء الحی	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
28	إزاحة العيب بسيف الغيب	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
29	ثلج الصدر لإيمان القدر	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
30	منبه المنية بوصول الحبيب إلی العرش والرؤية	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
31	الزلال الأنقی	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
32	صلاة الصفاء	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
33	الدولة المكية	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
34	سبحان السبوح	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
35	حياة الموات	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
36	اعتقاد الأحباب	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
37	إسماع الأربعين	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
38	منية اللبيب	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
39	قهر الديان علی مرتد بقاديان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
40	الجراز الديانی علی المرتد القاديانی	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
41	السوء والعقاب علی المسيح الكذاب	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
42	الكوكبة الشهابية	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
43	سل السيوف الهندية	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
44	إنباء المصطفی بحال سر وأخفی	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
45	المبين ختم النبيين	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
46	جزاء الله عدوه بإبائه ختم النبوة	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	

www.dawateislami.net

47	تمهيد ايمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
48	حسام الحرمين	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
49	جاء الحق	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ	

كتب الفقه

1	تحفة الفقهاء	علاء الدین سمرقندی متوفی ۵۳۹ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
2	خلاصة الفتاوى	علامہ طاہر بن عبد الرشید بخاری، متوفی ۵۴۲ھ	
3	بدائع الصنائع فی ترتیب الشرائع	ملک العلماء امام علاء الدین ابو بکر بن مسعود کاسانی متوفی ۵۸۷ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۱ھ
4	الفتاوى الخانية	قاضی حسن بن منصور بن محمود اوزجندی متوفی ۵۹۲ھ	
5	التجنيس و المزيد	برہان الدین علی بن ابی بکر مرغینانی، متوفی ۵۹۳ھ	
6	الهداية	برہان الدین علی بن ابی بکر مَرغینانی متوفی ۵۹۳ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت
7	فتح القدير	کمال الدین محمد بن عبد الواحد المعروف بابن ہمام متوفی ۸۶۱ھ	
8	منية المصلي	علامہ سدید الدین محمد بن محمد کاشغری، متوفی ۷۰۵ھ	
9	المدخل	علامہ محمد بن محمد، المشہور ابن الحاج، متوفی ۷۳۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت، ۱۴۱۵ھ
10	شرح الوقاية	علامہ صدر الشریعہ عبید اللہ بن مسعود، متوفی ۷۴۷ھ	
11	الفتاوى التاتارخانية	علامہ عالم بن علاء انصاری دہلوی متوفی ۷۸۶ھ	
12	الجوهرة النيرة	علامہ ابو بکر بن علی حداد، متوفی ۸۰۰ھ	
13	الجامع الوجيز(الفتاوى البزازيه)	حافظ الدین محمد بن محمد بن المعروف بابن بزار متوفی ۸۲۷ھ	
14	فتاوى قارئ الهداية	علامہ سراج الدین عمر بن علی حنفی، متوفی ۸۲۹ھ	دار الفرقان، بیروت
15	البناية فی شرح الهداية	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی متوفی ۸۵۵ھ	
16	الحلية	علامہ ابن امیر الحاج، متوفی ۸۷۹ھ	مخطوطہ
17	درر الحكام شرح غرر الاحكام	علامہ قاضی شہیر ملا خسرو حنفی، متوفی ۸۸۵ھ	
18	الحاوي للفتاوى	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
19	فتاوى امام سراج الدين بلقينى	امام سراج الدین بلقینی	
20	غنية المتملي	علامہ محمد ابراہیم بن حلبی، متوفی ۹۵۶ھ	
21	البحر الرائق	علامہ زین الدین بن نجیم، متوفی ۹۷۰ھ	
22	فتاوى زينية	علامہ زین الدین بن نجیم، متوفی ۹۷۰ھ	
23	الميزان الكبرى	عبد الوہاب بن احمد بن علی احمد شعرانی متوفی ۹۷۳ھ	مصطفیٰ البابی، مصر

www.dawateislami.net

24	الفتاوى الحديثية	شیخ الاسلام احمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی متوفی ۹۷۴ھ	
25	تنوير الأبصار	علامہ شمس الدین محمد بن عبداللہ بن احمد تمرتاشی، متوفی ۱۰۰۴ھ	دارالمعرفۃ، بیروت، ۱۴۲۰ھ
26	النهر الفائق	علامہ سراج الدین عمر بن ابراہیم، متوفی ۱۰۰۵ھ	
27	لباب المناسك	شیخ رحمۃ اللہ سندی، متوفی ۱۰۱۴ھ	
28	المسلك المتقسط فی المنسك المتوسط	ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	
29	حاشية الشلبيه	علامہ احمد بن محمد شلبی، متوفی ۱۰۲۱ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت
30	نورالإيضاح و مراقي الفلاح	علامہ حسن بن عمار بن علی شرنبلالی، متوفی ۱۰۶۹ھ	
31	نورالايضاح مع حاشية ضوء المصباح	علامہ حسن بن عمار بن علی شرنبلالی ۱۰۶۹ھ	
32	مجمع الأنهر	عبدالرحمٰن بن محمد بن سلیمان کلیبولی متوفی ۱۰۷۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۱۹ھ
33	الدر المختار	محمد بن علی المعروف بعلاء الدین حصکفی متوفی ۱۰۸۸ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
34	حاشية الطحطاوي على مراقي الفلاح	علامہ احمد بن محمد بن اسماعیل طحطاوی متوفی ۱۲۴۱ھ	
35	حاشية الطحطاوى على الدر المختار	علامہ احمد بن محمد بن اسماعیل طحطاوی متوفی ۱۲۴۱ھ	
36	رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ
37	الفتاوى الهندية	علامہ ہمام مولانا شیخ نظام متوفی ۱۱۶۱ھ وجماعۃ من علماء الہند	دارالفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
38	الفتاوى الرضوية	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
39	جد الممتار	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
40	إعلام الأعلام	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
41	احکام شریعت	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
42	رکن دین	علامہ مولانا محمد رکن الدین متوفی ۱۳۳۵ھ	
43	بہارشریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ	
44	فتاوی امجدیہ	علامہ مفتی محمد امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ	
45	ہمارا اسلام	مولانا مفتی محمد خلیل خان برکاتی متوفی ۱۴۰۵ھ	
46	وقار الفتاوى	مولانا مفتی محمد وقار الدین متوفی ۱۴۱۳ھ	
47	فتاوی فقیہ ملت	مولانا مفتی جلال الدین امجدی متوفی ۱۴۲۲ھ	
48	فتاوی فیض الرسول	مولانا مفتی جلال الدین امجدی متوفی ۱۴۲۲ھ	
49	نماز کے احکام	علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری رضوی	
50	رفيق الحرمين	علامہ مولانا محمد الیاس عطار قادری رضوی	

www.dawateislami.net

كتب أصول الفقه

1	التوضيح والتلويح	عبيداللہ بن مسعود بن تاج الشریعہ	
2	النامی شرح الحسامی	مولوی ابو محمد عبدالحق الحقانی بن محمد امیر	
3	الأشباہ والنظائر	الشیخ زین الدین بن ابراہیم الشہیر بابن نجیم متوفی ۹۷۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
4	نور الأنوار	علامہ احمد ابن ابی سعید حنفی المعروف بملا جیون متوفی ۱۱۳۰ھ	
5	فواتح الرحموت	علامہ عبدالعلی محمد بن نظام الدین لکھنوی متوفی ۱۲۲۵ھ	

كتب التصوف

1	كتاب الزهد	امام عبداللہ بن مبارک مروزی متوفی ۱۸۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
2	الرساله القشيرية	امام ابوالقاسم عبدالکریم بن ہوازن قشیری متوفی ۴۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
3	إحياء علوم الدين	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	دارصادر، بیروت ۲۰۰۰ء
4	عوارف المعارف	ابوحفص عمر بن محمد سہروردی شافعی متوفی ۶۳۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت، ۱۴۲۶ھ
5	الفتوحات المكية	شیخ ابوعبداللہ محمی الدین ابن عربی متوفی ۶۳۸ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
6	بهجة الأسرار	ابوالحسن نورالدین علی بن یوسف شطنوفی متوفی ۷۱۳ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۳ھ
7	الطبقات الكبرى	عبدالوہاب بن احمد بن علی احمد شعرانی متوفی ۹۷۳ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
8	سبع سنابل	میر عبدالواحد بلگرامی متوفی ۱۰۱۷ھ	
9	مكتوبات إمام ربانی	مجدد الف ثانی شیخ احمد سرہندی متوفی ۱۰۳۴ھ	
10	الحديقة الندية	عارف باللہ سیدی عبدالغنی نابلسی حنفی متوفی ۱۱۴۱ھ	
11	البريقة المحمودية على الطريقة المحمدية	ابوسعید محمد بن مصطفی نقشبندی حنفی متوفی ۱۱۷۶ھ	بیروت
12	جامع كرامات الأولياء	امام یوسف بن اسماعیل نبہانی متوفی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۲ھ

كتب السيرة

1	دلائل النبوة	امام ابوبکر احمد بن الحسین بن علی بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۳ھ
2	الشفا بتعريف حقوق المصطفى	القاضی ابوالفضل عیاض مالکی متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ
3	أم القرى فی مدح خير الورى (قصيده همزيه)	امام شرف الدین محمد بن سعید بوصیری متوفی ۶۹۵ھ	
4	البداية والنهاية	عمادالدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی متوفی ۷۷۴ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
5	أسد الغابة	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ

www.dawateislami.net

6	الخصائص الكبرى	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت
7	المواهب اللدنية	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی متوفی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۶ھ
8	معارج النبوة	المعین الحاج محمد الفراہی المعروف بملا مسکین متوفی ۹۵۴ھ	
9	أفضل القرى شرح أم القرى	شیخ الاسلام احمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی متوفی ۹۷۴ھ	
10	الجوهر المنظم	شیخ الاسلام احمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی متوفی ۹۷۴ھ	
11	شرح الشفا	ملا علی قاری ہروی حنفی متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
12	مدارج النبوة	شیخ عبد الحق محدث دہلوی متوفی ۱۰۵۳ھ	
13	نسيم الرياض	شہاب الدین احمد بن محمد بن عمر خفاجی متوفی ۱۰۶۹ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ
14	فيوض الحرمين	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی متوفی ۱۱۷۶ھ	
15	حجة الله على العالمين	امام یوسف بن اسماعیل نبہانی متوفی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہل سنت برکات رضا، ہند
16	جواهر البحار	امام یوسف بن اسماعیل نبہانی متوفی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہل سنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ

كتب الأعلام

1	صفة الصفوة	امام جمال الدین ابی الفرج ابن جوزی متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۳ھ
2	معجم المؤلفين	عمر رضا کحالہ متوفی ۱۴۰۸ھ	مؤسسۃ الرسالہ ۱۴۱۴ھ
3	أخبار الأخيار	شیخ عبد الحق محدث دہلوی متوفی ۱۰۵۳ھ	
4	إزالة الخفاء عن خلافة الخلفاء	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی متوفی ۱۱۷۶ھ	
5	الفوائد البهية	مولانا عبد الحی لکھنوی متوفی ۱۳۰۴ھ	
6	هدية العارفين	اسماعیل کمال پاشا متوفی ۱۳۳۹ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۳ھ
7	الأعلام	خیر الدین زرکلی متوفی ۱۳۹۶ھ	دار العلم للملایین، بیروت ۲۰۰۵ء
8	سير أعلام النبلاء	شمس الدین محمد بن احمد ذہبی متوفی ۷۴۸ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۷ھ

كتب اللغات

1	التعريفات للجرجاني	سید شریف علی بن محمد بن علی الجرجانی ۸۱۶ھ	دار المنار للطباعۃ والنشر
2	القاموس المحيط	مجد الدین محمد بن یعقوب فیروز آبادی متوفی ۸۱۷ھ	دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۱۷ھ
3	معجم لغة الفقهاء	محمد روّس، حامد صادق	
4	فيروز اللغات	الحاج فیروز الدین	فیروز سنز ۲۰۰۵م
5	اُردو لغت	ادارہ ترقی اُردو بورڈ	

www.dawateislami.net

6	فرهنگ آصفیه	احمد دہلوی	

كتب الشيعة

1	ناسخ التواريخ	مرزا محمد تقی سپہر لسان الملک متوفی ۱۲۹۷ھ	تہران
2	أصول كافی	ابوجعفر محمد بن یعقوب کلینی رازی متوفی ۳۲۸ھ	دار الکتب الاسلامیہ، تہران
3	الروضة من الكافی (فروع كافی)	محمد بن یعقوب کلینی متوفی ۳۲۸ھ	دار الکتب الاسلامیہ، تہران
4	احتجاج طبرسی	ابو منصور احمد بن علی طبرسی متوفی ۵۴۸ھ	نجف اشرف، طبع قدیم ۱۳۸۶ھ
5	مناقب آل أبی طالب	محمد بن علی بن شہر آشوب متوفی ۵۸۸ھ	نجف (عراق)
6	شرح نهج البداية ابن أبی حديد	ابو الحامد عبد الحمید متوفی ۶۵۶ھ	بیروت ۱۳۷۵ھ
7	جلاء العيون	باقر مجلسی متوفی ۱۱۱۰ھ	طبع قدیم، تہران ۱۳۹۸ھ
8	حق اليقين	باقر مجلسی متوفی ۱۱۱۰ھ	کتب فروشے اسلامیہ، تہران
9	حيات القلوب	باقر مجلسی متوفی ۱۱۱۰ھ	کتب فروشے اسلامیہ، تہران
10	رجال الكشی	محمد بن عمر کشی (القرن الرابع)	مؤسسہ الاعلمی، کربلا
11	تهذيب المتين فی تأريخ أمير المؤمنين	مظہر حسین سہارن پوری	دہلی
12	نفس الرحمان فی فضائل سلمان	مرزا حسین بن محمد تقی طبرسی	ایران
13	أنوار نعمانيه	نعمت اللہ جزائری	تہران
14	حمله حيدری	مرزا محمد رفیع مشہدی	تہران
15	عمدة المطالب	جمال الدین احمد بن حسن	قم (ایران)
16	طراز المذهب مظفری	مرزا عباسی	
17	منتهی الإكمال	عباس قمی	تہران
18	مجالس المؤمنين	نور اللہ شوستری	تبریز، تہران
19	تفسير مجمع البيان	ابو علی فضل بن حسن طبرسی	تہران
20	نتخب التواريخ	محمد ہاشم بن محمد علی خراسانی	تہران ۱۳۴۱م
21	التفسير الصافی	محمد بن مرتضی المعروف فیض کاشانی	تہران
22	مسند امام علی	حسن قبانچی	مؤسسۃ الاعلمی، بیروت ۱۴۲۱ھ

كتب القاديانی

1	إزاله أوهام	مرزا غلام احمد قادیانی متوفی ۱۹۰۱ء	ریاض الہند، امرتسر

www.dawateislami.net

2	أنجام آتهم	مرزاغلام احمد قادیانی متوفی ۱۹۰۱ء	مطبع ضیاء الاسلام، قادیان
3	دافع البلاء	مرزاغلام احمد قادیانی المتوفی ۱۹۰۱ء	مطبع ضیاء الاسلام، قادیان
4	توضیح المرام	مرزاغلام احمد قادیانی متوفی ۱۹۰۱ء	ریاض الہند، امرتسر
5	أربعین	مرزاغلام احمد قادیانی متوفی ۱۹۰۱ء	مطبع ضیاء الاسلام، قادیان
6	معیار أهل الاصطفاء	مرزاغلام احمد قادیانی متوفی ۱۹۰۱ء	مطبع ضیاء الاسلام، قادیان
7	کشتئ نوح	مرزاغلام احمد قادیانی متوفی ۱۹۰۱ء	مطبع ضیاء الاسلام، قادیان
8	اعجاز احمدی	مرزاغلام احمد قادیانی متوفی ۱۹۰۱ء	مطبع ضیاء الاسلام، قادیان
9	ضمیمه انجام آتهم	مرزاغلام احمد قادیانی متوفی ۱۹۰۱ء	مطبع ضیاء الاسلام، قادیان
10	براهین احمدیه	مرزاغلام احمد قادیانی متوفی ۱۹۰۱ء	سفیر ہند پریس، امرتسر، پنجاب
11	روحانی خزائن	(مجموعۂ کتب ورسائل قادیانی)	زیر طبع U.S.A

کتب الوهابیة

1	حاشیة شرح الصدور	محمد بن عبدالوہاب نجدی متوفی ۱۲۰۶ھ	مطبوعہ سعودیہ
2	رساله یك روزه	اسماعیل دہلوی متوفی ۱۲۴۶ھ	
3	إیضاح الحق	اسماعیل دہلوی متوفی ۱۲۴۶ھ	
4	تقویة الإیمان	اسماعیل دہلوی متوفی ۱۲۴۶ھ	
5	صراط مستقیم	مرتب اسماعیل دہلوی متوفی ۱۲۴۶ھ	
6	تحذیر الناس	محمد قاسم نانوتوی متوفی ۱۲۹۷ھ	
7	فتاوی رشیدیه	رشید احمد گنگوہی متوفی ۱۳۲۳ھ	محمد علی کارخانہ اسلامی کتب ۲۰۰۱ء
8	براهین قاطعه	خلیل احمد انبیٹھوی سہارن پوری متوفی ۱۳۴۶ھ	
9	حفظ الإیمان	اشرفعلی تھانوی متوفی ۱۳۶۲ھ	
10	الدرر السنیة فی الأجوبة النجدیة	عبدالرحمٰن بن محمد بن قاسم عاصی متوفی ۱۳۹۲ھ	مکتبۃ الکوثر، ریاض ۱۴۱۳ھ

الکتب المتفرقة

1	طوالع الأنوار	قاضی ناصر الدین عبداللہ بن ابی عمر و بیضاوی متوفی ۷۹۱ھ	
2	حیاة الحیوان الکبریٰ	کمال الدین محمد بن موسیٰ دمیری متوفی ۸۰۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۵ھ
3	تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	
4	البدور السافرة فی أمور الآخرة	ابوالفضل جلال الدین عبدالرحمٰن سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	مؤسسۃ الکتب الثقافیہ، بیروت ۱۴۲۵ھ

www.dawateislami.net

5	الحبائك فی أخبار الملائك	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	
6	سبل الهدی والرشاد	محمد بن یوسف صالحی شامی متوفی ۹۴۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۴ھ
7	أحسن الوعاء	رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان بن علی رضا متوفی ۱۲۹۷ھ	
8	الملفوظ(ملفوظات اعلی حضرت)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
9	مقال عرفا باعزاز شرع وعلماء	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
10	حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
11	ذیل المدعا لأحسن الوعاء	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	
12	تحفۂ جعفریہ	محمد علی نقشبندی علیہ رحمۃ اللہ القوی	
13	عقائد جعفریہ	محمد علی نقشبندی علیہ رحمۃ اللہ القوی	
14	تسهیل النحو	حافظ محمد خان نوری ابدالوی	
15	علم التجوید	قاری غلام رسول	
16	تحفه حسینیه	علامہ محمد اشرف سیالوی	

सवाब से महरूमी

त़बरानी ने अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि **अल्लाह** पाक के **महबूब**, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

कुछ लोगों को जन्नत का हुक्म होगा, जब जन्नत के क़रीब पहुंच जाएंगे और उस की ख़ुश्बू सूंघेंगे और महल और जो कुछ जन्नत में **अल्लाह** पाक ने जन्नतियों के लिये सामान तय्यार कर रखा है, देखेंगे तो पुकारा जाएगा कि इन्हें वापस करो, जन्नत में इन के लिये कोई ह़िस्सा नहीं।

येह लोग ह़सरत के साथ वापस होंगे कि ऐसी ह़सरत किसी को नहीं हुई और येह लोग कहेंगे कि ऐ रब ! अगर तू ने हमें पहले ही जहन्नम में दाख़िल कर दिया होता, हमें तू ने सवाब और जो कुछ अपने औलिया के लिये जन्नत में मुहय्या किया है न दिखाया होता तो येह हम पर आसान होता।

इरशाद फ़रमाएगा : हमारा मक़्सद ही येह था ऐ बद बख़्तो ! जब तुम तन्हा होते थे तो बड़े बड़े गुनाहों से मेरा मुक़ाबला करते थे और जब लोगों से मिलते थे तो ख़ुशूअ़ के साथ मिलते थे। जो कुछ दिल में मेरी ताज़ीम करते उस के ख़िलाफ़ लोगों पर ज़ाहिर करते, लोगों से तुम डरे और मुझ से न डरे, लोगों की ताज़ीम की और मेरी ताज़ीम नहीं की, लोगों के लिये गुनाह छोड़े मेरे लिये नहीं छोड़े, लिहाज़ा तुम को आज अ़ज़ाब चखाऊंगा और **सवाब** से महरूम करूंगा।

("المعجم الكبير" للطبراني، الحديث: ۱۹۹، ج۱۵، ص۸۵، و "مجمع الزوائد"، كتاب الزهد، باب ماجاء في الرياء، الحديث: ۱۷٦٤۹، ج۱۰، ص۳۷۷.)

www.dawateislami.net